जनपदीय
संस्कार गीत
मध्यप्रदेश के लोकांचलों में
प्रचलित संस्कार गीत

जनपदीय
संस्कार गीत

मध्यप्रदेश के लोकांचलों में
प्रचलित संस्कार गीत

सम्पादक
डॉ. कपिल तिवारी

सहायक सम्पादक
अशोक मिश्र

आदिवासी लोक कला अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्
भोपाल का प्रकाशन

प्रकाशक - आदिवासी लोक कला अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्
मुल्ला रमूजी संस्कृति भवन, आधार तल, बाण गंगा, भोपाल-462003
मध्यप्रदेश, भारत
फोन - 0755-2551878, 2760668

प्रकाशन वर्ष - वर्ष 2006 प्रथम संस्करण

स्वत्वाधिकार - आदिवासी लोक कला अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्

शब्दांकन - आदिवासी लोक कला अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्

आवरण -

मुद्रण - आफसेट, भोपाल

मूल्य - 500/- रुपये पाँच सौ केवल

■ पुस्तक से सम्बन्धित समस्त विवादों का न्यायालयीन कार्य क्षेत्र भोपाल होगा।

■ पुस्तक में प्रकाशित समस्त सामग्री लेखक की है, आवश्यक नहीं कि प्रकाशक इससे सहमत हो।

Janpadiya Sanskar Geet
EDITOR : DR. KAPIL TIWARI

अनुक्रम

निमाड़ी संस्कार गीत

रमेशचंद तोमर 'निमाड़ी'/ वसंत निरगुणे

डॉ. संतोष कुमार गुर्जर

मालवी संस्कार गीत

श्रीमती कृष्णा वर्मा

डॉ. शशिकला निगम

लोक वाचिक परम्परा में लोकगीत 'शब्द रचना' और 'संगीत रचना' एक साथ हैं। लोकगीत पढ़ने की नहीं सुनने की चीज है। हमारी वाचिक परम्परा का मौखिक काव्य और लोक का संगीत, लोकगीतों में बसता है, इनमें भी संस्कार गीतों की परम्परा, लोकगीत परम्परा का आधार है। सोलह संस्कारों के गीत विभिन्न अवसर और अनुष्ठानों तथा लोकाचारों से जुड़े हुए हैं अर्थात् वे साहित्य और संगीत की लोक परम्परा से आगे हमारी सांस्कृतिक चेतना और स्वरूप का दर्शन हैं। जन्म से लेकर विवाह तक लोकगीत और संगीत की एक परम्परा हमारे साथ यात्रा करती है। संस्कारों के गीत भारतीय लोक परम्परा में मूलत: स्त्रियों द्वारा गाये जाते हैं और संभवत: उन्हीं के द्वारा रचित भी हैं, इसलिए इन गीतों में भाव और संवेदना की अभिव्यक्ति का तल तथा संगीत संयोजन असाधारण रूप से समान है। यह भारतीय सांस्कृतिक परम्परा की भावात्मक बुनियादी एकता का विलक्षण उदाहरण हैं।

भारतीय पौराणिक परम्परा के नायकों, घटनाओं, स्थितियों के रूपक अपने में समेटे ये संस्कार गीत विशिष्ट जनपदीय स्थानिकता की अभिव्यक्ति के साथ एक भारतीय सांस्कृतिक परम्परा के अविछिन्न बोध को प्रकट करते हैं।

पिछले कुछ वर्षों में अकादमी ने वाचिक साहित्य के कुछ रूपों के संकलन चौमासा पत्रिका के परिशिष्ट के रूप में प्रकाशित किये हैं। लगभग छ:-सात हजार पृष्ठों की यह वाचिक साहित्य सम्पदा, मौखिक परम्परा के अभिलेखीकरण की देश की सबसे बड़ी योजना का कार्य रूप था। अब वर्गीकृत रूप में मध्यप्रदेश के चारों जनपदों के संस्कार गीतों का दो खण्डों में प्रकाशन किया जा रहा है। बुन्देलखण्ड, बघेलखण्ड, मालवा और निमाड़ अंचल के लगभग डेढ़-दो हजार गीत इनमें शामिल हैं। मूल बोलियों के गीतों के साथ हिन्दी अनुवाद भी दिये गये हैं।

यह इस उपक्रम का पहला चरण है। इसके बाद बारहमासा ऋतु और पर्व-गीतों का

दूसरा विशाल संग्रह अकादमी तैयार कर रही है जो अगले वर्षों में प्रकाशित होगा।

गीत संकलन और प्रकाशन के बाद इन गीतों के संगीत के प्रामाणिक दस्तावेजीकरण पर अकादमी कार्य करेगी। हम सभी इस तथ्य से भलीभाँति परिचित हैं कि लोकगीत मूलतः सुनने की चीज है, उसकी सुन्दरता और अर्थ अपने को लोक परम्परा के संगीत में व्यक्त करते हैं।

इस समय देश में बड़े पैमाने पर लोक परम्परा के संगीत को व्यावसायिकता के चलते विकृत किया जा रहा है, यहाँ तक कि संगीत के माध्यम से अपसंस्कृति का विस्तार किया जा रहा है- द्विअर्थी, फूहड़ और अश्लील गीत अनेक लोग लोकगीत के नाम से लिख रहे हैं और उसके पारम्परिक संगीत में मनमाने और अराजक प्रयोग कर लोकसंगीत का बाजार निर्मित कर रहे हैं। देश की आधारभूत सांस्कृतिक विरासत के सबसे मूल्यवान और कर्णप्रिय संगीत को व्यावसायिक हिन्दी सिनेमा और चलताऊ कैसेट कंपनियों ने भारी क्षति पहुँचायी है। यह चमत्कारी सामुदायिक सृजन हमारे पारिवारिक और सामाजिक जीवन की मांगलिकता को शब्द और संगीत में समारोहित करता है- इसमें हमारा मूल्यबोध, स्मृति, सांस्कृतिक दृष्टिकोण, संस्कार, शिक्षा और समवेत सर्जना सुरक्षित है। प्रामाणिकता के आग्रह के साथ उसकी सुरक्षा आवश्यक है।

इस संग्रह में बघेली, बुन्देली, निमाड़ी और मालवी के पारम्परिक संस्कार गीत संकलित है, जिन्हें श्री गोमती प्रसाद विकल, डॉ. सत्यनारायण पाण्डेय, श्री बाबूलाल दाहिया, श्री माधव शुक्ल मनोज, डॉ. ओम प्रकाश चौबे, श्री अनिल श्रीवास्तव, डॉ. सुरेश कुमार मालवीय, श्री रमेश चंद्र तोमर 'निमाड़ी', श्री वसंत निरगुणे, डॉ. संतोष कुमार गुर्जर, श्रीमती कृष्णा वर्मा तथा डॉ. शशिकला निगम ने अकादमी के आग्रह पर संकलित किया है। इन सभी महानुभावों के प्रति आदिवासी लोक कला अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद् अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती है।

कपिल तिवारी

निमाड़ी संस्कार गीत

रमेशचंद्र तोमर 'निमाड़ी'
वसंत निरगुणे
सम्पर्क-ग्राम-दवाना, पोस्ट-ठीकरी, खरगोन, मध्यप्रदेश

संस्कार और गीत

संस्कार को ठीक से समझ लेना जरूरी है, आखिर संस्कार है क्या चीज़? एक संस्कार वे होते हैं जो मनुष्य को संस्कारवान् बनाते हैं। दूसरे संस्कार वे हैं जो पूरी जाति के लोकाचार होते हैं। हमारे समाज में सोलह संस्कारों को इन्हीं जातीय संस्कारों में गिना गया है। संस्कारों से संस्कृति बनती है। सामूहिक संस्कृति किसी आंचलिक संस्कृति को जन्म देती है, जिसकी एक भूमि, एक बोली, एक जीवन शैली, एक परम्परा, एक संस्कृति, एक प्रकृति, एक नियति होती है। जिसकी एक वाचिक और कला परम्परा होती है। इस एक संस्कृति की व्याप्ति इतनी गहरी और दूर तक हो जाती है कि उस चैतन्य समूह की हर श्वांस-प्रश्वांस के प्रत्येक स्तर में स्पन्दन की तरह देख सकते हैं। 'हर आदमी अपनी जन्मभूमि को इसलिए नहीं भूल सकता या सदैव याद करता है कि वहाँ उसके संस्कार बने हैं। यही संस्कार संस्कृति का निर्माण करते हैं। जिन परम्पराओं और आस्थाओं में जिस आदमी का बचपन बीतता है, उन्हीं परम्पराओं और आस्थाओं का गहरा प्रभाव उसके ज़ेहन में इस तरह घुल-मिल जाता है कि उसे उससे अलग नहीं किया जा सकता या यूँ कह लीजिए कि उसके रक्त का रंग संस्कारों से निर्मित होता है। मनुष्य के अन्दर की सातों सतहों पर किसी खास अंचल के संस्कारों की जब अमिट छाप लग जाती है, तब वह उस अंचल की संस्कृति का अविभाज्य अंग हो जाता है। इस प्रकार वह व्यक्ति अपनी संस्कृति और संस्कारों से अलग पहचाना जाता है।'

मनुष्य संस्कार और संस्कृति का निर्माता है। प्राचीन संस्कृति और संस्कार में से नयी संस्कृति और संस्कार का प्रादुर्भाव भी मनुष्य की आवश्यकता है। उस प्रक्रिया में मनुष्य पुरानी संस्कृति और संस्कार को त्यागता है और नयी संस्कृति तथा संस्कार को ग्रहण करता है, जिसमें समय का सबसे बड़ा योगदान होता है। फिर भी स्वभाव और लोकाचार में संस्कृति और संस्कारों के बहुत सारे शेषांश सदैव वर्तमान समय में दिखाई देते हैं। यह सच है कि संस्कृति और संस्कार मनुष्य प्रकृति से पूरी तरह कभी तिरोहित नहीं होते। आधुनिक से आधुनिक व्यक्ति के मस्तिष्क

के किसी कोने में हजारों साल पीछे छूटे हुए संस्कार और संस्कृति के कोई न कोई कण अवश्य दिखाई दे सकते हैं। प्रकृति और पुरुष का सान्निध्य बहुत पुरातन है। प्रकृति अपने स्वभाव में निरन्तर पृथ्वी की कोख में एक-सी गतिविधि में संलग्न रहती है, पर मनुष्य की सबसे बड़ी विशेषता उसके सोचने-समझने और अभिव्यक्ति की शक्ति है। विवेक उसकी सबसे बड़ी पूंजी है। प्रकृति ने मनुष्य को बोलने की शक्ति दी है। प्रारम्भिक मानव अभिव्यक्ति के लिए संकेतों का उपयोग करता था, संकेतों से शब्दों का निर्माण हुआ। शब्द अभिव्यक्ति के वाहक बने, अभिव्यक्ति की राह में अनेक प्रतीक आये, जिन्होंने मनुष्य के अर्थ और आशय को और स्पष्ट किया, प्रतीकों ने अनेक मिथकों को जन्म दिया। संकेत, शब्द, प्रतीक और मिथक भाषा के आधार बने। बोली और भाषा ने कला-साहित्य के निर्माण की संभावनाओं को साकार रूप दिया। मनुष्य की संश्लिष्ट अभिव्यक्ति ने कला-साहित्य के उन चरम उत्कर्षों को पाने की कोशिश की, जिसमें मनुष्य के उच्च सुख की प्राप्ति होती हो। जब से मनुष्य ने बोलना शुरु किया, तभी से उसकी वाचिक परम्परा की नींव पड़ गई थी। बोली वाचिकता की पहली सीढ़ी कही जा सकती है। मनुष्य के जीवन के अनेक सृजनात्मक कार्य वाचिक ही रहे हैं, जैसे किसी अनुष्ठान चित्र, शिल्प, नृत्य, शिकार आदि की प्रविधियाँ पूर्व से ही सांकेतिक रूप से वाचिक ही रही हैं। आज भी अनेक परम्परा, रीति-रिवाज और संस्कारों के रूप वाचिक ही हैं। नई पीढ़ियाँ जो लोकाचार भूलते जा रहे हैं; सामाजिक-धार्मिक कार्यों के निष्पादन में बड़े-बूढ़ों के समीप जाते हैं, या उनकी याद करते हैं। कई संस्कार अथवा लोकाचार हाथ पकड़कर नई पीढ़ी को सिखाये नहीं जाते, बल्कि उन्हें उनमें शामिल करके उनकी शिक्षा-दीक्षा दी जाती है। यह क्रम आदिम पीढ़ियों से चला आ रहा है। बोली और उसके बाद में भाषा ने संस्कृति की धरोहर को सबसे अधिक मूल्यवान और अर्थवान समृद्धि दी। शब्द संस्कृति संवाहक बन गये। शब्दों के उच्चारण, घोष और लय ध्वनि संगीत के स्वर व्याकरण बन गये। शब्दों ने अनेक गाथाओं को जन्म दिया, कितने ही शब्द लोककथाएँ बने, शब्द प्रतीक और मिथक बनने से भी नहीं थके, तो कहीं शब्द, अर्थ, दर्शन और विज्ञान की भाषा में व्यक्त हुए। कहीं शब्द ब्रह्म की अभिव्यक्ति के धारक बने। यह कहना अत्युक्ति नहीं होगी कि शब्द, रूप, रस, गंध, स्पर्श की अभिव्यक्ति के सम्पूर्ण संवाहक बने। संस्कृति मनुष्य के भीतर होती है और शब्द मनुष्य की संस्कृति का बीज हैं। संस्कृति शब्द के माध्यम से अभिव्यक्त होती है; शब्द के बिना संस्कृति बेजुबान है। शब्द वाचिक परम्परा के जीवन्त संवाहक हैं। शब्द जातीय स्वप्न और स्मृतियों के आधार भी हैं। लोक शब्द से भरा है। शब्द ने संस्कृति के अर्थ गौरव को प्रतिष्ठित किया और शब्द सम्पूर्ण संस्कृतिवान बन गये; इस तरह पूरा लोक शब्द संस्कृति से परिपूरित हो गया। भले ही अक्षर ज्ञान लोक जनों ने विधिवत् नहीं पाया हो, लेकिन शब्द संस्कृति और संस्कार की ऐसी धरोहर सदैव उसके पास रही है; जिसमें उसके पीढ़ियों के संज्ञान का सार समाया हुआ रहा है। निरक्षरता होने के बावजूद लोक समाज शब्द की अपार संस्कृति, सम्पदा और संस्कारों के वैभव से कभी वंचित नहीं रहा। यह धारा लोक में हजारों वर्षों से निरन्तर प्रवाहमान रही है।

किसी खास अंचल के संस्कार को देखने का अर्थ वहाँ की संस्कृति की व्याख्या से है। निमाड़ एक संस्कृति सम्पन्न अंचल है। वहाँ के संस्कार वहाँ की प्रकृति, धरती और संस्कृति के आधार पर निर्मित हुए हैं। निमाड़ के लोकजनों की संस्कारशीलता जन्म, मुण्डन, जनेऊ, सगाई, विवाह और मृत्यु संस्कार के समय प्रकट होती है। इसके साथ ही निमाड़ में प्रचलित अनेक प्रथा और परम्पराओं में संस्कारों की उपस्थिति देखी जा सकती है। बहुत से संस्कार अब देखने को नहीं मिलते, अथवा उनका रूप बदल गया है। कई संस्कार विलुप्त हो गये हैं, अथवा उनका स्वरूप एकदम संक्षिप्त प्रतीकात्मक हो गया है। लम्बी अनुष्ठान प्रक्रिया निर्वाह करने की जगह महज औपचारिकता ने ले ली है, ऐसे कौन से संस्कार हैं, उनके बारे में विचार आवश्यक है। समाज में बहुत से ऐसे संस्कार रूढ़ियों की तरह बने रहते हैं, जिनका कोई औचित्य नहीं होता। ऐसी कई परम्पराएँ हैं, जिनका मात्र निर्वाह होता है, जिनकी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष कोई प्रतिश्रुति और फलश्रुति नहीं होती। बहुत से संस्कार समय से बाहर हो जाते हैं और कई सैकड़ों वर्ष निष्क्रिय होकर पुनर्जीवित हो उठते हैं। यद्यपि उनका स्वरूप वैसा नहीं रहता, जैसा सैकड़ों वर्ष पूर्व था। लोक में ऐसे संस्कार नये रूप में अगृहीत होते हैं। समय की नई ऊर्जा ग्रहण कर संस्कार समाज में पुन: अपनी जगह बना लेते हैं। लोक में यह प्रक्रिया निरन्तर जारी रहती है।

निमाड़ में जन्म के समय अनेक संस्कार किये जाते हैं। गोद भरने की अगरनी रस्म, पगल्या, पाँचवी-छठी पूजन, जलवायु, नामकरण आदि जन्म संस्कार प्रत्येक जाति समूह में किये जाते हैं। बालक के कुछ बड़े होने पर कर्ण छेदन, मान-जमाल (मुण्डन), जनवई (यज्ञोपवीत) आदि संस्कार सम्पादित किये जाते हैं। चौदह वर्ष की उम्र तक बालक के जन्म संस्कार गिने जाते हैं। चौदह वर्ष के पश्चात् बालक किशोरावस्था में प्रवेश करता है। इस अवस्था में बहुत कम संस्कार किये जाते हैं। लेकिन इस अवस्था का प्रमुख संस्कार शिक्षा-दीक्षा है। किशोर शब्द-ज्ञान प्राप्त करता है। शरीर की शक्तियों को पहचानने की कोशिश करता है। लोक व्यवहार से स्वयं की अनुभूतियों का संज्ञान अर्जित करता है और एक किशोर वयस्कता की ओर बढ़ता है। प्रेम, घृणा, मर्यादा और स्वयं की पहचान का समय शुरू होता है। इस समय भी कोई संस्कार नहीं किये जाते हैं। वयस्क होने पर स्वनिर्णय की क्षमता का विकास होता है और अपने भीतर रचे-बसे संस्कारों का निरीक्षण-परीक्षण शुरू होता है।

विवाह की उम्र ग्रहण करने के साथ ही युवा वर्ग के विवाह संस्कार का समय शुरू हो जाता है। सगे-सम्बन्धी युवा लड़के-लड़की को देखकर सगाई-विवाह की बातचीत आरम्भ कर देते हैं। योग्य वर-वधू की तलाश शुरू होती है। एक दिन कुण्डली मिल जाती है और सगाई-विवाह की तिथि सुनिश्चित हो जाती है। विवाह सबसे बड़ा संस्कार माना जाता है।

संस्कार बनाने की आखिर जरूरत क्या थी? जीवन पद्धति, प्रथा-परम्पराओं, अनुष्ठानों आदि को सुचारु रूप से संचालित करने की गरज से मनुष्य ने संस्कार संस्था का निर्माण बहुत सोच-समझकर हजारों वर्षों के अनुभव सार को संचित कर किया है। यही कारण है कि संस्कार

मनुष्य के लिए एक अनिवार्य स्वीकृति बन गए हैं। पेट में गर्भ पड़ते ही मनुष्य के लिए संस्कार की शिक्षा प्रारम्भ हो जाती है, जो मृत्युपर्यन्त जारी रहती है।

विवाह में गणेश पूजा, खलमाटी, हल्दी, मंडप, मामेरा, माता पूजन, लग्न, चवरी, काकणडोरा आदि संस्कार निभाये जाते हैं।

मृत्यु के अवसर पर अग्निदाह, दसाकर्म, तेरहवीं के संस्कार किये जाते हैं।

निमाड़ी संस्कार और अनुष्ठान

निमाड़ में प्रचलित विभिन्न संस्कारों के साथ कोई न कोई अनुष्ठान पूजा-पाठ अवश्य जुड़ा होता है। जैसे- अगरनी के समय गौर पूजा, बड़ी बनाते समय गणेश पूजा, मंडप में कलश और दिक् पूजा, लग्न के पूर्व और पश्चात् गोतरेज पूजा, जनेऊ में यज्ञ-याज्ञ, मुण्डन में देवी अनुष्ठान, लग्न में व्रत-उपवास आदि प्रमुख हैं। अनुष्ठान जहाँ संस्कारों को जीवित और जीवन्त रखने में अहम भूमिका निभाते हैं, वहीं संस्कार अनुष्ठान के बिना प्राणहीन होते हैं। संस्कार अनुष्ठान से चन्दन की तरह पवित्र हो जाते हैं। संस्कार जब परम्परा के रूप में प्रतिष्ठित हो जाते हैं तब वे समय चक्र के अंग हो जाते हैं। अनुष्ठान आत्मा के अन्दर होते हैं। सच यह है कि अनुष्ठान आत्मा की प्रार्थनाएँ हैं। स्त्रियों के द्वारा किया जाने वाला मांगलिक कार्य बिना अनुष्ठान के सम्पन्न नहीं होता। एक स्त्री गोबर से घर-आंगन लीपने पर उस पर कुंकुम-हल्दी के छींटे डालकर ही दम लेती है। संस्कारों के साथ किये जाने वाले सभी अनुष्ठान वाचिक हैं। बड़े-बूढ़ों की स्मृति में वे सदैव बसे होते हैं। देवउठनी एकादशी के अनुष्ठान की सारी रीतियाँ सभी स्त्रियाँ जानती है। किसी को कुछ कहने की जरूरत नहीं होती। अमुक त्यौहार पर क्या और किसकी पूजा होनी है? पूजा में क्या लगना है? पूजा कब होना? इस सबका निर्णय पीढ़ियों से चली आ रही संज्ञान की परम्परा के पास होता है। कुलदेवी का चित्र किस दिशा में बनना है? चित्र में कितनी आकृतियाँ उकेरी जानी हैं? चित्र में कौन सी चीज नहीं बनाना है? पूजा की विधि क्या होगी? ये सब चीजें वाचिक अनुष्ठान के अन्तर्गत आती हैं। अनुष्ठानों का कोई लिखित शास्त्र नहीं होता, फिर भी उसकी रीतियाँ जरूर सुनिश्चित होती हैं, जिन्हें निभाना अनिवार्य होता है। कुलदेवी का चित्र बड़ी पवित्रता के साथ आज भी बनाया जाता है। यहाँ तक कि कुलदेवी का चित्र उकेरने वाली महिला को स्नान करके गीले कपड़े में ही उस कमरे में जाना होता है, जहाँ उसे कुलदेवी का भित्तिचित्र लिखना होता है। अनुष्ठान की ऐसी विधियाँ आज भी मौखिक परम्परा में हैं।

निमाड़ी संस्कार और गीत

निमाड़ की लोक संस्कृति में लोक की समस्त शक्तियाँ विद्यमान हैं। लोक संस्कृति एक ऐसी प्रबल धारा है, जिसमें समय, संस्कृति, जीवन, निरन्तर प्रवाहमान होते हैं। संस्कार से बनी संस्कृति जातीय अवचेतन तक फैले संसार तक की अभिव्यक्ति है, इसलिए संस्कृति सम्पन्न

व्यक्ति अनुभवजन्य शब्द से अपना काम चला लेता है, उसे अक्षर ज्ञान की जरूरत नहीं है। लोक की वाचिक परम्परा प्रत्येक शब्द के माध्यम से जीवन के अर्थ गौरव को संधारित करती आई है। मनुष्य संस्कृति का निर्माता है और उसका संवाहक भी है। प्रकृति उसके इस कार्य की प्रमुख सहभागी है। प्रकृति और पुरुष के अन्तर्सम्बन्ध ही संस्कृति को जन्म देते हैं। बिना प्रकृति के मनुष्य का अस्तित्त्व नहीं है, इसलिए यह सृष्टि अथवा लोक प्रकृति और पुरुष के द्वैत पर निर्भर है। अकेला मनुष्य इस सृष्टि का कारण नहीं हो सकता, मनुष्य अपने ज्ञान-विज्ञान में छुद्र हो सकता है, लेकिन सर्वश्रेष्ठ तो हर समय में प्रकृति ही है, इसीलिए मनुष्य ने कभी प्रकृति से अपने आपको बड़ा नहीं समझा है। उसने प्रकृति को सदैव अपनी वाचिक और कला परम्परा तथा जीवन के कार्यकलापों, अनुष्ठानों आदि में प्रथम स्थान दिया है, अपने आपको गौण ही माना है।

यदि किसी अंचल की सम्पूर्ण संस्कृति का परिचय पाना हो तो हमें उसकी वाचिक परम्परा की विभिन्न विधाओं का अध्ययन करना चाहिए अथवा उसकी बोली के लोक-साहित्य को देख लेना चाहिए। वाचिक परम्परा में किसी भी जाति के अर्जित संज्ञान की सूक्ष्म से सूक्ष्म परतें देखी जा सकती हैं। समस्त प्रकृति और मनुष्य जीवन की गतिविधियों को लोकगीत, लोककथा, गाथा, नाट्य, मिथक आदि में देखा जा सकता है।

जिस प्रकार अनुष्ठान को संस्कार में अनुस्यूत कर दिया है, ठीक इसी प्रकार गीत को संस्कार का हिस्सा बना दिया है। कोई भी संस्कार बिना गीत के सम्भव नहीं है। जन्म से लगाकर मृत्यु तक गीत संस्कार का साथी है। गीत आत्मा है। लोक में कोई भी संस्कार किया जा रहा हो, उसके साथ गीत अवश्य गाया जाता है। गीत में शब्द तो महत्त्व रखते ही हैं, उसमें स्वर की भी अत्यधिक महत्ता है, इसीलिए गीत के जन्म से ही उसमें गेयता का अनिवार्य तत्त्व मौजूद है। संस्कार के साथ गीत का गाया जाना कहीं न कहीं कला परम्परा को सम्पुष्ट करना है। अनेक संस्कार गीत किसी भी अंचल की कला-परम्परा के श्रेष्ठ उदाहरण हो सकते हैं। जहाँ संस्कार निभाया जा रहा है, वहाँ उसके गाने की परम्परागत अनिवार्यता तो है ही; ऐसे गीत अपनी स्वतंत्र इयत्ता भी रखते हैं। जिनको अवसर विशेष के अतिरिक्त कहीं भी सभा-समाज में गाया जा सकता है। इससे संस्कार को कोई हानि नहीं होती।

वैदिक छन्दों में ऋषियों ने जिस प्रकार स्वर की अनिवार्यता भर दी है, ठीक इसी प्रकार लोकगीतों में स्वर की स्वाभाविकता नैसर्गिक रूप से गुम्फित कर दी गई है। वैदिक छन्द एक बंधे-बंधाये व्याकरण में गाये जाते हैं, जबकि लोकगीत अपने स्वभाव में ही झरने की तरह स्वच्छन्द होते हैं। निमाड़ी लोकजीवन में कोई भी अवसर ऐसा नहीं होता, जब गीत न गाये जाते हों। गीत के अवसर और अवसर के गीत दोनों लोकमनीषा की सृजनात्मक पहल ने गढ़े हैं। निमाड़ी लोकजीवन में हर अवसर की लोककविता अथवा लोकगीत समाहित है। निमाड़ अंचल में विभिन्न प्रकार की लोक-काव्य चेतना पायी जाती है। निमाड़ी लोकगीत गरम जलवायु के ऊष्म गीत है। निमाड़ के सांस्कृतिक लोकजीवन में लोकगीतों की संख्या सबसे अधिक है।

विशेषकर संस्कारों के समय पर लोकगीत सबसे अधिक गाये जाते हैं, निमाड़ में हर अवसर के गीत हैं, जिनकी अपनी पारम्परिक लोकधुनें और लोकसंगीत है।

रामनारायण उपाध्याय ने एक स्थान पर लिखा है कि- 'हमारा कोई भी संस्कार ऐसा नहीं, जो गीत से प्रारम्भ न होता हो। बच्चे का जन्म होता है तो गीत के साथ, नामकरण संस्कार होता है तो गीत के साथ, विवाह होता है तो गीत की कड़ियों के साथ हमारे घर के आंगन से लोकगीतों की गंगा प्रवाहमान रही है।'

जन्म, विवाह और मृत्यु संस्कार के लोकगीतों में निमाड़ की समूची लोक संस्कृति का समावेश हुआ है। लोकगीत किसी जाति, समूह और देश की लोक संस्कृतियों और संस्कार के परिचायक होते हैं। उनमें जीवन की प्रत्येक गतिविधियों का एहसास देखा जा सकता है। मनुष्य के जन्म-मरण, मंगनी-विवाह, जनेऊ-मुण्डन, पर्व-त्यौहार, हर्ष-उल्लास, हास-परिहास, सुख-दुख, आचार-विचार, लोक व्यवहार-प्रथाएँ, रीति-रिवाज, परम्परा-प्रथा, रूढियाँ, धर्म-कर्म, अध्यात्म और अनुष्ठान, भूत, भविष्य और वर्तमान के सारे संस्कार लोकगीतों में सहज रूप में मिलते हैं।

निमाड़ी जन-जीवन में बहुत से संस्कारों के अनुष्ठान, प्रथा और परम्पराएँ विलुप्त हो गई हैं। आज उनका स्मरण तक नहीं किया जाता। हर समय में कोई न कोई अनुष्ठान, प्रथा अथवा परम्परा रूढ़ि बनकर समय से बाहर होने के क्रम में रहती है। समय के साथ जीवन शैलियाँ बदलती हैं तो उसके साथ संस्कार भी बदल जाते हैं। यह लचीलापन व्यक्ति, समाज और देश के सन्दर्भ में भी उतना ही प्रासंगिक है। जब एक व्यक्ति के संस्कार बदलते हैं तो पूरे समाज के संस्कार बदल जाते हैं। समाज के संस्कार बदलने पर देश का चरित्र बदल जाता है। संस्कृति और समाज के भीतर अन्तर्क्रिया निरन्तर जारी रहती है। जिस प्रकार सर्प अपनी पुरानी केचुल छोड़कर नवीनता को प्राप्त कर लेता है, उसी प्रकार समाज और संस्कृति पुराने पड़ गये संस्कारों को त्याग देता है और उसकी जगह नया संस्कार ग्रहण करता चलता है। एक जीवित समाज में यह प्रक्रिया सदैव अपने-आप होती रहती है। यह बहुत कुछ सायास भी नहीं होता। कोई जबरन हटाना चाहे तो कोई संस्कार समाज से हटाया नहीं जा सकता। इसके लिए पूरे समाज की सहमति और स्वीकृति की आवश्यकता होती है। एक संस्कार को हटाने में कई वर्ष लग सकते हैं। संस्कारों को बलात् हटाये जाने अथवा कुछ नवीनता जोड़ने की आलोचना समाज में बनी रहती है। पुरानी पीढ़ी संस्कारों के बदलने के पक्ष में बहुत कम होती है, जबकि नई पीढ़ी के लोग कई संस्कारों और परम्पराओं को आज के समय में अप्रासंगिक मानकर उन्हें छोड़ने का आग्रह रखते हैं। पीढ़ियों का यह अन्तर हर देश, काल, परिस्थिति में होता है।

निमाड़ में कई परम्पराएँ, प्रथाएँ और अनुष्ठान संस्कारों से विदा हो चुके हैं। ऐसी परम्पराओं का यहाँ जिक्र करना अप्रासंगिक नहीं होगा।

ग्रामीण समाज में प्रसूति की क्रिया प्राय: घर में गाँव की कुशल दायी के माध्यम से होती

है। शहरों में प्रसूति प्राय: अस्पताल में होती है। गाँव में जन्म की रीतियाँ यथासम्भव सभी निभाई जाती हैं, जैसे- लड़की का जन्म हो तो सूपा बजाया जाता है और लड़का हो तो थाली बजाई जाती है। शहरों के अस्पतालों में यह सम्भव नहीं होता, इसलिए इसे लोग छोड़ देते हैं। पाँचवी, छठी पूजन भी नहीं होता और न 'बालतेण बाई' की खाट के नीचे छठी पूजा की सामग्री रखते हैं, जिसमें छठी माता द्वारा शिशु के भाग्य लिखने वाली कलम-दवात भी गायब हो गई। शिशु पैदा होने पर 'सांजी सक्कर' की प्रथा भी लगभग समाप्त सी हो गई है। बहन या बुआ अब न डेल पर साती लगाने आती हैं और न बताशे बाँटने की रस्म की जाती है। किन्हीं-किन्हीं जाति या समाज में 'पुंसवन संस्कार' भी नहीं किया जाता। गोद भराई यानी अगरनी सातवें माह के प्रारम्भ में की जाती है। शिशु-जन्म पर पहले पूरे गाँव में शक्कर बाँटने का रिवाज था, अब यह रस्म कहीं नहीं दिखाई देती। गुणी घुघरी की परिपाटी भी समाप्त हो गई है।

कई समाजों में मृत्यु भोज (खरच काट्टा) का रिवाज समाप्त होता जा रहा है। पूरे परगने को मृत्यु भोज देने के स्थान पर अब तेरह ब्राह्मण; वृद्धजन अथवा विकलांगों को भोजन कराने की परम्परा का सूत्रपात हुआ है। युवजन की मृत्यु पर भोज का आयोजन घरवालों के लिए कितना कष्टदायी होता होगा, इसकी पीड़ा को वे ही लोग जान सकते हैं, जिन पर इस तरह की विपदा आ पड़ती है। ऐसे में मृत्यु भोज की परम्परा एक अतिरिक्त बोझ की तरह हो जाती है, इसलिए विवेकशील लोगों ने इससे बचने के उपाय कर लिये हैं। निमाड़ में अभी कई समाजों में मृत्यु भोज प्रारम्भ है। मृत्यु एक अनिवार्य सत्य है। जन्म और मृत्यु के अवसर प्रत्येक घर में आते-जाते हैं। दसा कर्म घर और आत्मशुद्धि के साथ गतात्मा की शांति के लिए किया जाने वाला अन्तिम संस्कार है। मृत्यु के अवसर पर कुटुम्बियों द्वारा बाल देने की प्रथा है। कई समाजों में आजकल बाल देने की परम्परा समाप्त हो गई है। अब केवल अग्नि देने वाले पुत्र द्वारा बाल दिये जाते हैं। संस्कार के समय की जाने वाली औपचारिकताओं को निभाने अथवा न निभाने से संस्कार की हानि नहीं होती। किसी के मानने, न मानने से भी संस्कार की हानि नहीं होती। फिर भी लोकमनीषा में संस्कार की सार्वभौमिकता बनी रहती है। इसलिए संस्कार के विलुप्त होने अथवा नवाचार में किसी प्रकार का समाज में कभी हो-हल्ला नहीं होता। संस्कार चुपचाप लोकाचार में अपने काम करते रहते हैं। लोकाचार अवसर विशेष पर किये जाते हैं; तब संस्कार प्रकट हो जाते हैं। लोकाचार और संस्कार के अस्तित्त्व को बचाने में स्त्रियों की सबसे प्रमुख भूमिका होती है। संस्कार बनाने में भी स्त्रियों का हाथ होता है।

निमाड़ में विवाह संस्कार की बहुत-सी रस्में विलुप्त होती जा रही हैं। आजकल के विवाह अत्यन्त संक्षिप्त किन्तु खर्चीले होने लगे हैं। पहले जैसा आज किसी के पास समय नहीं है। पहले आठ-पन्द्रह दिन तक रिश्तेदार एक विवाह में अपनी भागीदारी निभाते थे। पहले विवाह ग्यारह, नौ, सात अथवा पाँच दिन के होते थे, फिर तीन दिन के विवाह हुए। अब केवल चौबीस घण्टे का विवाह समारोह हो गया है।

विवाह की संक्षिप्तता के कारण आजकल रिश्तेदारों से मिलने–मिलाने का अवसर नहीं होता। न तन–मन की बातें होती हैं और न एक दूसरे के हाल–चाल ज्ञात होते हैं। विवाह अधिक घुलने–मिलने और नजदीक आने के अवसर प्रदान करता था, वह अवसर हाथ से चला गया। पहले एक विवाह में कई नये रिश्ते हो जाते थे।

पहले दूल्हा–दुल्हन को कई दिनों तक हल्दी उबटन से नहलाया जाता था, इससे उनमें एक अनूठी कांति और सुवास पैदा होती थी, लेकिन अब केवल अंगूठे पर हल्दी लगाकर कार्य सम्पन्न कर लिया जाता है। पहले दूल्हे को 'वागा' पहनाकर 'दूल्हे राजा' की उपाधि से सम्बोधित किया जाता था, आजकल दूल्हे–दुल्हन सादे कपड़े पहनने में विश्वास करते हैं।

पहले गुणी–घुघरी पूरे गाँव में रिश्तेदारों के यहाँ बाँटी जाती थी, आजकल यह परिपाटी पूरी तरह बन्द हो गई है। मामा पक्ष की ओर से कुँवारी देने की प्रथा समाप्त हो गई है। 'कटासले' की चार साड़ियों का रिवाज समाप्त हो गया है। लड़के वालों की तरफ से रूखट की 'पंगती' बंद हो गई है। 'रतनगाखर्‍या' प्रथा समाप्त हो गई। इसमें वर–वधू पक्ष मिलकर भोज देता था। मंडप के दिन जुवार का रोटा और अम्बाड़ी की भाजी बनना लगभग बंद हो गया है, जो निमाड़ की संस्कृति की खास पहिचान है। विवाह में माता पूजन का कार्य अति संक्षिप्त हो गया है, क्योंकि आजकल सामूहिक विवाह होने लगे हैं।

'जवल्या' साड़ी का चलन समाप्त हुआ है। मसरू का लहंगा अब विवाह में देखने को नहीं मिलता। दूल्हा–दुल्हन के बाने जीमाने की प्रथा प्राय: समाप्त हो गई है। इसी के साथ 'बाना फिराने' का आग्रह भी समाप्त हो गया है। बाना निकालना एक समय बड़ी शान–शौकत की बात थी। आजकल रेडीमेड मंडप का चलन हो गया है। पहले आम–जामुन और हरे–हरे बाँस से ही मंडप बनाया जाता था।

निमाड़ में आणा–गौणा की प्रथा लगभग समाप्त हो गई है। इसे चैत्या आणो, दिवाली आणो आदि के नाम से जाना जाता था। कंचोली और मरवट दोनों प्रथाएँ समाप्त हो गई हैं।

दूल्हा–दुल्हन के 'बटवे' लटकाने का रिवाज समाप्त सा हो गया है, जिसमें लौंग, इलायची, सौंफ, कटी सुपारी, मिश्री भरी होती थी। बकई अथवा कटार रखना भी निमित्त मात्र हो गया है। निवाली गाने की प्रथा बहुत कम होती जा रही है। ऐसी निवालियों का चलन लगभग समाप्त हो गया है, जिनका उत्तर भी पहेली में ही देना पड़ता था। डेल पर साती भरने का रिवाज समाप्तप्राय है। कटासले की साड़ी, पुआ बनाना, नकटोरा का खेल आदि प्रथाएँ विवाह से गायब हो गई हैं।

विलुप्त होने वाले लोकाचारों और संस्कारों की लम्बी फेहरिश्त हो सकती है, लेकिन अभी–भी समाज में महत्त्वपूर्ण अनेक संस्कार अनुष्ठान और लोकाचार शेष हैं, जिनके सहारे हमारी संस्कृति सजीव है, संवेदनशील है।

जन्म संस्कार

जन्म जीवन की एक असाधारण घटना है। जन्म का मतलब एक जीव का जगत में पदार्पण है। गरीब हो, अमीर हो, सबके लिये जन्म एक उत्सव है, इसलिए लोक में उसे संस्कारों में प्रतिष्ठित किया गया है। हमारे यहाँ सोलह संस्कार की चर्चा होती है, जो गर्भाधान से लगाकर मृत्यु पर्यन्त चलते रहते हैं- गर्भाधान, पुंसवन, सीमंत, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, वपन, विद्यारंभ, कर्ण भेदन, उपनयन, वेदारंभ, केशान्त, समावर्तन, विवाह और अन्तिम संस्कार।

ये सोलह संस्कार किसी न किसी अनुष्ठान के साथ समारोहपूर्वक किये जाते हैं। जन्म के पूर्व से लगाकर युवावस्था तक संस्कारों की कड़ियाँ एक के बाद एक ऐसी जुड़ी हैं, जैसे माला में रूद्राक्ष। विवाह के पश्चात् सीधे अन्तिम संस्कार की बारी आती है, जिसका आना सुनिश्चित है। संस्कार यहाँ एक आनुष्ठानिक क्रिया के रूप में संचालित होते हैं। निमाड़ में प्रथम प्रसव मायके में किये जाने की परिपाटी है। पर, गर्भाधान के सात माह स्त्री को ससुराल में ही बिताने पड़ते हैं। प्रथम बार गर्भधारण का अर्थ स्त्री के माँ बनने की प्रक्रिया और घर में नवागन्तुक शिशु का आना है। गर्भधारण की सूचना मात्र से घर में खुशियों का ठिकाना नहीं रहता। गर्भाधान एक पवित्र संस्कार है, जिसके माध्यम से सन्तति की प्राप्ति होती है। शास्त्र में कहा गया है- 'गर्भस्य आद्यानं वीर्य स्थापनं यस्मिन् वा कर्मणा तत् गर्भाधानम्।' गर्भ में वीर्य का स्थापन ही गर्भाधान संस्कार है। गर्भ में वीर्य का प्रतिस्थापन 'पुँसवन' है, इसे भी संस्कार में शामिल किया गया है। सोलह शृँगारों में बहुत से संस्कार निमाड़ में नहीं किये जाते, जैसे- पुंसवन, सीमन्त, वपन, केशान्त, समावर्तन आदि। इन संस्कार के रूप इतने संक्षिप्त हो गये हैं कि उनके साथ किये जाने वाले क्रिया, लोकाचार, अनुष्ठान विलुप्त हो गये हैं या उन्हें मुख्य संस्कारों में मिला दिया गया है।

सातवें या कहीं-कहीं नवें माह के उजले पक्ष में 'अगरनी' अर्थात् गोद भराई की रस्म पूरी की जाती है। इसे 'खोळ' या 'खोळो भरणू' कहा जाता है। अगरनी पुंसवन संस्कार ही है। पुंसवन वीर्य प्रस्थापना का उत्सव है। अगरनी का मुहूर्त पंडित से पूछा जाता है। बहू के माता-पिता, भाई-भाभी आदि को विशेष रूप से आमंत्रित किया जाता है। ये लोग भी उत्साह से भरकर बहन-बेटी के लिए कपड़े, गोद भराई की सामग्री लाते हैं। और रिश्तेदारों को भी अगरनी में आने का निमंत्रण दिया जाता है।

अगरनी के दिन गर्भवती सुबह से स्नानादि कर नये वस्त्राभूषण धारण करती है। यह उसके जीवन का सबसे शुभ दिन होता है। उसके पूरे मस्तक पर कुंकुम चावल से 'मरवट' भरी जाती है। मरवट दो अवसरों पर भरी जाती है, एक- विवाह में लड़की की विदाई के समय और दो- अगरनी के समय। मुहूर्त के समयानुसार गर्भवती को आसन पर बिठाया जाता है। मोहल्ले की सारी स्त्रियों को आमंत्रित किया जाता है। सारी स्त्रियाँ और रिश्तेदार आदि 'अगरनी' को घेरकर बैठ जाते हैं। गर्भवती महिला को चार सुहासिनें कुंकुम चावल से बधाती हैं। मस्तक पर तिलक अथवा बिंदी लगाने को 'बधाना' कहते हैं। बधाने से पूर्व सुहासिन की गोद में नारियल देने का

रिवाज़ है। गोद भराई में पाँच मुट्ठी गेहूँ या चावल, सूखा नारियल, बिजौरा, खारिक, बादाम, फल, मिठाई वस्त्रादि उसके आँचल में अनुष्ठान के साथ डाला जाता है। इधर महिलाएँ सामूहिक स्वर में अगरनी गीत गाती हैं। अगरनी गीतों में नवागत शिशु के आने की खुशी और देवी-देवताओं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन होता है। हास-विलास, व्यंग्य-विनोद जन्म गीतों का एक खास विषय होता है। गर्भवती का मान-सम्मान और अधिक बढ़ जाता है। अगरनी प्रजनन की पूजा की प्रतिष्ठा का अवसर है। गर्भवती को अगरनी के बाद 'मायके' ले जाते हैं, वहीं उसकी प्रथम प्रसूति होती है। अगरनी गीतों के साथ 'बधावा' गीत भी गाये जाते हैं।

जन्म होने पर गुड़ बटाई अथवा शकर बटाई रस्म होती है। गुड़ या शकर एक तरह की मिठास का बाँटना है। खुशियों का बाँटना है। जन्म के दिन ऐसी कोई रस्म नहीं की जाती है। लेकिन उस दिन रिश्तेदारों के घर के सामने बाजे बजवाने का रिवाज़ आज भी कहीं-कहीं देखने को मिलता है। घरवालों की तरफ से बाजेवालों को नेग वस्त्रादि दिये जाते हैं। इसके पश्चात् पाँचवे दिन 'पाँचवी' और छठे दिन 'छठी' पूजी जाती है। कोई पाँचवी पूजते हैं, कोई छठी पूजते हैं, जैसा जिस जाति में रिवाज़ हो, दोनों पूजा एक ही हैं। मूल नक्षत्र में उत्पन्न शिशु का पिता 'मूल ग्यारी' करने तक शिशु का मुँह नहीं देखता। मूल ग्यारी में शिशु का मुँह प्रथम बार तेल या घी में दिखाया जाता है।

छठी माता शिशु का भाग्य लिखने वाली देवी हैं। कहते हैं छह महीने तक बच्चे को वही नींद में हँसाती-रुलाती और खिलाती हैं। इस अवस्था में बालक छठी माता से सांकेतिक भाषा में बातें करता है, ऐसी मान्यता है। इस मान्यता के पीछे शिशु पूर्व जन्म के उन स्वप्नों को देखता है, जो उसकी स्मृतियों में साथ आये हैं। शिशु छह महीने इसी में मगन रहता है।

छठी माता की हल्दी-कुंकुम से एक बड़े लकड़ी के पाट पर आकृति उकेरी जाती है। मूल रेखांकन हल्दी से किया जाता है, फिर उस पर कुंकुम की रेखाएँ डालते हैं, जिसे छठी माता कहते हैं। छठी माता की पुतली के पास 'कंकर की गौर' रखी जाती है, जो पार्वती का प्रतीक है। बच्चे को स्नान कराया जाता है। उसके हाथ और पैर में हल्दी से रंगकर पीला सूत बाँधा जाता है। जिस चौकी पर छठी माता बनाई जाती है उस पर गौर, पैसा, सुपारी, सफेद कागज, कलम-दवात रखकर प्रसूता की खटिया के नीचे रातभर रहने दिया जाता है। इसके रखे जाने का बड़ा प्रतीकात्मक अर्थ है, इस दिन छठी माता यानी बेमाता रात्रि में आकर बच्चे का भाग्य लिखती हैं। कहते हैं- छठी माता के भाग्य में लिखे लेख कभी मिटते नहीं हैं। छठी पूजा शिशु के अच्छे भाग्य लिखे जाने की शुभ कामना है। लिखने-पढ़ने का सम्बन्ध जन्म से ही हमारी परम्परा में है। इस अवसर पर पाँच सुहागिनों को भोजन कराया जाता है। प्रसूता को आज मीठी खिचड़ी बनाकर खिलाई जाती है।

इसी दिन घर की महिलाएँ जच्चा-बच्चे की आँखों में आंजने के लिए मिट्टी, आटे अथवा खिचड़ी के दीये से काजल पाड़ती हैं। काजल प्राय: गाय के घी का बनाया जाता है। शिशु की

आँख में काजल लगाने से ज्योति तो बढ़ती ही है, साथ ही काजल टीके से किसी की नजर नहीं लगती है। पाँचवी अथवा छठी पूजा के समय महिलाएँ गीत गाती हैं। इन गीतों में शिशु जन्म का आनन्द, सुख-समृद्धि और पारिवारिकता का अत्यन्त मार्मिक वर्णन मिलता है।

साउड़ वाली स्त्री यानी प्रसूता की सातवें अथवा दसवें दिन 'सौर' उठाई जाती है। सुबह से प्रसूता को नहला-धुला कर नये वस्त्र पहनाये जाते हैं। उसकी खटिया पर बिछाये सारे कपड़े बदले जाते हैं। यहाँ तक कि रस्सी की खटिया तक को धो दिया जाता है। शिशु को भी नहला कर नये वस्त्र पहनाते हैं। सौर उठाने का अर्थ सूतक समाप्त होने से है। इसके बाद प्रसूता को हर कोई छू सकता है, बच्चे को गोद में उठा सकते हैं।

शिशु के पैदा होते ही बधावा अथवा सोहर गीत गाने की होड़ लग जाती है। निमाड़ में सोहर गीतों को जच्चा गीत या बधावा कहते हैं। बधाये को जच्चा गीत भी कहते हैं। इन गीतों में खुशी का इजहार होता ही है, साथ ही श्रृंगार, हास्य-व्यंग्य के अवसरों के गीत भी गाये जाते हैं। नणद, भौजाई, पति-पत्नी में जन्म के आनन्द की घड़ी में नेगाचार आदि को लेकर चुहलबाजी के भी गीत गाये जाते हैं। जब घर में शिशु पैदा हो जाता है तो घर में नंद के लाल अथवा कौशिल्या के राम के जन्म सा आनन्द छा जाता है। लोक में प्रत्येक घर में पैदा होने वाला पुत्र राम और कृष्ण हैं, पुत्री होने पर वह लक्ष्मी है, सीता है। पुत्र हो अथवा पुत्री, दोनों के आने से घर खुशियों से भर जाता है। बधावे खूब गाये जाते हैं।

जलवाय पूजन

प्रसूता द्वारा जल और वायु के पूजन का लोक विधान है। जलवायु से जलवाय हुआ है। शिशु जन्म के बारहवें, तेरहवें अथवा इक्कीसवें दिन 'जलवाय' पूजन किया जाता है। इसे कहीं 'कुआँ पूजन' भी कहा जाता है। यथार्थ यह है कि जलवाय पूजन उस अस्तित्त्व की पूजा है, जिसके बिना जीवन सम्भव नहीं है। उस अस्तित्त्व के इन प्राणदायी तत्त्वों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन का इससे बढ़कर और कौन-सा शुभ अवसर हो सकता है ? जब घर में एक नवजात शिशु आया है। जलवाय पूजन का जच्चा के लिए पहला दिन होता है, जब वह घर से बाहर निकलती है और जल तथा वायु के सम्पर्क में आती है। प्रसूता के शरीर में शिशु जन्म के बाद कई परिवर्तन होते हैं। उसे जलवायु के साथ सम करने के लिए 'जलवाय' पूजन का प्रतीकात्मक अनुष्ठान किया गया है। मातृत्व स्त्री का चरम लक्ष्य और सौभाग्य भी है। सन्तान उत्पत्ति से ही स्त्री पूर्णत्व को प्राप्त होती है। इसके लिए समस्त मातृदेवियों के प्रति कृतज्ञता स्वाभाविक है। जल में अथवा जल के समीप प्राय: मातृदेवियों का निवास माना जाता है। इसलिए प्रसूता मुहूर्त के अनुसार शाम के समय घर से समारोहपूर्वक निकलकर सबसे पहले जलदेवी की पूजा करती है। आजकल घर में जल रखने की जगह पणियारे की पूजा का चलन देखा जाता है। जल ही जीवन है और वायु प्राण है। जलवाय पूजन में प्रसूता सम्पूर्ण श्रृँगार करके सिर पर कलश रखकर जलपूजन के लिए किसी कुएँ, तालाब अथवा सरिता के तट तक उसे ले जाया जाता है। पीछे चलती महिलाएँ

आरती लिए जलवाय के गीत गाती हैं। वहाँ पहुँचकर जमीन लीपकर चौक बनाया जाता है, चौक के पास हल्दी से जल देवी की आकृति बनाई जाती है, जो जल देवी माता परमेश्वरी का प्रतीक होता है। उसी पर कलश रखकर सात आटे के दीये जलाकर हल्दी, कुंकुम, चावल से पूजा की जाती है। यहीं पर सात पापड़ा, सात पान, पैसा, सुपारी, नाड़ा, गुड़, घुघरी, कपड़ा, सात प्रकार के धान के बाँकले चढ़ाये जाते हैं। घर आकर प्रसूता दीवार पर खुशियाली के लिए हल्दी के पाँच 'हाथे' लगाती है। इस दिन जल देवी के लिए गेहूँ की घुघरी खास तौर से बनाई जाती है। 'घुघरी' उबले मीठे गेहूँ होते हैं। इसे बच्चों और सबको प्रसाद स्वरूप दिया जाता है। 'जलवाय' में रात के आठ बजे शिशु को झोली में सुलाकर बच्चे उसे झूला देकर उसके नीचे से तीन बार निकलते हैं। निकलते समय बच्चों को 'घुघरी' खाने के लिए दी जाती है। बच्चे शिशु को यह कहते हुए निकलते हैं कि 'चल भाई खेलणऽ चलां,' चल भाई स्कूल चलां, जीवन की व्यवहारिक शिक्षा की शुरुआत कितनी स्वप्नवत् है?

इसी दिन शिशु का नामकरण संस्कार भी किया जाता है। झोली के नीचे से निकलते समय नवजात शिशु का वही नाम पुकारा जाता है, जो रखना है। 'हऊं थारी घुघरी खायेल छे' कहावत यहीं से बनी है। शिशु का नाम पंडित से पूछकर लग्न राशि के आधार पर रखने की परम्परा समूचे निमाड़ में है। नाम प्रायः देवी-देवताओं अथवा वार-तिवार के अनुसार भी रखे जाते हैं।

पगल्या

सूतक निकलने के पश्चात् 'पगल्या' भेजने का संस्कार किया जाता है। 'पगल्या' का मतलब शिशु जन्म का शुभ संदेश पत्र से है। पगल्या कोरे कागज पर शिशु के दो चरणचिह्न मांडे जाते हैं। पगल्या लाल या गुलाबी रंग से लिखे जाते हैं। पगल्या पंडित द्वारा भी लिखे जाते हैं। पग से पगल्या बना है। लोक में चरण पूजने का आम रिवाज़ है। कई मठ-मंदिरों में पत्थर के पदचिह्नों की ही पूजा की जाती है। पैर हमारे लोक में बहुत शुभ माने जाते हैं। शिशु के पदचिह्न (पगल्या) प्रतीकात्मक होते हैं। पैरों का रेखांकन नवागत का संकेत है। पगल्या का सम्पूर्ण चित्र बन जाने के बाद उसे बधाते हैं यानी उसकी पूजा की जाती है। चार सुहागिनें पगल्या हल्दी, कुंकुम, चावल से बधाती हैं। इस अवसर पर महिलाएँ मंगल गीत गाती हैं। शक्कर बाँटी जाती है। पगल्या के साथ हल्दी की गाँठ, सवा रुपया रखा जाता है। पगल्या नाई, ब्राह्मण या घर का कोई भी व्यक्ति ले जाता है। प्रथम पगल्या मायके से ससुराल में भेजे जाते हैं। वहाँ भी 'पगल्या' का बधावा होता है, तब भी गीत गाये जाते हैं।

अन्नप्राशन

चौथे अथवा पाँचवें माह में बच्चे का अन्न से मुँह झूठा करवाया जाता है। कोई अच्छा दिन या मुहूर्त निकालकर सुबह से अन्नप्राशन संस्कार किया जाता है। कोई-कोई कुलदेवी पूजन दिन नवरात्रि में अन्नप्राशन करवाते हैं। जिसमें देवी प्रसाद खिलाया जाता है। अन्नप्राशन में नागरवेली

पान पर चाँदी का सिक्का रखते हैं, उस पर खीर-पूड़ी, प्रसाद रखकर बच्चे के मुँह में छुवाते हैं और कुछ थोड़ा-बहुत अन्न सिक्के से ही खिलाते हैं। कहीं-कहीं पंडित को बुलाकर विधि-विधान से अन्नप्राशन क्रिया की जाती है।

कर्णछेदन

कर्णछेदन शिशु के छह या सात माह की उम्र में कर दिया जाता है। कान में सोने की छोटी बाली पहना दी जाती है। यह कार्य किसी स्वर्णकार अथवा बुआ द्वारा किया जाता है। लड़कों को छह-सात वर्ष की उम्र तक बालियाँ पहने देखा जा सकता है। लड़कियों की नाक छेदन छह-सात साल की उम्र में किया जाता है। लड़कियाँ नाक में सोने अथवा चाँदी का काँटा पहनती हैं। विवाह में दुल्हन को नाक में नथ पहनाने का रिवाज़ है। ग्रामीण युवक कान में स्वर्ण मुरकी पहनना पसंद करते हैं। महिलाएँ कान में कर्णफूल, एरिंग, बाले आदि सदैव पहनती हैं। कर्णछेदन एक्युपंचर पद्धति के अनुसार शरीर को स्वस्थ रखने में सहायक होता है।

जन्म के साथ बहुत से छोटे-छोटे संस्कार किये जाते हैं। ये संस्कार शिशु के लोकव्यवहार की शिक्षा के पड़ाव हैं, जिस पर से कोरे मन वाले बालक किशोर को गुजरना पड़ता है और धीरे-धीरे लोक संज्ञान की अनुभूतियाँ उसके मन के कागज पर सदैव के लिए उतर जाती हैं। नृतत्त्व और मनोविज्ञान के अनुसार कहा गया है कि सात वर्ष तक की उम्र तक मनुष्य में जीवन के सभी संस्कार बीजवत समाहित हो जाते हैं, जो बाद में मनुष्य के शेष जीवन में विकसित होते हैं, क्योंकि सात वर्ष तक शिशु भाव शरीर की परिधि में रहता है और अनुभूतियों की सबसे गहरी चेतना को संचित करता है। यही कारण है कि लोक में संस्कारों की महत्ता जन्म से ही शुरू हो जाती है। यहाँ तक कहा गया है कि संस्कार मनुष्य के अवचेतन तक पहुँचकर उसके स्वप्न और स्मृतियों तक पहुँचते हैं।

जमाल यानी मुंडन संस्कार

जमाल मुंडन संस्कार है। प्रथम वर्ष के भीतर अथवा तीसरे वर्ष की आयु में शिशु के जमाल निकाले जाते हैं। लड़कियों का जमाल निमाड़ में प्राय: नहीं निकालते हैं, फिर भी कोई-कोई लड़की का मुंडन संस्कार करते हैं। जमाल दो रीतियों से उतारे जाते हैं, एक- सामान्य परम्परा के अनुसार, दूसरे- मान-मनौती से। सामान्य परम्परागत जमाल कहीं भी किसी भी देवी-देवता के समक्ष निकाले जा सकते हैं। मान-मनौती के जमाल किसी विशेष देवी-देवता के समक्ष समारोहपूर्वक उतारे जाते हैं। लड़कों के जमाल देवियों, भिलट बाबा, भैरू बाबा आदि के सम्मुख निकाले जाते हैं। जमाल प्राय: बुआ की गोदी में निकाले जाते हैं, उसे नेग दिया जाता है। नेंग में साड़ी, गहना आदि होते हैं। बच्चे के सिर के बाल जमाल में कैंची से काटे जाते हैं। इसके पूर्व देवी-देवता की पूजा की जाती है। मान-मनौती के जमाल में मान की वस्तुएँ देवी को चढ़ाई जाती हैं- जैसे 'पाँच नायळ की माळ', देवी को साड़ी ओढ़ाना आदि। कहीं-कहीं बलि प्रथा का भी चलन है। जमाल निकालते समय जमाल के गीत गाये जाते हैं। प्रथम बार में शिशु के माथे के

सभी बाल काटे जाते हैं। चोटी भी नहीं रखी जाती। बाद में कभी मुंडन होता है तो तब चोटी रखना जरूरी है। शिखा हिन्दुत्व का प्रतीक चिह्न है। जमाल में काटे गये बालों को जमीन पर गिरने नहीं देते। सारे बाल बुआ अपनी साड़ी के आँचल में झेलती है। फिर सारे बाल एक लाल कपड़े में नारियल, पैसा-सुपारी के साथ बाँधकर किसी पवित्र नदी में विसर्जित कर दिये जाते हैं। निमाड़ में प्राय: नर्मदा में जमाल सिराये जाते हैं। जमाल निकलने वाले शिशु को रिश्तेदार नये वस्त्र भेंट करते हैं। मुंडन संस्कार में जाति बन्धु मित्रों को यथाशक्ति सहभोज भी कराया जाता है।

मुंडन करने के पूर्व देवी-देवता की स्नानादि कर पूजा की जाती है, फिर जमाल निकालने के पश्चात् फिर बालक को स्नान कराया जाता है। सिर के ऊपर कुंकुम से सांतिया बना दिया जाता है। देवी-देवता की आरती पूजा की जाती है।

जनेऊ संस्कार

जनेऊ संस्कार का ब्राह्मण परिवारों में सबसे अधिक महत्त्व है। अन्य जातियों में जनेऊ धारण करने की परम्परा देखी जाती है। यज्ञोपवीत संस्कार सात से बारह वर्ष की उम्र तक किया जाता रहा है, लेकिन आजकल विवाह के समय जनेऊ संस्कार सिमट कर रह गया। जनेऊ संस्कार से ब्राह्मण का दूसरा जन्म माना जाता है, इसलिए उसे 'द्विज' भी कहा जाता है। परम्परा में जात कर्म के हिसाब से 'बटुक' का पूरा विवाह ही होता है, केवल लग्न नहीं होते। यज्ञोपवीत बहुत खर्चीला संस्कार है। लेकिन ब्राह्मण परिवारों में इसकी अनिवार्यता है।

जनेऊ संस्कार में जनेऊ गीत गाने की प्रथा है। बटुक को रिश्तेदारों तथा मित्रों की ओर से नेग वस्त्रादि भेंट किये जाते हैं। यज्ञोपवीत ऊँची शिक्षा ग्रहण करने का एक पारम्परिक सामाजिक अनुबन्ध है, इसलिए यज्ञोपवीत संस्कार में गाये जाने वाले गीतों में काशी में पढ़ने जाने का ज़िक्र होता है। बटुक को बाने बैठाया जाता है, हल्दी उबटन से नहलाया जाता है, चार सुहागिनें बधाती हैं। मंडप स्थापना होती है। उसे आम-जामुन के पत्तों से आच्छादित किया जाता है। गोतरेज यानी कुलदेवी का पूजन होता है। बटुक का मुंडन होता है तब यज्ञ-याज्ञ, विधि-विधान के अनुसार विष्णु गाँठ की जनेऊ बटुक को पंडितों द्वारा पहनाई जाती है। जनेऊ के तीन धागे होते हैं, जो ब्रह्मा, विष्णु और महादेव के प्रतीक हैं, तीन गुण रजस, तमस और सात्विक, तीन अवस्थाएँ बचपन, जवानी और बुढ़ापे, तीन काल भूत, भविष्य और वर्तमान का प्रतीक हैं। जनेऊ धारण करते ही बटुक पूर्ण ब्राह्मण हो जाता है, उसे ब्राह्मणत्व का जीवनभर सम्पूर्ण निर्वाह करना होता है। प्रतिदिन स्नान, ध्यान और मल-मूत्र त्याग करते समय जनेऊ कान पर तीन बार लपेटना जरूरी है। युवा वर्ग अब इन बातों पर भरोसा बहुत कम करने लगा है।

जनेऊ संस्कार के पूर्व पट्टी-पूजा का रिवाज़ है, जो लगभग पाँच या छह वर्ष की उम्र में किया जाता है, जो शिक्षा आरम्भ का संस्कार है। पट्टी पूजा विद्या की देवी सरस्वती पूजा ही है। पट्टी पढ़ने-लिखने का प्रतीक है। हजारों वर्ष से बालक की शिक्षा का आधार पट्टी और पेन रही

है, उसे भी भारतीय लोक मनीषा ने एक संस्कार के रूप में स्वीकार कर लिया है। जनेऊ संस्कार के बाद उच्च शिक्षा ग्रहण करने यानी वेद उपनिषद् की शिक्षा के लिये सम्पूर्ण भारत में प्रथम विद्या के केन्द्र 'काशी' में भेजने की परम्परा को एक संस्कार में प्रतिष्ठित किया गया है, जिसे 'वेदारंभ' संस्कार कहा जाता है।

विवाह संस्कार

विवाह लोक का सबसे बड़ा संस्कार है। विवाह प्रजनन का प्रतीक है। स्त्री और पुरुष का पवित्र दाम्पत्य जीवन में पदार्पण का नाम विवाह है। विवाह दो शरीर ही नहीं, दो आत्माओं का मिलन है। विवाह समाज का एक अनिवार्य अंग है। आदिम समय से विवाह संस्था अथवा संस्कार की नींव पड़ गई थी, तब से लगाकर अब तक अलग-अलग जाति-संस्कृति में विवाह संस्कार के कई रूप और रंग विकसित हुए हैं। लेकिन विवाह का मूल मकसद सन्तति का विस्तार ही रहा है। विवाह एक मांगलिक उत्सव है, इसलिए विवाह में हर अवसर के मंगल गीत गाये जाते हैं। पहले दिन से लगाकर आखिरी दिन तक विवाह की मांगलिकता और आनन्द का वातावरण घर में बना रहता है। यहाँ तक कि जिस घर में विवाह होने वाला होता है, वहाँ साल-छह महीने पहले से गहमा-गहमी देखी जा सकती है। घर के लोग विवाह की तैयारी में जुट जाते हैं। आवश्यक सामग्रियाँ एकत्र करने में लग जाते हैं।

लग्न शोधन

सबसे पहले लग्न की शुभ तिथि पंडित ज्योतिषी से पूछी जाती है, इसका भी गीत होता है। तिथि तय होने पर लग्न की टीप लड़की वालों के यहाँ अनुष्ठानपूर्वक भेजी जाती है। तब वर-वधू दोनों पक्ष विवाह अच्छी तरह से निर्विघ्न सम्पन्न हो जाये, इस विचार के साथ दिन-रात तैयारियों में व्यस्त हो जाते हैं।

आमंत्रण

विवाह में आमंत्रण लग्न पत्रिका का कार्य लगभग एक मास-पन्द्रह दिन पूर्व कर लिया जाता है। जिसे सभी मित्र-रिश्तेदारों के यहाँ भेजा जाता है। पहली पत्रिका गणेशजी के नाम लिखी जाती है। शुभ विवाह में गणेशजी प्रथम आने वाले अतिथि होते हैं। पहले लाल या पीले चावल रंगकर 'निवते' दिये जाने का रिवाज था।

गणेश पूजा

विवाह में सबसे पहले गणेश पूजा होती है। गणेश पूजा के पूर्व विवाह घर में सबसे पहले 'बड़ी तोड़ी' जाती है यानी मूंग की दाल की बेसन बड़ी बनाई जाती है। बड़ी तोड़ते समय महिलाएँ गणेश वंदना के गीत गाती हैं। गणेशजी लोक के मांगलिक देवता हैं। सभी देवताओं में उनकी पूजा सर्वप्रथम की जाती है। गणेश पूजा के बिना कोई शुभ कार्य शुरू नहीं होता।

खलमाटी

गणेश पूजन प्राय: प्रात: समय होता है और उसके बाद 'खलमाटी' का अनुष्ठान होता है। 'चूल्हा कोठी' का मुहूर्त्त पंडित द्वारा लगभग आठ दिन पूर्व निकाला जाता है। तब दोनों पक्षों की स्त्रियाँ कच्ची मिट्टी की छोटी चूल और कोठियाँ ढक्कन सहित बनाती हैं। कुछ बड़े चूल्हे भी मुहूर्त्त में बनाये जाते हैं। खलमाटी का शुद्ध रूप 'खनमाटी' है जिसका अर्थ मिट्टी का खनना या खोदना है। निमाड़ी में वह खलमाटी के रूढ़ार्थ में प्रतिष्ठित हो गया है। 'खल' का यहाँ कोई अर्थ नहीं है, फिर भी उसे अनुष्ठान में मुख-सुख की वजह से शामिल किया गया है। 'खलमाटी' उस मिट्टी, उस धरती की पूजा है, जो अपनी कोख से अन्न-धन सब कुछ देती है। पहले उसी की पूजा होनी चाहिए। खनमाटी के लिये हाथ में टोकनी और आरती लिये पाँच सुहासिन औरतों के साथ गीत गाते हुए घर से थोड़ी दूर किसी मैदान या खेत के समीप जाती हैं, आगे-आगे ढोल बजता जाता है। साथ में शुभ काम में प्रथम सम्मानित और पूजित दामाद होता है, जिसके हाथ में 'आलतीयुक्त पिराणा' होता है। वहाँ पहुँचकर जमीन पर पानी, गोबर से थोड़ा लीपकर उस पर आटे का चौक बनाया जाता है, उस पर आलती रखकर हल्दी कुंकुम से पूजा की जाती है। दामाद को तिलक लगाकर 'वधाया' जाता है। नेग स्वरूप दामाद आलती से थोड़ी मिट्टी उसी जगह से खोदता है, फिर कुदाली से मिट्टी थोड़ी ज्यादा खोदकर टोकनियों में भर ली जाती है। इस 'खलमाटी' को टोकनियों में भरकर उसे सिर पर रखकर गाजे-बाजे के साथ वापस आँगन में लाई जाती है। इसी से मुहूर्त्त के चूल्हे और कोठी बनाये जाते हैं। लड़के की नौ और लड़की की पाँच चूल्हे और कोठी बनाये जाने का रिवाज है। ये चूल्हा कोठी सात फेरे यानी चवरी के समय मंडप में रखे जाते हैं। माटी खनौनी गीत पहला बधावा है।

पाट बैठना

दूल्हा-दूल्हन को जिस दिन हल्दी लगाई जाती है, उसे 'पाट बैठना' कहते हैं। रात्रि के प्रथम प्रहर में लड़के-लड़की को हल्दी लगाई जाती है। हल्दी केवल पैर के दाहिने अंगूठे पर लगाई जाती है। पाट का गीत गाया जाता है।

तेल चढ़ाना

दूसरे दिन दूल्हा-दुल्हन को तेल चढ़ाया जाता है। चार सुहासनें कटोरी में इत्र लेकर नागरवेली पान से दूल्हा-दुल्हन के दाहिने अंगूठे पर इत्र से सने दो पान लगाते हैं। फिर गीत की पंक्तियों के साथ अंगूठे, घुटने, हाथों, कंधे और अन्त में सिर पर पान छुवाये जाते हैं और वहाँ सिर पर रख देते हैं। यहीं पर इसके बाद सुहासिनों से उसके पति का नाम पूछने की रस्म होती है, जो एक तरह की स्वस्थ हँसी-मजाक की रस्म है। तेल चढ़ाने के पश्चात् रात्रि में दूल्हा-दुल्हन को 'वादी' भरी जाती है। 'वादी' तेल में कुंकुम घोलकर दो की पंक्ति में ऊंगलियों के सहारे जनेऊनुमा क्रास में शरीर पर 'वादी' भरी जाती है। सुहासिनें नजर से बचाने के लिये नमक बारती हैं।

स्नान

दूल्हा-दुल्हन को चिक्सा उबटन से चार सुहासिनें सुबह शाम आंगन में नहलाती हैं। चिक्सा एक प्रकार का स्थानीय उबटन है, जो गेहूँ और चने के आटे में हल्दी तथा चमेली का तेल डालकर बनाया जाता है। हल्दी अलग से भी घोली जाती है। दूल्हा-दुल्हन के स्नान के समय गीत गाये जाते हैं। आँगन में ढोल बजता है। ढोली ढोल पर नहलाते समय एक अलग प्रकार की चाल बजाता है।

प्रभाती या कुकड़ा

विवाह घर में महिलाएँ ब्रह्म मुहूर्त्त में उठकर सूर्योदय के स्वागत में गीत गाती हैं। भोर में मुर्गा भी सूर्योदय की बाँग देकर सबको सूचना देता है। इन गीतों को प्रभाती अथवा कुकड़ा गीत कहते हैं। जिसमें घर के सभी लोगों को जल्दी उठकर नहा धोकर गौ दान आदि काम करने का निवेदन होता है।

बना-बनी

विवाह में दूल्हा-दुल्हन के पाट बैठने के साथ ही घर की युवा लड़कियाँ और अन्य महिलाएँ बना-बनी के गीत गाना शुरू कर देती हैं। बना-बनी गीतों में दूल्हा-दुल्हन की सुन्दरता और गुणों का वर्णन बढ़ा-चढ़ाकर किया जाता है। सुबह-शाम बना-बनी गाने का रिवाज है।

बाना

दूल्हा-दुल्हन का 'बाना' निकाला जाता है। दूल्हे का बाना सजे हुए घोड़े पर और दुल्हन का बाना सजी हुई बग्गी अथवा कार आदि पर बैण्ड बाजे के साथ पूरे शहर में निकाला जाता है। इस समय दूल्हे-दुल्हन का विशेष श्रृंगार किया जाता है। बाने के पीछे-पीछे सजी-धजी महिलाएँ बाने के गीत गाती हुई, हाथ में आरती लिये चलती हैं। बाने में गैस बत्ती से खूब प्रकाश किया जाता है।

मंडप

मंडप विवाह की सबसे महत्त्वपूर्ण गतिविधि है। मंडप छाने का मुहूर्त्त प्रायः सुबह का होता है। मंडप के लिये आम, जामुन की लकड़ी और पत्ते, पाँच हरे बाँस लिये जाते हैं। एक बाँस 'मर्दली' के लिये होता है। चार बाँस चार दिशाओं में गाड़े जाते हैं। उस पर आड़े-खड़े बाँस के टुकड़े बाँधे जाते हैं। मंडप पर तूवर काठी बिछाई जाती है, उस पर आम, जामुन के पत्ते छाये जाते हैं। चार बाँसों में एक के साथ एक दिशा में जामुन की लकड़ी भी गाड़ी जाती है। गड्ढे खोदकर उनकी पूजा की जाती है। पूजा चार सुहासिनें करती हैं, फिर बाँसों की पूजा की जाती है। बाँस वंशवृद्धि का प्रतीक है। चारों कोनों पर चार मंडप गाड़ने वाले होते हैं। उनको भी बधाया जाता है। नेऋत्य दिशा में 'मर्दली' और 'माणिखम्ब' भी अनुष्ठान के साथ गाड़ा जाता है। मर्दली

पर एक लाल कपड़े का ध्वज बाँधकर उसे मंडप से ऊँचा बाँधा जाता है। 'माणिक खम्ब' दामाद के हाथों रोपित होता है, यह एक लकड़ी का दीप स्तम्भ होता है। माणिक खम्ब के नीचे गेहूँ बोये जाते समय महिलाएँ मंडप के गीत गाती हैं। ढोली ढोल बजाता है। मंडप आच्छादित हो जाने के बाद मंडप में ही अमाड़ी की भाजी और जुवार के रोटे का भोजन मंडप छाने वालों को कराया जाता है। मंडप में इस समय गुड़ खोपरे का प्रसाद बाँटा जाता है।

मांडवा सूतरना

दूसरे दिन संउदारे से 'मांडवा सूत्रा' जाता है। कच्चे सूत और नाड़े से सात बार मंडप को ऊपर की ओर लपेटा जाता है। मांडवा सूतरने का गीत महिलाओं द्वारा गाया जाता है। सूत और नाड़े से मंडप को बांधने से मतलब सात फेरों के बंधन से है। मंडप के बीचोंबीच आटे से चौक पूर कर उस पर कलश की प्रतिष्ठा की जाती है। कलश को पैर न लगे, इसके लिये उसे बाँस की बड़ी नई टोकनी से ढँक दिया जाता है। तांबे के कलश में पानी, नागरवेली पान, नारियल और नाड़ा बाँधकर रखा जाता है। कलश में एक रुपया सिक्का भी डाला जाता है। चौक के ऊपर भी पान, पैसा, सुपारी और गणेश की मूर्ति रखी जाती है। मंडप आँगन में किया जाता है। मंडप बन जाने के बाद उसे गाय के गोबर से लीपा जाता है। मंडप में सुहासिन और वरमाय ही आ जा सकते हैं।

कुलदेवी पूजन

मंडप के दिन, रात्रि में कुटुम्बी गोतरेज अथवा कुलदेवी का पूजन करते हैं। कुलदेवी पूजा 'अबोट' में की जाती है। अबोट यानी पूरी पवित्रता के साथ। इस समय भी गोतरेज गीत गाये जाते हैं। कुलदेवी का भित्ति चित्र बनाया जाता है। उसकी पूजा घी, गुड़, कुंकुम, हल्दी से की जाती है। कुलदेवी को 'ईरत' भी कहते हैं।

वर निकासी

बारात जाने के पहले दूल्हे का श्रृँगार और वर निकासी की जाती है। दूल्हे को नया कपड़ा पहनाया जाता है। नये जूते पहनाये जाते हैं। माथे पर टीका कंचोली लगाई जाती है। आँखों में काजल आंजा जाता है। श्रृंगारित दूल्हे को स्त्रियाँ गाते-बजाते वर निकासी करती हैं। वर निकासी का मतलब दूल्हे का ब्याह के लिये घर से निकलना है। दूल्हे को अपने घर से किसी और घर में बिठाया जाता है। जिसे 'जनवासा' कहते है। यहीं से बारात रवाना होती है।

चिगट उतारना

दूल्हे-दुल्हन दोनों के अलग-अलग समय में 'चिगट' उतारा जाता है। बाने बैठने के दिन से दूल्हा-दुल्हन के कपड़े नहीं बदले जाते, ये कपड़े हल्दी तेलादि से भरे होते हैं। ये कपड़े दूल्हे की वर निकासी के पहले और दुल्हन के लगन के पूर्व बदले जाते हैं। दुल्हन के लिये लड़की के मामा चिगट के कपड़े लाते हैं।

मामेरा

मंडप में मामेरा की रस्म बड़ी मार्मिक होती है। मामेरा मामा पक्ष के लोग बहन और जीजा के लिये कपड़े लाते हैं। बहिन के पूरे परिवार के लिये मामा यथाशक्ति कपड़े लाता है, जिसे 'कुटुमपेरावणी' कहते हैं। बहिन इस क्षण की बड़ी बेसब्री से प्रतीक्षा करती है। भाई बहिन के यहाँ मंडप में पहुँचकर उसके मायके की लाज रख लेता है।

काकण डोरा

वर निकासी के पूर्व दूल्हे के दाहिने हाथ में 'काकण डोरा' बांधा जाता है। काकण डोरा नाड़े में जायफल, लोहे की अंगूठी पिरोई हुई होती है। काकण डोरा बांधते और छोड़ते समय गीत गाये जाते हैं, जिसे निवाली कहते हैं।

पड़छन

वर निकासी के पूर्व वरमाय द्वारा दूल्हे को 'पड़छा' जाता है। 'पड़छना' एक प्रकार का परीक्षण है। पड़छने का मतलब दूल्हे की सुरक्षा से भी है। इसका मकसद किसी प्रकार की अलाय-बलाय से दूल्हे को दूर रखना है। दूल्हा मंडप में पाट पर मर्दली के सम्मुख खड़ा होता है। नाड़ा और पान से बंधे दो बाँस मंडप में रखे जाते हैं। वरमाय मंडप के अन्दर बाँसों के बीच खड़ी होती है। वरमाय 'इण्डा-पिण्डा' बराती है। यह एक तरह की तांत्रिक क्रिया है। गेहूँ के आटे और राख के 'इण्डे-पिण्डे' मुठिया बनाकर सूपे में रखकर माता दूल्हे के कन्धे से लगाकर क्रास में पीछे फेंक देती है। महिलाएँ गीत गाती जाती हैं। फिर सुपड़े को पानी छींटकर शुद्ध किया जाता है और सूपड़े के एक कोने को आँचल में दबाकर दूल्हे की नजर उतारती है। सूप को दूल्हे के पैर से मस्तक तक छुवाती है। सूप के बाद 'रवई' (मथानी) मूसल, तीर, तकली और रोयसा घास से दूल्हे को पाँच-पाँच बार 'पड़छती' है। सूप सार ग्रहण का प्रतीक है। रवई मक्खन सी स्निग्धता का प्रतीक है। मूसल कर्म का प्रतीक है, तीर सुरक्षा का प्रतीक है और तकली सेवा और स्वावलम्बन का प्रतीक है। रोयसा घास जीवों के जीवन के आधार और सुगन्ध का प्रतीक है।

बारात

बारात ठाठबाट से लड़की वालों के यहाँ पहुँचती है। पहले बारातियों को जनवासा दिया जाता है। गाजे बाजों के साथ बारात की अगवानी होती है। समधी-समधी से मिला भेंटी करते हैं। समधिन-समधिन से मिलती हैं। पुरुष एक दूसरे को मस्तक पर गुलाल लगाते हैं। जनवासे में लड़की वालों की ओर से यथाशक्ति जलपान सत्कार आदि किया जाता है। दूल्हे राजा को ससुराल पक्ष की महिलाएँ मीठे भात खिलाकर स्वागत करती हैं। आजकल ससुराल में दूल्हे का बाना निकालने का रिवाज है।

लगन

कई समाजों में चिड़िया छूने की रस्म होती है। कहीं गोधूलि बेला में मंडप में मांगलिक श्लोकों के बीच हथेला लगाकर गोरज अथवा घड़ी के लगन लगाये जाते हैं। गाँव में सूर्यास्त को मकान पर चढ़कर देखते हैं और पंडित गोधूलि बेला में लगन लगाते हैं। घड़ी के लगन पानी की घटी स्थापित कर लगाये जाते हैं। लगन में माता-पिता, भाई-भाभी, मामा-मामी, बुआ-फूफा आदि बैठते हैं। इनका लगन में हाथ लगाना भी पुण्य का काम माना जाता है। हथेला लगाते ही बाजा-बजन्तरी बज उठते हैं और लोग आपस में बातें करते हैं- 'लड़की पराई हो गई।' लड़की का विवाह 'कन्यादान' के भाव के साथ सम्पन्न किया जाता है। लगन में उपस्थित सभी लोग अक्षत फूल बरसाकर वर-वधू को आशीर्वाद देते हैं।

चवरी-भंवरी

चवरी-भंवरी लगन होने के बाद मंडप में ही की जाती है। चवरी-भंवरी का अर्थ सात फेरे हैं या सप्तपदी है। पंडित विधि-विधान से सप्तपदी करवाते हैं। चार फेरे दूल्हा आगे चलकर पूरा करता है। फिर तीन फेरे दुल्हन आगे चलकर पूरे करती है। मंडप के चारों कोनों पर मिट्टी कलशों की 'उतरेण' और जमीन में चारों तरफ बैलगाड़ी की जोड़ियाँ रखी जाती हैं। जो कृषि संस्कृति की द्योतक हैं। आजकल लगन और चवरी का कार्य एक ही रात में सम्पन्न हो जाता है और सुबह बारात को विदा कर दिया जाता है। मंडप में दूल्हा-दुल्हन अग्नि के साथ फेरे लेते हैं। दाम्पत्य जीवन में सुख-दुःख के साझीदार होते हैं। अग्नि साक्षी होती है। दूल्हा-दुल्हन पति-पत्नी के गठबंधन में सदैव के लिये बँध जाते हैं। पति-पत्नी प्रजनन के पवित्र कार्य में अपने आपको संलग्न करते हैं, विवाह का मूल उद्देश्य पूरा होता है। इसीलिए कहा जाता है- 'लाड़ा क् प्यारी लाड़ी प्यारी, बारातियों को भात प्यारो।' बारातियों, सगे-सम्बन्धियों, रिश्तेदारों, मित्रों आदि सबको लड़की वालों की ओर से सामूहिक भोज करवाया जाता है। मित्र-रिश्तेदार दुल्हन को यथाशक्ति 'दायजा' धरते हैं। चवरी-भंवरी के समय महिलाएँ भांवर के गीत गाती हैं।

विदाई

विवाह संस्कार का वह अन्तिम क्षण भी आ जाता है, जब लड़की की विदाई की जाती है। विदाई का क्षण आते-आते लड़की वालों के पैर थकते से दिखाई देते हैं। आखिर लाड़ी की 'वरमाय' मंडप में वर-वधू को 'पड़छन' करती है। विदाई का अवसर नजदीक होता है। महिलाएँ 'पड़छन' के गीत गाती हैं। सबके मन में एक उदासी सी है। दुल्हन की सभी सखी-सहेलियाँ इकट्ठी हो जाती हैं। 'पड़छन' के बाद लड़के के परिवार वाले दुल्हन के 'खोले' में नेग देकर विवाहित कन्या के पैर पड़ते हैं। ठाले मिलते हैं। भुज भेंट करते हैं। पड़छन के पूर्व विदा करते समय दुल्हन का नखशिख श्रृँगार किया जाता है। दुल्हन के विशेष प्रकार से बाल गूंथे जाते हैं, जिसे 'माथा गूंथना' कहा जाता है। मस्तक पर सुहाग चिह्न कुंकुम चावल से 'मरवट' भरी जाती है। 'माथा गूंथना' एक विशिष्ट केश सज्जा है, जो दुल्हन की विदाई के समय ही की जाती

है। आजकल यह प्रथा गाँव में ही देखने को मिल सकती है, अन्यथा माथा गूंथना प्राय: समाप्त हो गया है। सभी लोग माता-पिता, भाई-मामा आदि दुल्हन को गले मिलकर (मिला-भेंटी) विदाई देते हैं। सभी लोगों की आँखें सजल हो उठती हैं। महिलाएँ रोते-रोते विदाई गीत गाती हैं, जो अत्यन्त मार्मिक होता है। अपनी कोख से उत्पन्न हृदय के टुकड़े को विदाई देते हुए किस माता-पिता, सगे-सम्बन्धियों का हृदय द्रवित न हो उठता होगा। लड़की विदाई में पूरा गाँव शामिल होता है।

बारात की घर वापसी

बारात दुल्हन लेकर खुशी-खुशी घर लौटती है। कुलदेवी की नवदम्पती द्वारा पूजा करवायी जाती है। 'काकण डोरा' छुड़वाया जाता है। घर में सत्यनारायण की कथा दूल्हा-दुल्हन के हाथों करवाई जाती है। दुल्हन को शुभ दिन देखकर चूल्हे से लगाया जाता है। सर्वप्रथम दुल्हन के हाथों कोई मीठी चीज बनवाई जाती है। परम्परा से निमाड़ में नव-वधू के हाथों 'पूरणपोली' बनवाई जाती है। दो दिन बाद नव-वधू के पीहर से उसे लेने के लिये 'मिजवान' आ जाते हैं। मिजवानों की अच्छी आव-भगत की जाती है। आठ-पन्द्रह दिन में पुन: नव-वधू ससुराल आ जाती है। पहले आणा-गोणा की रीतियाँ थीं, अब वे लगभग समाप्त हो गई हैं।

विवाह में पूर्वजों को शामिल होने के लिये महिलाएँ मंडप में आमंत्रण गीत गाती हैं। मंडप में ही पुवा बनाने की विधि और पूजा करती हैं। विवाह में कई प्रकार के और भी छोटे लोकाचार, संस्कार और अनुष्ठान किये जाते हैं, जिनके साथ गीत गाने की प्रथा है। अवसर विशेष के गीत बूढ़ी महिलाओं को ही याद होते हैं, नई पीढ़ी की महिलाएँ आजकल इन परिपाटियों को भूलती जा रही हैं। जो हमारी संस्कृति का बहुत बड़ा नुकसान कहा जा सकता है।

मृतक संस्कार

मृत्यु शरीर का अनिवार्य धर्म है, जिसका जन्म होता है, उसकी एक न एक दिन मृत्यु सुनिश्चित है। इस सच को स्वीकार कर भारतीय लोक मनीषियों ने मृत्यु को एक दर्शन, एक उत्सव, एक संस्कार प्रतिपादित किया है। शरीर नश्वर है, आत्मा अमर है। आत्मा की अमरता और शरीर की क्षण भंगुरता के गीत, कथाएँ, गाथाएँ लोकजीवन में गाई जाती रही हैं। यहाँ वयोवृद्ध व्यक्ति की मृत्यु पर उसकी अर्थी धूमधाम से निकालने की प्रथा है। यहाँ मृत्यु होने पर जो गीत गाये जाते हैं, उसकी पूरी आध्यात्मिक परम्परा है, जिसे 'मसाण्या गीत' की संज्ञा दी गई है, जिसका अर्थ श्मशान के गीत हैं।

निमाड़ में मृत्यु एक संस्कार है, मृत्यु संस्कार के पूरे विधि-विधान हैं, अनुष्ठान हैं। मसाण्या गीत भी पूरे अनुष्ठान और श्रद्धा से गाये जाते हैं। मसाण्या गीतों के गायन की दो परम्पराएँ हैं, जिनके साथ अनुष्ठान भी जुड़े हैं। एक वे गीत जो शवयात्रा के साथ-साथ घर से लगाकर श्मशान भूमि तक गाये जाते हैं, इन्हें यात्रान्त गीत भी कहते हैं। दूसरे वे गीत जो मृत्यु के दसवें दिन मृतक के नाम से 'सवा घड़ा' अनुष्ठान में गाये जाते हैं। ऐसा माना जाता है कि मृतक की

आत्मा दस से तेरह दिन तक शरीर की खोज में ही भटकती रहती है, इसलिए 'सवा घड़ा' में गाये जाने वाले मृत्यु गीतों को 'काया खोज' के गीत भी कहा जाता है। लेकिन अन्त में विरही आत्मा अपनी उस चिर-परिचित काया से नहीं मिल पाती और दसवें या तेरहवें दिन वह सदा के लिये अनन्त में विलीन हो जाती है। 'सवा घड़ा' आत्मा की मुक्ति का लोक अनुष्ठान है।

अगरनी

चादर लेवो रे चादर लेवो।
चादर लई म्हारी ववु कऽ देवो
ववू म्हारी वंश वदाड़से॥
गोरा-गोरा अंग पर सोईये चादर।
पुत्र जन्मी नऽ ववू करसे आदर।
ववू म्हारी वंश वदाड़से।
गजरा लेवो भाई गजरा लेवो।
गजरा लई म्हारी ववू कऽ देवो।
गोरा-गोरा हाथ पर सोईये गजरा।
पुत्र जन्मी नऽ ववू करसे मुजरा।
ववू म्हारी वंश वदाड़से।
केळा लेवो भाई केळा लेवो।
केळा लई म्हारी ववू कऽ देवो।
गोरा-गोरा मुख मऽ सोईये केळा।
पुत्र जन्मी नऽ ववू करसे मेला।
ववू म्हारी वंश वदाड़से।
अनवट लेवो भाई अनवट लेवो।
अनवट लई म्हारी ववू कऽ देवो।
गोरा-गोरा पाँव मऽ सोहे अनवट।
पुत्र जन्मी नऽ ववू निसर्‍या पनघट।
ववू म्हारी वंश वदाड़से।
बेसर लेवो भाई बेसर लेवो।
बेसर लई म्हारी ववू कऽ देवो।
गोरा-गोरा मुख पऽ सोईये बेसर।
पुत्र जन्मी नऽ ववू करसे मवसर।
ववू म्हारी वंश वदाड़से।

चादर लीजिये-चादर लीजिये, चादर लेकर मेरी बहू को दीजिये। बहू मेरी वंश वृद्धि का प्रतीक है। उसके गोरे सुन्दर अंग पर यह चादर खूब खिलेगी। चादर ओढ़कर बहू सभी का आदर करेगी। सम्मान करेगी। चरण स्पर्श करेगी।

गजरा लीजिये- गजरा लीजिये, गजरा लेकर मेरी बहू को दीजिये। बहू के गोरे-गोरे हाथों पर गजरे शोभायमान होंगे। गजरे पहनकर बहू हम सबको अपना प्यारा सा मुखड़ा दिखायेगी। बहू मेरी वंश वृद्धि का प्रतीक है।

केले लीजिये-केले लीजिये, केले लेकर बहू को खिलाईये। केला खिलाने से मेरी बहू उज्जवल से पुत्र को जन्म देगी। पुत्र जन्म के बाद बहू अपने बच्चे को लेकर मेला देखने जायेगी यानी पुत्र जन्म की खुशी में पुन: एक बार मेरे घर में मेले जैसा आनन्द उत्सव होगा।

बिछिये लीजिये-बिछिये लीजिये, बिछिये लेकर बहू के पैरों में पहना दीजिये। बहू के गोरे पैरों में बिछिये बहुत सुन्दर लगेंगे। बिछिये पहनकर बहू पनघट पर पानी लेने जायेगी। तब बिछिये बजेंगे। यानी जब बहू पुत्र को जन्म देगी, तब वह कुएँ पर जाकर जलदेवी का पूजन समारोहपूर्वक करने जाएगी।

नथनी लीजिये-नथनी लीजिये, नथ लेकर बहू को दीजिये। मेरी बहू के सुन्दर गोरे मुख पर नथ अत्यधिक शोभा देगी। नथ से बहू का सुन्दर मुख मण्डल खिल उठेगा और नथ पहनकर बहू विवाह जैसा मांगलिक कार्य संपन्न करेगी। विवाह के शुभ अवसर पर निमाड़ में नथ पहिनना अनिवार्य है। नथ सौभाग्य सूचक है।

अगरनी

कृष्णजी मन मऽ हरखऽ घनेरी, रुकमणी की अगरनी।
तेड़ो-तेड़ो ब्राह्मण, रुकमणी का मोरीत पुछाड़ो जी।
सात सोमवारिया मोरीत पुछाड़ऽ,
ये मोरीत मन भाया जी॥
लिखी पत्रिका कुन्दनपुर भेजो, रुकमणी की अगरनी।
ढेल बठी समधण बोल्या, सुकल कहाँ सी आया जी।
कई हम अजुध्या सी आया समधण, रुकमणी की अगरनी।
पाँच पदारथ छेड़ बांध्या, रुकमण्यो वणीज सिधार्‌यो।
कृष्णजी सारू हलमल वागो, अरू जरी को फेटो जी॥
रुकमणी सारू नवरंग चून्दड़, लीला दरियाव की चोलीजी।
पेरी ओड़ी नऽ धन पाट पर बठ्या।
सुभद्रा बाई मसला सा बोल्याजी।

जो म्हारी भावज बेटो जलमऽ, या चून्दड़ हम लेवाजी।
जो म्हारी नंनद बेटो जलमऽ, या चून्दड़ हम देवाजी॥

कृष्णजी के मन में अपार खुशी है और उनका मन प्रफुल्लित और आनन्दित है। रानी रुक्मिणी की गोद भरी जायेगी। पूरा महल खुश है। श्रीकृष्णजी ने ब्राह्मण को बुलाया और पूछा कि पंचांग देखकर बताइये कि कौन सा दिन शुभ होगा और रुक्मिणीजी की गोद कब भरी जाय? तब ब्राह्मण ने पोथी देखकर बताया कि सोमवार के दिन का मुहूर्त ठीक है। सभी को सोमवार का मुहूर्त पसन्द आया।

तब श्रीकृष्णजी ने पत्रिका लिखी और पहली पत्रिका कुंदनपुर अपनी ससुराल भेजी। पत्रिका लेकर ब्राह्मण पहुँचा। दरवाजे पर बैठी हुई समधिन ने आदर सहित ब्राह्मण को घर में बुलाया। आसन पर बिठाया और आदर सत्कार करने के बाद पूछा– तुम कहाँ से आये हो? और क्या काम है ? तब ब्राह्मण ने कहा कि– समधनजी हम अयोध्या जैसी नगरी द्वारिका से आये हैं और हमें श्रीकृष्णजी ने भेजा है। आपकी पुत्री रुक्मिणी की गोद भरने का शुभ मुहूर्त सोमवार का है। इस शुभ अवसर पर आप सभी को आना है। माता का मन आनन्द से भर उठा, उन्होंने अपने बेटे रुक्मांगद से कहा। रुक्मांगद ने पाँच पदार्थ अपने साथ लिये और जाने की तैयारी की। उन्होंने श्रीकृष्णजी के लिये सुन्दर जामा बनवाया और रेशमी जरी का साफा लिया। अपनी बहन रुक्मिणी के लिए नवरंग चूँदड़ी ली तथा समुद्र के नीले पानी के रंग की चोली सिलवाई। वह सभी सामान लेकर द्वारिका गया।

शुभ मुहूर्त में रुक्मिणीजी ने कपड़े पहने और स्त्रियों ने पाठ बिठाया। ननद सुभद्रा ने अपनी भाभी के ललाट पर कुमकुम लगाया और गोद भरी। तब उसने आसन पर बैठी अपनी भाभी से व्यंग्य में कहा– हे भाभी! जब तुम पुत्र को जन्म दोगी, तो यह नवरंग चूंदड़ मैं नेग में ले लूँगी। तब भाभी ने खुशी–खुशी अपनी ननदी से कहा– हे प्यारी ननद! यदि मैं पुत्र रत्न को जन्म दूँगी तो यही नवरंग चूँदड़ तुम्हें सहर्ष नेग स्वरूप दे दूँगी।

अगरनी

नानी नानी नाजूकड़ी नऽ आवऽ छे अगरनी।
गोरी थारा आंगणिया मऽ जोशीड़ो तेड़ावऽ।
जोशीड़ो तेड़ावऽ गोरी का मोहरित पूछाड़ा राज,
नानी नानी नाजूकड़ी नऽ आवऽ छे अगरणी।
पियू छोटा गोरी मोटा, लोग करऽगा हाँसी॥
हाँसी करऽ तो करनऽ दिजो, अपणा काज सिधारो राज।
नानी नानी नाजूकड़ी नऽ आवऽ छे अगरनी।
गोरी थारा आंगणिया मऽ बजाजी तेड़ावऽ,

बजाजी तेड़ाव गोरी का, सालूड़ा ईसावो राजऽ ॥
नानी नानी नाजूकड़ी नऽ आवऽ छे अगरनी।
पियू छोटा गोरी मोटा, लोग करऽगा हाँसी।
हाँसी करऽ तो करनऽ दिजो, अपणा काज सिधारो राजऽ ॥
नानी नानी नाजूकड़ी नऽ आवऽ छे अगरनी।
गोरी थारा आंगणिया मऽ सोनीड़ो तेड़ावऽ,
सोनीड़ो तेड़ावऽ गोरी का गयणा ईसावो राजऽ।
नानी नानी नाजूकड़ी नऽ आवऽ छे अगरनी।
पियू छोटा गोरी मोटा, लोग करऽगा हाँसी ॥
हाँसी करऽ तो करनऽ दिजो, अपणा काज सिधारो राजऽ।
नानी नानी नाजूकड़ी नऽ आवऽ छे अगरनी।
गोरी थारा आंगणिया मऽ मालिड़ो तेड़ावऽ,
मालिड़ो तेड़ाव गोरी का, गजरा ईसावो राजऽ ॥
पियू छोटा गोरी मोटा, लोग करऽगा हाँसी ॥
हाँसी करऽ तो करनऽ दिजो, अपणा काज सिधारो राजऽ।

गीत- सुश्री गंगाबाई तोमर, दवाना

यह गीत गोद भरने के समय गाया जाने वाला व्यंग्य विनोद वाला गीत है। पति महाशय छोटे कद के हैं और पत्नी लम्बी कद की है और कुछ मोटी भी है। मोटी होने की एक वजह यह भी है कि गर्भावस्था के कारण पत्नी और अधिक मोटी दिखाई दे रही है। पत्नी नाजुक है। पर रंग-रूप अच्छा है।

छोटी प्यारी सी बहू की गोद भरने का समय आ गया है। तब वह कहती है- हे स्वामी! आप जोशीजी को बुलाकर ले आइये। पति महाशय पत्नी की बात सुनकर ब्राह्मण को बुलाकर आँगन में खड़ा कर देते हैं और पत्नी से कहते हैं- पूछ लो, जो कुछ पूछना है। पंडित रस्म का दिन निश्चित् करके शुभ मुहूर्त बता देते हैं। पति कद में छोटे हैं और पत्नी लम्बी और मोटी है। लोग उनकी हँसी कर रहे हैं। हँसी उड़ाने वालों को हँसी उड़ाने दो। अपना काम करो। छोटी प्यारी दुलारी की गोद भरने का अवसर आ गया है।

ऐ प्रिये! देखो तुम्हारे लिये नये-नये वस्त्र खरीदने का समय आ गया है। इसलिए मैं कपड़े के व्यापारी को ले आया हूँ। जल्दी से कपड़े पसन्द कर खरीद लो। पति महाशय दौड़-दौड़कर काम कर रहे हैं। हँसी करने वाले हँसी कर रहे हैं। उन्हें हँसने दीजिये। हम तो अपना काम करें। छोटी प्यारी सी बहू की गोद भरने का दिन आ गया है।

प्रिये! तुम्हारे आँगन में सुनार और माली आ गया है। सुनार से गहने खरीद लो अथवा

मनपसंद गहने गढ़वा लो, जो तुम्हें अच्छे लगते हों। माली से गजरे खरीद लो, जो इस शुभ कार्य में तुम्हारे हाथों की शोभा बढायेंगे। गोरी मोटी है और साजन छोटे हैं। लोग हँसी कर रहे हैं। देखो! इसके यहाँ बच्चा होने वाला है। अरे! ये बाप बनने वाला है। अनेक लोग व्यंग्य-विनोद कर रहे हैं। व्यंग्य विनोद करने वालों को व्यंग्य विनोद करने दो, हम तो अपना काम करें। किसी की परवाह न करें, हमारे यहाँ शुभ दिन आया है।

बधावा (प्रसव वेदना)

पीड़ आवऽ ओ मारूणी दूणी नवी जाय।
मारूणी की पीड़ सायब दोयली॥
घड़ी दो घड़ी सायब म्हारा बागा सिधारो।
बाग मऽ फूल गुलाब का।
तम हो बागा हो मारूणी, तम बणो नऽ फूल गुलाब का॥
पीड़ आवऽ ओ मारूणी दूणी नवी जाय।
मारूणी की पीड़ सायब दोयली॥
घड़ी दो घड़ी ओ सायब म्हारा पनघट सिधारो।
पनघट पर पणिहारी नित नवा॥
तम गोरी पनघट ओ गोरी हो, तम पणिहारी।
तम बणो हो पणिहारी नित नवा॥
पीड़ आवऽ ओ मारूणी दूणी नवी जाय।
मारूणी की पीड़ सायब दोयली॥
घड़ी दो घड़ी सायब म्हारा रसवई सिधारो।
रसवई मऽ भोजन नित नवा।
तम रसवई हो गोरी, तम बणाओ नऽ भोजन नित नवा॥
पीड़ आवऽ ओ मारूणी दूणी नवी जाय।
मारूणी की पीड़ सायब दोयली॥
घड़ी दो घड़ी सायब म्हारा मयला सिधारो।
मयला मऽ खेलो रे चवसर फाँसा॥
तम मयला हो गोरी म्हारी, तम सार नऽ तम फाँसा।
तम खेलो नऽ चवसर ख्याल॥
पीड़ आवऽ ओ मारूणी दूणी नवी जाय।
मारूणी की पीड़ सायब दोयली॥

गीत-नरेन्द्र गीते, दवाना

पत्नी को प्रसव वेदना होती है। प्रसव वेदना से पत्नी तड़प रही है। कुछ देर के लिये प्रसव पीड़ा रुकती है। पति को चिंतामग्न देखकर पत्नी कहती है- आप यहाँ से हट जाइये। मेरी चिंता छोड़िये। प्रसव वेदना में मैं यूं ही दोहरी हो रही हूँ। ऊपर से आप पास खड़े हैं, मुझे और भी लज्जा आ रही है। ठीक से प्रसव भी नहीं हो रहा है। प्रसव पीड़ा में मारूणी (पत्नी) धनुष की तरह दोहरी हो जाती है। तेज प्रसव पीड़ा से गोरी बेहाल है।

पति-पत्नी की दशा देखकर चिंतित है। वह वहीं बैठा है। तब पत्नी-पति से कहती है- हे स्वामी! आप यहाँ से कहीं घड़ी दो घड़ी के लिये बाग-बगीचे में घूम आओ। फूलों को देख आओ। बाग में सुन्दर गुलाब के फूल खिले हैं, उन्हें देख आओ तो तुम्हारा मन बहल जायेगा। तब पति कहता है- तुम ही मेरी बाग-बगिया हो। तुम ही मेरे लिये प्रिय गुलाब का फूल हो। मैं तुम्हें ऐसी हालत में छोड़कर कहीं नहीं जा सकता हूँ।

तब पत्नी कहती है- हे स्वामी! आप घड़ी दो घड़ी के लिये पनघट पर चले जाइये। वहाँ अनेक नई-नई स्त्रियाँ पानी भरने आयेंगी-जायेंगी। उन्हें देखते रहना। तुम्हारा दिल बहल जायेगा। तब पति कहता है- मुझे कुछ नहीं देखना, जब तुम खुद कुएँ से पानी लाती थीं, तब कितनी सुन्दर लगती थीं। नित्य प्रति तुम्हारा नया रूप देखकर मेरे मन में और मेरी आँखों में तुम्हारा रूप समा गया है। अब और किसी को देखने की इच्छा नहीं है। इस हालत में तुम्हें छोड़कर मैं कहीं नहीं जाऊँगा।

तब पत्नी कहती है- चलो, तुम कहीं नहीं जाते हो तो मत जाओ। पर, रसोई में जाकर खाना तो खालो। तब पति कहता है- जब तुम रसोई में नित्य प्रति खाना बनाती थीं, उस खाने का स्वाद कुछ और ही होता था। अब तक इतना अच्छा खाना खाया है। अब तो कुछ भी खाने का मन नहीं करता और तुम्हें इस हालत में छोड़कर मैं खाना भी नहीं खाऊँगा।

तब पत्नी कहती है- हे स्वामी! कहीं नहीं जाते हो तो मत जाओ, अपने दोस्तों में जाकर कम से कम चौपड़ ही खेल आओ, तो तुम्हारा मन बहल जायेगा। तब पति कहता है- मेरी बात सुनो, रात में मैंने तुम्हारे साथ जो चौपड़ की बाजियाँ खेली हैं। उन बाजियों को मैं कैसे भूल जाऊँ? अब चौपड़ पासे खेलने की इच्छा नहीं है। मेरा मन कहीं भी जाने को नहीं हो रहा है। मेरा तो तुम्हीं सर्वस्व हो और इस हालत में मैं तुम्हें छोड़कर कहीं नहीं जाऊँगा। कहीं कुछ हो गया तो मेरा क्या होगा?

बधावा

देवकी नऽ बालो कान्हो जलमियो, किको जलमियो।
ये तो वासुदेव हो राजा वसऽ परदेश।
सोयलो भल आविया॥

देवकी नऽ लिख्या कागद मोकलिया, चिठी मोकलिया।
घर आओ नऽ नणद बाई रा वीर, हुलरिया रा बाप।
ये तो हम कसा आवां, सुन्दर साँवली रंग बावली।
ये तो राव जी हमें आवा न दे, चिठी लिखवा न दे।
सोयलो भल आविया॥

देवकी के समान माता ने पुत्र को जन्म दिया है, पर वसुदेव यानी स्वामी जी के बिना सब सूना है। स्वामी परदेश नौकरी करने गये हैं। देवकी यानी माता के मन में उत्साह तो है, पर यह पति के बिना अधूरा है। जिस दिन की जिस घड़ी का उन दोनों को इन्तजार था। वह शुभ दिन और शुभ घड़ी आ गयी है। पर पति घर में नहीं हैं। इस दिन यदि वे यहाँ होते तो कितना खुश होते। माता ने यह खुशखबरी देने और पति को बुलाने हेतु पत्र लिखा और उसे राणाजी के देश भेज दिया। पत्र में लिखा था– हे ननदी के वीर! जल्दी घर आइये, आपके घर पुत्र हुआ है। जिस दिन की हम काफी लम्बे समय से प्रतीक्षा कर रहे थे। वह शुभ दिन आ गया है। पुत्र का मुँह देखने के लिये शीघ्र आ जाओ।

जैसे ही स्वामी (वासुदेव) जी को चिट्ठी मिलती है। वे मन ही मन संकुचित हैं। सोच में पड़ गये हैं कि अपनी पत्नी की चिट्ठी का क्या उत्तर दें। उन्होंने वापस चिट्ठी लिखी– हे मेरी सुन्दर साँवली पत्नी! मैं कैसे आऊँ ? आनन्द में डूबी पगली! इस खुशी के मौके पर मैंने क्या-क्या स्वप्न संजोये थे? सब धरे रह गये। मैं होता तो रंग गुलाल होता, मिठाई बाँटता, ढोल बजवाता, क्या नहीं करता? सभी कुछ मन ही में रह गया। राणाजी मुझे छुट्टी नहीं दे रहे हैं और चिट्ठी तक लिखने नहीं देते। एक पल की भी फुरसत नहीं होती। इतना काम है कि दो घड़ी चैन तक नहीं मिलती है। आऊँ भी तो कैसे? राणाजी मेरी तनख्वाह भी नहीं देते हैं। काम होते ही दूसरे काम में उलझा देते हैं। काम पूरा होने के बाद आऊँगा। चिट्ठी लिखने के बाद स्वामी जी हताश हो जाते हैं। मैंने किन घड़ियों में नौकरी की थी। जो छुट्टी तक नहीं मिलती। पुत्र जन्म की शुभ घड़ी को भी नहीं देख सकता? अपने पुत्र का मुख नहीं देख सकता, कैसी है नौकरी की मजबूरी, मन की उमंग मन में ही रह गई हैं।

बधावा

काई बधाई छे जी, आज बाबा नंद घर।
काई आनंद भयो, आज बाबा नंद घर।
एक लक्ष गौवा ब्राह्मण दीवी।
माणी मणासो दीयो दान बाबा नंद घर॥
काई बधाई छे जी, आज ....
दधी जो बाई नऽ ग्वालन आई।
दधी जो मची गयो कीच, बाबा नंद घर॥

काई बधाई छे जी आज ....
फुलड़ा जो लई नऽ मालन आई।
चम्पा चमेली रो हार, बाबा नंद घर॥
काई बधाई छे जी आज ....
चार सखी मिल कृष्ण निपजाये।
कंस को कर्‌यो निरवंश, बाबा नंद घर॥
काई बधाई छे जी आज ....
चन्द्र सखी मिल मंगल गावऽ,
घर-घर आनंद बधाई, बाबा नंद घर।
काई बधाई छे जी, आज बाबा नंद घर॥

चार सहेलियाँ आपस में बातें कर रही हैं। आज क्या खुशी है ? जो बाबा नंद के घर-द्वार पर इतनी भीड़ लगी है। क्या आज कोई उत्सव या पर्व है ? तब एक ने कहा- क्या तुम्हें पता नहीं है, आज बाबा नंद के यहाँ लड़का पैदा हुआ है। इस खुशी में अपार जन समूह बाबा नंद के घर बधाई देने के लिये और बालक को देखने के लिये उमड़ पड़ा है। बाबा नंद ने इस खुशी के मौके पर एक लाख गायों का दान दिया है। याचकों को ढेर-सा सोना दिया, वस्त्राभूषण दिये। यह समाचार सुनकर ग्वालन आई, उसके सिर पर दही की मटकी थी। उसी दूध-दही की मटकी से सभी ने होली खेली। आंगन में दूध-दही का कीचड़ मच गया है। बधाई की खुशी में मालन फूलों के हार और बंदनवार बाँधने हेतु लाई है। चार सखियों ने मिलकर कृष्णजी का जन्म करवाया। जो कंस के काल हैं, जो दुष्ट कंस के वंश को समूल नष्ट करने वाले हैं। चंद्रसखि कहते हैं- सभी सखियाँ मिलकर मंगल गान कर रही हैं। आज बाबा नंद के घर आनन्द उत्सव का पर्व है। आज बाबा नंद के घर कृष्ण का जन्म हुआ है।

बधावा

ये तो जोशी रा कुवर बधावणा,
म्हारा घर पोथी पुस्तक लई आव।
मारूणी मदनसिंह जलम्या॥
पोथी बाचऽ यो नानो सो किकाजी॥
पुराण वाचऽ किका रो बाप।
मारूणी मदनसिंह जलम्या॥
ये तो सोनी रा कुवर बधावणा,
म्हारा घर कड़ा-तोड़ा लई आव।
मारूणी मदनसिंह जलम्या॥
कड़ा पेरऽ नानो सो किकाजी,

तोड़ा पेरऽ किकाजी रो बाप।
मारूणी मदनसिंह जलम्या॥
ये तो बजाजी रा कुवर बधावणा,
म्हारा घर साड़ी वागो लई आव।
मारूणी मदनसिंह जलम्या॥
वागो साड़ी पेरऽ नाना की माय,
वागो पेरऽ किकाजी रो बाप।
मारूणी मदनसिंह जलम्या॥
ये तो दरजी रा कुवर बधावणा,
म्हारा घर झंगा टोपी लई आव।
मारूणी मदनसिंह जलम्या॥
झंगो पेरऽ नानो सो किकाजी।
टोपी पेरऽ नानो भाई,
मारूणी मदनसिंह जलम्या॥

यह बच्चे के जन्म के समय का बधाई गीत है। इसमें हमारे उस स्नेहिल समाज का दर्शन है, जिसमें शिशु जन्म को धरती पर एक नये इन्सान के अवतरित होने के रूप में लिया जाता है। और उसका इसी रूप में स्वागत किया जाता है। आने वाले शिशु को प्रत्येक वर्ग की ओर से कुछ न कुछ भेंट दी जाती है। इस बीच बच्चे के जन्म होने पर बड़ी माँ यानी ताई अथवा दादी के मन में असीम उल्लास है और वह घर-घर बधाईयाँ भेजती हैं।

मेरी सुन्दर सलोनी बहू ने पुत्र रत्न को जन्म दिया है। पुत्र साक्षात् कामदेव के समान सुन्दर है। पहली बधाई मैं ज्योतिषी के यहाँ भेजती हूँ। वह मेरे घर पोथी-पुराण लेकर आये। पोथी तो मेरा बच्चा पढ़ेगा और पुराण उसके पिताजी पढ़कर सुनायेंगे।

दूसरी बधाई मैं सुनार के यहाँ भेजती हूँ। वह मेरे यहाँ कड़े और तोड़े लेकर आये। तोड़े तो मेरा बच्चा पहनेगा और कड़े उसके पिताजी पहनेंगे।

तीसरी बधाई मैं वस्त्र व्यापारी के घर भेजती हूँ। वह मेरे यहाँ साड़ी और बागा लेकर आये। साड़ी तो बच्चे की माँ पहनेगी और बागा (कोट) बच्चे के पिताजी पहनेंगे।

चौथी बधाई दर्जी के घर भेजती हूँ। वह मेरे घर झबला और टोपी लेकर आये। झबला तो बच्चा पहनेगा और टोपी उसके बाद आने वाले भाई के लिये होगी।

बधावा

खुशी भई जी म्हारा मन की, आज बधाई सियाराम की।
माता कौशल्या नऽ रामचन्द्र जलमिया॥

सुनयना नऽ जायी देवी जानकी।
आज बधाई सियाराम की॥
माता कैकई नऽ भरत लाल जलमिया।
सुमित्रा नऽ जाया लखन लालजी॥
आज बधाई सियाराम की॥
माता पार्वती नऽ गणपति जलमिया।
अंजना नऽ जाया हनुमानजी।
आज बधाई सियाराम की॥
देश-विदेश सी भूपति आया।
नाम धराया चारई वीर का।
आज बधाई सियाराम की॥
राजा दशरथ नऽ हत्थी सजाया।
अरू सजाया घोड़ा पालकी।
आज बधाई सियाराम की॥
पान सुपारी मिठाई बटी रही।
सखियां मंगल गावती।
आज बधाई सियाराम की॥
खुशी भई जी म्हारा दिल की।
आज बधाई सियाराम की॥

आज बहुत ही खुशी का दिन है। आज मेरे मन का मन-मयूर नाच उठा है। आज की बधाई, राजा राम और सीता के नाम की है। माता कौशिल्या ने श्रीरामचन्द्रजी को जन्म दिया है। और उधर माता सुनयना ने जानकीजी को जन्म दिया है। आज बड़ी खुशी का अवसर है। इधर माता कैकेयी ने भरत लाल को जन्म दिया है। सुमित्रा देवी ने लक्ष्मण जैसे शूरवीर पुत्र को जन्म दिया है। माता पार्वती ने श्रीगणेशजी को जन्म दिया है।

उधर माता अंजना ने हनुमानजी जैसे बलशाली पुत्र को जन्म दिया है। राजा दशरथ के यहाँ पुत्रों का जन्म हुआ है। यह सुनकर नामकरण संस्कार में देश-विदेश से राजा-महाराजा बधाई देने आये हैं। इस खुशी के मौके पर राजा दशरथ ने हाथी घोड़े और पालकियाँ सजाई हैं। इस आनन्द उत्सव में मिठाई और पान-बताशे बँट रहे हैं। और सखियाँ मंगल गीत गा रही हैं। आज की असली बधाई सीता और राम की है।

बधावा

बधाई छे आनंदकारी, सुनाओ राम सीता से।
लीपाओ चंदन से अंगना, पुराओ चौक मोती का॥

बधाई छे आनंदकारी ....
निहलाओ दूध से ललना, सुलाओ सोने का पलना।
बधाई छे आनंदकारी ....
सजाओ सोने की आरती, लगाओ रत्न का दीपक।
बधाई छे आनंदकारी ....
बिछाओ सोने का पटिया, बिठायो चारई भैया।
बधाई छे आनंदकारी ....
बुलाओ बईण सुभद्रा कऽ, बधावऽ चारई भैया को।
बधाई छे आनंदकारी ....
बुलाओ राजा दशरथ कऽ, चुकाव नेग आरती का।
बधाई छे आनंदकारी ....
बुलाओ सोने का कंगना, चुकाओ नेग आरती का।
बधाई छे आनंदकारी, सुनाओ राम सीता से॥

यह बधाई शुभ और आनंदकारी है। यह बधाई राजा दशरथजी को सुनाइये कि आपके यहाँ पुत्रों का जन्म हुआ है। इस खुशी में चंदन घोलकर आँगन को लिपवाओ। जिससे सारा आँगन महकता रहे। लिपने के बाद उस आँगन में मोती से चौक (स्वस्तिक) बनाइये। चारों बच्चों को दूध से स्नान कराओ और उन बालकों को सोने के पलने में सुलाओ। इस खुशी के मौके पर सोने की आरती सजाओ और उसमें रत्नजड़ित दीपक लगाओ। नामकरण संस्कार के लिये इन चारों भाइयों को सोने से मंडित चौकी पर बिठाओ। और बहन सुभद्रा को बुलाओ। जो उन चारों वीरों, भाइयों को मंगल टीका लगाये। राजा दशरथ को बुलाइये, जो बहन सुभद्रा का नेग चुकायें। राजा दशरथ ने दासी को बुलाया और रत्नजड़ित सोने के कंगन बहन सुभद्रा को उपहार में दिये। इस गीत में हिन्दी का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित है।

बधावा

आज की बधाई राजा दशरथ राय की।
आज की बधाई राजा दशरथ राय की॥
चम्पो फूले मोगरो फूले घणो सुख पाय के।
धवलो कणियर, ऐसो फूले राम को चढ़ाय के॥
आज की बधाई राजा ....
चोया फूले चन्दन, घणो सुख पायके।
धवला चावल ऐसे फूले मस्तक चढ़ाय के।
आज की बधाई राजा ....
गंगा फूले जमुना फूले, घणो सुख पाय के।

सरजू मैया ऐसे फूले, रामचन्द्र न्हाय के।
आज की बधाई राजा ....
कैकई फूले सुमित्रा फूले, घणो सुख पायके।
महलों में कोसल्या फूले रामचन्द्र जायके।
आज की बधाई राजा ....
ॠषि फूले मुनि फूले, घणो सुख पायके।
तुलसीदासजी ऐसे फूले राम गुण गायके॥
आज की बधाई राजा ....

गीत–सुश्री गंगाबाई तोमर, दवाना

राजा दशरथजी के यहाँ बहुत दिनों के बाद पुत्र हुआ है। तो सारा महल आनन्द सागर में हिलोरे ले रहा है। आज की बधाई राजा दशरथजी के नाम की है। राम जन्म के उपलक्ष्य में जहाँ–तहाँ फूल खिले हैं। चम्पा, मोगरा तो ऐसे फूले हैं, मानो बहार आ गई हो। सफेद कनियर ऐसे फूल कर इतरा रहा है कि आज मैं ही रामजी के मस्तक पर चढ़ूँगा और अपने भाग्य पर इठलाऊँगा। राम जन्म के कारण चोया, चंदन, अबीर की धूम मच गई है। उनसे होली खेली जा रही है। सफेद चावल भी अपने भाग्य पर इठला रहे हैं। आज हम अपने आराध्य देव के मस्तक पर लगेंगे और अपने आप पर गौरव करेंगे। राम जन्म के कारण गंगा, जमुना और सरयू तीनों देव नदियाँ विभोर हो रही हैं। क्योंकि रामजी के स्नान करने के लिये तीनों नदियों के पवित्र जल का उपयोग किया जायेगा, तीनों अपने भाग्य पर मुदित हो रही हैं। उधर महलों में कैकेयी की खुशी का ठिकाना नहीं है। माता सुमित्रा भी मन ही मन बहुत खुश हो रही है। पर माता कौशिल्याजी की खुशी की कोई सीमा ही नहीं है। राम जन्म के कारण ॠषि–मुनिजन खुश हैं। वे अभय और निर्भय हो गये हैं। उनके आराध्य भगवान राम का जन्म हो गया है। और तुलसीदासजी अपने आराध्य के गुणगान करके फूले नहीं समा रहे हैं। आज की बधाई राजा दशरथजी के नाम।

बधावा

म्हारा अँगणा मऽ अम्बा हो आमली।
म्हारा पिछवाड़ऽ पेन खजूर।
जी गई थी हऊँ कृष्ण बधावणा॥
म्हारा ससराजी गाँव गरासिया।
म्हारा पिताजी दिल्ली केरा राज।
जी गई थी हऊँ कृष्ण बधावणा॥
म्हारी सासु सरस्वती नदी वय।
म्हारी माय गंगा केरो नीर।
जी गई थी हऊँ कृष्ण बधावणा॥

म्हारो देवर देऊल देवता।
म्हारो वीरा जी गोकुल कान्ह।
जी गई थी हऊँ कृष्ण बधावणा॥
म्हारी नणंद कड़कती बिजलई।
म्हारी बईण सरावण तीज।
जी गई थी हऊँ कृष्ण बधावणा॥

आम का वृक्ष और खजूर का पेड़ दोनों ही समृद्धि के प्रतीक हैं। मेरे आँगन में गहरी छाँव वाला आम का वृक्ष लगा है। घर के पीछे ऊँचा खजूर का पेड़ है। कृष्ण जन्म के उपलक्ष्य में मैं माता यशोदा के घर बधाई देने गई थी।

मेरे ससुर गाँव के पटेल हैं और मेरे पिताजी दिल्ली के राजा हैं। मेरी सासूजी सरस्वती नदी के निर्मल नीर की तरह पवित्र और स्वच्छ हृदय वाली हैं। मेरी माँ गंगा के पवित्र जल की तरह निर्मल और गहन गम्भीर हैं। मेरा देवर मंदिर में भगवान की मूरत की तरह शांत और धैर्यशाली है। मेरा भाई भगवान श्रीकृष्ण की तरह भोला-भाला है। मेरी ननद की तो पूछिये मत, वह तो सावन की बिजली की तरह कड़कती रहती है। यानी उसका स्वभाव तेज है। मेरी बहन तो सावन की तीज की तरह हरियाली युक्त है। ऐसा मेरा सम्पूर्ण परिवार है।

बधावा

ऊच्ची सी अटारी नणद बाई दिवळो बलऽ।
दिवलो बलऽ रे वो जंजाल॥
नई तो म्हारी नणद कऽ आवता देखती।
खोळा मऽ बालो ओ नणद बाई सोई गयो॥
चूड़िला सी भरी म्हारी बांव।
नहीं तो म्हारी नणद का पाय लागती॥
कणगा का गउ नणद बाई खुटी गया।
मालवा मऽ मयगी मसूर॥
नहीं तो म्हारी नणद कऽ भोजन जिमाड़ती।
माथणा को पाणी ओ नणद बाई खुटी गयो॥
समुन्दर गयो ओ सोसाय।
नहीं तो म्हारी नणद कऽ पेवाड़ती॥
बुचका का कपड़ा ओ नणद बाई खुटी गया।
नहीं मिलऽ गाँव मऽ दूकान।
नहीं तो म्हारी नणद क चून्दड़ बढ़ावती॥
डब्बा का गयणा नणद बाई खुटी गया।

नहीं मिलऽ गाँव मऽ सोनार॥
नहीं तो म्हारी नणद क अग्गल घड़ावती।
तमरा वीरा ओ नणद बाई घर नहीं॥
गया छे गया राणा जी का देश।
नहीं तो म्हारी नणद कऽ दुई दिन राखती॥

ननद भाभी के लिये हमेशा ही उपेक्षा का पात्र रही है। इस गीत में भी ननद-भौजाई के मनोविज्ञान का सटीक वर्णन है। ननद और भाभी में लड़ाई शाश्वत है। भाभी रूठी हुई है। भाई के घर पुत्र हुआ है। यह सुनकर बहन खुश होती है और अपने प्यारे भतीजे को देखने और भाभी से मिलने के लिये सारे लड़ाई-झगड़ों को भूलकर वह मायके आती है। मायके आते-आते बहिन को रास्ते में सूर्यास्त हो गया है तभी का यह गीत है।

ऊँचे से आले (ताक) में दीपक जल रहा है। भाभी बैठी हुई है। दीपक का प्रकाश फैल रहा है और दीपक की तरफ भाभी देख रही है। इतने में उनकी ननदजी का आगमन होता है। भाभी तो अपनी ननद से रूठी हुई है। वह तो ननदजी को आने तक का नहीं कहती है, तब ननद ही भाभी से कहती है- भाभी! मैं आ गई हूँ। भाभी कहती है- बाईजी! आप आये मैंने आपको देखा नहीं। देखो दीपक का प्रकाश कितना तेज है? इस दीपक के प्रकाश में मैं आपको देख नहीं पाई और आपको आने का भी नहीं कहा। देखो मेरी गोद में तुम्हारा भतीजा सो रहा है और हाथों में नई चूड़ियाँ पहनी हुई हैं, इसलिए मैं तुम्हारे चरण-स्पर्श भी नहीं कर सकती। तब ननदजी मन मसोस कर रह जाती है। पुन: भाभी खाने के लिये भी नहीं पूछती है। वह कहती है- ननदजी! कोठी में रखा हुआ गेहूँ समाप्त हो गया है और मालवा प्रदेश में मसूर की दाल भी महंगी हो गई है। यदि यह सब न होता तो मैं तुम्हें अच्छा भोजन अवश्य बनाकर खिलाती। यहाँ तक कि मटके का पानी तक भी समाप्त हो गया है। इस साल समुद्र का पानी सूख गया है। मैं तुम्हें पानी पिलाने में भी असमर्थ हूँ। तुम्हारे भाई के यहाँ पुत्र हुआ है। तुम्हारा भतीजा आया है, इसलिए तुम उसे देखने आई हो। पुत्र जन्म के उपलक्ष्य में आपका कुछ न कुछ नेग बनता है। पर क्या करूँ ? मेरे पास आपको देने के लिये अच्छी-सी साड़ी भी नहीं है। और न ही कपड़े की दूकान गाँव में है। यदि कपड़े की दूकान भी गाँव में होती तो मैं तुम्हें एक अच्छी-सी साड़ी लाकर जरूर देती, लेकिन मैं नेग देने में भी असमर्थ हूँ। मेरे पास तुम्हें देने के लिए कोई आभूषण भी नहीं है। नहीं तो तुम्हें अवश्य दे देती। गाँव में सुनार की एक भी दूकान नहीं है, नहीं तो मैं तुम्हें गहना खरीद कर दे देती। मैं कुछ भी देने में असमर्थ हूँ। तुम्हारे भैयाजी भी यहाँ नहीं है। यदि वे यहाँ होते तो कुछ न कुछ अवश्य देते। पर क्या करूँ? वे भी नौकरी करने दूर देश चले गये हैं। यदि वे यहाँ होते तो तुम्हें दो चार दिन जरूर रोक लेते, मैं कुछ भी नहीं कर सकती हूँ। भाभी को ननद से बदला लेने का पूर्ण अवसर मिल गया है। ननद क्या उत्तर दे सकती है? यह उत्तर देने का भी समय उचित नहीं था, अत: ननद रानी अपने भतीजे का मुख चूमकर ढेर सारा आशीर्वाद देकर वापस अपने ससुराल चली जाती है।

बधावा

दूर-दूर देश सी नणद बाई आया राज।
आई नऽ बटला पऽ बठी गया, के सई हो राज।
उठो-उठो वो म्हारी मान गुमानेण भावज राज।
बड़ा गुमानेण भावज राज॥
अपण दुई जोण मिलई लेवां, के सई हो राज।
म्हारा खोळा मऽ बाई भतीजो तमारो राज।
सामऽ कोठी ओ नणद बाई मिळई लेवो, के सई हो राज।
उठो-उठो वो म्हारी मान गुमानेण भावज राज।
बड़ा गुमानेण भावज राज॥
आपण दुई जोण जिमी लेवां, के सई हो राज।
हमारो नऽ हो बाईजी ग्यारस को उपास राज॥
वासी टुकड़ा ओ नणद बाई खाई लेवो, के सई हो राज।
उठो-उठो वो म्हारी मान गुमानेण भावज राज।
बड़ा गुमानेण भावज राज॥
आपण दुई जोण सोई जावां, के सई हो राज।
घाघरो बिछावो नणद बाई, लुगड़ो बयड़ो राज।
डाँवा कवळा नणद बाई सोई जावे, के सई हो राज।
ऐतरो जो कयतऽ नणद बाई रोश भरायो।
आँसू नमऽ कीच सो मची गयो, के सई हो राज।
दूर-दूर देश सी भाई, तमारा आया राज।
आँगणा मऽ कीच्चड़ सो कसो मच्यो, के सई हो राज।
दूर-दूर देश सी नणद बाई आया राज।
बारा बेड़ा सी उनका पाँय धोया, के सई हो राज।
आगऽ लगऽ भाई पाछऽ भोलई भावज राज।
दुई जोण बईण मनावणऽ संचर्‌या, के सई हो राज।
पछा फिरो पछा फिरो, म्हारी मान गुमानेण बईण।
बड़ा गुमानेण बईण राज॥
टिमण्यो घड़ावां तोला तीस को हाँ, के सई हो राज।
टिमण्यो थारी साली कऽ पेरावो वो राज॥
थारी सासु कऽ पेरावो राज, माड़ी की जाई बईण भलई जावो॥

दूर देश से यात्रा करके ननद अपने भैया-भाभी से मिलने अपने मायके में आती है। ननद को आई हुई देखकर भी भाभी ने अनदेखा कर दिया। भाभी ने स्वागत भी नहीं किया। ननद

बेचारी आकर चुपचाप ओटले पर बैठकर अपनी थकान मिटाने लगी। थकान मिटने के बाद ननद ने अपनी प्यारी भाभी से कहा- मेरी मान-सम्मान वाली भाभी! उठो, हम दोनों गले मिल लें। भाभी तो जली-भुनी बैठी थी, उसने कहा- बाई सा! मेरी गोदी में तुम्हारा भतीजा सो रहा है। मैं उठ नहीं सकती। सामने जो अनाज भरने की कोठी रखी है। उससे गले मिलकर अपने गले मिलने की इच्छा पूरी कर लो। ननद मन मसोस कर रह जाती है। पुन: ननद ने कहा- भाभी! मुझे भूख लगी है, चलो दोनों मिलकर खाना खा लें। तब भाभी ने कहा- बाई सा! मेरा तो एकादशी का उपवास है। आप सुबह का जो खाना रखा है, उसे खाकर अपनी क्षुधा शांत कर लो। ननदी ने चुपचाप बासी खाना खा लिया। बाद में ननदी ने कहा- हे मेरी मान-सम्मान वाली भाभी! चलो हम दोनों सो जायें। तब भाभी बिस्तरों की असमर्थता बताते हुए कहती है- बाई सा! घर में कोई अतिरिक्त बिस्तर नहीं है। आपका घाघरा बिछा लो और सो जाओ। ननदी को इतना अपमान सहन करते-करते गुस्सा आ गया और आँखों से आँसुओं की धारा बह निकली और इतना रोई कि आँगन गीला हो गया। रो-धोकर ननद अपनी ससुराल वापस लौट गई।

इधर पतिदेव दूर देश से नौकरी से वापस आते हैं। घर आकर आँगन में कीचड़ देखकर पूछते हैं- कीचड़ क्यों हुआ है ? तब पत्नी ने कहा- आपकी प्रिय बहन आई थी, मैंने उनका स्वागत सत्कार किया और बारह घड़े पानी से उनके पैर धोये, इसलिये आँगन में कीचड़ हो गया है। तब पति-पत्नी से पूछता है- कहाँ है मेरी बहन? तब पत्नी कहती है- वह तो वापस चली गयी है। पति ने फिर पूछा- कितनी देर हुई है? तब पत्नी कहती है- अभी थोड़ी देर पहले ही वह गई है। भाई अपनी बहन को मिलने के लिए उसी रास्ते चल पड़ा। पति के पीछे पत्नी भी चल पड़ती है। कहीं ननद मेरी चुगली न कर दे। वह भी पति के पीछे-पीछे जाती है। कुछ दूर जाने पर बहन दिखाई देती है। भाई-बहन को मनाता है और कहता है- हे बहन! घर चलो! मैं तुम्हें सोने का तिमण्या (कान का गहना) तीस तोले का बनवा दूँगा। बहन तो सिर से पैर तक गुस्से में भरी हुई थी। बोली- भैया तुम्हारे आभूषण मेरे कोई काम के नहीं हैं। तुम तो आभूषण अपनी सासुजी को पहनाना। अपनी साली को पहनाना। मैं तो ऐसे ही भली हूँ, क्योंकि मैं तेरी माँ जाई हूँ, मतलब एक ही माँ के पेट से पैदा हुए हैं। मैं तुम्हारी कौन लगती हूँ? और बहन क्रोध में भरकर भाई के कहने पर भी वापस नहीं लौटती। अपनी ससुराल चली जाती है।

बधावा

चन्दा जसी जोत, गुलाब जैसा फूल, राम दिया ललना।
दाई आवे तो पिया आने ना देना।
नजर लग जाये मुझे राम दिया ललना॥
चंदा जसी जोत, गुलाब जैसा ....
सासू आवे तो पिया आने ना देना।
नजर लग जाये मुझे राम दिया ललना॥

चंदा जसी जोत, गुलाब जैसा ....
माता आवे तो पिया आने भी देना।
उमर बढ़ जाये मुझे राम दिया ललना॥
चंदा जसी जोत, गुलाब जैसा ....
जेठाणी आवे तो पिया आने ना देना
नजर लग जाये मुझे राम दिया ललना।
चंदा जसी जोत, गुलाब जैसा ....
काकी आवे तो पिया आने भी देना।
उमर बढ़ जाये मुझे राम दिया ललना॥
चंदा जसी जोत, गुलाब जैसा ....
देराणी आवे तो पिया आने ना देना।
नजर लग जाये मुझे राम दिया ललना॥
चंदा जसी जोत, गुलाब जैसा ....
भाभी आवे तो पिया आने भी देना।
उमर बढ़ जाये मुझे राम दिया ललना॥
चंदा जसी जोत, गुलाब जैसा ....
ननद आवे तो पिया आने ना देना।
नजर लग जाये मुझे राम दिया ललना॥
चंदा जसी जोत, गुलाब जैसा ....
बहन आवे तो पिया आने भी देना।
उमर बढ़ जाये मुझे राम दिया ललना॥
चंदा जसी जोत, गुलाब जैसा फूल..............

चन्द्रमा की तरह उज्जवल और गुलाब के फूल सा कोमल पुत्र मुझे भगवान श्रीरामजी की कृपा से प्राप्त हुआ है। हे प्रियतम! यदि दाई माँ आये तो उसे मत आने देना, वह आयेगी तो मेरे बच्चे को नजर लग जायेगी। सासुजी देखने के लिये आयें तो उन्हें आने मत देना, वह आयेंगी तो मेरे बच्चे को नजर लग जायेगी। यदि मेरी माताजी देखने के लिये आयें तो उन्हें आने देना, उनके देखने से मेरे बच्चे की उम्र बढ़ जायेगी। यदि मेरी जेठानी बच्चे को देखने आये तो उसे देखने के लिये मत आने देना। वह मेरे बच्चे को नजर लगायेगी।

इसी क्रम में काकी आये, तो आने देना पर देवरानी को मत आने देना। मेरी भाभी आये तो आने देना, पर ननद रानी को मत आने देना। पर मेरी बहन आये तो आने देना, मेरे बच्चे को देख लेगी तो मेरे बच्चे की उम्र बढ़ जायेगी। बहू की कुछ अजीब मानसिक स्थिति का वर्णन है, ससुराल वालों के देखने से बच्चे को नजर लग जाती है और मायके वालों के देखने से बच्चे की उम्र बढ़ जाती है। कुछ विचित्र तरह का मैके का मोह वर्णित है।

बधावा

गोकुल मऽ श्रीकृष्ण जी जलम्या।
मथुरा मऽ लियो अवतार, बाई ओ हऊँ तो बात नवी सुणी आई॥
बात नवी सुणी आई, बाई हऊँ तो बात नवी सुणी आई।
ताता तपेला नीर उकालो, बाळा कऽ न्हावण कराड़ो ओ यशोदा मैया॥
सुन्दर श्याम खेलाओ ओ यशोदा मैया, सुन्दर श्याम खेलाव॥
झगो पेरावो हरि, नऽ टोपी पेरावो।
आँख मऽ सुरमो सारो ओ यशोदा मैया॥
सुन्दर श्याम खेलाव, सुन्दर श्याम खेलाव, यशोदा मैया॥
आलणा झुलावो हरि, नऽ पालणा झुलाओ।
रेशम लम्बी डोर ओ यशोदा मैया।
सुन्दर श्याम खेलाव, ओ यशोदा मैया, सुन्दर श्याम खेलाव॥
आँगळई धरी नऽ हरि, नऽ बायर लावो।
ठुमक-ठुमक चाल चलाड़ो, ओ यशोदा मैया।
सुन्दर श्याम खेलाव, ओ यशोदा मैया, सुन्दर श्याम खेलाव॥
कुण गुजरणी की नजर हो लागी।
दूध नी पेय नन्दलाल ओ यशोदा मैया।
सुन्दर श्याम खेलाव, ओ यशोदा मैया, सुन्दर श्याम खेलाव॥
राई उतारो हरि, नऽ ळोण उतारो।
बाळा की नजर उतारो, ओ यशोदा मैया॥
सुन्दर श्याम खेलाव, ओ यशोदा मैया, सुन्दर श्याम खेलाव॥
चन्द्रसखी मिल कृष्ण निपजायो।
दूध पियो नन्दलाल ओ यशोदा मैया॥
सुन्दर श्याम खेलाव, ओ यशोदा मैया, सुन्दर श्याम खेलाव॥

भगवान श्रीकृष्णजी ने मथुरा के कारागार में जन्म ले लिया है। पर उनका जन्म उत्सव गोकुल में मनाया जा रहा है। कहाँ पैदा हुए और कहाँ जन्म उत्सव मनाया जा रहा है? हे माँ यशोदा! भगोने में पानी गर्म करो और बालकृष्णजी को स्नान कराओ। माता यशोदा हर्ष विभोर होकर अपने प्यारे बालक को खिला रही हैं। स्नान कराने के बाद हरि यानी बालकृष्ण को झबला पहनाओ। सिर पर टोपी बाँधो और आँखों में काजल लगाओ। यशोदा मैया ने यही सब किया है। कभी वे हरि को पालने में झुलाती हैं, जिसमें रेशम की लम्बी डोरियाँ बँधी हैं। माता यशोदा अपने लाड़ले को झूला झुला रही हैं। गोप बालाएँ माता से प्रार्थना करती हैं- हे माँ यशोदा! कृष्णजी को अँगुली पकड़कर बाहर लाइये। माता यशोदा उन्हें अँगुली पकड़कर बाहर लाती हैं। ठुमकती चाल से चलते हुए कृष्ण बाहर आते हैं और खेलने लग जाते हैं। खेलते-खेलते उन्हें

नजर लग जाती है। वे उदास हो जाते हैं। दूध नहीं पीते हैं। माता चिन्तित हो उठती हैं। किस गुजरिया की नजर लगी है, जो मेरा कान्हा उदास है। तब एक गुजरिया कहती है– हे माँ यशोदा! राई, नमक लो, मिर्च लो, फटे कपड़े के टुकड़े लो, झाड़ू के तिनके लो और कान्हा की नजर उतारो। तब नजर उतर जायेगी। माता यशोदा ने यही सब किया। नजर उतर जाती है और कृष्ण सहज दूध पीने लगते हैं।

बधावा

आओ री सुहागन नारी, मंगल गाओ री॥
जनक दुलारी री, गोद भरावो री॥
आज राम घर शुभ घड़ी आई॥
सोने का कलस, सिया रानी से भराओ री॥
आओ री सुहागन नारी ....
नयनों में कजला, मुख गर्व की कान्ती॥
रूप अनूप सिया पर छायो री॥
आओ री सुहागन नारी ....
माथे पे बिंदिया, सिर पर सिन्दूर॥
चार सुहागन मिल मांग सजाओ री॥
आओ री सुहागन नारी ....
माता कौशल्या बली-बली जाये॥
लाड़ली बहू मेरी हौले-हौले चलो री॥
आओ री सुहागन नारी ....

रामायण प्रसंग के अनुसार सीताजी के पुत्रों का जन्म वाल्मिकी मुनि के आश्रम में हुआ था। लेकिन लोक-गीतकारों ने कल्पना की कि यदि यह प्रसव का मांगलिक कार्य या गोद भराने की रस्म महल में होती तो क्या होता? राजमहल में कितनी चहल-पहल होती। कितनी ही महिलाएँ सीताजी की गोद भरने की रस्म में शामिल होतीं और राजमहल में एक अजीब सा खुशी का समा बँध जाता।

आज की शुभ घड़ी में राजा राम पिता बनेंगे। इस शुभ घड़ी में सोने के कलश पर आम्र पल्लव और नारियल रखकर उसे सजाकर सीताजी के सामने रखा जाता। सीताजी की आँखों में काजल लगा होता और मुख मण्डल पर गर्व भरी लालिमा दिखाई देती। उनका रूप अतुलनीय और अवर्णनीय दिखाई देता। निश्चित रूप से सीताजी पर ऐसा रूप सौन्दर्य छाया होता जिसका वर्णन नहीं हो सकता। सिर्फ कल्पना ही की जा सकती है। सीताजी के माथे पर माँग के बीचो-बीच सिन्दूर लगा है और उस सिन्दूर के ऊपर अमूल्य सोने की बिंदिया शोभायमान है। चार सुहागिन स्त्रियों ने उनका मिलकर अनुपम श्रृँगार किया है। इस खुशी की घड़ी में कौशिल्याजी

वारी-वारी जातीं। अपनी लाड़ली बहू को कहतीं- बहू! अब जरा धीरे-धीरे चलना।

बधावा

आज दिन सोने का हुआ महाराजा।
सोने का दिन हुआ सोने की रात हुई।
पहली बधाई ससरा जी घर भेजो।
पहली बधाई ससरा जी घर भेजो॥
सासु बाई ने लिया भर गोद महाराजा।
आज दिन सोने का ....
दूसरी बधाई जेठ जी घर भेजो।
दूसरी बधाई जेठ जी घर भेजो॥
जेठानी बाई ने लिया भर गोद महाराजा।
आज दिन सोने का ....
तीसरी बधाई देवर जी घर भेजो।
तीसरी बधाई देवर जी घर भेजो॥
देराणी बाई ने लिया भर गोद महाराजा।
आज दिन सोने का ....
चौथी बधाई ननदई जी घर भेजो।
चौथी बधाई ननदई जी घर भेजो॥
नणद बाई ने लिया भर गोद महाराजा।
आज दिन सोने का ....
पाँचवी बधाई पिताजी घर भेजो।
पाँचवी बधाई पिताजी घर भेजो॥
माता बाई ने लिया भर गोद महाराजा।
आज दिन सोने का हुआ महाराजा॥

जो कठिन सूर्य देवता तपते थे, वे भी आज सोने के समान लग रहे हैं। या आज का दिन सोने के समान चमक रहा है। बच्चे के जन्म के कारण खुशी इतनी है कि दिन भी स्वर्ण का तथा रात भी सोने के समान चमकीली दिखाई दे रही है।

पहली बधाई ससुर जी के घर भेजिये। सासुजी ने उस शुभ संदेश को अपनी गोद में सम्मानपूर्वक झेल लिया है। मानो छोटा बच्चा उनकी गोद में आ गया हो। दूसरी बधाई जेठ जी के घर भेजिये। जेठानी ने प्रेम से सराबोर होकर उस शुभ संदेश की पत्रिका को अपनी गोद में भर लिया है। मानो छोटा बच्चा ही उनकी गोद में आ गया हो। तीसरी बधाई लाड़ले देवर जी के घर भेजिये। देवरानी ने उस शुभ संदेश को अपनी गोद में खुशी के साथ ऐसे लिया है, मानो छोटा

बच्चा ही उनकी गोद में आ गया हो। चौथी बधाई ननदोई जी के घर भेजिये। ननद बाईजी ने उसे प्रेम में सराबोर होकर ऐसे गोद में भर लिया, मानो छोटा बच्चा ही उनकी गोद में आ गया हो। पाँचवी बधाई जन्म दाता पिताजी के घर भेजिये। माताजी ने प्रेम में विह्वल होकर उस शुभ संदेश को अपनी गोद में ग्रहण किया और उसे चूम लिया। बच्चे के जन्म की खुशी की खबर सास-ससुर, देवरानी-जेठानी, ननद-ननदोई, माता-पिता, बुआ-फूफा आदि सभी रिश्तेदारों तक पहुँच गई है। सब लोग बहुत खुश हैं। एक मनुष्य के लिये नये जन्म से बढ़कर और क्या खुशी हो सकती है।

बधावा

बाड़ी मऽ को हो राजा चनन कटाड़ो॥
जेको बणावो रे रंग भरी ढोळियो जी॥
चारई पाया हो राजा भंवर उतारो॥
इस ढोलाड़ो रे जाजो हिंगुल रे॥
रेशम बाणा नऽ रे राजा बाण गुणाओ॥
अदवाण लेवो मखमुल की जी॥
सफेदी का रे राजा सेज बिछाओ॥
साऊड़ लेवो रे मखमुल की जी॥
ते पर पोड़िया नऽ हो राजा लोकेन्द्र भाई राज॥
ढोलो साजन की बेटी रिंजणो जी॥
ढोलन्ता न हो राजा आई भोळई नींद॥
हाथ को लटकन रिंजणो छूटी गयो जी॥
ऐतरा मऽ आया नऽ हो राजा भावना बाई बईण॥
हाथ को लटकन रिंजणो लई गया जी॥
जो चढ़ी आवऽ नऽ हो भावज थारो लखपति बाप॥
तोबी नी देवां सौभागेण रिंजणो जी॥
जो चली आवऽ नऽ हो भावज म्हारो माड़ी जायो वीर॥
हँसी रळई देऊँ सौभागेण रिंजणो जी॥
वाट वाटुलिया न हो देवर जेठ नी होय॥
सासु का जाया देवर आपणा॥
सेरी गली का न हो भाई भतीजा नी होय॥
माता का जाया वीरा जी आपणा॥
खेलाया रमाया न हो पूत पराया नी होय॥
कुक का जाया लटकन आपणा जी॥

हे स्वामी! अपनी बाड़ी यानी बगीचे के चन्दन वृक्ष को कटवा लो, और उसका पलंग बनवा लो। पति ने पत्नी की आज्ञा का पालन किया। चन्दन का वृक्ष काटने के बाद उसका पलंग बनवाया गया। चारों पहियों पर कंगूरे उतारे गये और उनको लाल रंग से रंगा गया और उसमें रेशम की निवार (पटी) लगाई गई, उस पर सफेद रंग की गादी डाली गई। ओढ़ने के लिये मखमल की चादर रखी गई। ऐसे पलंग पर लोकेन्द्र भाई सो रहे हैं और उनकी पत्नी ऊषा उन्हें पंखा झल रही हैं। पंखा झलते-झलते उसे नींद आ गई और हाथ का कलात्मक पंखा छूट गया। इतने में उनकी ननदी आई और पंखा उठा ले गई। जब भाभी की नींद खुलती है। वहाँ पंखा नहीं होने पर खोज-बीन होती है। वह अपनी ननदी के पास जाकर पंखा मांगती है। तब ननदी कहती है- हे भाभी! तुम्हारे लखपति पिताजी भी आ जायें तो भी मैं पंखा नहीं दूँगी। हाँ, यदि मेरा भैया लेने के लिए आये तो मैं अपने सहोदर को हँसी-खुशी पंखा दे दूँगी। भाभी गुस्सा होकर जाने लगती है, तब ननदी ने कहा- भाभी! राहगीर को भाई कहने से वह भाई नहीं बन जाता है। कोई कहने मात्र से देवर-जेठ नहीं बन सकता है। जिसे तुम अपना मान बैठी हो, वह तुम्हारा कोई नहीं है। हाँ, मेरी माँ की कोख से जन्म लेने वाला ही सगा रिश्तेदार हो सकता है। गलियों में खेलने वाले बच्चे को तुम कितना ही लाड़-दुलार करोगी तो भी वह तुम्हारा नहीं बन पायेगा, जिस बच्चे को तुम अपनी कोख से जन्म दोगी, वही तुम्हारा अपना खून होगा, वही तुम्हारा पुत्र होगा।

बधावा

लाल काई मोगरा नऽ काई मोय लिया जी॥
नाना की बिरिया म्हारा घर वाजा भी वाजा था॥
अबऽ बाई की बेर्‌या डब्बा कूट लिया जी॥
लाल काई मोगरा नऽ ....
नाना की बिरिया म्हारा घर पेड़ा बटिया था॥
अब बाई री बेर्‌या गुड़ फोड़ लिया जी॥
लाल काई मोगरा नऽ ....
नाना री बिरिया म्हारा घर हलवा भी बण्या था॥
अब बाई री बेर्‌या थूली राँद लिया जी॥
लाल काई मोगरा नऽ ....
नाना री बिरिया म्हारा घर चरवा भी धरिया था॥
अब बाई री बेर्‌या पाणी डाल लिया जी॥
लाल काई मोगरा नऽ ....
नाना री बिरिया म्हारा घर पेळा भी लाया था॥
अब बाई री बेर्‌या अब चिन्दा फाड़ लिया जी॥
लाल काई मोगरा नऽ काई मोय लिया जी॥

दादी माँ कहती है- यदि लड़का होता तो वह मोगरे के फूल की तरह सब का मन मोह लेता और उसकी खुशबू से मन मोहित हो जाता। पर क्या करूँ? लड़की पैदा हुई है। मुझे कोई खुशी नहीं है। पिछले साल जब मेरे यहाँ लड़का हुआ था, तब मेरे घर बाजे बजे थे। खूब खुशियाँ मनाई गई थीं। अब लड़की पैदा हुई है तो फूटा डिब्बा कूट कर बजा दो। लड़के के जन्म के समय मैंने मिठाईयाँ बाँटी थीं, अब लड़की हुई है, इसलिए गुड़ तोड़कर बाँट दो। मुझे कोई खुशी नहीं हुई है। लड़के के जन्म के समय मैंने बहू को हलवा खिलाया था। अब गेहूँ की थूली बनाकर खिला दो। लड़के के जन्म के समय मैंने चरवे (बड़े बरतन) में पानी गर्म कर बहू को स्नान करवाया था। अब जैसे-तैसे पानी डालकर बहू को स्नान करवा दो। मुझे कोई खुशी नहीं हुई है। लड़के के जन्म के समय मेरे घर साजन-समधी लोग पीला वस्त्र लेकर आये थे। अब लड़की हुई है, तो कोई नहीं आयेगा। इसलिये बहू को पुरानी साड़ी पहनाकर जल देवी का पूजन कार्य सम्पन्न करवा दो। दादी माँ सहित पूरा परिवार लड़की होने से सख्त नाराज है।

बधावा

कैसे तुम धनुष उठाओ, लखन रामचन्द्र हो बना।
पयली बधाई माता गौरा की गोद, रामचन्द्र हो बना।
धन्य-धन्य तूने जाया गजानंद, रामचन्द्र हो बना॥
दूसरी बधाई माता कौशल्या की गोद, रामचन्द्र हो बना।
धन्य-धन्य तूने जाया रघुवीर, रामचन्द्र हो बना॥
तीसरी बधाई माता सुमित्रा की गोद, रामचन्द्र हो बना।
धन्य-धन्य तूने जाया लखन लाल, रामचन्द्र हो बना॥
चौथी बधाई माता अंजना की गोद, रामचन्द्र हो बना।
धन्य-धन्य तूने जाया हनुमान, रामचन्द्र हो बना॥
पाँचवी बधाई माता देवकी की गोद, रामचन्द्र हो बना।
धन्य-धन्य तूने जाया श्रीकृष्ण, रामचन्द्र हो बना॥

हे राम-लक्ष्मण! तुम धनुष बाण कैसे उठाओगे? तुम तो अभी सुकोमल हो। फिर भी रामचन्द्र और लक्ष्मण दूल्हे के समान हैं।

पहली बधाई माता गौरी को देना, धन्य है माता पार्वती जिसने गणेशजी को जन्म दिया है। दूसरी बधाई माता कौशिल्याजी को देना, धन्य है माता कौशिल्या जिसने श्रीरामजी को जन्म दिया है। तीसरी बधाई माता सुमित्राजी को देना, धन्य है माता सुमित्रा जिसने शूरवीर लक्ष्मणजी को जन्म दिया है। चौथी बधाई माता, अंजनीजी को देना, धन्य है माता अंजनी जिसने बलशाली हनुमानजी को जन्म दिया है। पाँचवी बधाई माता देवकीजी को देना, धन्य है माता देवकी जिसने भगवान श्रीकृष्णजी को जन्म दिया है।

बधावा

काळई रे बादलई नीलई रेख, दादुर सुहाणी लागऽ राज॥
छोटी-मोटी मारूणी का लम्बा-लम्बा केश॥
हाथ रंगाड़ो गोरी को पियु परदेश॥
काळई रे बादलई ....
बाग मऽ जाजो महाराज, नारियल बेड़ाड़ी लावजो राज॥
नारियल बेड़ाड़ी लावजो राज, राय आँगण ढोलई दिजो राज॥
काळई रे बादलई ....
बाग मऽ जाजो महाराज, लवंग बेड़ाड़ी लावजो राज॥
लवंग बेड़ाड़ी लावजो राज, राय आँगण ढोलई दिजो राज॥
काळई रे बादलई ....
बाग मऽ जाजो महाराज, खारिक बेड़ाड़ी लावजो राज॥
खारिक बेड़ाड़ी लावजो राज, राय आँगण ढोलई दिजो राज॥
काळई रे बादलई ....
बाग मऽ जाजो महाराज, डोडा बेड़ाड़ी लावजो राज॥
डोडा बेड़ाड़ी लावजो राज, राय आँगण ढोलई दिजो राज॥
काळई रे बादलई ....

गीत-श्रीमती कांता जोशी, खंडवा

काले-काले बादलों में बिजली चमककर नीले प्रकाश की रेखा के समान सुहावनी लग रही है। प्रियतम परदेश में है और प्रिया उदास है। प्रिया कद में छोटी है लेकिन उसके बाल काफी लम्बे हैं। गर्भावस्था के कारण उसके हाथों में मेहंदी लगाई जा रही है। हे प्रियतम! गोरी को बहलाने के लिये बाग में जाइये। वहाँ से नारियल तोड़कर ले आइये। नारियल तोड़कर गोरी की गोद में रख दीजिए। हे प्रिय! अपने बाग में जाइये और वहाँ से लौंग तोड़कर ले आइये। लौंग तोड़कर गोरी के ससुर के आँगन में रख दीजिये। हे स्वामी! बाग में जाईये और खारिक तोड़कर ले आइये। खारिक तोड़कर राय साहब के आँगन में रख दीजिये। हे प्रिय! बाग में जाइये और इलायची तोड़कर ले आइये। इलायची तोड़कर राय साहब यानी हमारे ससुरजी को सुपुर्द कर दीजिए। गर्भवती महिला को इन वस्तुओं को खाने की इच्छा होती है।

बधावा

जन्मे राम आनंद भयो मन मऽ॥
राजा दशरथ न हत्थी लुटाया॥
बचो एक हत्थी कजली बन मऽ॥

जन्मे राम आनंद ....
राजा दशरथ न घोड़ा लुटाया॥
बचो एक घोड़ो सूरज का रथ मऽ ॥
जन्मे राम आनंद ....
राजा दशरथ नऽ गौवा लुटाई॥
बची गौवा एक सुरियाबन मऽ ॥
जन्मे राम आनंद ....
राजा दशरथ नऽ साड़ी लुटाई॥
बची एक साड़ी द्रोपदी का अंग मऽ ॥
जन्मे राम आनंद ....
राजा दशरथ नऽ मोती लुटाया॥
बचो एक मोती कौशल्या की नथ मऽ ॥
जन्मे राम आनंद भयो मन मऽ ॥

राजा दशरथ के यहाँ बहुत दिनों तक संतान नहीं थी। जब चार-चार संतानें एक साथ पैदा होती हैं, तब राजा दशरथ की खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहता। राम का जन्म हुआ यह सुनकर राजा दशरथ के मन में अपार खुशी हुई। राजा दशरथ ने हाथियों का दान किया तो पृथ्वी के सभी हाथियों का दान कर दिया। सिर्फ एक ऐरावत देव हाथी कजली बन में बचने दिया। बाकी सभी हाथी दान कर दिये। राम के जन्म के उपलक्ष्य में दशरथजी ने घोड़ों का दान किया तो सभी घोड़े दान कर दिये। सिर्फ सूर्य के रथ में जुता हुआ एक देव घोड़ा बाकी रह गया है जिससे सूरज गति शेष है। राम के जन्म की खुशी में राजा दशरथ ने सभी गायों का दान किया, तो सिर्फ एक गाय कामधेनु बची रही, क्योंकि वह देवताओं की गाय है। जो सबके मनोरथ पूरी करती है। राजा दशरथ ने वस्त्रों का दान किया तो सिर्फ एक अमूल्य अखूट लज्जा बचाने वाली साड़ी द्रोपदी के शरीर पर बाकी रह गई। राजा दशरथ ने सोना और मोतियों का दान किया, तो सिर्फ एक राम रूपी मोती कौशिल्या जी की नथ में बाकी बचा। बाकी सभी दान कर दिया है। ऐसी खुशी और ऐसा दान सृष्टि में कभी नहीं हुआ।

जच्चा

सावण वरस्या, भादव वरस्या, वरसण लाग्या मेऊला।
केशरिया सायब देवो नारायण ललना।
राई बोया, जीरा बोया, बोवण लाग्या आजम।
केशरिया सायब देवो नारायण ललना।
राई काटिया, जीरा काटिया, काटण लाग्या आजमा।
केशरिया सायब देवो नारायण ललना।

आठ नव मयना पूरा हुया, ललना जाया रे बालमा।
केशरिया सायब देवो नारायण ललना।
अंगणा बठिया, भाट ब्राह्मण, घर मऽ बठिया भूवा बाई।
केशरिया सायब देवो नारायण ललना।
हत्थी बकस्या घोड़ा बकस्या, बकसण लाग्या खजिना।
केशरिया सायब देवो नारायण ललना।
पड़दा मऽ सी जच्चा बोलिया, हाथ संखेरो रे बालमा।
केशरिया सायब देवो नारायण ललना।
उस लड़के का ब्याव कराँगा, शादी कराँगा।
खरचो बढ्यो रे बालमा।
केशरिया सायब देवो नारायण ललना।

गीत-सुश्री गंगाबाई तोमर, दवाना

सावन में रिमझिम पानी बरसा। भादव में पानी की झड़ियाँ लगीं। हर तरफ बादल बरसने लगे हैं। हे केशरिया सायब! धरती भी ऋतुमति हो गई है और हरियाली छा गई है और इधर मेरी कोख भी हरी हो गई है। मैं गर्भवती हूँ। हे स्वामी! मुझे एक पुत्र की कामना है।

धरती पर पानी बरस जाने के बाद खेतों में राई बोई गई। जीरा बोया गया। पत्नी गर्भावस्था में है, इसलिये अजवाइन भी बोयी गयी है। उधर फसल बड़ी हो रही है और इधर पत्नी के गर्भ में बच्चा पल रहा है। प्रकृति अपना चक्र पूर्ण कर रही है। आठवाँ महीना पूरा हुआ और नौवें महीने के पूर्ण होते ही पत्नी ने पुत्र को जन्म दिया। फसल भी बड़ी हो गई है। पक गई है।

जैसे ही पुत्र का जन्म हुआ, खुशियाँ मनाई गई हैं। ब्राह्मणों को बुलाया गया है। पुत्र के शुभ लक्षण पूछे गये। आँगन में सम्मानीय ब्राह्मण देवता बैठे हैं, चारण भाट बैठे हैं तथा घर के अन्दर बुआजी बैठी हैं।

पुत्र जन्म की खुशी में पति महोदय ने हाथी दान किया, घोड़े दान में दिये और खजाना से धन लुटाने लगे। तब परदे के अन्दर से पत्नी ने कहा- अब हाथ रोकिये, पुत्र जन्म के उपलक्ष्य में क्या सभी कुछ लुटा दोगे? हाथ रोकिये! लड़का हुआ है तो इसकी शादी होगी, इसकी परवरिश पर खर्च तो होगा ही। क्या अभी ही सब कुछ खर्च कर दोगे? जरा हाथ रोकिये! पत्नी की बात सुनकर पति सचेत होते हैं और हाथ रोक देते हैं।

जच्चा

जच्चा ने जाया नन्दलाल कुएँ पे,
कौन उठाये मेरी सिर की गगरिया।

कौन उठाये नन्दलाल, कुएँ पे,
कौन उठाये मेरी सिर की गगरिया।
ससरा उठावे मेरे सिर की गगरिया,
सासु उठावे नन्दलाल, कुएँ पे।
कौन उठावे मेरे सिर की गगरिया,
कौन उठावे नन्दलाल कुएँ पे।
जेठजी उठावे मेरे सिर की गगरिया।
जेठाणी उठावे नन्दलाल कुएँ पे।
कौन उठावे मेरे सिर की गगरिया,
कौन उठावे नन्दलाल कुएँ पे।
देवर उठावे मेरे सिर की गगरिया,
देराणी उठावे नन्दलाल कुएँ पे।
कौन उठावे मेरे सिर की गगरिया,
कौन उठावे नन्दलाल कुएँ पे।
स्वामी उठावे मेरे सिर की गगरिया,
सौतन उठावे नन्दलाल कुएँ पे।

गीत–नरेन्द्र गीते, दवाना

एक सौभाग्यवती स्त्री ने पुत्र को जन्म दिया है। पुत्र जन्म के बाद वह बच्चे को अकेला छोड़कर पानी लेने कैसे जाये? इसलिये उसके मन में शंका–कुशंका होती है। मैं पानी लेने जा रही हूँ तो मेरे बच्चे की देखभाल कौन करेगा ? उसे किसके सहारे छोड़ जाऊँ? जाऊँ तो मेरे सिर पर घड़ा कौन चढ़ायेगा? पर मेरे ससुरजी सिर पर घड़ा उठाकर रख देंगे और सासूजी मेरे बच्चे को संभाल लेंगी। ससुरजी घर में नहीं होंगे तो मेरे जेठजी सिर पर घड़ा उठाकर रख देंगे और जेठानी मेरे बच्चे की साज–संभाल कर लेंगी। जेठजी भी घर में नहीं होंगे तो मेरे देवर सिर पर घड़ा उठाकर चढ़ा देंगे और देवरानी मेरे बच्चे को लाड़–दुलार करके संभाल लेगी। अगर ये सब भी नहीं हुए तो मेरे स्वामीजी तो घर में ही हैं। कुएँ पर पानी लेने जाऊँगी तो स्वामीजी बड़े प्यार से घड़ा उठवा देंगे। मेरे सिर पर रख देंगे और तो और मेरी सौतन मेरे बच्चे की साज–संभाल कर लेगी। वही मेरे बच्चे को लाड़–दुलार करेगी।

अजवाइन

एक मण सोठ सवा मण आजमो॥
आपण दुई जोण कूटा हो सायबजी॥
धमके सुणी नऽ म्हारी सासु दौड़ी आवसे॥
सासु बाई आवसे नऽ आठ दिन रयसे॥

खासे खवाड़से नऽ म्हारा घर कऽ उजाड़से॥
धमको सुणी नऽ म्हारी माता बाई आवसे॥
माता बाई आवसे नऽ सवा मयनो रयसे॥
म्हारो जापो सुधारी घर जासे॥
धमको सुणी नऽ म्हारी भाभीजी दौड़ी आवसे॥
भाभी जी आवसे नऽ आठ दिन रयसे॥
खासे-खवाड़से नऽ म्हारा घर कऽ उजाड़से॥
धमको सुणी न म्हारी बैनया बाई आवसे॥
बैन्या बाई आवसे नऽ सवा मयनो रयसे॥
म्हारो जापो सुधारी घर जासे॥

यह गीत जच्चा गीत है। इसे आजू (अजवाइन) गीत कहते हैं। बच्चे के जन्म के बाद बच्चे की माँ को सूखे मेवे खिलाये जाते हैं।

पत्नी अपने पति से कहती है- हे स्वामी! एक मन सोंठ और सवा मन अजवाईन आप और मैं दोनों मिलकर पीसें, पर जरा धीरे-धीरे कूटना, कहीं धमका सुनकर कोई आ ना जाये। धमका सुनकर मेरी सासुजी दौड़कर आयेंगी। सासुजी आयेंगी तो वह आठ दिन रहेंगी। खायेंगी-पियेंगी औरों को भी खिलायेंगी। मेरे घर को उजाड़ जायेंगी।

हाँ, यदि मेरी माताजी ने धमका सुना तो वह भी दौड़कर आयेंगी। वह सवा महीना रहेंगी। वह मेरा जापा सुधारने के बाद ही घर जायेंगी।

तुम्हारी भाभी ने यह धमका सुना तो वह दौड़कर आयेंगी। मात्र आठ दिन रहेंगी और खायेंगी-पियेंगी, दूसरों को भी खिलायेंगी। और मेरे घर को उजाड़ कर रख देंगी।

हाँ, यदि मेरी बहन ने सुना तो वह दौड़कर आयेगी। आकर वह सवा महीना रहेगी और घर का कामकाज करेगी, मेरे घर को व्यवस्थित कर जायेगी, मेरा जापा सुधार कर ही घर जायेगी।

अजवाइन कूटने-पीटने के बहाने भाभी अपने गर्भवती होने की खबर सब जगह फैलाना चाहती है, लेकिन उसे सास, जेठानी का घर में रहने का भय है। पर, उसे अपनी माँ और बहन के महीनों रखने में कोई एतराज नहीं है। इनके रहने से उसकी प्रसूति सुधर जायेगी।

जन्म बधाई गीत

सुणो तो पिया हो, हम नहीं, कोईकऽ बुलावां।
सुणो तो पिया हो, हम नहीं, कोईकऽ बुलावां॥

सासूजी सुणसे बागू-बागू आवसे।
बागू-बागू आवसे नऽ सेर भरी खासे॥
सेर भरी खासे नऽ घोरी-घोरी सोव से॥
म्हारा घर को उजाड़ो करी जासे॥
सुणो तो पिया हो ....
माय म्हारी सुणसे तो दौड़ी-दौड़ी आवसे।
दौड़ी-दौड़ी आवसे नऽ पाव भरी खासे॥
पाव भरी खासे नऽ, पल भरी सोवसे॥
म्हारा घर को जुगाड़ो करी जासे।
सुणो तो पिया हो ....
भाभी जी सुणसे तो बागू-बागू आवसे।
बागू-बागू आवसे नऽ सेर भरी खासे॥
सेर भरी खासे नऽ घोरी-घोरी सोवसे॥
म्हारा घर को उजाड़ो करी जासे॥
सुणो तो पिया हो ....
भाभी म्हारी सुणसे तो दौड़ी-दौड़ी आवसे।
दौड़ी-दौड़ी आवसे नऽ पाव भरी खासे॥
पाव भरी खासे नऽ पल भरी सोवसे॥
म्हारा घर को जुगाड़ा करी जासे।
सुणो तो पिया हो, हम नहीं कोईकऽ बुलावां
सुणो तो पिया हो, हम नहीं कोईकऽ बुलावां॥

सुनो प्रियतम! मुझे प्रसूति के काम के लिये किसी को भी नहीं बुलाना है। मेरी सासुजी सुनेंगी तो वह धीमे-धीमे चींटी की चाल से चलती हुई आयेंगी। आने के बाद वह विश्राम करेंगी। खाने में वह एक किलो खाना खायेंगी। खाना खाने के बाद वह लम्बी तान लेकर सोयेंगी। ऊपर से वह खर्राटे लेंगी। काम धंधा कुछ नहीं करेंगी। उल्टा मेरे घर का नुकसान करेंगी। बिल्कुल उजाड़ देंगी, इसलिए मुझे तुम्हारी माँ को नहीं बुलाना है।

सुनो! यदि मेरी माताजी को खबर लगेगी तो वे दौड़कर आयेंगी। आने के बाद एक पल भी विश्राम नहीं करेंगी। वह खाना भी कम खायेंगी और विश्राम तक नहीं करेंगी। मेरे घर को व्यवस्थित करके ही जायेंगी।

सुनो! यदि भाभीजी (जेठानी) को बुलाओगे तो वह धीमे-धीमे चींटी की चाल से आयेंगी। आने के बाद विश्राम करेंगी। इसके बाद वह खूब खाना खायेंगी और गहरी नींद में सोयेंगी। काम धंधा कुछ नहीं करेंगी। उलटे मेरे घर को उजाड़कर रख देंगी। इसलिए मुझे तुम्हारी भाभी को भी नहीं बुलाना है। हाँ, यदि मेरी बहन को बुलाना हो तो वह दौड़कर आयेगी।

आने के बाद वह पल भर भी विश्राम नहीं करेगी। वह पाव भर खाना खायेगी और थोड़ा विश्राम करेगी। वह मेरे घर को व्यवस्थित करके ही जायेगी।

बधाई

कड़क तम्बाकू का सुपड़ा ऐतरा पान,
नऽ रसिया लालजी रे॥
हाल हाकी नऽ बालम घर आया,
नऽ गोरी परसो हमारी थाल,
रसिया लालजी रे
सीरो पूरी तो हाँऊ भूली गई नऽ,
मन राँधी मक्का की घाट,
रसिया लालजी रे॥
घीव गुड़ तो हाँऊ भूली गई नऽ,
मनऽ परस्यो आलस्यो तेल,
रसिया लालजी रे॥
जीमणो-चुटनो तो बालम भूली गया,
मकऽ मारयो चाबूक को मार,
रसिया लालजी रे॥
रड़णुं कुडणूं तो हाँऊ भूली गई,
भागी पियर की वाट
रसिया लालजी रे॥

गीत-सुश्री गंगाबाई तोमर, दवाना

हे स्वामीजी! कड़क तम्बाकू मत बोईये। कड़क तम्बाकू के पत्ते सुपड़े के बराबर होते हैं। रसिक पिया जी तम्बाकू मत खाईये। तम्बाकू खाना अच्छा नहीं है। खेत में हल चलाकर पति महोदय घर आये हैं। और पत्नी से कहा- मेरी थाली परोसो। पत्नी खाना बनाना भूल गई थी, उसने हलवा नहीं बनाया, न पूरी बनाई। जल्दी में उसने मक्का की थूली (दलिया) बना ली। उसमें घी गुड़ डालने के स्थान पर अलसी का तेल डाल दिया। पति महोदय को गुस्सा आ गया, ये क्या खाना है? गुस्से में पति महोदय ने चाबुक से पत्नी को बहुत मारा। रोना-धोना छोड़कर पत्नी भी गुस्से में रूठकर अपने मायके चली गई।

पगल्या

कई गोकुल मऽ बाजा बाजिया॥
मथुरा मऽ धुरया रे निशाण हो॥

म्हारी राजमल पगल्या मोकलो पुत्र का॥
यशोमती पेलई पिंजरी॥
देवकी नऽ बाळो जायो, बाळो कान्ह॥
म्हारी राजमल पगल्या मोकलो पुत्र का॥
कई सवा गज धरती दल चढ़ी॥
उनका देव मऽ भयो आनंद॥
म्हारी राजमल पगल्या मोकलो पुत्र का॥
कहीं घोड़ीला छूटिया मामा कंस का॥
मथुरा मऽ मची घमसाण॥
म्हारी राजमल पगल्या मोकलो पुत्र का॥

कृष्ण जन्म पर गोकुल में बाजे बज रहे हैं और मथुरा नगरी में पताकाएँ लहरा रही हैं। गोकुल में नंदजी को खुशी है, वहीं मथुरा में कारागार में बंद देवकी-वसुदेवजी के मन में भी अपार आनन्द और हर्ष है। देवकी ने आज खुशी के प्रतीक पीले वस्त्र धारण किये हैं।

हे मेरे राजा सदृश्य स्वामी! मेरे नाती के पगलिये (पुत्र प्राप्ति का संदेश) भेजिये। यशोदा ने पुत्र को जन्म दिया है। प्रसव पीड़ा से यशोदा भी पीली पड़ गई हैं। यशोदा को एक भय यह भी है कि कहीं कंस को पता न चल जाये। देवकी ने कृष्ण को कारागृह में जन्म दिया है। देवकी इतनी चिंतित और भयभीत नहीं है, जितनी कि माता यशोदा हैं।

हे मेरे स्वामी! आप पुत्र जन्म की खुशी में पगलिये भेजिये। पुत्र जन्म की बात जब लड़की की ससुराल पहुँचती है, तो दादाजी, दादी माँ के मन में अपार खुशी हुई, मानो धरती सवा गज ऊपर उठ गई है। मानो सवा गज मिट्टी की तह और चढ़ गई है। यानी आनन्द की कोई सीमा नहीं है। पूरा परिवार आनन्द उत्सव और उल्लास के समुद्र में गोते लगा रहा है। उनके पूरे कुटुम्ब परिवार में आनन्द छा गया है। इस खुशी के मौके पर मामा लोग भी पीछे कैसे रहते। पहला शिशु प्राय: मायके में होता है, वहाँ मामा भी मौजूद होते हैं। मामा का मन हर्ष-उल्लास से नाचने लगता है और इस खुशी के मौके पर ढोल नगाड़ों की थाप पर महिलाओं के नृत्य का एक अनोखा समा बँध जाता है। यदि पुत्र ससुराल में हुआ है तो मामा लोग अपने भानजे के लिये वस्त्र आभूषण लेकर सजे हुए घोड़ों पर बैठकर आते हैं और अपनी बहन के यहाँ एक अनोखे जन्मोत्सव के आनन्द का वातावरण बन जाता है।

पाँचवी पूजन

अनऽ सरवरिया गौरसड़ा सा घोल्या रे।
कई महिड़ो बिलोवता माखण नित वयऽ जी।
कई अनऽ सरवरिया देवकी देवी न्हाया रे॥

कुल ना वधावणऽ कृष्ण जी जलमिया।
कई कृष्ण जलम्या, जलम्या वासुदेव घर दियो रे।
चरण छियो नऽ हो, सुभद्रा बाई भतीजा तमारो।
अनऽ सरवरिया गौरसड़ा सा घोल्या करे॥
कई महिड़ो बिलोवता माखण नित वयऽ जी।
अनऽ सरवरिया उसा ववु न्हाया रे।
कई अनऽ सरवरिया उसा ववु न्हाया रे।
कुल ना वधावणा कामनाबाई जलम्या।
जलम्या जनम्या लोकेन्द्र भाई घर दियो रे।
चरण छियो नऽ हो भावना बाई भतीजो तमारो रे।

इस सरोवर में दूध जैसा स्वच्छ निर्मल जल भरा है, अथवा यह सरोवर दूध से लबालब भरा है। उस दूध से दही बनाया जा रहा है, दही से मक्खन निकाला जा रहा है। छाछ की कमी नहीं है। घी की पाल बनी है। यह सरोवर सम्पूर्ण कामनाओं को देने वाला है। इस कामनारूपी सरोवर में देवी देवकी ने पुत्र की मनोकामना कर मान-मनौती मानकर स्नान किया। देवकीजी की मनोकामना पूर्ण हुई। उन्हें पुत्र प्राप्त हुआ। वंश वृद्धि के लिये पुत्र ने जन्म लिया है। वसुदेव के यहाँ कृष्ण ने वंश वृद्धि के लिये जन्म लिया है। वसुदेव के घर में कुल दीपक आ गया है। हे मेरी प्यारी ननदी! मैं तुम्हारे चरण स्पर्श कर रही हूँ। देखो! तुम्हारे घर भतीजे का जन्म हुआ है, देखो, यह तुम्हारा सुन्दर भतीजा है।

इस कामना सरोवर में उषा बहू ने स्नान किया है। और उन्हें पुत्री प्राप्त हुई। पुत्री प्राप्त होने से कुल वृद्धि हुई है। पुत्री के जन्म से लोकेन्द्र भाई के वंश की वृद्धि हुई है और उनके घर में दीपक लगाने वाली प्यारी बिटिया आई है। हे मेरी प्यारी ननदी! मैं तुम्हारे चरण स्पर्श कर रही हूँ। देखो, तुम्हारे घर भतीजी ने जन्म लिया है। देखो, यह तुम्हारी सुन्दर भतीजी है।

जलवाय पूजन

जलदेवी माता परमेश्वरी वो॥
थारा मढ़ मऽ गोबर घोलसे कुण वो॥
गोबर घोलसे बाला की माउली वो॥
मन का मनोरथ पुर्विया ओ सई॥
दिवलो बळऽ नऽ जलदेवी हो पूजसा॥
जलदेवी माता परमेश्वरी वो॥
थारा मढ़ मऽ घुघरी चढ़ावसे कुण वो॥
घुघरी चढ़ावसे बाला की माउली वो॥
मन का मनोरथ पुर्विया वो सई॥

दिवलो बळऽ नऽ जलदेवी पूजसा॥
जलदेवी माता परमेश्वरी वो॥
थारा मढ़ मऽ बाखला चढ़ावसे कुण वो॥
बाखला चढ़ावसे बाला की माउली वो॥
मन का मनोरथ पुर्विया ओ सई॥
दिवलो बळऽ नऽ जलदेवी पुजसा।
जलदेवी माता परमेश्वरी वो॥
थारा मढ़ मऽ खापरी चढ़ावसे कुण वो॥
खापरी चढ़ावसे बाला की माउली वो॥
मन का मनोरथ पुर्विया वो सई॥
दिवलो बळऽ नऽ जलदेवी पूजसा॥
जलदेवी माता परमेश्वरी वो॥
थारा मढ़ मऽ नायल चढ़ावसे कुण वो॥
नायल चढ़ावसे बाला की माउली वो॥
मन का मनोरथ पुर्विया वो सई॥
दिवलो बळऽ नऽ जलदेवी पूजसा॥

हे जलदेवी माता! तुम्हारे मन्दिर को गोबर से कौन लीपेगा? सखी कहती है– गोबर घोल कर बच्चे की माँ स्वयं मेरे मन्दिर को लीपेगी, क्योंकि उसने अपने सम्पूर्ण मनोरथ पा लिये, जिसकी उसने कामना की थी। पुत्र को प्राप्त करके उसने सभी मनोरथ पा लिये हैं। जलते हुये दीपक के साथ मेरे मन्दिर को लीपेगी। हे जलदेवी माता! तुम्हारे मन्दिर को घुघरी कौन चढ़ायेगा? घुघरी (गेहूँ को उबालकर घुघरी बनाई जाती है।) चढ़ायेगी बच्चे की माँ, जिसने सम्पूर्ण मनोरथ पा लिये हैं। हे जलदेवी माता! तुम्हारे मन्दिर में टापू का भोग कौन चढ़ायेगा? टापू (गेहूँ के आटे की सीकी बाटी) चढ़ायेगी बच्चे की माँ, जिसने अपने सम्पूर्ण मनोरथ पाये हैं।

हे जलदेवी माता! तुम्हारे मन्दिर में खापरी कौन चढ़ायेगा? खापरी (कच्चे घड़े का टूटा हुआ टुकड़ा) चढ़ायेगी बच्चे की माँ, जिसने अपने सम्पूर्ण मनोरथ प्राप्त किये हैं। हे जलदेवी माता! तुम्हारे मन्दिर में नारियल कौन चढ़ायेगा ? नारियल चढ़ायेगी बच्चे की माँ, जिसने अपने सब मनोरथ पाये हैं।

जलवाय पूजन

बालतेणी तू सुतीज की जागज वो,
जलदेवी जोवऽ थारी वावुली वो।
हम सुताज हमारा ससराजी का राज,
सासुजी का राज, उनका हरीख हमकऽ सोयलो।

बालतेणी बाई तू सुतीज की जागज वो,
जलदेवी जोवऽ थारी वाटुली वो।
हम सुताज हमारा जेठजी का राज,
जेठाणी जी का राज, उनका हरीख हमकऽ सोयलो।
बालतेणी बाई तू सुतीज की जागज वो,
जलदेवी जोवऽ थारी वाटुली वो।
हम सुताज हमारा देवरजी का राज,
देराणी बाई का राज, उनका हरीख हमकऽ सोयलो।
बालतेणी बाई तू सुतीज की जागज वो,
जलदेवी जोवऽ थारी वाटुली वो।
हम सुताज हमारा नणदई जी का राज,
नणद बाई का राज, उनका हरीख हमकऽ सोयलो।
बालतेणी बाई तू सुतीज की जागज वो,
जलदेवी जोवऽ थारी वाटुली वो।
हम सुताज हमारा स्वामीजी का राज,
बालुड़ा का राज, उनका हरीख हमकऽ सोयलो।

बच्चे की माँ बच्चे को जन्म देने के बाद सुखपूर्वक सो रही है। तब जलदेवी माता उसे स्वप्नावस्था में कहती हैं– हे बच्चे को जन्म देने वाली माँ! तू सो रही है या जाग रही है। तुझे जलदेवी माता बुला रही हैं। तेरा रास्ता देख रही हैं। तब बच्चे की माँ कहती है– हमें तो बच्चे के जन्म के बाद हल्कापन महसूस हो रहा है। अब हमें कुछ आराम मिला है। इसलिये हम अपने ससुरजी के राज में सुखपूर्वक आराम कर रहे हैं। सासुजी को फिक्र होगी। वे कब जलदेवी पूजन का निश्चित करती हैं। हमें कोई फिक्र नहीं, हम तो उन दोनों के राज में सुख की नींद सो रहे हैं। इधर पड़ोसन भी पूछती है– बच्चे की माँ तू सोई है या जाग रही है। जलदेवी माता का पूजन कब करोगी? तब बच्चे की माता कहती है– मैं तो बच्चे को जन्म देने के बाद अपने जेठ और जेठानी के राज में सुखपूर्वक सो रही हूँ। जलदेवी का पूजन कब करना है यह मेरी जेठानी का काम है। उन्हें मालूम होगा वे ही निश्चित करेंगी कि जलदेवी का पूजन कब करना है? मुझे कल सपने में जलदेवी ने दर्शन दिये।

हे बच्चे को जन्म देने वाली माँ! बच्चे को जन्म देकर तू सुखपूर्वक सो रही है या जाग रही है। जलदेवी माता का पूजन कब करोगी? क्या उसे भूल गई है ? बच्चे की माता कहती है– मैं अपने देवर और देवरानी के राज में सुखपूर्वक सो रही हूँ। जलदेवी का पूजन करवाना इसकी चिंता मेरी देवरानी करेगी। मैं तो सुखपूर्वक उनके राज में सो रही हूँ।

हे बच्चे की माँ! तुम सो रही हो या जाग रही हो। जलदेवी माता का पूजन करना भूल गई हो क्या? बच्चे की माता कहती है– मेरे भाग्य में सुख शान्ति है। मुझे केवल बच्चे के जन्म की

चिन्ता थी, वह भी समाप्त हो गयी। अब मैं अपने ननद और ननदोई के राज में सुखपूर्वक सो रही हूँ। बात जलदेवी पूजन की है। यह चिंता तो मेरी ननद करेगी, जलदेवी का पूजन कब करवाना है। यह निश्चित करना उनका काम है। मैं तो उनकी छाया में सुख चैन से सो रही हूँ।

हे बच्चे को जन्म देने वाली माँ! बच्चे को जन्म देकर तू सुखपूर्वक सो रही है या जाग रही है। जलदेवी माता का पूजन कब करोगी ? क्या उसे भूल गई हो ? तब बच्चे की माँ कहती है– मैं तो अपने पति के राज्य में अपने बच्चे के साथ सुखपूर्वक सो रही हूँ। मुझे इसकी क्या चिंता ? मैं सोऊँ या जागूँ, सारी चिंता करना मेरे स्वामी का काम है। जलदेवी का पूजन कब करना है। यह सब बड़े बुजुर्ग निश्चित करेंगे। मैं तो एक सुखी परिवार की छत्र-छाया में सुखपूर्वक हूँ। मुझे परिवार के सभी लोगों का स्नेह प्राप्त है। सभी मेरी चिन्ता करते हैं। मैंने तो वंशवृद्धि का कार्य कर दिया है। पूजा पाठ आदि की जिम्मेदारी घर के बड़ों की है। मैं तो छोटी बहू हूँ।

घुघरी

बाई ओ हसिया गऊ की घुघरी रंधाड़ो॥
बाई ओ कटिया गऊ की लापसी॥
बाई ओ तेड़ो-तेड़ो नाविड़ा रो पूत॥
सयर मऽ वाटो घुघरी।
बीरा रे दिजे-दिजे सगला सयर मऽ॥
म्हारी नणद कऽ मत दिजो घुघरी॥
बाई ओ दिवी-दिवी सगला सयर मऽ॥
नणद कऽ दई आयो घुघरी॥
तम तो उठो स्वामी लीलोड़ी पलाड़ो॥
बईण घर जावो पावणा॥
तम तो आओ वीरा बठो पटसाल॥
मन की करऽ वात वो॥
बईण वात करा हुसे वार॥
थारी भावज माँगऽ घुघरी॥
बईण ओ आधी घुघरी बालुड़ा समझाव॥
आधी म्हारी पाछी देवो॥
बीरा रे म्हारा अँगणा गंगा जमना ववऽ॥
हाँऊ नित की राँधु घुघरी॥
बीरा रे म्हारा बाला गुड़ दई समझाव॥
सगलई लई जा थारी घुघरी॥
वीरा रे लायो जात कुजात॥

म्हारी पाछी बुलाई घुघरी॥
बीरा रे तम बणजो देऊल मऽ का देव॥
म्हारी भावज जल मऽ की मेंडकी॥
बीरा रे गयरो अम्बो, गयरी ओकी छाव॥
कड़वो लिमड़ो, कड़वी ओकी छाव॥
कड़वा भावज रा बोलणा॥

हे सहेली! मैंने हँसिया से काटे गये गेहूँ की घुघरी बनाई है और बाकी बचे हुये गेहूँ से लापसी (हलुआ) बनाया है। हे स्वामी! आप नाई के लड़के को बुला लाओ। वह गाँव भर में घुघरी बाँट आयेगा। पति महोदय नाई के लड़के को बुलाकर लाते हैं। पत्नी नाई के लड़के से कहती है- सारे गाँव में घुघरी बाँट आना, पर मेरी ननद को मत देना। जब नाई का लड़का गाँव भर में घुघरी बाँटकर वापस घर आता है, तब भाभी पूछती है- किस-किस को घुघरी बाँट आये? तब नाई का लड़का कहता है- गाँवभर में घुघरी बाँट आया और तुम्हारी ननद को भी दे आया हूँ। तब पत्नी अपने पति को बुलाती है और कहती है- स्वामी! आप नीला घोड़ा तैयार करो और अपनी बहन के घर जाओ और घुघरी वापस लेकर आओ। पति महोदय घोड़े पर बैठकर अपनी बहन के घर जाते हैं। बहन भाई का आदर करके आसन पर बिठाती है और कुशल-क्षेम पूछती है। तब भाई कहता है- बहन बात करूँगा तो देर होगी।

हे बहन! जो नाई का लड़का घुघरी दे गया है, उसमें आधी घुघरी रख लो और आधी मुझे वापस कर दो। तुम्हारी भाभी ने घुघरी वापस बुलायी है। बहन आधी घुघरी में तुम अपने बच्चों को खिलाकर समझा लेना और आधी मुझे वापस कर दो। तब बहन ने कहा- भैया! वह घुघरी तो मैंने तुम्हारे सम्मान के खातिर रख ली थी, मैं घुघरी का क्या करूँ? आधी क्या तुम तो पूरी की पूरी घुघरी वापस ले जाओ? मेरे आँगन में गंगा-यमुना बहती हैं। सब तरह के सुख हैं। मैं तो नित्य ही ताजी घुघरी बनाकर अपने बच्चों को खिला दूँगी, मैं अपने बच्चों को गुड़ देकर समझा लूँगी। तुम तो सम्पूर्ण घुघरी वापस ले जाओ। बहन दु:खी मन से कहती है- भाई तो मेरा अपना खून है। भाई तुम तो मेरे अपने हो, पर भाभी किसी ओछे घराने की है, जिसने अपनी संकुचित भावना दिखा दी है। जो मुझसे घुघरी वापस लेने के लिये तुम्हें भेजा है। हे भाई! तुम्हें मेरा आशीर्वाद है कि तुम मन्दिर के देवता बनना और मेरी भाभी जल की मेंढकी बने। हे वीर! आम की गहरी छाया होती है। आम के वृक्ष की छाया भी मीठी होती है और आम का फल भी मीठा होता है। कड़वे नीम की छाया तो सुखद होती है, लेकिन नीम का फल (निमोली) कड़वा ही होता है। कड़वापन अपनी जात दिखा ही देता है। मेरी भाभी के कटु वचन आज मेरे सीने को छेद गये हैं। हे भाई! तुम्हारे वंश की वृद्धि होती रहे- मेरी यही कामना है। भाई को आम का वृक्ष कहा है। भाभी को नीम की कड़ुवाहट की उपमा दी गई। संसार में ननद भौजाई की मूल प्रवृत्तियों का सार इस गीत में जैसे समा गया है।

जलवाय पूजन

दवाणा गांव का गोयरा अच्छा-अच्छा पेळा एचाय।
पुत्र जल्मी नऽ पेळा पेरिया॥
ये तो कुण भाई पेळारा साधला।
ये तो कुण भाई नऽ खरचा छे दाम शोभागेण॥
पुत्र जल्मी नऽ पेळो पेरिया॥
ये तो चन्दर भाई पेळारा मोल - ओ।
ये ते महेन्द्र भाई खरचा छे दाम शोभागेण॥
पुत्र जल्मी नऽ पेळा पेरिया।
ये तो कुण ववु पेलारा साधला॥
ये तो कुण ववु पेरण जोग।
पुत्र जल्मी नऽ पेळो पेरिया॥
ये तो पुष्पा ववु पेलारा साधला॥
ये तो उषा ववु पेरण जोग ओ शोभागेण॥
पुत्र जल्मी नऽ पेळो पेरिया॥
ये तो पेरी ओड़िनऽ धन निसरिया॥
गया ते सयर बजार ओ शोभागेण।
ये तो कुण हो गरासिया की डिकरी॥
ये तो कुण हो शोभागिया की ववु ओ शोभागेण।
पुत्र जल्मी नऽ पेळा पेरिया॥
ये तो उमरावसिंह गरासिया की डिकरी।
ये तो रमेशभाई शोभागियारी ववु ओ शोभागेण॥
पुत्र जल्मी नऽ पेळा पेरिया।
ये तो कुण हो भाया की बेनुली॥
ये तो कुण छोगालिया की नार ओ शोभागेण।
पुत्र जल्मी नऽ पेळा पेरिया॥
ये तो वीरेन्द्र भाई की बेनुली
या तो लोकेन्द्र भाई छोगालिया की नार ओ शोभागेण।
पुत्र जल्मी नऽ पेळा पेरिया।

दवाना ग्राम के बाहर जो बाजार लगा है उसमें अच्छी कीमती साड़ियाँ बिक रही हैं। उन साड़ियों में मनपसंद पीले रंग की साड़ियाँ भी बिक रही हैं। इस पीली साड़ी को कौन-सा भाई खरीदेगा, किसे यह पीली साड़ी अच्छी लगेगी, कौन भाई इसका मूल्य चुकायेगा। कौन सौभाग्यवती इसे पहनेगी ?

इसे चन्दर भाई ने पसन्द किया है। मूल्य पूछकर, महेन्द्र भाई ने इसके दाम चुकाये हैं। इस पीली साड़ी को कौन-सी बहू पहनेगी? यह किसे पसन्द आयेगी? इस पीली साड़ी की इच्छा पुष्पा बहू को है। इस पीली साड़ी को ऊषा बहू पहनने योग्य है, क्योंकि उन्होंने पुत्र को जन्म दिया है। पुत्र जन्म के समय में पीली साड़ी पहनना बहू के लिये सुख और शांति का द्योतक है। इसे सौभाग्यवती ऊषा बहू पहनेगी, जिससे वह खूब फबेगी।

इसे पहनकर ऊषा बहू शहर के बाजार में जायेगी। बाजार के लोग उसके लावण्यमयी रूप को और उसकी साड़ी को देखकर पूछेंगे। यह किसकी लड़की है? यह सौभाग्यवती किसकी बहू है? ये तो उमरावसिंह जी सरदार की लड़की है और रमेश भाई की पुत्र वधू है। पुत्र जन्म के उपलक्ष्य में पीला वस्त्र पहनकर यह जलदेवी का पूजन करने जा रही है। यह किस भाई की बहन है? किसकी पत्नी है? ये वीरेन्द्र भाई की बहन है और ये लोकप्रिय लोकेन्द्र भाई की सौभाग्यवती पत्नी है।

जलवाय पूजन

मालवा सी चूंदड़ निसरी हो, आई-आई निमाड़िया देश।
हो राजा चूंदड़ चणा केरी दाल, चुन्नी केरो रंग।
कुण भाई चूंदड़ मोलाव, कुण ते खरचें दाम।
हो राजा चूंदड़ चणा केरी दाल, चुन्नी केरो रंग।
वीरेन्द्र भाई चूंदड़ मौलाव।
हो राजा रघुवीर भाई खरचऽ छे दाम, दौलत मांडण चुंदड़ी।
कुव ववु चूंदड़ सादला, हो राजा कुण ववु पेरण जोग।
दौलत मांडण चूंदड़, सेवंती ववु चूंदड़ रासादला।
हो राज सुनीता ववु पेरण जोग, दौलत मांडण चूंदड़ी।
चूंदड़ पेरी नऽ धन निसर्‌या, हो राजा गया ते सयर बाजार।
वाण्या बईपारी सब जोई रया, हो राजा लाकड़ी तराजू उनका हाथ।
दौलत मांडण चूंदड़ी, चूंदड़ पेरी नऽ धन निसरिया।
हो गया ते पणघट माय, पाणी की पणिहरी सब जोई रया,
हो राजा घड़िला रया उनका हाथ, दौलत मांडणऽ चूंदड़ी।
चूंदड़ पेरी नऽ धन ना दळऽ, नईऽ चईढ़ऽ ते साल।
हो राजा नई परसऽ शिवजी की थाल, दौलत मांडण चूंदड़ी,
कुंण सौभाग्या की डिकरी हो, कुंण सौभाग्या की ववु।
हो राजा कुंण छोगाळ्या की नार, दौलत मांडण चूंदड़ी।
पदमसिंह भाई सौभाग्या की डिकरी, जयदेव सिंह सौभाग्या री ववु।
हो राजा महेन्द्र भाई छोगाल्या की नार, दौलत मांडण चूंदड़ी।

यह गीत बच्चे के जन्म के बाद जलदेवी पूजा के पहले दामाद और लड़की को पाट पर बिठाकर मायके से आये हुये कपड़े पहनाते समय गाया जाने वाला गीत है। इस गीत को पंचपेला गीत कहते हैं।

मालवा प्रदेश से बिक्री के लिए चूनरी निमाड़ प्रदेश में आई है । कैसी है ये चूनरी ? इस चूनरी में कैसी बूटियाँ अंकित हैं। यह चूनरी पीले रंग की है। और इसमें चने की दाल की तरह सुन्दर बूटियाँ अंकित हैं। इसमें कांच के छोटे-छोटे टुकड़े नगीने की तरह जड़े हुये हैं। इस चूनरी के चारों पल्लुओं पर हीरे-मोती जड़े हुये हैं। ऐसी अमूल्य चूनरी लेकर मेरे मायके वाले आये हैं। इस चूनरी का मोल किसने किया है? किस भाई ने इसका मूल्य चुकाया है। इस चूनर की कीमत वीरेन्द्र भाई ने लगाई है और रघुवीर भाई ने उसका मूल्य चुकाया है। महंगे मूल्य की चूनरी उन दोनों भाईयों ने अपनी-अपनी बहन के लिये खरीदी है, क्योंकि उनकी बहन जलदेवी का पूजन करेगी। इसे पहनने की आशा यानी उमंग कौन-सी बहू को है? यह चूनरी किस पर फबेगी, किस बहू की सच्ची इच्छा इस पीली चूनरी को पहनने की है? कौन-सी बहू इसे तत्काल पहनने की इच्छुक है?

इस चुनरी को पहनने की इच्छा सेवंती बहू रखती है। इसे तत्काल सुनीता बहू भी पहन लेगी, क्योंकि वह जलदेवी का पूजन करेगी। यह पीली नेग की साड़ी सुनीता बहू पर खूब अच्छी लगेगी। चूनर पहनकर वह जलदेवी का पूजन करने जा रही है। वह शहर के बाजार से गुजर रही है। इस सुनीता बहू की अमूल्य साड़ी सभी देख रहे हैं। बाजार के सारे व्यापारियों ने भी इसे देखा। उसके रूप-लावण्य और पीली साड़ी की शोभा देखकर बनिये की तराजू हाथ में ही रह गई। वह माल को तोलना ही भूल गया। ऐसी सुन्दर और अमूल्य सुनीता बहू की चूनरी है।

जब सुनीता बहू उस अमूल्य साड़ी को पहनकर पनघट पर गई तो सभी पनिहारियाँ मोहित हो गईं। उन पनिहारियों के घड़े अपने ही हाथों में रह गये, वे पानी भरना भूल गईं। ऐसी रूपवती बहू और उसकी कीमती चूनरी को देखकर सभी चकित हैं। ऐसी चूनरी पहन लेने के बाद सुनीता बहू को गर्व हो गया है। वह कुछ काम नहीं करती। न ही वह आटा पीसती है और न ही धान से (साल) चावल निकालती है। न ही अपने पति की थाली में खाना परोसती है। यह किसकी सौभाग्यशाली लड़की है? और किस भाई की बहू है? यह तो जागीरदार पदमसिंह भाई की लड़की है और ठाकुर जयदेव सिंह जी की बहू है, और प्रिय महेन्द्र भाई की पत्नी है।

नामकरण

चल रे नाना खेलणऽ जावां,
मनीष भाई को नाव लेता जावां।
गुड़ नऽ घुघरी खाता जावां,

चल रे नाना स्कूल जावां।
मनीष भाई को नाव लेता जावां,
गुड़ नऽ घुघरी खाता जावां।
चल रे नाना जीमणऽ जावां,
मनीष भाई को नाव लेता जावां।
गुड़ नऽ घुघरी खाता जावां,
चल रे नाना गुल्ली अंटिया खेलणऽ जावां।
मनीष भाई को नाव लेता जावां,
चल रे नाना चेंडू खेलणऽ जावां।
मनीष भाई को नाव लेता जावां,
गुड़ नऽ घुघरी खाता जावां।

चल रे बच्चे खेलने चल। बच्चे का नाम मनीष रखा गया है, इसलिए उसे सम्बोधित करते हुए कहते हैं– मनीष भाई खेलने चलें, साथ में गुड़ और घुघरी खाते चलें, चल रे मनीष भाई स्कूल चलें, गुड़ और घुघरी खाते चलें, चल मनीष भाई भोजन करने चलें, पहले गुड़ और घुघरी खा लें। खाते-खाते आगे भी बढ़ना है। चल रे मनीष भाई! गुल्ली-डण्डा खेलें, और गुड़ घुघरी खाते चलें, चल रे मनीष भाई ! गेंद खेलें और गुड़ घुघरी खायें। कहने का तात्पर्य यह है कि बालक को सभी क्रियाओं में खेलने के लिये आमंत्रित किया जाता है।

पालना

पालना रूड़ा घड़िया, फिटकड़ी सी जड़िया।
असा सोन्ना साकलिया मड़िया।
नारायण प्रभु झुलऽ पालना।
सार दोर संगे, पैताल दोरी रंग।
माता यशोमती झूला दैया।
झूलो ते पालना।
पूतना मावसी आवसे, झंगा टोपी लावसे।
नाना भतीजा कऽ पेरावसे।
नाना मोटा थासे, सेरी रमवा जासे।
माता यशोदा का मनड़ा हरक्या।
नाना मोटा थासे, निशाण भणवा जास।
बाबा नंद का मनड़ा हरक्या।
पालना रूड़ा घड़िया, फिटकड़ी सी जड़िया।

बच्चे के जन्म के बाद में पालने में बच्चे को सुलाना और झूला झुलाना एक गर्व की बात

होती है। पालना झुलाते हुए माँ क्या–क्या कल्पनाएँ करती है। माँ अपने आपको यशोदा माता से कम नहीं समझती है। इसी भाव को इस गीत में दर्शाया गया है।

शिशु के झूलने के लिये पालना बनवाया गया, उसका रंग फिटकरी के समान चमक रहा है। पालना बहुत सुन्दर बनवाया गया है। उसे सोने की जंजीरों से लटकाया गया है। उसमें नारायण स्वरूप भगवान श्रीकृष्णजी झूल रहे हैं। पालने में रंग–बिरंगी रेशमी डोरियाँ लगी हुई हैं। माता यशोदा प्रफुल्लित मन से झूले दे रही हैं। पालने में कृष्णजी सुखपूर्वक झूल रहे हैं। कृष्ण की पूतना मौसी आयेंगी, वह उसके लिये झबला और टोपी लेकर आयेंगी। वह प्यार से अपने नन्हें भतीजे को वस्त्र पहनायेंगी। जब बच्चा कुछ बड़ा हो जायेगा और खेलने जायेगा, तब माता यशोदा का मन हर्ष–उल्लास और आनन्द से भर जायेगा। जब वे पाँच वर्ष के हो जायेंगे। तब वह गुरुकुल में जायेंगे। तब बाबा नन्द का मन हर्षित होगा। बाबा नन्द की खुशी का कोई ओर छोर नहीं होगा। पालने में जगतपति नारायण स्वामी कृष्ण सुख की नींद सो रहे हैं।

पालना

म्हारा श्रीकृष्णजी कऽ मुकुट बिराजे,
कलगी मऽ हीरा जड़ई देऊँ।
म्हारा कानजी कऽ हालरो हुलरई देऊँ॥
छानो रहो रे वीर हऊँ तो भरी लाऊँ नीर बाला,
तूकऽ पाछो फिरी नऽ झूला दई देऊँ॥
म्हारा कानजी कऽ हालरो हुलरई देऊँ।
म्हारा श्रीकृष्णजी कऽ कुण्डल बिराजऽ,
मोती मऽ हीरा जड़ई देऊ॥
म्हारा कानजी कऽ हालरो हुलरई देऊँ॥
छानो रहो रे वीर, हऊँ तो भरी लाऊँ नीर बाला।
तूकऽ पाछो फिरी नऽ झुला दई देऊँ॥
म्हारा कानजी कऽ हालरो हुलरई देऊँ।
म्हारा श्रीकृष्णजी कऽ कंठी बिराजऽ,
दोरा मऽ हीरा जड़ई देऊँ।
म्हारा कान जी कऽ हालरो हुलरई देऊँ।
छानो रहो रे वीर हऊँ तो भरी लाऊँ नीर बाला।
तूकऽ पाछो फिरी नऽ झूला दई देऊँ।
म्हारा कानजी कऽ हालरो हुलरई देऊँ।
म्हारा श्रीकृष्णजी कऽ झबलो बिराजऽ,
टोपी मऽ फुंदा लगई देऊँ।

म्हारा कान जी कऽ हालरो हुलरई देऊँ।
छानो रहो रे वीर हऊँ तो भरी लाऊँ नीर बाला।
तूकऽ पाछो फिरी नऽ झुला देऊँ।
म्हारा कानजी कऽ हालरो हुलरई देऊँ।

माता यशोदा कह रही हैं– मेरे छोटे से श्रीकृष्ण को मुकुट बनवा दूँगी। उसके छत्र में हीरे जड़वा दूँगी। मेरे छोटे से श्रीकृष्ण को मुकुट अच्छा लगेगा। हे मेरे प्यारे दुलारे कान्हा! तुम सो जाओ। मैं तुम्हें लोरी गाकर सुला दूँ। हे वीर! तू रो मत, चुप हो जा। हे वीर! सो जा, मैं अभी पानी भर लाती हूँ। तब तक तुम चुपचाप सोये रहना, आते–जाते मैं तुम्हें झूला झुलाती रहूँगी। मेरे कान्हा को मैं लोरी गाकर सुला रही हूँ। मेरे छोटे से कान्हा को मैं कुण्डल बनवा दूँगी। उसमें मोती लगवा दूँगी। मोती के स्थान पर हीरे जड़वा दूँगी। मैं मेरे कृष्ण को लोरी गाकर सुला रही हूँ। हे वीर! तू सो जा, मैं पानी भर लाऊँ, तब तक तुम सोये रहना। आते–जाते मैं तुम्हें झूला झुलाती रहूँगी। मेरे छोटे से कान्हा को मैं छोटी सी कंठी घड़वा दूँगी। उसमें मोती लगवा दूँगी अथवा हीरे जड़वा दूँगी। मैं लोरी गा कर प्यारे काना को सुला रही हूँ। हे वीर! तू सो जा, तब तक मैं जमुना से पानी भर लाऊँ और आते–जाते तुम्हें झूले देती रहूँगी। मेरे छोटे से कान्हा को छोटा सा झबला सिलवा दूँगी। मखमल की टोपी सिलवा कर उसमें रेशमी फूंदे लगवा दूँगी। मैं मेरे कान्हा को सुला रही हूँ। हे वीर! तू सो जा, तो मैं जमुना से पानी भर लाऊँ। आते–जाते मैं तुम्हें झूले देती रहूँगी। कहने का तात्पर्य यह है कि माता अपने पुत्र को अनेक प्रलोभन देकर चुप करा रही है। धीरे–धीरे कृष्ण को नींद आ रही है। थोड़ी देर में कृष्ण सुख की नींद पालने में लेते हैं और माता यशोदा जमुना से पानी लेने चली जाती हैं।

पालना

झुलतो–झुलतो जाय कृष्णजी रो पालणो, झुलतो जाय।
पालणा की धुन सुन गणपतिजी आया॥
गणपतिजी आया संग रिद्धी–सिद्धी लाया।
देखी–देखी पालणा मऽ ढोल बजाय॥
कृष्णजी रो पालणो ....
पालणा री धुन सुन ब्रह्माजी आया।
ब्रह्माजी संग ब्रह्माणी कऽ लाया।
देखी–देखी पालणा मऽ मृदंग बजाय॥
कृष्णजी रो पालणो ....
पालणा री धुन सुन शंकरजी आया।
शंकरजी आया संग पार्वती कऽ लाया।
देखी–देखी पालणा मऽ डमरू बजाय॥

कृष्णजी रो पालणो ....
पालणा री धुन सुन विष्णुजी आया।
विष्णुजी आया संग मऽ लक्ष्मी कऽ लाया।
देखी-देखी पालणा मऽ पुष्प वरषाय॥
कृष्णजी रो पालणो ....
पालणा री धुन सुन नारदजी आया।
नारदजी आया संग सन्तन कऽ लाया।
देखी-देखी पालणा मऽ वीणा बजाय।
कृष्णजी रो पालणो ....
सोन्ना रो पालणो कृष्णजी कऽ भावऽ।
श्याम सलोणी छबि मन कऽ लुभावऽ।
देखी-देखी पालणा मऽ मस्तक नमाय।
कृष्णजी रो पालणो झुलतो जाय॥

बालक कृष्ण पालने में झूल रहे हैं। पालने की छवि को देखने के लिये गणेशजी आये हैं। उनके साथ उनकी पत्नियाँ ऋद्धि और सिद्धी भी हैं। उन्होंने पालने में सोये श्रीकृष्णजी का दर्शन किया और पालने के निकट जाकर ढोल बजाया। पश्चात् ब्रह्माजी आये और उनके साथ में ब्रह्माणी देवीजी आईं। उन्होंने पालने के निकट आकर मृदंग वादन किया। पालने की छवि को देखने के लिये शंकरजी आये हैं, उनके साथ माता पार्वतीजी भी आईं। उन्होंने पालने के निकट आकर डमरू बजाया। तत्पश्चात् भगवान विष्णुजी आये और उनके साथ लक्ष्मी देवी भी आईं। उन्होंने पालने में पुष्पों की वर्षा की। पालने में सोये श्रीकृष्णजी के दर्शन हेतु नारदजी भी आये। नारदजी के साथ में बहुत से संत पुरुष भी आये। नारदजी ने पालने के पास आकर वीणा वादन किया। सोने के पालने में श्रीकृष्णजी सो रहे हैं। यही श्याम सलोनी छवि मेरे हृदय पटल पर बस गई है। मुझे लुभा रही है। इस छवि को मैं बार-बार प्रणाम करता हूँ।

पालना

तम तो चालो सखी मथुरा मऽ जावां,
मथुरा मऽ आनन्द बधावो॥
रानी देवकी नऽ जायो छे कान,
बसुदेव घर आनन्द बधावणा॥
तू तो मथुरा का चतुर सुतार,
धड़जो रे बाला सारू पालणो॥
पालणो धड़जो रे दादुर मोर,
आरू धड़जो रे बन की कोयल॥

ये तो दादुर मोर तो उड़ी जाय,
शब्द सुहावणा बन की कोयल॥
पालणो बाध्यो छे वासुदेव दरबार,
देवो नऽ सुभद्रा बाई हिंडोलणा॥
तू तो सोई जा रे नाना वीर, वंश वधऽ वसुदेव।
तम तो चलो सखी, दवाणा मऽ जावां॥
दवाणा मऽ आनन्द बधावो।
सेवन्ती ववु नऽ जायो छे कान॥
वीरेन्द्र भाई घर आनन्द बधावणा।
तू तो दवाणा का चतुर सुतार।
धड़जो रे बाला सारू पालणा,
पालणो धड़जो रे दादुर-मोर।
अरू धड़जो रे बन की कोयल॥
ये तो दादुर मोर उड़ी जाय।
शब्द सुहावणा बन की कोयल॥
पालणो बाध्यो छे वीरेन्द्र भाई की लम्बी पटसाल।
देवो नऽ हेमाबाई हिन्डोलणा।
तू तो सोई जाय रे नाना बीर॥
वंश वधऽ म्हारा बाप को॥

गीत-नरेन्द्र गीते, दवाना

गीत में देवकी-वसुदेव की पौराणिक गाथा के विपरीत वर्णन किया गया है। जब कृष्ण जन्म के समय देवकी-वासुदेव कंस के कारागृह में थे। तब वसुदेव कहीं के राजा भी नहीं थे, न देवकी रानी थी, फिर लोकगीतकार ने अपनी कल्पना से स्वतंत्र देवकी-वसुदेव को चित्रित किया है। यह लोकगीतों में ही सम्भव है।

हे सखियों! चलो मथुरा नगरी चलें, मथुरा में आज आनन्द उत्सव है। माता देवकी ने भगवान श्रीकृष्ण को जन्म दिया है। वासुदेवजी के घर आनन्द उत्सव है। जाकर उन्हें बधाई दे आयें।

हे मथुरा के चतुर सुतार! तू बच्चे के लिये पालना बना लाना। पालना ऐसा बनाना जिसमें मोर, पपीहा और कोयल उतारना। ऐसे मोर उतारना की देखते-देखते उड़ जाये और कोयल ऐसी बनाना जो पालने में सोये हुये बच्चे को मीठी-मीठी आवाज सुनाये। जिसे सुनकर बच्चे को अच्छी नींद आती रहे। चतुर सुतार ने देवकी की कल्पना का सुन्दर पालना गढ़ दिया है। उस पालने को वासुदेवजी के राजदरबार में बाँधा गया है। बहन सुभद्रा को बुलावो। बहन सुभद्रा आओ, अपने प्यारे भईया को झूला झुलाओ। बहन सुभद्रा झूले दे रही हैं और मन ही मन कहती

जा रही हैं– हे वीर! तू तो सो जा, तू ही मेरे वंश का दीपक है। तू ही मेरा सब कुछ है। जब तू बड़ा होगा तो मेरे पिता का नाम रोशन करेगा। मेरे पिता की वंश वृद्धि का प्रतीक तू ही है।

सखियाँ आपस में बातें कर रही हैं, कहती हैं– हे सखियों! चलो दवाना ग्राम में जायें, दवाना ग्राम में सेवन्ती बाई ने पुत्र रत्न को जन्म दिया है। वीरेन्द्र भाई के घर आनन्द उत्सव है। जाकर उन्हें बधाई दे आयें और बच्चे का मुख देख आयें।

हे दवाना के चतुर सुतार! तू बच्चे के लिये पालना बनाकर लाना। पालना ऐसा बनाना कि एकदम सुन्दर और सलोना हो। उसमें मोर, पपीहे, कोयल उतारना। मोरे ऐसे लगाना जो देखते-देखते उड़ जाये। कोयल ऐसी बनाना कि वह पालने में सोये बालक को मीठी-मीठी तान सुनाये। ऐसा पालना जब सुतार लाता है तो उस पालने को वीरेन्द्र भाई की लम्बी पटसाल, लम्बे घर में बाँधा गया है। बहन हेमलता को बुलाओ। बहन हेमलता आती है। बहन अपने प्यारे भईया को झूला झुलाओ। हेमलता अपने प्यारे भैया को झूला दे रही है। और मन ही मन कह रही है– हे मेरे भाई! तू सो जा, तू ही मेरे वंश का दीपक है और तू ही मेरा सर्वस्व है। जब तू बड़ा होगा तो मेरे पिता का नाम रोशन होगा। मेरे पिता की वंश वृद्धि होगी। तू ही मेरे पिता और परिवार का लाड़ला है। इस वंश का वारिस है।

पालना

दूर देश की ओ म्हारी काळई बादल, पाणी कब आवसे।
आवसे-आवसे ओ बईण सावन सेरा, भादव झड़ी लगावसे।
कां की बईण पेरऽ लाल पटोलो, कां की बईण पेरऽ घंचोलो।
उमा बईण पेरऽ लाल पटोलो, सकून बईण पेरऽ घंचोलो।
दूर-दूर की ओ म्हारी काळई बादल, पाणी कब आवसे।
आवसे-आवसे ओ बईण सावण सेरा, भादव झड़ी लगावसे।
कां की बईण पेरऽ लाल पटोलो, कां की बईण पेरऽ घंचोलो।
वीणा बईण पेरऽ लाल पटोलो, शोभा बईण पेरऽ घंचोलो॥

माँ बच्चे को झूले पर सुला रही है। वह लोरी गा रही है। हे दूर देश से आने वाली काली बदली! तू पानी लेकर कब आयेगी ? पानी कब बरसेगा ? तब बादल प्रति उत्तर में कहता है– जब सावन का महीना आयेगा, तब सावन के सेरों के रूप में पानी बरसेगा। भादव महीने में तो पानी की झड़ी लगेगी। सावन मास में बहनों का आगमन होगा। कौन-कौन सी बहनें आयेंगी ? क्या पहनकर आयेंगी ? कौन सी बहन लाल पटोले की महंगी जरीदार साड़ी पहनकर आयेगी और कौन सी बहन घनचोला (एक प्रकार की रेशमी साड़ी) पहनकर आयेगी। उमा बहन लाल पटोले की साड़ी पहनकर आयेंगी और शकुन्तला बहन घनचोला पहनकर आयेंगी।

दूर देश से आने वाली काली बदली! पानी कब बरसेगा? तब बादल प्रति उत्तर में कहता

है– जब सावन आयेगा, तब बौछारों के रूप में पानी बरसेगा। भादव मास में पानी की झड़ी लगेगी। सावन में बहनें अपने भाईयों को राखी बाँधने आयेंगी। कौन सी बहन लाल पटोले की साड़ी पहनकर और कौन सी बहन घनचोला पहनकर आयेगी? वीणा बहन लाल पटोले की साड़ी और शोभा बहन घनचोला पहनकर अपने मायके भाईयों को राखी बाँधने आयेंगी।

लोरी

हात रे, भाई सोई जा रे भाई।
हात रे, कुतरा छर ओ बिलई॥
हात रे, कुतरा छर ओ बिलई।
माँजरी कऽ खाई गया कुतरा भाई॥
हात रे, भाई सोई जा रे भाई।
म्हारो भाई छे बड़ो लाड़को।
साटो खाय भाई वाढ़ को॥
हात रे, भाई सोई जा रे ....
हलर करां भाई हुलर करा।
पाँच पळा को कुलर करा।
कुलर खाय म्हारो लल्लू भाई।
वाटकी चाटऽ म्हारी भावना बाई।
हात रे, भाई ....
भाई म्हारो रड़तो कसी करां।
अम्बा रोपी नऽ रस करां।
रस मऽ पड़ी गया काकरिया।
लल्लू भाई का मामा ठाकरिया।
ठाकुर तो ठकराई करऽ।
लल्लू भाई म्हारो राज करऽ।
हात रे, भाई सोई जा रे ....
भाई की माय तो पाणी गई।
भाई कऽ रड़तो मेली गई।
हात रे भाई, हात रे कुतरा।

बच्चा जब रोता है, तब उसे चुप कराने या सुलाने के लिये गाया जाता है। यह लोरी गीत है।

हे बच्चे! चुप हो जा, सो जा रे भाई। हे भाई! देखो, कुत्ते भौंक रहे हैं। हे भाई! देखो, बिल्ली आ रही है। उसे मैं भगा रही हूँ। देख! बिल्ली को कुत्तों ने मार कर खा लिया है। तू चुपचाप सो

जा। देख! चुप हो जा, फिर बिल्ली आ जायेगी। हे भाई! चुपचाप सो जा। मेरा भाई बड़ा ही लाड़ला है। वह गन्ने के खेत से लाया गन्ना खायेगा। हे भाई! रो मत, चुप हो जा, ऐ कुत्ते भाग जा।

मेरे रोते हुये भाई के लिये मैं सूकड़ी बनाऊँगी। (गेहूँ के आटे को घी में भूनकर शक्कर डालकर बनाते हैं।) मैं अपने भाई की सूकड़ी में पाँच चम्मच घी डालूँगी। पाँच चम्मच का ही हलवा बनाऊँगी। कटोरी में की सूकड़ी तो मेरा लल्लू भाई खायेगा। कटोरी में बची हुई सूकड़ी को भावना बहन चाटेगी। हे भाई! तू चुप हो जा, सो जा। मेरे रोते हुये भाई को चुप करूँगी। मैं आम का पेड़ रोपूँगी, उस पर आम लगेंगे। फिर मैं आम तोड़कर रस बनाऊँगी। दुर्भाग्य से रस में कंकर गिर जायेंगे। तब मैं लल्लू भाई के मामा को कहूँगी जो ठाकुर हैं, वे ठकुराई कर रहे है। लेकिन बेटा उनसे बड़ा निकलेगा। उन पर मेरा लल्लू भाई राज करेगा। भाई, तू सोजा। यह सब सोचते हुए लल्लू भाई की माँ पानी लेने गई। इधर लल्लू भाई को वह रोता छोड़ गई है। हे भाई! चुप हो जा और सो जा।

लोरी

अम्बो वायो नऽ रेत मऽ।
कां को भाई बेड़वा जाय रे॥
जासे लोकेन्द्र भाई पातला।
घोड़िला लिया पचास रे।
गया गया जसवाड़ी गांव का रे गोयरा॥
वहाँ का लोग भाग्या-भाग्या जाय रे।
मति भागो रे सगा लोग होण रे।
हमछे गीता बाई का वीरा रे॥
निकलो गीता बईण बायर,
बीराजी की करो पईचाण॥
ये घोड़िला तो म्हारा बाप का।
यो म्हारो माड़ी जायो वीर।

गीत-नरेन्द्र गीते, दवाना

आम का वृक्ष रेतीली भूमि में बोया गया है। उस पर गुच्छे के गुच्छे आम लगे हैं। इसे कौन-सा भाई बेड़ने (आम तोड़ने) जायेगा ? ऐसे ही मेरे नन्हे से लोकेन्द्र भाई हैं, वे आम तोड़ने जायेंगे। लोकेन्द्र भाई ने पचास घोड़े तैयार किये और वे जसवाड़ी गाँव के निकट पहुँचे। उन्हें देखते ही गाँव के लोग भागने लगे। उन्होंने गाँव वालों से कहा- हे भाईयों! भागो मत, देखो, मैं तो गीता बहन का भाई हूँ। हे गीता बहन! बाहर निकलो और अपने भाई को पहचानो कि ये तुम्हारे भाई हैं या नहीं। तब बहन घर से बाहर निकलती है और अपने भाई को देखकर कहती है- ये घोड़े मेरे पिताजी के हैं और उस पर बैठा हुआ मेरा सहोदर वीर है।

लोरी

नाना सा भाई का, नाना नाना पाँय।
ठुमक ठुमक भाई, बाड़ी मऽ जाय॥
बाड़ी मऽ का वनफल तोड़ी नऽ खाय॥
ऐतरा मऽ आई गई मालेण माँय॥
भाई का लई लिया झंगा नऽ झूल॥
हाथ मऽ दई दियो कमल को फूल॥
हात रे भाई, हात रे कुतरा॥
भाई म्हारो सोवऽ झोलई मऽ॥
कुतरा जाय होलई मऽ॥
हात रे भाई, हात रे कुतरा,
हात रे कुतरा, छर ओ बिलई॥

मेरे छोटे से भाई के छोटे-छोटे पाँव हैं। मेरा भाई ठुमकती हुई चाल से बाड़ी में जा पहुँचा है। वह बाड़ी में लगे हुए बनफलों को तोड़कर खाने लगता है। इतने में मालन माँ वहाँ आ जाती है। उसने मेरे भैया के झबला और टोपी छीन लिये हैं। और छोटे से भाई के हाथ में कमल का फूल दे दिया है। हे मेरे भाई! सो जा, ऐ कुत्ते भाग जा। मेरा भैया तो झोली में सोयेगा। ए कुत्ते! तू तो होली में चला जा। ए कुत्ते! भाग जा। ए कुत्ते! हट जा, ए बिल्ली! तू भी भाग जा।

लोरी

हालरणु गाऊँ म्हारा कृष्ण नऽ समझाऊँ,
झूलो-झूलो पालणियाँ मऽ कृष्ण छे।
कृष्ण म्हारो जागियो, वो चंद्र खिलौणा मांगे।
झूला-झूलो पालणियाँ मऽ कृष्ण छे।
कृष्ण ना भक्त आया, वो चंद्र खिलौणा लाया।
झूलो-झूलो पालणियाँ मऽ कृष्ण छे।
कृष्ण म्हारो डायो, वो पाटला बैठी न्हायो।
झूला-झूलऽ पालणियाँ मऽ कृष्ण छे।
पाटलो गयो खसकी, म्हारो कृष्ण उठियो हँसी,
झूला-झूलो पालणियाँ मऽ कृष्ण छे।
चांदा-चांदा पौड़ी, कृष्ण री राधा भोली,
झुला-झुले पालणियाँ मऽ कृष्ण छे।
सनसन सोटी, कृष्ण से राधा मोटी।
झुला-झुले पालणियाँ मऽ कृष्ण छे।

नरसिंह यारो रसियो, म्हारा ह्दय आई बठीयो,
झूला-झूलो पालणिया मऽ कृष्ण छे॥

गीत-सुश्री रामप्यारी बाई, मंडवाड़ा

माता यशोदा पालने में श्रीकृष्ण को झुलाकर लोरी गाते हुए सुला रही हैं। कृष्णजी बार-बार जाग जाते हैं। कुछ न कुछ माँगते हैं, नहीं देने पर मचल पड़ते हैं। कुछ देर सोने के बाद उठने पर वह चन्द्रमा को खिलौने के रूप में मांगते हैं। कृष्ण के बालसखा आते हैं और वे तरह-तरह के खिलौने लाते हैं, पर कन्हैया हैं कि चुप नहीं होते हैं। कृष्ण मचल जाते हैं और धूल में लेट जाते हैं। माताजी मनाती हैं। मेरा राजा बेटा, अच्छा बेटा, कहकर उन्हें स्नान कराने के लिये बिठाती हैं। कृष्ण के मचलने से पाटला खिसक जाता है और माता यशोदा फिसल जाती हैं। और यह देखकर कृष्णजी हँस पड़ते हैं। इधर चंदा सी गोरी राधाजी आती हैं, वह कृष्ण के पास जाती हैं। राधाजी भोली भी वैसी ही हैं। कृष्णजी की राधा बिल्कुल भोली-भाली हैं।

सन की सोटी की तरह ही राधाजी लम्बी और पतली हैं। पर वह कृष्णजी से कुछ मोटी हैं। कृष्णजी दुबले हैं। नरसिंह स्वामी कहते हैं- भगवान कृष्णजी की ये बाल छबि मेरे ह्दय पटल पर बस गई है। इस झूले की छबि पर माता यशोदाजी भी बलिहारी जाती हैं।

जनेऊ

ब्रह्मचार खांद खड़ी, हाथ छड़ी हीरा जड़ीजी।
ब्रह्मचार जाई बठ्या छे दादाजी का खोळा चढ़ीजी॥
दादाजी जनवई देवो तो हमकऽ हौस घणी।
माता बाई भिक्षा आलो तो हौस घणी॥
ब्रह्मचार खांद खड़ी, हाथ छड़ी हीरा जड़ीजी।
ब्रह्मचार जाई बठ्या छे, काकाजी का खोळा चढ़ीजी॥
काकाजी जनवई देवो, तो हमकऽ हौस घणी।
काकी बाई भिक्षा आलो तो हमकऽ हौस घणी।
ब्रह्मचार खांद खड़ी, हाथ छड़ी हीरा जड़ीजी।
ब्रह्मचार जाई बठ्या छे, मामाजी का खोळा चढ़ीजी॥
मामाजी जनवई देवो, तो हमकऽ हौस घणी।
मामीजी भिक्षा आलो, तो हमकऽ हौस घणी॥
ब्रह्मचार खांद खड़ी, हाथ छड़ी हीरा जड़ीजी।
ब्रह्मचार जाई बठ्या छे, भैयाजी खोळा चढ़ीजी॥
भैयाजी जनवई देवो, तो हमकऽ हौस घणी।
भाभी बाई भिक्षा आलो, तो हमकऽ हौस घणी॥

ब्रह्मचारी वेश में लड़का (बटुक) खड़ा है, उसके कंधे पर झोली लटकी है, हाथ में हीरे जड़ी छड़ी है। बटुक जाकर अपने दादाजी की गोद में बैठकर बोलता है– दादाजी आप हमारा जनेऊ संस्कार कब करवायेंगे ? हमारी बड़ी इच्छा है। माताजी आप हमें भिक्षा कब देंगी ? हमारी भिक्षा मांगने की बड़ी इच्छा है। आप हमें भिक्षा कब देंगी ? इसके बाद ब्रह्मचारी अपने काकाजी की गोद में बैठकर बोलते हैं– काकाजी आप हमारा यज्ञोपवीत संस्कार कब करायेंगे ? हमारी जनेऊ धारण करने की बड़ी इच्छा है। काकीजी आप हमें भिक्षा दीजिए। भिक्षा मांगने की हमारी बड़ी इच्छा है। इसके बाद ब्रह्मचारी क्रमशः भैयाजी और मामाजी से कहते हैं– आप हमारा जनेऊ संस्कार कब करवायेंगे ? जनेऊ धारण करने की हमारी बड़ी इच्छा है। हे भाभी और हे मामीजी ! आप हमें भिक्षा कब देंगी ? भिक्षा मांगने की हमारी बड़ी इच्छा है।

जनेऊ

नाँदड़ कपास म्हारा मोठा भाई नऽ बोयो।
लाड़ी ववु जनव कात रे बना॥
जनवई पेरऽ म्हारा नरेन्द्र भाई बंदड़ा।
काशी को रइवासी म्हारा बंदड़ा॥
काशी भणवा जाय रे बना।
पण्डित हुई घर आवो रे बना॥
नाँदड़ कपास म्हारा मोठा भाई नऽ बोयो।
लाड़ी ववु जनवई कात रे बना॥
जनवई पेरऽ म्हारा प्रवीण भाई बंदड़ा।
काशी को रहवासी म्हारा बंदड़ा।
काशी भणवा जाय रे बना।
पण्डित हुई घर आवो रे बना॥

गीत–श्रीमती इन्दिरा तारे, खरगौन

छोटे पौधे की जाति का पवित्र कपास खेत में मेरे बड़े भाई ने बोया। उसी कपास से मेरे भाई की पत्नी ने जनेऊ बनाई है। जनेऊ मेरे नरेन्द्र भाई बटुक पहनेंगे। जनेऊ पहन लेने के बाद वे काशी में रहने लग जायेंगे। वे काशी के ही रहवासी हो जायेंगे, क्योंकि वे काशी पढ़ने जा रहे हैं। काशी पढ़कर बटुक पण्डित बनकर ही घर आयेगा। जनेऊ संस्कार के बाद बटुक को शिक्षा ग्रहण करने के लिये काशी भेजे जाने की परम्परा है। काशी विद्या का प्राचीनतम केन्द्र है।

नांदेड़ का कपास मेरे बड़े भाई ने बोया है। उसी कपास से मेरे भाई की पत्नी ने जनेऊ बनाई है। जनेऊ मेरे प्रवीण भाई बटुक पहनेंगे। जनेऊ पहन लेने के बाद वे काशीजी पढ़ने जायेंगे और कुछ वर्षों के लिये काशी के निवासी हो जायेंगे। काशी में पढ़कर बटुक प्रकाण्ड विद्वान बनकर ही घर आयेगा।

जनेऊ

कहाँ तुम जन्मया हाँ रे बाला,
कहाँ तमारो रहेणु रे।
वासुदेवजी रा नंदन पहरो जनेऊ,
मथुरा मऽ जन्मया हो गुरुजी,
गोकुल हमारो रहेणु रे।
वासुदेवजी रा नंदन पहरो जनेऊ,
कौन तमारी माता रे बाला,
कौन तमारो पिता रे।
वासुदेवजी रा नंदन पहरो,
देवकी हमारी माता हो गुरुजी,
वासुदेव हमारा पिता रे।
वासुदेवजी रा नंदन ....
कायन को तुमनऽ सूत हो कातियो,
चरखा से काती जनेऊ रे।
वासुदेवजी रा नंदन ....
नादड़ कपास को सूत कातियो
चरखा से काती जनेऊ जी रे।
वासुदेवजी रा नंदन ....
कोण जो तुम खऽ काशी पहुँचाया,
कोण पेराई जनेऊ रे।
वासुदेवजी रा नंदन ....
पिता नऽ हमकऽ काशी पोयचाया,
माता पेराई जनेऊ रे।
काहेन का तमारा दंड कमण्डल,
काहेन की छाबड़िया रे।
वासुदेवजी रा नंदन ....
खाखरा का हमारा दंड कमण्डल,
वासनऽ की छाबरिया रे।
वासुदेवजी रा नंदन पहरो रे जनेऊ॥

हे बालक! तुम्हारा जन्म कहाँ हुआ है ? और तुम कहाँ के रहने वाले हो ? हे वसुदेवजी के लाड़ले नन्दन! तुम जनेऊ पहन लो। मथुरा में हमने जन्म लिया है गुरुजी। गोकुल के हम रहने वाले हैं। वासुदेव नन्दन जनेऊ धारण कर लो।

कौन तुम्हारी माताजी हैं और कौन तुम्हारे पिताजी हैं? देवकी हमारी माताजी हैं और वासुदेवजी हमारे पिताश्री हैं। हे बालक! तुमने किस प्रकार सूत काता है? और किस प्रकार जनेऊ बनाई है? हे गुरुजी! हमने पवित्र नादड़ कपास से रुई निकाली और चरखे से सूत कात कर जनेऊ बनाई है।

हे बालक! तुम्हें किसने काशी भेजा है और किसने तुम्हें जनेऊ धारण करवाई है? पिताजी ने हमें काशीजी पढ़ने हेतु भेजा है और माताजी ने हमें जनेऊ पहनाई है। हे बालक! तुम्हारे दण्ड कमण्डल किससे बने हैं? भिक्षा माँगने की खड़ी छाबड़ी किससे बनी है?

हे गुरुजी! हमारा दण्ड कमण्डल तो पलाश के पत्ते से बना है और छावड़ी बाँस से बनी है। हमें शीघ्र भिक्षा देकर जनेऊ दे दो।

जनेऊ

सरस्वती स्वामी नऽ इणवो, गणपति लागू पाँय।
भावज लाया ते पाणी समोय, दौत्र लाया रेशम।
अस्नान कारे म्हारा अर्जुन भीम, परणी लाओ रुकमणी।
अस्नान करी वर उभा रह्या, भाई दरजी वागो संजोव।
वागो पेरी म्हारा अर्जुन भीम, परणी लाओ रुकमणी।
वागो पेहरी नऽ वर उभा रह्या, म्हारी बहिणी आरती संजोव।
दीपक लाया रत्न को, तिलक करो म्हारा अर्जुन भीम।
परणी लाओ रुकमणी ....
तिलक करी वर उभा रह्या, म्हारी माता जी थाल परोस।
मीठी हो लाया लापसी, भोजन करो म्हारा अर्जुन भीम।
परणी लाओ रुकमणी ....
भोजन करी नऽ उभा रह्या, भाई तमोलई बीड़ा संजोव।
तमोलई लाया ते बीड़ा पान का, तमोल करो म्हारा अर्जुन भीम।
परणी लाओ रुकमणी ....
तमोल करी नऽ वर उभा रह्या, म्हारा बहणोई घोड़ीला संजोव।
घोड़ो लाया हंसलो, घोड़ीला बठो, म्हारा अर्जुन भीम।
परणी लाओ रुकमणी ....
घोड़ीला बठी नऽ वर उभा रह्या, म्हारा दादा जी जान संजोव।
जामो ही लाया केशरिया, जान चलावो म्हारा अर्जुन भीम।
परणी लाओ रुकमणी ....
जान चलई न वर उभा रह्या, म्हारा वीराजी दमड़ा उड़ाव।
मोहर लाया देड़ सौ, दमड़ा उड़ावो म्हारा अर्जुन भीम।

परणी लाओ रुकमणी ....
दमड़ा उड़ई नऽ वर उभा रह्या, म्हारा साजन दिहड़ी संजोव।
दिहड़ी वियाव म्हारा अर्जुन भीम, परणी लाओ रुकमणी।

गीत–श्री राधेश्याम शांडिल्य, हरदा

ज्ञान की देवी विद्या देने वाली माता सरस्वतीजी की वंदना करने के बाद मैं प्रथम पूज्य गणेशजी के चरण–स्पर्श करती हूँ। भाभी गर्म पानी लाई है तथा साथ में रेशमी धोती लाई है। हे मेरे अर्जुन–भीम! स्नान कर लो और रुक्मिणी जैसी पत्नी ब्याह लाओ। स्नान करने के बाद वर महाशय खड़े हैं। हे दरजी भाई! कपड़े ले आ। कपड़े पहनकर वर महाशय खड़े रहे। हे बहन! आरती संजोकर ले आ, भाईयों को तिलक कर।

बहन ने आरती संजोई, रत्न का दीपक जलाया और अपने दोनों भाईयों को कुंकुम का तिलक लगाया। तिलक करने के बाद वर खड़े रहे। मेरी माताजी अब आप थाल परोसकर ले आइये। माताजी हलवा बनाकर ले आई हैं। हे मेरे अर्जुन–भीम! भोजन कर लो। भोजन करने के बाद वर खड़े रहे। हे तमोली भाई! पान के बीड़े सँजोकर ले आ। तब तमोली पान के बीड़े संजोकर ले आया। हे मेरे अर्जुन–भीम! पान खा लो।

पान खाने के बाद वर खड़े रहे। हे मेरे जीजाजी! अब आप घोड़े ले आइये। जीजाजी सफेद रंग के घोड़े ले आते हैं। हे भाईयों! अब घोड़ों पर बैठ जाइये। वर महाशय घोड़ों पर बैठ गये। वर के पिताजी अब आप बारात सजाइये। बारातियों को बुलाइये। सभी बाराती तैयार होकर आ जाते हैं। हे दूल्हे के भैयाजी! अब आप पैसे निछावर कीजिए। भाईयों ने उन पर डेढ़ सौ स्वर्ण मुद्राएँ निछावर कर दी हैं। मोहर निछावर करने के बाद वर महाशय दुल्हन के घर पहुँच गये। हे समधी! अब आप अपनी लड़की को तैयार करो और लग्न का काम सम्पन्न करो।

नृत्य गीत

ऊँची नीची पाळ तलाव की॥
दोस भाई न्हावणऽ जाय, मूंदड़ी ओ लाल जड़ाव की॥
न्हावतऽ जो धोवतऽ दोस भाई पूछऽ,
कसीक छे थारी नार, मूंदड़ी लाल जड़ाव की॥
ऊँची गोरी लगऽ पातळई॥
साँवळड़ी रुणियार, मूंदड़ी लाल जड़ाव की॥
कुण पिता की डिकरी॥
कुण छोग्याल्या की नार ववू, मूंदड़ी ओ लाल जड़ाव की॥
कुण भाया की बैनली॥
कुण छोग्याल्या की नार, मूंदड़ी ओ लाल जड़ाव की॥

एक ऊँचे तालाब में दो अजनबी दोस्त स्नान करने जाते हैं। उनके हाथ की अँगुलियों में लाल रंग के नग (अंगूठियाँ) हैं। स्नान करते-करते पहला दोस्त पूछता है- हे दोस्त! तुम्हारा विवाह हो गया है या नहीं। दोस्त कहता है- हाँ, मेरा विवाह हो गया है। देखते नहीं हो ये नई नग की अँगूठी है। तब दोस्त कहता है- तुम्हारी पत्नी कैसी है ? दूसरा दोस्त कहता है- मेरी पत्नी ऊँची-पूरी पतली सी नाजुक है। उसका कद लम्बा है, उसके नैन नक्श अच्छे हैं, वह सुन्दर भी है, पर उसका कुछ रंग साँवला है। साँवला रंग होते हुये भी वह अत्यन्त सुन्दर दिखती है, मानो अँगूठी में लाल नग जड़ा हो।

दोस्त पुनः पूछता है, तुम्हारी पत्नी के पिता का नाम क्या है? वह किसकी पुत्री है? और वह किसकी बहू है? वह किस भाई की बहन है, उसके भाई का नाम क्या है? तुम्हारा नाम क्या है? तुम्हारी पत्नी अँगूठी में जड़े लाल रंग के मूंगे नग के समान सुन्दर है।

बच्चे के जन्म के उपलक्ष्य में शक्कर या बताशे बाँटे जाते हैं। महिलाएँ इकट्ठी होती हैं और हँसी-खुशी के बीच नृत्य होता है। तब यह गीत गाया जाता है।

नृत्य गीत

बगल्या तो रूप दियो, असी कोयल छे सुध-बुध काळई
उद्धवजी करम की गति न्यारी।
सूम कऽ तो पयसो दियो, दातारी फिरऽ भिखारी।
उद्धवजी करम की गति न्यारी।
मूँछ मुंड़ा घरऽ अबला नार असा सा, कुँवर फिरऽ उफाणाजी।
उद्धवजी करम की गति न्यारी।
पतिव्रता तो पुत्र बिन झूरऽ, फोड़ तो जण-जण हारी।
उद्धवजी करम की गति न्यारी।

हे प्रभु! आपने यह क्या किया? कैसा अन्याय किया? बगुले को उजला रूप दे दिया। मधुर गान करने वाली कोयल को काली बना दी है? उद्धवजी कर्म की गति सर्वथा अलग ही है।

हे प्रभु! लालची-कंजूस को आपने पैसों का ढेर दे दिया? लालची को पैसों की कोई कमी नहीं रहने दी, लेकिन दानी बेचारा भीख माँगता देखा गया है। दाता को धन देते तो वह दान-पुण्य करता। हे प्रभु! आपने ऐसा क्यों किया? उसके भाग्य में ऐसा क्या लिखा था ? इतना उलट फेर क्यों होता है? उद्धवजी कर्म की गति सर्वथा अलग है।

हे प्रभु! आपने कैसे अजीब खेल किये हैं? नपुंसक को सुन्दर स्त्री दी है और पौरुषवान ऐसे ही घूम रहे हैं। पतिव्रता नारी बच्चे के बिना तरस रही है। बिना बच्चे के वह कितना कष्ट उठा रही है। और एक फूहड़ स्त्री के घर में बच्चों की कतार लगी है। हे प्रभु! आपने पतिव्रता के साथ ऐसा अन्याय क्यों किया? उसे भी पुत्र दे देते तो वह तरसती तो नहीं। आपने उसके भाग्य में ऐसा

क्यों लिखा? हे उद्धवजी! कर्म की गति बिल्कुल अलग होती है। सबको भाग्य और कर्म के कारण जीवन फल मिलता है।

नृत्य गीत

मांगो-मांगो हो नणद बाई मन चाहे सो आज।
गयणा तो तम मती मांगजो म्हारा डब्बा रो शिणगार॥
गयणा मऽ सी बेसर देवूँगा, सरजा लेवूँगी काट॥
मांगो-मांगो.....................................
कपड़ो तो तम मांगजो म्हारा, बुचका रो शिणगार।
कपड़ा मऽ सी साड़ी देवूँगा, पल्ला लेवूँगी काट॥
मांगो-मांगो.....................................
बासण तो मती मांगजो म्हारा, चवका रो शिणगार।
बासण मऽ सी कलस्या देवूँगी, पेंदी लेवूँगी काट॥
मांगो-मांगो.....................................
गाय नऽ तो मती मांगजो म्हारी, आख्या रो शिणगार।
गवा मऽ सी बछुआ देवूँगी, रस्सी लेवूँगी काट॥
मांगो-मांगो वो नणदबाई मन चाहे सो आज।

गीत-नरेन्द्र गीते, दवाना

ननद-भौजाई की मानसिकता का स्वाभाविक वर्णन है। भाभी अपनी प्यारी ननद से कहती है- पुत्र जन्म के उपलक्ष्य में मैं तुम्हें नेग देना चाहती हूँ। मेरा मन आज बहुत खुश है। आज तुम जो चाहो सो माँग लो। सुन लो, सभी गहने तो तुम्हें दे नहीं सकती, गहनों में से एक छोटा-सा गहना, एक मोती की नथ मैं तुम्हें दे सकती हूँ। पर उसमें लगे बहुमूल्य मोती निकाल लूँगी। गहने मेरे डिब्बे का श्रृंगार हैं। माँगों तुम क्या माँगती हो? कपड़े मत माँगना। पूरे कपड़े तो तुम्हें नहीं दे सकती हूँ। कपड़े मेरी पोटली यानी संदूक का श्रृँगार हैं। एक साड़ी जरूर दूँगी लेकिन उसमें सोने-चाँदी की टकी किनार (सुनहरा पल्ला) पहले निकाल लूँगी। ननद बाई तुम बरतन मत माँगना। बरतन मेरी रसोई के श्रृँगार हैं। बर्तन तो तुम्हें मैं नहीं दे सकती हूँ। हाँ, एक बड़ा लोटा रखा है, वह तुम्हें दे दूँगी। पर उसका पेंदा फूटा हुआ है। तुम्हें झलवाना पड़ेगा। गायें मत माँगना, वे मेरी आँखों का श्रृँगार हैं। गायें हमेशा मेरी आँखों के सामने होना चाहिये। हाँ, गायों के बदले मैं तुम्हें एक छोटी सी बछिया जरूर दे सकती हूँ। लेकिन बछिया जिस रस्सी में बँधी हुई है, उसे मैं काट लूँगी। बिना रस्सी के बछिया माँ के पास वापस लौट आयेगी। कहने का तात्पर्य यह है कि जो वस्तुएँ ननद को दी जा रही हैं, वे सभी बेकार हैं, भाभी ननद पर उपकार तो करना चाहती है। पर, उसका मन छोटा है, इसलिए सब आधी-अधूरी चीजें देने को तैयार होती है।

नृत्य गीत

मकऽ छोड़ी गया मयसर की वाट।
असो अल्या माता को घाट।
दस रुपिया तो म्हारा ससराजी का हाथ,
जाजम लाया बोरिया लाया, असो साजन को ठाट।
मकऽ छोड़ी गया ....
बीस रूपिया तो म्हारा जेठ का हाथ,
गाय लाया भैस्या लाया, असो दूध को लाग्यो ठाट।
मकऽ छोड़ी गया ....
तीस रुपिया तो म्हारा देवर का हाथ,
गेंद लाया चेंडू लाया, असो फुटगोल नऽ को ठाट।
मकऽ छोड़ी गया ....
चालिस रुपिया तो म्हारा नणदई का हाथ,
बईण लाया भणिज लाया, धरम को लग्यो म्हारो ठाट।
मकऽ छोड़ी गया ....
पचास रुपिया तो म्हारा स्वामीजी का हाथ,
कोट लाया बंडी लाया, रंडी नऽ को लगाया ठाट।
मकऽ छोड़ी गया मयसर की वाट।
असो अल्या माता को घाट॥

हे स्वामी! आप मुझे अकेली महेश्वर की राह पर अहिल्या घाट छोड़कर चले गये। मेरे साजन के बड़े ठाट हैं। उन्होंने एक बार मेरे ससुरजी के हाथ में दस रुपये दिये थे। उन्होंने उस दस रुपये से महेश्वर की प्रसिद्ध बिछाने की छपी जाजम और सूती धागों की दरी से बने बोरिये जो गाड़ी में सामान रखने के लिये खरीदे। जाजम के आते ही मेरे घर मेहमानों का आना शुरू हो गया। एक बार बीस रुपये मेरे जेठजी को दिये। उन्होंने गायें और भैंसें खरीदीं। गाय और भैंस के आ जाने से मेरे घर दूध-घी पर्याप्त हो गया है। मेरे स्वामी के बड़े ठाट हैं। एक बार मेरे स्वामी ने तीस रुपये मेरे देवरजी को दिये। उन्होंने खेलने के लिये गेंद खरीदी, फुटबाल खरीदा और वे खेलने में मस्त हो गये हैं। क्या ठाट हैं मेरे स्वामी के? एक बार चालीस रुपये मेरे ननदोईजी के हाथों में थे। आने-जाने में उन्होंने सभी रुपये खर्च कर दिये। वे बहन को लाये, भानजों को लाये। ननद, भानजों के आने से मेरे यहाँ धर्म-कर्म का ठाट लग गया है।

पचास रुपये तो मेरे स्वामीजी ने चलते-चलते में खर्च कर दिये थे। उन्होंने अपने लिये कोट खरीदा, बंडी खरीदी और घर में नाचने-गाने वालियों को ले आये। मेरे स्वामी के ऐसे ही ठाट हैं। देखिये न! वे मुझे महेश्वर के माता अहिल्या घाट पर शिवरात्रि मेले में स्नान कराने के

लिये लाये और न जाने किस सौत से मिलने मुझे अकेला छोड़कर चले गये। मेरे स्वामी जरा रसिक मिजाज हैं, उनके बड़े ठाट है। ऐसा मेरे साथ माता अहिल्या घाट पर हुआ।

नृत्य गीत

नानी नणद म्हारी लाड़ली, जिह्न मांड्यो छे हाट।
नाव पूछऽ जी भरतार को॥
बिन्दी धड़ाऊ सवा लाख की जी, जेमऽ जड़्यो जड़ाव।
नाव नी कवाँजी भरतार को॥
सासु कय म्हारी कुल ववु ओ, जाजे बणिया दूकान।
वहाँ सी कपूर ववु लावजे॥
नानी नणद म्हारी साथ मऽ, गई थी बणिया दूकान।
बढ़िया मसाला झौंक दऽ॥
तीन सौ साठ म्हारी कोथलई हो, सुन्दर नाव बता।
नाव बता हो रम्भा पातलई॥
शक्कर सरीखा उजला नऽ 'र' ओकी साथ।
बढ़िया मसाला झौंक दऽ॥
सासु कय म्हारी कुल ववु हो, गई थी बणिया दूकान।
ऐतरी अवेर ववु कहाँ लागी॥
बैसाख पीछऽ ववु हो, सासू लाग्यो आषाढ़।
ढेली उब्या थी घर मऽ जी॥
नानी नणद म्हारी लाड़ली, जिह्न मांड्यो छे हाट।
नाव पूछऽ जी भरतार को॥
नाव नी कवाँ जी भरतार को।

मेरी छोटी-सी लाड़ली ननद रानी ने हठ पकड़ ली है। और अपने भैया (पति) का नाम पूछ रही है। मैं उसे सवा लाख रुपये की बिंदिया घड़ा दूँगी। उसमें नगीने जड़वा दूँगी। लेकिन अपने पति का नाम नहीं कहूँगी। पत्नी-पति का प्राय: नाम नहीं लेती है। तब सास ने अपनी बहू को बुलाया और कहा- बनिये की दूकान पर जा और वहाँ से कपूर ले आ। माँ ने बेटी को भी मसाला छौंकने साथ में भेजा। तुम्हारी भाभी बनिये की दूकान पर तो कपूर का नाम लेगी, वहीं तू नाम सुन लेना।

बहू चतुर थी। वह सास की बात को समझ गई। बहू बनिये की दूकान पर गई और बनिये ने पूछा- क्या चाहिए ? तब बहू ने कहा- आपकी दूकान में जो सुगंधित पदार्थ है। वह मुझे दे दीजिए। बनिये ने कहा- कुछ रूपरेखा तो बताओ, सुन्दरी। मेरी दूकान में तो बहुत-सी सुगंधित चीजें हैं। तब बहू ने कहा- वह शक्कर की तरह सफेद है तथा उसका अंतिम अक्षर 'र' है। वह

सुगंधित पदार्थ मुझे दे दो। बनिये ने झट से कपूर निकाला और बहू को दे दिया। अब ननद रानी यहाँ भी नाम सुनने से वंचित रह गईं। सासू को बहुत बुरा लगा। तब सासुजी ने बहू से पूछा- क्यों बहू, तू बनिये की दूकान पर गई थी और वहाँ से क्या लाई है? तुमने बनिये की दूकान पर कितनी देर कर दी। तब बहू ने सफाई पूर्वक उत्तर देते हुये कहा- आपने जो बुलाया था, वह मैं ले आई हूँ। वैशाख के बाद ही आषाढ़ आयेगा। आने-जाने में जितना समय मुझे लगा, बस उतना ही समय लगा।

तब ननद रानी ने ढेली (देहरी) रोक ली और कहा- यहाँ नहीं कहा, बनिये की दूकान में नहीं कहा। अब तो नाम कहो। अंत में भाभी को काफी उलझन के बाद अपनी ननदी का मान रखने के लिये पति का नाम कहना ही पड़ा। उनका नाम कपूर चन्द्र है।

नृत्य गीत

काजल नऽ कुकु म्हारो रुलई-रुलई जाय।
स्वामीजी कऽ कयजो म्हारो आणो लई जाय।
आणो लई जाय नई तो वसो कई जाय।
दूसरा धणी कऽ समझ पड़ी जाय।
पयलो आणो म्हारा ससराजी आया।
इना डोकरा की साथ नई जाऊँ म्हारी माय।
स्वामीजी कऽ कयजो म्हारो आणो लई जाय।
आणो लई जाय नई तो वसो कई जाय।
दूसरो आणो म्हारा जेठ जी आया।
इना जुवान की साथ नई जाऊँ म्हारी माय।
स्वामीजी कऽ कयजो म्हारो आणो लई जाय।
आणो लई जाय नई तो वसो कई जाय।
तीसरा आणो म्हारा देवरजी आया।
इना पोर्‍या की साथ नई जाऊँ म्हारी माय।
स्वामीजी कऽ कयजो म्हारो आणो लई जाय।
आणो लई जाय नई तो वसो कई जाय।
चौथा आणो तो म्हारा स्वामीजी आया।
स्वामीजी का साथ हरकती जाऊँ म्हारी माय।
स्वामीजी कऽ कयजो म्हारो आणो लई जाय।
आणो लई जाय, नई तो वसो कई जाय।

गीत-श्री गोपीचंद सैतया, मंडवाड़ा

गोरी कहती है– स्वामी! आपकी प्रतीक्षा करते–करते मेरे माथे पर लगी कुंकुम की बिंदिया और आँखों में लगा काजल बिखरने लगा है। काजल और कुंकुम मुझे खूब रुला रहा है। वे कब मुझे लेने आयेंगे? नहीं ले जायें तो कम से कम मना तो कर ही जायें, तो मैं दूसरा घर कर लूँ। मेरे पिताजी को भी समझ पड़ जाये। मेरी प्रतीक्षा भी समाप्त हो जाये। गोरी की प्रतीक्षा रंग लाती है।

पहली बार उसके ससुरजी लेने के लिये आये। गोरी को गुस्सा आया हुआ तो था, उसने कहा– मैं इस बुड्ढे के साथ नहीं जाती। हे माँ! इन्हें वापस भेज दीजिए।

दूसरी बार जेठजी लेने के लिये आये। जेठजी के साथ भी वह ससुराल जाने को तैयार नहीं। माँ से कहती है– इस जवान आदमी के साथ मैं ससुराल नहीं जाऊँगी। इन्हें भी वापस कर दो।

तीसरी बार देवर उसे लेने के लिये आया। उसने हँसकर कहा– इस लड़के के साथ मैं नहीं जाऊँगी। हे माँ! इसे भी वापस भेज दो।

चौथी बार स्वयं उसके पति लेने के लिये आये। गोरी झट राजी हो गई। वह खुशी–खुशी हँसती हुई स्वामी के साथ ससुराल चली गई। अब उसे कोई शिकायत नहीं।

नृत्य गीत

कुँवा पाणी कसी जाऊँ रे, नजर लगी जाय।
नजर लगी जाय, हवा लगी जाय।
कुँवा पाणी ---------------
म्हारा सायबजी का बाग घणा छे।
फुलड़ा तोड़णऽ कसी जाऊँ रे, नजर लगी जाय।
कुँवा पाणी कसी ------------
म्हारा सायबजी का कुँवा घणा छे।
पाणी भरणऽ कसी जाऊँ रे, नजर लगी जाय।
कुँवा पाणी कसी -------------

गीत–श्रीमती कान्ता जोशी, खण्डवा

मैं कुएँ से पानी भरने को कैसे जाऊँ? मुझे नजर लग जायेगी। नजर लग जायेगी, अजी हाँ, हवा लग जायेगी। मैं इतनी सुन्दर हूँ और नाजुक भी हूँ। मेरे प्रियतम के बगीचे बहुत हैं, लेकिन मैं फूल चुनने कैसे जाऊँ? नजर लग जायेगी। नजर लग जायेगी, अजी हाँ, हवा लग जायेगी। मेरे प्रियतम के बहुत से कुएँ हैं, लेकिन मैं पानी लेने कैसे जाऊँ? नजर लग जायेगी।

घुघरा

बड़ी कठण सी तू हुयो रे नाना।
सवर्‌या ते छप्पन देव।
नाना दावड़ा रे तनऽ घुघरो इसई देवूं रे।
घुघरो लेवा नऽ थारा दादाजी गया।
गया ते इन्दौर का हाट।
चतुर नाना दावड़ा तनऽ घुघरो इसई देवूं रे।
घुघरा का आसपास हीरा जड़्या रे।
दाड़ी मऽ जड़्यो रे जड़ाव।
घुघरो इसायो मयंगा मोल को रे।
नाना खेलो ते अपणा द्वार।
घुघरो इसायो मयंगा मोल को रे नान॥
खेलो ते चन्दन चौक मऽ।
बडी कठण सी तू हुयो रे नाना।
सवर्‌या ते छप्पन देव।
नाना दावड़ा रे तनऽ घुघरो इसई देवूं रे।
घुघरो लेवा नऽ थारा मामाजी गया।
गया ते अजंड का हाट।
चतर नाना दावड़ा तनऽ घुघरो इसई देवूं रे।
घुघरा का आसपास हीरा जड़्या रे।
दाड़ी मऽ जड़्यो रे जड़ाव।
घुघरो इसायो मयंगा मोल को रे।
नाना खेलो ते अपणा द्वार।
घुघरो इसायो मयंगा मोल को रे।

बच्चे के जन्म अवसर पर बुआ, मामा, दादा, नाना, फूफा के घुघरा लाने का रिवाज है। हे बालक! तेरा जन्म बड़ी ही कठिनाईयों के बाद हुआ है। मैंने छप्पन देवताओं का स्मरण किया, पूजा की है। तब तुम्हारा जन्म हुआ है। हे मेरे चतुर सुजान! मैं तेरे लिये झुनझुना खरीद लाऊँगी। झुनझुना लेने क्रमशः मामाजी, दादाजी, नानाजी, फूफाजी इन्दौर, अंजड़, बड़वानी आदि स्थानों पर जाते हैं। सभी हठीले बालक के लिये अलग-अलग जगह के भाँति-भाँति के झुनझुना लेकर आते हैं। हे बच्चे! झुनझुना लेकर तुम बाहर खेलने मत जाना। यहीं बैठकर खेलना, क्योंकि यह झुनझुना काफी महंगा है। इस झुनझुने में हीरे जड़े हैं। और इसकी डंडी रत्नों से जड़ित है। इस झुनझुने को लाने में काफी समय और धन लगा है। इस घुघरे को लेकर तुम चन्दन चौक में ही अपने घर में खेलना, बाहर कहीं नहीं जाना।

घुघरा

म्हारा बाळा नऽ मांड्यो हाट नणद बाई।
घूघरो क्यों नी लाया।
दूर देश सी आया नणद बाई,
तुमकऽ किन्नऽ बुलाया हो॥
नणद बाई ....
झगल्यो नी लाया, टोपी नी लाया।
हात हलावता आया॥
नणद बाई ....
कड़ा नी लाया, कंदोरो नी लाया।
लुगड़ा की आस लई आया॥
नणद बाई ....
सांजी नी लाया, पतासा नी लाया।
एक दिन गीत नी गवाड़िया॥
नणद बाई ....
जीम्या चुटिया नऽ घोरी-घोरी सोया।
पछा चल्या कूल्हा झाड़ी॥
नणद बाई घुघरो कयों नी लाया॥

गीत-श्रीमती इन्दिरा तारे, खरगौन

यह गीत बच्चे के जन्म के पश्चात् शक्कर बतासे बाँटते समय गाया जाने वाला नृत्य गीत है। हे ननद बाई सा! आप आईं और मेरे बच्चे के लिये एक झुनझुना तक नहीं लाईं। मेरे बच्चे ने हट पकड़ ली है। आप खाली हाथ कैसे आ गईं? झुनझुना क्यों नहीं लाईं? झबला, टोपी और बच्चे के कपड़े तक नहीं लाईं। खाली हाथ चली आईं। ननद बाई आपको जरा भी शर्म नहीं आई। खाली हाथ आ गईं। मेरे बच्चे के लिये कड़े और कंदोरा तक नहीं लाईं और मन में यह आशा लेकर आयी हो कि नेग में मुझे साड़ी तो जरूर मिलेगी।

बाई साड़ी कोई रखी थोड़े है, जो तुम्हें मिल जायेगी। मेरे बच्चे की खुशी में तुम शक्कर बतासे तक नहीं लाईं। बच्चे के जन्म के उपलक्ष्य में एक भी दिन गीत नहीं गवाये। उल्टे खाना खाकर केवल खर्राटे भर-भर गहरी नींद में सोती रही हैं। बस, काम धंधा कुछ किया नहीं और अब कूल्हे झटककर यानी जैसे कोई मतलब ही नहीं और वापस चलीं। तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा।

घुघरा

घुघरो काँ भूली आई ओ, नणद बाई।
घुघरो क्यों नी लाई॥

इना बाला नऽ मांडी हाट, ओ नणद बाई।
घुघरो क्यों नी लाई॥
आगढ़ गाँव का अम्बा नऽ, वड़ग्याव की शोभा।
आगढ़ गाँव का अम्बा नऽ, वड़ग्याव की शोभा॥
असी रसवा मऽ रस रोटी खाई, ओ नणद बाई।
घुघरो क्यों नी लाई॥
इच्छापुर का इच्छा नऽ, आवलई की कावलई।
इच्छापुर का इच्छा नऽ, आवलई की कावलई॥
लिखी मऽ टीकी लगई, ओ नणद बाई।
घुघरो क्यों नी लाई॥
खरगुण का ताजा नऽ, मयसर की गणगौर।
खरगुण का ताजा नऽ, मयसर की गणगौर॥
असी बड़वानी को दसेरो देखी आई, ओ नणद बाई।
घुघरो क्यों नी लाई॥
आपरी की खापरी नऽ, तवा पर रोटी।
आपरी की खापरी नऽ, तवा पर रोटी॥
असी चूला मऽ दाल बळी गई, ओ नणद बाई।
घुघरो क्यों नी लाई॥

हे मेरी प्यारी ननदी! तुम खाली हाथ कैसे आई हो? मेरे बच्चे के लिये कम से कम एक झुनझुना ही ले आतीं। झुनझुना क्यों नहीं लाईं? लाई थीं या कहीं भूल आई हो। मेरे बच्चे ने हठ पकड़ ली है। उसे झुनझुना ही चाहिये। तुम मेरे बच्चे के लिये झुनझुना क्यों नहीं लाईं?

ननद कहती है– सुनो भाभी! आगढ़ गाँव जहाँ पर आमों के भरपूर बाग हैं और उन आम के पेड़ों से बड़गाँव की शोभा बढ़ रही है। उसी आम के रस वाले गाँव में छककर रस रोटी खाकर आ रही हूँ। झुनझुना लाना भूल गई।

इच्छापुर में बिछिए अच्छे बनते हैं। मैंने वहाँ बिछिये पहने। आँवली गाँव में चूड़ियाँ अच्छी बनती हैं, वहाँ से चूड़ियाँ पहनकर आ रही हूँ। मैं इतनी जल्दी में थी, लिखी गाँव में तो मैंने टीकी लगाई, वहीं से सीधी आ रही हूँ। इन सब झंझटों में भतीजे के लिये झुनझुना लेना भूल गई। और सुनो, मैंने खरगोन के ताजिये देखे और महेश्वर की प्रसिद्ध गणगौर देखी तथा बड़वानी का दशहरा देखकर मैं आ रही हूँ। इसी कारण झुनझुना भूल गई।

इस पर भाभी कहती है– ननदबाई तुम्हारे झमेले के कारण मेरी आपरी की खापरी याने मिट्टी के तवे पर रोटी जल गई है और चूल्हे पर रखी दाल भी जल गई है। अब तुम्हें वही खाना पड़ेगा। आखिर तुम झुनझुना भूल आई हो।

जमाल

ताम्बा की दुकड़ी मऽ नीर भऱ्यो।
राजल मली-मली न्हाव।
बापू पूछऽ बेटी राजल, क्यों ली अवगढ़ मान।
संकट पड़्यो दादा जी, दोयलो तवंऽ ली मान।
संकट पड़्यो दादाजी जवंऽ सुमऱ्या भीळट देव।
जात का खाजे आँवला, आवता खाजे सनबोर।
खाटा लागऽ आँवला, मीठा रे लागऽ सनबोर।
ताम्बा की दुकड़ी मऽ नीर भऱ्यो।
राजल मली-मली न्हाव।
बाप पूछऽ बेटी राजल क्यों ली अवगढ़ मान।
संकट पड़्यो दादा जी दोयलो तवंऽ ली अवगढ़ मा॥
संकट पड़्यो दादा जी जवंऽ सुमरी नरबदा माय।
जात का खाजे आँवला, आवता खाजे सनबोर।
खाटा लागऽ आँवला, मीठा रे लागऽ सनबोर।

विवाह के बहुत समय बाद भी एक स्त्री को बच्चा नहीं होता है तो लोग उसे बांझ-बांझ के ताने देते हैं। ताने सुनकर वह स्री परेशान हो जाती है। तब वह पुत्र प्राप्ति के लिये कठिन से कठिन व्रत-उपवास करती है। निमाड़ के देवी-देवताओं में भीलट देव (नागदेवता), मोटी माता, नर्मदा माता आदि प्रमुख मन्नत के देवता हैं। ऐसा ही यह गीत है, जिसमें कठिन मान-मनौती मानी है। उस कठिन व्रत के संकल्प को सुनकर पिता पुत्री से पूछते हैं- बेटी तुमने इतना कठिन व्रत-उपवास क्यों लिया है?

ताम्बे के बर्तन में पवित्र नदियों का जल इकट्ठा किया गया है। उस पानी से पुत्री स्नान कर रही है। पिता पुत्री से पूछते हैं- हे बेटी! तूने इतनी कठिन मान-मनौती क्यों ली ? तुम पर क्या संकट आ पड़ा है। तब पुत्री पिता से कहती है- हे पिताजी! मैं बांझ-बांझ के ताने सुनकर परेशान हो गई थी, इस बांझ जीवन से छुटकारा पाने के लिये मैंने मान-मनौती का संकल्प किया है। मुझ पर बहुत बड़ा संकट है, कोई मेरा मुँह देखना पसंद नहीं करता है। मेरी छाया तक स्पर्श नहीं करना चाहता, क्योंकि मैं बांझ हूँ? इस कठिन दु:ख को देखकर मैंने नाग देवता का व्रत और मनौती मानी है। पिता पुत्री से कहते हैं- बेटी! यह व्रत उपवास कठिन साधना का हिस्सा है, तुमने ले तो लिया है, पर अपने मन को वश में रखना। जिन वस्तुओं का त्याग किया है, उनको मत खाना। अपने व्रत का कठोरता से पालन करना। यदि तुमने अपने व्रत को पूरा कर लिया तो तुम्हें निश्चय ही संतान होगी। हे बेटी! आँवले का स्वाद कड़वा और कसेला होता है, पर बीमारी में आँवला भी अच्छा लगता है। धैर्य धारण करना। कुछ भी खाकर समय बिताना। पिता कहते

हैं– बेटी! कसैला अथवा तूरा लगने पर तुम आँवला खाना मत छोड़ना। आँवला बहुत गुणकारी है। अच्छी जात का यानी अच्छा पका आँवला खाना अधिक फायदेमंद है। पर तुम मीठे स्वाद के कारण बेर खाओगी तो नुकसान ही होगा। दु:ख के बाद सुख भी आयेगा। यह मत भूल जाना यदि तुमने अपने को मारकर व्रत उपवास का पालन किया तो तुम पर भीलट देव अवश्य प्रसन्न होंगे और तुम्हें निश्चय ही संतान देंगे।

जमाल

माता पानड़-पानड़ दिया बळऽ,
थारा चँवरा पर लागी जगा जोत ओ,
आज म्हारा घर भिलट बाबो पावणोऽऽ,
वा तो भिलट बाबा की मैया पूछऽ वातूलीऽऽ,
तू कऽ आज किन्ह निवतियो म्हारा पुत्र रे,
मऽ कऽ निवतियो छे लोकेश भाई की माऊलीऽऽ,
उन्नऽ जिमाड़िया छे दही अरू भात ओ,
आज म्हारा घर भिलट बाबो पावणो।

गीत–श्रीमती हेमलता उपाध्याय, खंडवा

हे देवी! आज पत्ते-पत्ते पर दीपक जल रहे हैं। दीयों की जगमगाहट में सारा मंदिर प्रकाशित है। आज मेरे यहाँ भीलट देव मेहमान हैं। भीलट बाबा की माता अपने पुत्र से पूछ रही है– हे पुत्र! तुम्हें आज किसने यहाँ आने का निमंत्रण दिया है ? भीलट बाबा अपनी मैया से कहते हैं– मुझे आज का निमंत्रण लोकेन्द्र भाई की माँ ने दिया है। उन्होंने मुझे दही और चावल का मीठा भोजन करवाया है। गीतों में अलग-अलग नाम जोड़कर इस गीत को आगे बढ़ाया जाता है।

जमाल

शीतला माता का आँगण लिमड़ो,
दिन-दिन लयरा हो लेय।
कि रे माळई का लड़का नऽ पाणी सिच्यो,
कि वरस्यो भादव मेघ।
नही रे माळई का लड़का नऽ पाणी सिच्यो,
नई वरस्यो भादव मेघ।
पाणी सिच्यो कामना बाई की माड़ुली,
जे गुण लयरा हो लेय।
शीतला माता का आँगण ळिमड़ो

दिन-दिन लयरो हो लेय।
के रे माळई का लड़का नऽ पाणी सिच्यो
कि वरस्यो भादव मेघ।
नही रे माळई का लड़का नऽ पाणी सिच्यो,
नहीं वरस्यो भादव मेघ।
पाणी सिच्यो मनीष भाई की माडुली,
जे गुण लयरा हो लेय।

शीतलामाता के आँगन में नीम का हरा-भरा पेड़ है। जो दिनोंदिन गहरा और हरा हो रहा है। यह पेड़ इतना हरा और गहरा क्यों हो रहा है ? क्या इस पेड़ को माली का लड़का पानी दे रहा है ? या भादव मास का पानी इतना गहरा है ? नहीं, इस पेड़ को माली के लड़के ने पानी से नहीं सिंचित किया है, और न ही भादव के पानी से यह हरा-भरा हुआ है। इस नीम के पेड़ को कामना बहन की माता ने श्रद्धा और विश्वास के पानी से सींचा है। क्योंकि उनकी मनोकामना पूरी हो गई है। इनके घर बच्चा हो गया है। इस आनन्द के कारण कामना की माता ने इसे नियमित सींचा है। इसलिये माता की खुशी को यह पेड़ व्यक्त कर रहा है। इसी कारण यह पेड़ दिनोंदिन हरा-भरा हो रहा है।

शीतलामाता के आँगन में नीम का पेड़ है। जो दिनोंदिन चौगनी गति से बढ़ रहा है। हरा-भरा और छायादार होता जा रहा है। यह नीम का पेड़ साधारण नहीं है। उतना हरा-भरा क्यों है ? क्या इसे माली के लड़के ने सींचा है ? अथवा भादव की झड़ी में इसे अधिक पानी मिला है। नहीं, इस पेड़ को मनीष भाई की माता ने प्रेम रूपी पानी से सींचा है। क्योंकि शीतलामाता की कृपा से मनीष का जन्म हुआ है। और उनकी माता को अपार खुशी हुई है, उनकी मनोकामना पूर्ण हो गई है।

जमाल

बाबा उसकळ हुया थारी मान,
ध्वजा काया निरमळई रे।
बाबा उसकळ हुया थारी मान,
गयरी थारी जातरा रे।
बाबा रमेश भाई लावऽ तमकऽ जातरा,
बाबा लाड़ी ववु लागऽ तमारा पाँय,
गयरी थारी जातरा।
बाबा उसकळ हुया थारी मान,
ध्वजा काया निरमळई रे।
बाबा उसकळ हुया थारी मान,

गयरी थारी जातरा।
बाबा बलदेव भाई लावऽ तमकऽ जातरा,
बाबा लाड़ी ववु लागऽ पाँय,
गयरी थारी जातरा।
बाबा उसकळ हुया थारी मान,
ध्वजा काया निरमळई रे।
बाबा उसकळ हुया थारी मान,
गयरी रे थारी जातरा।
बाबा राजेन्द्र भाई लावऽ तमकऽ जातरा,
बाबा लाड़ी ववु लागऽ तमारा पाँय।

नागदेवता तुम्हारी मान उतारकर हम अपने ऋण से उऋण हो गये हैं। तुम्हारी ध्वजा आकाश में लहरा रही है। उसी प्रकार हमारा मन भी साफ और शुद्ध हो गया है। हमारी काया निर्मल हो गयी है। हे बाबा! तुम्हारी महिमा अपार है। हे बाबा! तुम्हारी मान-मनौती किसने मानी है? तुम्हें किसने मेहमान के रूप में बुलाया है। हे बाबा! तुम्हारी बलदेव भाई मेहमानी करेंगे। मेहमान के रूप में तुम्हारी पूजा करेंगे। और उनकी पत्नी अपना आँचल पसारकर चरण स्पर्श करेंगी। हे नागदेवता! तुम्हारी महिमा अपरम्पार है।

जमाल

नरमदा माता न लिख्या कागज दई भेज्या,
मान वाला केतरिक दूर।
आवा छे आवाड़ा हुई रया रे,
माता नायल को करां रे संजोव।
नायल ईसावऽ तमरो माड़ी जायो,
तू रे मानवई वेगो रे आव।
नरमदा माता न लिख्या कागज दई भेज्या,
मानवाला केतरिक दूर।
आवा रे आवाड़ा हुई रया रे,
माता ध्वजा को करां रे संजोव।
ध्वजा ईसावऽ तमरो माड़ी जायो,
तू रे मानवई वेगो रे आव।
नरमदा माता न लिख्या कागज दई भेज्या,
मानवाला केतरिक दूर।
आवा छे आवाड़ा हुई रयाज,

माता दही भात को करां रे संजोव।
दही भात ईसावऽ तमारो माड़ी जायो,
तू रे मानवई वेगो आव रे।
नरमदा माता न लिख्या कागज दई भेज्या,
मानवाला केतरिक दूर।
आवा छे आवाड़ा हुई रयाज,
माता पुजापो को करां रे संजोव।

आज नर्मदा माता ने स्वयं कागज (पत्र) लिखकर भेजा है। मान देने वाले को सुधि है या नहीं। मेरी मान देने में कितनी देर लग रही है। जब मनौती पूरी हो गई है तो शीघ्र मनौती की रस्म पूरी भी करना चाहिए। मान देने वाला कहता है– हे नर्मदा माता! मुझे तुम्हारी मान याद है। मैं आने की सोच रहा हूँ। पर, क्या करूँ? मनौती पूरी करने के साधन मेरे पास नहीं हैं। पहले तो नारियल ही खरीदने पड़ेंगे। तुम्हारी पाँच नारियल की जो पाल भरना है।

नर्मदा माता कहती है– हे भाई! तू चिन्ता मत कर। नारियल तेरा सगा भाई ले आयेगा। तू तो जल्दी से मान देने आ जा। मुझे चढ़ाई जाने वाली पताकाएँ भी तुम्हारे दूसरे भाई ले आयेंगे। तू तो जल्दी से मान देने की तैयारी कर। तेरे जैसा सच्चा आदमी मान देने क्यों नहीं आ रहा है? तुझे देर कहाँ लग रही है?

मेरे भोग के लिये तुम्हारे दूसरे भाई दही-भात का प्रसाद ले आयेंगे। पूजा की समस्त सामग्री तुम्हारे सगे भाई इकट्ठा कर लेंगे। अब तुम्हें मान देने में देर नहीं करना चाहिए। मान देने शीघ्र आ जाओ। गीत में एक नदी का मानवीकरण दर्शनीय है। मान देने वाले की स्थिति को स्वयं देवी महसूस करती हैं और उसे मनोकामना पूर्ति के बाद मनौती की रस्म पूरी करने के लिये प्रेरित करती हैं। इससे नदी और मनुष्य के गहरे सम्बन्ध उजागर होते हैं।

गणपति पूजा

गढ़ रे गुंडी सी बाबो गणपति आयो॥
आई नऽ उतर्‌या सेळा वड़ तळऽ॥
पूछतऽ-पूछतऽ बाबो सयर मऽ आयो॥
हो नगरी मऽ आयो॥
राय हो बसन्त भाई को घर कां छे॥
आमी-सामी वोहरी हो बाबा लम्बी पटसाल॥
केळ झपकऽ राय का आँगण मऽ॥
गढ़ रे गुंडी सी बाबो गणपति आयो॥
आई नऽ उतर्‌या सेळा वड़ तळऽ॥

पूछतऽ-पूछतऽ बाबो सयर मऽ आयो॥
हो नगरी मऽ आयो॥
राय हो रमेश भाई को घर कां छे।
आमी-सामी वोहरी हो बाबा लम्बी पटसाल॥
केळ झपकऽ राय का आंगण मऽ॥
सीप भरी सीरीखण्ड थाळ भरी मोतिड़ा।
गणेश बधावणऽ मोटी बइण संचरिया।

गणेशजी अपने राजभवन से उतरकर अपने निमंत्रणकर्त्ता भाई के घर गाँव में आते हैं। राजभवन के ऊँचे से चौबारे से चलकर गणेशजी महाराज आये हैं। पहले शहर में आये, नगर के बाहर एक वट वृक्ष की ठण्डी छाँव में विश्राम करने के पश्चात् वे गाँव में आये और गाँव वालों से पूछते हैं- श्रीमन्त बसंत भाई का घर कहाँ है ? सब गाँव वाले लोग बताते हैं। वे जो आमने-सामने छज्जे और लम्बी पटसाल है, वही बड़ा सा घर बसंत भाई का है। उनके आँगन में केले का पेड़ लहरा रहा है। वही बसंत भाई का घर है। वहीं विवाह का शुभ कार्य हो रहा है। गणेशजी उसी द्वार पर जाकर खड़े हो गये।

तब सीप भर श्रीखण्ड और थाल भर मोती लेकर बड़ी बहिन निकलीं, उन्होंने हर्षित होकर श्री गणेशजी को कुंकुम लगाकर बधाया, फिर मीठा श्रीखण्ड खिलाकर उन्हें थाल भर मोती भेंट किये। उनका भावभीना स्वागत किया। घर में लाकर उन्हें उचित आसन दिया।

गणपति वन्दना

कई दोद दोदाल्यो रे गणपत, सदा मतवालो॥
कई आड़ी रूलन्ता केश नऽ रे, म्हारो गणेश दोदाल्यो॥
कई चालो गणेश आपुण जोशी घर जावां।
कई लगिण लिखई घर लावां नऽ रे, म्हारो गणेश दोदाल्यो।
कई चालो गणेश आपुण बजाजी घर जावां॥
कई कपड़ा इसाई घर लावां नऽ रे, म्हारो गणेश दोदाल्यो॥
कई चालो गणेश आपुण सोनी घर जावां॥
कई गयणा इसाई घर लावां नऽ रे, म्हारो गणेश दोदाल्यो॥
कई चालो गणेश आपुण गंधी घर जावां॥
कई मऊड़ इसाई घर लावा नऽ रे, म्हारो गणेश दोदाल्यो॥
कई चालो गणेश आपुण साजन घर जावां॥
कई बंदड़ी परणई घर लावां नऽ रे, म्हारो गणेश दोदाल्यो॥

बड़ी तोंद वाले हैं और सदैव मस्त रहने वाले गणेश जी हैं। उनके पैरों तक लम्बे झूलते

हुए केश हैं। लम्बे उदर वाले मतवाले गणेशजी को नमस्कार है। हे गणेशजी! मैं आपको अपने यहाँ विवाह का निमंत्रण भेज रहा हूँ। आप पधारें और मेरे यहाँ विवाह कार्यक्रम सम्पूर्ण करवाकर ही वापस जायें। हे गणेशजी! सबसे पहले आप हमारे साथ ब्राह्मण के घर चलिये। वहाँ से शुभ लग्न पत्रिका लिखवाकर घर ले आयें। गणेशजी की उपस्थिति से सारे घर और गाँव में मंगल ही मंगल हो गया है।

हे गणेशजी! आप हमारे साथ कपड़े वाले व्यापारी की दूकान पर चलिये और वहाँ से दूल्हे और दुल्हन के लिये अच्छे वस्त्र खरीदकर ले आयें। हे गणेशजी! अब आप हमारे साथ सुनार की दूकान पर चलें, जहाँ से दुल्हन के लिये आभूषण ले आयें। हे गणेशजी! उसके बाद आप हमारे साथ लखेरे के घर चलिये, वहाँ से दुल्हन के लिये सुहाग की चूड़ियाँ ले आयें और दूल्हा-दुल्हन के सिर पर बाँधने के लिये मोढ़ ले आयें। इतना सब करने के बाद आप हमारे साथ बारात में शामिल होकर समधी के घर जाकर दुल्हन के लग्न लगाकर दुल्हन को लेकर वापस आ जायें। फिर आप यथा स्थान को चले जायें।

गणपति वन्दना

कोट गुंडी ऊपर नौबत बाजे।
नौबत बाजे इन्द्रासण गाजे॥
तो झीणी-झीणी झाँझर बाजे गजानन॥
कोट गुंडी ऊपर ....
चलो गजानन जोशी घर जावां।
तो अच्छा-अच्छा लगिण लिखावां गजानन॥
कोट गुंडी ऊपर नौबत बाजे ....
चलो गजानन बजाजी घर जावां॥
तो अच्छा-अच्छा सालु इसावां गजानन॥
कोट गुंडी ऊपर नौबत बाजे।
चलो गजानन सोनी घर जावां॥
तो अच्छा-अच्छा गयणा घड़ावां गजानन।
कोट गुंडी ऊपर नौबत ....
चलो गजानन गंधी घर जावां॥
तो अच्छा-अच्छा इतर इसावां गजानन॥
कोट गुंडी ऊपर नौबत बाजे।
चलो गजानन साजन घर जावां।
तो बंदड़ी परणई घर लावां गजानन॥
कोट गुंडी ऊपर नौबत बाजे॥

राजभवन के मुख्य द्वार के कंगूरे के ऊपर शहनाईयाँ बज रही हैं। शहनाई की मधुर और मीठी स्वर लहरियों के साथ नौबत यानी धौंसा भी बज रहा है। शहनाई और धौंसे की आवाज पूरे शहर में तो गूँज ही रही है, यहाँ तक कि उसकी अनुगूँज इन्द्र के सिंहासन तक पहुँच रही है। शहनाई और धौंसे के साथ झांझ बजने की आवाज भी आ रही है। उधर राजमहल में पायलों की झंकार गूँज रही है, क्योंकि विवाह में सुहागन स्त्रियाँ-रिश्तेदार आ चुके हैं और उन स्त्रियों के पैरों की पायल छम-छम हर तरफ सुनाई दे रही है। हे गणेशजी! इस शुभ मुहूर्त्त के मौके पर आप भी आईये और राजमहल की शोभा बढ़ाईये। चलो गणेशजी! आप और हम मिलकर पंडित के घर चलें, वहाँ जाकर लग्न-पत्रिका लिखवाकर ले आयें।

हे सिद्ध विनायक गणेशजी! आप हमारे साथ कपड़े के व्यापारी की दूकान पर चलें और वहाँ से दुल्हन के लिये अच्छी सी साड़ी खरीदकर ले आयें। राजमहल के कोट पर मांगलिक शहनाई बज रही है। हे गणेशजी! आप हमारे साथ सुनार की दूकान तक चलें और दुल्हन के लिये गहने खरीदकर ले आयें। मंगलकर्त्ता गणेशजी! आप और हम मिलकर सुगन्धी के घर चलें, वहाँ से सुगन्धित इत्र और दुल्हन के लिये 'मौढ़' ले आयें। इसके बाद आप बारात की शोभा बढ़ायें और बारात लेकर समधी के घर जायेंगे। दुल्हन का शुभ पाणिग्रहण संस्कार करवाकर दुल्हन को घर लेकर आयें। फिर आप अपने यथा स्थान प्रस्थान करें। हमारी यही विनती है।

खलमाटी

सुवा रे पयलो बधावो म्हारा आबिया॥
सुवा रे भेजो म्हारा दादाजी दरबार॥
पंखेरू रे सोन्ना की दाड़ी दिया बळऽ॥
दादाजी रंग सु बधाविया॥
माता नऽ लियो खोळा झेल॥
पंखेरू रे सोन्ना की दाड़ी दिया बळऽ॥
सुवा रे दूसरो बधावो म्हारा आबिया॥
सुवा रे भेजो म्हारा काकाजी दरबार॥
काकी नऽ रंग सु बधाविया॥
काकी नऽ लियो खोळा झेल॥
सुवा रे तीसरो बधावो म्हारा आबिया॥
सुवा रे भेजो म्हारा मामाजी दरबार॥
पंखेरू रे सोन्ना की दाड़ी दिया बळऽ॥
मामाजी रंग सु बधाविया
मामी नऽ लियो खोळा झेल॥

पंखेरू रे सोन्ना की दाड़ी दिया बळऽ ॥
सुवा रे चौथो बधावो म्हारा आबिया ॥
सुवा रे भेजो म्हारा बीराजी दरबार ॥
पंखेरू रे सोन्ना की दाड़ी दिया बळऽ ॥
बीराजी संग सु बधाविया ॥
भावज नऽ लियो खोळा झेळ ॥
पंखेरू रे सोन्ना की दाड़ी दिया बळऽ ॥

हे तोते! मेरे यहाँ विवाह का शुभ अवसर आया है। और ये पाँच बधाइयाँ आई हैं। उन्हें अलग-अलग जगह देकर आना। पहली बधाई मेरे पिताश्री को देना और उस बधाई को माता ने अपने आँचल में विधि-विधान से प्रसन्नता के साथ झेल लिया है। इस रंगीन सरस बधाई के साथ ही उनके घर में सोने के दीपक जल उठे हैं।

हे तोते! दूसरी बधाई मेरे काकाजी को देना। काकी ने उस शुभ लग्न संदेश को आँचल में खुशी से समेट लिया है। उसका स्वागत किया। इस खुशखबरी के साथ उनके घर में सोने के दीपक जगमगा उठे हैं।

तीसरी बधाई मेरे मामाजी को देना। मामीजी ने इस बधाई को चावल लगाकर पूजा और अपने आँचल में समेट लिया। इस आनन्ददायी खबर के साथ ही उन्होंने घर में स्वर्ण दीपक जला दिये। चौथी बधाई मेरे सहोदर को सुनाना। भाभी ने उस बधाई शुभ समाचार को आनन्द से अपने आँचल में झेल लिया। इस रंगीन सरस बधाई को जब भाभी ने अपने आँचल में समेट लिया, तब उनके घर में आनन्द का वातावरण बन गया और चारों ओर सोने के दीपक जगजगा उठे।

खलमाटी

भँवरा पाँच बधावा म्हाराय्हां आबिया ॥
भँवरा पाँचई की नवी-नवी रीत।
बाड़ी का भँवरा दाख मीठा नऽ रस सेवरो।
भँवरा पयलो बधावो म्हाराय्हां आबिया।
भँवरा भेजो म्हारा ससराजी दरबार ॥
बाड़ी का भँवरा ....
भँवरा ससराजी रंग सु बधाविया।
भँवरा सासू बाई नऽ लियो खोळा झेल ॥
बाड़ी का भँवरा ....
भँवरा दूसरो बधावो म्हाराय्हां आबियो ॥

भँवरा भेजो म्हारा जेठजी दरबार॥
बाड़ी का भँवरा ....
भँवरा जेठजी रंग सु बधाविया॥
भँवरा जेठाणी नऽ लियो खोळा झेल॥
बाड़ी का भँवरा ....
भँवरा तीसरो बधावो म्हाराम्हां आबियो॥
भँवरा भेजो म्हारा पिताजी दरबार॥
बाड़ी का भँवरा ....
भँवरा पिताजी रंग सु बधाविया॥
भँवरा माता बाई नऽ लियो खोळा झेल॥
बाड़ी का भँवरा ....
भँवरा चौथो बधावो म्हाराम्हां आबिया॥
भँवरा भेजो म्हारा बीराजी दरबार॥
बाड़ी का भँवरा ....
भँवरा बीराजी रंग सु बधाविया॥
भँवरा भावज नऽ लियो खोळा झेल॥
बाड़ी का भँवरा ....
भँवरो पाँचवो बधावो म्हाराम्हां आबिया॥
भँवरा भेजो म्हारा मामाजी दरबार॥
बाड़ी का भँवरा ....
भँवरा मामाजी संग सु बधाविया॥
भँवरा मामी बाई नऽ लियो खोळा झेळ॥
बाड़ी का भँवरा दाख मीठा नऽ रस सेवरो॥

हे भँवरे! मेरे घर पाँच बधाईयाँ आई हैं। पाँचों बधाईयों की नई-नई परम्पराएँ हैं। हे बगीचे में गुंजन करने वाले भँवरे! दाक्ष तो मीठे होते हैं, लेकिन कच्चे तोड़ लेने पर वे खट्टे लगते हैं। पहली बधाई मेरे यहाँ आई है। उसे मैंने मेरे ससुरजी के घर भेज दी है। ससुरजी ने उस बधाई को कुमकुम अक्षत से पूजन किया। मेरी सासुजी ने उसे अपने आँचल में समेट लिया है।

हे भँवरे! दूसरी बधाई मेरे यहाँ आई है। उसे मैंने अपने जेठजी के दरबार में भेज दी है। जेठजी ने उसे कुमकुम अक्षत से पूजन किया और मेरी जेठानी ने उसे आँचल में समेट लिया है। तीसरी बधाई मेरे यहाँ आई है। उसे मैंने मेरे पिताजी के घर भेज दिया है। पिताजी ने उसे कुमकुम अक्षत से पूजन किया और मेरी माताजी ने उसे अपने आँचल में समेट लिया है। चौथी बधाई मेरे यहाँ आई है। उसे मैंने मेरे भैयाजी के दरबार में भेज दिया है। भैया जी ने उसे कुमकुम अक्षत से पूजा और मेरी भाभी ने उसे आँचल में समेट लिया है। हे भँवरे! पाँचवी बधाई मेरे यहाँ

आई है। उसे मैंने मेरे मामाजी के दरबार में भेज दिया है। मामाजी ने उसे कुमकुम अक्षत से पूजा और मेरी मामी ने उसे अपने आँचल में समेट लिया है। सबने इस शुभ समाचार का भारी स्वागत किया है।

खलमाटी

गढ़ पर कसुमल मैं बोई रे ढोळा।
आठ कली एक फूल बधावा मैं सुण्या॥
एक कली हमनऽ तोड़िया रे ढोळा॥
निकल्यो सवा घड़ो रंग, बधावाजी मैं सुण्या॥
रंगजो लोकेन्द्र भाई की पागड़ी रे ढोळा॥
रंगजो उषा ववु का चीर, बधावा जी मैं सुण्या॥
खूब रंग आयो राजा की पागड़ी रे ढोळा॥
उदो रंग आयो ववु रो चीर, बधावा जी मैं सुण्या॥
कपूर भरी रे बीरा की पागड़ी रे ढोळा॥
लोंग भऱ्यो रे ववु रो चीर, बधावा जी मैं सुण्या॥
मयकऽ रही रे बीरा पागड़ी रे ढोळा॥
चटक रह्यो ववु रो चीर, बधावा जी मैं सुण्या॥
पेरी ओड़ी नऽ धन निस्रया रे ढोळा॥
जसी सरवण तीज, बधावा जी मैं सुण्या॥

हे स्वामी! एक ऊँची सी पहाड़ी पर मैंने रंगीन फूलों के पौधे लगाये हैं। उन पौधों में कलियाँ आ गई हैं। जिनकी संख्या आठ है। उन कलियों में से मैंने एक कली तोड़ ली है और उस कली से सवा घड़ा रंग बनाया है। हे प्रियतम! इस रंग से लोकेन्द्र भाई की पगड़ी को रंग देना। बचे हुए रंग से ऊषा बहू की चूंदड़ी को भी रंगना। स्वामीजी ने यह काम कर दिया। उस पर खूब रंग चढ़ा है। दूल्हे राजा की पगड़ी पर खूब अच्छा रंग चढ़ा है। पगड़ी उसे खूब फबेगी। ऊषा बहू की चूंदड़ी का रंग एकदम आसमान की तरह है। भाई की पगड़ी को रंगते समय उसमें कपूर डाला गया था, जिससे उसमें कपूर की सुगंध आ गई है। और बहू की साड़ी के रंग में लौंग का सत डाल दिया था और बहू की चूंदड़ी में लौंग की सुवास भर गई है।

हे स्वामी! मेरे वीराजी की पगड़ी कपूर से महक रही है। बहू की चूंदड़ी का रंग लौंग के कारण और चटकदार हो गया है। उस चूंदड़ को पहनकर बहू जब बाहर निकली और पाट पर बैठी तो ऐसे लगा जैसे सावन की तीज हो या बादलों को चीर कर कोई बिजली चमकी हो या सावन में कड़कने वाली चमकदार बिजली के समान बहू दिखाई दे रही है। ऐसा शुभ कार्य आज मैंने सुना और मेरी आँखों से देखा।

खलमाटी के पश्चात् गणेश पूजा

सीप भरी श्रीखंड, थाल भरी मोती ओ॥
ऐतरो लई नऽ शारदा बाई संचऱ्या॥
हँसी-हँसी रलई विजयसिंग जबई पूछऽ
आज की निमाड़ी राणी कां जाओ॥
हमरा हो भाई पाट ओ बठ्या।
चऊक सा बठ्या॥
पयलो इनायक हम पूजा॥

गणेशजी की अगवानी के लिये थाल में मोती भरकर, सीप में श्रीखण्ड लेकर सजधजकर बहन शारदा बाई निकली हैं। तब उनके पति महोदय ने हँसकर पूछा- हे प्रिय निमाड़ी रानी! आज तुम इतनी साज-सज्जा कर कहाँ जा रही हो ? तब गृह देवी शारदाबाई ने कहा- हे प्रिये! आज से मेरे भाई का विवाह आरम्भ हो रहा है। आज मेरे भाई पाट पर बैठेंगे। दूल्हा बनेंगे। इसलिए थाल भर मोती और श्रीखण्ड के साथ गणेशजी की प्रथम पूजा करने और भाई को टीका लगाने जा रही हूँ। गणेशजी की पूजा के बाद ही मेरे भाई को हल्दी लगेगी, इसलिये मैं सजधजकर जा रही हूँ। हे स्वामी! दामाद होने के नाते आप भी हमारे साथ चलें।

तेल चढ़ाना

तेल फूलेल चम्पा केरी कलियां॥
जुपजे रे तेली तू घाणी॥
आधो तेल नऽ आधो पाणी॥
तेल चढ़ावऽ तेजसिंगजी की राणी॥
तेल फूलेल चम्पा केरी कलियां॥
जुपजे रे तेली तू घाणी॥
आधो तेल नऽ आधो पाणी॥
तेल चढ़ावऽ गजेन्द्रसिंग की राणी॥
तेल फूलेल चम्पा केरी कलियां॥
जुपजे रे तेली तू घाणी॥
आधो तेल नऽ आधो पाणी॥
तेल चढ़ावऽ दुर्गासिंग की राणी॥
तेल फूलेल चम्पा केरी कलियां॥
जुपजे रे तेली तू घाणी॥
आधो तेल नऽ आधो पाणी॥
तेल चढ़ावऽ जगदीशजी की राणी॥

हे सुगंधी ! तू चम्पा के फूल से निकला हुआ सुगन्धित इत्र देना। और अच्छा इत्र बनाने के लिये चम्पा की कलियों का तेल निकालना। उसमें तेल निकालने के लिये आधा पानी और आधा तेल मिलाना, जिससे सुगंधित इत्र मिलेगा। वही तेल और इत्र अमुक भाई की पत्नी दूल्हे अथवा दुल्हन को चढ़ायेगी। दूल्हे की सुहागिन बहन जो तेजसिंहजी की रानी है, सुगन्धित पवित्र तेल और इत्र चढ़ा रही है।

चिकसा

गऊ रे चणा केरा उगसणा, राय चमेली रो तेळ,
रायजादो न्हाव उगसणो, आओ म्हारा दादाजी तम देखो,
तम देखी हम सुख होय, रायजादो न्हावऽ उगसणो,
गऊ रे चणा केरा उगसणा, राय चमेली रो तेळ।
रायजादो न्हावऽ उगसणो, आओ म्हारा काकाजी तम देखो,
तम देखी हम सुख होय, रायजादो न्हावऽ उगसणो,
गऊ रे चणा केरा उगसणा, राय चमेली रो तेळ।
रायजादो न्हावऽ उगसणो, आओ म्हारा मामाजी तम देखो,
तम देखी हम सुख होय, रायजादो न्हावऽ उगसणो,
गऊ रे चणा केरा उगसणा, राय चमेली रो तेळ।
रायजादो न्हावऽ उगसणो, आओ म्हारा वीराजी तम देखो,
तम देखी हमऽ सुख होय, रायजादो न्हावऽ उगसणो।

गेहूँ और चने के आटे में हल्दी और चमेली का तेल डालकर उबटन बनाया गया है। उसी उबटन को लगाकर दूल्हे राजा स्नान कर रहे हैं। दूल्हे के पिताजी तुम आकर देखो, तुम्हारे देखने से हमें सुख और खुशी होती है। देखिये! हल्दी के उबटन से आपके लाड़ले का रंग कितना उजला हो गया है ?

गेहूँ और चने के आटे में चमेली का इत्र डालकर उबटन बनाया गया है। उसी उबटन को लगाकर आज राजकुमार दूल्हे राजा स्नान कर रहे हैं। हे काकाजी, हे मामाजी, हे भैया जी! आप आईये और यह देखिये! आपके देखने से हमें अपार सुख और खुशी होती है। देखिये! हल्दी के उबटन के लगाने से दूल्हे राजा का रंग कितना खिल गया है। आप देखेंगे, तो आपको भी खुशी होगी, आनन्द होगा।

चिकसा

गऊ रे चणा रा ढेर पड़िया, जामे लाड़ी रा दादाजी रपट पड़िया॥
खम-खम हो दादाजी, थें तो रपट पड़िया॥
म्हने लाड़ीबाई रा ब्याव री चिन्ता घणी॥

गऊ रे चणा रा ढेर पड़िया, जामे लाड़ी रा काकाजी रपट पड़िया॥
खम-खम हो काकाजी, थें तो रपट पड़िया॥
म्हने लाड़ीबाई रा ब्याव री चिन्ता घणी॥
गऊ रे चणा रा ढेर पड़िया, जामे लाड़ी रा बीराजी रपट पड़िया॥
खम-खम हो बीरा जी, थें तो रपट पड़िया॥
म्हने लाड़ीबाई रा ब्याव री चिन्ता घणी॥
गऊ रे चणा रा ढेर पड़िया, जामे लाड़ी रा मामाजी रपट पड़िया॥
खम-खम हो मामाजी, थें तो रपट पड़िया॥
म्हने लाड़ीबाई रा ब्याव री चिन्ता घणी॥

यह विवाह में दूल्हा-दुल्हन को हल्दी का उबटन लगाते समय गाया जाने वाला दूसरा गीत है। विवाह के कारण घर में यहाँ-वहाँ गेहूँ चने के ढेर पड़े हैं। उसमें दुल्हन के पिताजी फिसल गये। सँभलो-सँभलो पिताजी! आप तो फिसल पड़े हैं। आपको इतनी जल्दी और चिंता किस बात की हो गई है ? तब पिताजी जवाब देते हैं- मुझे बेटी के विवाह की चिंता के कारण कुछ नहीं दिखाई देता है। यह विवाह सकुशल सम्पन्न हो जाये तो मेरी चिंता दूर हो जाय।

यहाँ-वहाँ गेहूँ चने के ढेर पड़े हैं। उसमें दुल्हन के काकाजी, मामाजी, भाईजी आदि सभी विवाह के इन्तजाम की हड़बड़ी में हैं। सभी के सभी जल्दबाजी में एक बार अवश्य फिसलते हैं। विवाह की सकुशल निपटने की चिंता जो है। यह चिंता बेटी के विवाह में कुछ अधिक दिखाई देती है। पिता, काका, मामा और भाई-भतीजे आदि सभी व्यस्त हैं, सबकी एक ही चिंता है, बेटी का ब्याह कुशलता से सम्पन्न हो जाये। बेटी के विवाह के आन्तरिक दबाव का इससे सुन्दर वर्णन और क्या हो सकता है।

लोण वराना

आगरो लोण वर आगरो, चिक्सा मर्दन होय॥
कागद लिखजे ओ लाहुरी, जेमऽ विजयसिंह जवई को नाव॥
सदा ओ सौभागेण शारदा बाई, भाई पर लोणऽ वरावऽ॥
लोण मयंगो रे बीरा मालवऽ, सो भी हटड़ी एचाय॥
बईण मयंगी रे बीरा मालवऽ, सो भी वसऽ परदेश॥
आगरो लोण वर आगरो, चिक्सा मर्दन होय॥
कागद लिखजे ओ लाहुरी, जेमऽ तेजसिंह जवई को नाव॥
सदा ओ सौभागेण गीता बाई भाई पर लोणऽ वरावऽ॥
लोण मयंगो रे बीरा मालवऽ, सो भी हटड़ी एचाय॥
बईण मयंगी रे मालवऽ, सो भी बसऽ परदेश॥
आगरो लोण वर आगरो, चिक्सा मर्दन होय॥

कागद लिखजे ओ लाहुरी, जेमऽ गजेन्द्र सिंह जवई को नाव॥
सदा ओ सौभागेण उमाबाई, भाई पर लोणऽ वरावऽ॥
लोण मयंगो रे बीरा मालवऽ, सो भी हटड़ी एचाय॥
बईण मयंगी रे बीरा मालवऽ, सो भी वसऽ परदेश॥

जिस प्रकार सफेद चन्दन की तरह नमक है, उसी प्रकार दूल्हा भी इसी नमक की तरह उजला और गोरा है। दूल्हे को हल्दी का उबटन लगाया है। एक प्रकार के पक्षी लाऊरी (तीतर) को सम्बोधित करके कहा गया है। हे पक्षी! तू कागज पर बहन और उसके पति का नाम लिखना। बहन के पति का नाम विजयसिंह है और बहन का नाम शारदा बाई है। सदा सौभाग्यवती बहन अपने भाई पर नमक निछावर कर रही है। नमक भी बड़ा महंगा अमूल्य है, जो मालवा के हाट बाजार से खरीदा गया है और नमक से नजर उतारने या न्यौछावर करने वाली बहन भी कम मूल्यवान नहीं है, उसका विवाह हो चुका है, वह अपनी ससुराल से आई है, यहाँ-वहाँ से नहीं, दूर देश मालवा से आई है। यह क्रम चार बार दोहराया जाता है। बहन गीता है तो उसके पति का नाम तेजसिंह है। क्रम से गीत गाते हैं और बहन के स्थान पर बहन का नाम तथा बहनोई के स्थान पर उसके पति का नाम जोड़कर गीत आगे बढ़ता है। पर जब दामाद का नाम आता है तो शेष स्त्रियाँ दामाद का नाम नहीं बोलती हैं। स्वयं जो बहन गा रही है, वही अपने पति का नाम उच्चारण करती है। तब दूसरी बार में वे स्त्रियाँ गीत की कड़ियों को आगे बढ़ाती गाती हैं। नमक वारने के बाद उस नमक को किसी को दे दिया जाता है या उसे अन्य स्थान पर सुरक्षित रख देते हैं।

हल्दी

हल्दी गाँठ गठेली, हल्दी बहुत रंगेली॥
निपजे ते रेवू रेत मऽ॥
व्ळाड़ा का दादाजी रमेश भाई॥
उनकी माता सुलोचना बाई॥
वो थारी हल्दी मोळावसे॥
हल्दी गाँठ गठेली, हल्दी बहुत रंगेली॥
निपजे ते रेवू रेत मऽ॥
व्ळाड़ा का काकाजी बलदेव भाई॥
उनकी काकी पुष्पा बाई॥
वो थारी हल्दी मोळावसे॥
हल्दी गाँठ गठेली, हल्दी बहुत रंगेली॥
निपजे ते रेवू रेत मऽ॥
व्ळाड़ा का मामाजी प्रहलाद भाई॥

उनकी मामी गंगाबाई॥
वो थारी हल्दी मोळावसे॥
हल्दी गाँठ गठेली, हल्दी बहुत रंगेली॥
निपजे ते रेवू रेत मऽ॥
ळाड़ा का बीराजी वीरेन्द्र भाई॥
उनकी भावज सेवन्ती बाई॥
वो थारी हल्दी मोळावसे॥

गीत-सुश्री गंगाबाई तोमर, दवाना

यह विवाह में गाया जाने वाला हल्दी गीत है। इस गीत में हल्दी का वर्णन है। जो बालू रेत में या रेतीली भूमि में पैदा होती है। हल्दी बेचने वाला गाँव में चक्कर लगा रहा है। कोई हल्दी लो, कोई हल्दी लो, हल्दी बहुत अच्छी है, अच्छा देती है। जब हल्दी बेचने वाले की हल्दी कोई नहीं लेता, तब गाँव वाले उसे कहते हैं- हे भाई! तुम्हें हल्दी बेचना ही है तो रमेश भाई के घर जाओ। उनके यहाँ लड़के की शादी हो रही है, उनकी पत्नी सुलोचना बाई तुम्हारी हल्दी खरीद लेंगी। हल्दी की गांठें बड़ी भरवां और रंगदार हैं।

हे हल्दी बेचने वाले भाई! तुम बलदेव भाई के घर जाओ। वहीं तेरी हल्दी बिकेगी, क्योंकि बलदेव भाई के भतीजे लोकेन्द्र का विवाह है और उनकी काकी सभी हल्दी खरीद लेंगी। दूल्हे राजा के मामाजी प्रहलादसिंह तेरी हल्दी को देखेंगे और उनकी पत्नी गंगाबाई अपने भानजे को लगाने के लिये तुम्हारी हल्दी अवश्य खरीद लेगी। हे हल्दी बेचने वाले भाई! तुम तो यह हल्दी वीरेन्द्र भाई के घर ले जाओ, क्योंकि उनके भैया का विवाह हो रहा है। और उनकी भाभी सेवन्ती बाई अपने लाड़ले देवर को लगाने के लिये हल्दी तुरन्त खरीद लेंगी, वहीं पर जा, तेरी सभी हल्दी बिक जायेगी। हल्दी विवाह के अनेक आनुष्ठानिक कर्म में उपयोग में आती है। बिना हल्दी की केन्द्रीयता के कोई भी विवाह सम्पन्न नहीं होता। यह हल्दी की अनिवार्यता और सम्मान का प्रतीक है।

स्नान

गाज्यो नी गरज्यो, सखी बाई मेऊळड़ो सो बरस्यो ओ॥
सखी बाई मेऊळड़ो सो बरस्यो ओ॥
आंगणा मऽ कीच्चड़ सखी बाई किनऽ कियो ओ॥
दादाजी को नाँदड़ बेटो,
सवा घड़ो दूध न्हावऽ वो, सवा घड़ो दूध न्हावऽ ओ॥
आँगणा मऽ कीच्चड़ सखी बाई उनऽ कियो ओ॥
गाज्यो नी गरज्यो, सखी बाई मेऊळड़ो सो बरस्यो ओ॥

सखी बाई मेऊळड़ो सो बरस्यो ओ॥
आँगणा मऽ कीच्चड़ सखी बाई किनऽ कियो ओ॥
काकाजी को नाँदड़ बेटो,
सवा घड़ो दूध न्हावऽ वो, सवा घड़ो दूध न्हावऽ वो॥
आँगणा मऽ कीच्चड़ सखी बाई उनऽ कियो वो॥
गाज्यो नी गरज्यो, सखी बाई मेऊळड़ो सो बरस्यो वो॥
सखी बाई मेऊळड़ो सो बरस्यो वो॥
आँगणा मऽ कीच्चड़ सखी बाई किनऽ कियो वो॥
मामाजी को नाँदड़ बेटो,
सवा घड़ो दूध न्हावऽ वो, सवा घड़ो दूध न्हावऽ वो॥
आँगणा मऽ कीच्चड़ सखी बाई उनऽ कियो वो॥
गाज्यो नी गरज्यो, सखी बाई मेऊळड़ो सो बरस्यो वो॥
सखी बाई मेऊळड़ो सो बरस्यो वो॥
आँगणा मऽ कीच्चड़ सखी बाई किनऽ कियो वो॥
वीराजी को नाँदड़ बेटो सवा घड़ो दूध न्हावऽ वो॥
सवा घड़ो दूध न्हावऽ वो,
आँगणा मऽ कीच्चड़ सखी बाई उनऽ कियो वो।

विवाह में दूल्हे अथवा दुल्हन को हल्दी का उबटन लगाने के बाद उसे स्नान कराते समय गाया जाने वाला गीत है। इस क्रिया में चार सुहागिन स्त्रियाँ अपने हाथों में जल से भरा हुआ एक-एक लोटा रखती हैं। चारों स्त्रियाँ एक साथ जल दूल्हे के सिर पर डालती हैं। यह गीत तब गाया जाता है।

बिजली भी नहीं चमकी है और न बादल गरजे हैं, न ही पानी बरसा है। हे सखी! फिर आँगन में इतना पानी कैसे बरसा और कीचड़ किसने किया है? अमुक पिताजी के लाड़ले लड़के का विवाह हो रहा है। वह सवा घड़े दूध से स्नान कर रहा है। हे सखी! आँगन में कीचड़ उन्हीं ने किया है। काकाजी के लाड़ले भतीजे का विवाह हो रहा है और दूल्हा राजा सवा घड़ा दूध से स्नान कर रहा है। हे सखी! आँगन में कीचड़ उन्हीं ने किया है। मामाजी और भैया जी के लाड़ले का विवाह हो रहा है। दूल्हा राजा सवा घड़े दूध से स्नान कर रहा है। हे सखी! आँगन में कीचड़ उन्हीं ने किया है।

घट्टी पीसना

ये तो झाळी राणी नऽ लिख्या कागद दई भेज्या।
तम तो वेगा-वेगा आओ दुल्लव राय॥

रायवर उबा केळऽ का आसरऽ।
ये तो हम कसा आवां म्हारी झाळी राणी॥
हमकऽ लगिण लिखाढ़तऽ लगी वार।
रायवर उबा केळऽ का आसरऽ।
ये तो लगिण लिखाढ़तऽ तम्हारा पिताजी,
तम तो वेगा-वेगा आओ दुल्लव राय।
रायवर उबा केळऽ का आसरऽ।
ये तो हम कसा आवां म्हारी झाळी राणी।
हमकऽ गयणो इसावतऽ लागी वार॥
रायवर उबा केळऽ का आसरऽ।
ये तो गयणो इसावऽ तमारा बीरा जी॥
तम तो वेगा-वेगा आओ दुल्लव राय।
रायवर उबा केळऽ का आसरऽ॥
ये तो हम कसा आवां म्हारी झाळी राणी॥
हमकऽ चड़ावा इसावतऽ लागी वार।
रायवर उबा केळऽ का आसरऽ॥
ये तो चड़ावा इसावऽ तमारा काकाजी।
तम तो वेगा-वेगा आओ दुल्लव राय।
रायवर उबा केळऽ का आसरऽ।
ये तो हम कसा आवां म्हारी झाळी राणी।
हमकऽ लड़ावा इसावतऽ लागी वार।
रायवर उबा केळऽ का आसरऽ॥
ये तो लड़ावा इसावऽ तमारा मामाजी।
तम तो वेगा वेगा आओ दुल्लव राय।
रायवर उबा केळऽ का आसरऽ।

यह गीत विवाह में घट्टी पीसते समय गाया जाने वाला प्रभाती गीत है। झाली रानी ने अपने प्रियतम को कागज पर संदेश लिखकर भेजा है।

हे प्रियतम! आप जल्दी से आईये। उधर प्रियतम केल की छाया में बैठकर अपनी प्रियतमा का संदेश पढ़ रहे हैं। जवाब में संदेश भेजते हैं। मैं कैसे आ सकता हूँ? अभी तो मुझे लग्न लिखवाना है। लग्न लिखवाने में देर भी हो जायेगी। मैं नहीं आ सकता हूँ। तब झाली रानी ने संदेश वाहक के हाथ वापस खबर दी। लग्न तो तुम्हारे पिताजी लिखवा लेंगे। आप तो जल्दी से आ जाईये। तब प्रियतम वापस संदेश भेजते हैं। हमें गहने खरीदने में, कपड़े खरीदने में तथा जूते खरीदने में देर हो सकती है। मैं नहीं आ सकता हूँ। तब झाली रानी ने वापस खबर भिजवायी।

गहने तो तुम्हारे भैया खरीदेंगे। कपड़े तुम्हारे काकाजी खरीदेंगे। जूते-चप्पल तुम्हारे मामाजी खरीदेंगे। आप तो मुझसे मिलने के लिये जल्दी से जल्दी आ जाओ। मेरे मन में तुमसे जल्दी मिलने की चाह है।

घट्टी पीसना

ऐली पेली जमुना री पाल, दुल्लव तो भीजऽ केशरिया,
व्लाड़ी तमरा दादाजी से कवो नाव रे डोंग्या दई भेजऽ।
नई हमरा दादाजी मऽ पोच, नाव रे डोंग्या नई रे भेजऽ।
दुल्लव तो दुलियन भरात, आपई रे चली आवसे,
भींजऽ म्हारा जोड़ी रा जुवान, वागा भींजऽ केशरिया।
ऐली पेली जमुना री पाल, दुल्लव भीजऽ केशरिया,
व्लाड़ी तमरा काकाजी से कवो नाव रे डोंग्या दई भेजऽ।
नई हमरा काकाजी मऽ पोच, नाव रे ढोंग्या नई रे भेजऽ।
दुल्लव तो दुलियन भरात, आप ही रे चली आवऽ रे।
भींजऽ म्हारा जोड़ी रा जुवान, वागो करे भींजऽ केशरिया।
ऐली पेली जमुना री पाल, दुल्लव भींजऽ केशरिया,
व्लाड़ी तमरा मामाजी से कवो नाव रे डोंग्या दई भेजऽ।
नई हमरा मामाजी मऽ पोच, नाव रे डोंग्या नई रे भेजऽ।
छु दुल्लव तो दुलियन भरात, आपई रे चली आवऽ रे।
भींजऽ म्हारा जोड़ी रा जुवान, पंचो तो भींजऽ केशरिया।
ऐली पेली जमुना री पाल, दुल्लव भींजऽ केशरिया,
व्लाड़ी तमरा वीराजी से कवो नाव रे ढोंग्या दई भेजऽ।
नई हमरा वीराजी मऽ पोच, नाव रे डोंग्या नई रे भेजऽ।
दुल्लव तो दुलियन भरात, आपई रे चली आवऽ रे।
भींजऽ म्हारा जोड़ी रा जूवान, मोंजड़ी तो भींजऽ केशरिया।

इस पार दूल्हे राजा हैं और दुल्हन उस पार है। बीच में जमुना नदी बह रही हैं। जमुना नदी को पार कैसे किया जाय? अत: दूल्हे राजा दुल्हन के पास संदेश भेजते हैं। मुझे पार उतरने के लिये बड़ी नाव अथवा छोटी नाव भेज दो। दुल्हन यही संदेश अपने पिता से कहती है। तब पिताजी बेटी को समझाते हैं- हे बेटी! यदि दूल्हे को तुम से प्यार है तो वह अपनी व्यवस्था करके चला आयेगा। तब दुल्हन वापस संदेश भेजती है। मेरे पिताजी में सामर्थ्य नहीं है। वे नाव नहीं भेज सकते, आप अपनी व्यवस्था करके आ जाईये।

तब दूल्हे राजा पुन: संदेश भेजते हैं। मैं और मेरे साथी भीग रहे हैं। मेरे सिर का केशरिया

साफा भीग रहा है। तुम तुम्हारे काकाजी से कहो वे ही कुछ व्यवस्था करके नाव भेज दें। दुल्हन अपने काकाश्री से प्रार्थना करती है– हे काकाजी! आपके दामाद जमुना नदी पार हैं। उन्हें जमुना पार करनी है। आप नाव भेज दीजिये। तब काकाजी अपनी असमर्थता दर्शाते हैं– हमारी इतनी सामर्थ्य कहाँ है कि नाव भेज दें, यदि दूल्हे राजा को तुम से प्यार होगा तो वह अपनी व्यवस्था करके आ जायेंगे। तुम चिंता मत करो। तब दुल्हन वापस संदेश भेजती है। आप अपनी व्यवस्था करके आ जाईये, काकाजी भी नाव भेजने में असमर्थ हैं।

तब दूल्हे राजा दुल्हन के पास संदेशा भेजते हैं। मेरे साथी भीग रहे हैं। मेरा केशरिया जामा भीग रहा है। तुम्हारे पिताजी ने, काकाजी ने मना कर दिया। तो क्या हुआ? तुम्हारे मामाजी और भैयाजी से प्रार्थना करो वे ही नाव भेज दें। तब दुल्हन क्रमशः मामाजी से, भैयाजी से प्रार्थना करती है। मामाजी और भैयाजी अपनी असमर्थता दर्शाते हैं और दुल्हन को समझाते हैं कि हमारी बेटी से दूल्हे राजा को प्यार होगा तो वह अपनी व्यवस्था करके आ जायेंगे। दुल्हन वापस अन्तिम संदेशा भेजती है। आप अपनी व्यवस्था करके चले आईये। मामाजी, भैयाजी भी नाव भेजने में असमर्थ हैं। आखिरकार दूल्हे राजा अपनी व्यवस्था करके दुल्हन के पास आ जाते हैं। लेकिन दुल्हन के सभी वरिष्ठ लोग जानते हैं कि जब तक लड़के-लड़की का विवाह न हो जाये, तब तक मिलने की उतावली नहीं करनी चाहिए।

घट्टी पीसना

सरवर पाणिला हम गया हो, म्हारा हंजा मारू।
पणथा पर सुणी नवली सी बात रे म्हारा हंजा मारू।
कहाँ सी आया तमरा नायल रे म्हारा हंजा मारू।
कहाँ सी आया पान पचास रे म्हारा हंजा मारू।
धार सी आया म्हारा नारियल ओ म्हारी झाळी राणी।
अमझर से आया पान पचास ओ म्हारी झाळी राणी।
कुण तमारी बणगा वरमाय,
कुण तमारी बणगा सुहाय रे बाँगड़ रा।
मुवासी हंजों परणगा सिवई दिवई बणगा वरमाय।
गंगा गवरा बणगा सुहाय ओ म्हारी झाळी राणी।
कुण तमकऽ परणी नऽ घर लाव रे बाँगड़ राणी।
कुण तमरी जासे जान वरात रे बाँगड़ रा
बाँगड़ रा मुवासी हंजो परणावा।
साठई राणा जासे जान वरात,
महादेवजी परणी नऽ घर लावऽ ओ म्हारी झाळी राणी।
पकड़ी लिवी घोड़िला री बाग

काई कारण लावो दूसरी नार रे बाँगड़ रा।
बाँगड़ रो मुवासी हंजो परणाव,
गुण घणा अवगुण थोड़ा ओ म्हारी झाळी राणी।
थारो पोयचो रावलो जे गुण का लावां दूसरी नार,
ओ म्हारी झाली राणी।

पति–पत्नी दोनों आपस में बात कर रहे हैं। हे चतुर स्वामी! कल मैं पनघट पर पानी लेने गई थी। तब मैंने एक नई बात सुनी है। पति महाशय ने कहा– क्या बात सुनी है? तब पत्नी ने कहा– मैंने सुना तुम दूसरी शादी कर रहे हो। क्या यह बात सच है ? पति ने कहा– हाँ, मेरा दूसरा विवाह हो रहा है। पत्नी ने पूछा– कहाँ से आपका टीका आ रहा है? रूपिया, नारियल, पान–बतासे कहाँ से आ रहे हैं? पति ने कहा– धार नगर से मेरा रूपिया–नारियल आ रहा है तथा आमझेरा की पनवाड़ी से पान बँटने के लिये आ रहे हैं। पत्नी ने कहा– आपका विवाह होगा तो आपकी माँ (वरमाय) कौन बनेंगी और कौन सुहागनें मंगल गीत गायेंगी ? पति ने कहा– ओंकार देव की दोनों पत्नियाँ सिवई और दिवई मेरी माँ बनेंगी (वरमाय) और शिवजी की पत्नियाँ मेरी सुहागनें (सुहाय) बनेंगी। वे मंगल गीत गाकर मुझे टीका लगायेंगी और मेरा विवाह होगा। मैं बाँगड़ देश का राजकुमार हूँ और मेरा विवाह अवश्य ही होगा। हे स्वामी! आपकी बारात कौन जायेगा? और कौन तुम्हारे विवाह का कार्य पूर्ण करेगा? तुम्हें घर तक छोड़ने कौन आयेगा? पति ने कहा– साठ राजा जैसे दिग्गज मेरी बारात में जायेंगे और महादेवजी मेरे विवाह का कार्य पूर्ण करके मुझे घर तक छोड़ने आयेंगे।

सभी दूर से हताश होने के बाद पत्नी ने पति के घोड़े की लगाम थाम ली और कहा– हे स्वामी! हमारा क्या दोष है ? जो आप दूसरी पत्नी ला रहे हैं ? पति ने कहा– तुम्हारा कोई दोष नहीं है। कुछ गलती नहीं है। न ही तुम में अवगुण हैं। तुम्हारे गुण तो बहुत अच्छे हैं। पर तुम्हारा साँवला रंग मुझे पसंद नहीं है। अत: मैं दूसरा विवाह करना चाहता हूँ। हे मेरी प्रिय झाली रानी! और कोई बात नहीं है।

निमंत्रण

पेळई सी हल्दी अरू उजळा सा चोखा॥
जाजे रे भंवरूड़ा निवतो॥
गाँव नी जाणूं रे, राय को नाव नी जाणूं रे॥
कुण घर देवां राय का निवता॥
गाँव छे जसवाड़ी नऽ नाव छे तेजसिंहजी॥
उन घर गरास्या घर निवता॥
डेळ बठी बइण की सासूजी पूछऽ॥

कुण रे गरास्या घर का निवता॥
गाँव छे दवाणूं नऽ नाव छे लोकेन्द्र॥
उन रे गरास्या घर का निवता॥
निवता सरसी छे, अपणी गीताबाई आवऽ॥
मंडप सरसा उनका स्वामीजी॥
पेळई सी हल्दी अरू उजळा सा चोखा॥
जाजे रे भंवरूड़ा निवता।
गाँव नी जाणूं रे, राय को नाव नी जाणूं रे॥
कुण घर देवां राय का निवता॥
गाँव छे बड़वानी नऽ नाव छे विजयसिंह जी॥
उन घर गरास्या घर निवता॥
डेळ बठी बइण की सासूजी पूछऽ॥
कुण रे गरास्या घर का निवता॥
गाँव छे मयसर न गाँव छे माणक भाई॥
उन रे गरास्या घर का निवता॥
निवता सरसी छे, अपणी शारदा बाई आवऽ॥
मंडप सरसा उनका स्वामी जी॥

सफेद चावलों को हल्दी में रंगकर पीला कर दिया है। हे भँवरे! तुम ये निमंत्रण के पीले चावल सबसे पहले बहन और दामादों के घर की देहरी पर रखना। भँवरा कहता है- मैं न गाँव का नाम जानता हूँ और गाँव के उन श्रीमन्तों का नाम नहीं जानता हूँ। तब विवाह घर की बड़ी बहू कहती है- गाँव का नाम जसवाड़ी है और दामाद का नाम तेजसिंह है। वे गाँव के मुखिया हैं, पहले उनके घर जाना और निमंत्रण देना।

भँवरा शीघ्र ही उड़कर जसवाड़ी पहुँच जाता है। अमुक मुखिया के घर पहुँचता है। तब दरवाजे पर बैठी हुई बहन की सास पूछती है- हे भँवरे! किस भाई के घर का निमंत्रण है? किसका विवाह हो रहा है।

तब भँवरा कहता है- निमंत्रण दवाना गाँव के प्रधान रमेश भाई के घर का है। उनके पुत्र लोकेन्द्र का विवाह हो रहा है। निमंत्रण सारे कुटुम्ब परिवार सहित है। बहन सीताबाई और दामाद तेजसिंहजी को पहले बुलाया है। यह कहते हुए भँवरा बहन की देहरी पर पीले चावल रखता है। आप सब सादर आमंत्रित हैं। बहन और दामाद जी के आने से भंडार की शोभा बढ़ जायेगी। सभी दामाद मण्डपाच्छादन करेंगे। इस प्रकार भँवरा बड़वानी, महेश्वर आदि स्थानों के बहन दामादों को निमंत्रण चावल रखने जाता है। सबको सादर आमंत्रित करता है।

प्रभाती

बाई ओ पय फाटियो नऽ सूरीमळ उग्यो, जागऽ जशोदा माय।
बाई ओ जागी नऽ बाला नऽ मांडी हाट।
मदवा ठाकुरजी की झूळणी तम लाओ रे सिलाय,
बाई ओ गढ़ मयसर सी मसरू बुलायो, गढ मथुरा को दरजी,
बाई ओ ऊच्चो चवरो चार बिजोरो, वहाँ दरजी उतारो।
मदवा ठाकुरजी की झूळणी तम लेवा नऽ सिलाय,
बाई ओ गज भूली आयो, कतरनी भूली आयो, चिमटी सी देवत बठाडियो।
भाई रे सोन्ना की सुई थारी दरजी, रूप्पा को थारो धागो,
मदवा ठाकुरजी की झूळणी तम देवो नऽ सिलाय,
बाई ओ सिवी सिलाई नऽ घर लाया, लेवो जशोदा माय।
मदवा ठाकुरजी की झूलणी तम लेवो नी वधाय,
बाई ओ थाल भरी नऽ मोती लाया, उप्पर मूठ की लाल,
बाई ओ ताता तपेला पाणी सारिया, बाला कऽ न्हावण कराड़ी।
बाई ओ झगो पेरायो नऽ झूल पेराई, उप्पर मखमल टोपी,
बाई ओ आँख मऽ तो अंजन रेख, नयना सुरकी सारी,
बाला किन्हीं गलिया मऽ खेलवा गयो, किन्हीं गली मऽ रमवा,
बाला खेली रमी नऽ घर आया, बाळा को मुख कोमलायो,
माता ओ गोकुल मऽ खेळवा गया, मथुरा मऽ हम रमवा,
बाला रे कैकी तो तूकऽ नजर लागी, कूण नऽ सरापिया,
माता ओ मावसी पूतना की नजर लागी, कंस न सरापिया॥

प्रभाती गीत (कुकड़ा गीत) सूर्योदय से पूर्व भोर में गाये जाते हैं। हे माता यशोदा! जाग जाइये। पौ फट गई है और सूर्योदय हो गया है। यशोदा माता के जागते ही उनके साथ भगवान बाल श्रीकृष्णजी भी उठ जाते हैं। जागते ही वे मचल पड़ते है, किसी चीज के लिए हठ करने लगते हैं। माता अनेक प्रलोभन देकर पुत्र को समझाती हैं। कहती हैं- मैं अपने कन्हैया के लिये नया झबला सिलाऊँगी। दिन निकलने के बाद माता यशोदा सेवक को बुलाती हैं और कहती हैं- मेरे छोटे सरकार के लिये सुन्दर सा अंगरखा सिलवा लो। आगे कहती हैं- जाओ पहले महेश्वर शहर से मसरू खरीद लाओ, फिर मथुरा से दरजी को बुलाओ। दरजी को मेरे बालक के सुन्दर-सुन्दर कपड़े सिलने के लिये ऊँचे वाले ओटले पर बिठा दें। कपड़े रखने के लिये चार बिजोरे यानी टोकनियाँ रख देना न भूलना। कपड़ा और दरजी आ जाते हैं। माता दरजी को आज्ञा देती हैं- मेरा कन्हैया रो रहा है। अभी इसी वक्त मेरे कन्हैया के लिये अंगरखा सी दो। तब दरजी कहता है- हे माता यशोदा! मैं कपड़ा नापने वाला गज भूल आया हूँ। जल्दी में कैंची भूल आया हूँ। तब माता कहती हैं - कुछ भी करो, कपड़े जल्दी सीओ। तब दरजी ने अँगुलियों से ही नाप

लेकर कपड़े को काटा और सोने की सुई और चाँदी के धागे से झबला बनाना शुरू किया। झबला सिलने के बाद वह उसे लेकर माता यशोदा के समक्ष उपस्थित होता है और माता से कहता है– लो, तुम्हारे कृष्णजी की झुलनी तैयार हो गई है। माता यशोदा ने उसे पहले कुमकुम, अक्षत लगाकर पूजा की। नये वस्त्र की कुंकम से पूजा करके ही पहनने का पुराना रिवाज है। दर्जी को इनाम देने के लिये माता यशोदा महल से एक मोती भरा थाल तथा उसके ऊपर एक मुट्ठी लाल रखकर लाती हैं। वह बक्शीश दर्जी को देती हैं, दर्जी खुश होकर चला जाता है। दर्जी के जाने के बाद माता यशोदा ने पानी गर्म किया और उस पानी से अपने कन्हैया को स्नान कराया, स्नान कराने के बाद माता ने कन्हैया को झबला, झुलनी पहनाई। सिर में मखमल की टोपी बाँधी। इसके बाद उन्होंने कन्हैया की आँखों में काजल लगाया। मस्तक पर काली सी टीकी नैनों के मध्य में लगाई। इसके बाद कन्हैया खेलने के लिये गोकुल में चले जाते हैं। जब कन्हैया खेलकर वापस आते हैं तब उनका शरीर जल रहा था तथा मुखमंडल कुम्हला गया था, आँखें चढ़ी हुई थीं। शरीर बुखार जैसा तप रहा था। तब माता यशोदा ने अपने लाड़ले के बदन को छूकर देखा। अपने लाड़ले से पूछा– हे कन्हैया! तुम कहाँ खेलने गये थे। तब कन्हैया कहते हैं– हे माता! मैं गोकुल से मथुरा की गलियों में खेलने गया था। माता यशोदा को लगा कि जरूर मेरे कन्हैया को नजर लगी है। तब माता कन्हैया से पूछती हैं– हे बेटा! तुम्हें किसी नजर लगी है। तब कन्हैया कहते है– हो सकता है, मेरी जो मौसी पूतना है, उसकी ही नजर लगी हो, इसलिए मेरी हालत खराब हो गई है। या मामा कंस के श्राप के कारण तो मेरी ऐसी दशा न हुई हो, तब माता यशोदा ने नमक, राई, फटे हुए कपड़े के टुकड़े, झाड़ू के तिनके और मिर्ची लेकर कन्हैया की नजर उतारी, तब कृष्ण स्वस्थ हुए।

प्रभाती

दवड़ी जशोदा जोशी घर जाय॥
जोशी री लड़की या बड़ी रे गंवार॥
म्हारा रे कान्हा की बंसी लिवी रे छोड़ाय॥
काय की बंसी नऽ कसो आवाज, कसोक छे बजावण हार॥
म्हारा रे कान्हा की बंसी लिवी रे छोड़ाय॥
सोन्ना की बंसी नऽ रूप्पा जड़ाव॥
सहेसर कला छे बजावण हार॥
म्हारा रे कान्हा की बंसी पर श्री भगवान॥
दवड़ी जशोदा बजाजी घर जाय॥
बजाजी री लड़की या बड़ी रे गंवार॥
म्हारा रे कान्हा की बंसी लिवी रे छोड़ाय॥
काय की बंसी नऽ कसो आवाज, कसोक छे बजावण हार॥

म्हारा रे कान्हा की बंसी लिवी रे छोड़ाय॥
सोन्ना की बंसी नऽ रूप्पा जड़ाव॥
सहेसर कला छे बजावण हार॥
म्हारा रे कान्हा की बंसी पर श्री भगवान॥
दवड़ी जशोदा सोनी घर जाय॥
सोनी री लड़की या बड़ी रे गंवार॥
म्हारा रे कान्हा की बंसी लिवी रे छोड़ाय॥
काय की बंसी नऽ कसो आवाज, कसोक छे बजावण हार॥
म्हारा रे कान्हा की बंसी लिवी रे छोड़ाय॥
सोन्ना की बंसी नऽ रूप्पा जड़ाव॥
सहेसर कला छे बजावण हार॥
म्हारा रे कान्हा की बंसी पर श्री भगवान॥
दवड़ी जशोदा साजन घर जाय॥
साजन की लड़की या बड़ी रे गंवार॥
म्हारा रे कान्हा की बंसी लिवी रे छोड़ाय॥
काय की बंसी नऽ कसो आवाज, कसोक छे बजावण हार॥
म्हारा रे कान्हा की बंसी लिवी रे छोड़ाय॥

माता यशोदा दौड़-दौड़ कर विवाह का कार्य कर रही हैं। वह जल्दी-जल्दी ज्योतिषी के घर गईं। जोशी की लड़की बड़ी गँवार है। उसने मेरे कान्हा की बाँसुरी छीन ली है तब यशोदा जोशी की लड़की से पूछती हैं- मेरे कन्हैया की बाँसुरी दे दो। ढीठ लड़की ने कहा- कैसी है तुम्हारे कान्हा की बाँसुरी और कैसी है उसकी आवाज ? मैंने कोई बाँसुरी नहीं ली। तब यशोदा ने कहा- मेरे कन्हैया की बाँसुरी सोने की है और उसमें चाँदी के तार जड़े हैं। जब मेरा कान्हा बाँसुरी बजाता है, तो सारा गोकुल मोहित हो जाता है। सहस्र कलाओं से मेरा कान्हा बाँसुरी बजाता है। मेरे कान्हा की बंशी ऐसी है। तुम बाँसुरी वापस दे दो। मना करने पर यशोदा कहती हैं- अब तो मेरे कान्हा की बाँसुरी का भगवान ही मालिक है।

दौड़कर माता यशोदा कपड़े व्यापारी के घर जाती हैं। कपड़े वाले की लड़की मूर्ख और गँवार है। उसने मेरे कान्हा की बाँसुरी छुपा दी है। तब यशोदा माता कहती हैं- लड़की! मेरे कान्हा की बंशी कहाँ छुपाई है, दे दो। तब ढीठ लड़की कहती है- कौन सी बाँसुरी, कैसी बाँसुरी, उस बंशी की आवाज कैसी है ? मैंने कोई बाँसुरी नहीं देखी है। तब यशोदा माँ ने कहा- सुन! वह सोने से निर्मित बाँसुरी है और उसमें चाँदी के तार लगे हुए हैं। ऐसी सुन्दर है मेरे कान्हा की बाँसुरी। जब कान्हा बाँसुरी बजाता है तो सारा गोकुल मोहित हो जाता है। मेरे कन्हैया की बाँसुरी तुम वापस दे दो। तब लड़की मना करती है। हार कर यशोदा कहती हैं- अब तो मेरे कान्हा की बाँसुरी का भगवान ही मालिक है।

दौड़कर माता यशोदा क्रमशः सोनी के घर तथा समधी के घर जाती हैं और दोनों से पूछती हैं। सोनी की लड़की मूर्ख और ढीठ है। उसने कृष्ण की बाँसुरी चुरा ली और साफ मना कर दिया, जैसे उसे कृष्ण की बाँसुरी के बारे में कुछ मालूम ही नहीं है। कृष्ण की बाँसुरी अद्भुत है। उसकी मधुर आवाज सबको विमोहित करती है। सारा गोकुल उस बाँसुरी पर मुग्ध हो जाता है। एक नहीं, दो नहीं, सहस्त्र कलाओं से मेरा कन्हैया बाँसुरी बजाता है, लगता है उस बाँसुरी पर स्वयं भगवान बैठ गये हैं। अन्त में कृष्ण उन लड़कियों से स्वयं बाँसुरी छुड़ाने में सफल होते हैं।

प्रभाती

सूरिमल उग्यो बयड़ा केरी कोर,
सूरिजमल उगियो।
तम तो जागो नऽ म्हारा बलदेव भाई राय,
सूरिजमल उगियो।
तम घर रे तमरा यशपाल कुंवर को आव,
सूरिजमल उगियो।
तमक रे बीरा कसी आवऽ नींद,
सूरिजमल उगियो।
तम तो उठि न रे बीरा पागा सवारो,
सूरिजमल उगियो।
तम तो जागी नऽ करो गंगा असनान,
सूरिजमल उगियो।
तम तो जागी नऽ लेवो राम को नाव,
सूरिजमल उगियो।
तम तो उठो, गजेन्द्र जवई भांड,
सूरिजमल उगियो।
तम तो खाल्या-खोदरा करो असनान,
सूरिजमल उगियो।
तम तो जागी न लेवो रे अल्ला-खुदा को नाव,
सूरिजमल उगियो।

हे बलदेव भाई उठिये! सूर्योदय हो रहा है। सूर्य देवता पर्वत की ओर से उदित हो रहे हैं। तुम जागो! सूर्योदय हो गया है। तुम्हारे घर में यशपाल भाई (कुँवर) का विवाह हो रहा है और तुम अभी तक सो रहे हो। हे भाई! उठिये, सूर्योदय हो गया है। तुम्हारे घर विवाह का शुभ कार्य है। तुम्हें इतनी गहरी नींद कैसे आ रही है? तुम्हें कोई चिंता ही नहीं है। तुम उठो, अपनी पगड़ी को सँवारो, बाँध लो। उठकर गंगाजी के पवित्र जल में पहले स्नान करो। फिर भगवान श्रीराम का

नाम लो। हे गजेन्द्रसिंहजी, दामादजी, विदूषकजी! आप भी उठिये, सबेरा हो गया है। जाकर किसी नदी नाले में स्नान कर आईये और स्नान के बाद आप भगवान का नाम लो। उठिये, आपके लिये भी सबेरा हो गया, आप घर के दामाद हैं।

प्रभाती

हऊँ धन बरजू रे कुकड़ा,
कि चवरा जाई नऽ मत बोल।
चवरा का महादेव देव जागसे,
कि उनकी साथ गंगा गौरा नार।
ळयर जड़ लागी रे कुकड़ा,
हाऊँ धण बरजू रे कुकड़ा॥
कि मंधाता जाई न मत बोल,
कि मंधाता का ओंकार देव जागसे।
कि उनकी साथ सिवई-दिवई नार,
लयर जड़ लागी रे कुकड़ा।
हऊँ धन बरजू रे कुकड़ा,
कि नांगलवाडी जाई नऽ मत बोल।
लयर जड़ लागी रे कुकड़ा,
कि नांगलवाड़ी का भिलट देव जागसे।
कि उनकी साथ नागेण राणी नार,
लयर जड़ लागी रे कुकड़ा।
हऊँ धन बरजू रे कुकड़ा,
कि पगारा जाई नऽ मत बोल।
लयर जड़ लागी रे कुकड़ा,
कि पगारा का गणपत देव जागसे।
कि उनकी साथ रिद्धी-सिद्धी नार
लयर जड़ लागी रे कुकड़ा।
हऊँ धन बरजू रे कुकड़ा,
कि मगर जाई नऽ मत बोल।
लयर जड़ लागी रे कुकड़ा,
कि दवाणा का महेन्द्र भाई जागसे।
कि उनकी साथ सुमिता राणी नार
लयर जड़ लागी रे कुकड़ा।

हे मुर्गे! मैं तुझे बार–बार मना कर रही हूँ। महादेवजी के घर के सामने जाकर मत बोल। तेरी आवाज सुनकर देवो के देव महादेवजी जाग जायेंगे और जब वे जागेंगे तो उनके साथ उनकी पत्नी गौरा देवी भी जाग जायेंगी। तुझे ऐसी कौन–सी धुन लगी है। तेरी तो भोर में बांग देने की आदत पड़ गई है। खुशी है कि सुबह–सुबह बार–बार बोलकर तू सभी को सृष्टि के आरम्भ से जगा रहा है। मैं तुझे बार–बार मना कर रही हूँ। हे मुर्गे! तू मान्धाता जाकर मत बोल। मान्धाता के ओंकार देव जाग जायेंगे। जब वे जागेंगे तो उनके साथ उनकी दोनों पत्नियाँ सिवई और दिवई भी जाग जायेंगी। तेरी तो सुबह बांग देने की आदत बन गई है। तुझमें ऐसी कौन–सी खुशी की लहर दौड़ती है जो तू सभी को सुबह बोल–बोल कर जगा रहा है।

हे मुर्गे! मैं तुझे मना कर रही हूँ कि तू नाँगलवाड़ी में जाकर मत बोलना, तेरे बोलने से नाँगलवाड़ी के नाग देवता (भीलट बाबा) जाग जायेंगे। उनके साथ उनकी पत्नी पद्मा नागिन भी जाग जायेंगी। मैं तुझे बार–बार मना कर रही हूँ, पगारा ग्राम जाकर मत बोल। पगारा के श्रीगणेशजी जाग जायेंगे, उनके साथ उनकी दोनों पत्नियाँ ऋद्धि–सिद्धी भी जाग जायेंगी। मैं तुझे बार–बार मना कर रही हूँ। हे मुर्गे! मकान की छत पर जाकर मत बोल। तेरे बोलने से दवाना ग्राम के महेन्द्र भाई जाग जायेंगे, उनके साथ सुमिता बहू भी जाग जायेंगी।

प्रभाती

कुकड़ा थारा रे बोलतऽ सब जागिया।
जाग्या ते चारई देव।
बोल वचन का रे कुकड़ा।
इनी गायत्री का गजाधर जागिया।
काशी का विश्वनाथ देव।
इनी अयोध्या का रामचन्द्र जागिया।
मंधाता का ऊँकार देव।
बोल वचन का रे कुकड़ा।
कुकड़ा थारा रे बोलतऽ सब जागिया।
जाग्या ते चारई भाई।
इनी मजलस का मोठा भाई जागिया।
कचेरी का छोटा भाई उमराव।
इनी स्कूल का मँजला भाई जागिया।
चेंडू खेलता नाना–ताना बाल।
बोल वचन का रे कुकड़ा।
कुकड़ा थारा रे बोलतऽ सब जागिया।
इनी मंडप की मोटी बईण जागिया।

इनी इरीत की छोटी बईण जागिया।
इनी आरती की मँजली बईण जागिया।
इनी साथी की छोटी बईण सुहाय।
बोल वचन का रे कुकड़ा।

हे मुर्गे! तुम्हारे बोलते ही सब जाग जाते हैं। तुम्हारे बोलने से देवता उठ जाते हैं। हे वचन से बंधे मुर्गे! तू बोल। बोलता ही जा। हे मुर्गे! तुम्हारे बोलते ही गयाजी के श्रीगणेशजी जागे हैं। काशी के विश्वनाथ और हिमालय के बद्रीनाथ जागे हैं। अयोध्या के श्रीरामचन्द्रजी जागे हैं। और मंधाता के ओंकारेश्वर देव जागे हैं। हे वचन से बँधे मुर्गे! तू बोल। बोलता ही जा।

हे मुर्गे! तुम्हारे बोलते ही सब जागते हैं। देवता ही नहीं सारे संसार के प्राणी जाग जाते हैं। देखो! घर के चारों भाई जाग गये हैं। इस घर के सबसे बड़े भाई जाग गये है। कचेरी के काम-काज निपटाने वाले छोटे भाई भी जागे है। स्कूल जाने वाले मंझले भाई भी जागे हैं। और गेंद खेलते नन्हे-मुन्ने बालक भी जाग गये हैं। तुम्हारा बोलना बहुत महत्त्वपूर्ण है। हे वचन से बंधे मुर्गे! तू बोल। बोलता ही जा।

हे मुर्गे! तुम्हारे बोलते ही सब जागते हैं। घर की चारों बहनें जाग गई हैं। वे अपने-अपने कामों में लग गई हैं। इस विवाह मंडप का ध्यान रखने वाली बड़ी बहन पहले जागी है। फिर इरीत यानी माता का चित्र बनाने वाली छोटी बहन जागी है। इस आरती को उठाने वाली मंझली बहन जागी है। और द्वार के चौखट पर साती पाना लगवाने वाली सबसे छोटी बहन भी जाग गई है। हे वचन बंध मुर्गे! तू बोल। बोलता ही जा। तेरा सुबह का बोलना शुभ है।

प्रभाती

बना जी थें तो जाजो जाजो जोशी की दूकान।
लगीण री पारस ळावजोजी बंदड़ा॥
बना जी थारा घोड़िला रा गलऽ घूघरमाल।
पाँय मऽ नेऊर वाजण्या जी बंदड़ा॥
बना जी थारा हाथ मऽ हरीयो रूमाल।
मुख मऽ बीड़ो पान को जी बंदड़ा॥
बना जी थारा खांदा पऽ नक्शी बन्दूक।
घोड़ा तो सिंगारिया जान का जी बंदड़ा॥
बना जी थें तो आया आया सरी साँझ।
सईया नऽ माड़ियो खेलणू जी बंदड़ा॥
बना जी थें तो आया आया भर मजरात।
नैणा तो आवऽ निंदुलीजी बंदड़ा॥
बना जी थें तो आया आया गळती रात।

भावज नऽ माड़ियो पीसणूजी राज॥
बना जी थें तो आया आया भमसारा रात।
बैरी तो बोल्यो कुकड़ो जी बंदड़ा॥

गीत-श्रीमती समोती बाई, दवाना

हे बनाजी! आप पहले जोशीजी के यहाँ जाना, वहाँ से शुभ लग्न पत्रिका लिखाकर लाना। हे बनाजी! तुम्हारे घोड़े के गले में घुघरों की माला है तथा उसके पाँव में नूपूर बजने वाले बँधे हैं। हे बनाजी! तुम्हारे हाथ में हरा रूमाल है। और तुम्हारे मुँह में पान का बीड़ा है। हे बनाजी! आपके कन्धे पर नक्काशीदार बन्दूक है। आपने बारात जाने के लिये अपने आपको थोड़ा सजा लिया है। हे प्रियतम! तुम मुझे मिलने के लिये संध्या समय आये। इस समय मेरी सहेलियों के साथ में मैं खेल-खेल रही थी।

हे प्रियतम! तुम मुझे मिलने के लिये आधी रात को आये। उस समय मेरी आँखों में नींद आ रही थी। हे प्रियतम! तुम मुझे मिलने के लिये ढलती सी रात को आये, उस समय मेरी भाभी ने चक्की पीसना शुरू कर दिया था। हे प्रियतम! तुम मुझे मिलने के लिये सूर्योदय से पहले सुबह-सुबह भोर में आये। तब तक मुर्गा बोल रहा था, सभी लोग जाग उठे थे। हे प्रियतम! मिलने की आशा मन के मन में ही धरी रह जाती है।

प्रभाती

ऊँची मयड़ी हो राजा गहगही।
जहाँ पवड्या हो नणद बाई रा बीर।
बिहाणो श्याम सुहावणो॥
राजा जाई नऽ लाड़ी ववु जगाड़ती।
तुम जागो हो मोटी बाई रा बीर।
बिहाणो श्याम सुहावणो॥
राजा जागी न पाग संवारता।
सवार्‌या हो बाघा केरा बंद॥
बिहाणो श्याम सुहावणो॥
राजा तुम बिन सूर्यो नी उगसे।
नहीं छूटऽ गौवा केरा बंद॥
बिहाणो श्याम सुहावणो॥
राजा लेवो झारी दातूण करो॥
तुम्हारा मुखड़ा, भोगी गहरो तमोल॥
बिहाणो श्याम सुहावणो॥
राणी जागी नऽ चीर संवारती॥

उठ देती कंकण पर खील॥
बिहाणो श्याम सुहावणो॥

गीत-सुश्री निर्मला निलोसे, भोपाल

ऊँची अटारी पर प्रियतम गहरी नींद में सोये हुये हैं। सुबह का सुहावना समय है। प्रिया उन्हें उठाने जा रही है। उन्होंने प्रियतम के समीप पहुँचकर कहा- हे ननद रानी के भाई! उठिये, सुहावनी सुबह हो गई है। तब प्रियतम ने उठते ही अपने साफे को ठीक किया, थोड़ा उसे संवारा। बागे को और अपने अंगरखे के कसनों को बाँधा। पत्नी व्यंग्य करते हुए कहती है- उठिये! आप नहीं उठेंगे तो शायद सूर्योदय भी नहीं होगा? गायों को खूंटे से कौन छोड़ेगा?

उठिये, काम पर लग जाईये, सुहानी सुबह हो गई है। लीजिये, हाथ मुँह धोने के लिये ठण्डे पानी से भरी झारी रखी है। चलिए उठिये, पहले दातुन करके मुँह धो लीजिए। आपके रात के खाये पान से रंजीत होंठों को भी धो लीजिये। इतना कहने के बाद पत्नी ने उठकर अपनी साड़ी को ठीक किया और अपने कंगन की कील को ठीक करके अटारी से नीचे चली गई। सुबह का सुहावना समय है।

मंडप का प्रभाती

अच्छी जोड़ी रे इना माण्डवऽ।
जहाँ बठ्या लोकेन्द्र भाई सरदार॥
बिहाणो श्याम सुहावणो।
पागा बाँधऽगा पेंचा सवारऽगा॥
बड़ो रसिया ओ उषा ववू थारो कंत॥
बिहाणो श्याम सुहावणो॥
अच्छी जोड़ी रे इना माण्डवऽ।
जहाँ बठ्या रमेश भाई सरदार॥
बिहाणो श्याम सुहावणो।
घड़ी बाँधऽगा चैन सवारऽगा॥
बड़ो रसिया ओ सुलोचना ववु थारो कंत॥
बिहाणो श्याम सुहावणो॥
अच्छी जोड़ी रे इना माण्डवऽ।
जहाँ बठ्या बलदेव भाई सरदार।
बिहाणो श्याम सुहावणो॥
कुंडल पेरऽगा मोती सवारऽगा॥
बड़ो रसिया ओ पुष्पा ववु थारो कंत॥
बिहाणो श्याम सुहावणो॥

अच्छी जोड़ी रे इना माण्डवऽ।
जहाँ बठ्या वीरेन्द्र भाई सरदार॥
बूट पेरऽगा मौजा सवारऽगा॥
बड़ो रसिया ओ सेवन्ती ववु थारो कंत॥
बिहाणो श्याम सुहावणो॥

यह गीत विवाह मंडप में प्रात: बैठकर गाया जाने वाला गीत है।

अच्छे-अच्छे लोग इस मण्डप में बैठे हैं। सुबह का स्वर्णिम समय है। इस मण्डप में लोकेन्द्र भाई सरदार बैठे हैं। जो साफा बाँधकर उनके पेंचों को सँवार रहे हैं। हे उषा बहू! तम्हारा पति तो बड़ा ही रसिक है। इस मण्डप में रमेश भाई सरदार बैठे हैं, जिनके कानों में स्वर्ण कुंडल चमक रहे हैं। जो गले में पहनी कीमती मोतियों की माला को सँवार रहे हैं। हे सुलोचना बहू! तुम्हारा स्वामी तो बड़ा ही रसिक है। बड़े-बड़े सरदार इस मण्डप में बैठे शोभा बढ़ा रहे हैं। जिसमें बलदेव भाई खास हैं। उनकी कलाई पर सोने के पट्टे वाली घड़ी बँधी है। जो गले में पहनी सोने की चेन को सँवार रहे हैं।

हे पुष्पा बहू! तुम्हारा पति तो बड़ा ही रसिया है। इस मण्डप में वीरेन्द्र भाई सरदार बैठे हैं। जो जूते पहनकर मोजों को सँवार रहे हैं। हे सेवंती बहू! तुम्हारा स्वामी तो बड़ा ही रसिक प्रेमी है।

प्रभाती

चार देव नऽ खऽ फुलड़ा की साथ, बेऊ नरियाला रे॥
लाल फुगड़ो गणपती देव कऽ सोहे।
धवळो फुलड़ो महादेव कऽ सोहे।
गुलाब को फूल नारायण देव कऽ सोहे।
पेळा फूल ईश्वर राज कऽ सोहे।
चार भाई नऽ कऽ घोड़िला की साथ, बेऊ नरियाला रे॥
लाल घोड़िलो मोठा भाई कऽ सोहे।
धवळो घोड़ो छोटा भाई कऽ सोहे।
सेवरो घोड़िलो मंजला भाई कऽ सोहे।
अवल बछेरी नाना भाई कऽ सोहे।
चार ववु नऽ कऽ चूड़ीला री साथ, बेऊ नरियाला रे॥
पन्नी को चूड़ो मोठी ववु कऽ सोहे।
रेशमी बिल्लौर छोटी ववु कऽ सोहे॥
जयपुरी चूड़ी मंजली ववु कऽ सोहे॥

लाख को चूड़ो नानी ववु कऽ सोहे।
चार ववु नऽ कऽ साडिला की साथ, बेऊ नरियाला रे॥
मयसर की साड़ी सबई बाई कऽ सोहे।
बम्बई की साड़ी मोठी ववु कऽ सोहे।
कानपुरी लुगड़ो छोटी ववु कऽ सोहे।
बनारसी साड़ी नानी बाई कऽ सोहे।
मयसर की साड़ी सबई बाई कऽ सोहे।

इसे कुकड़ा गीत भी कहते हैं। यह गीत सूर्योदय के पूर्व गाया जाने वाला गीत है। इस गीत में किस देवता को कौन-सा पुष्प अर्पित करना है। इसका सुन्दर वर्णन किया गया है।

चारों अलग-अलग देवताओं को भिन्न-भिन्न पुष्पों की चाह है। मैं चारों देवताओं को वही पुष्प अर्पित करूँगा। जो वो चाहते हैं।

श्रीगणेशजी को लाल फूल अर्पित करूँगा। सफेद आँकड़े के फूल मैं शंकर भगवान को अर्पित करूँगा। गुलाब के फूल नारायण श्री हरि को अर्पित करूँगा। पीले पुष्पों को मैं ब्रह्माजी को अर्पित करूँगा। चारों भाईयों को घोड़ों की अभिलाषा है। मैं चारों को अलग-अलग घोड़े भेंट दूँगा। लाल रंग का घोड़ा बड़े भाई को भेंट दूँगा। सफेद रंग का घोड़ा उससे छोटे भाई को भेंट दूँगा। छोटे कद का घोड़ा मैं मंझले भाई को दूँगा, और एकदम तेज चलने वाली घोड़ी मैं छोटे भाई को दूँगा। चार बहुओं को अलग-अलग चूड़ियाँ भेंट करूँगा। चमकीली से सुसज्जित चूड़ियाँ बड़ी बहू को भेंट दूँगा। रेशमी चूड़ियाँ उससे छोटी बहू को दूँगा। जयपुर की चूड़ियाँ मंझली बहू को भेंट करूँगा, और लाख की चूड़ियाँ सबसे छोटी बहू को भेंट दूँगा।

बम्बई की चूंदड़ी बड़ी बहू को, कानपुर की साड़ी छोटी बहू को और मंझली बहू को बनारसी साड़ी भेंट दूँगा, और सभी बहनों को सबकी पहली पसंद महेश्वर की साड़ियाँ दूँगा।

बना

हाँ रे बना पागा जो पागा काई करो,
हाँ रे बना पागा ईसाओ हजार रे।
रे दरवाजा री बैठक छोड़ दो॥
हाँ रे बना थारी बैठक म्हारो खेळणुं,
हाँ रे बना थारी नजर म्हारो जीव रे,
रे दरवाजा री बैठक छोड़ दो॥
हाँ रे बना, लंबो बाजार सेरी साकड़ी
हाँ रे बना, नई लगऽ बोळणऽ की दार रे।

रे दरवाजा री बैठक छोड़ दो॥
हाँ रे बना कुंडल जो कुंडल काई करो,
हाँ रे बना मोती ईसाओ हजार रे।
दरवाजा री बैठक छोड़ दो॥
हाँ रे बना थारी बैठक म्हारो खेळणुं
हाँ रे बना थारी नजर म्हारो जीव रे।
रे दरवाजा री बैठक छोड़ दो॥
हाँ रे बना लंबो बजार सेरी साकड़ी,
हाँ रे बना नई लगी बोळण की दाद रे।
रे दरवाजा री बैठक छोड़ दो॥
हाँ रे बना कंठी जो कंठी काई करो,
हाँ रे बना दोरा ईसाओ हजार रे,
रे दरवाजा री बैठक छोड़ दो॥
हाँ रे बना थारी बैठक म्हारो खेलणुं
हाँ रे बना थारी नजर म्हारो जीव,
रे दरवाजा री बैठक छोड़ दो॥
हाँ रे बना, मोजड़ी जो मोजड़ी काई करो,
हाँ रे बना, जूता ईसाओ हजार रे,
रे दरवाजा री बैठक छोड़ दो॥
हाँ रे बना थारी बैठक म्हारो खेळणुं
हाँ रे बना थारी नजर म्हारो जीव,
रे दरवाजा री बैठक छोड़ दो॥

हे दूल्हे! तुम साफे-साफे की क्या रट लगा रहे हो ? तुम एक नहीं कई एक से बढ़कर एक साफे खरीद सकते हो। पर हे बनाजी! मेरी विनती है- तुम दरवाजे पर बैठना छोड़ दो। तुम्हारे वहाँ बैठने से मुझे तकलीफ होती है। जहाँ तुम बैठते हो उसी से थोड़ी दूर पर मेरे खेलने का स्थान है। तुम्हारी नजर मेरे ऊपर ही लगी रहती है। जिससे मुझे शर्म आती है, इसलिये आप अपने दरवाजे के पास बैठना छोड़ दो। हे प्रिय! एक तो आप बैठे रहते हैं, दूसरे गली भी बहुत संकड़ी है। बाजार बहुत लम्बा है। मैं आपसे बात करना चाहती हूँ पर बात भी नहीं कर सकती हूँ। कोई न कोई गली में आता-जाता ही रहता है। इस आवाजाही में मैं आपसे कुछ नहीं कह सकती हूँ।

हे प्रिय! तुम कुंडल की रट लगा रहे हो, तुम स्वयं ऐसे हजार कुंडल खरीद सकते हो। पर, मेरा यह निवेदन है कि आप दरवाजे पर बैठना छोड़ दो। जहाँ तुम बैठते हो, उसी स्थान से थोड़ी दूर पर मेरी खेलने की जगह है। जहाँ मैं खेलती हूँ, उस स्थान पर तुम्हारी नजर लगी रहती

है। इसलिये मुझे शर्म आती है। लम्बा बाजार भी गली से लगा हुआ है। गली बहुत सँकरी है और उसमें आवाजाही होती ही रहती है। मैं तुमसे बात करना चाहती हूँ। इस आवाजाही में मैं तुमसे कुछ भी बात नहीं कर सकती हूँ।

बना

हाँ रे बंदड़ा जोशी यहाँ जाजो, ळगिण लिखाजो॥
जद म्हारा डेरा मेऽ आजो बंदड़ा॥
हाँ रे बंदड़ा स्याल टीकी सोन्ना की, उन्नाळ टीकी रूपा की॥
चौमासा मेऽ चाँद तारा लाई दो बंदड़ा॥
हाँ रे बंदड़ा स्याल चूड़ो नट्टी को, उन्नाळ चूड़ो बट्टी को॥
चौमासा मेऽ चमक चूड़ो लाई दो बंदड़ा॥
हाँ रे बंदड़ा स्याल लाडू सोठ का, उन्नाळ लाडू गोंद रा॥
चौमासा मेऽ घेवरियो चखई दो बंदड़ा॥
हाँ रे बंदड़ा स्याल ओड़ां पोमचो, उन्नाळ ओड़ां चूंदड़ी॥
चौमासा मेऽ लेहरिया छपई दो बंदड़ा॥
हाँ रे बंदड़ा स्याल सोवां बाँदणी, उन्नाळ सोवां चाँदणी॥
चौमासा मेऽ हवेलिया झुकाय दो बंदड़ा॥
हाँ रे बंदड़ा स्याल-स्याल आप री, उन्नाळ म्हारा बाप री॥
चौमास मेऽ मामरिये पोयचाय दो बंदड़ा॥
हाँ रे बंदड़ा सासु मारे लाकड़ी, नणद मारे थापड़ी॥
तम तो म्हारे हिरदा लगई लो बंदड़ा॥

गीत पर मालवी का पूरा प्रभाव है। दुल्हन कहती है- हे प्रियतम! आप पहले जोशी के घर जाईये और वहाँ से लग्न लिखवाकर ले आईये। उसके बाद ही मेरे घर में आना, ताकि हमारा आपका विवाह कार्य जल्दी संपन्न करूँगी। पर मेरी पहले कुछ शर्तें हैं। मैं ठंड के मौसम में सोने की टीकी लगाऊँगी। गर्मी के मौसम में चाँदी की टीकी लगाऊँगी और बरसात के मौसम में मुझे चाँद तारे की टीकी लाकर देना।

हे बनाजी! ठण्ड के मौसम में मैं नारियल की नट्टी का चूड़ा (एक प्रकार की नारियल और लाख से बनी चूड़ियाँ) पहनूँगी। गर्मी के मौसम में मुझे लाख का चूड़ा ला दीजिये। बरसात के मौसम में मुझे लाख की चमकदार चूड़ियाँ ला देना। हे प्रियतम! ठण्ड के मौसम में मुझे सोंठ के लड्डू चाहिये। गर्मी में गोंद के लड्डू बनवा देना। और बरसात में आप मुझे घेवर लाकर खिला देना। हे बनाजी! मैं ठण्ड के मौसम में भारी जरी की साड़ी पहनूँगी। गर्मी में हल्की-फुल्की चूंदड़ी पहनूँगी। और बरसात के मौसम में आप मुझे राजस्थानी लहरिया की साड़ी ला देना।

हे प्रिय! मैं ठण्ड के मौसम में गरम रजाई ओढ़कर सोऊँगी। गर्मी के मौसम में चाँदनी यानी छज्जे पर सोऊँगी और बरसात के मौसम में आप मुझे बड़ी हवेली बनवा देना। हे प्रियतम! ठण्ड के मौसम में मैं आपके पास रहूँगी। गर्मी के मौसम में मैं अपने पिता के घर रहूँगी और चौमासा यानी बरसात में मुझे मामा के घर पहुँचा देना। हे प्रिय! घर में मुझे सास लकड़ी से पीटे, ननद हाथ उठाये, उसके पहले मुझे अपने हृदय से लगा लेना।

बना

बना लाल-लाल मोतन की लड़ी लगी॥
बना पहन लो पहनने की आई घड़ी॥
बना हल्दी जो लेके सौभागेण खड़ी॥
बना मल लो मलने की आई घड़ी॥
बना लाल..............................
बना पागा जो लेके सौभागेण खड़ी॥
बना बाँध लो बाँधने की आई घड़ी॥
बना लाल-लाल मोतन की............
बना कुंडल जो लेके सौभागेण खड़ी॥
बना पहन लेवो पहनने की आई घड़ी॥
बना लाल-लाल मोतन की............
बना माला जो लेके सौभागेण खड़ी॥
बना पहन लेवो पहनने की आई घड़ी॥
बना लाल-लाल मोतन की............
बना घड़ी जो लेके सौभागेण खड़ी॥
बना बाँध लो बाँधने की आई घड़ी॥
बना लाल-लाल मोतन की............
बना जूते जो लेके सौभागेण खड़ी॥
बना पहन लो पहनने की आई घड़ी॥
बना लाल-लाल मोतन की............
बना सेहरा जो लेके सौभागेण खड़ी॥
बना बाँध लो बाँधने की आई घड़ी॥
बना लाल-लाल मोतन की लड़ी लगी॥

लाल रंग का किसी भी शुभ कार्य में विशेष महत्त्व होता है। विवाह में उसका और अधिक महत्त्व होता है। हे बना! लाल-लाल मोतियों की लड़ियों वाला हार लाया गया है, यह हार तुम पहन लो। यह तुम्हारे साज-शृँगार का समय है। हे बना! हल्दी का उबटन लेकर

सुहागिनें खड़ी हैं। अपने शरीर पर हल्दी का उबटन लगवा लो। यह तुम्हारे साज-श्रृँगार का समय है। इस उबटन से तुम्हारे सौन्दर्य में वृद्धि होगी। तुम्हारा रंग खिल उठेगा। हे बना! पगड़ी लेकर सुहागन खड़ी हैं, साफा बाँध लो, कुण्डल पहन लो, माला गले में डाल लो। यह तुम्हारे साज-श्रृँगार का समय है। घड़ी और जूते लेकर सुहागिनें खड़ी हैं। घड़ी बाँध लो। जूते पहन लो। यह तुम्हारे सजने-सँवरने का समय है। यह सब पहन लेने के बाद में तुम सेहरा बाँध लो अथवा मोर बाँध लो, क्योंकि तुम्हें बारात लेकर जाना है। हे बना! तुम जल्दी करो। सब तैयार हो गये हैं। तुम भी सज-धज कर शीघ्र तैयार हो जाओ।

बना

बनाजी तम बंबई जाजोजी,
वहां सी लावजो जाळ्ळई की चूँदड़ी।
बनीजी वको रंग बतई देवोजी,
कसी तो लावां जाळ्ळई की चूँदड़ी॥
बनाजी ओका हरा नीळा पल्लवजी,
सुवा पंखी जाळ्ळई की चूंदड़ी॥
बनीजी ओकऽ पैरऽ बतई देवोजी,
कसी तो लागऽ जाळ्ळई की चूंदड़ी॥
बनाजी थारी माताजी री नजर बुरी,
कसी तो पेरां जाळ्ळई की चूंदड़ी॥
बनीजी हम माताजी कऽ अलग करां,
आवं तो पेरो जाळ्ळई की चूँदड़ी।
बनाजी थारी बेन्या बाई री नजर बुरी,
कसी तो पेरां जाळ्ळई की चूँदड़ी।
बनीजी हम बईण को याव करां,
आवं तो पेरो जाळ्ळई की चूँदड़ी॥
आवं तो पेरो जाळ्ळई की चूँदड़ी,
आवं तो पेरा जाळ्ळई की चूँदड़ी॥

हे प्रिय! तुम बम्बई शहर जाओ और वहाँ से मेरे लिये जाली वाली चूनरी लेकर आना। तब प्रियतम पूछते हैं- हे प्रिये! उसका रंग कैसा होगा और किस प्रकार की चूनरी लायें ? तब प्रिया कहती है- उस चूनरी का हरे-हरे रंग का पल्लव हो और उस चूनरी का रंग तोते के रंग जैसा सुवा पंखी हो। प्रियतम बम्बई से चूनरी लाकर प्रिया को देते हैं और कहते हैं- अब पहनकर दिखा दो। तुम पर यह चूनरी कैसे लगती है ? तब प्रिया कहती है- मैं इसे अभी नहीं पहनूँगी। क्योंकि तुम्हारी माताजी की नजर लग जायेगी। तब प्रियतम कहता है- अपनी माँ को अलग घर

में बसा देता हूँ। अब तो तुम जाली की चूनरी पहन लो। तब प्रिया कहती है– मैं अभी–भी जाली की चूनरी नहीं पहनूँगी, क्योंकि तुम्हारी बहन की नजर भी मेरी इस चूनरी पर लगी हुई है। न जाने कब माँग ले, इस चूनरी को मैं किसी शुभ और माँगलिक कार्य में पहनूँगी। तब प्रियतम कहते हैं– मैं अपनी बहन की शादी कर रहा हूँ। अब तो माँगलिक कार्य हो रहा है, बहन ससुराल जाने वाली है, अब तो इस चूनरी को पहन लो। तभी मानिनी प्रिया उस जाली की चूनरी को पहनकर अपने प्रियतम को खुश कर लेती है।

बना

केसर घोलो नऽ रंग उकाळो,
यही रंग बालक बंदड़ा पर ढोळो॥
हाँ रे माही केसर घोलजो॥
शीश बनाजी को पागा बिराजे॥
पेंचा में म्हारो लाल लोभाण्यो
हाँ रे माही केसर घोलो॥
कान बनाजी को मुरक्या बिराजे॥
पेंचा में म्हारो लाल लोभाण्यो॥
हाँ रे माही केसर घोलो॥
गले बनाजी को दोरा बिराजे॥
कंठी मे म्हारो लाल लोभाण्यो॥
हाँ रे माही केसर घोलो॥
हाथ बनाजी को घड़िया बिराजे॥
मूंदी में म्हारो लाल लोभाण्यो॥
हाँ रे माही केसर घोलो॥
संग बनाजी को बंदड़ी बिराजे॥
जोड़ी में म्हारो लाल लोभाण्यो॥
हाँ रे माही केसर घोलो॥

यह विवाह में गाया जाने वाला प्राचीनतम बना गीत है। इस गीत में बहुमूल्य केसर का उल्लेख किया गया है। केसर का रंग उतारकर उसी रंग के पानी से दूल्हे को स्नान कराया जा रहा है। जिससे दूल्हे के रंग रूप में निखार आ जाये और दूल्हा महकता रहे।

केसर को घोलिये, पहले उसे गर्म पानी में उबालो और उससे प्राप्त रंग के सुगन्धित जल से छोटे प्रिय दूल्हे राजा को स्नान कराइए। जिससे उसका शरीर महकता रहे। दूल्हा तरोताजा रहे। उसका रंग निखर जाय। हे सखी! केसर घोलकर तैयार रखो। दूल्हे राजा के सिर पर साफा बंधा है, उस साफे के प्रत्येक पेंच में लगे हीरे जवाहरात ने मेरा मन लुभा लिया है। साफा इतना सुन्दर

करीने से पहना गया है कि दूल्हे की सुन्दरता द्विगुणित हो गई है। हर कोई मोहित हो रहा है। बनाजी के कानों में मुरकियाँ (एक प्रकार का आभूषण) विराजमान है और उन मुरकियों के पेंच बनावट और उसकी लटकती जंजीरों पर मेरा मन मोहित है। बनाजी के गले में सोने की जंजीर (दोरा) अत्यधिक शोभा बढ़ा रही है। बनाजी के हाथ में हीरे जड़ी घड़ी बँधी हुई है। उस घड़ी पर मैं न्यौछावर हूँ।

विवाह के बाद दुल्हन के आ जाने से घर खुशियों से भर गया है। दूल्हा-दुल्हन की जोड़ी इतनी सुन्दर लग रही है कि मैं उन पर सभी कुछ न्यौछावर कर सकती हूँ।

बना

लाल पलंग उसका हरा नीला पईया॥
जेपर बठियो म्हारो बालक बनो॥
पिताजी कहे भैया नींद घणी आवे॥
माताजी कहे गढ़ जीतो बालक बंदड़ा॥
लाल पलंग उसका हरा नीला पईया॥
जेपर बठियो म्हारो बालक बनो॥
काकाजी कहे भइया नींद घणी आवे॥
काकीजी कहे गढ़ जीतो बालक बंदड़ा॥
लाल पलंग उसका हरा नीला पईया॥
जेपर बठियो म्हारो बालक बनो॥
मामाजी कहे भईया नींद घणी आवे॥
मामीजी कहे गढ़ जीतो बालक बंदड़ा॥
लाल पलंग उसका हरा नीला पईया॥
जेपर बठियो म्हारो बालक बनो॥
वीराजी कहे नींद घणी आवे॥
भाभीजी कहे गढ़ जीतो बालक बंदड़ा।

लाल पलंग के पहिए हरे रंग से रंगे हैं। उसी पर सुकुमार दूल्हे राजा बैठे हैं। विवाह में कार्य करते-करते पिताजी थक गए हैं। पिताजी कहते हैं- हे भैया! मुझे नींद बहुत आ रही है। तब दूल्हे राजा की माताजी कहती है- भैया! तुम्हारे पिताजी थककर सो गये हैं, अब तुम्हें ही इस शुभ कार्य को जल्दी से निपटाना है। अब तुम्हें ही यह गढ़ जीतना है।

लाल पलंग के पहिए हरे रंग से रंगे हैं। उस पर बालक जैसा सुकुमार दूल्हा बैठा है। विवाह कार्य को करते-करते काकाजी थक गए हैं। और उन्हें नींद आ रही है। तब काकी अपने भतीजे से कहती हैं- भैया! तुम्हारे काकाजी थककर सो गये हैं। अब तुम्हें ही कमर कसना है।

उठो, शीघ्र पाणिग्रहण संस्कार सम्पन्न कराओ और दुल्हन को ले आओ। तुम्हें ही यह गढ़ जीतना जरूरी है। इसी क्रम में विवाह का कार्य करते-करते भाई और मामाजी थक गए हैं, और सो गये हैं। तब भाभी और मामी कहती हैं- हे भैया! दूल्हे राजा, उठो, अब तुम्हें ही विवाह का सारा कार्य सम्पन्न कराना है। दूल्हा स्वयं विवाह का सारा कार्य करने को तैयार होता है। दूल्हन लाना ही गढ़ जीतना है। विवाह का कार्य निर्विघ्न सम्पन्न होना, अपने आप में गढ़ जीतने के बराबर है।

बना

आज तो बनो मेरो बाग में बसे।
अली रे शहर में बसे॥
दशरथ के सुत रामचन्द्र जानकी वरे॥
डिम-डिम-डिम सखी डिमरू बजे॥
सखी रे डिमरू बजे॥
बंसी की आवाज सुनके कोकिला लजे॥
दशरथ के सुत रामचन्द्र जानकी वरे॥
झांगढ-झांगढ नौबत बाजे॥
सखी रे बाग में बजे॥
बंसी की आवाज सुनके चौकड़िया झड़े॥
दशरथ के सुत रामचन्द्र जानकी वरे॥
गंगा आया जमुना आया॥
सरजूजी आया॥
शारदा भंडार लई के कौशल्या आया॥
आज तो बनो मेरो बाग में बसे।
जान तो बरात सब देवता आया।
सखी रे देवता आया॥
रिद्धी-सिद्धी को लेके नारद आया॥
आज तो बनो मेरो बाग में बसे।
कहे कुमारी सुनो पिताजी बाग में चलो।
सखी रे बाग में चलो॥
साँवली सूरत रामचन्द्र तोरणे आया॥
आज तो बनो मेरो बाग में बसे।
कंकू कपुर सिन्दुर थाल में धरो॥
सखी रे थाल में धरो॥
कुँवारी कन्या के सिर बेड़िलो धरो॥
आज तो बनो मेरो बाग में बसे।

अली रे शहर में बसे॥
दशरथ के सुत रामचन्द्र जानकी वरे॥

श्रीरामचन्द्र जनकपुर स्थित पुष्पवाटिका में प्रथम बार सीता के दर्शन करते हैं। सीता भी श्रीराम को पहली बार देखती हैं और उनकी हो जाती हैं। राम और लक्ष्मण दोनों भाई गुरू की आज्ञा से प्रात:काल फूल चुनने के लिये पुष्पवाटिका में जाते हैं। यह बात सीताजी जानती थीं। इसलिए वे सखियों से कहती हैं– हे सखी! आज दशरथ नंदन रामचन्द्र और लक्ष्मण पुष्पवाटिका में फूल चुनने आने वाले हैं। वे तो जनकपुर में जैसे बस गये हैं। हम भी आज पुष्पवाटिका में जल्दी चलेंगे। आज सीता रामचन्द्र को वरण करेंगी। श्रीराम अयोध्या के नरेश दशरथजी के पुत्र हैं।

हे सखी! जब सीता ने श्रीरामचन्द्रजी को देखा तो उनके अलौकिक सौन्दर्य को देखती ही रह गईं। उनके मन में डमरू बजने लगे। जब श्रीराम के मुख से बोल निकले, तब ऐसा लग रहा था जैसे बाँसुरी की मीठी आवाज फूट रही हो। श्रीराम की मधुर आवाज सुनकर कोयल भी अपनी आवाज पर लज्जित हो गई। आज सीता ने ऐसे दशरथ नंदन रामचन्द्र को वरण किया है।

हे सखी! रामचन्द्र जी का सौन्दर्य देखकर मन में प्रेम के नगाड़े बजने लगे। राम की बोली सुनकर हिरन चौकड़ियाँ भरना भूल गये हैं। बगीचे में एक अजीब सी हलचल मच गई। प्रभु श्रीराम ने धनुष भंग कर दिया है। सीता ने राम के गले में वरमाला डाल दी है। विवाह की तैयारियाँ हो गई हैं। तब गंगा, जमुना और सरस्वती तीनों नदियाँ स्त्री रूप धारण करके विवाह की शोभा देखने आई हैं। उधर माता कौशिल्या अन्य रानियों के साथ बारात की तैयारी करने लगीं। उन्होंने शारदा के अखण्ड भण्डार से रत्नादि निकाले और दशरथ के साथ सभी भाईयों की बारात जाने को तैयार हुईं। जब बारात जनकपुर पहुँची, जिसमें सभी देवी–देवता अपने इष्टों के साथ पहुँचे हैं। ऋद्धि–सिद्धी के साथ श्रीगणेश और नारदजी विवाह में शामिल हो गये हैं।

जानकीजी ने पिताजी से कहा कि– हे पिताजी! बाग में बारात उतर गई है। आप स्वागत सत्कार के लिये जाईये। साँवले सलोने रामचन्द्र के साथ भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न को तोरण मारने मंडप में ले आयें। तब जनकजी ने थालियों में कुमकुम, अक्षत, सिन्दूर और कपूर रखा और कुमारी कन्याओं के सिर पर कलश रखे। वे बारात की अगवानी के लिए महल से निकल पड़े।

बना

बनाजी का सासरिया से हो बनाजी पागा आई राज,
पागा पेरो क्यों नी राज, बनाजी नऽ काई हट मांड्यो राज।
म्हारी साकली रो तोड़ो, म्हारी बिंदी रो आकड़ो,
म्हारा जीव तकलरा मोती, तुम पर वारूँ म्हारो जीव,
बनाजी नऽ काई हट मांड्यो राज।

बनाजी का सासरिया से हो राज,
मुरकियां आईं राज, मुरकी पेरो क्यों नी राज,
बनाजी नऽ काई हट मांड्यो राज।
म्हारी साकलई रो तोड़ो, म्हारी बिंदी रो आकड़ो,
म्हारा जीव तकलरा मोती, तुम पर वारूँ म्हारो जीव,
बनाजी नऽ काई हट मांड्यो राज।
बनाजी का सासरिया से हो राज,
पोयची आई राज, पोयची पेरो क्यों नी राज,
बनाजी नऽ काई हट मांड्यो राज।
म्हारी साकलई रो तोड़ो, म्हारी बिंदी रो आकड़ो,
म्हारा जीव तकलरा मोती, तुम पर वारूँ म्हारो जीव,
बनाजी काई हट मांड्यो राज।
बनाजी का सासरिया से हो राज,
बनाजी मूंदी आई राज, मूंदी पेरो क्यों नी राज।
बनाजी काई हट मांड्यो राज।
म्हारी साकलई रो तोड़ो, म्हारी बिंदी रो आकड़ो,
म्हारा जीव तकलरा मोती, तुम पर वारूँ म्हारो जीव,
बनाजी नऽ काई हट मांड्यो राज।
बनाजी का सासरिया हो राज,
बनाजी मोजड़ी आई राज, मोजड़ी पेरो क्यों नी राज,
बनाजी काई हट मांड्यो राज।
म्हारी साकलई रो तोड़ो, म्हारी बिंदी रो आकड़ो,
म्हारा जीव तकलरा मोती, तुम पर वारूँ म्हारो जीव,
बनाजी नऽ कोई हट मांड्यो राज।

हे दूल्हे राजा! तुम्हारे ससुराल से सिर पर बाँधने के लिये साफा भेजा गया है। तुमने साफा नहीं बाँधने की हठ क्यों ठान ली है? तुम साफा बाँध क्यों नहीं लेते? ऐसी क्या बात हो गई है? हे प्रिय! तुम पर मैं गले की साँकली, माथे की बिन्दी और मेरे प्राणों से भी प्यारा मोतियों का हीरों का हार तक निछावर कर दूँगी। तुम ससुराल से आये साफे को सम्मान से सिर पर धारण कर लो। यह मेरी प्रतिष्ठा का प्रश्न है। हठ छोड़ दो और साफा पहन लो। ससुराल से कान में पहनने वाली सोनी की मुरकियां, हाथ की कलाई में पहनने वाली पोंयची, अँगुली में पहनने वाली हीरे की अँगूठी, पैरों में पहनने के लिये कसीदेवाली मोजड़ी आई है। हे दूल्हे राजा! तुम इन्हें पहनते क्यों नहीं? हठ छोड़ दो। ससुराल का सम्मान रखो। सभी वस्तुएँ पहन लोगे तो मैं तुम पर अपना जीवन तक न्यौछावर कर दूँगी।

बना

बनो तो म्हारो हरो नगीनो हे रे।
असल सोने में जड़ दो हे रे॥
बनो तो म्हारो पिता जी प्यारो हे रे।
असल माता ने सजायो हे रे॥
बनो तो म्हारो हरो नगीनो हे रे।
असल सोने में जड़ दो हे रे॥
बनो तो म्हारो काका जी प्यारो हे रे।
असल काकी ने सजायो हे रे॥
बनो तो म्हारो हरो नगीनो हे रे।
असल सोने में जड़ दो हे रे॥
बनो तो म्हारो मामा जी प्यारो हे रे।
असल मामी ने सजायो हे रे॥
बनो तो म्हारो हरो नगीनो हे रे।
असल सोने में जड़ दो हे रे॥
बनो तो म्हारो भइया जी रो प्यारो हे रे।
असल भाभी ने सजायो हे रे॥

गीत–श्रीमती उषा कुशवाह, दवाना

मेरा बना नगीना है, जो सोने की अँगूठी में जड़ित हरे पन्ने की तरह है। मेरा प्यारा दूल्हा राजा अपने पिताजी का लाड़ला है। विवाह के लिये माताजी ने दूल्हे का अनुपम श्रृँगार किया है। मेरा बना सोने की अँगूठी में जड़ित हरे नगीने की तरह है। दूल्हा काकाजी का लाड़ला दुलारा है और काकीजी ने उसका सम्पूर्ण श्रृँगार किया है।

मेरा प्यारा बना सोने की अँगूठी में जड़े हरे नगीने की तरह है। मेरा बना मामाजी का लाड़ला और दुलारा है। विवाह के शुभ कार्य के लिये उनकी मामीजी ने उनका अनुपम श्रृँगार किया है और उन्हें अच्छी तरह से सजाया है। मेरा बना सोने की अँगूठी में जड़ित हरे नगीने के समान है। दूल्हा राजा अपने भाई के लाड़ले दुलारे हैं। विवाह के बाद बारात जाने के लिये भाभी ने उनका अनुपम श्रृँगार किया है। उन्हें अच्छी तरह से सजाया है। मेरा बना सोने की अँगूठी में जड़ित हरे नगीने के समान है।

बना

अटारी नऽ पऽ कबूतर बोलऽ आधी रात।
कहो तो बनी बिंदी घड़ई देऊँ अभी हाल।
नई–नई रे बना सासु को बुरो छे सुभाव।

कहो तो बनी माताजी कऽ तीरथ भेजां,
नई-नई रे बना झूला की शोभा चली जाय।
कहो तो बनी झूमकी घड़ई देऊँ अभी हाल।
नई-नई रे बना भाभीजी को बुरो छे सुभाव,
कहो तो बनी भाभी कऽ न्यारी करी देवां,
नई-नई रे बना रसवई की शोभा चली जाय।
कहो तो बनी हार घड़ई देऊँ अभी हाल,
नई-नई रे बना जीजी को बुरा छे सुभाव।
कहो तो बनी जीजी कऽ सासरिये भेजां,
नई-नई रे बना आरती की शोभा चली जाय रे।

गीत-श्रीमती हेमलता उपाध्याय, खंडवा

छज्जे पर कबूतर बोल रहे हैं। हे प्रियतम! यदि तुम कहो तो अभी तत्काल मैं तुम्हें बिंदिया घड़वा दूँ। प्रिया कहती है? नहीं, मुझे बिंदिया नहीं चाहिये, क्योंकि सासूजी का स्वभाव बहुत बुरा है। उन्हें मालूम पड़ गया तो मेरी जान ले लेंगी। हे प्रिया! तुम कहो तो मैं उन्हें गंगाजी तीर्थ करने भेज दूँ। प्रिया कहती है- नहीं, स्वामी ऐसा मत करना। वह झूले पर बैठी हुई अच्छी लगती हैं। वे चली जायेंगी तो झूले की शोभा ही चली जायेगी।

हे प्रिये! कहो तो तुम्हें झुमकियाँ बना दूँ। प्रियतमा कहती है- ना, मुझे कुछ नहीं चाहिये, यह बात आपकी भाभीजी ने सुन ली तो वे मेरी जान ले लेंगी। भाभीजी का स्वभाव बहुत बुरा है। हे प्रिये! तुम कहो तो मैं भाभी को अलग कर दूँ। नहीं, प्रियतम! ऐसा मत करना, वरना रसोई की सारी शोभा खत्म हो जायेगी। वे रसोई में अच्छी लगती हैं। उनके बिना रसोई घर सूना हो जायेगा।

हे प्रिये! यदि तुम कहो तो तुम्हें हार जड़वा दूँ। नहीं, मुझे कुछ नहीं चाहिये। हे स्वामी! यदि ननदजी ने यह बात सुन ली तो उन्हें बुरा लगेगा। हे प्रिये! तुम कहो तो मैं उसे ससुराल भेज दूँ। नहीं, ऐसा जुल्म मत करना, वरना आरती की शोभा चली जायेगी। हे प्रियतम! तुम ऐसा कुछ भी मत करो, जिससे घर की शांति और शोभा चली जाये, मैं तो बिना गहनों के भी गुजारा कर लूँगी।

बना

कोई नऽ देख्या बिरज का वासी रे बना।
कोई नऽ देख्या बिरज का वासी रे बना।
पागा पेरो रे बना, चीरा पेरो रे बना।
तमरी पेंचा पर वारी जाऊँ रे बना।
कोई नऽ देख्या बिरज का वासी रे बना।

कुंडल पेरो रे बना, मोती पेरो रे बना।
तमरी लटकन पर वारी जाऊँ रे बना।
कोई नऽ देख्या बिरज का वासी रे बना।
कंठी पेरो रे बना, दोरा पेरो रे बना।
तमरी माला पर वारी जाऊँ रे बना।
कोई नऽ देख्या बिरज का वासी रे बना।
घड़ी पेरो रे बना, मूंदी पेरो रे बना।
तमरी चैना पर वारी जाऊँ रे बना।
कोई नऽ देख्या बिरज का वासी रे बना।
जूता पेरो रे बना, मोजा पेरो रे बना।
तमरी जोड़ी पर वारी जाऊँ रे बना।
कोई नऽ देख्या बिरज का वासी रे बना।
कोई नऽ देख्या बिरज का वासी रे बना।

गीत–श्रीमती कान्ता जोशी, खंडवा

किसी ने मेरे प्रिय ब्रजवासी दूल्हे राजा को देखा है। हे बना! तुम साफा बाँध लो, चीरा धारण कर लो। तुम्हारी पगड़ी के प्रत्येक पेंच पर मैं वारी और बलिहारी जाती हूँ। किसी ने मेरे प्रिय ब्रजवासी दूल्हे राजा को देखा है। हे बना! तुम कंठी पहन लो, चेन पहन लो, तुम्हारी माला पर मैं वारी और बलिहारी जाती हूँ।

हे बना! हाथ में घड़ी बाँध लो, अंगूठी पहन लो, तुम्हारी घड़ी की चेन पर मैं बलिहारी जाती हूँ। किसी ने मेरे प्रिय ब्रजवासी दूल्हे राजा को देखा है। हे बना! तुम जूते पहन लो, मौजे पहन लो, विवाह के बाद जब तुम दुल्हन लेकर आओगे तब मैं तुम्हारी जोड़ी पर निछावर हो जाऊँगी।

बना

दादाजी रो लाड़ला रे बना॥
माताजी रो पियारो रे नवल बना॥
पान सरीखो पातलो रे बना॥
फूल ऐतरो थारो तोल रे नवल बना॥
चाँद सरीखो उजलो रे बना॥
सुरीमल सरीखो थारो तेज रे नवल बना॥
लौंग सरीखो चरपलो रे बना॥
डोडा सरीखो मयकाय रे नवल बना॥
काकाजी रो लाड़ीला रे बना॥

काकीजी रो पियारो रे नवल बना॥
पान सरीखो पातलो रे बना॥
फूल ऐतरो थारो तोल रे नवल बना॥
चाँद सरीखो उजलो रे बना॥
सुरीमल सरीखो थारो तेज रे नवल बना॥
लौंग सरीखो चरपलो रे बना॥
डोडा सरीखो मयकाय रे नवल बना॥
मामाजी रो लाड़ीला रे बना॥
मामीजी रो पियारो रे नवल बना॥
पान सरीखो पातलो रे बना॥
फूल ऐतरो थारो तोल रे नवल बना॥
चाँद सरीखो उजलो रे बना॥
सुरीमल ऐतरो थारो तेज रे नवल बना॥
लौंग सरीखो चरपलो रे बना॥
डोडा सरीखो मयकाय रे नवल बना॥
वीराजी रो लाड़ीला रे बना॥
भाभीजी रो पियारो रे नवल बना॥
पान सरीखो पातलो रे बना॥
फूल ऐतरो थारो तोल रे नवल बना॥
चाँद सरीखो उजलो रे बना॥
सुरीमल ऐतरो थारो तेज रे नवल बना॥

दूल्हे राजा पिताजी, मामाजी, भैयाजी के भी लाड़ले हैं। वे काकीजी, मामीजी तथा भाभी को जान से भी अधिक प्रिय हैं। दूल्हे राजा पान से पतले और चिकने हैं। उनका वजन इतना है कि फूलों से तोले जा सकते हैं। वे फूल से भी हल्के हैं। दूल्हे राजा का रंग रूप चन्द्रमा की तरह उज्जवल है और उनका स्वभाव सूर्य की तरह तेज है। दूल्हे राजा लौंग की तरह चरपल यानी तीखे हैं। उनके गुण ऐसे महकते हैं मानो खुशबूदार इलायची हो। दूल्हे राजा सर्वांग सुन्दर हैं।

बना

बनाजी थारी चाल चतर गोरे गाल।
मुठ्ठी में दो लाल राखोगे।
पागा तो तम पेरो बना जी पेंचा में दो लाल राखोगे॥
बनाजी थारी चाल चतर गोरे गाल।
मुठ्ठी में दो लाल राखोगे।

कुण्डल तो तम पेरो बना जी पेंचा में दो लाल राखोगे॥
बनाजी थारी चाल चतर गोरे गाल।
मुठ्ठी में दो लाल राखोगे॥
कंठी तो तम पेरो बनाजी दोरा में दो लाल राखोगे।
बनाजी थारी चाल चतर गोरे गाल।
मुठ्ठी में दो लाल राखोगे।
घड़ियाँ तो तम पेरो बना जी चेना में दो लाल राखोगे॥
बनाजी थारी चाल चतर गोरे गाल।
मुठ्ठी में दो लाल राखोगे॥
बनाजी तम बंदड़ी ब्याहोगे, जोड़ी में दो लाल राखोगे।
बनाजी थारी चाल चतर गोरे गाल।
मुठ्ठी में दो लाल राखोगे॥

हे दूल्हे राजा! तुम चंचल हो, तुम्हारी चाल चतुराई पूर्ण है। तुम्हारे गालों का रंग गोरा है। हे बनाजी! तुम साफा बाँधोगे तो उसमें दो लाल रत्न छुपा कर रखोगे। हे बनाजी! तुम कुंडल पहनोगे तो वह अनमोल होंगे तथा उनके साथ जो चैन लगी हुई है, वह दो लाल रत्नों के बराबर होगी। हे बनाजी! तुम कंठी पहनोगे तो कंठी के साथ में चैन भी पहनना। तुम्हारी चैन की कीमत दो लाल रत्न के बराबर होगी। हे बनाजी! तुम घड़ी जो पहनोगे तो उसकी चैन अमूल्य होगी। हे बनाजी! जिस लड़की से तुम्हारा विवाह होगा। तुम्हारी जोड़ी अद्वितीय होगी। उस पर कई रत्न निछावर होंगे।

बना

म्हारो बनो गयो सोबत मऽ,
पंखा फूलन को लायो॥
शीशी इतर की लायो, रूमाल जाली को लायो।
पागा पैर रे बना, पेंच सवार रे बना॥
म्हारो बनो गयो सोबत मऽ।
पंखा फूलन का लायो॥
शीशी इतर की लायो, रूमाल जाली का लायो।
दुपट्टा गुलाब का लायो।
कुंडल पेर रे बना, पेंच सवार रे बना॥
म्हारो बनो गयो सोबत मऽ,
पंखा फूलन का लायो॥
शीशी इतर की लायो, रूमाल जाली का लायो।

दुपट्टा गुलाब का लायो।
कंठी पेर रे बना, दोरा सवार रे बना।
म्हारो बनो गयो सोबत मऽ।
पंखा फूलन का लायो॥
शीशी इतर की लायो, रूमाल जाली का लायो।
दुपट्टा गुलाब का लायो।
घड़ी पेर रे बना, चेन सवार रे बना।
म्हारो बनो गयो सोबत मऽ।
पंखा फूलन का लायो॥
शीशी इतर की लायो, रूमाल जाली का लायो।
दुपट्टा गुलाब का लायो।

वह फूलों वाला पंखा लाया, इत्र की शीशी लाया, जालीदार रूमाल भी साथ में लाया। हे बना! तुम साफा बाँधो और उसकी पेंचों को सँवारो। बना अपने दोस्तों के साथ घूमने के लिये गया और घूम फिर कर वापस आया, तब-वह फूलों वाला पंखा लाया, इत्र की शीशी लाया, जालीदार रूमाल भी साथ में लाया।

हे बना! तुम कान में कुण्डल पहनो और उसमें लगी चेनों को सँवारो। बना अपने दोस्तों के साथ घूमने-फिरने के लिये गया और घूम फिर कर वापस आया, तब- वह फूलों वाला पंखा लाया, इत्र की शीशी लाया, जालीदार रूमाल भी साथ में लाया।

हे बनाजी! तुम कण्ठी पहन लो और उसके साथ चैन को व्यवस्थित कर लो। घड़ी बाँध लो और उसमें लगी चेन को ठीक कर लो। बना अपने दोस्तों के साथ घूमने-फिरने के लिये गया और घूम फिर कर वापस आया, तब-वह फूलों वाला पंखा लाया। इत्र की शीशी लाया। जालीदार रूमाल भी साथ में लाया।

बना

बना दशरथ दुलारा है, बनी मिथिलेश कुमारी है॥
सजे दोनों बराबर हैं, शान बंदड़े की जादा है॥
बनी के शीश का टीका, बने की शीश की पागा॥
सजे दोनों बराबर हैं, शान बंदड़े की जादा है॥
बनी के कान के झुमकी, बने के कान के कुंडल॥
सजे दोनों बराबर हैं, शान बंदड़े की जादा है॥
बनी की गले की कालर, बने के गले का दौरा॥
सजे दोनों बराबर हैं, शान बंदड़े की जादा है॥

बनी के हाथ की चूड़ियाँ, बने के हाथ की घड़ियाँ॥
सजे दोनों बराबर हैं, शान बंदड़े की जादा है॥
बनी के पाँव की पायल, बने के पाँव के सेंडिल॥
सजे दोनों बराबर हैं, शान बंदड़े की जादा है॥
बना दशरथ दुलारा है, बनी मिथलेश कुमार है।

दूल्हा राम हैं और दुल्हन सीता के समान हैं। दुल्हन के माथे की बिंदिया और दूल्हे के सिर पर बँधा साफा दोनों बराबर सजे हैं, पर दूल्हे राजा की शोभा कुछ अधिक ही है। दुल्हन के कान की झुमकी से दूल्हे के कुण्डल (मुरकी साकली) अधिक शोभा बढ़ा रहे हैं। दुल्हन गले में कालर पहनी है। दूल्हे राजा के गले की चैन उससे अधिक ही चमक रही है। दुल्हन के हाथों की चूड़ियों से दूल्हे राजा के हाथ में बँधी हुई घड़ी अधिक अच्छी और सुन्दर है। इससे दूल्हे राजा की शान अधिक दिखाई दे रही है। दूल्हन के पाँव की पायल और दूल्हे राजा के पाँव के जूते अधिक ही शोभा बढ़ा रहे हैं। इससे साफ जाहिर होता है कि दूल्हे राजा के आगे दुल्हन की शोभा फीकी है। दोनों बराबर सजे हैं, पर शान शौकत में दूल्हे राजा अधिक ही हैं।

बना

सड़क पर आपू की क्यारी,
सड़क पर केशर की क्यारी।
नवल बनाजी को रथ सिंणगार्‌या,
हवा करो प्यारी, हवा करो प्यारी।
छे छल्ला, छे मूंदड़ाजी, कहीं छल्ला भरी परात,
भंवरजी छल्ला भरी परात॥
एक छल्ला रे कारणे मनऽ छोड्‌या माय नऽ बाप,
सड़क पर आपू की क्यारी।
नद्दी मऽ को डोंगलो नमी-नमी झोला खाय,
भंवरजी नमी-नमी झोला खाय।
दुई गोरी को सायबो कईं बीच मऽ गोता खाय,
सड़क पर आपू की क्यारी।
नद्दी मऽ की डिकरी कई घस-मस रीड़ी होय,
भंवरजी घस-मस रीड़ी होय।
वाण्या बामण की डिकरी वा पीयर बूढ़ी होय,
सड़क पर आपू की क्यारी।
मंयदी भरियो वाटको मैं लिख-लिख मांडू हाथ,
भंवरजी लिख-लिख मांडू हाथ।

लिखणा पड़वा मऽ काई धर्‌यो निरखो गोरी का हाथ,
सड़क पर आपू की क्यारी।
शीशी भरी गुलाब की मैं भेजूं किसके हाथ,
भंवरजी भेजूं किसके हाथ।
भेजण वाला घर नहीं म्हारो देवरियो नादान,
सड़क पर आपू की क्यारी।
दाल-भात का काई रादणुं घी बिन खाईयो नी जाय,
भंवरजी घी बिन खाईयो नी जाय।
सासु नणद का बोलणा, म्हारा पिया बिन रहियो नी जाय,
सड़क पर आपू की क्यारी।
ताम्बा पीतल को बेडिलो अलबेली सी पणिहार,
भंवरजी अलबेली सी पणिहार।
चतुर निरखे बेडिलो जी मूरख निरखे नार,
सड़क पर आपू की क्यारी।
ताम्बा-पीतल को बेडिलो अलबेली सी पणिहार,
भंवरजी अलबेली सी पणिहार।
चातुर चिमटी ले गयो जी मूरख रह्‌यो पछिताय,
सड़क पर आपू की क्यारी।
चंदा थारी चांदणी कई सूती पलंग बिछाय,
भंवरजी सूती पलंग बिछाय।
जब जागूं तब एकली म्हारा पिया गया परदेश।
सड़क पर आपू की क्यारी।

सड़क के दोनों ओर सुवासित फूलों की क्यारियाँ बनी हुई हैं और उनमें सुगन्धित केशर की क्यारियाँ हैं। प्रिय दूल्हे राजा सज-धजकर सैर करने जा रहे हैं। उन्हें मस्त ठंडी हवा लग रही है। हे प्रिय! मैंने बचपन में पिता के घर सभी प्रकार के गहने पहने हैं, लेकिन जब से तुम्हारे हाथ से जो अँगूठी पहनी है, तब से कुछ अलग ही अनुभव हो रहा है, जैसे मैं एक अँगूठी के कारण पराई हो गई हूँ। ऐसा लगता है जैसे माता-पिता छूट गये हैं, एक दूसरी दुनिया में ही चली गई हूँ।

मैंने सुना है मेरे प्रियतम का मिजाज कुछ रंगीन है, वे लड़कियों में अधिक रुचि रखते हैं। कहीं ऐसा तो नहीं, मेरे से विवाह होने के पश्चात् वे दूसरा विवाह रचा लें। दो पत्नियों वाले पति की क्या दशा होती है, उसका अन्दाज मेरे प्रियतम को नहीं है। दो पत्नियों वाले पति की स्थिति नदी के उस डोंगले पौधे के समान है, जो पानी के बहाव में इधर-उधर झुकता रहता है। उसे एक पत्नी इधर खींचती है तो दूसरी उधर खींचती है। उसकी गति घड़ी के पेण्डुलम के समान हो जाती है। नदी की धार में जो पत्थर होता है, वह नदी के बहाव के साथ घिस-घिसकर

चिकना और मजबूत होता जाता है। उसी प्रकार बनिये और ब्राह्मण की लड़कियों की रूढ़ियों के कारण अच्छा वर ढूँढ़ते-ढूँढ़ते आधी उम्र मैके में ही गुजर जाती है। यानी आधी बूढ़ी हो जाती हैं।

हे प्रियतम! मेहंदी से भरा हुआ कटोरा है। मैं हाथ में फूल-पत्तियों वाली मेहंदी मांड़ रही हूँ। पर, मेरे साजन तो पढ़ाई में व्यस्त हैं। हे स्वामी! मेरे हाथों की सुन्दर मेहंदी को देखो। मेरे में मन लगाओ। लिखना-पढ़ना तो होता रहेगा। पहले गोरी के हाथों की रेखाओं को पढ़ लो।

हे प्रियतम! आपको लगाने के लिये गुलाब जल की शीशी रखी है, लेकिन मैं मजबूर हूँ। घर में कोई गुलाब जल की झारी आप तक पहुँचाने वाला नहीं है। देवर भी बहुत छोटा है।

हे प्रिय! दाल चावल को बनाना बहुत ही आसान है, पर दाल चावल में घी नहीं हो तो दाल भात खाने का मजा नहीं रहता है। दाल चावल में घी होना अनिवार्य है। सास-ननद से तो अबोला चल सकता है, पर साजन के बोले बिना रहा नहीं जा सकता है। तांबे पीतल के बेड़े लेकर पनिहारिनें जा रही हैं। उन्हें गाँव में बैठे हुये लोग आते-जाते देखते हैं। चतुर लोग तो बेड़ों का निरीक्षण करते हैं कि किसने-किसने अच्छे प्रकार से बेड़े को माँजा है। या उसका खराब बेड़ा है। कुछ लोग इसी में उलझे रहते हैं। चतुर लोग इतने ही पहचान कर लेते हैं कि पनिहारिन औरत कितनी चतुर है या गँवार है। चतुर लोग अपना काम आँख के इशारे से कर लेते हैं। आँखों ही आँखों में वह बात कर लेता है, लेकिन मूर्ख व्यक्ति उस पनिहारिनों की सुन्दरता में ही उलझा रहता है और अन्त में पछताता है। चतुर अपनी प्रेमिका से अभिसार का काम बना ही लेते हैं।

गर्मी के दिनों में चन्द्रमा की शीतल चाँदनी में गोरी छज्जे पर पलंग बिछाकर सो रही है। चन्द्रमा को देखकर उसे अपने पति की याद आती है। आधी रात को वह सोते से जाग जाती है। गोरी का प्रियतम परदेश में है। वह क्या करे, उसे अकेलापन काटने को दौड़ता है। वह मन मसोस कर रह जाती है।

बनी

बेटी सरदार की बेटी उमराव की, थारी गाड़ी उबी राख।
गाड़ी उबी राख, थारी साड़ी लूम-झूम।
बेटी सरदार की थारी गाड़ी ....
बिन्दी दई भेजूं बनी, पेर मिलऽ आव हो।
पेर मिल आव, थारो बंदड़ो जोव वाटऽ हो।
बेटी सरदार की थारी गाड़ी ....
झूमकी दई भेजूं बनी, पेर मिलऽ आव हो।
पेर मिल आव, थारो बंदड़ो जोवऽ वाट हो।

बेटी सरदार की थारी गाड़ी ....
माळा दई भेजूं, बनी पेर मिल आवऽ हो।
पेर मिल आव, थारो बंदड़ो जोवऽ वाट हो।
बेटी सरदार की थारी गाड़ी ....
कंगन दई भेजूं बनी, पेर मिल आवऽ हो।
पेर मिल आव, थारो बंदड़ो जोवऽ वाट हो।
बेटी सरदार की थारी गाड़ी ....
पायल दई भेजूं बनी, पेर मिलऽ आव हो।
पेर मिल आव, थारो बंदड़ो जोवऽ वाट हो।
बेटी उमराव की थारी गाड़ी उबी राख हो।
बेटी सरदार की थारी गाड़ी उबी राख हो।
गाड़ी उबी राख हो, थारी साड़ी लूम-झूम।
बेटी सरदार की थारी गाड़ी ....

हे सरदार की बेटी! हे उमराव की बेटी! तेरी गाड़ी को थोड़ी देर के लिये रोक ले। तेरे लिये दूल्हे राजा ने पहनने के लिये सोने की बिन्दी भेजी है। बिंदी पहनकर तुम अपने प्रियतम से मिलने जाना। बिन्दी के बहाने उन्होंने यह संदेश भेजा है। वे आतुरता से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। उन्होंने तुम्हारे कानों में पहनने के लिये झुमकियाँ भेजी हैं। झुमकी पहनकर अपने प्रियतम से मिलने जरूर जाना। तुम्हारा प्रियतम तुम्हारी राह देख रहा है। उन्होंने तुम्हारे लिये माला, कंगन, पायल भेजे हैं। माला, कंगन, पायल पहनकर अपने प्रियतम से मिलने के लिये जाना। तुम्हारा प्रियतम तुम्हारी राह देख रहा है। तुम जल्दी से वहाँ पहुँच जाना।

बनी

म्हारी बंदड़ी जोवे वाट रायवर, थें वेगा आईयो।
बना जोशी री गलिया जाईयो॥
थें अच्छा लगिण लिखाजो।
म्हने अक्षर पढ़के सुणाजो।
बना सोनी री गलिया जाईयो।
सोना री रखड़ी लईयो॥
जामे अक्षर नाम खुदयो।
रायवर थें वेगा आईयो।
बना बजाजी री गलिया जाईयो।
खादी रा थान लईयो।
नी तो मलमल रा मत लइयो॥

रायवर थें वेगा आईयो।
बना चिरोली यहाँ जाईयो।
अच्छा चूड़िलो लईयो।
जामे संत री टिप जढ़ईयो।
रायवर थें वेगा आईयो।
बना गंधी री गलियाँ जाईयो।
थें देशी इतर लईयो॥
नी तो हिना रो मत लइयो
रायवर थें वेगा आईयो।

हे दूल्हे राजा! दुल्हन तुम्हारी राह देख रही है। हे प्रियतम! तुम जल्दी से आ जाओ। हे प्रियतम! घर आने से पहले आप जोशीजी के यहाँ जाना और शुभ लग्न लिखाकर लाना। कौन से शुभ मुहूर्त्त के लग्न निकले हैं। मुझे अक्षर-अक्षर पढ़कर सुनाना और जल्दी से आ जाना। इसके बाद आप सोनी की दूकान पर जाना। वहाँ से सोने की रखड़ी घड़वा कर लाना। उसमें मेरा नाम भी खुदाना और जल्दी से आ जाना। इसके बाद आप कपड़े के व्यापारी की दूकान पर जाना। वहाँ से खादी का थान लाना। अगर नहीं मिले तो मलमल का थान मत ले आना, लाना तो खादी का ही कपड़ा लाना और उसे लेकर जल्दी से आ जाना।

इसके बाद आप चूड़ियों वाले की दूकान पर जाना और वहाँ से मेरे लिये अच्छी सौभाग्यशाली चोप जड़ी हुई चूड़ियाँ लाना। पर जल्दी से आ जाना। पुन: आप सुगन्धी वाले की दूकान पर जाना। वहाँ से देशी इत्र लाना। नहीं मिले तो हिना इत्र मत ले आना देशी ही इत्र लाना। इत्र लेने के बाद आप जल्दी से मेरे पास आ जाना।

बनी

दिल्ली दरवाजे क्यों खड़ी बंदड़ी, क्यों तेरा चेहरा उदास।
एक अरज मेरी सुन लो पिताजी, साजन का लड़का जरा साँवला।
इतनी फिकर तुम क्यों करो बंदड़ी, काकी गोरी नऽ काका साँवला।
दिल्ली दरवाजे क्यों खड़ी बंदड़ी, क्यों तेरा चेहरा उदास।
एक अरज मेरी सुनलो मामाजी, साजन का लड़का जरा साँवला।
इतनी फिकर तुम क्यों करो बंदड़ी, मामी गोरी नऽ मामा साँवला।
दिल्ली दरवाजे क्यों खड़ी बंदड़ी, क्यों तेरा चेहरा उदास।
एक अरज मेरी सुन लो भैया जी, साजन का लड़का जरा साँवला।
इतनी फिकर तुम क्यों करो बंदड़ी, भाभी गोरी नऽ भैया साँवला।

गीत में पूरी तरह से हिन्दी की छटा है। इसे हिन्दी का लोकगीत कह सकते हैं। पर गीत

का मिजाज निमाड़ी है। दिल्ली दरवाजे यानी मुख्य द्वार पर हे बेटी! तू उदास क्यों खड़ी है, क्या कारण है ? तेरा चेहरा उदास दिखाई दे रहा है, मानो तू रो रही है, क्या बात है ? दुल्हन अपने पिताजी से कहती है– मैंने सुना है कि मेरा पति यानी आपके होने वाले दामाद का रंग साँवला है। तब पिताजी पुत्री को समझाते हैं– हे बेटी! रंग तो दो ही होते हैं। कोई गोरा होता है और कोई साँवला होता है। जैसे तुम गोरी हो और वर महाशय साँवले हैं। भगवान ने दो ही रूप बनाये हैं– एक गोरा, एक साँवला। तुम्हारी माताजी गोरी हैं और तुम्हारे पिताजी तो साँवले हैं। क्या तुम्हारी माता और तुम्हारे पिताजी की जोड़ी नहीं जमती। कितने अच्छे दिखाई देते हैं, जैसे राधा और कृष्ण। बेटा, संतोष धारण करो, लड़का साँवला है तो क्या हुआ ? तुम्हारे काकाजी भी साँवले हैं और तुम्हारी काकी भी तो गोरी हैं। तो क्या काकी–काकाजी को छोड़कर चली गईं। उसी के साथ उनका जीवन निर्वाह हो रहा है।

रंग–रूप तो भगवान की देन है। एक गोरा और एक साँवला। तब दुल्हन अपने भाई और मामाजी से विनती करती है– हे भैयाजी! हे मामाजी! मेरा होने वाला पति साँवला है। मैं विवाह नहीं करूँगी। तब भाईजी और मामाजी दुल्हन को समझाते हैं। साँवला है तो क्या हुआ? वर तन और मन से तो सुन्दर है। साँवला है तो क्या हुआ, भगवान के घर से दो रंग मनुष्य को प्रदान हुए हैं, एक गोरा रंग और दूसरा साँवला रंग। भगवान विष्णु, राम और कृष्ण खुद भी तो साँवले हैं। लक्ष्मी, सीता और राधा गोरी थीं। तुम्हारी मामी और भाभी भी गोरी हैं। साँवले रंग से कुछ नहीं होता, अन्दर से मन उज्जवल होना चाहिए।

बनी

बनी हो थारा दादा जी रो बंगलो दूर।
बनी हो हम पूछता–पूछता आया।
बनी हो थारी माताजी रो नखरो भारी।
बनी हो हम उनसे चढ़ता आया।
बनी हो थारा काकाजी रो बंगलो दूर।
बनी हो हम पूछता–पूछता आया।
बनी हो थारी काकीजी रो नखरो भारी।
बनी हो हम उनसे चढ़ता आया।
बनी हो थारा मामाजी रो बंगलो दूर।
बनी हो हम पूछता–पूछता आया।
बनी हो थारी मामी जी रो नखरो भारी।
बनी हो हम उनसे चढता आया।
बनी हो थारा भैया जी रो बंगलो दूर।
बनी हो हम पूछता–पूछता आया।

बनी हो थारी भाभी जी रो नखरो भारी।
बनी हो हम उनसे चढ़ता आया।

हे बनी (दुल्हन)! तेरे पिताजी का बंगला बहुत ही दूर है। हम पूछते-पूछते आये हैं। हे बनी! तुम्हारी माताजी का स्वभाव खराब है। उनके नखरे बहुत ही भारी हैं। पर, तुम्हारी माताजी से हम भी कुछ कम नहीं हैं। यदि तुम्हारी माताजी का नखरा एक किलो है तो हम सवा किलो नखरेदार है। यदि तुम्हारी माताजी को अपनी खूबसूरती पर घमण्ड है तो हम उनसे ज्यादा खूबसूरत और नखरे वाले हैं। हे बनी! तेरे काकाजी का बंगला बहुत ही दूर है। हम पूछते-पूछते आये हैं।

हे बनी! तुम्हारी काकीजी का नखरा बहुत ही भारी है। पर, तुम्हारी काकी से हम भी कुछ कम नहीं हैं। यदि वह सेर है तो हम भी सवा सेर हैं। तुम्हारी काकीजी को अपनी खूबसूरती पर बड़ा ही घमण्ड है। पर, हम भी कुछ कम नहीं हैं। आज हम तुम्हारी काकीजी को दिखा देंगे, हम उनसे सवाये हैं। हे बनी! तेरे मामाजी और भैयाजी का बंगला बहुत ही दूर है। हम बहुत दूर से पूछते-पूछते आये हैं। हे बनी! तुम्हारी मामीजी और भाभीजी को अपने रूप पर बहुत गुमान है। पर, आज हम उनके नखरों को सहन नहीं करेंगे। यदि तुम्हारी मामीजी और भाभीजी को, अपनी खूबसूरती का गुमान है तो हम उनसे भी ज्यादा खूबसूरत और नखरे वाले हैं। हम सभी बातों में तुम्हारे परिवार से सवा गुना हैं।

बनी

मीना जड़ी बीटी लेता आवजोजी॥
बना पयली पेसींजर सी आवजोजी॥
माथऽ सारू बिन्दी लावजो, माथऽ सारू टीको॥
माथऽ सारू किलिप लेता आवजोजी॥
बना पयली पेसींजर सी आवजोजी॥
कान सारू झुमकी लावजो, कान सारू टाप्स॥
कान सारू ऐरिंग लेता आवजोजी॥
बना पयली पेसींजर सी आवजोजी॥
गलऽ सारू माला लावजो, गलऽ सारू नेकलिस॥
गलऽ सारू ठुस्सी लेता आवजोजी॥
बना पयली पेसींजर सी आवजोजी॥
हाथ सारू चूड़ी लावजो, हाथ सारू कंगन॥
हाथ सारू घड़ी लेता आवजोजी॥
बना पयली पेसींजर सी आवजोजी॥

पाँय सारू पायल लावजो, पाँय सारू तोड़ा॥
पाँय सारू बिछिया लेता आवजोजी॥
बना पयली पेसींजर सी आवजोजी॥

हे प्रियतम! मेरे हाथ की अँगुली के लिये मीना जड़ी अँगूठी जरूर लाना। पर, पहली पैसिंजर गाड़ी से घर आ जाना। सिर में लगाने की स्वर्ण बिन्दी, टीकी और चाँदी के किलिप अवश्य लाना। सुबह-सुबह आने वाली पैसिंजर से जल्दी घर लौट आना। हे प्रियतम! मेरे कानों में पहनने के लिये झुमकियाँ, नई फैशन के टाप्स और लटकन वाले ऐरिंग लेकर जल्दी से पहली वाली गाड़ी से आ जाना। मेरे गले में पहनने के लिये माला, नया हार और पुरानी फैशन की ठुस्सी लेकर अवश्य आ जाना।

मेरे हाथों में पहनने के लिये चूड़ियाँ, कंगन और समय देखने के लिये घड़ी लेकर आना। पर, जल्दी आ जाना। मेरे पाँव में पहनने के लिये पायल, ठोस चाँदी के तोड़े और अंगुलियों में पहनने के लिये बिछिया लेकर जरूर आ जाना। गहनों की चाह के बहाने प्रियतम से मिलने की ललक पत्नी से छुपी नहीं है।

बनी

बनी नहर को नाव नराणी, मीठो लागऽ नहर को पाणी॥
बनी चोमली को नाव चमेली, बेड़ीला रो नाव हजारीजी॥
मीठो लागऽ नहर को पाणी......................
बनी बिन्दी पेरो भारी, टीका मऽ सूरत हमारीजी॥
मीठो लागऽ नहर को पाणी......................
बनी झुमकी पेरो भारी, ऐरिंग मऽ सूरत हमारीजी॥
मीठो लागऽ नहर को पाणी.......................
बनी माला पेरो भारी, लाकेट मऽ सूरत हमारीजी॥
मीठो लागऽ नहर को पाणी.......................
बनी चूड़ियाँ पेरो भारी, घड़िया मऽ सूरत हमारीजी॥
मीठो लागऽ नहर को पाणी........................
बनी पायल पेरो भारी, बिछिया मऽ सूरत हमारीजी॥
मीठो लागऽ नहर को पाणी॥

इस गीत को दुल्हन के घर गाया जाता है। इस गीत में सुख-समृद्धि के प्रतीक नहर के पानी का वर्णन है। पानी ही सब कुछ है। पानी से ही किसान खेती में सोना पैदा करता है। सुख-समृद्धि हो तो फिर गहनों की पूछिये ही मत, वे अधिक ही भारी-भरकम बनेंगे। इस गीत में दुल्हन के प्रत्येक गहने में दूल्हे राजा की छबि अंकित है।

हे बनी ! जहाँ पर तुम्हारा रिश्ता तय हुआ है, उस गाँव में एक नहर है। उसका पानी मीठा है। उस नहर का नाम नारायणी नहर है। जब तुम घड़े लेकर पानी लेने जाओगी, तब तुम्हारे सिर पर चोमल के ऊपर रखा हुआ बेड़ा कितना हरजाई लगेगा। जो तुम्हारे सिर पर बैठा है। हे बनी ! तुम जो टीका पहनोगी, उसकी सुन्दरता बहुत ही भारी होगी और उस बिंदिया में हमारी सूरत तुम्हें दिखाई देगी।

हे बनी ! तुम झुमकी पहनोगी, उसकी सुन्दरता बहुत ही भारी होगी, और तुम्हारे एरिंग में हमारी सूरत की छवि जगमगा रही होगी। हे प्रिये ! तुम जो गले में माला पहनोगी, उसकी सुन्दरता भारी होगी और तुम्हारे लाकेट में हमारी छवि झिलमिलायेगी। तुम्हारे गाँव की नहर का पानी बहुत मीठा है। तुम चूड़ियाँ पहनोगी तो घड़ी में हमारी छवि देख सकोगी। पायल पहनोगी तो बिछिया में हमारी छवि झिलमिलायेगी। गहनों के बहाने ही सही तुम्हें हमारी सूरत, छवि याद तो आती रहेगी।

बनी

काली मखमल पे बने की फोटो चमके॥
पागा पे चमके, पेंचा पे चमके॥
चाँद जैसा मुखड़ा बनी का जिया ललचे॥
काली मखमल पे बने की फोटो चमके॥
कुंडल पे चमके, हीरा में चमके॥
चाँद जैसा मुखड़ा बनी का जिया ललचे॥
काली मखमल पे बने की फोटो चमके॥
कंठी पे चमके, दोरा में चमके॥
चाँद जैसा मुखड़ा बनी का जिया ललचे॥
काली मखमल पे बने की फोटो चमके॥
घड़िया पे चमके, चैनों में चमके॥
चाँद जैसा मुखड़ा बनी का जिया ललचे॥
काली मखमल पे बने की फोटो चमके॥
जूतो में चमके, मौजो में चमके॥
चाँदा जैसा मुखड़ा बनी का जिया ललचे॥
काली मखमल पे बने की फोटो चमके॥
चाँद जैसा मुखड़ा बनी का जिया ललचे॥

गीत–सुश्री उषा कुशवाह, दवाना

घर में बिछी काली मखमल पर दूल्हे राजा बैठे हैं। उनकी छवि साफ निखर गई है।

उनका बैठना एक तस्वीर जैसा है। दूल्हे राजा एकदम गोरे हैं और उनकी तस्वीर भी गोरी ही है। जो काले मखमल पर चमकदार लग रही है। दूल्हे की छवि को देखकर दुल्हन का मन ललचा रहा है और वह दूल्हे पर मुग्ध है। बने का मुखड़ा एकदम चाँद जैसा है, साफा बाँधने से उसके साफे के प्रत्येक पेंच पर चमक अधिक दिखाई दे रही है। दूल्हे की सुन्दरता पर दुल्हन ललचा रही है। गले में कंठी और दोरा पहन लेने से दूल्हे राजा अधिक ही सुन्दर दिखाई दे रहे हैं। उनका मुख मंडल चन्द्रमा के समान सुन्दर दिखाई दे रहा है। इस रूप पर दुल्हन का मन ललचा रहा है। हाथ में घड़ी और गले में चेन तथा पाँव में जूते और मोजे पहन लेने से उनका रूप और भी खिल उठा है। उनकी शोभा दो गुना बढ़ गई है। दूल्हे राजा की प्रत्येक छवि पर दुल्हन का मन मोहित हो गया है।

नृत्य गीत (विवाह)

कुब्जा रा बार मती जाओ वालाजी।
म्हारी कुब्जा छे नऽ पेली कुबड़ी॥
कुब्जा घर जाई नऽ काई सुख पाओगा॥
म्हारी कुब्जा छे नऽ पेली कुबड़ी॥
नानी सी वाटकी वा भी बड़ा ठाट की॥
चाटऽ अलोणी सी राबड़ी॥
वालाजी म्हारी कुब्जा ....
कोरी सी मटकी मऽ मही बुन्डो पाणी॥
पाणी पेवा नऽ अरू तुमड़ी॥
वालाजी म्हारी कुब्जा ....
चोली देखी नऽ वदास्या आवऽ॥
काटी खासे छोटी मोटी चिळड़ी॥
वालाजी म्हारी कुब्जा ....
घाघरो तो वोको बाडूयो छे॥
लुगड़ा मऽ लगी नव सौ थेगळई॥
वालाजी म्हारी कुब्जा छे नऽ पेली कुबड़ी॥

हे स्वामी! आप बार-बार मेरी कुब्जा सौत के घर जाते हो। तुम्हें वहाँ क्या सुख मिलता है, जो यहाँ नहीं है? कुब्जा के घर में बर्तन तक नहीं हैं। बर्तन के नाम पर एक छोटी-सी कटोरी है। जिसमें वह राबड़ी जैसा पदार्थ बनाकर खा लेती है। कभी नमक है तो कभी नमक ही नहीं मिलता। फिर वह आपको क्या खिलाती होगी, जो आप बार-बार कुब्जा सौत के घर जाते हैं?

कुब्जा के घर में एक कोरी-सी मटकी है, जिसमें माँगकर लाया हुआ छाछ रखा है। मटकी में वह कभी छाछ रखती है तो कभी उसी में से पानी पी लेती है। पानी पीने के लिये बस

एक तुम्बा है। जिससे वह पानी पिया करती है। आप उसकी कौन-सी बात पर आसक्त हो गये हैं और बार-बार वहाँ जाते हैं।

कुब्जा की चोली को देखकर बदबू आती है। उसे स्नान करने के कई दिन हो जाते हैं। उसके शरीर में चिलड़े पड़ गये हैं। वह इतनी फूहड़ है, फिर भी आप उस सौतन पर रीझे हुए हैं। न नहाने का ठिकाना, न ही वस्त्र धोने का, न ही उसके पास ठीक से वस्त्र हैं। उसके लहँगे को देखो, कितना छोटा है ? उसकी साड़ी में कितने ही पैबन्द लगे हुए हैं, फिर भी आप बार-बार उस सौतन के घर जाते हैं। उसका एक भी अंग सीधा नहीं है, कुरूप है। वह पूरी तरह टेढ़ी-मेढ़ी है। न ही उसका रंग है, न रूप है। फिर भी आप उसके घर जाना छोड़ ही नहीं रहे। सौत के प्रति घृणा उत्पन्न करने का अत्यन्त मनोवैज्ञानिक वर्णन किया गया है।

नृत्य गीत

हाऊँ तो म्हारा पियर चली,
सम्भाल थारा घर कऽ॥
मत कलपावऽ म्हारा मन कऽ, नजर लगी जाय, म्हारा गोरा बदन कऽ॥
दाल राँधो, भाँत रांध्यो।
अरू करी बाटी॥
एका कारण मकऽ डाटी, अकेला जिया खूब बणी रे दाल-बाटी॥
ससरो म्हारो जीमणऽ बठीयो।
ओकी म्हारी आटी॥
कसी परसूं रे ओकी थाटी, अकेला जिया खूब बणी रे दाल-बाटी॥
भाई म्हारो लेणऽ आयो।
रूणझूण की गाड़ी बठी।
गाड़ी मऽ बठी हाऊँ जाती, अकेला जिया खूब बणी रे दाल-बाटी॥
माय म्हारी खुशी हुई।
भोजाई बड़ी गाटी॥
ओकी न म्हारी आटी, अकेला जिया खूब बणी रे दाल-बाटी॥
हाऊँ तो म्हारा पियर चली, सम्भाल थारा घर कऽ॥

मैं तो अपने मायके जा रही हूँ। अपने घर को सम्भालिये। मैं अपने मायके जा रही हूँ। आप बार-बार मेरे मन को दुखी करते हैं। आप मेरे गोरे बदन को भी नजर लगाते ही रहते हैं। मैंने कितने प्रेमपूर्वक दाल-बाटी चावल बनाये। जरा सी बात पर आपने मुझे डाँट दिया। अब आप अकेले ही रहना और दाल-बाटी खाते रहना। मैं अपने मायके जा रही हूँ। मेरे ससुरजी खाना खाने बैठे हैं। मेरी और उनकी लड़ाई है। इसलिये मैं उनकी थाली नहीं परोस सकती। अब आप अकेले ही दाल-बाटी बनाकर खाते रहना और ससुरजी को भी खिलाना। मैं तो अपने

मायके जा रही हूँ। मेरा भैया मुझे लेने के लिये आ गया है। मैं गाड़ी में बैठकर जा रही हूँ। आप सुखपूर्वक अकेले ही रहना। मेरी माँ तो मुझे देखकर खुश होगी। लेकिन मेरी भाभी से मेरी लड़ाई है, वह ईर्ष्यालु है। अत: वह खुश नहीं होगी। अब आप अकेले ही दाल-बाटी बनाकर खाना और सुखपूर्वक रहना। मैं तो अपने मैके जा रही हूँ।

नृत्य गीत

पिया होय तो बुलई लीजो।
मकऽ इच्छु नऽ काट्यो।
पयली लयर म्हारा माथा पऽ आई।
माथा की बिंदी उतारी लीजो।
मकऽ इच्छु नऽ काट्यो।
दूसरी लयर म्हारा कान पऽ आई।
कान की झूमकी उतारी लीजो।
मकऽ इच्छु नऽ काट्यो।
तीसरी लयर म्हारा गला पऽ आई।
गला की माला उतारी लीजो।
मकऽ इच्छु नऽ काट्यो।
चौथी लयर म्हारा हाथ पऽआई।
हाथ का कंगन उतारी लीजो।
मकऽ इच्छु नऽ काट्यो।
पाँचवी लयर म्हारा पाँव पऽ आई।
पाँय की बिछिया उतारी लीजो।
मकऽ इच्छु नऽ काट्यो।
छठी लयर म्हारा सरी पऽ आई।
मकऽ कवला सोवाड़ी दीजो।
मकऽ इच्छु नऽ काट्यो।
पिया होय तो बुलई दीजो।
मकऽ इच्छु नऽ काट्यो।

गीत-श्रीमती हेमलता उपाध्याय, खंडवा.

पत्नी को जहरीले बिच्छू ने काट लिया है। उसने अपने पति को बुलाने के लिये भेजा। ढूँढ़ने के बाद नहीं मिलने पर वह उन्हें ढूँढ़ने के लिये जगह-जगह भेजती है। जाओ उन्हें जल्दी ढूँढ़कर लाओ, मेरे बिच्छु काटने का इलाज उन्हीं के पास है। मुझे जहरीले बिच्छू ने काट लिया है। बिच्छू की पहली लहर मेरे सिर पर आ गई है। सिर की अमूल्य बिंदिया मुझे बहुत भारी लग

रही है, उसे शीघ्र उतार लो, मुझे बिच्छू ने काटा है। दूसरी लहर मेरे कानों पर आई है। कानों की झुमकियाँ मुझे बहुत भारी लग रही हैं, उसे शीघ्र उतार लो, मुझे बिच्छू ने काटा है। तीसरी लहर मेरे गले के ऊपर आई है। गले की माला मुझे बहुत भारी लग रही है, उसे शीघ्र उतार लो, मुझे जहरीले बिच्छू ने काटा है। चौथी लहर मेरे हाथों पर आई है। हाथों के कंगन मुझे बहुत भारी लग रहे हैं, उन्हें शीघ्र उतार लो, मुझे बिच्छू ने काटा है।

पाँचवी लहर मेरे पाँवों पर आ गई है। पाँवों की बिछिया मुझे बहुत भारी लग रही है, उसे शीघ्र उतार लो, मुझे जहरीले बिच्छू ने काटा है। छठवीं लहर मेरे पूरे बदन में आ गई है। अब मेरे बचने की कोई उम्मीद नहीं है। अब मुझे दरवाजे के पास सुला दो। जहाँ हों उन्हें खबर कर देना, तुम्हारी पत्नी मर गई है।

नृत्य गीत

अगवाड़ो बँधाड़जो, पिछवाड़ो बँधाड़जो॥
चाँदणी की जाळई झुकावजो सायबजी॥
जवं जाई मकऽ ळेणऽ आवजो॥
टीको भी लावजो, बिंदी भी लावजो॥
झाला पऽ ओम छपावजो सायबजी॥
जवं जाई मकऽ ळेणऽ आवजो॥
झूमकी भी लावजो, लटकन भी लावजो॥
टाप्स मऽ ओम छपावजो सायबजी॥
जवं जाई मकऽ ळेणऽ आवजो॥
हार भी लावजो, कालर भी लावजो॥
दोरा पऽ ओम छपावजो सायबजी॥
जवं जाई मकऽ ळेणऽ आवजो॥
चूड़ी भी लावजो, कंगन भी लावजो॥
घड़ी पऽ ओम छपावजो सायबजी॥
जवं जाई मकऽ ळेणऽ आवजो॥
आयल भी लावजो, पायल भी लावजो॥
बिछिया पऽ ओम छपावजो सायबजी॥
जवं जाई मकऽ ळेणऽ आवजो॥

गीत–श्रीमती सेवन्तीबाई तोमर, दवाना

हे प्रिये! घर ठीक बनवाना। घर का अगला और पिछला हिस्सा भी ठीक से बनवाना। घर की छत पर चाँदनी डलवाना, उसपर जालियाँ लगवाना। तब आप मुझे मेरे मैके लेने आना। टीका लाओ तो उसके साथ बिंदिया भी लाना और मेरे झालों पर ओम छपवाकर लाना। तब आप

मेरे मैके में लेने के लिये आना। झूमकियाँ लाना तो उसके साथ लटकन भी लाना। और मेरे टाप्स पर ओम लिखाकर लाना। हार लाना तो उसके साथ में कालर भी लाना। और चेन के पेंडिल पर ओम छपवाकर लाना। चूड़ियाँ लाओ तो उसके साथ में कंगन भी लाना और घड़ी की चेन पर ओम लिखाकर लाना। तब आप मुझे मेरे मैके में लेने आना। आयल लाना तो उसके साथ पायल भी लाना और मेरे बिछियों पर ओम छपवाकर लाना। तब आप मुझे मेरे मैके में लेने आना। इतना नहीं कर सको तो लेने के लिये मत आना।

नृत्य गीत

परण्या बिन आणो कुण लई जाय।
कुण लई जाय रे कसो लई जाय॥
परण्या बिन आणो कुण ....
पयलऽ जो आणो म्हारा ससराजी आया।
इना डोकरा की साथ, इना बुड्ढा की साथ,
बलाय भी नी जाय, परण्या बिन आणो कुण ....
दूसरा जो आणो म्हारा जेठजी आया।
इना जोधा की साथ, इना जुवांदड़ा की साथ,
बलाय भी नी जाय, परण्या बिन आणो कुण ....
तीसरा जो आणो म्हारा देवरजी आया।
इना पोर्‌या की साथ, इना छोरा की साथ,
बलाय भी नी जाय, परण्या बिन आणो कुण ....
चौथा जो आणो म्हारा नणदईजी आया।
इना पराया की साथ, नई जाऊँ म्हारी माय,
परण्या बिन आणो कुण ....
पाँचवो जो आणो म्हारा स्वामीजी आया।
स्वामीजी की साथ हरकती जाऊँ,
परण्या बिन आणो कुण लई जाय।
कुण लई जाय रे, कसो लई जाय॥

गीत-श्रीमती हेमलता उपाध्याय, खंडवा

मेरे पति के सिवाय मुझे कोई नहीं ले जा सकता। है किसी की हिम्मत जो मुझे ले जाय, मैं किसी के साथ नहीं जाऊँगी। पहले-पहल मेरे ससुरजी लेने आये, इस बुढ्ढे के साथ, इस डोकरे के साथ मेरा ठेंगा भी नहीं जायेगा। दूसरी बार मेरे जेठजी लेने के लिये आये, उस मोटे ताजे लठ के साथ, उस जवान के साथ मेरी सौत भी नहीं जायेगी। तीसरी बार मेरे देवरजी लेने आये, उस बहुत छोटे बालक के साथ, उस छोरे के साथ कौन जा सकता है? चौथी बार मेरे

ननदोईजी लेने के लिये आये, उस पराये पुरुष के साथ, मैंने जाने से इन्कार कर दिया। पाँचवी बार स्वयं मेरे पतिजी लेने के लिये आये, उनके साथ जाने में मुझे कोई आपत्ति नहीं, तैयार होकर मैं अपने पति के साथ हँसी-खुशी विदा हो गई। पति तो पति होता है, आखिर उससे विवाह हुआ है।

नृत्य गीत

घर बरजऽ छे नार चतुर ज्ञानी।
घर बरजऽ छे नार चतुर ज्ञानी॥
लकूड़ की नाव पर मती बठो सायबाजी।
व्हाँ छे वयतळ पाणी।
घर बरजऽ छे नार चतुर ज्ञानी।
लूहा की नाव पर तम बठो सायबाजी।
व्हाँ छे रे थावर पाणी।
घर बरजऽ छे नार चतुर ज्ञानी।
परायी हथई पर मती बठो सायबाजी।
व्हाँ बोल रे तूकारी बोली।
घर बरजऽ छे नार चतुर ज्ञानी।
घर की हथई पर तम बठो सायबाजी।
व्हाँ बोल रे अमरीत वाणी।
घर बरजऽ छे नार चतुर ज्ञानी।
परई तिरिया सी हँसी मत करो सायबाजी।
वा बोलऽ कचेरी जाई।
घर बरजऽ छे नार चतुर ज्ञानी।
घर की तिरिया सी हँसी तम करो सायबाजी।
वा बोलऽ मयला मऽ जाई।
घर बरजऽ छे नार चतुर ज्ञानी।

घर में चतुर सुजान रूप गुण शीलवान पत्नी है, फिर भी पति महाशय अपनी आदतों से बाज नहीं आते हैं। पति महाशय रसिक हैं। इस आदत से तंग आकर पत्नी अपने पति से कहती है- हे स्वामी! आप लकड़ी की नाव पर मत बैठिये, यह नाव आपको बहते हुए पानी में ले जायेगी। यानी उस खराब रास्ते पर मत चलो। एक दिन बिगड़ जाओगे। हे स्वामी! आप तो लोहे की नाव पर बैठना, वह नाव स्थिर पानी में भी तैरती रहेगी। यानी मजबूती के साथ एक स्त्री, पत्नी में अपना मन लगाओ, वह भटकने नहीं देगी। हे स्वामी! आप पराई स्त्री के कारण पराये घर में जाकर बैठते हैं, वह स्त्री कभी भी आपको अच्छे सम्बोधन से नहीं पुकारेगी। वह तू-तूकारे की

भांड सी बोली बोलेगी। पराई स्त्री से कभी भी तू-तू मैं-मैं हो सकती है। इसलिये वहाँ न जाईये। हे स्वामी! आप अपने घर की स्त्री से ही इतना प्रेम कीजिये, जितना आप पराई स्त्री से करते हैं तो आपकी पत्नी खुश हो जायेगी। और वह अमृत के समान मीठी बोली बोलेगी। हे स्वामी! पराई स्त्री से क्या हँसना-बोलना? कभी उसका हँसना-बोलना आपको कचहरी तक ले जा सकता है। वह स्त्री आपको कचहरी चढ़ा सकती है। हे स्वामी! यदि आप अपनी पत्नी से ही हँसी मजाक करोगे तो वह अपने महल में जाकर आपके गुणगान करेगी। घर में आपकी तारीफ करेगी।

नृत्य गीत

बालमा मोटर मंगाड़ऽ, हाँऊ तो म्हारा पियर जाऊँगा॥
पियर की वाट-वाट काकरा गड़ऽ।
बालमा सड़क बणाड़ऽ, हाँऊ तो म्हारा पियर जाऊँगा॥
बालमा मोटर मंगाड़ऽ, हाँऊ तो म्हारा पियर जाऊँगा॥
पियर की वाट-वाट घामऽ लगऽ रे॥
बालमा तम्बू तणाड़ऽ, हाँऊ तो म्हारा पियर जाऊँगा॥
बालमा मोटर मंगाड़ऽ, हाँऊ तो म्हारा पियर जाऊँगा॥
पियर की वाट-वाट भूखऽ लगऽ रे॥
बालमा होटल खोलाड़ऽ, हाँऊ तो म्हारा पियर जाऊँगा॥
बालमा मोटर मंगाड़ऽ, हाँऊ तो म्हारा पियर जाऊँगा॥
पियर की वाट-वाट तीसऽ लगऽ रे॥
बालमा कुवो खोदाड़ऽ, हाँऊ तो म्हारा पियर जाऊँगा॥
बालमा मोटर मंगाड़ऽ, हाँऊ तो म्हारा पियर जाऊँगा॥
पियर की वाट-वाट बुरो लगऽ रे॥
बालमा सिनमा खोलाड़ऽ, हाँऊ तो म्हारा पियर जाऊँगा॥
बालमा मोटर मंगाड़ऽ, हाँऊ तो म्हारा पियर जाऊँगा॥

गीत-श्रीमती सीमा तारे, भोपाल

हे प्रियतम! मोटर मँगाईये, मैं तो अपने मैके जाऊँगी। हे प्रियतम! मैके के रास्ते पर कंकड़-पत्थर बहुत हैं, जो चुभते हैं। हे प्रियतम! सड़क बनवाइये, मैं अपने मैके जाऊँगी। हे प्रियतम! मैके के रास्ते जाने में धूप लगेगी। इसलिये प्रियतम, आप रास्ते-रास्ते छायादार तम्बू लगवा दीजिये। हे प्रियतम! मैके के रास्ते में मुझे भूख लगेगी। इसलिये प्रियतम, आप होटल खुलवा देना, मैं तो मेरे मैके जाऊँगी। हे प्रियतम! मैके के रास्ते में मुझे प्यास लगेगी। इसलिये हे प्रियतम! आप रास्ते-रास्ते कुएँ खुदवा देना, मैं अपने मैके जाऊँगी। हे प्रियतम! मैके के रास्ते में मुझे बुरा लगेगा। इसलिये हे प्रियतम! आप सिनेमा खुलवा देना, मैं अपने मैके जाऊँगी। हे प्रियतम! जल्दी से मेरे लिये मोटर मंगवा दें, मैं अपने मैके जा रही हूँ।

नृत्य गीत

म्हारो लूमदार बटवो कहाँ भूली आई।
कहाँ भूली आई हो तू कहाँ खोई आई॥
म्हारो लूमदार बटवो ....
मनऽ बिंदी इसाई मालवा मऽ।
जेका दाम चुकाया गुवाणा मऽ॥
म्हारो लूमदार बटवो ....
मनऽ बेसर इसाई इन्दौर मऽ।
जेका दाम चुकाया खण्डवा मऽ॥
म्हारो लूमदार बटवो ....
मनऽ हार इसायो बम्बई मऽ।
जेका दाम चुकाया कलकत्ता मऽ॥
म्हारो लूमदार बटवो ....
मनऽ चूड़ी इसाई मालवा मऽ।
जेका दाम चुकाया गुवाणा मऽ॥
म्हारो लूमदार बटवो ....
मनऽ पायल इसाई खण्डवा मऽ।
जेका दाम चुकाया दवाणा मऽ॥
म्हारो लूमदार बटवो ....

गीत–श्रीमती हेमलता उपाध्याय, खंडवा

मेरा फुन्देवाला बटवा कहाँ भूल आई हो? कहीं भूल आई हो या कहीं खो आई हो? मैंने बिंदी खरीदी मालवा में, जिसके दाम चुकाये गुवाना में। मैंने झुमकियाँ खरीदीं मालवा में, जिसके दाम चुकाये गुवाना में। मैंने नथनी खरीदी इन्दौर में, जिसके दाम चुकाये खण्डवा में। मैंने हार खरीदा बम्बई में, जिसके दाम चुकाये कलकत्ता में। मैंने चूड़ियाँ खरीदी मालवा में, जिसके दाम चुकाये गुवाना में। मैंने पायल खरीदी खण्डवा में, जिसके दाम चुकाये दवाना में। मेरा फुन्देवाला बटवा तुम कहाँ खो आई हो, कहीं भूल आई हो या कहीं खो आई हो?

मंडप प्रतिष्ठा

तम तो जाओ बसन्त भाई आमझरऽ।
वहाँ सी लाओ आला नीला बाँस॥
मोतियन छायो मांडवो॥
बईणी पान वाड़ी–पान वाड़ी फिरी आया।
नई मिल्या नागर वेली पान॥

मोतियन छायो मांडवो॥
बीरा धार का आड़ऽ छे आमझरऽ॥
पान का आड़ऽ छे फूल॥
मोतियन छायो मांडवो॥
तम तो जाओ प्रवीण भाई आमझरऽ॥
वहाँ सी लाओ आला नीला बाँस॥
मोतियन छायो मांडवो॥
बईणी पानवाड़ी-पानवाड़ी फिरी आया॥
नई मिल्या नागर वेली पान॥
मोतियन छायो मांडवो॥
वीरा धार का आड़ऽ छे आमझरऽ॥
पान का आड़ऽ छे फूल॥
मोतियन छायो मांडवो॥
तम तो जाओ रमेश भाई आमझरऽ॥
वहाँ सी लाओ आला नीला बाँस॥
मोतियन छायो मांडवो॥
बईणी पानवाड़ी-पानवाड़ी फिरी आया॥
नई मिल्या नागर वेली पान॥
मोतियन छायो मांडवो॥
वीरा धार का आड़ऽ छे आमझरऽ॥
पान का आड़ऽ छे फूल॥
मोतियन छायो मांडवो॥

हे बसन्त भाई! तुम जंगल में जाओ। वहाँ से मंडप के लिये हरे-हरे बाँस काटकर ले आओ, जिससे मंडप सजाना है। मंडप को मोतियों से सजाना है। तब बसन्त भाई अपनी बहन को उत्तर देते हैं- हे बहन! हम प्रत्येक जंगल में ढूँढ़ आये हैं कहीं भी हरे बाँस नहीं मिले। तब बहन कहती है- मैं तुम्हें बताती हूँ। धार नगर के पास अमझेरा है, वहाँ पर बाँसों का जंगल है। जिस प्रकार पत्तों के बीच फूल छिपे रहते हैं। उसी प्रकार उस जंगल में बाँसों का समूह भी छुपा है। वहाँ जाईये और बाँस काटकर ले आईये।

हे रमेश भाई! तुम जंगल में जाओ। वहाँ से मंडप के लिये हरे-हरे बाँस काटकर ले आओ। जिससे मंडप बनाना है। तब रमेश भाई अपनी बहन से कहते हैं- हे बहन! हम प्रत्येक पानवाड़ी ढूँढ़ आये हैं कहीं भी हरे-हरे नागरवेली पान नहीं हैं। तब बहन कहती है- मैं तुम्हें पान के बारे में बताती हूँ। धार नगर के पास अमझेरा गाँव है वहाँ पर पनवाड़ी है। जिस प्रकार पत्तों के बीच फूल छिपे रहते हैं। उसी प्रकार पवित्र पनवाड़ी में नागरवेली पान भी छिपे रहते हैं। जाईये

और वहाँ से पान ले आईये। पत्तों की आड़ में फूल कहकर, पत्ते हैं तो पेड़ पर फूल का आना स्वाभाविक है। पति-पत्नी है तो बच्चों के रूप में फूल तो खिलेंगे ही। बाँस वंशवृद्धि का प्रतीक है। विवाह में बाँस का आनुष्ठानिक प्रयोग इसी अर्थ में होता है।

मण्डप प्रतिष्ठा

ये मोती कौण सा भाई रा कान,
बधावा म्हारा रहां आविया॥
ये मोती समुन्दर निपजा,
ये मोती बलदेव भाई रा कान।
बधावो म्हारा रहां आविया॥
धन कईजो उनकी माता आई,
उन्न जायो कलगी वालो कान।
बधावा म्हारा रहां आविया॥
ये मोती कौण सा भाई रा कान,
बधावो म्हारा रहां आविया॥
ये मोती समुन्दर निपजा,
ये मोती रमेशभाई रा कान,
बधावो म्हारा रहां आविया॥
धन कईजो उनकी माता बाई।
उन्न जायो कलगी वालो कान।

गीत-श्री नरेन्द्र गीते, दवाना

यह गीत मंडप के बाँसों की पूजा करते समय गाया जाता है। ये कीमती मोती किस भाई के कान में शोभा दे रहे है ? घर में जिस भाई के घर शुभ घड़ी आई है, उसी भाई ने समुद्र में पैदा होने वाले बहुमूल्य मोती पहने हैं, उनका नाम अमुक (बलदेव भाई) है। वह माता धन्य है, जिसने ऐसी प्रतिष्ठा वाला पुत्र उत्पन्न किया है। जो धन-धान्य, सुख-सम्पदा से सम्पन्न है, आज उसके यहाँ शुभ घड़ी आई है, उनके आँगन में आज हरे-हरे पत्तों और बाँस से मांगलिक मंडप आच्छादित हो रहा है।

मंडप प्रतिष्ठा

बाई म्हारा मंडपड़ा रा रावा तीरछा खम्ब, पटोळई छायो मांडवो॥
बाई म्हारा मंडपड़ा मऽ कुण जंवई आवसे॥
बाई म्हारा मंडपड़ा मऽ तेजसिंह जंवई आवसे॥

बाई ओ उनका साथ गीताबाई सुहाय, पटोळई छायो मांडवो॥
बाई म्हारा मंडपड़ा रा रावा तीरछा खम्ब, पटोळई छायो मांडवो॥
बाई ओ म्हारा मंडपड़ा मऽ कुण जंवई आवसे॥
बाई म्हारा मंडपड़ा मऽ गजेन्द्रसिंह जंवई आवसे॥
बाई ओ उनका साथ उमाबाई सुहाय, पटोळई छायो मांडवो॥
बाई ओ म्हारा मंडपड़ा रा रावा तीरछा खम्ब, पटोळई छायो मांडवों॥
बाई म्हारा मंडपड़ा कुण जंवई आवसे॥
बाई म्हारा मंडपड़ा मऽ दुर्गासिंह जंवई आवसे॥
बाई ओ उनकी साथ शकुनबाई सुहाय, पटोळई छायो मांडवो॥
बाई ओ म्हारा मंडपड़ा रा रावा तीरछा खम्ब, पटोळई छायो मांडवो॥
बाई म्हारा मंडपड़ा मऽ कुण जंवई आवसे॥
बाई ओ म्हारा मंडपड़ा मऽ विजयसिंह जंवई आवसे॥
बाई ओ उनकी साथ शारदाबाई सुहाय, पटोळई छायो मांडवो॥

मंडप के चारों दिशाओं में खोदे जाने वाले गड्ढे खोदते समय यह गीत गाया जाता है। हे बाई! मेरे मंडप में आड़े-तिरछे खम्बे हैं और उन्हें पत्तों से सजाया गया है। मेरे मंडप में कौन-कौन से जमाई और बेटियाँ आयेंगी? हे बाई! मेरे मंडप में तेजसिंह दामाद आयेंगे और उनके साथ गीताबाई सुहागन आयेंगी। गजेन्द्र सिंह दामाद के साथ उमा बाई सुहागन आयेंगी। दुर्गासिंह दामाद के साथ शकुन्तलाबाई सुहागन आयेंगी। विजयसिंह दामाद के साथ सदा सुहागन शारदाबाई आयेंगी। और इन सबके आने से मेरे मंडप की शोभा बढ़ जाएगी।

मंडप प्रतिष्ठा

मांडलिया रे तू तो रूणझुण आयो।
दादाजी कद आवसे॥
दादाजी आया रे गज घोड़ा असवार।
माताजी आया पाळकी॥
माता नऽ रांध्यो गज गरूड़ा भात।
घी रे तायो आकरो॥
हम तो जिमसा रे हमारा दादाजी रा हाथ।
माताजी ढोळऽ रिजणो॥
मांडलिया रे तू तो रूणझुण आयो॥
काकाजी कद आवसे॥
काकाजी आया गज घोड़ा असवार॥
काकीजी आया पाळकी॥

काकी नऽ रांध्यो गज गरूड़ा भात॥
घी रे तायो आकरो॥
हम तो जिमसा रे हमारा काकाजी का हाथ।
काकीजी ढोळऽ रिजणो॥
मांडलिया रे तू तो रूणझुण आयो।
मामाजी कद आवसे॥
मामाजी आया गज घोड़ा असवार।
मामीजी आया पाळकी॥
मामी नऽ रांध्यो गज गरूड़ा भात॥
घी रे तायो आकरो॥
हम तो जिमसा रे हमारा मामाजी का हाथ।
मामीजी ढोळऽ रिजणो॥
मांडलिया रे तू तो रूणझुण आयो।
वीराजी कद आवसे॥
वीराजी आया गज घोड़ा असवार।
भाभीजी आया पाळकी॥
भाभी नऽ रांध्यो गज गरूड़ा भात।
घी रे तायो आकरो॥
हम तो जिमसा हमारा बीराजी का हाथ।

यह मंडप में आने वालों की प्रतीक्षा का गीत है। हे मंडप! तू तो रूणझुण करता यानी धीरे-धीरे माँगलिकता के साथ आ गया है। पर, मेरे पिताजी कब आयेंगे? अरे! पिताजी आ गये हैं। पिताजी घोड़े पर सवार होकर आये हैं तथा माताजी पालकी में सवार होकर आई हैं। माताजी ने आकर केशरिया भात बनाया और उसमें अच्छी तरह गर्म किया हुआ घी डाला है। हम तो हमारे पिताजी के साथ भोजन करेंगे। हमारी माताजी अपने हाथों से पंखा झलेंगी। इससे बड़ा सुख और क्या है?

हे मंडप! तू तो हमारे घर आ गया। काकाजी कब आयेंगे? अरे देखो! काकाजी आ गये हैं। वे घोड़े पर तथा काकीजी पालकी में सवार होकर आई हैं। काकी ने आकर केशरिया भात यानी गज गरूड़ा भात बनाया। उसमें अच्छी तरह से गर्म किया हुआ घी डाला। हम तो हमारे काकाजी के साथ भोजन करेंगे और काकीजी हम पर प्यार से पंखा झलायेंगी। इससे बड़ा सुख क्या होगा? हे मंडप! तू तो आ गया। मामाजी कब आयेंगे? अरे देखो! मामाजी आ गये हैं। मामाजी घोड़े पर तथा मामीजी पालकी में सवार होकर आई हैं। मामी ने आकर केशरिया भात बनाया है और उसमें अच्छी तरह से गर्म किया हुआ घी डाला। हम तो हमारे मामाजी के साथ भोजन करेंगे। मामीजी हम पर प्यार से पंखा झलेंगी। इससे बड़ा सुख क्या होगा?

हे मंडप! तू तो आ ही गया है। वीराजी कब आयेंगे? उधर देखो! वीराजी घोड़े पर सवार होकर आ गये हैं तथा भाभीजी पालकी में सवार होकर आई हैं। भाभी ने आकर केशरिया भात बनाया है। उसमें घी डाला है। हम तो हमारे वीराजी के साथ भोजन करेंगे। भाभी हम पर पंखा झलेंगी। इससे बड़ा सुख और क्या होगा?

मंडप प्रतिष्ठा

झिरमिर हो राजा, झिरमिर बरसऽ मेघ,
छोटी मोटी बूंद सुहावणी।
दोय मिली हो राजा, दोई मिली बठ्या,
पर्वत माही तो पर्वत लाग्यो सुहावणो।
तुम ओका पियुजी तुम पर्वत केरा मोर,
तो वा धन पर्वत मोरनी जी।
दोय मिली हो राजा, दोई मिली बठ्या सरवर पाल।
सरवर लागे सुहावणो,
तुम ओका पियुजी तुम हो सरवर केरा,
हंस तो वह धन सरवर हंसणीजी,
दोय मिली हो राजा, दोय मिली बठ्या,
देऊल माय देवल लागऽ सुहावणो।
तुम ओका पियुजी तुम हो देवल का देव,
तो वा धन्य देऊल पुतलईजी।
दोय मिली हो राजा, दोय मिली बठ्या,
मण्डप माही मण्डप लागऽ सुहावणोजी।
तुम ओका पियुजी, तुम दुल्लव केरा बाप,
तो वा धन दुलियन माऊली।

गीत-श्रीमती गंगाबाई तोमर, दवाना

मंडप के गड्ढे खोदते समय यह गीत गाया जाता है। झिरमिर-झिरमिर पानी बरसेगा और उसकी छोटी-छोटी बूंदें बड़ी ही सुहावनी और प्रिय लगेंगी। पति-पत्नी दोनों मिलकर यदि उस समय पर्वत पर बैठेंगे तो वह पर्वत धन्य हो जायेगा। तुम उसके प्रियतम हो और वह तुम्हारी प्रिया है। तुम मोर हो तो वह मोरनी है। पति-पत्नी दोनों मिलकर यदि उस समय सरोवर के किनारे बैठेंगे तो सरोवर सुहावना लगेगा। वह सरोवर धन्य हो जायेगा। तुम उसके प्रियतम हो और वह तुम्हारी प्रिया है। तुम सरोवर के हंस हो तो वह सरोवर की हंसिनी है। पति-पत्नी दोनों मिलकर उस समय यदि मन्दिर में बैठेंगे तो वह मन्दिर सुहावना लगेगा। तुम उसके प्रियतम हो, वह तुम्हारी प्रिया है। तुम मन्दिर के देवता हो तो वह मन्दिर में खड़ी नृत्यांगना के समान दिखाई देंगी।

दोनों मिलकर यदि उस समय मंडप में बैठेंगे तो मंडप सुहावना लगेगा। तुम उसके प्रियतम हो, वह तुम्हारी प्रिया है। तुम दूल्हे राजा के पिताश्री हो तो वह दूल्हे की माताश्री हैं।

मंडप

म्हारा मांडवऽ गणपति देव आवसेजी,
रिद्धी सिद्धी बिना शोभा नी होय।
मोतियन जड़्यो मांडवोजी।
म्हारा मांडवा शंकरदेव आवसेजी।
बाई गौरा बिना शोभा नी होय।
मोतियन जड़्यो मांडवोजी।
म्हारा मांडवा रामचन्द्र देव आवसे।
बाई सीता बिना शोभा नी होय।
मोतियन जड़्यो मांडवोजी।
म्हारा मांडवा ब्रह्माजी देव आवसेजी।
बाई सावित्री बिना शोभा नी होय।
मोतियन जड़्यो मांडवोजी।
म्हारा मांडवा बसंत भाई आवसे।
म्हारी लाड़ी बाई बिना शोभा नी होय।
मोतियन जड़्यो मांडवोजी।
म्हारा मांडवा दुर्गासिंह जंवई आवसे।
म्हारी शकुन बाई बिना शोभा नी होय।
मोतियन जड़्यो मांडवोजी॥

गीत–श्रीमती प्रेमलता चौरे, खंडवा

देवी–देवताओं का मंडप में आव्हान गीत है। मेरे मंडप में प्रथम पूज्य श्रीगणेशजी आयेंगे। और साथ में ऋिद्धी–सिद्धी को लायेंगे। बिना ऋिद्धी–सिद्धी के मंडप की शोभा नहीं होगी अर्थात् वे भी आयेंगी। मोतियों से आच्छादित मेरा मंडप है। मेरे मंडप में शंकरदेवजी आयेंगे और माता गौरी के बिना मंडप की शोभा नहीं आयेगी अर्थात् वे भी आयेंगी। मेरे मंडप में श्रीरामचन्द्र देवता आयेंगे और जानकीजी के बिना मंडप की शोभा नहीं होगी अर्थात् वे भी आयेंगी। मोती से आच्छादित मेरा मंडप है।

मेरे मंडप में सृष्टिकर्त्ता ब्रह्माजी आयेंगे और माता सावित्री बिना मंडप की शोभा नहीं बढ़ेगी अर्थात् वे भी उपस्थित होंगी। मेरे मंडप में बसंत भाई आयेंगे और उनकी दुल्हन के बिना मेरे मंडप की शोभा नहीं बढ़ेगी अर्थात् उनके साथ भाभी भी होंगी। मेरे मंडप में दुर्गासिंह दामाद आयेंगे और बहन शकुन्तला के बिना मंडप की शोभा नहीं बढ़ेगी यानी दोनों साथ आयेंगे। बहन

और दामाद के बिना मंडप शोभा नहीं पाता है। मोतियों से आच्छादित मेरा मंडप है। मंडप की शोभा निराली है।

मामेरा

काकड़ बाजा जंगी ढोल, गोया मऽ बाजऽ झाँझर जी॥
आयो म्हारो लखपति बाप, चून्दड़ लाया रेशमीजी॥
नापूं तो हाथ पचास, तोलूं तो तोला तीस कीजी॥
धरूँ तो चसकऽ म्हारो जीव, पेरूँ तो खिरऽ मोतिड़ा जी॥
काकड़ बाजा जंगी ढोल, गोया मऽ बाजऽ झाँझर जी॥
आयो म्हारो लखपति बीरो, चून्दड़ लाया रेशमी जी॥
नापूं तो हाथ पचास, तोलूँ तो तोला तीस की जी॥
धरूँ तो चसकऽ म्हारो जीव, पेरूँ तो खिर मोतिड़ा जी॥
काकड़ बाजा जंगी ढोल, गोया मऽ बाजऽ झाँझर जी॥
आयो म्हारो लखपति मामा, चून्दड़ लाया रेशमी जी॥
नापूँ तो हाथ पचास, तोलूं तो तोला तीस की जी॥
मेलूँ तो कलपऽ म्हारो जीव, पेरूँ तो मोतिड़ाखिर जासे जी॥

मामा की ओर से मंडप में बहन के लिये पूरे कपड़े देने का रिवाज है। इसलिए वह 'मामेरा' कहलाता है। इसमें 'कुटुम परावणी' होती है, यानी बहन के साथ उसके परिवार के एक-एक व्यक्ति के लिये वस्त्र लाये जाते हैं।

मंडप में बहन अपने भाई की आतुरता से प्रतीक्षा कर रही है। कब मेरा भाई आयेगा ? उसे घर का कुछ काम भी समझ में नहीं आ रहा है। वह बार-बार दरवाजे की ओर देख रही है। इतने में गाँव की सीमा पर हलचल सुनाई देती है। बहन को लगता है, मेरा भाई आ गया है। या मेरे पिताजी आ गये हैं। बहन का भाई आता है। बहन उन्हें मंगल टीका लगाती है। सम्मान के साथ घर में लाती है। बहन के लिये भाई रेशमी कीमती चूनरी लाया है। बहन उसे हर्ष विभोर होकर देखती है और नापती है। उसे चूनरी पचास हाथ लंबी लगती है, उसका वजन मात्र तीस तोले है। लगता है यदि मैं इसे नहीं पहनती हूँ तो मेरा मन उदास हो जाता है और यदि मैं उस चूनरी को पहन लेती हूँ तो उसके मोती टूट जाने का भय है। अंत में वह भाई और पिता की ओर से आई बहुमूल्य साड़ी को पहन लेती है।

मामेरा

बईणी का आँगणा मऽ पिपळई रे बीरा॥
जेपर चइढ़ी जोवऽ वाट माड़ी जाया चून्दड़ लावऽ॥

लावो तो दोय सारू लावजो रे बीरा॥
नई तो रयजो तमारा देश, माड़ी जाया चून्दड़ लावऽ॥
सम्पत थोड़ी विपत ओ बइणी विपत घणी हो बइणी॥
कसी पत आवां थारा देश, माड़ी जाई चून्दड़ लावऽ॥
गुवाण का धोरी गयणा मेल, माड़ी जाया चून्दड़ लावऽ॥
भावज की बेसर गयणा मेल॥
माड़ी जाया राखो म्हारा मंडप री शोभा॥
माड़ी जाया चून्दड़ लावऽ॥

बहन अपने भाई के पास संदेश पहुँचाती है। हे भाई! तुम्हारी बहन के आँगन में पीपल का वृक्ष है। उस पर चढ़कर बहन अपने भाई का रास्ता देख रही है। हे वीर! आज तुम्हारे भानजी की शादी है। अत: तुम अपनी बहन के लिये चूनर लेकर आना, लेकिन याद रखना लाओ तो सभी परिवार के लिये लाना, नहीं तो अपने घर पर ही रहना। इस पर भाई संदेशा पहुँचाता है– हे मेरी बहन! मेरे पास संपत्ति थोड़ी है और विपत्ति अधिक है। मैं आऊँ तो किस प्रकार आऊँ तुम्हारे दरवाजे पर? तब बहन कहती है– हे भाई! अपने बैलों को बेच दो, गिरवी रख दो या भाभी की नथनी गिरवी रख दो। किसी भी हालत में मेरे लिये चूनर लेकर ही आना। हे मेरे वीर! अपनी बहन की लाज रखने अवश्य आ जाना। मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगी।

मामेरा

बीरा गिरधर लाल, बीरा मदन गोपाल॥
इनी अवसर नहीं आयो करे॥
फिर कब आवसे॥
हूँ तो बिना रे मायलड़ी री डीकरी,
मैं तो बाबुल निरधन पायो रे।
बीरा कब आवसे॥
बीरा सावण सूखो भादवो,
फिर बरसे काई होसी रे।
बीरा कब आवसे॥
बीरा माथा की बिन्दी लावजो,
म्हारा टीको रतन जड़ावो रे,
बीरा कब आवसे॥
बीरा कान की झूमकी लावजो,
म्हारा लटकन रतन जड़ाओ रे,
बीरा कब आवसे॥

गला की माला लावजो,
म्हारी कालर रतन जड़ावजो रे।
बीरा कब आवसे॥
हाथ की चूड़ियाँ लावजो,
म्हारा छन्द-बन्द रतन जड़ाओ रे।
बीरा कब आवसे॥
अंग रा सालू लावजो।
म्हारी काँचली रतन जड़ाओ रे॥
बीरा कब आवसे॥
पाँय की पायल लावजो रे,
म्हारा बिछिया रतन जड़ाओ रे,
बीरा कब आवसे॥

हे भाई! तुम मामेरा जैसे मार्मिक अवसर पर नहीं आये, तो फिर कब आओगे? हे भाई! तुम्हें पता है, मैं बिना माँ की लड़की हूँ, पिता भी गरीब हैं। अब तुम्हारा ही आसरा है। तुम कब आओगे? हे भाई! सावन-भादों सूखे निकल जाने के बाद बरसात आये भी तो किस काम की। अवसर निकल जाने के बाद किसी भी चीज का कोई महत्त्व नहीं होता। मामेरा का अवसर निकल जाने के पश्चात् तुम आओगे तो तुम्हारा आना किसी काम का नहीं रहेगा।

हे भाई! तुम आओ तो मेरे सिर में लगाने के लिये सोने की बिंदियाँ लाना, उसमें कम से कम रत्न जड़ा हुआ हो। तुम कब आओगे? मैं तुम्हारी बेसब्री से प्रतीक्षा कर रही हूँ। हे भाई! कान के लिये झुमकी में सुन्दर रत्नों की लटकन लगवा कर लाना। गले की माला में बीचोंबीच हीरा जड़वाना। हाथ की चूड़ियाँ लाना, उसमें लगी घुघरियों के बीच रत्न जड़वा देना। हे भाई! शरीर पर ओढ़ने के लिये अच्छा शालू लाना। चोली में रत्न जड़े हों तो अच्छा लगेगा। पैरों में पहनने के लिये चाँदी की पायल लाना। पैर की अँगुलियों के बिछिया लाओ तो उसमें रत्न जड़वा देना। हे भाई! अब मामेरा में जल्दी आ जाओ। इतनी देर में बहन को शुभ सूचना मिलती है कि भाई मामेरा लेकर आ गये हैं, घर के बाहर भाभी सहित खड़े हैं। बहन उन्हें प्रसन्नता से कुंकुम तिलक करने दौड़ पड़ती है।

मामेरा

आज तो साँवलियो बीरो मायरो लई आयो जी।
मायरो लई आयो, बीरो म्हारो मामेरा लई आयो जी॥
आज तो साँवलियो ....
शालू लायो, दुशाला लायो, तपसीला री जोड़ी जी।
बईणी का कारण बीरो म्हारो बजाजी बणी आयो जी॥

आज तो साँवलियो ....
गुड़ लायो घी लायो, शक्कर की संगोलई जी।
बईणी का कारण, बीरो म्हारो बणियो बणी आयो जी॥
आज तो साँवलियो ....
गऊ लायो, दाल लायो, चावल की संगोलई जी।
बईणी का कारण बीरो म्हारो किरसाण्यो बणी आयो जी॥
आज तो साँवलियो बीरो मायरो लई आयो जी॥

गीत–श्रीमती तारे, भोपाल

इस गीत में भगवान स्वरूप, श्रीकृष्ण स्वरूप भाई का वर्णन है। आज मेरा सांवलिया प्रिय भाई सेठ की तरह मंडप में उपस्थित हो गया है। मामेरा ले आया है। मुझे सबसे अधिक खुशी है। वह सभी के लिये कपड़े लेकर आया है। वह शाल लाया है, दुशाले लाया है और साड़ियों का ढेर लाया है। आज बहन के कारण भाई बिल्कुल कपड़े का व्यापारी बनकर आ गया है। उसने मेरी लाज रख ली है। वह गुड़, घी, शक्कर की बोरियों की बोरियाँ लेकर आया है। बहन के कारण आज भाई बिल्कुल बनिया बनकर आया है। उसने मेरी लाज रख ली है। गेहूँ, दाल और चावल की बोरियाँ की बोरियाँ ही ले आया है। बहन के कारण आज भाई किसान बनकर आया है। उसने आज एक भाई का पूरा कर्त्तव्य निभाया है। ऐसे भाई पर मुझे गर्व है।

मामेरा

बीरा सबका पयलऽ रे तूकऽ निवत्यो॥
बीरा कहाँ रे लगाई बड़ी देर॥
झूकी जाजे रे फूल गुलाब का॥
म्हारा दादा जी भी आया म्हारी माय॥
माड़ी जायो ते नजर नी आयो॥
झुकी जाजे रे फूल गुलाब का॥
बाई धारी भावज नऽ मांड्यो रूसणो॥
समझावतऽ लागी बड़ी देर॥
झुकी जाजे रे फूल गुलाब का॥

गीत–श्रीमती प्रेमलता चौरे, खंडवा

हे भाई! मैंने आपको सबसे पहले निमंत्रण दिया था। हे भाई! आपने आने में इतनी देर कैसे लगा दी? हे गुलाब के फूल! तू मेरे भाई के स्वागत में झुक जाना। मेरे पिताजी भी आयें, मेरी माताजी भी आईं। लेकिन मेरा सहोदर वीर कहीं नजर नहीं आ रहा है। हे गुलाब के फूल! तू मेरे भाई के स्वागत में झुक जाना। हे बहन! तेरी भाभी रूठ गई थी। उसे मनाने में बड़ी देर लग गई। इसलिये भी आने में देर हो गई। हे गुलाब के फूल! तू मेरे भाई के स्वागत में झुके ही रहना।

पुवा झेलाना

पुवा लऽ वो लाड़ी पुवावन्ती हूजे॥
धणा लऽ वो लाड़ी धनवन्ती हूजे॥
लाख लऽ वो लाड़ी लखेणी हूजे॥
चणा लऽ वो लाड़ी चंगेरी हूजे॥
दाम लऽ वो लाड़ी दमयन्ती हूजे॥
वलोल लऽ वो लाड़ी वालेरी हूजे॥

मंडप में दुल्हन को बिठाकर पुवे (मालपुवे) गोद में झिलाये जाते है। चार सुहागिनें यह कार्य करती हैं। उसी समय आशीर्वाद स्वरूप गीत गाया जाता है।

हे दुल्हन! तुम पुवा लो और कुटुम्बवती हो। तुम्हारा परिवार बहुत बड़ा हो। धनिये लो दुल्हन, तुम धनवान हो। लाख का चूड़ा लो और लखपति हो। चने लो दुल्हन, तुम स्वस्थ और प्रसन्न रहो। हे दुल्हन! पैसे लो और दमयन्ती जैसी कर्त्तव्यपरायण बनो। चूड़ियाँ लो दुल्हन, तुम हमेशा सौभाग्यवती हो। यही मेरा आशीर्वाद है।

चिगट छोड़ाना

ओ ...... रूकमणी नऽ रोई-रोई भरियो तलाव॥
चिगट म्हारो खड़ो रह्यो॥
दूर दूर का सासु-ससरा आई गया॥
नऽ जिनगी का म्हारा माय-बाप नई आया॥
चिगट म्हारो खड़ो रह्यो॥
आ रे सायब म्हारा निवता दिया दगाबाज॥
नऽ जिनगी का म्हारा माय-बाप नई आया॥
चिगट म्हारो खड़ो रह्यो॥
आव रूकमणी अपणा घर पिछवाड़ऽ॥
गंगा जमुना वई रई नऽ,
न्हाई की धोई चिगट धोई नाखो॥

गीत-श्री संतोष कुमार यादव, दवाना

रुक्मिणी ने रो-रोकर तालाब भर दिया है। वह इतना रोई है। रो-रोकर वह कहती है- मेरे मैके से कोई नहीं आया, मेरा चिगट कौन छुड़ायेगा? दूर-दूर से मेरे सास-ससुर जी आ गये। पर, मेरे माता-पिता क्यों नहीं आये ? क्या कारण हो सकता है ? अब मेरा चिगट कौन छुड़ायेगा ?

हो सकता है मेरे स्वामी ने दगाबाजी की हो और मेरे माता-पिता को निमंत्रण ही नहीं दिया

हो। इसलिये भी मेरे माता–पिता नहीं आये हों, मेरा चिगट कौन छुड़ायेगा? हे रुक्मिणी! क्या हुआ तेरे माता–पिता नहीं आये तो। अपने घर के पीछे जो गंगा यमुना नदी बह रही है। वहीं जाकर आप स्नान कर लो, चिगट धो लो अपने मन में सन्तोष करो।

चिगट याने विवाह आरम्भ होने पर दूल्हा–दुल्हन जो कपड़े पहनते हैं, उन्हें चिगट के कपड़े कहा जाता है। प्रतिदिन इन्हीं कपड़ों में दूल्हा–दुल्हन को हल्दी, चिकसा आदि लगाया जाता है। स्नान के बाद भी यही कपड़े पहनने पड़ते हैं। यह कपड़े मंडप के दिन भाई मामेरा लेकर आता है, तब उतारे जाते हैं। भाई नहीं आये या जिसका भाई ना हो तब बहन की क्या हालत होगी– इसका प्रमाण इस गीत में है। बहन की व्याकुलता देखने लायक होती है।

वासी मंडप

तम तो क्यों हो मंडपड़ा जी अनमना॥
तमरा केलऽ सरीखा रोप्या खम्ब॥
मोतियन छायो मांडवो॥
तम तो क्यों हो रमेश भाई अनमना॥
तमरा बसन्त भाई सरीखी तमरी जोड़॥
मोतियन छायो मांडवो॥
इना मांडवऽ चवरास्या खम्ब॥
नख लख दिया बळऽ॥
दिवला बलजो रे माजुम रात॥
जव रे तिल्ली का होम होय॥
तम तो क्यों मोठी ववु अनमना॥
तमरी पुष्पा बाई सरीखी जोड़॥
मोतियन छायो मांडवो॥
इना मांडवऽ चवरास्या खम्ब॥
नव लख दिया बळऽ॥
दिवला बलजो रे माजम रात॥
जवं रे तिल्ली का होम होय॥
तम तो क्यों हो शारदा बाई अनमना॥
तमरी गीता बइणा सरीखी जोड़॥
मोतियन छायो मांडवो॥
इना मांडवऽ चवरास्या खम्ब॥
नव लख दिया बळऽ॥

दिवला बलजो रे माजुम रात॥
जवं रे तिल्ली का होम होय॥

गीत–श्रीमती गंगाबाई तोमर, दवाना

हे मंडप! तू आज उदास क्यों है? तुम्हारे चारों ओर केले के पौधे लगाये हैं। और तुम पर मोती के सदृश्य पत्ते लगाये हैं। फिर भी तुम उदास हो। हे रमेश भाई! तुम आज क्यों उदास हो? तुम्हारे बसन्त भाई जैसे भाई हैं फिर भी तुम उदास हो। इस मंडप के चारों खम्बे सारी पृथ्वी के खम्बे हैं। इसमें नौ लाख दीपक जल रहे हैं। हे दीपक! तुम सारी रात जलना, इसी मंडप में जव और तिल्ली से होम होगा, तब तक तुम जलते रहना। हे बड़ी बहू! तुम उदास क्यों हो? तुम्हारी जोड़ीदार पुष्पा बहू जो है। फिर भी तुम उदास हो। इस मंडप के चारों खम्बे पृथ्वी के खम्बे हैं, इसमें नौ लाख दीपक जल रहे हैं। हे दीपक! तुम सारी रात जलना, जब तक जव और तिल्ली का होम ना हो जाय।

हे शारदा बहन! तुम आज उदास क्यों हो? तुम्हारे साथ तुम्हारी बहन गीता जो है। फिर भी तुम उदास हो। सारे ब्रह्माण्ड में ऐसा अलौकिक मंडप नहीं है। उसमें नौ लाख दीपक जल रहे हैं। ये दीपक निरन्तर जलते रहें, इसके लिये जव और तिल्ली से यज्ञ होता रहेगा। यह शुभ मंडप कभी वासी नहीं होता है।

पंगत की जिमनार

रस मीठा चोखा जी रस मीठा॥
जी हम जीम्या ते झूठ नऽ बोल्या जी॥
रस मीठा चोखा.........................
म्हारी केल कमल की पातल जी॥
जामे दोना सरस नगीन जी॥
रस मीठा चोखा.........................
बन्सी गऊ की थूली जी॥
जामे खड़िया वाढ़ को गुड़ जी॥
रस मीठा चोखा.........................
साल कुमुद का चोखा जी॥
जामे सूर्या गाय रो घी॥
रस मीठा चोखा.........................
जिन्हऽ रोटी करी नव गजी॥
जामे हरिया मूंग की दाल जी॥
रस मीठा चोखा.........................
तार परमाण वढ़ी करी॥

पापड़ पुनेव चाँद जी॥
रस मीठा चोखा..........................
दही मोढ़ी नऽ कढ़ी करी॥
जामे जीरा को ढोल्यो बघार जी॥
रस मीठा चोखा..........................
तमनऽ लाडू जो बांध्या वाजन्या॥
खाजा मऽ भरिया खजूर जी॥
रस मीठा चोखा जी, रस मीठा,
जी हम जीम्या ते झूठ नी बोल्या जी॥

रस में सराबोर सुगन्धित चावल के साथ हमने स्वादिष्ट भोजन किया। इन चावलों के अलावा और भी पकवान थे, जिन्हें केल की पत्तलों पर परोसा गया था, उनके साथ में सुन्दर दोने भी थे। दोनों में सरस कढ़ी, सब्जी, खीर आदि भरे थे।

चावलों के साथ में बन्सी गेहूँ की थूली (दलिया) थी, जिसमें ताजा गन्नों से बनाया गुड़ डाला गया था। कुमुद धान के चावलों में कामधेनु गाय का घी डाला गया था। थूली के अलावा विशेष प्रकार की नवगजी रोटी भी थीं, जिसके साथ में श्रेष्ठ हरे मूंग की दाल बनाई गई थी। लम्बे आकार की पतली-पतली तार के समान बड़ी की सब्जी और पापड़ पूनम के चाँद के समान थे। दही को मोड़कर, दही बिलोकर कढ़ी बनाई गई थी, जिसमें जीरे का छोंक लगाया गया था। और इन्हीं के साथ में स्वादिष्ट वजनदार लडू थे, जिसमें अनेक प्रकार के मेवे काजू-किसमिस, बादाम डले थे। खाजा मिठाई खजूर से बनाई थी। इस प्रकार पंगती में बनाये गये पकवानों ने सभी लोगों को तृप्त कर दिया। सभी लोग विवाह में दिये गये लड़की वालों के दिव्य सुस्वादु भोजन की प्रशंसा करते थके नहीं थे।

पंगत जिमनार

बलदेव भाई नऽ जग आरम्या, तम जिमो ते गंगा जात॥
पागड़ी रा पेंच राल्या, हाथ जोड्या, तम जिमो ते गंगा जात॥
सालुड़ा रा छेड़ा छोड्या, हाथ जोड्या, तम जिमो ते गंगा जात॥
वीरेन्द्र भाई नऽ जग आरम्या, तम जिमो ते गंगा जात॥
पागड़ी रा पेंच राल्या, हाथ जोड्या, तम जिमो ते गंगा जात॥
लाड़ी ववू नऽ जग आरम्या, तम जिमो ते गंगा जात॥
सालुड़ा रा छेड़ा छोड्या, हाथ जोड्या, तम जिमो ते गंगा जात॥

बलदेव भाई ने विवाह की पंगती में सबको (सारे जग को) सहभोज के लिये आमंत्रित किया है। पत्तलें परोसी जा चुकी हैं, और सभी खाना खाने बैठे हैं। तब बलदेव भाई ने अपनी

पगड़ी उतार उसे दोनों हाथों में रखकर पूरी जाति बिरादरी को हाथ जोड़कर भोजन करने की विनती की। जात गंगा आप भोजन पाईये। उसके बाद उनकी पत्नी ने अपनी साड़ी के पल्लू को दोनों हाथों में दबाया और पूरी जात गंगा को परम्परा अनुसार हाथ जोड़कर प्रणाम किया। भोजन पा लेने की रजा दी।

पंगत जिमनार

बाई ओ गोदावरी थारी थूली वो रस मीठी लागऽ।
खाई गया साजन लोग ओ हम आँख न देखी॥
बाई ओ गंगा थारा चोखा ओ रस मीठा लागऽ।
खाई गया देवर जेठ ओ हम आँख न देखी॥
बाई ओ पुष्पा थारी दाल वो रस मीठी लागऽ।
खाई गया भाई भतीजा ओ हम आँख न देखी।
बाई ओ उषा थारी स्याक रस मीठी लागऽ।
खाई गया मामा ममसाल ओ हम आँख न देख्या॥

हे गोदावरी बाई! तुम्हारी थूली तो बहुत ही स्वादिष्ट और मीठी बनी थी। हमने उसे चखा था, पर खाया नहीं। उसे तो तेरे सगे-सम्बन्धी लोग ही खा गये। हमने तो आँखों से उसे देखा तक नहीं। हे गंगा बाई! तेरे चावल तो अच्छे स्वादिष्ट और मीठे थे, मानो रस में सराबोर थे। हमने उन्हें चखा भर था, पर खाया नहीं। उन चावलों को तो तुम्हारे जेठ-देवर ही सबके सब खा गये। हमने आँखों से उन चावलों को देखा तक नहीं।

हे पुष्पा बाई! तुम्हारी दाल तो बड़ी स्वादिष्ट और मीठी थी। तुम्हारी दाल को हमने चखा भर था, खाया नहीं। उस दाल को तेरे भाई-भतीजे ही खा गये है। हमने उस दाल को आँखों से देखा तक नहीं। हे बहू उषा! तुम्हारी सब्जी बड़ी ही स्वादिष्ट बनी थी, हमने उसे चखा ही था, खाया नहीं। उसे तो तेरे मामा परिवार के भाई वगैरा ही खा गये। हमने तो उसे आँखों से देखा तक नहीं।

गोतरेज

गाड़ी जुपी नऽ म्हारी बिजासणी माता आया।
या गाड़ी कुण छोड़ावऽ॥
गाड़ी छोड़ावऽ म्हारो लोकेन्द्र भाई सौभाग्यो।
या गाड़ी वो रे छोड़ावऽ॥
गाड़ी को मुड़ी गयो आखो हो देवी।
धवल्या नऽ मांड़ी छे धुरऽ॥

सोन्ना मंडाऊ थारी सिंगड़ी रे नांद्या।
रूप्पा मंड़ाऊ थारा खुरऽ॥
गाड़ी जुपी नऽ म्हारी बिजासणी माता आया।
या गाड़ी कुण छोड़ावऽ॥
गाड़ी छोड़ावऽ म्हारो बसन्त भाई सौभाग्यो,
या गाड़ी वो रे छोड़ावऽ॥
गाड़ी को मुड़ी गयो आखो हो देवी।
धवल्या नऽ माड़ी छे धुरऽ॥
सोन्ना मंड़ाऊ थारी सिंगड़ी रे नाद्या।
रूप्पा मंड़ाऊ थारा खुरऽ॥

गाड़ी में बैठकर हमारी बिजासनी देवी जा रही हैं। इस गाड़ी को कौन सा भाई छुड़वा सकता है। इस गाड़ी को रोककर देवी का सम्मान कौन करेगा? इस गाड़ी को समर्थ लोकेन्द्र भाई रोक सकते हैं। हे देवी! गाड़ी की धुरी टूट गई है और बैल भी थक गये हैं। थोड़ा विश्राम कर लीजिये। मैं आपका योग्य आदर सत्कार करूँगा। बैलों के सींगों को सोने से मढ़वा दूँगा। उनके खुरों को चाँदी से मंडित कर दूँगा। लोकेन्द्र भाई विनती कर रहे हैं। उनकी पत्नी देवी के पाँव पखार रही हैं।

हे देवी! आप कुछ विश्राम कर लीजिये। गाड़ी में बैठकर हमारी बिजासनी देवी जा रही हैं। इस गाड़ी को कौन सा भाई छुड़वा सकता है? इस गाड़ी को रोककर देवी का सम्मान कौन करेगा? इस गाड़ी को सौभाग्यशाली बसन्त भाई रोक सकते हैं। हे देवी! गाड़ी की धुरी टूट गई है। बैल भी काफी थक गये हैं। थोड़ा विश्राम कर लीजिए मैं आपका योग्य सत्कार करूँगा। बैलों के सींगों को सोने से और खुरों को चाँदी से मढ़वा दूँगा। बसन्त भाई विनती कर रहे हैं। उनकी पत्नी आँचल पसार कर देवी के चरण स्पर्श कर रही हैं। हे देवी! आप कुछ देर विश्राम कर लीजिए।

पूर्वजों को निमंत्रण

सरग भवन्ती ओ गिरधरणी, एक संदेशो लई जा।
सरग का मोटा दाजी सी यो कयजो।
तम घर पगरण होय।
काचा सूत सी हम बाँधिया जी, हमरो ते आवणूं नी होय।
जेमऽ सारो ओमऽ सारजो, हमरो ते आवणूं नी होय।
ताला जड़िया रे लुहाबन्द का।
जड़ी दिया वजीर किवाड़।
हमरो ते आवणूं नी होय॥

सरग भवन्ती ओ गिरधरणी, एक संदेशो लई जा।
सरग की मोटी माय सी यो कयजो।
तम घर नातणी को याव॥
काचा सूत सी हम बाँधिया, हमरो ते आवणूं नी होय।
जेमऽ सारो ओमऽ सारजो, हमरो ते आवणूं नी होय।
ताला जड़िया रे लुहाबन्द का।
जड़ी दिया वजीर किवाड़।
हमरो ते आवणूं नी होय॥

यह गीत विवाह में पूर्वजों को निमंत्रण देकर बुलाया जाने वाला गीत है। यह गीत पूर्वजों का स्मरण गीत है।

हे स्वर्ग तक उड़ान भरने वाली गिरधरनी! हमारा एक संदेशा ले जा। स्वर्गवासी हमारे बड़े दादाजी से कहना कि उनके यहाँ शुभ कार्य हो रहा है। शुभ विवाह का निमंत्रण आपको भेजा है और बुलाया है। तब गिरधरनी दादाजी का संदेशा वापस लाती है- हम नहीं जा सकते हैं। हम मजबूर हैं। यहाँ स्वर्ग में हमें कच्चे सूत से बाँधकर रखा गया है। उसे हम तोड़ नहीं सकते। बाँधने के बाद हमें वज्र के समान किवाड़ों के पीछे मजबूत लोहे के ताले लगाकर बन्द कर दिया है। इसलिये हमारा आना नहीं हो सकेगा, जिस प्रकार भी विवाह का कार्य हो रहा है, उसे उसी प्रकार सम्पन्न कर लें। हमारा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।

हे स्वर्ग तक घूमने वाली गिरधरनी! हमारा एक संदेशा ले जा। स्वर्गवासी हमारी बड़ी माँ (दादी माँ) से कहना कि उनके यहाँ उनकी नातिन का विवाह है। आपको निमंत्रण भेजा है और बुलाया है। तब दादी माँ ने वापस संदेशा भेजा- हम नहीं आ सकते हैं। हम मजबूर हैं। स्वर्ग में हमें कच्चे सूत से बाँधकर रखा गया है। जिस स्थान पर हमें रखा है, वहाँ लोहे के वज्र के समान मजबूत दरवाजे लगा दिये हैं। उन दरवाजों पर लोहे के बड़े-बड़े ताले लगा दिये हैं। हमारा निकलना मुश्किल है। जिस प्रकार भी विवाह का कार्य हो रहा है, उसे उसी तरह सम्पन्न कर लें। हम कभी नहीं आ सकते हैं। हमारा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है। हम यही कर सकते हैं।

बारात प्रस्थान

तालो दियो कूची केकऽ सौंपी म्हारा बंदड़ा,
लाल जरी को फेटो।
हाँ रे तू नऽ दवाणा में धूम मचई म्हारा बंदड़ा,
लाल जरी को फेटो।
हाँ रे थारी माता बई को काई भरोसो म्हारा बंदड़ा,
लाल जरी को फेटो।

तालो दियो कूची केकऽ सौंपी म्हारा बंदड़ा,
लाल जरी को फेटो।
हाँ रे थारी काकी काई भरोसो, म्हारा बंदड़ा,
लाल जरी को फेटो।
तालो दियो कूची केकऽ सौपी म्हारा बंदड़ा।
लाल जरी को फेटो।
हाँ रे थारी मामी को काई भरोसो,
म्हारा बंदड़ा लाल जरी को फेटो।
तालो दियो कूची केकऽ सौंपी म्हारा बंदड़ा,
लाल जरी को फेटो।
हाँ रे थारी भावज को काई भरोसो म्हारा बंदड़ा,
लाल जरी को फेटो।

हे बना! तुमने ताला देकर चाबी किसको सौंपी है ? आपके माथे पर लाल जरीदार साफा बँधा है। तुम आज बहुत सुन्दर लग रहे हो। तुम्हारी बारात दवाना जा रही है। वहाँ धूम मच जायेगी। हे बना! कहीं आपने चाबी अपनी माताजी को तो नहीं सौंप दी, आपकी माताजी का क्या भरोसा है ?

हे बना! कहीं ताला लगाकर चाबी आपने काकीजी को तो नहीं सौंप दी, आपकी काकीजी का क्या भरोसा है ? आपके सिर पर लाल रंग का जरीदार साफा बँधा है। तुम आज बहुत सुन्दर लग रहे हो। हे बनाजी! आपने ताला लगाकर चाबी किसे सौंप दी है ? कहीं चाबी आपने भाभी को तो नहीं सौंप दी, आपकी भाभी का क्या भरोसा है ? हे बना! आपने ताला लगाकर चाबी किसे सौंप दी है ? कहीं आपने अपनी मामीजी को तो चाबी नहीं सौंप दी है। आपकी मामी का भी क्या भरोसा है ?

बारात प्रस्थान

पड़ी रे नगारा पर धौंस, भँवर थारी जान मऽ रे,
दादाजी बिन केमऽ चालसा रे।
समरत दादाजी साथ, भँवर थारी जान मऽ रे,
धूप पड़ नऽ रंग मेहला मऽ रे।
पड़ी रे नगारा पर धौंस, भँवर थारी जान मऽ रे,
काकाजी बिन केमऽ चालसा रे।
समरत काकाजी साथ, भँवर थारी जान मऽ रे,
धूप पड़ी नऽ रंग मेहला मऽ रे।
पड़ी रे नगारा पर धौंस, भँवर थारी जान मऽ रे,

मामाजी बिन केमऽ चालसा रे।
समरत मामाजी साथ, भँवर थारी जान मऽ रे।
धूप पड़ऽ नऽ रंग मेहला मऽ रे।
पड़ी रे नगारा पर धौंस, भँवर थारी जान मऽ रे,
वीरा जी बिन केमऽ चालसा रे।
समरथ बीराजी साथ, भँवर थारी जान मऽ रे,
धूप पड़ नऽ रंग मेहला मऽ रे।

बारात जाने की तैयारी हो चुकी है। नगाड़ा और ढोल बजाकर सूचना दी जा रही है। बारात में चलने वाले तैयार होकर आ जायें। सजे-धजे लोग इकट्ठा हो रहे हैं। दूल्हे को पता लगा है कि दादाजी बारात में नहीं जा रहे हैं। बड़ी हलचल मच गई है। दूल्हा उदास बैठा है। क्या मैं अकेला ही बारात लेकर जाऊँगा? दादाजी के बिना मैं कैसे जाऊँ? दूल्हा दादी माँ से कहता है- दादाजी के बिना बारात लेकर नहीं जाऊँगा।

तब दादी माँ कहती है- हे बेटा! तुम्हारे समर्थ दादाजी भी तुम्हारी बारात में शामिल होकर जा रहे हैं। वह देखो, धूप चढ़ चुकी है। रंगमहल में हलचल तुम्हारे दादाजी के कारण हो रही है। दूल्हा काकी, मामी, भाभी से कहता है- मैं काकाजी, मामाजी, भाईजी के बिना नहीं जा सकता हूँ। तब काकी, मामी, भाभी दूल्हे से कहती हैं- तुम्हारे साथ समर्थ काकाजी, मामाजी, भाई भी बारात जा रहे हैं। तुम अकेले थोड़े जा रहे हो। धूप चढ़ चुकी है। रंगमहल में सब उसी की तैयारी में जुटे हैं। तुम उदास मत हो।

वर पड़छन

सखी हो पड़छो राजा भीम घर की नार,
साँवल हरि की आरती॥
सखी हो आसा भर्‌या नित नव होय,
साँवल हरि की आरती॥
लाओ रे साल का खांडणा, पड़छो ते जदुपति राय,
साँवल हरि की आरती॥
लाओ रे साल का झंडना, पड़छो ते राजा भीम घर की नार,
साँवल हरि की आरती॥
लाओ रे रेशम कातणा, पड़छो ते राजा भीम घर की नार,
साँवल हरि की आरती॥
लाओ रे मही का बिलोवणा, पड़छो ते राजा भीम घर की नार,
साँवल हरि की आरती॥

लाओ रे रण का जुझणा, पड़छो ते राजा भीम घर की नार,
साँवल हरि की आरती॥
लाओ रे जंगल रोयसो, पड़छो ते राजा भीम घर की नार,
साँवल हरि की आरती॥

जब दूल्हा-दुल्हन से विवाह करने हेतु आकर मंडप के पास तोरण में खड़ा होता है, तब यह गीत गाया जाता है। वर पड़छना यानी की दूल्हे की नजर उतारना। दूल्हा तोरण में एक बाजूट (चौकी) पर खड़ा है। दूल्हे के सामने दो स्त्रियाँ या बच्चे कोई भी एक कपड़े को पकड़कर परदा लगाते हैं। दूल्हे के सामने परदे की दूसरी ओर सासुजी मंडप में खड़ी हैं। वहीं मंडप में खड़ी सुहागन स्त्रियों से आरती लेकर सासुजी सबसे पहले दूल्हे के मस्तक पर कुमकुम का तिलक लगाकर चावल लगाती हैं।

इसके पश्चात् दूल्हे के हाथ में नारियल और नेग स्वरूप रुपये रखती हैं। फिर एक सूप में रखे हुए गेहूँ के आटे के पाँच दीपक, चावल की पाँच मुठिया (पिण्ड), राख की पाँच मुठिया तथा ये सभी पाँच रोटी के टुकड़ों पर रखा जाता है। तब दुल्हन की माँ दूल्हे के पास जाकर दोनों हाथों में वही रोटी के टुकड़े लेकर क्रास की मुद्रा में दूल्हे के कमर के समीप से अगल-बगल छोड़ देती है। पुनः एक बार दोनों हाथों में रोटी के टुकड़े लेकर दूल्हे के कंधे के पास से पीछे की ओर फेंक देती है। तथा एक बचा हुआ टुकड़ा वह सिर के ऊपर से पीछे की ओर फेंक देती है। इसके बाद सूप को पानी के छींटे देकर शुद्ध करती है। पश्चात् वह अपने सिर पर ओढ़े हुये कपड़े का एक सिरा पकड़कर सूप में लगाकर पहले दूल्हे के पैरों को लगाती है, फिर घुटनों को लगाती है, फिर क्रम से कमर पर लगाती है फिर एक बार कंधे को लगाती है और अन्त में वह सूप को दूल्हे के मौढ़ को लगाती है। यह क्रियाएँ वह पाँच-पाँच बार करती है। पहले वह सूप से, फिर मूसल से, उसके बाद छाछ बनाने की मंथनी से, धनुष के तीर से, तकली से और अन्त में जंगल की घास रोयसा से दूल्हे को पड़छती है यानी नजर उतारती हैं। इस समय महिलाएँ सामूहिक रूप से गीत गाती हैं।

तात्पर्य यह भी है कि भीम जैसे बलशाली दामाद को किसी की नजर लगी हो तो वह उतर जाय। साँवल हरि की आरती का सीधा मतलब यह भी है कि मैं आरती लेकर आपका सम्मान कर रही हूँ। भगवान के समान ही मैं आपका स्वागत कर रही हूँ। राजा भीम घर की नार का सीधा तात्पर्य यह है कि भीम जैसा बलशाली बेटा आज विवाह करके दुल्हन को लेकर आ गया है।

नोट : यह गीत विवाह में चार बार गाया जाता है। पहली बार इसे दूल्हे को तोरण बाहर करते समय गाया जाता है। दूसरी बार दुल्हन के मंडप के तोरण के सामने खड़े दूल्हे के सामने, तीसरी बार दुल्हन को विदा करते समय गाया जाता है तथा चौथी बार दूल्हा-दुल्हन को घर लेकर आते हैं, तब गाया जाता है।

लग्न

तूनऽ अरोड़-मरोड़ घर लियो रे रायवर, मरोड़ घणी॥
तू तो मांग्या गयणा लाया रे रायवर, मरोड़ घणी॥
थारा सोनी बाप नऽ कियो रे रायवर, मरोड़ घणी॥
तूनऽ अरोड़-मरोड़ घर लियो रे रायवर, मरोड़ घणी॥
तू तो मांग्या चढ़ावा लायो रे रायवर, मरोड़ घणी॥
थारा बजाजी बाप नऽ कियो रे रायवर, मरोड़ घणी॥
तूनऽ अरोड़-मरोड़ घर लियो रे रायवर, मरोड़ घणी॥
तू तो मांग्या मऊड़ लायो रे रायवर, मरोड़ घणी॥
थारा गंधी बाप नऽ कियो रे रायवर, मरोड़ घणी॥
तूनऽ अरोड़-मरोड़ घर लियो रे रायवर, मरोड़ घणी॥
तू तो मांग्या लड़ावा लायो रे रायवर, मरोड़ घणी॥
थारा मोची बाप नऽ कियो रे रायवर, मरोड़ घणी॥
तूनऽ अरोड़-मरोड़ घर लियो रे रायवर, मरोड़ घणी॥

हे दूल्हे राजा! तुम जितने अकड़ रहे हो न, उससे कहीं ज्यादा अकड़ हम रखते हैं। तुम्हारी शान झूठी है। तुमने अपना घर इधर-उधर से जमाया है। हे दूल्हे राजा! तुम विवाह में जितना सामान लाये हो, माँग-माँगकर लाये हो। वह जो सुनार है ना, वह तेरा क्या लगता है ? तेरा पिता तो नहीं है। तू उससे गहने माँगकर ले आया है।

हे दूल्हे राजा! तुम विवाह में जो कपड़े लाये हो, वह भी माँगकर लाये हो। वह जो बजाजी है ना, वह तुम्हारा पिताजी है। तुम उसी से माँगकर कपड़े ले आये हो। हे दूल्हे राजा! तुम विवाह में मौढ़, कुमकुम लाख की चूड़ियाँ लाये हो, वह भी माँगकर लाये हो, वह जो सुगंधी और लखेरा है, वह तुम्हारा बाप है। तुम उसी से सब कुछ माँगकर ले आये हो।

हे दूल्हे राजा! तुम विवाह में जो जूते और चप्पल लाये हो, वे भी माँगकर लाये हो। वह जो जूते बेचने वाला है ना, वह तुम्हारा बाप है। तुम उसी से जूते चप्पल माँगकर ले आये हो। तुमने किसी भी वस्तु का मूल्य नहीं दिया है। सब चीजें माँग-मूँगकर लाये हो।

चवरी-भँवरी

थें मती जाणो हो केशरिया दुल्लव मोटा राय।
मोटी म्हारा राय, दादा जी की चवरी राज॥
इनी चवरी बड़ा-बड़ा राज, गरास्या बठ्या राज।
इनी चवरी बड़वानी का अमुक जंवई बठ्या राज॥

उनकी साथ सदा सौभागेण शारदा बाई परण्या राज।
थें मती जाणो हो केशरिया दुल्लव मोटा राय॥
मोटी म्हारा राय, दादाजी की चवरी राज।
इनी चवरी बड़ा-बड़ा राज, गरास्या बठ्या राज॥
इनी चवरी जसवाड़ी का अमुक जंवई बठ्या राज॥
उनकी साथ सदा सोभागेण गीताबाई परण्या राज॥
थें मती जाणो हो केशरिया दुल्लव मोटा राय।
मोटी म्हारा राय, दादाजी की चवरी राज॥
इनी चवरी बड़ा-बड़ा राज, गरास्या बठ्या राज।
इनी चवरी पोखर का अमुक जंवई बठ्या राज॥
उनकी साथ सदा सोभागेण उमाबाई परण्या राज॥
थें मती जाणो हो केशरिया दुल्लव मोटा राय।
मोटी म्हारा राय, दादाजी की चवरी राज॥
इनी चवरी बड़ा-बड़ा राज, गरास्या बठ्या राज।
इनी चवरी दवाना का अमुक जंवई बठ्या राज॥
उनकी साथ सदा सोभागेण शकुनबाई परण्या राज।
थें मती जाणो हो केशरिया दुल्लव मोटा राय॥
मोटी म्हारा राय, दादाजी की चवरी राज।
इन चवरी हतनावर का अमुक जंवई बठ्या राज।
उनकी साथ सदा सोभागेण कमलाबाई परण्या राज॥
थें मती जाणो हो केशरिया दुल्लव मोटा राय॥
मोटी म्हारा राय, दादाजी की चवरी राज।
इनी चंवरी बड़ा-बड़ा राज, गरास्या बठ्या राज।
इनी चवरी बड़वानी का अमुक जंवई बठ्या राज॥
उनकी साथ सदा सोभागेण सरजूबाई परण्या राज।
थें मती जाणो हो केशरिया दुल्लव मोटा राय॥
मोटी म्हारा राय, दादाजी की चवरी राज।
इनी चवरी बड़ा-बड़ा राज गरास्या बठ्या राज॥
इनी चवरी दवाना का अमुक जंवई बठ्या राज।
उनकी साथ सदा सोभागेण दुर्गाबाई परण्या राज॥
थें मती जाणो हो केशरिया दुल्लव मोटा राय।
मोटी म्हारा राय, दादाजी की चवरी राज॥
इनी चवरी बड़ा-बड़ा राज, गरास्या बठ्या राज।

इनी चवरी मोठापुरा का अमुक जंवई बठ्या राज॥
उनकी साथ सदा सोभागेण सेवन्तीबाई परण्या राज।

हे दूल्हे राजा! तुम मत जानना कि मेरे दादाजी के यहाँ का कोई छोटा-मोटा मंडप है। यह प्रतिष्ठादायी विशाल मंडप है। इस मंडप में मेरे दादाजी ने कई शादियाँ सम्पन्न कराई हैं। मेरा बहुत बड़ा कुटुम्ब-परिवार है। इस चवरी पर बड़े-बड़े दामाद लोग बैठे हैं। तुम अकेले ही इस चवरी पर नहीं बैठे हो, इस चवरी पर बड़वानी के अमुक सरदार दामाद बैठे थे। उनके साथ में सदा सौभाग्यवती शारदाबाई का विवाह सम्पन्न हुआ था। इसी चवरी पर जसवाड़ी के अमुक दामाद बैठे थे, उनके साथ गीताबाई का पाणिग्रहण संस्कार हुआ था। इसी चवरी पर पोखर के अमुक दामाद बैठे थे। उनके साथ उमाबाई का विवाह सम्पन्न हुआ था। इसी चवरी पर दवाना गाँव के श्रेष्ठी दामाद बैठे थे। उनके साथ शकुन्तलाबाई का पाणिग्रहण संस्कार हुआ था। इसी चवरी पर हतनावर के अमुक दामाद बैठे थे। उनके साथ में सौभाग्यवती कमलाबाई का विवाह हुआ था। इसी चवरी पर बड़वानी के अमुक दामाद बैठे थे। उनके साथ सदा सौभाग्यवती सरजूबाई का पाणिग्रहण संस्कार हुआ था। इसी चवरी पर मोटापुरा के अमुक दामाद बैठे थे। उनके साथ सेवन्तीबाई का पाणिग्रहण हुआ था। इस मंडप की लम्बी परम्परा है। यह मंडप बहुत विशाल है।

चवरी-भँवरी

सोवन चवरी मची हो चवरी, मची ते मंडप मांय।
लाड़ी का दादाजी कऽवरा रे बुलाओ, साँवल हरि की आरती॥
दादाजी बोल्या दाइजो हो भरी सभा का मांय।
बेटी देवां-देवां गव्वा केरो दान, साँवल हरि की आरती॥
लाड़ी का काकाजी कऽवरा रे बुलाओ, साँवल हरि की आरती॥
काकाजी बोल्या दाइजो हो भरी सभा का मांय।
बइणी देवां-देवां पलंग गास्या को दान, साँवल हरि की आरती॥
लाड़ी का बीराजी कऽवरा रे बुलाओ, साँवल हरि की आरती॥
वीराजी बोल्या दाइजो हो, भरी सभा का मांय।
बइणी देवां-देवां चरवा दुकड़ी को दान, साँवल हरि की आरती॥
लाड़ी का मामाजी कऽवरा रे बुलाओ, साँवल हरि की आरती॥
मामाजी बोल्या दाइजो भरी हो सभा का मांय॥
बइणी देवां देवां टोढी झुमका को दान, साँवल हरि की आरती॥

सोने जैसी चवरी की यज्ञ वेदिका मंडप के बीचोंबीच बनी हुई है। भाँवर (चवरी) फिरने का समय हो गया है। दुल्हन के पिताजी को बुलाईये, वे दहेज कब देंगे ? पिताजी आते हैं और

कहते हैं- मैं दहेज इसी भरी सभा में ही दूँगा। मैं दूल्हा-दुल्हन को बछड़े सहित गायों का दान करता हूँ। तब दुल्हन के काकाजी को बुलाया जाता है। काकाजी आते हैं, कहते हैं- मैं इस सभा बीच दुल्हन और दूल्हे को पलंग सहित बिस्तर दान करता हूँ। फिर भाई के बुलाया जाता है। भाई आते हैं। हाथ में जल लेकर संकल्प छोड़ते हैं- मैं दूल्हा-दुल्हन के मस्तक पर कुंकुम चावल लगाकर चरवा-दुकड़ी (दोनों बड़े तांबे के पात्र) दान करता हूँ। मामाजी को बुलाया जाता है, मामाजी आते हैं। दूल्हा-दुल्हन के मस्तक पर कुंकुम-चावल लगाकर टोड़ी और झुमके जैसे गहनों का दान करते हैं।

चवरी-भँवरी

पयलो जो कावो तम फिरो रे गरास्या,
दादाजी दीसे तमकऽ दायजो॥
गव्वा भी दीसे नऽ बछड़ा भी दीसे,
तोय नी समझे दुल्लव रायजी॥
दूसरो जो कावो तम फिरो रे गरास्या,
पिताजी दीसे तमकऽ दायजो॥
पलंग भी दीसे न गास्या भी दीसे,
तोय नी समझे दुल्लव रायजी॥
तीसरो जो कावो तम फिरो रे गरास्या,
काकाजी दीसे तमकऽ दायजो॥
चरवा भी दीसे नऽ दुकड़ी भी दीसे,
तोय नी समझे दुल्लव रायजी॥
चौथो जो कावो तम फिरो रे गरास्या,
मामाजी दीसे तमकऽ दायजो॥
दोरो भी दीसे न मूंदी भी दीसे,
तोय नी समझे दुल्लव रायजी॥
पांचवो जो कावो फिरो रे लाडकली,
वीराजी दीसे तमकऽ दायजो॥
टोडी भी दीसे नऽ झुमका भी दीसे,
तोय नी समझे लाड़कली॥
छठो जो कावो फिरो रे लाड़कली,
फुवाजी दीसे तमकऽ दायजो॥
टिक भी दीसे न टिमण्यो भी दीसे,
तोय नी समझे लाड़कली॥

सांतवो जो कावो फिरो रे लाड़कली,
जीयाजी दीसे तमकऽ दायजो॥
बैला भी दीसे न बिछिया भी दीसे,
तोय नी समझे लाड़कली॥

हे दूल्हे राजा! आप पहला फेरा लगाईये। आपको दादाजी गाय और बछड़े का दान देंगे। लेकिन दूल्हे राजा इससे भी संतुष्ट नहीं हैं। हे दूल्हे राजा! आप दूसरा फेरा लगाईये। आपको पिताजी पलंग-गादी का दान देंगे। लेकिन दूल्हे राजा इससे भी खुश नहीं हैं। हे दूल्हे राजा! आप तीसरा फेरा लगाईये। आपको काकाजी चरवा और दुकड़ी (दोनों तांबे के बर्तन) देंगे। इससे भी दूल्हे राजा संतुष्ट नहीं हुये।

हे दूल्हे राजा! आप चौथा फेरा लगाईये। आपको मामाजी सोने की चेन और अंगूठी दहेज में देंगे। इससे भी दूल्हे राजा खुश नहीं हैं। हे दुल्हन! पाँचवा फेरा तुम लगाओ। भैयाजी तुम्हें दहेज में टोड़ी और झुमका का दान करेंगे। उससे भी दुल्हन संतुष्ट नहीं है। हे दुल्हन! छठवाँ फेरा तुम लगाओ। फूफाजी तुम्हें दहेज देंगे। वे पुराने जमाने के टिक और टीमन्या गहने देंगे। पर इन आभूषणों से भी दुल्हन खुश नहीं है। हे दुल्हन! तुम सातवां फेरा लगाओ। जीजाजी तुम्हें दान देंगे। वे तुम्हें दहेज में पुराने चलन के बिछिया और बेला दान में देंगे। इस पर भी दुल्हन खुश नहीं है। पिता, भाई, मामा, काका आदि यथाशक्ति दुल्हन के लिये कन्यादान करते हैं।

विदाई

ठंड़ा लिमड़ा री छाया, बसी मात पिता की माया।
माया तोड़नू पड़से कि सासरऽ जाणूं पड़से॥
जसो कुवा मऽ को डोल बसा ससरा जी का बोल।
बोल सुनन पड़से कि सासर जाणूं पड़से॥
ठंड़ा लिमड़ा री ....
जसो कुवा मऽ को बस्सो, वसो सासुजी को ठसको।
ठसको सयणु पड़से कि सासर जाणूं पड़से॥
ठंड़ा लिमड़ा री ....
जसा तवा पर का रोटा, वसा जेठजी छे मोटा।
सरम करनु पड़से कि सासरऽ जाणूं पड़से॥
ठंड़ा लिमड़ा री ....
जसी मही मऽ की रवी, वसी जेठाणी छे मोटी।
काम करणु पड़से कि सासरऽ जाणूं पड़से॥
ठंड़ा लिमड़ा री ....

जसो गोदी मऽ को बालो, वसो देवर छे प्यारो।
लाड़ करणु पड़से कि सासरऽ जाणू परसे॥
ठंड़ा लिमड़ा री ....
जसी साथ मऽ की सई, वसी देराणी छे बईण।
निभाउणुं पड़से कि सासरऽ जाणू परसे॥
ठंड़ा लिमड़ा री ....
जसी कणियर की सोटी, वसी ननंद बाई छे मोटी।
पांय लागणु परसे कि सासरऽ जाणूं पड़से॥
ठंड़ा लिमड़ा री ....
जसो कम्मर मऽ को छल्लो, वसो सायबजी को पल्लो।
पल्लो बांधणु पड़से कि सासरऽ जाणूं पड़से॥
ठंड़ा लिमड़ा री...........................

हे बेटी! नीम की ठंडी शीतल छाँव की तरह माता-पिता की छाया होती है। मायके की ममता हर स्त्री के मन में अत्यन्त गहरी होती है। इस ममता को छोड़कर एक दिन हर लड़की को ससुराल जाना पड़ता है। मोह-माया के सारे बन्धन तोड़कर लड़की को अपना घर बसाना ही पड़ता है। जिस प्रकार कुएँ में घड़े के गले में बँधी रस्सी कसी हुई होती है, उसी प्रकार सास-ससुर की ठसक हर लड़की को सहन करनी पड़ती है। आखिर किसी भी लड़की को ससुराल जाना ही पड़ता है। जिस प्रकार तवे पर बनाई जाने वाली जुवार की रोटी मोटी होती है, उसी प्रकार जेठजी घर के मोटे हैं। यानी उनका सम्मान घर में सबसे ऊपर है। उनकी शर्म करनी ही पड़ती है। आखिर एक दिन हर लड़की को ससुराल जाना ही पड़ता है।

जैसे छाछ बनाने की मटकी में मथानी होती है, उस प्रकार जेठानी होती है। उसी प्रकार जेठानी के आगे मथानी की तरह हर देवरानी को काम करना ही पड़ता है। जिस प्रकार गोद में खेलने वाला बालक होता है, ठीक उसी प्रकार अबोध, भोला और जिद करने वाला प्रिय देवर होता है। देवर का लाड़-प्यार उसी प्रकार करना ही पड़ता है। आखिर एक दिन लड़की को ससुराल जाना ही पड़ता है।

जिस प्रकार बचपन की सहेली होती है, उसी प्रकार देवरानी बहन के समान होती है। उसे निभाना ही पड़ता है। आखिर एक दिन हर लड़की को ससुराल जाना ही पड़ता है। जिस प्रकार कनेर की हरी सोटी की जैसे मार होती है, उसी प्रकार ननद होती है। उसके पैर पड़ना ही पड़ता है, उनको पहले प्रणाम करना ही पड़ता है। आखिर एक दिन लड़की को ससुराल जाना ही पड़ता है। जिस प्रकार कमर में प्रेम से लटकाये जाने वाला छल्ला होता है, उसी प्रकार लड़की के पति यानी स्वामी का साथ होता है। उसी के साथ जीवन निर्वाह करना पड़ता है। आखिर एक दिन हर लड़की को अपने पति के घर जाना ही पड़ता है। ये कुछ बातें ध्यान रखने वाली ब्याहता लड़की जीवन में सदैव सुखी रहती है।

विदाई

लाड़ी का दादाजी मंडपड़ो सम्भालो।
लखेणी लाड़ी लई चल्या जी॥
वो तो आया हुता बलदेव भाई रा भीम।
लखेणी लाड़ी लई चल्या जी॥
लाड़ी का काकाजी मंडपड़ो सम्भालो।
लखेणी लाड़ी लई चल्या जी॥
वो तो आया हुता बलदेव भाई रा भीम।
लखेणी लाड़ी लई चल्या जी॥
लाड़ी का वीराजी मंडपड़ो सम्भालो।
लखेणी लाड़ी लई चल्या जी॥
वो तो आया हुता, बलदेव भाई रा भीम।
लखेणी लाड़ी लई चल्या जी॥
लाड़ी का मामाजी मंडपड़ो सम्भालो।
लखेणी लाड़ी लई चल्या जी॥
वो तो आया हुता बलदेव भाई रा भीम।
लखेणी लाड़ी लई चल्या जी॥

हे दुल्हन के दादाजी! आप अपने खाली मण्डप को सम्भालिये। हम आपकी सर्वगुण सम्पन्न बेटी को लेकर जा रहे हैं। कौन है वह जो हमारी बेटी से विवाह रचाकर दुल्हन के रूप में लिये जा रहा है और मंडप को सूना करके जा रहा है? अरे! वह तो बलदेव भाई का भीम जैसा बलिष्ठ पुत्र है जो हमारी प्रिय बेटी को ब्याह कर दुल्हन के रूप में ले जा रहा है और मंडप सूना करके जा रहा है। हे दुल्हन के काकाजी! आप खाली मंडप सम्भालिये। हम आपकी लाखों में एक लाड़ली कन्या को लिये जा रहे हैं। कौन है वह जो इस लाड़ली को लिये जा रहा है ? अरे! वह बलदेव भाई का भीम जैसा बलिष्ठ पुत्र है, जो हमारी कन्या को ब्याह कर दुल्हन बनाकर ले जा रहा है और मंडप को सूना करके जा रहा है।

हे दुल्हन के मामाजी और भाई जी! आप अपने खाली मंडप को सम्भालिये। हम आपकी लाखों में एक सर्वगुण सम्पन्न बेटी को लेकर जा रहे हैं। कौन है वह जो हमारी कन्या को दुल्हन बनाकर ले जा रहा है, हमारा मंडप सुना करके जा रहा है? वह तो बलदेव भाई का भीम जैसा बलिष्ठ पुत्र है जो हमारी कन्या को अपनी दुल्हन बनाकर ले जा रहा है। अब वह हमारा दामाद है। भले ही मंडप हो, प्रत्येक विवाहित लड़की एक दिन पीहर का मंडप सूना करके ससुराल जाती ही है।

विदाई

फुलड़ा विणंती तू तो चली ओ लाड़कली,
चली ते आपणा बाग मऽ।
कछु विण्या कछु विणवा हो लाग्या,
ऐतरा मऽ आया दुल्लव राजजी।
उठो लाड़कली बठो पालकड़ी,
चलो ते अपणा देशजी।
जवं हमरा दादाजी दायजो संजोवऽ,
तवं जाई जावां तमरी साथजी।
फुलड़ा विणंती तू तो चली ओ लाड़कली,
चली ते आपणा बाग मऽ।
कछु विण्या कछु विणवा हो लाग्या,
यतरा मऽ आया दुल्लव राजजी।
उठो लाड़कली बठो पालकड़ी,
चलो ते अपणा देशजी।
जवं हमरा मामाजी कुँवारी दीसे,
तवं जई जावां तमरी साथजी।
फुलड़ा विणंती तू तो चली ओ लाड़कली,
चली ते आपणा देशजी।

हे लाड़ली बेटी! अभी तक तो तू छोटी सी बच्ची थी, जो नाजो से पली थी और अपने बगीचे में फूल चुनने जाया करती थी। अपने पिताजी के बगीचे के फूल चुनते-चुनते, जिनमें कुछ फूल तोड़ लिये थे और कुछ तोड़ने बाकी थे, इतने में तुमसे परिणय करने दूल्हे राजा आ गये।

हे बेटी! हमने तुम्हें दुल्हन बनाया। तुम्हारा ब्याह रचाया। हे लाड़ली! अब उठो और ससुराल जाने के लिये पालकी में बैठ जावो। दूल्हे राजा तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। दूल्हे ने कहा- चलो प्रिय! अब अपने देश चलें, देर हो रही है।

दुल्हन ने कहा- मैं ऐसे कैसे आपके साथ जा सकती हूँ? जब मेरे पिताजी दहेज जुटा लेंगे और विवाह कार्य पूर्ण हो जायेगा तब मैं आपके साथ पालकी में बैठकर जाऊँगी। जब मेरे मामाजी कुँवारी की पंगती देंगे और विवाह कार्य पूर्ण हो जायेगा, तब मैं आपके साथ पालकी में बैठकर रवाना हो जाऊँगी। मैं आपके साथ अभी नहीं जा सकती हूँ। अन्त में लाड़ली बेटी को अपने पति के साथ विदा होना ही पड़ता है।

विदाई

मेरी छोटी सी बनी ससुराल चली।
सखियन से मुखड़ा मोड़ चली॥
पीता जी को नमस्ते करके चली।
माता बाई को रुलाती छोड़ चली॥
मेरी छोटी सी बनी ससुराल चली।
सखियन से मुखडा मोड़ चली॥
काका जी को नमस्ते करके चली।
काकी बाई को रुलाती छोड़ चली॥
मेरी छोटी सी बनी ससुराल चली।
सखियन से मुखड़ा मोड़ चली॥
मामा जी को नमस्ते करके चली।
मामी बाई को रुलाती छोड़ चली॥
मेरी छोटी सी बनी ससुराल चली।
सखियन से मुखड़ा मोड़ चली॥
भैया जी को नमस्ते करके चली।
भाभी को रुलाती छोड़ चली॥

मेरी छोटी सी प्यारी दुल्हन ससुराल जा रही है। और अपनी सहेलियों से मुँह मोड़ कर जा रही है। अपने पिताश्री को नमस्कार करके जा रही है। अपनी माताजी को रोता बिलखता छोड़कर ससुराल जा रही है। मेरी छोटी-सी दुल्हन ससुराल जा रही है। अपनी सहेलियों के प्यार-दुलार से मुँह मोड़कर अकेली छोड़कर जा रही है। अपने काकाजी को प्रणाम करके, अपनी काकी को रोता बिलखता छोड़कर ससुराल जा रही है। मेरी छोटी-सी प्यारी-सी दुल्हन ससुराल जा रही है। अपनी प्रिय सहेलियों से मुँह मोड़कर, अपने मामाजी को नमस्कार करके, अपनी मामी को रोता बिलखता छोड़कर ससुराल जा रही है। मेरी छोटी-सी प्यारी-सी दुल्हन ससुराल जा रही है। अपनी प्रिय सहेलियों से मुँह मोड़कर, अपने भैयाजी को नमस्कार करके अपनी भाभी को रोता बिलखता छोड़कर ससुराल जा रही है।

विदाई

माता कहे बात भली सुण सुन्दरी।
लक्ष्य धरी बात नऽ निभावजे वो स्याणी॥
कुल ना लजावजे, कुल ना लजावजे।
ससरा कऽ अपना बाप सरी मानजे।

सासु को मान बढ़ावजे ओ स्याणी।
कुल ना लजावजे कुल ना लजावजे।
जेठ का सामनऽ हालु, हालु चालजे।
जेठाणी को कह्यो मती टालजे वो स्याणी॥
कुल ना लजावजे कुल ना लजावजे।
देवर कऽ अपना भाई सरी मानजे।
देराणी कऽ बइण सम जाणजे वो स्याणी॥
कुल ना लजावजे कुल ना लजावजे।
नणद कऽ अपनी बइण सम जाणजे ओ।
नणदई जी आया मिजवान वो स्याणी॥
कुल ना लजावजे कुल ना लजावजे।

गीत-श्रीमती हरिकुंवरबाई चौहान, दवाना

माता अपनी पुत्री को समझाती है- ऐ बेटी! तू ससुराल जा रही है। मेरी बातों को लक्ष्य की तरह ध्यान में रखना। तेरा लक्ष्य ही तुझे महान बनायेगा। हे पुत्री! तुम अपने ससुर को अपने पिताजी के समान आदर करना और अपनी सासुजी का मान-सम्मान बढ़ाना। माँ के समान ही उनका आदर करना। उनकी आज्ञा का पालन करना। अपने जेठजी के सामने धीरे-धीरे चलना। और अपनी जेठानी का कहना मानना। उसकी प्रत्येक आज्ञा का पालन करना। तेरे देवर को अपने छोटे भाई की तरह प्यार करना। अपनी देवरानी को अपनी सहेली की तरह प्यार से रखना, उसके सुख-दुःख को तुम ही समझना। तुम ही उसका सब कुछ हो।

अपनी ननद को छोटी बहन के समान ही समझना और तेरे ननदोईजी तो आते-जाते मेहमान होंगे। उनका खूब आदर करना। इन सब बातों को ध्यान में रखना तो तेरा जीवन धन्य हो जायेगा। कोई ऊँच-नीच काम मत करना, जिससे कुल को कलंक लगे। मेरी इन बातों को सदैव ध्यान में रखना।

विदाई

बेटी कां मिलऽ सहेलिया रो साथ॥
हरियालो दुल्लव लई चल्या जी॥
बेटी कां मिलऽ फुतल्या रो ख्याल॥
हरियालो दुल्लव लई वा चल्या जी॥
बेटी कां मिलऽ माता बाई रो लाड़॥
हरियालो दुल्लव लई चल्या जी॥
बेटी कां मिलऽ वीराजी रो लाड़॥
हरियालो दुल्लव लई चाल्या जी॥

पिता अपनी पुत्री की सहेलियों को देखकर आँखों में आँसू भर कर कहते हैं- हे बेटी! अब तुझे कहाँ ऐसी सहेलियाँ मिलेंगी और तेरे जाने के बाद में ये तेरी सहेलियाँ भी सूनी हो जायेंगी। हरियाले दूल्हे राजा बेटी को लेकर जा रहे हैं।

हे बेटी! तेरे बिना तेरे खिलौने सूने हो जायेंगे। अब इन खिलौनों से कौन खेलेगा ? हे बेटी! तू अपनी माताजी का लाड़-प्यार भूलकर जा रही है। जिसने तुझे जन्म दिया है। गोद में खिलाया। दूध पिलाया। पाल-पोस कर बड़ा किया है, उसी स्नेहमयी बंधन को तोड़कर आज जा रही है। क्या अपनी माँ का लाड़-दुलार भूल पायेगी ? क्या अपने भाई का स्नेह भूल पायेगी ? क्या कभी तुझे तेरा भाई याद भी आयेगा या नहीं ? तूने एक पल में ही सबसे नाता तोड़ लिया है। सभी को छोड़कर तू दूल्हे राजा के साथ जा रही है या दूल्हे राजा तुम्हें लेकर जा रहे हैं।

बेटी को शिक्षा

मान-मान म्हारी नवल बनीजी।
जग यश जो ये शिक्षा मानजो ऐ।
बाल पणा में माता बाई से।
सबई काम सीख लीजो ऐ॥
काम समय खेलणऽ मत जाजो।
चतुर कहा जो ऐ, शिक्षा मानजो ऐ॥
मान-मान........................
सासरिया मऽ अपणा पति की।
आज्ञा पालन कीजो ऐ॥
कटुक वचन तम कभी नऽ बोलो।
मधुर वचन उच्चारजो ऐ, शिक्षा मानजो ऐ॥
मान-मान........................
सासरिया मऽ सास-ससुर की सेवा।
मन से कीजो ऐ, शिक्षा मानजो रे॥
ननद, देराणी और जेठाणी से।
हिल-मिल रईजो ऐ, शिक्षा मानजो ऐ॥
मान-मान........................

हे मेरी बेटी! तुम नई नवेली दुल्हन हो, मेरी बातों को जरा ध्यान में रखना और जग में यश कमाना। चतुर लड़की बालपन में ही अपनी माताजी से सभी काम सीख लेती है। ससुराल में काम करने के समय खेलने के लिये मत जाना। घर के सारे कामकाज मन लगाकर करना, तभी चतुर और होशियार बनोगी। ये मेरी शिक्षा ध्यान में रखना। ससुराल में अपने पति की

प्रत्येक आज्ञा का पालन करना। कभी किसी भी पारिवारिक जन को कड़ुवा मत बोलना। हमेशा मधुर बोलना। ससुराल में सास-ससुर की सेवा करना। तन और मन से ननद, देवरानी-जेठानी से हिलमिल कर रहना। ये सब शिक्षायें ध्यान में रखना तो तेरा मान-सम्मान बढ़ेगा और तुम्हारी कीर्ति फैलेगी।

विदाई

लाल-लाल बईल्या सवारी की गाड़ी।
गोरी हो तूनऽ लूगड़ा की कोर नी सवारी।
भाई छोड्या बईण छोड्या आरू छोड़ी आशा,
मानीमान की दुनिया झूठी सारी आशा।
माय काई लेण मकऽ पालई।
लाल-लाल बईल्या ....
जेठ थारा सूरीमल, देवर थारा चँदा।
पाया तूनऽ सासु-ससरा मन चँदा।
पाई लिया हो तीरथ सारा।
नणद बाई लागऽ गंगा की धारा।
लाल-लाल बईल्या ....
सुहागन सुहाग लई नऽ गोरी चली सासरऽ।
जनम-जनम का साथी दुल्लव का आसरऽ।
पायो अनमोल धन पायो।
गोरी हो थारो आज विदा को दिन आयो।
लाल-लाल बईल्या ....

गीत-श्रीमती हेमलता उपाध्याय, खंडवा

लाल-लाल बैलों से सजी तम्बू की गाड़ी में बैठकर दुल्हन की विदाई हो रही है। हे बेटी! अपनी अस्त-व्यस्त साड़ी को ठीक कर ले, तुझे ससुराल जाना है। भाई-बहनों और अपनी सहेलियों को छोड़कर अपनी आशाओं की एक नई दुनिया में तू जा रही है। मायके में लड़की ससुराल जाने के सपने देखती है, इसलिये मायके की दुनिया उसके लिये झूठी होती है। तब बेटी प्रश्न करती है- हे माँ! तुमने मुझे पाल-पोसकर बड़ा क्यों किया? इतने दिन घर में क्यों रखा? क्या अब नहीं रख सकती हो? तब माँ प्रत्युत्तर में कहती है- हे बेटी! तू जहाँ जा रही है, वहाँ पर सभी सुख हैं। हे बेटी! तेरे जेठजी सूर्य की तरह तेजस्वी हैं, तो नम्र भी हैं। वहीं तेरा देवर तुझे चन्द्रमा की शीतलता प्रदान करने वाला है। तेरे सास-ससुर तुझे हमसे भी ज्यादा लाड़-प्यार से रखेंगे। तुझे किसी चीज की कभी कमी महसूस नहीं होगी। लगेगा कि तूने चारों धाम तीर्थ पा लिये हैं और तेरी ननद रानी गंगा की धारा की तरह निर्मल है। माँ-बेटी को सौभाग्यवती होने का

आशीष देती है। सुहागनें सुहाग देती हैं। जन्म-जन्मांतर तक तुम्हारा सुहाग अमर और अटल रहे, तेरा जीवन धन्य होगा। मानो तूने मन के सारे मनोरथ पा लिये हैं। हे बेटी! तेरा आज विदाई का दिन आ गया है। जा बेटी! तू ससुराल में सुखपूर्वक रहना। हमारी यही कामना है।

साँजुली

हाऊँ तो आगवाड़ऽ लगाऊँ अम्बा-आमली,
पिछवाड़ऽ हो नागर बेल॥
हाऊँ तो रंग भरी दिवलो संजोवती॥
वो तो हंसी रलई पियु पूछऽ वातुली॥
म्हारी गोरी वो थारो वालईया वो कुण॥
राजा प्रथम वालईया म्हारा दादाजी॥
दुसरावण वो म्हारी माय सुहाय॥
हाऊँ तो रंग भरी दिवलो संजोवती॥
राजा तीसरा वालईया म्हारा वीराजी॥
चौथावण तो म्हारी भावज सुहाय॥
हाऊँ तो रंग भरी दिवलो संजोवती॥
गोरी यही रे वचन का कारणे।
मारी चाबुक दुई चार रे॥
हाऊँ तो रंग भरी दिवलो संजोवती॥
राजा प्रथम वालईया म्हारा ससरा जी॥
दुसरावण वो म्हारी सासु सुहाय॥
तीसरा वालईया म्हारा जेठ जी॥
चौथावण वो म्हारी जेठाणी सुहाय॥
हाऊँ तो रंग भरी दिवलो संजोवती॥
गोरी यही रे वचन का कारणे॥
घड़ाऊँ ते चंदन हार, वारिस वो मोहर दुई चार॥
हाऊँ तो रंग भरी दिवलो संजोवती॥

विवाह में संध्या के समय गाया जाने वाला सांजुली गीत है। इस गीत में बड़ी ही मीठी तकरार है। पत्नी अपने मैके की बड़ाई करती है, तब पति महाशय उसे पीट देते हैं। और अपने ही परिवार की प्रशंसा करने पर पत्नी को चन्दन हार बनवाकर, दो-चार मुहरें निछावर कर देता है।

मैं अपने घर के आगे वाले हिस्से में आम और इमली का पेड़ लगाऊँगी और घर के पीछे खाने वाले पान की बेल लगाऊँगी। उन्हीं पेड़ों के नीचे प्रतिदिन दीपक जलाकर मैं अपने आँगन

और घर को रोशन करूँगी। हँसी-हँसी में पति ने पूछ लिया- हे प्रिये! तुम्हारा पालन-पोषण किसने किया है? तब पत्नी अपने पीयर की बड़ाई करते हुए कहती है- हे राजाजी! मेरे प्रथम रक्षक मेरे पिताजी हैं। जो आम के वृक्ष की तरह छायादार हैं। दूसरी पालनकर्त्ता मेरी माताजी हैं। जो इमली के पेड़ की तरह घनी और ऊँची हैं। तीसरे पालनकर्त्ता मेरे भाई जी हैं। चौथी पालनकर्त्ता मेरी भाभी हैं।

इस बात पर क्रोधित होकर पति ने पत्नी को दो-चार चाबुक मार दीं। तब पत्नी खुशामद करते हुए कहती है- हे राजाजी! ससुराल में प्रथम पालनकर्त्ता मेरे ससुर जी हैं। दूसरी पालनकर्त्ता मेरी सासुजी हैं। तीसरे पालनकर्त्ता मेरे जेठजी हैं। चौथी पालनकर्त्ता मेरी जिठानीजी हैं। इस पर खुश होकर पति महाशय ने पत्नी को चन्दन हार घड़वा दिया और उस पर दो-चार स्वर्ण मुहरें निछावर कर दी हैं।

मंडप का वासी

म्हारा पाँच पापड़ की जोड़ी रे।
लई गया तेज सिंह जंवई चोरी रे॥
म्हारा पापड़ लई गया चोरी रे।
उनकऽ बांधो मुस्का की डोरी रे॥
उनकऽ फेरो दवाणा की सेरी रे।
एतरा मऽ आया गीताबाई गोरी रे॥
छोड़ो-छोड़ो रे मुस्का की डोरी रे।
हम कबुव नऽ करसा चोरी रे॥
म्हरा पाँच पापड़ की जोड़ी रे।
लई गया दुर्गासिंह जंवई चोरी रे॥
म्हारा पापड़ लग गया चोरी रे।
उनकऽ बाँधो मुस्का की डोरी रे॥
उनकऽ फेरो दवाणा की सेरी रे।
एतरा मऽ आया सकुनबाई गोरी रे॥
छोड़ो छोड़ो मुस्का की डोरी रे।
हम कबूव नऽ करसा चोरी रे॥
म्हारा पाँच पापड़ की जोड़ी रे।
लई गया विजय सिंह जंवई चोरी रे॥
म्हारा पापड़ लई गया चोरी रे।
उनकऽ बांधो मुस्का की डोरी रे॥
उनकऽ फेरो दवाणा की सेरी रे।

एतरा मऽ आया शारदा बाई गोरी रे॥
छोड़ो-छोड़ो मुस्का की डोरी रे।
हम कबूव नऽ करसा चोरी रे॥

मेरे शगुन मुहूर्त्त के पाँच पापड़ों की जोड़ी तेजसिंह दामाद चोरी करके ले गये हैं। तेजसिंह दामाद को रंगे हाथ पकड़ लिया है। उन्हें मुस्के की रस्सी से बाँधा गया है। अब इस चोर को दवाना ग्राम में घुमायें, ताकि यह चोरी करने की आदत भूल जाये। इतने में उनकी पत्नी गीताबाई आ गई और अपने पिताजी से कहती है- इनको छोड़ दीजिये! ये मेरे पति और आपके दामाद हैं। तब दामाद कहता है- मुझे छोड़ दीजिये! अब मैं चोरी नहीं करूँगा।

मेरे शगुन मुहूर्त्त के पाँच पापड़ कोई चोरी करके ले गया है। अरे! उसे तो दुर्गासिंह दामाद चुरा कर ले गये हैं। दुर्गासिंह दामाद रंगे हाथ पकड़ लिये गये हैं। और उन्हें रस्सी से बाँधकर जकड़ दिया गया है। अब इस चोर को दवाना ग्राम में घुमाओ, ताकि वे चोरी करने की आदत को भूल जायें। इतने में उनकी पत्नी शकुन्तलाबाई आ गई और अपने भैया से कहती है- चोर कोई दूसरा नहीं यह तो मेरा पति है और आपके जीजाजी हैं। इनको छोड़ दीजिये। अब ये ऐसा काम नहीं करेंगे। तब दामाद भी माफी माँगकर कहते हैं- मैं अब ऐसा काम नहीं करूँगा।

निवाली

महेन्द्र भाई म्हारो ब्याव कराड़ो रे॥
ब्याव कराड़ो रे झाळ झोका वाका तेका॥
नानी सी लाऊँ बेटा ढुलमुल करऽ रे॥
झाळ झोका वाका तेका॥
दुबली सी लाऊँ रे बेटा मरी करी जाय रे॥
झाळ झोका वाका तेका॥
कागद की लाऊँ रे बेटा उड़ी करी जाय रे॥
झाळ झोका वाका तेका॥
माटी की लाऊँ रे बेटा घुली करी जाय रे॥
झाळ झोका वाका तेका॥
जुवान सी लाऊँ बेटा भागी करी जाय रे॥
झाळ झोका वाका तेका॥

महेन्द्र भाई कहते हैं- हे माँ! कहीं से भी खोज कर मेरे लिये तू दुल्हन ला। हे माँ! मेरा विवाह करा दो। 'झाल झोका वाका तेका' यह टेक की पंक्ति है। इसका कोई अर्थ नहीं है, फिर भी इसे गाये जाने में अन्तरे के बाद दुहराया जाता है। वैसे इसका अर्थ हवा के झोंके बाँके तिरछे चल रहे हैं, लिया जा सकता है।

तब माँ कहती है- हे बेटा! मैं किस प्रकार की बहू लाऊँ, यदि मैं उम्र में छोटी-सी लाती हूँ तो वह इधर-उधर लुढ़कती फिरेगी। यदि मैं दुबली-पतली लाती हूँ तो उसके मर जाने का डर है। यदि मैं कागज की दुल्हन ले आऊँ तो उसे उड़ जाने का डर है। यदि मैं मिट्टी की दुल्हन ले आऊँ तो उसे पानी में घुल जाने का डर है। और यदि मैं तेरे जैसी ही जवान बहू ले आऊँ तो उसे किसी के साथ भाग जाने का भी डर है। माँ भी परेशान हैं और महेन्द्र भाई भी परेशान हैं।

निवाली

अम्बा की डाल पर सीताफल लाग्या॥
डाल ते नवी-नवी जाय॥
हो मेरे लाल कजला सारऽ तिलक लगावऽ, गोविन्दजी की बाग॥
म्हारी बलदेव भाई वाळई नऽ सेजा बिछाई॥
लाड़ी ववु लोटी-लोटी जाय॥
हो मेरे लाल कजला सारऽ तिलक लगावऽ गोविन्दजी की बाग॥
रात बुलाई बाँगढ़ दिन क्यों आई॥
बाँगढ़ का कूचो दुई गाल॥
हो मेरे लाल कजला सारऽ तिलक लगावऽ गोविन्दजी की बाग॥
आज को दिन पिया माफ करो रे॥
काल सी आवां सरी साँझ॥
हो मेरे लाल कजला सारऽ तिलक लगावऽ गोविन्दजी की बाग॥
छोरो बुलायो बाँगढ़ छोरी क्यों लाई॥
बाँगढ़ का कूचो दुई गाल॥
हो मेरे लाल कजला सारऽ तिलक लगावऽ गोविन्दजी की बाग॥
अबर को साल पिया माफ करो रे॥
साल सी लाऊँ हीरालाल॥
हो मेरे लाल कजला सारऽ तिलक लगावऽ गोविन्दजी की बाग॥

विवाह में गाये जाने वाला निवाली गीत है। इस गीत में पति महाशय को लड़का चाहिये और पत्नी लड़की को जन्म देती है, तब पति अपनी पत्नी से नाराज हो जाता है और पत्नी को डाँटता है, भला-बुरा कहता है। पत्नी माफी माँगते हुए कहती है- अगले साल मैं तुम्हें लड़का जरूर दूँगी।

बड़ा आश्चर्य है आम के वृक्ष पर सीताफल लगे हैं। उनके भार से डालियाँ झुक गई हैं। इसका एक तात्पर्य यह भी है कि यौवन के मदमस्त भार से गोरी दबी जा रही है। गोरी की आँखों में काजल लगा है। मस्तक पर कुमकुम की बिंदियाँ लगी है। सभी साज-श्रृँगार करके गोरी अपने प्रियतम से मिलने के लिये गोविन्दजी के बगीचे में जाती है। जहाँ पर प्रियतम फूलों की

सेज बिछाकर अपनी प्रिया की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

प्रियतमा के आने पर प्रियतम उसे डाँटते हैं और कहते हैं- मैंने तुम्हें रात में मिलने के लिये बुलाया था। तुम दिन में क्यों आई हो ? तुम्हारे गाल खींचना चाहिए। तब प्रिया कहती है- आज के दिन प्रियतम मुझे माफ कर दो। कल मैं सूर्यास्त के बाद ही आऊँगी। इसके पश्चात् कालान्तर में उनका विवाह हो जाता है। और वे पति-पत्नी के रूप में परिणित हो जाते हैं। पत्नी लड़की को जन्म देती है। पति महोदय पत्नी के गाल उमेठ कर कहते हैं- मैंने तुम्हें लड़का पैदा करने के लिये कहा था और तुमने लड़की पैदा कर दी। तब पत्नी दोनों हाथ जोड़कर माफी माँगते हुए कहती है- हे स्वामी! अब के साल मुझे माफ कर दो, अगले साल मैं तुम्हें हीरालाल दूँगी यानी पुत्र को जन्म दूँगी।

निवाली

बोलो-बोलो ठाकुर भाई राय, बोलता क्यों नहीं रे॥
तमरी मुट्ठी मऽ अबीर गुलाल, उड़ावता क्यों नहीं रे॥
तमरा खीचा मऽ रूप्या हजार, उड़ावता क्यों नहीं रे॥
तमरा घर मऽ छे रम्भा सी नार, रमाड़ता क्यों नहीं रे॥
तमरी गोदी मऽ नाना ताना बाळ, खेलावता क्यों नहीं रे॥
बोलो-बोलो ठाकुर भाई राय, बोलता क्यों नहीं रे॥

इस गीत में बाना रखने वाले भाई की आदतों का वर्णन है। वह आदमी बड़ा ही कामुक किस्म का है। वह हमेशा पराई स्त्री पर नजर रखता है। इस गीत में उसे काफी व्यंग्य किया गया है।

हे ठाकुर भाई! आप बोलते क्यों नहीं हो, कुछ तो बोलो। तुम्हारी मुट्ठी में अबीर-गुलाल है, उसे उड़ाते क्यों नहीं अर्थात् तुम्हारे हाथ में रंगरेलियाँ करना है, तुम करते क्यों नहीं ? अरे! तुम तो इतने रईस और अमीर हो। तुम्हारे पास रुपयों का ढेर लगा है। उन्हें खर्च क्यों नहीं करते हो ? तुम्हारे घर में सभी कुछ है। फिर भी तुम पराये घर पर नजर रखते हो। तुम्हारे घर में कंचन कामिनी-सी नारी है। उसमें क्या कमी है ? जो आप पराई स्त्रियों को ढूँढ़ रहे हैं। अपने घर की पत्नी से प्यार कीजिये। उसी के साथ जीवन बिताइये। तुम्हारे घर में बच्चे हैं, अपने बच्चों को गोदी में उठाकर प्यार कीजिये। खिलाइये-खिलाइये, लाड़-लड़ाइये। आप ऐसा क्यों नहीं करते है ? बोलो ठाकुर भाई, कुछ तो बोलो। ठाकुर भाई क्या जवाब दें। वे नीचा सिर करके खड़े हैं।

निवाली

रमेश भाई छे आला-भोला जुआँ खेलणऽ चालिया ए।
जुआँ खेली नऽ घर आया, घर आया म्हारो पाणी सारो जी।

वहीं तमारा सोवन चरवाजो आप ही लेकर नहाया जी।
गोरी म्हारी थाल परोसो जी, वहीं तमारा मिठड़ा भोजन,
आप ही लेकर खोओ जी, आप ही लेकर हम खाया जी।
गोरी म्हारी सेजा बिछाओ जी, वही तमारी फूल लडारी सेजा।
हमतो पियर चाल्या जी।

यह निवाली गीत बाना घुमाते समय गाया जाता है। पति पत्नी से कहता है-मेरे लिये नहाने का पानी गर्म करो। पत्नी पानी तो गर्म कर देती है लेकिन नहाने के स्थान पर नहीं रखती है। पति से कहती है- तुम खुद पानी लेकर नहा लो। मैं तुम्हारा पानी नहीं रखूँगी। इस बात पर पति महाशय खुद ही चरवे से पानी लेकर स्नान कर लेते हैं। इसके पश्चात् पति महाशय पत्नी से कहते हैं- मेरी थाली परस कर लाओ। पत्नी कहती है- वहीं तुम्हारा खाना रखा है। खा लीजिये। पति महाशय खुद ही खाना निकालकर खा लेते हैं। इसके बाद वह अपनी पत्नी से कहते हैं- मेरी खटिया बिछा दो। पत्नी कहती है- वहीं पर तुम्हारी फूलों की सेज बिछी है। सो जाईये। मैं तो मैके जा रही हूँ।

बाना की निवाली

आमनऽ की सामनऽ मयल चुनाया, बीच रखी चौगान॥
हो राजा हिरतऽ-फिरतऽ रमेश भाई की गोरी॥
पकड़ लिवी बैंया हो राजा॥
छोड़ो-छोड़ो राजा राणी का जाया॥
देखतऽ है दुनिया हो राजा॥
हाथ सोहे हाथी दाँत को चूड़िलो॥
मोतिन का गजरा हो राजा॥
अंग सोहिये मसरू केरी अंगिया॥
रेशम का कसणा हो राजा॥
पांय सोहे गोरी का आयल-पायल॥
राऊल बिछिया हो राजा॥

यह निवाली गीत बाना रखने वाले भाई के घर के सामने गाया जाता है। आमने-सामने महल बने हुए हैं और उनके बीच में दालान या आँगन है। उस आँगन में रमेश भाई की पत्नी घूम रही है। गोरी को आते देखकर रमेश भाई ने उनकी बाँह पकड़ ली है। तब गोरी ने कहा- हे राजा! तुम मेरी बईयां मत पकड़ो। देखो, दुनिया देख रही है। तुम मेरी बाँह छोड़ दो। हे रानी के पुत्र! आपको यह शोभा नहीं देता है। गोरी के हाथों में हाथी दाँत का चूड़ा है और उसके बीच में मोतियों के गजरे हैं। गोरी के बदन पर मसरू की चोली है और उसमें रेशम के फुँदे लगे हुए हैं और वे कसने वाली डोर से बँधे हैं। गोरी के पाँवों में आयल-पायल है और पैरों की अंगुलियों

में आवाज करने वाले सुन्दर बिछिया हैं। लावण्यमयी गोरी का ऐसा शृँगार है, जिसको देखकर हर किसी का मन विचलित हो सकता है। इस पर यदि उनके पति ने अपनी पत्नी की बाँह पकड़ ली तो क्या हर्ज है ?

बाना की निवाली

रंग की डब्बी रंग सी भरी, रंग हिल्लोला खाय॥
नयन सी गाजुलड़ऽ॥
हाऊँ तमकऽ वरजु म्हारा सायबा रे॥
परतिया मत जाय रे, नयन सी गाजुलड़ऽ॥
परतिया को काई हाँसणू रे, काई बोलणूं रे॥
वा बादी कचेरी लई जाय, नयन सी गाजुलड़ऽ॥
हाऊँ तूकऽ वरजु म्हारी गोरड़ी रे॥
वो तू थारा पियर मत जाय॥
नयन सी गाजुलड़ऽ॥
म्हारा पियर मऽ हाऊँ एकली रे,
म्हारो पियर सूनो पड़्यो,
नयन सी गाजुलड़ऽ॥
तीन पैसा की थारी काचलई रे॥
म्हारी सेजा सूनी पड़ी जाय॥
नयन सी गाजुलड़ऽ॥

डिबिया रंग से भरी हुई है और रंग उसमें से छलक कर बाहर आ रहा है। नैनों से नैन मिलने पर गाँजे का नशा हो रहा है। अर्थात् गोरी गोरे रंग की है और उसका यौवन रूप छलक रहा है। उसके नैन नशीले कंटीले हैं। नैन से नैन मिलने पर ऐसा आभास होता है मानो कोई नशीला पदार्थ सेवन किया हो। गोरी के रूप पर पति आसक्त हैं। पत्नी पति से कहती है- हे स्वामी! तुम मुझ पर आसक्त हो तो ठीक है, पर किसी पराई स्त्री से प्यार मत करना। मैं तुम्हें बार-बार मना कर रही हूँ। पराई स्त्री से क्या हँसना-बोलना? कभी किसी दिन वही स्त्री तुम्हें कचहरी ले जायेगी। पराई स्त्री से प्रेम मत करो। पति पत्नी से कहता है- मैं तुमसे असीमित प्यार करता हूँ, लेकिन तुम बार-बार मायके चली जाती हो। मैं तुम्हें मना करता हूँ कि तुम बार-बार मायके मत जा।

पत्नी-पति से कहती है- मेरे मायके की मैं अकेली संतान हूँ। मेरे पीहर न जाने से मेरा मायका सूना हो जायेगा। पति पुन: पत्नी से कहता है- तुम्हारे मायके में जाकर मिलता क्या है ? तीन पैसे की काचली याने की ब्लाउज ही मिलता है न, तुम्हारे चले जाने से मेरी सेज सूनी हो

जाती है और मैं इस सेज पर अकेला सो नहीं सकता हूँ। तुम्हारे बिना मुझे यह सेज नागिन की तरह डसती है। प्यार की इतनी गहरी अनुभूति देखकर मुग्ध रह जाना पड़ता है कि पति अपनी पत्नी से कितना प्रेम करता है।

बाना वापसी

सारा शयर बानु फिरी आयो भंवरुला रे,
निकळ वो लाड़ी की माय बायर भंवरुला रे।
लाड़ी बाई पर लीम लोण होय की, भांगुलड़ी ढुलऽ रे।
दवाणा गाँव का जो गोयरा भंवरुला रे,
अच्छा-अच्छा तेजी एचाय, भांगुलड़ी ढुळऽ रे।
लीजो लाड़ी का दादाजी मौल करी, भंवरुला रे।
लाड़ी बाई बठणऽ जोग भांगुलड़ी ढुळऽ रे।
दवाणा जो गाँव का गौयरऽ,
अच्छी-अच्छी झोट एचाय, भांगुलड़ी ढुलऽ रे,
लीजो लाड़ी का काकाजी मौल करी भंवरुला रे।
कुण भाई सजन जिमाड़िया भंवरुला रे,
कुण जंवई कूटऽ छै पैट भांगुलड़ी ढुळऽ रे।
रमेश भाई सजन जिमाड़िया भंवरुला रे,
तेजसिंग जंवई कूट छै पेट भांगुलड़ी ढुळऽ रे।
बारीक घडणऽ का गाड़गा भंवरुला रे,
दुर्गासिंग जंवई को बाप कुम्हार भांगुलड़ी ढुळऽ रे।
बारीक सीवण का टोपला भंवरुला रे,
विजय सिंग जंवई को बाप झमराल भांगुलड़ी ढुळऽ रे।
बारीक सीवण का खासड़ा भंवरुला रे,
गजेन्द्र सिंग जंवई को बाप चमार भांगुलड़ी ढुळऽ रे॥

बाना घूमकर घर आ जाता है, तब गाया जाने वाला यह गीत है। इस गीत में दामादों को उलाहना दी गई है। इसे निवाली गीत भी कहते हैं।

हे भंवरे! सारे शहर में दुल्हन का बाना घूमकर आ गया है। हे दुल्हन की माताजी! आप बाहर आईये, दुल्हन पर नमक और नीम की पत्तियाँ न्यौछावर करो। दुल्हन को कहीं नजर तो नहीं लग गई है। देखो! तम्बाकू आँगन में बिखर गई है। जरा उसे सम्भाल लो। यह नशे वाली चीज है। दवाना गाँव के बाहर बाजार में अच्छे-अच्छे घोड़े बिकने आये हैं और बिक रहे हैं। सबकी सामर्थ्य नहीं है कि वह खरीद ले। दुल्हन के दादाजी आप मोल करके घोड़ा खरीद लीजिये। दुल्हन उस घोड़े पर बैठने योग्य है। दवाना गाँव के बाहर बाजार में अच्छी-अच्छी भैंसें

बिक रही हैं और दुल्हन के काकाजी आप भैंस खरीद लीजिये, क्योंकि दुल्हन बिना घी-दूध के रूखा-सूखा खाना नहीं खा सकती है।

कौन से भाई ने सगे-सम्बन्धियों को भोजन कराया है और कौन-सा दामाद पेट कूट (भूखा) रहा है। रमेश भाई ने सगे-सम्बन्धियों को भोजन खिलाया है और तेजसिंग दामाद अपना पेट कूट रहे हैं। पतले और सुन्दर मिट्टी के बर्तन बिकने आये हैं जो बिक रहे हैं। बाजार में ये बर्तन बेचने वाला दुर्गासिंह दामाद का पिता है। पतली और बारीक बाँस की चिपऐ से निर्मित टोकने बिकने आये हैं। हे विजयसिंह दामाद! तुम इन्हें खरीद लेना। क्योंकि तुम्हें मूल्य नहीं देना पड़ेगा, वे तुम्हारा पिता हैं। अच्छे और मजबूत जूते बिकने आये हैं। मजबूती के साथ सुन्दर भी हैं- हे गजेन्द्रसिंह दामाद जी! आप उन्हें ले आना, क्योंकि वे तुम्हारे पिता है।

निवालई-पिवालई

डाँवा जो कवला की नागेणी,
नमी-नमी झोला खाय, गाड़ा मारूजी॥ (नाक में पहनने की नथ)
चातुर होय तो कई दिजो,
मूरख भसा-भसा खाय, गाड़ा मारूजी॥
सारंग लई सारंग चली,
कर सारंग की ओट, गाड़ा मारूजी॥
झीणा हो, सारंग देखिया,
सारंग कर गई चोट, गाड़ा मारूजी॥
चातुर होय तो कई दिजो,
नहीं तो हरो घर की नार, गाडा मारूजी॥ (1. दीपक, 2. स्त्री, 3. हवा, 4. साड़ी का पल्ला)
मुट्ठी भर सीरो लचलचो,
एचाए ते मयसर का हाट, गाड़ा मारूजी॥
चातुर होय तो कई दिजो,
नहीं तो गदड़ा रा गुवाल, गाड़ा मारूजी॥ (महेश्वर शहर का रेशम)
बारा जो माथा को बोकड़ो
सेरी गली रमवा हो जाय॥
चातुर होय तो कई दिजो
मूरख भसा-भस खांय, गाड़ा मारूजी॥ (पाँव में पहनने के पुराने समय के बिछिये)
बारा जो माथा को बोकड़ो,
बिना हो सिंग की गाय॥
बिना हो दूध का बाछरू, सेरी हमर्या जाय,
चातुर होय तो कई दिजो, नहीं तो हारो घर की नार। (मुर्गी के बच्चे)

ऊच्ची गोरी लगऽ पातलई,
जमना न्हावण जाय, गाड़ा मारूजी॥
पान-पान दिया बलऽ,
पूजापाठ मऽ वा जाय, गाड़ा मारूजी॥
चातुर होय तो कई दिजो,
नई तो खेड़ा रा हनुमान, गाड़ा मारूजी॥
नई तो गदडा रा गुवाल, गाड़ा मारूजी॥ (अम्बाडी का पौधा, अम्बाडी की रस्सी)
नारी मरी नऽ नर कटिया,
नर की भई फिर नारी॥
वो ही नारी ने नर मारिया, श्रोता करो रे विचार,
चातुर होय तो कई दिजो, गाड़ा मारूजी॥
नई तो गदडा रा गुवाल, गाड़ा मारूजी॥ (पुराने समय की लकड़ी की काँगसी कंधी)

निवाली

तम तो खाजो म्हारा सगा मसूर की दाल॥
तम तो खाजो उमरावसिंह यायीजी मसूर की दाल॥
थोड़ी खाजो म्हारा सगा मसूर की दाल॥
थारा पेट मऽ अव्वा बोले, कौव्वा बोले॥
लाऊर बोले, तीतर बोले॥
टोक-टोक धमसढ़ लागी, म्हारा सगा मसूर की दाल॥
धोत्या भरते म्हारा समधी मसूर की दाल॥
पाणी रो टोटो म्हारा, समधी मसूर की दाल॥

यह समधियों के लिये गाली गीत हैं, जिसे 'निवाली' कहा जाता है। यह गीत विवाह समाप्ति के पश्चात् लड़की को मायके वाले पहली बार लेने उसके ससुराल आते हैं। तब समधियों को भोजन करवाया जाता है। बीच-बीच में महिलाएँ समधियों के नाम पूछती जाती हैं और समधी नाम बताते हैं, उसी समय यह गीत गाया जाता है।

हे समधीजी! आज मसूर की दाल बनी है, जरा मसूर की दाल कम ही खाना, क्योंकि ज्यादा खाली तो तुम्हारे पेट में अव्वा और कव्वा बोलेंगे। तुम्हारे पेट में तीतर और लाऊर पक्षी बोलेंगे। तुम्हारे पेट में हलचल मच जायेगी। गुड़-गुड़ होगी। इसलिये मसूर की दाल कम ही खाना, यदि तुमने अधिक खाली, तो तुम्हें अपनी धोती धोना पड़ेगी। इधर हमारे गाँव में पानी का अभाव है। मसूर की दाल से जरा बचके रहना।

निवाली

नवी रे नवी हवेली का कंगुरा अजबऽ बन्या।
वा तो राजेन्द्र भाई वालई पाणी कऽ जाय॥
सिर पर दोय गगरी।
आड़ा फिरिया राजेन्द्र भाई राज।
हाथ मऽ गुलाब की छड़ी।
छोड़ो-छोड़ो रे रंगीला म्हारी बाँवऽ।
तडकऽ म्हारी सोवनऽ चूड़ी।
कसा छोड़ां रंगेली थारी बाँवऽ॥
हम रसिया नऽ पकड़ी।
म्हारा रंग मयल मऽ आव॥
बताऊँ तमकऽ धाबा ऊपरी॥
म्हारी राम रसवई मऽ आव।
खिलाऊँ तमकऽ घी खिचड़ी॥
म्हारा भंवर पलंग पर आव।
तड़ाऊँ तमकऽ साल जोड़ी।

गीत-श्रीमती गंगाबाई तोमर, दवाना

बाने के समय बाना रखने वाले भाई के घर के सामने इस गीत को गाया जाता है।

नई-नई हवेली के कंगूरे अजीब ढंग के बने हुए हैं। यह हवेली राजेन्द्र भाई की है। इधर राजेन्द्र भाई की मंगेतर पानी लेने जा रही है। उसके सिर पर दो गागरें रखी हुई हैं। जब वह पानी लेकर आ रही है, तब राजेन्द्र भाई ने उसका रास्ता रोक लिया। राजेन्द्र भाई के हाथ में गुलाब के फूलों की छड़ी थी। उन्होंने उसे देने के लिये उसका रास्ता रोका तथा उसका हाथ पकड़ लिया। तब उनकी मंगेतर ने कहा- छोड़िये मेरी बईयां! मेरे हाथ की सोने जड़ित चूड़ियाँ टूट जाएँगी। तब राजेन्द्र भाई ने कहा- मैं तेरी बईयां कैसे छोड़ दूँ। मेरे जैसे रसिक प्रेमी ने तेरी बाँह पकड़ी है। हे प्रिये! मैंने तेरी बाँह इसलिए भी पकड़ी है कि तुझे मैं अपना रंगमहल दिखला दूँ। आ, तुझे मेरा रंगमहल दिखलाऊँ। गलियारे, छज्जे बताऊँ। हे प्रिया! मेरी रसोई भी देख लो। तुझे घी युक्त खिचड़ी खिलाऊँ और आखिर एक दिन तुम मेरे पलंग पर आओगी तब तुझे शाल-दुशाले ओढ़ाऊँगा।

बाना की निवाली

भर भादव वरस्यो रे आँगण बीच कीच मच्यो।
वा तो बलदेव भाई वाली रपट पड़ी॥

वे को कड़ रो बटवो रे इलायची, दाणा दाण बिखर गया॥
वो को देवर दौड़्यो रे, टपा-टप ऐच लिया॥
वो की नणद खारेली रे, खोला मऽ सी छीन लिया रे॥
वो की सासु सपोती रे, आधा-आधा वाट लिया रे॥

गीत-श्रीमती गंगाबाई तोमर, दवाना

भादव महीने में पानी बरसने से कीचड़ हो गया है। गोरी के ठीक आंगन में भी कीचड़ हो गया है। ऐसे में बलदेव भाई की पत्नी सज-सँवर कर निकली, आँगन में आते ही उसका पैर फिसल गया। उसकी कमर में लटका हुआ बटवा बिखर गया। उसका देवर दौड़ पड़ा। उसने बिखरी हुई एक-एक इलायची को बीन लिया। उसकी जिद्दी ननद ने उससे सारी इलाचयी छीन ली। उसकी सास और अच्छी थी, जो उसने देवर और ननद के बीच आधे-आधे इलायची बाँट दिये। बहू ठगी सी देखती रह गई, बेचारी कर ही क्या सकती थी?

निवाली

गोप्या भाई थारी जोय नगना पातळ्ळई।
वा दारी हेकड़ जाय मोड़ पासळ्ळई॥
लाओ रे अंडीयारा पान वड़ की कोपळ्ळई।
सेको डाडम डाड डारी की पासळ्ळई॥
लुगड़ा पैरी छपैल कंचलो कांचलो।
सुरकी सारी निंदाल टीकी वाटळ्ळई॥
इच्छा पैरी निगोट जोळ्ळई वाजणई।

हे गोपीचन्द भाई! तेरी पत्नी तो खूबसूरत है पर झीने-झीने कपड़े पहनती है। वह नग्न दिखाई देती है। जब वह छापदार साड़ी, काली काँचली, आँखों में काजल, ललाट पर कुमकुम की बिंदिया, पाँवों में बिछिया पहनकर निकलती है, तो सभी का ध्यान आकर्षित होता है। वह बहुत ही अक्कड़बाज है। किसी को कुछ समझती ही नहीं है। मान-मर्यादा का उल्लंघन करती है। इसी अकड़ के कारण पति महाशय ने उसे इतना मारा कि उसकी हड्डी पसली तोड़कर रख दी। फिर परेशान भी हो गये। दर्द भी दिया और इलाज भी करना पड़ा। उनने दोस्तों से कहा- अरंडी के पत्ते ले आओ। गरम करके इसकी पसलियों में बाँधो और सेंक करो। नहीं तो वड़ की नई-नई कोपलें ले आओ। उसे गर्म करके इसकी पसलियों को सेंक दो। पति महाशय पत्नी की सेवा में जुट गये। खुद की करनी को भोग रहे हैं।

निवाली

इनी मजलस बठ्या दस जोण।
जेमऽ बठ्या बलदेव भाई उमराव॥

बिहाणो रे रलई राम को।
वागो पेर्या तो मूंदी को॥
उनका माथऽ रे कसुमल छे पाग।
बिहाणो रे रलई राम को॥
लाड़ी ववु रमता था साथ की सई नऽ मऽ।
तिलक झलक्यो रे लाड़ी का निंदाल॥
बिहाणो रे रलई राम को।
पान चाब्या था नागर वेली का॥
उनका मुखड़ा रे लोंगनऽ मऽ मयकाय।

इस सभा में दस आदमी बैठे हैं, जिसमें बलदेव भाई अमीर श्रेष्ठी बैठे हैं। उसमें कामचोर दामाद भी बैठा है। सुबह का समय है और दामाद कुछ भी काम नहीं कर रहा है। बलदेव भाई जरीदार मूंदी का कोट पहने हैं। उसमें कलात्मक बूटियाँ हैं तथा उसके सिर पर केशरिया साफा बंधा हुआ है। उस सभा में एक कामचोर दामाद बैठे हैं। बलदेव भाई की लाड़ी बहू अपनी सहेलियों के साथ घर में घूम रही है और उनके मस्तक पर चमकदार टीकी लगी हुई है। उस टीकी से वह उगते सूर्य की तरह चमक रही है। उसके मुँह में पान का बीड़ा है। वह पान चबाकर खा रही है। ओंठ लाल हो गये है और मुँह से लौंग की खुशबू आ रही है।

निवाली

बसन्त भाई नऽ बिड़िलो फेक्यो अगवाड़ऽ सी।
उनकी लाड़ी ववु नऽ बिड़िलो झेल्यो पिछवाड़ऽ सी।
राजा काई देखी बिड़िलो फेक्यो अगवाड़ऽ सी।
थारी चाल देखी बिड़िलो फेक्यो पिछवाड़ऽ सी।
चाल की चंचल, बोल की मीठी॥
लोंग को हार, मसूर की टीकी॥
कजला बिना फीकी रजवाड़ऽ की॥

बसन्त भाई ने पान का बीड़ा बनाकर दरवाजे से घर के पीछे की ओर फेंका, जहाँ उनकी प्रेयसी ने उसे झेल लिया। प्रेयसी पूछती है- हे राजाजी! आपने बीड़ा किसलिये फेंका ? तब प्रियतम कहते हैं- मुझे तुम पर प्यार आ गया है। मैंने तुम्हें प्यार स्वरूप पान भेंट किया है। तुम चाल की चंचल हो, हिरनी जैसी तुम्हारी चाल है। तुम्हारी वाणी बहुत मीठी है। तुम्हारे बोलने से ऐसा लगता है कि तुम्हारी जुबान में मिश्री घुली हुई है। तुम इतनी लावण्यमयी हो कि तुम्हारे रूप पर मैं मुग्ध हूँ। तुम्हारे गले में जो हार है, वह तुम्हारे सौन्दर्य की वृद्धि कर रहा है। तुम्हारे मस्तक पर जो मसूर के दाल के आकार की टीकी लगी है, वह भी काफी सुन्दर दिखाई दे रही है। पर

सब कुछ होते हुए भी तुम्हारा चेहरा सूना दिखाई दे रहा है। तुमने आज आँखों में काजल नहीं आँजा है, इससे तुम्हारा सौन्दर्य कुछ फीका पड़ गया है। बिना काजल के तुम अच्छी नहीं लगती हो।

काकण छोड़ना

काकदड़ो दस गाठियो रे दुल्लव, काकदड़ो नहीं छूटऽ ॥
लाड़ी की खाट तलऽ लोटजे रे लाड़ा, काकदड़ो नहीं छूटऽ ॥
काकदड़ो काँ की छिन्दलई नऽ बांध्यो, काकदड़ो नहीं छूटऽ ॥
काकदड़ो शान्ता छिन्दलई नऽ बांध्यो, काकदड़ो नहीं छूटऽ ॥
काकदड़ो काँ की बाँगढ़ नऽ बांध्यो, काकदड़ो नहीं छूटऽ ॥
काकदड़ो अमुक बाँगढ़ नऽ बांध्यो, काकदड़ो नहीं छूटऽ ॥
काकदड़ो काँ की बिजळई नऽ बांध्यो, काकदड़ो नहीं छूटऽ ॥
काकदड़ो रेणू बिजळई नऽ बांध्यो, काकदड़ो नहीं छूटऽ ॥
काकदड़ो काँ की गदड़ी नऽ बांध्यो, काकदड़ो नहीं छूटऽ ॥
काकदड़ो धनु गदड़ी नऽ बांध्यो, काकदड़ो नहीं छूटऽ ॥
काकदड़ो काँ की कुतरी नऽ बांध्यो, काकदड़ो नहीं छूटऽ ॥
काकदड़ो सुनीता कुतरी नऽ बांध्यो, काकदड़ो नहीं छूटऽ ॥

यह गीत विवाह में दो बार गाया जाने वाला गीत है। यह गीत प्रथम बार दुल्हन के मंडप में तथा दूसरी बार दूल्हे के मंडप में गाया जाता है। यह गीत दुल्हन, दूल्हे के हाथ में बँधा काकण डोरा छोड़ती है तब गाया जाता है। इस गीत में दुल्हन के परिवार की काकी, भाभी, मौसी, भुवाजी, माँ, बहन, जितने भी हैं- उनको गालियाँ दी जाती हैं।

इस काकण डोर को दस गठानें लगाकर कसकर किसने बाँधा है? हे दुल्हन! इसको छोड़ना है तो दूल्हे राजा की खटिया के नीचे लेट जाना। तब यह छूट जायेगा। इस काकण डोरा को किस छिनाल ने बाँधा है, जो नहीं छूट रहा है। इस काकण डोरा को शान्ता बाई छिनाल ने बाँधा है। तभी तो यह नहीं छूट रहा है। इसको किस बाँगढ़ ने कसकर बाँधा है, जो यह नहीं छूट रहा है। इसको अमुक बाई बाँगढ़ ने बाँधा है, तभी तो यह नहीं छूट रहा है। इस काकण डोरा को कौन सी बिजली जैसी स्त्री ने बाँधा है। इसको चंचल रेणू बाई ने बाँधा है, तब तो यह नहीं छूट रहा है।

इसको कौन सी गधी स्त्री ने बाँधा है, जो यह नहीं छूट रहा है। इसको धनुबाई गधी ने बाँधा है, तभी तो यह नहीं छूट रहा है। इसको कौन सी कुतिया जैसी स्त्री ने बाँधा है, जो यह नहीं छूटता। इस काकण डोरे को सुनीता बाई ने बाँधा है। इसे दस गठानें कस करके बाँधा है तभी तो यह नहीं छूट रहा है। आखिर में इतनी गालियाँ खाने के बाद काकण डोरा छोड़ दिया जाता है और दूल्हा-दुल्हन के पद से मुक्त हो जाते हैं।

वादी छोड़ना

वादीड़ो दस गाठ्यो रे दुल्लव, वादीड़ो नहीं छूटऽ ॥
वादीड़ो काँ की बिजलई नऽ बांध्यो, वादीड़ो नहीं छूटऽ ॥
वादीड़ो गीता बिजलई न बांध्यो, वादीड़ो नहीं छूटऽ ॥
वादीड़ो दस गाठ्यो रे दुल्लव, वादीड़ो नहीं छूटऽ ॥
वादीड़ो काँ की बाँगढ़ नऽ बांध्यो, वादीड़ो नहीं छूटऽ ॥
वादीड़ो अमुक बाँगढ़ नऽ बांध्यो, वादीड़ो नहीं छूटऽ ॥
वादीड़ो दस गाठ्यो रे दुल्लव, वादीड़ो नहीं छूटऽ ॥
वादीड़ो काँ की छिंदलई नऽ बांध्यो, वादीड़ो नहीं छूटऽ ॥
वादीड़ो बसु छिंदलई नऽ बांध्यो, वादीड़ो नहीं छूटऽ ॥
वादीड़ो दस गाठ्यो रे दुल्लव, वादीड़ो नहीं छूटऽ ॥
वादीड़ो काँ की गदड़ी नऽ बांध्यो, वादीड़ो नहीं छूटऽ ॥
वादीड़ो किरण गधड़ी नऽ बांध्यो, वादीड़ो नहीं छूटऽ ॥

यह गीत दुल्हन के मंडप में विदा करते समय गाया जाता है। इस समय दूल्हा मंडप के पास तोरण में खड़ा होता है। दुल्हन उसके ठीक पास में खड़ी होती है। दूल्हे के हाथ में नाड़े से गुथा हुआ बंधन होता है, जिसे वादी कहते हैं। जब सासुजी बंधन छोड़ती हैं तब उस वक्त यह गीत गाते हैं। वादी में कई गठानें लगी होती हैं, जो काकण डोर के साथ बँधी होती है। वादी छोड़ने के समय दूल्हे के परिवार की जितनी भी सुहागन स्त्रियाँ होती हैं, उनका नाम लेकर गालियाँ दी जाती हैं।

हे दूल्हे राजा! तुम्हारे हाथ में जो वादी बँधी है उसमें दस गठानें लगी हुई हैं। इसको किसने बाँधा है? किस बिजली सी चमकने वाली औरत ने इस वादी को बाँधा है? इस बंधन को शान्ताबाई जैसी चमकदार तर्राट औरत ने बाँधा है। हे दूल्हे राजा! यह बंधन नहीं छूट रहा है, इसको कौन सी फूहड़ स्त्री ने बाँधा है? इसको हरीकुँवर बाई जैसी फूहड़ स्त्री ने बाँधा है। इस बंधन को कौन सी गधी स्त्री ने बाँधा है, जो यह बंधन नहीं छूट रहा है। इस बंधन को कौन सी कुत्ती औरत ने बाँधा है? अरे! इसे तो रेणु ने बाँधा है तभी तो यह बंधन नहीं छूट रहा है।

काकण-डोरा चढ़ाना

माता जशोदा हँसी-हँसी पूछऽ,
काई-काई दायजो लायो रे म्हारा चतुर कन्हैया।
गऊआ भी लायो न बछड़ा भी लायो,
तो साजन की बेटी परणी लायो रे म्हारा चतुर कन्हैया।
पलंग भी लायो न गास्या भी लायो,

साजन की बेटी परणी लायो रे म्हारा चतुर कन्हैया।
चरवो भी लायो न दुकड़ी भी लायो,
तो साजन की बेटी परणी लायो रे म्हारा चतुर कन्हैया।
हार भी लायो न झूमकी भी लायो,
तो साजन की बेटी परणी लायो रे म्हारा चतुर कन्हैया।

विवाह कार्य सम्पन्न हो जाने के बाद दूल्हा-दुल्हन सहित मन्दिर में हनुमानजी की मूर्ति के आगे काकण डोर चढ़ाने जाते हैं, तब गाया जाने वाला गीत है।

माँ अपने कन्हैया सदृश पुत्र से पूछती है और वह भी हँसी-हँसी मसकरी करके पूछती है- हे मेरे चतुर सुजान बेटे! तुम्हें दहेज में क्या-क्या मिला है? तब दूल्हा कहता है- मुझे गाय मिली है। जो बछड़े वाली है। मैं निर्विघ्न विवाह करके तुम्हारी बहू को ले आया हूँ। उन्होंने मुझे पलंग, गादी, तकिये सहित अन्य सामान दान में दिया है। बहुत ही भारी भरकम पानी भरने का बर्तन चरवा दिया है। जहाँ मुझे इतना कुछ मिला है। वहीं तुम्हारी बहू को सोने से निर्मित झुमकियाँ और अन्य वस्तुएँ दहेज में मिली हैं और मैं सकुशल तुम्हारे समधीजी की बेटी को विवाह करके ले आया हूँ। माता अपने पुत्र का संतुष्टिपूर्ण उत्तर सुनकर हँसकर उसे गले से लगा लेती है।

काकण-डोरा चढ़ाना

वाट-वाटऽ तम्बुड़ा तणाऊ ओ सुवालई लाड़ी॥
लई जाऊँ म्हारा ओ देश॥
थारो जो देश ककराल्यो रे सुवाल्या दुल्लव॥
नई जाऊँ थारा ओ देश॥
वाट-वाटऽ सड़क बणाऊँ ओ सुवालई लाड़ी।
लई जाऊँ म्हारा ओ देश॥
थारो जो देश घमाल्यो रे सुवाल्या दुल्लव।
नई जाऊँ थारा ओ देश॥
वाट-वाटऽ तम्बुड़ा तणाऊँ ओ सुवालई लाड़ी।
लई जाऊँ म्हारा ओ देश॥
थारो जो देश भुकाल्यो रे सुवाल्या दुल्लव।
नई जाऊँ थारा ओ देश॥
वाट-वाटऽ हलवई बठाडूँ ओ सुवालई लाड़ी।
लई जाऊँ म्हारा ओ देश॥
थारो जो देश तिसाल्यो रे सुवाल्या दुल्लव।

नई जाऊँ थारा ओ देश॥
वाट-वाटऽ कुवला खणाऊँ ओ सुवालई लाड़ी।
लई जाऊँ म्हारा ओ देश॥

हे सुकुमारी! मैं तेरे धूप से बचने के लिये रास्ते-रास्ते तम्बू लगवाऊँगा और तुझे मेरे देश में ले जाऊँगा। हे सुकुमार! मैं तुम्हारे देश में नहीं जाऊँगी। क्योंकि तुम्हारे देश के रास्ते पर पत्थर बहुत हैं। हे सुकुमारी! मैं रास्ते पर जहाँ कंकड़-पत्थर हैं, उस रास्ते को सड़क में बदल दूँगा और तुम्हें अपने साथ में लेकर अपने देश जाऊँगा। हे सुकुमार! मैं तुम्हारे देश नहीं जाऊँगी। क्योंकि तुम्हारे देश में धूप अधिक लगती है। हे सुकुमारी! मैं धूप से बचने के लिये रास्ते-रास्ते तम्बू लगवाऊँगा और तुझे अपने देश लेकर ही जाऊँगा। हे सुकुमार! मैं तुम्हारे देश नहीं जाऊँगी। क्योंकि तुम्हारा देश बहुत ही भूखा है। हे सुकुमारी! मैं रास्ते-रास्ते हलवाई बिठाऊँगा और तुम्हें खिला-पिलाकर ही अपने देश में ले जाऊँगा।

हे सुकुमार! मैं तुम्हारे देश नहीं जाऊँगी। क्योंकि तुम्हारे देश में गरमी अधिक है। पीने का पानी भी नहीं है, रास्ते में मुझे प्यास लगेगी, इसलिये मैं तुम्हारे देश नहीं जाऊँगी। हे सुकुमारी! मैं रास्ते-रास्ते कुएँ खुदवाऊँगा और तुम्हें पानी पिलाते हुए ले जाऊँगा, और तुम्हें मेरे साथ चलना ही है। अंत में दुल्हन को दूल्हे राजा के साथ जाना ही पड़ता है।

बधावा

रंग रो वधावो सरस वधावो, आनंद वधावो महाराज॥
रंग रो वधावो ....
राजा तुम्हारा पिता ते दशरथ राय॥
आड़ा रे रमाव, खड़ा रे रमाव॥
पालणा झुलाव महाराज॥
रंग रो वधावो ....
राजा तमारी माता ते कौशल्या देवी॥
गोद खेलाव, दूध पेवाड़॥
पालणा झुलाव महाराज॥
रंग रो वधावो ....
राजा तुम्हारी गोरी ते सीता देवी॥
झारी भरी लाव, ठंडो पाणी पाव॥
पंखो झलाव महाराज॥
रंग रो वधावो ....
राजा तुम्हारी बहण ते शान्ता देवी॥

सातिड़ा पुराव, आरती संजोव॥
मोती सी वधाव महाराज॥
रंग रो वधावो ....
रंग रो वधावो, सरस वधावो, आनंद वधावो महाराज॥

हे राजा! तुम्हें रंगीन बधाई, सरस बधाई, आनंद की बधाई। हे राजा! तुम्हारे पिताजी दशरथ राजा हैं। राजा दशरथ बच्चों को गोद में खिला रहे हैं, उन्हें गोद में झुलाते हैं, आड़ा-तिरछा करते हैं और पालने में झूला झुलाते हैं। हे राजा! तुम्हारी माताजी कौशिल्या देवी हैं। जो तुम्हें गोद में खिलाती, दूध पिलाती हैं और पालने में सुख की नींद सुलाती हैं। हे राजा! तुम्हारी पत्नी सीता देवी हैं। जो झारीभर कर लाती हैं, ठंडा पानी पिलाती हैं और तुम पर पंखा झलती है। हे राजा! तुम्हारी बहन शान्ता देवी हैं। जो तुम्हारे दरवाजे पर साती लगाती हैं। आरती संजोकर तुम्हें मोतियों से बधाती है। हे राजा! तुम्हें रंगीन बधाई, सरस बधाई है।

बधावा

जी हो यो ही रे दिवलो इन्द्र लुहार नऽ घड़ियो,
जेमऽ पूर्‌यो रे सवा घड़ो तेल।
सोन्ना की दाड़ी दीयो रे बळऽ।
जी हो यो ही रे दिवलो मजघर मऽ धरियो॥
मजघर बठ्या म्हारी सदा सुहागेण माय॥
सोन्ना की दाड़ी दीयो रे बळऽ।
जी हो यो ही रे दिवलो कंचेरी मऽ धरियो॥
कंचेरी मऽ बठ्या म्हारा समरथ बाप॥
सोन्ना की दाड़ी दीयो रे बळऽ।
जी हो यो ही रे दिवलो मंडप मऽ धरियो॥
मंडप बठ्या म्हारा अर्जुन वीर॥
सोन्ना की दाड़ी दीयो रे बळऽ।
जी हो यो ही रे दिवलो रसवई मऽ धरियो॥
रसवई बठ्या म्हारी सदा सोभागेण भावज॥
सोन्ना की दाड़ी दीयो रे बळऽ।
जी हो यो ही रे दिवलो आरती मऽ धरियो॥
आरती घरऽ म्हारी सदा सुहागेण बईण।
सोन्ना की दाड़ी दीयो रे बळऽ।
जी हो यो ही रे दिवलो पटसाल मऽ धारियो॥
पटसाल खेलऽ म्हारा नाना ताना बळऽ॥

सोन्ना की दाड़ी दीयो रे बळऽ।
जी हो यो ही रे दिवलो सभा मऽ धरियो॥
सभा मऽ बठ्या म्हारा साजन समधी लोग।
सोन्ना की दाड़ी दीयो रे बळऽ।

ऐ जी! इस दिये को इन्द्र लोहार ने बनाया है। जिसमें सवा घड़ा तेल भरा हुआ है। सोने की समाई में दिया जल रहा है। इस दीपक को मैंने मध्य गृह में रखा। मध्य गृह में मेरी सदा सुहागन माताजी बैठी हैं। सोने की समाई में दीपक जल रहा है। इस दीपक को मैंने बैठक में रखा। बैठक में मेरे समर्थ पिताश्री बैठे हुए हैं। सोने की समाई में दीपक जल रहा है। इस दीपक को मैंने मंडप में रखा। मंडप में मेरे अर्जुन की तरह भाई बैठे हुए हैं। सोने की समाई में दीपक जल रहा है। इस दीपक को मैंने रसोई घर में रखा। रसोईघर में मेरी सदा सुहागन भावज बैठी हैं। इस दिये को मैंने आरती में रखा है। आरती को मेरी सदा सुहागन बहन उठा रही है। सोने की समाई में दीपक जल रहा है। इस दीपक को मैंने पटसाल में रखा। पटसाल में मेरे नन्हें-मुन्ने बच्चे खेल रहे हैं। सोने की समाई में दीपक जल रहा है। इस दीपक को मैंने सभा में रखा। सभा में मेरे सम्बन्धी रिश्तेदार बैठे हैं। सोने की समाई में दीपक जल रहा है।

बधावा

सुणो रे म्हारा सगुणा सायब जी, बईण कऽ पड़ोस मत राख जो॥
एक गेली नऽ गोरी तू मूरख गंवार, माय का जाया हम दोय जी॥
सुणो रे म्हारा सगुणा सायब..
नायल की ओ बईण घर नींव भराड़ूँ, गुड़ की दिवार बनाड़ सा॥
साटा का ओ बईण घर डांडा नखाड़ूँ, कपड़ा की छत छवाड़ सा॥
सुणो रे म्हारा सगुणा सायब..
जलेबी का ओ बईण घर जाल्या लगाड़ूँ, सिंगोड़ा का कंगूरा उतार सा॥
लोणी का ओ बईण घर गिलावा लेवाड़ूँ, शक्कर का पोता फेराड़ सा॥
सुणो रे म्हारा सगुणा सायब..
आमऽ की सामऽ बईण को मयल बधाड़ूँ, बीच मऽ राखूँ चौगान जी॥
आमऽ की सामऽ बईण को झूलो बधाड़ूँ, झूलऽ ते भाई नऽ बईण जी॥
थारा सरीखी गोरी लाऊँ दुई चार रे, बईण कऽ राखूँ पड़ोस मऽ॥
सुणो रे म्हारा सगुणा सायब जी, बईण कऽ पड़ोस मत राख जो॥

गीत-श्रीमती कान्ता जोशी, खंडवा

इस गीत में भाई अपनी बहन को विशेष महत्त्व देता है। इस गीत में पति-पत्नी की नोकझोक है। पति महोदय अपनी पत्नी की उपेक्षा करते हैं।

पत्नी अपने पति से कहती है– आप अपनी बहन को पड़ोस में मत रखना। उसका घर कहीं और बना देना। पति, पत्नी से कहता है– हे प्रिये! तू मूर्ख और गँवार है। हम दोनों एक ही माता की कोख से जन्में हैं। फिर मैं अपनी बहन को दूर क्यों रखूँगा? मैं तो अपनी बहन को पड़ोस में ही रखूँगा।

मैं नारियल से बहन के घर की नींव बनवाऊँगा। गुड़ से उसकी दीवारें बनवाऊँगा। गन्ने से उसकी छत डलवाऊँगा। उस पर कीमती कपड़े की छत लगवाऊँगा। जलेबी के रोशन दान होंगे। सिंगोड़े के कंगूरे उतराऊँगा। मक्खन से बहन के घर का फर्श बनवाऊँगा, उस पर शक्कर के पोते लगवाऊँगा। मेरे घर के ठीक सामने बहन का घर बनवाऊँगा और बीच में दालान होगा। आमने-सामने झूले बँधवाऊँगा। भाई-बहन झूला झूलेंगे। यदि तू रूठ जाती है तो रूठ जा, अपने मैके जाती हो तो चली जा। मैं अपनी बहन को पड़ोस में ही रखूँगा। रूठकर जाती हो तो जा, मैं तेरे से अच्छी पत्नी ले आऊँगा। चाहे कुछ भी हो मैं अपनी बहन को पड़ोस में ही रखूँगा।

बधावा

हरा जो रेशमी कपड़ा पेरी नऽ राधा प्यारी निकली।
हरा जो रेशमी कपड़ा पेरी नऽ राधा प्यारी निकली॥
ससरा तो म्हारा आकाश का चंदा॥
सासु तो म्हारी बाग री चमेली॥
चमकणऽ लाग्या आकाश का चंदा॥
फुलणऽ लागी बाग री चमेली॥
हरा जो रेशमी कपड़ा ....
जेठ तो म्हारा ओ आकाश का तारा॥
जेठाणी म्हारी आकाश की बिजळई॥
चमकणऽ लाग्या आकाश का तारा॥
चमकणऽ लागी आकाश की बिजळई॥
हरा जो रेशमी कपड़ा ....
देवर तो म्हारा ढोल का डंका॥
देराणी म्हारी मेंद री पुतळई॥
वाजणऽ लाग्या ढोल का डंका॥
नाचणऽ लागी मेंद री पुतळई॥
हरा जो रेशमी कपड़ा पेरी नऽ राधा प्यारी निकली।

गीत-श्रीमती हेमलता उपाध्याय, खंडवा

हरे रंग के रेशमी कपड़े पहनकर राधा (बहू) प्यारी निकली है। मेरे ससुर जी आकाश के

चन्द्रमा के समान हैं। मेरी सासु जी बाग की चमेली के समान हैं। ससुर जी आकाश में चमकने वाले चन्द्रमा के समान शांत और शीतल हैं। चन्द्रमा को देखकर बाग में चमेली की तरह मेरी सास फूलने लगी है। मेरे जेठ जी आकाश के तारे हैं। मेरी जेठानी आकाश की बिजली हैं। मेरा देवर ढोल के बजाने का डंका है। मेरी देवरानी मोम की पुतली है। जब देखो ढोल पर थाप लगी रहती है यानी फालतू बोलता ही रहता है। मोम की पुतली देवरानी केवल इधर-उधर नाचती रहती है।

विवाह अंतिम बधावा

तमरो राज अचल होय हो उदयसिंह भाई॥
तम घर आनंद वधावणा बे हाँ॥
तमरा रंग मयल पर हो राजा॥
मोर बोलऽ कोयल शब्द सुहावणा बे हाँ॥
तमरा भंवर पलंग पर हो राजा॥
लाल खेलऽ लाल को थाई लगावणा बे हाँ॥
तमरी सावलड़ी सुख सेज सूती॥
दासी ढोलऽ रंग रिझणो बे हाँ॥

हे भाई उदयसिंह! तुम्हारा ऐश्वर्य और कुटुम्ब परिवार सदैव अचल रहे, अमर रहे। तुम्हारा रंग महल सदा भरा पूरा रहे। और उसपर मोर तथा कोयल बोलती रहे। तुम्हारी सेज पर बच्चे खेलें। तुम्हारे बच्चे को धाय माँ दूध पिलाती रहे। तुम्हारी साँवली सलोनी गोरी सूखपूर्वक सोती रही और दासियाँ उस पर पंखा झलती रहें।

बाना जीमना

ओ नणदल पयलो वधावो म्हारा यां आबिया।
ओ नणदल भेजो म्हारा दादा जी दरबार॥
ओ म्हारी नाजुक नणदल, सपना मऽ हंज्या मारू देखिया॥
ओ नणदल दूसरो वधावो म्हारा यां आबिया।
ओ नणदल भेजो म्हारा काकाजी दरबार॥
ओ म्हारी नाजुक नणदल, सपना मऽ हंज्या मारू देखिया॥
ओ नणदल तीसरो वधावा म्हारा यां आबिया॥
ओ नणदल भेजो मामाजी दरबार॥
ओ म्हारी नाजुक नणदल, सपना मऽ हंज्या मारू देखिया॥
ओ नणदल चौथो वधावो म्हारा यां आबिया।

ओ नणदल भेजो म्हारा बीराजी दरबार॥
ओ म्हारी नाजुक नणदल, सपना मऽ हंज्जा मारू देखिया॥

विवाह में बाना जीमने जाते समय गाया जाने वाला गीत है। पति परदेश में हैं और पत्नी को स्वप्न में दिखाई देते हैं। यही बात भाभी अपनी नाजुक सी ननदी को बताती है।

ओ मेरी प्यारी ननदी! पहली बधाई मेरे यहाँ पर आई है। उसे मैंने अपने पिताजी के घर भेज दिया है। ऐ मेरी प्यारी नाजुक ननदी! आज मैंने स्वप्न में तुम्हारे भाई के दर्शन किये हैं। ओ मेरी प्यारी ननदी! दूसरी बधाई मेरे यहाँ पर आई है। उसे मैंने अपने काकाजी के घर भेज दिया है। ऐ मेरी प्यारी ननदी। आज मैंने स्वप्न में तुम्हारे भैया जी के दर्शन किये हैं। ओ मेरी प्यारी सी ननदी! तीसरी बधाई मेरे यहाँ आई है। उसे मैंने मेरे मामाजी के घर भेज दी है। ऐ मेरी प्यारी नाजुक सी ननदी! आज मैंने तुम्हारे भैया जी को स्वप्न में देखा है। ओ मेरी प्यारी ननदी! चौथी बधाई मेरे यहाँ आई है। उसे मैंने मेरे भैया जी के घर भेज दी है। ऐ मेरी प्यारी नाजुक सी ननदी! आज रात जब मैं सोई थी तब मैंने तुम्हारे भैया जी के दर्शन किये हैं।

बाना जीमना

नीळई साड़ी नऽ नीळो कांचळो,
नीळई म्हारी मारूणी री बाग।
नीळो तोतो हो बाग मऽ खुली रह्यो,
पेळई साड़ी नऽ पैळो कांचळो॥
पेळो म्हारी मारूणी रो रूप,
पेळई चोप हो दांत मऽ खुली रही।
लाल साड़ी नऽ लाल कांचळो,
लाल म्हारी मारूणी रा होट॥
लाल सुरखी हो नयणा मऽ खुली रही,
काली साड़ी नऽ काळो कांचळो॥
काली म्हारी मारूणी रा केश,
कालो कजलो हो नयणा मऽ खुली रह्यो।
पयला पयर की हो रातुली,
आई मकऽ बाला पण री नींद।
चेंडू खेलन्ता सायब सोई गया,
दूसरा पयर की हो रातुली॥
आई मकऽ जवानी की नींद,
सार खेलन्ता सायब सोई गया॥

तीसरा पयर की हो रातुली,
आई मकऽ बुढापा की नींद॥
नात्या पोत्या लई नऽ दादाजी सोई गया॥

यह गीत गाड़ी में बाना जीमने जाते समय गाया जाता है। पहले एक गाँव से दूसरे गाँव दूल्हे अथवा दुल्हन को रिश्तेदारों सहित परिवार के लोगों को बाना जिमाने का रिवाज था। आजकल भी कहीं-कहीं इस रिवाज को निभाया जाता है। इस गीत में स्त्री के चार शृँगारों का वर्णन है जो रंगों के माध्यम से व्यक्त हुआ है। हरे, पीले, लाल, काले रंग की मनोवैज्ञानिक तरीके से अभिव्यंजना की गई है। गीत के अन्त में जीवन को तीन प्रहरों में प्रतीकात्मक रूप से समझाया गया है।

हरी साड़ी, हरा पोलका पहने हरे बगीचे में खड़ी गोरी हरे रंग के तोते के समान शोभायमान हो रही है।

पीली साड़ी, पीला ही पोलका में गोरी का गेंहुआ पीला बदन खिल रहा है। गोरी के दाँतों में सोने की चोप (कीला) और अधिक सुन्दरता बढ़ा रही है, उसकी शोभा अवर्णनीय है।

लाल साड़ी, लाल पोलका पहने लाल रंग की आभा युक्त नायिका के ओंठ हैं, उस पर लाल रंग की बिंदिया मारुणी के मस्तक पर जगमगा रही है। उसकी शोभा अवर्णनीय है। गोरी काली साड़ी, काला ही पोलका पहने है, उस पर काले रंग के गोरी के केश लहरा रहे हैं। उस पर भी गोरी की आँखों में काला काजल लगा हुआ है, जो उसकी सुन्दरता को दुगुनी बढ़ा रहा है।

नायिका मन में सोचती है- मेरे पहनने-ओढ़ने-शृँगार करने के दिन देखते-देखते निकल गये हैं। जैसे प्रथम प्रहर की रात बचपन की प्रथमावस्था है जब बच्चा सुख की नींद सोता है। बचपन की नींद बड़ी सुहावनी होती है।

दूसरा प्रहर जवानी की रात का है। विवाह के बाद आधी रात तक चौपड़ आदि खेलते-खेलते प्रियतम के साथ कब नींद आ जाती है, पता ही नहीं लगता। तीसरा प्रहर बुढ़ापे की रात का है, जिसमें अत्यधिक नींद आती है क्योंकि बच्चों के भी बच्चे हो जाते हैं। घर में सब प्रकार का आनन्द होता है। दादाजी नाती-पोतों को लेकर सुख की नींद सो जाते हैं।

मृत्यु गीत

काया जीव से येऊ कहे, जीव सुणो म्हारी बात॥
हाँऊ जाणू संग कई जासे, काया मलमल धोये॥
जवऽ रे हंसा उड़ी गयो, काया रई रे पछताय॥
काया जीव से येऊ कहे ....

भाई बन्धु का कारणा, उल्टा लोभ कमाया॥
हरिजी का सुमरण नहीं किया, हीरा जलम गमाया॥
काया जीव से येऊ कहे ....
माता रोवे जलम जोगणी, बेन्या वार तिवार॥
तिरिया रोवे रे तीन दिन, दूजा कर घरवास॥
काया जीव से येऊ कहे ....
हाड़ जले जैसी लकड़ी, बाबा नन्द को घास॥
कंचर सरीकी काया जले, कोई आवऽ नई पास॥
काया जीव से कहे ....
अणहद बाजा बाजिया, बाजा गरू दरबार॥
सेन भगत की बिनती, राखो शरण लगाय॥

जीव काया (शरीर) से कहता है। तेरा अन्त समय आ गया है। आत्मा अमर है। मैं अमर हूँ और शरीर तेरा नाश होने वाला है। तू नष्ट हो जायेगा। जब आत्मा रूपी हंस उड़ जायेगा, तो तेरा क्या होगा? तब तू पड़ा रहकर पछताता रहेगा। हे प्राणी! तूने अपने कुटुम्ब परिवार के कारण उल्टा सीधा काम करके धन कमाया, एक पल भी भगवान का ध्यान नहीं किया, जिस परमात्मा ने तुझे हीरे जैसा जन्म दिया, उसे तूने व्यर्थ ही गँवा दिया। तेरा परिवार भी तेरे कुछ काम नहीं आयेगा। तेरी माँ तो जन्म भर रोयेगी, बहन पर्व-त्यौहारों पर रोयेगी, और तेरी पत्नी तीन दिन के बाद रो-धोकर, दूसरा घर कर सकती है। तेरा शरीर मृत्यु के बाद लकड़ी के समान जल जायेगा। तेरे सिर के बाल घास की तरह जल जायेंगे। तेरी कंचन जैसी काया जलेगी, तब तेरा कोई भी रिश्तेदार तेरे पास फटकने वाला नहीं है। सेनभगत विनती करते है- नश्वर काया पर घमण्ड न कर, प्राण निकलने पर शरीर को जला दिया जायेगा।

मृत्यु गीत

राम भरोसा हम र्या, कछु खबर नी आई॥ टेक
चित्रकूट के घाट पर, खासी मढ़ी बनाई॥
सुख संपती आनंद भया, सीता बाग लगाई॥ चौक
सोवन को मीरगो भयो, चुगी खाय रे वाड़ी॥
सीता कहे सुण लक्ष्मण, तुमसे कछु नहीं बणिया॥ चौक
तो रघुपति चढ़ी गया शिकार को, संग लक्ष्मण भाई॥
अपुण धनुष चढ़उय के, मीरगो दाव नी आयो॥ चौक
रावण मढ़िया में उतरा, आया दश रे भाई॥
ज्ञान घटण की जुगती करी, सिंगनाद बजाई॥ चौक
अलगरा रे जोगी करी रया, कब का ठाड़े द्वार॥

भिक्षा देवी सीता-जानकी, आड़ी रेखा देवाणी॥ चौक
आड़ी पाट डलाय के, ऊपर भिक्षा रे मांगी॥
बाव पकड़कर झोली भरी, सीता रोवण लागी॥ चौक
मीरगा नहीं छल हुआ, चली गया बन माय॥
सांझ पड़े घर आविया, मढ़ी सुनी रे पायी॥ चौक
आली-गीली लाकड़ी जम गई, लक्ष्मण करण तू जाय॥
अपणा धनुष चढ़ाय के, अग्नि हुई रे प्रकाश॥

श्रीराम स्वर्णमृग का पीछा करते हुए कहीं दूर निकल गये। उनकी कुछ खबर अभी तक नहीं मिली। राम वनवास में पंचवटी में कुटी बनाकर रहते हैं। (इस पद में चित्रकूट के घाट के समीप कुटी बनाने का जिक्र है।) जिसमें सीता ने एक छोटी-सी बगिया भी लगा ली है। जहाँ सारे वनचर अभय होकर आनन्दपूर्वक घूमते हैं। उस कुटिया में सभी प्रकार की प्राकृतिक सुख-सम्पत्ति और आनन्द है।

वहीं एक दिन सोने का एक हिरण आया और सीता की बगिया में हरी-हरी घास चरने लगा। यह देख सीता देवर लक्ष्मण से उसे भगाने को कहती हैं, लेकिन लक्ष्मण वह स्वर्णमृग भगा नहीं पाता, क्योंकि वह रावण के द्वारा भेजा गया मारीच रूपी मायावी हिरण था। तब सीताजी ने श्रीराम से कहा। श्रीराम धनुष-बाण चढ़ाकर स्वर्णमृग के शिकार के लिये उसके पीछे-पीछे दौड़ पड़े। पीछे से लक्ष्मण गये। पर मृग तो मायावी था, कभी अदृश्य होता तो कभी दृश्यमान। ऐसा करते-करते राम और लक्ष्मण जंगल में काफी दूर चले गये।

इधर सीता की सूनी कुटिया देखकर रावण साधुवेश में आया। उसने कुटिया द्वार पर 'भिक्षाम् देहि' की आवाज लगाई। रावण ने अपनी दुष्ट बुद्धि लगाई और साधु का सिंग बाजा बजा दिया। देवी! जोगी तेरे द्वार पर कब से खड़ा है? आवाज लगा रहा है। भिक्षा दे दो। पर सामने देवर लक्ष्मण की आड़ी रेखा पड़ी थी।

जोगी ने कहा- देवी! हम घर के भीतर से बंधी हुई भिक्षा नहीं लेते, तनिक बाहर आकर भिक्षा दीजिए। सीता बड़े संकोच से लक्ष्मण रेखा लाँघकर भिक्षा देने आती है। जैसे ही वह बाहर आती है। रावण उसकी बाँह पकड़कर उसे अपनी झोली में बिठा लेता है। यह देखकर सीता रोने लगती है।

इधर राम और लक्ष्मण कुटिया में लौटते समय सोचते हैं- वह मृग नहीं था, छल था। हमारे साथ धोखा हुआ है। वह वन में कहीं गायब हो गया है। शाम को जब दोनों भाई कुटिया में लौटते हैं तो कुटिया को सूनी पाते हैं। सीता कुटिया में नहीं है। दोनों भाई आवाज लगाते हैं, पर कहीं से कोई जवाब नहीं आता। अंधेरा होने पर राम लक्ष्मण को गीली लकड़ियों को जलाने की कहते हैं। लक्ष्मण धनुष पर बाण चढ़ाकर अग्नि प्रकट करते हैं। अग्नि के प्रकाश में भी सीता कहीं दिखाई नहीं देती।

मृत्यु गीत

राजपाट छोड़ी गया, छोड़ा कुटुम परिवार॥ टेक
तो नवरंग थारी गेली सजाई, हीरालाल मऽ लाल॥
डोली मऽ पिताजी बैठिया, उड़ी रया लाल गुलाल॥ चौक
माय रोवे थारी जलम जोगणी, बेन्या वार तिवार॥
तिरिया रोवे थारी तेरा दिन, लागी सयसर पार॥ चौक
भाई रे बन्दू थारा आसपास, कहाँ लाग्यो संगात॥
सारो कुटुम छोड़ी गया, पहुँचा सरग द्वार॥ चौक
न्हाई धोई सब घर वो आया, सब मिल भगती उपजाया॥
बईण भाणिज सब रोवण लाग्या, उनकऽ ग्यान बताओ॥ चौक
अणहद बाजा बजीया, वाजा गरू दरबार॥
सेन भगत की बिनती, राखो शरण लगाय॥

मृत्यु के पश्चात् सारा पसारा, राजपाट, माल-असबाब सब यहीं छूट जाता है। सारा कुटुम्ब-परिवार सब यहीं रह जाता है। आदमी के मरते ही शवयात्रा के लिये नवरंगी डोली सजाई जाती है। उसमें पिताजी यानी शरीर को बैठाया गया। उस पर अच्छा अबीर, गुलाल उड़ाया जाता है।

हे प्राणी! तेरी माता तेरे नाम से जन्म भर रोयेगी और तेरी पत्नी तेरे नाम लेकर केवल तीन दिन ही रोयेगी, तेरी बहन तुझे याद करके प्रत्येक त्यौहार पर रोयेगी। तेरी तो जिन्दगी पार लग गई। लेकिन तेरी पत्नी की जिन्दगी किस प्रकार बसर होगी? भाई-बन्धु तुझे श्मशान घाट तक लेकर जायेंगे। इन लोगों का बस यहीं तक साथ है। सभी पारिवारिक जनों को छोड़कर तुझे अकेले ही जाना है। श्मशान घाट से आने के बाद वे स्नान करेंगे और सब ज्ञान ध्यान की बातें करेंगे। बहन भानिज सब रोते रहेंगे। यदि तूने अच्छे कर्म किये होंगे तो उनकी भी चर्चा करेंगे। इसलिये हे प्राणी! तू अच्छे कर्म कर, जिससे तुझे दुनिया याद करे। सेनभगत विनती करते हैं- गुरू की कृपा से उस परम तत्त्व के दर्शन हो गये, जहाँ निरन्तर अनहद नाद अमर संगीत बजता रहता है। मैं तो उसी की शरण में सदैव लगा हूँ।

मृत्यु गीत

मन सागर दरिया बहे, उड़े रंग फुहारा॥
ब्रह्म बीज निच बोवजो, अंत-तंत का क्यारा॥
प्रेम पिरथ जल छिचजो, खड़ा बाग तुम्हारा॥
मन सागर दरिया ....
कलक बीज करता रहे, मोती लागे रे जाला॥

जग-मग मोती हुई रया, जे को निरमल जल॥
मन सागर दरिया ....
हाऊँ जाणू भाव भात है, भात रंग उतारो॥
नाना बीज फूल फूलीया, लग्या देव का अंग॥
मन सागर दरिया ....
अणहद बाजा बजीया, वाजा गरू दरबार॥
सेन भगत की बिनती, राखो शरण लगाय॥

हे प्राणी! तेरे शरीर में सातों समुद्र और अनेक तालाब हैं। जिसके अनेक रंग हैं। तू इस शरीर रूपी खेत में ब्रह्म का बीज बो। अपनी आत्मा की क्यारी में ब्रह्म ज्ञान रूपी बीज बोकर प्रेम-प्रीति के जल का सिंचन कर। जिससे तुम्हारा बाग लहलहा उठेगा। वह ब्रह्म बीज भगवान की कृपा से फूलेगा-फलेगा, जिसमें फल रूपी मोती लगेंगे। सद्भावना के ये मोती गुच्छों के रूप में लगेंगे और तुम्हारी कीर्ति बढ़ेगी। यद्यपि मोतियों का रंग अनेक प्रकार का होता है और फूलों का रंग भी जुदा-जुदा होता है, पर फूल खिलने के बाद अन्त में देवता के चरणों में चढ़ता है। उसी प्रकार दया, ममता, दान, प्रेम के रंग भी अलग हैं। सेनभगत कहते हैं- इनमें से किसी एक को अपना लेना तो तेरा जीवन धन्य हो जायेगा। अन्त में परमेश्वर के अंग लगकर तेरा आवागमन मिट जायेगा। तेरा उद्धार हो जायेगा।

मृत्यु गीत

अन्त मिलऽ नी कोई आपणा, समझी लेवो रे भाई॥
अन्त मिलऽ नी कोई .... उड़ान
बहुत बिकट गढ़ चलना, दूर हे रे पैयाल॥
घड़ी का घड़्याला बाजता, बाजा गरू दरबार॥
अन्त मिलऽ नी कोई ....
भवसागर अंधा घोर है, जैसी अंधियारी॥
आपको तो सूझे नहीं, मन तू क्यों गोता खाय॥
अन्त मिलऽ नी कोई ....
भवसागर का रयणा, कैसा पार उतरणा॥
बिना नाव बिना हो आँवली, अटकी गयो रे दिन॥
अन्त मिलऽ नी कोई ....
अणहद बाजा बाजिया, वाजा गरू दरबार॥
सेन भगत की बिणती, राखो शरण लगाय॥
अन्त मिलऽ नी कोई ....

गीत-श्री तरुवरदास महंत, दवाना

हे प्राणी! तेरी आत्मा का कोई अन्त नहीं है। यह बात समझने की है। प्रत्येक व्यक्ति को इसे अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए। आत्मा अमर है। शरीर नश्वर है। परमात्मा को पाने का मार्ग बहुत ही कठिन है। उसका ठिकाना बहुत दूर है। वह आकाश में सात लोक पार करने पर मिलता है, उसका वहीं स्थायी निवास है। समय की घड़ी निरन्तर गति की घड़ियाल बजाती रहती है, समय कभी रुकता नहीं। धीरे-धीरे पूरा जीवन निकल जाता है। शरीर का अन्त समय आ जाता है, तब याद आता है कि हमने किसी गुरू के समीप पहुँचकर वह ज्ञान प्राप्त नहीं किया।

इस संसार रूपी सागर में घनघोर अंधकार छाया है। किसी को कुछ दिखाई नहीं देता। जो अपने मन में प्रकाश की एक किरण भी देख लेता है तो उसका मन फिर कभी कहीं भटकता नहीं। मन इधर-उधर गोता नहीं खाता। इस संसार रूपी सागर में रहकर किस तरह से पार कर लेना, इसका उपाय कोई सद्‌गुरू ही बता सकता है। जब एक छोटी-सी नदी को भी बिना नाव और बिना पतवार के पार नहीं किया जा सकता, तब तो संसार रूपी सागर जिसमें अथाह और अनन्त जल ही जल हो, उसको कैसे पार किया जा सकता है? इसलिए सद्‌गुरू की शरण में जाना उत्तम है। नहीं तो एक दिन तेरी नाव अटक जायेगी। सेनभगत कहते हैं- बिना गुरू के कोई सच्चा मार्ग नहीं दिखा सकता, इसलिए गुरू की शरण ही साधक के लिये सही ठिकाना है।

मृत्यु गीत

अमरकंठ नित धाम है, नित न्हावण करना॥
वासेणी जाल से निसरी, मईया करण कुँवारी॥
कलजुग मऽ देवी आविया, कलु करऽ थारी सेवा॥
बड़ा दो पर्वत फोड़ के, धरा गिरी पंडयाल॥
जल अति वोको थाग नई, जल वयऽ रे अपारा॥
अमरकंठ नित धाम ....
कई येक रूसी-मुनि तप करे, मईया रेवा किनारे॥
झोली रे झण्डा जिनऽ संग लिया, फेरऽ रून्ड माला॥
अमरकंठ निज धाम ....
अणहद बाजा बाजिया, वाजा गरू दरबार॥
दास कबीर की बिणती, राखो शरण लगाय॥

गीत-श्री तरुवरदास महंत, दवाना

श्री नर्मदा माताजी अमरकंटक से निकलती हैं। जनश्रुति यह है कि रेवा मैया बाँसों की समूह जाल से निकली हैं। और यह भी प्रचलित है कि नर्मदा चिर कुँवारी है। पुण्य सलिला नर्मदा के दर्शन मात्र से पाप नष्ट हो जाते हैं।

नर्मदा बड़े-बड़े पहाड़ों को फोड़कर उनका अभिमान चूर करके धरती पर काफी नीचे

बड़े ही वेग से बहती हैं। जिसके जल की कोई थाह नहीं है। उसमें अथाह पानी है। इसके किनारे मार्कण्डेय आदि ऋषि-मुनियों ने तपस्या की है। अनेक साधु सन्त जोगी झोली लेकर मैया की परिक्रमा करते माँगते खाते हैं। सिद्ध साधक हाथ में चन्दन मोती की मालाएँ लेकर माताजी के नाम का जाप जपते हैं। अपने जीवन को धन्य करते हैं।

मृत्यु गीत

कोई नी मिल्यो म्हारा देश को, किनऽ कऽ कहूँ म्हारा मन की।
लाल कहूँ लाली नहीं,
जादू सो भी नहीं, दमकऽ वो झट हे,
वहाँ सब के मन माही।
कोई नी मिलऽ म्हारा देश को।
पोवन पानी से प्रभु पातला जैसे सूर्या घाम।
जैसा सरद का चाँदना, अन्त मऽ सोहे राम॥
कोई नी मिलऽ म्हारा देश को।
इस दरियाव की माछली, पीछे नांडे में जाय,
पानी देख्यो जीनऽ तोकड़ो, पीछी सागर जावे॥
कोई नी मिलऽ म्हारा देश को।
अणहत वाजा वाजीया, वाजा गरू दरबार।
सेन भगत की बिनती, राखो शरण लगाय॥
कोई नी मिलऽ म्हारो देश को ....

इस संसार में कोई भी ईश्वर की अनुभूति प्राप्त मुझे नहीं मिला। मुझे उस परमतत्त्व ईश्वर से मिलना है। मेरे मन का रहस्य किसको कहूँ? मैंने उस परम तत्त्व के प्रकाश को देखा है, लेकिन व्यक्त करना मुश्किल है। अगर उसे लाल रंग रूप का कहूँ तो उसमें लाली है ही नहीं। वह कोई करिश्मा या जादू भी नहीं है। वह क्षणिक चमकने वाला प्रकाश ही है। वह सबके भीतर समाया है। सबके मन में है। ईश्वर के रूप और रंग की कोई अवधारणा नहीं है। वह हवा और पानी से पतला है। वह सूर्य की धूप के समान है। वह शरद पूर्णिमा की शीतल चाँदनी सा श्वेत है। वह राम सबके हृदय में वास करता है।

जैसे समुद्र की मछली सागर छोड़कर किसी नदी-नाले के पानी में आ जाये तो पानी कितना कम दिखाई देगा, इसकी कल्पना की जा सकती है। वह मछली नदी नाले को छोड़ पुन: सागर में ही जाने की कोशिश करेगी। वह नाले में एक दिन भी नहीं रह पायेगी। मनुष्य जीवन भी इसी प्रकार है। मृत्यु उपरान्त जीव उसी परमात्मा में विलीन हो जाता है। सेन भगत कहते हैं- जिन प्रभु ने जन्म दिया है, उसी में हमारा विलय भी होना है। गुरू की कृपा से ईश्वर का अनहद मार्ग प्रशस्त होता है।

मृत्यु गीत

आणु आयो रे पारीब्रह्म को, सासरिया को जाणो॥
आणु आयो रे ....
काय को तो आणु आयो, चोली चंगी सिवाड़ी॥
कछू रे सिवी कछू सिवला, कछू अंग लगावणा॥
आणु आयो रे ....
चलो म्हारी संग की सहेली, आपुण बाग मऽ जावां॥
चम्पा चमेली दवणू मोगरो, खासी परमल लेवा॥
आणु आयो रे ....
चलो म्हारी संग की सहेली, आपुण सिस गुथावां॥
कछू रे गुथिया कछु गूथणा, मोती भाग सवारा॥
आणु आयो रे ....
अणहद बाजा बाजिया, बाजा गरू दरबार॥
सेन भगत की बिणती, राखो शरण लगाय॥
आणु आयो रे ....

यह अर्थी उठाते समय गाया जाने वाला गीत है। इस भजन में परब्रह्म का बखान किया गया है। आज ससुराल जाने का परमात्मा के घर से बुलावा आ गया है। चलो सखियों, चोली सिलवा लें। कुछ सिली और कुछ अधूरी रह गईं और भगवान के घर से बुलावा आ गया। चलो मेरे साथ की सहेलियों हम सब बाग में जाएँ। वहाँ से चमेली, चम्पा, दवणा, मोंगरा के फूलों को चुन लाएँ और उसकी खुशबू लें। चलो मेरे साथ की सहेलियों हमारा शीश गूँथ दो, कुछ गूँथा और कुछ गूँथना बाकी रह गये और परमेश्वर का बुलावा आ गया। सभी कुछ अधूरा रह गया। सब इच्छाएँ रह गईं और एक दिन मृत्यु आ गई। सेन भगत कहते हैं– मृत्यु सुनिश्चित है। इसलिए किसलिए जल्दी करना चाहिए?

मृत्यु गीत

पढ़ो रे पोपट श्रीराम का, सीता माई न पढ़ाया। टेक।
भाई रे पोपट थारा कारणा, खासा पींजरा बणाया,
काड़ी मोड़ी को थारो पिंजरो, ऊपर लाल झपाया।
पढ़ो रे पोपट श्रीराम ....
चंपा चमेली दवणो मोंगरो फुली रइ रे अनार।
एक जो फुल के कारण, फुली डाळम डाळ।
पढ़ो रे पोपट श्रीराम ....
भाई रे पोपट थारा कारणा खासा कुआ रे खणाया।

उन्डो कुवो मुख साकरो, नीर हेरे पैयाला।
पढ़ो रे पोपट श्रीराम ....
आठ फूली बारा बनस्पती, फुली डाळम-डाळ।
सेन भगत की बिनती, राखो शरण लगाय।

हे आत्मा रूपी तोते! तू श्रीरामजी का भजन कर, जिस प्रकार सीताजी ने तोते को राम-राम रटन सिखाया, उसी प्रकार तू भी राम नाम का स्मरण कर। हे आत्मा रूपी तोते! तेरे लिये भगवान ने देह रूपी पिंजरा बनाया है। उसमें लाल रंग के खून का संचार किया है।

जिस प्रकार चम्पा, चमेली, दवणा, मोगरे पर बहार आती है। उसी प्रकार तू भी मनुष्य जीवन पाकर भगवान को भूल मत जाना। वरना भगवान किसी भी दिन फूल के समान तोड़ लेंगे। हे भाई तोते! तेरे ही कारण मैंने कुआँ खुदाया है। यह ज्ञान रूपी कुआँ बड़ा ही गहरा है। और इसका मुँह सकरा है। और इस कुएँ में ज्ञान रूपी पानी अथाह भरा है। इस ज्ञान रूपी पानी को उलेचकर अपने जीवन को धन्य कर, भगवान का भजन कर जिससे तेरा जीवन धन्य हो जाय और तेरा आवागमन मिट जाये। सेनभगत कहते हैं- मनुष्य जीवन दुर्लभ है। इसका उपयोग भगवत् प्राप्ति में ही लगाना चाहिए।

मृत्यु गीत

भक्ति दान मकऽ दई देओ, देव मऽ का देवा॥ टेक॥
सास घड़ी लऽ नऽ दई भेजा, ववर पाणी कऽ जाय।
उन्डो कुवो मुख साकरो, लेज पूर्‌यो नी जाय॥
भक्ति ग्यान ....
अगर चंदन की पालकी, पान फूलों से छाई।
मालेण फूल लई गई, जाकी वास नी आई॥
भक्ति ग्यान ....
जोई-जोई चंपो सिचियो, चंपो पान नी फूल।
लई चल्यो चंपा बाग मऽ, आळम देखण आया।
भक्ति ग्यान ....
अणहद बाजा बाजीया, बाजा गरू दरबार।
सेन भगत की बिनती, राखो शरण लगाई॥
भक्ति ग्यान ....

गीत-श्री सीताराम कुशवाह, दवाना.

हे प्रभु! मुझे भक्ति का दान देना। हे देवों के देव! मेरे मन में तुम्हारी भक्ति उत्पन्न करना।

सास रूपी शक्ति ने शरीर रूपी बहू को इस संसार रूपी कुएँ पर पानी लेने के लिये भेजा

है। यह शरीर रूपी कुआँ ऐसा है, जो बहुत गहरा तो है लेकिन उसका मुँह संकरा है। उसकी रस्सी भी छोटी है। भावार्थ यह कि– शरीर और आत्मा का रहस्य अत्यन्त गम्भीर है। आत्मा में सारा संसार समाया है। मनुष्य को शरीर के भीतर ही देखना है। जो एक कठिन मार्ग है। चतुर बहू यानी कुशल साधक उस कुएँ की गहराई यानी आत्मा को पहचान लेता है।

यह शरीर रूपी पालकी अत्यन्त सुगन्धित अगर और चन्दन से ईश्वर ने सजाई है। उसका श्रृँगार फूल और पत्तियों यानी सुख–सुविधाओं से किया गया है। जब मृत्यु रूपी मालन आयेगी, तब चुन–चुनकर फूल तोड़कर ले जायेगी। यह सब किसी को पता ही नहीं लगता। चुपचाप यह घटित हो जाता है। मृत्यु की गंध का पता भी नहीं लगता। बड़ी सावधानी से चम्पा के पौधे को सींचा जाता है, तब वह बड़ा होकर अत्यन्त सुगन्धित पुष्प देने में सक्षम होता है। उस पुष्प को माली तोड़ लेता है। एक दिन चम्पा के पत्ते भी झड़ जाते हैं। तब चम्पा बाग को देखने से क्या लाभ होता है ? इसी प्रकार मनुष्य जीवन भी है। मनुष्य के कर्म पूर्ण होने पर परमात्मा रूपी माली आत्मा रूपी फूल को तोड़कर शरीर से अलग कर देता है और निर्जीव शरीर पड़ा रह जाता है, पूरा संसार चुपचाप देखता रहता है। सेनभगत कहते हैं– गुरू की कृपा से मनुष्य आत्मा के रहस्य को समझ सकता है। अनहद नाद सुन सकता है और ईश्वर की शरण में रह सकता है।

मृत्यु गीत

ऐसी हमारी निभावणा, आ रे हनुमान हटेला ॥ टेक॥
जो तू हूता गरबवास मऽ, उगता सूर्या को गिलिया।
जब को रे बळ थारो कां गयो, हारे तऽ मऽ जनम का गेळा।
ऐसी हमारी निभावणा ....
तो माता अंजनी का पुत्र है, महाराज छबिळा।
राम से मिळणा हो रया, हारे जिन बगळ मऽ लीना॥
ऐसी हमारी निभावणा ....
रामचन्द्र सरिखा गरू मिल्या, मैं सेवक उनका।
अबकी बारी निभाव जो, हारे शरणागत तेरा॥
ऐसी हमारी निभावणा ....
तुमको सुमरत बड़ी देर भई, अब नई करूँ सेवा।
तुलसी दास पर बिपत पड़ी, कही गया दास कबीर॥
ऐसी हमारी निभावणा ....

गीत–श्री सीताराम कुशवाह, दवाना

हे परमेश्वर! मुझे हठ वाले हनुमान की तरह निभा लेना। वे भक्तों के भक्त हैं।

जब वे गर्भ में थे और उसके बाद उनका जन्म हुआ तो उन्होंने सूर्य देवता को ही फल

समझकर निगल लिया था। उनका बल अतुलनीय है, उसे भी वे भूल जाने वाले हैं। ऐसे रामभक्त हनुमान को जब उनके बल या शक्ति की याद दिलाई जाती है तभी उनकी शक्ति जाग्रत होती है। इसी तरह आप हमें राम की भक्ति प्रदान करें।

अंजनी के बलशाली पुत्र आप छैल-छबीले हैं। आपका मिलन श्रीराम प्रभु से हुआ उसी प्रकार मुझे भी आपके आराध्य से मिलवा देना। जिस प्रकार आपको प्रभु ने अपने बाहुपाश में लेकर हृदय से लगा लिया, ऐसे प्रभु के दर्शन मुझे भी करा देना। भूल मत जाना, मेरी लज्जा रखना। मैं आपकी शरण में हूँ। शरणागत की रक्षा करना आपका काम है, आप मेरी रक्षा करेंगे।

एक बार तुलसीदासजी पर भी संकट आया था, तब आपने उन्हें संकट से मुक्ति दिलाई थी। उन्हें प्रभु के दर्शन कराये थे। उसी प्रकार मुझे भी दीन-हीन जानकर प्रभु के दर्शन करा देना। मैंने बहुत बार आपका स्मरण किया है, आपकी सेवा पूजा की है, यदि मेरा काम नहीं हुआ तो, अब आपकी सेवा नहीं करूँगा। कबीरदास कहते हैं- भगवान भक्त के अधीन होते हैं।

मृत्यु गीत

भक्त आधीन भगवान है, भक्त नी राखो लाज॥
हाथ जोड़कर अर्जुन कहे, सुणो दीन दयाळ॥
मेरे सिवाय भक्त नाई मिले, राखो म्हारो मान॥
जब प्रभु येम बोलिया, अर्जुन सुणो म्हारी बात॥
तेरा सिवाय भक्त बहुत मिले, राखो हमारो मान॥
जब अर्जुन येम बोलिया, सुणो दीन दयाल॥
भक्त मुझे बतावजो, देखा उनको अस्थान॥
अर्जुन कृष्ण बंद में गये, सिंग पकड़ा जो बलवान॥
भेष बणाया सादू का, गया मोरध्वज दुवार॥
जब राजा येम बोलिया, संत सुणो म्हारी बात॥
जो माँगो सो आळसा, राखूं तमारो मान॥
अणहद बाजा बजीया, बाजा गरू दरबार॥
दास कबिरा की बिनती, राखो शरण लगाय॥

भक्त के अधीन भगवान है। भगवान चाहे जो कर सकते हैं, संकट के समय भगवान अपने भक्तों की रक्षा करते हैं। ऐसे ही एक प्रसंग में अर्जुन को घमण्ड हो गया था। मुझसे बड़ा कोई भक्त भगवान श्रीकृष्ण का नहीं है। एक दिन ऐसे ही घमण्ड में अर्जुन ने भगवान से कहा- हे गोविन्द! मेरे से बड़ा और कोई भक्त आपका है क्या? हो तो बताइये। तब मधुसूदन ने कहा- अर्जुन तुमसे भी कई बड़े मेरे भक्त हैं। वह तो मैं तुम्हारा मान-सम्मान करता हूँ, इसलिए वरना तुमसे भी बड़े भक्त हैं। तब अर्जुन ने कहा- भगवन् दिखाइये, मुझसे बड़ा भक्त आपका कौन है ? तब भगवान अर्जुन को लेकर जंगल में गये और वहाँ जाकर एक शेर को पकड़ा, साधू का

रूप बनाया और तीनों राजा मोरध्वज के यहाँ पहुँचे। राजा ने साधुओं का सत्कार किया। पूछा– आपको क्या चाहिए? तब साधू रूपी भगवान ने कहा– हमारा शेर भूखा है। इसे और हम दोनों को भोजन चाहिये। मोरध्वज को वचनबद्ध करने के बाद भगवान ने कहा– हमारा शेर आपके पुत्र का मांस खायेगा। आपके पुत्र ताम्रध्वज को आप और रानी दोनों आरे से काटें और हमारे शेर को दे देंवे। पुत्र को आरे से काटते समय दोनों की आँखों से एक आँसू भी नहीं टपकना चाहिए। वरना हम और हमारा सिंह भोजन ग्रहण नहीं करेंगे। राजा और रानी ने अपने पुत्र ताम्रध्वज को आरे से काटा, लेकिन उनकी आँखों से एक भी आँसू नहीं आया। इस प्रकार भगवान ने अपने भक्त मोरध्वज की कठिन परीक्षा ली। अर्जुन के सामने सिद्ध कर दिया कि अर्जुन तेरे से भी बड़े भक्त हैं। यह भजन कबीरदासजी की छाप वाला है।

मृत्यु गीत

राम रामी कयजो, पिताजी म्हारी राम रामी लिजो॥ टेक
हम दुखिया रे दुख दई सिरजा, तुम आनंद हुई रयजो॥
पिताजी म्हारी राम रामी कयजो। टेक
एक संदेशो म्हारी माता कऽ कयजो, नयणा मऽ नीर मती लावजो॥
पिताजी म्हारी राम रामी कयजो। टेक
बिंदरा जो बंद बिच तुलसी को रोपो, उनकी सेवा मऽ तम रयजो॥
पिताजी म्हारी राम रामी कयजो। टेक
तम्हारे घर में छोटी ववर हो, वकऽ दु:ख मती दिजो॥
पिताजी म्हारी राम रामी कयजो।

सुमन नाम के भक्त की परीक्षा लेने जब अर्जुन और भगवान श्रीकृष्णजी गये। भक्त के घर में खाने के लिये कुछ नहीं था। तब सुमन चोरी करने के लिए अपने पिताजी सहित जाते हैं। और एक नगर सेठ के घर में चोरी करने की ठानते हैं। भक्त सुमन मोरी के रास्ते से सेठ के घर में चोरी करने के लिये प्रवेश करता है।

चोरी करके सुमन वापस अपने पिता के पास आता है। तब पिता खाने के सामान को देखते हैं तो नमक नहीं मिलता। तब पिता पुत्र से कहते हैं– नमक के बिना सभी भोजन स्वादहीन होता है। बेटा नमक ले आ। जब पुन: सुमन नमक लेने जाता है। तब सेठ की नींद खुल जाती है। और वे सुमन को पकड़ लेते हैं। सुमन का आधा शरीर मोरी के बाहर है। आधा अंग सेठ के घर में था। सिर मोरी के बाहर था, पैर भीतर थे, तब सुमन ने अपने पिता से कहा– हे पिताजी! मेरा अन्तिम समय आ गया है। आप मेरा शीश काट लीजिए। पिता अपने पुत्र का शीश काटने में संकोच करते हैं। तब सुमन अपने पिता से कहता है–

हे पिताश्री! आपको मेरा अन्तिम प्रणाम। मैंने जन्म के समय भी आपको दु:ख दिया और

आज मृत्यु के समय भी आपको दु:ख दे रहा हूँ। दु:ख देकर मैं जा रहा हूँ। आप आनन्दपूर्वक रहना। पिताजी आपको मेरा अन्तिम प्रणाम है।

एक संदेशा मेरी माताजी से कहना। मेरी मृत्यु पर मेरी माता आँसू न बहाए। माँ को मेरा अन्तिम प्रणाम कहना। आपके घर में जो तुलसी का पौधा है। उसकी सेवा करना। भगवान का ध्यान करना। जिससे तुम्हारा उद्धार होगा। आपका जीवन सफल होगा। आपको मेरा अन्तिम प्रणाम। आपके घर में जो आपकी बहू है। उसे मेरी मृत्यु के बाद दु:ख मत देना। उसकी गलती माफ कर देना। भगवान ने सुमन को मृत्यु के पश्चात् सीधे स्वर्ग में स्थान दिया। अन्त भला तो सब भला।

मृत्यु गीत

भगती दान मोहे दीजिए, करूँ संत की सेवा॥ टेक
सुत सुन्दर सुत सायबी, सुन्दर वर नारी॥
इतना रे माँगू नहीं, मोहे आसा तुम्हारी॥ टेक
आठ पळक नौ नींद घड़ी, नई धन की रे आशा॥
इतना तो माँगू नहीं, जब लग घट में रे आशा॥ चौक
देखण का रे बाग उजला, मन मैला रे भाई॥
आस मिली मुनीजन भया, मचतिया गह भाई॥ चौक
अणहद बाजा बजीया, वाजा गरू दरबार॥
सेन भगत की बिनती, राखो शरण लगाय॥

हे भगवान! मुझे सुन्दर और गुणवान पुत्र और पत्नी देना। इतना ही मैं आपसे मांगता हूँ। आठ पल चौसठ घड़ी मुझे स्वप्न में भी धन की आशा नहीं सतावे। मन में सन्तोष रहे। बस इतनी आशा करता हूँ। मुझे भक्ति रूपी सन्तोष प्रदान कीजिये। जब तक शरीर में प्राण हैं तब तक मेरी यह माँग है। देखने में ऊपर से शरीर उज्वल है, पर भीतर से मन मैला है। मैं आडम्बरों में ना उलझूँ। मुझे माया तृष्णा नहीं सतावे। सभी से प्रेमपूर्वक व्यवहार करूँ। इतना ज्ञान जरूर देना। ऐसा न हो कि मन में छल कपट भरा हो। ऊपरी दिखावे में मैं तुम्हारा भजन न करूँ। सेनभगत विनती करते हैं– मेरा मन निर्मल कर देना और निर्मल मन से साधु सन्त की और आपकी पूजा अर्चना करता रहूँ। बस इतनी आशा करता हूँ।

मृत्यु गीत

मयली गोदड़ी साधू धोई, उजलई कर लेणा॥
कायन की बणी रे संता गोदड़ी, कायन केरा धागा॥
कोण पुरुष दरजी भया, कोण शिवणे को लागा॥
मयली गोदड़ी साधू....................................

जल की बणी संता गोदड़ी, पवन केरा धागा॥
आप रूप दरजी भया, खुद सीवण को लागा॥
मयली गोदड़ी साधू ....
कहाँ से पवन पधारिया, कहाँ से आयो नीर॥
कहाँ से आई सुहागणी, कहाँ थाप थपाणी॥
मयली गोदड़ी साधू ....
आगम से पवन पधारिया, पीछम से आयो रे नीर॥
इन्द्रासण से आई सुहागनी, जहाँ थाप थपाणी॥
अणहद बाजा बाजिया, बाजा गरू दरबार॥
सेन भगत की बिनती, राखो शरण लगाय॥

हे सन्तों! इस शरीर रूपी गोदड़ी को धोकर उज्जवल कर लेना। क्योंकि यह पाप कर्म में लिप्त होकर मैली हो गई। इस शरीर रूपी गोदड़ी का निर्माण किस प्रकार हुआ? जल से इस शरीर रूपी गोदड़ी का निर्माण हुआ है। और हवा का इसमें संचार किया गया है। कहाँ से पवन देवता आये हैं? और कहाँ से जल देवता आये हैं? कहाँ से सुहागन स्त्री आई है? और किस प्रकार मनुष्य का जन्म हुआ है? पूर्व दिशा से पवन देवता आये हैं। पश्चिम से जल देवता आये हैं। इन्द्र के दरबार से सुहागन स्त्री आई है। और उसकी कोख से मनुष्य का जन्म हुआ है। सेनभगत कहते हैं- अनहद नाद को सुनने के लिये मैं परमात्मा की शरण में रहना चाहता हूँ।

मृत्यु गीत

जोगी को ढूँढ़त जुग भया, कोई नी देखा रे भाई॥
जोगी की झोली में पात है, हीरा माणक जड़िया॥
जो मांगे सो देता है, करो गुरू की सेवा॥
एक जोगी दूजो बालको, तीजा मस्तक देवा॥
छोटी सी मड़िया मऽ रमिया, ढूँढ़ा जमीन आसमान॥
पान छायो जोगी की मड़िया मऽ, फल महत अपार॥
जोगी कऽ अवता देखिया, मेरा हरि जी का द्वार,
अणहद बाजा बाजीया, बाजा गरू दरबार॥
सेन जी की बिनती, राखो शरण लगाय॥

जोगी को ढूँढ़ते-ढूँढ़ते युग बीत गया है। किसी ने उन्हें देखा है? योगी की झोली में पत्ते ही पत्ते हैं। पर झोली हीरे माणिक मोती से जड़ी है। योगी जो माँगते हैं, देते हैं। गुरू मानकर योगी की सेवा कीजिये। बालक, योगी, ज्ञानी इन तीनों की बातों को मानना चाहिये। यह योगी अपनी कुटिया में मस्त रहता है। इस योगी को जमीन आसमान ने ढूँढ़ा, लेकिन वह कहीं नहीं मिला। पान पत्तों से योगी की कुटिया ढँकी हुई है। उस पर्ण कुटीर में वह अलमस्त रहता है। ऐसे योगी

राज को हमने आते हुए देखा है। वह योगी सीधे भगवान के द्वार पर पहुँचता है। बड़े ही शुभदायक होते हैं। यह सेन भगत की छाप वाला भजन है।

मृत्यु गीत

चलो गरूजी का देश मऽ, अपुण दर्शन पावां॥
गुरूजी का घर मऽ ग्यान बाजा, अपुण सरवण सुणां॥
आठ पयर चवसठ घड़ी, बैठे देव पूजावां॥
चलो गरूजी ....
गरूजी का घर मऽ मटका भरा, जल ठण्डा पाणी॥
भर-भर लोटा पी गया, आ तीस ना बुझाणी॥
चलो गरूजी ....
गंगा जमना नीर बहे, अपुण मली-मली न्हावां॥
पाप कटे सारी देह का, जिवता वैकुण्ठ जावां॥
चलो गरूजी ....
ब्रह्मगिर ब्रह्मा का ध्यान है, मन रंग बाग लगाया॥
उनकी छाया में बैठीया, गरू को शीश नमावां॥
चलो गरूजी ....
अणहद बाजा बाजीया, बाजा गरू दरबार॥
सेन भगत की बिनती, राखो शरण लगाय॥

हे मन! हे प्राणी! गुरूजी के देश में चलें और गुरूजी के दर्शन पाकर धन्य हो जायें, तर जायें। अपने गुरूजी के घर ज्ञान रूपी बाजे बज रहे हैं। हम जाकर सुनें और अपने जीवन से मुक्त हो जायें।

आठ पहर चौसठ घड़ी देवता की तरह पूजित गुरूजी के घर ज्ञान रूपी जल से भरा हुआ मटका है। जिसमें अनंत ज्ञान भरा है। उस ज्ञान को प्राप्त करें जितना भी ज्ञान पी सकें-पीयें, लेकिन प्यास फिर भी नहीं बुझेगी, क्योंकि ज्ञान की सीमा अनंत है और मनुष्य की आत्मा सदा अतृप्त है। ज्ञान रूपी गंगा और जमुना नदी बह रही है। इस ज्ञान गंगा में अपने शरीर को धोकर आत्म शुद्धि कर लें, स्नान कर लें, तेरे पाप नष्ट हो जायेंगे। गुरू की छत्रछाया में रहना, जिससे तेरे अवगुण-दोष मिट जायेंगे और गुरू को प्रणाम करना मत भूल जाना। गुरू का स्थान भगवान से भी बड़ा है। गुरू का आदर करना। ब्रह्मगिर स्वामी ने ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त किया, उनके परम शिष्य मनरंग गिर ने इसे सारे संसार में फैलाया। मनरंगगिर सन्त सिंगाजी के गुरू थे, उन्हीं गुरू चरणों में आज हम अपना शीश नवाते हैं। सेनभगत विनती करते हैं- ऐसे गुरूजनों की कृपा से परमात्मा के निकट पहुँचा जा सकता है, जहाँ अनहद नाद निरन्तर बजता है। यह भजन सेनभगत की छाप वाला भजन है।

मृत्यु गीत

दुख-सुख मन मऽ नी लावणा, सुख सागर भरिया॥
दुख सुख मन .... उड़ान
हरिश्चन्द्र सरीखा राजवी, जिनकी तारावती राणी॥
अपणे सत के कारण, भरऽ डोम घर पाणी॥
दुख सुख मन ....
राजा नल सरीखा राजवी, जिनकी दमयन्ती राणी॥
बारा बरस बनवास मऽ, जिनऽ खायो अन्न नी पाणी॥
दुख सुख मन ....
मोरध्वज सरीखा राजवी, जिनकी वीस्वा की नारी॥
अपने सत के कारणे, दिया पुत्र चिराय॥
दुख सुख मन ....
अणहद बाजा बाजिया, बाजा गरू दरबार॥
सेन भगत की बिनती, राखो शरण लगाय॥

यह भजन अर्थी को ले जाते समय गाया जाता है। मृदंग वादक अर्थी के आगे-आगे गाते हुए चलते हैं।

सुख-दुख दोनों ही एक परछाई की तरह आते हैं और चले जाते हैं। दुख है तो सुख भी आयेगा ही। दुखों से मनुष्य को घबराना नहीं चाहिये। दुख तो अच्छे-अच्छे राजा-महाराजाओं को भी उठाना पड़े हैं। सुख-दु:ख के बारे में मन में सोचना ही नहीं चाहिए।

हरिश्चन्द्र जैसे राजा जिनके घर तारावती रानी थी। सत्य के कारण राजा रानी बिक गये। राजा को डोम की सेवा करते हुए पानी भरना पड़ा। नल जैसे राजा भी दुख से अछूते नहीं रहे हैं। राजा नल जिनके यहाँ पर दमयन्ती जैसी रानी थी। अपने भाग्य के कारण राजा नल जुए में सभी कुछ हार गये और बारह वर्ष का वनवास झेलना पड़ा। वनवास के समय में वे अन्न पानी के लिये तरस गये थे। मोरध्वज राजा जिनके यहाँ पर विस्वा रानी थी, उन पर भी दु:खों का पहाड़ टूटा था। लेकिन सत्य के कारण उन्होंने अपने बेटे ताम्रध्वज को आरे से आधा काटकर अपने वचन का पालन किया। दुख-सुख तो आते-जाते रहते हैं। सेनभगत कहते हैं- प्रभु के ध्यान में अपना मन लगा, वही सत्य है।

मृत्यु गीत

मनसा मिरगणी मारिया, येसा कौन सिकारी॥
काया कजली येक बंद है, वहाँ रहता सिकारी॥
रात दिन घूमता फिरे, फिरे लार की लार॥

काया फेरे सब जीव हैं, ईशवा घर की दासी॥
सब का वो घर-घर बसिया, दुनिया भेद बिचारी॥
माटी का हो सिंगिया, पवन रंग भरिया॥
घड़ी पल में उड़ जाएगा, वो तो झकवी का पासा॥
मन करे पारी ब्रह्मा है, मन की हेरे चैली॥
दास कबीरा कहता है, जिन ममता को मारी॥

कबीरदास जी कहते हैं कि इस संसार में कौन ऐसा शिकारी है, जो अपने मन रूपी मृग को मार सके। अपनी इच्छा रूपी इन्द्रियों का दमन कर सके। हाँ, संत पुरुष यह कार्य कर सकते हैं। वे ही ऐसे शिकारी हैं, जिन्होंने मन रूपी मृग को वश में करके रखा है।

यह शरीर नश्वर वस्तु है और इस नश्वर शरीर में ही वह शिकारी रहता है। यह शरीर एक कजली वन है, उसी में यह शिकारी रहता है। शिकार के लिये वह रात-दिन घूमता रहता है। काया तो नश्वर है और आत्मा ईश्वर की दासी है। सभी के शरीर रूपी घर में आत्मा बसती है। पर दुनिया यह भेद नहीं जानती है। जिस प्रकार कुम्हार मिट्टी से अनेक प्रकार के खिलौने बनाता है, ठीक उसी प्रकार ईश्वर भी मनुष्यों का निर्माण करता है। जिस प्रकार बच्चे खेलने के बाद खिलौना तोड़ देते हैं। ठीक उसी प्रकार भगवान भी मनुष्य को मृत्यु की गोद में सुला देता है। इसलिए मन को वश में रखो। प्रभु का ध्यान करो। अपने मन को प्रभु के चरणों में लगाओ। माया, ममता, मोह के बंधन तोड़ो। मन को भटकने से रोको। जिसने प्रभु का ध्यान किया। माया, ममता, तृष्णा का त्याग किया। मन को परमात्मा के ध्यान में लगाया, वह इस संसार के आवागमन से मुक्त हो जाता है।

मृत्यु गीत

राजा दशरथ रोवता, काई हुआ भगवान।
राम का शबद सुनकर, दवड़ी न आयो पास।
देखण लाग्यो रे कारक, देखा सरवण कुमार।
गश्त आया राजा गिर पड़ा, धरणी का माय।
सरवण मुख से बोलिया, सुण लिजो रे बात।
माता-पिता प्यासा मरे, उनन नीर पिलावजो।
पयलऽ नीर पिलावजो, बात बतावजो सब वात।
नीर पिलावण चालिया, तुम्बा लई लिया हाथ।
राजा मन मऽ पछताविया, कैसा नीर पिलाऊँ।
तो हाक मारी जवऽ कई कवां, बुरी करी करतार।
तुम्बा नऽ राजा चलिया, गया कावड़ पास।

तुम्बा सामनऽ भरी दिया, कछु बोल्या नऽ पास।
मातेश्वरी रे कईणऽ लगी, सरवण बेटा बोळ।
इतनी देर तुकऽ कहाँ लगी, कहाँ से लायो रे नीर।
सरवण तू नहीं बोळता, हम नहीं पिवां नीर।
तो दोई जोण हम यहीं मरा, नहीं पिवांगा नीर।
अंधा-अंधी कळपणऽ लाठ्या, बेटा मुख से तो बोळ।
माता बोली पईचाण लिया, तुम नहीं सरवण कुमार।
जलदी मुख से बोळ, नहीं तो देवांगा सराप।
तो सरवण म्हारो कां गयो, सब कई दिजो हाळ।
हाथ जोड़कर दशरथ कहे, बईण सुणो म्हारी बात।
पईळऽ पाणी पिवजो, फिर कवां सारो हाळ।
पाणी हम नहीं पिवां रे, बात कई समझाव।
बाण सरवण को ळगिया, गिरा सरवण पार।
शब्द सुणी नऽ बाण मारिया, हुआ कलेजा रे पार।
तो हऊ हत्यारो बणी गयो, मन भाणिज कऽ मारिया।
सराप मकऽ दई देवो, मारा सरवण कुमार।
पाणी अब हम नहीं पिवां रे, बात कही समझाय।
दास धन्ना की बिनती, राखो शरण लगाय।

राजा दशरथ ने जब शब्द भेदी बाण मारा और उन्हें राम-राम शब्द सुनाई दिया तो दशरथ एक पल के लिये चकित रह गये। हे भगवान! ये क्या हो गया? मैंने किसे मार दिया? यह तो किसी मनुष्य की आवाज सुनाई देती है। दौड़कर राजा दशरथ पास जाकर देखते हैं। अरे! यह तो श्रवण कुमार है। तीर से घायल पड़ा है। ऐसा देखकर राजा दशरथ भी गस्त खाकर भूमि पर गिर पड़े। हे भगवान! ये क्या अनर्थ हो गया? तब श्रवण कुमार ने कहा- हे राजन! शोक मत कीजिये, जो होना था वह हो चुका है। मेरे माता-पिता जंगल में प्यास से तड़प रहे हैं। उन्हें यह पानी ले जाकर पिलाना और बाद में मेरी मृत्यु की खबर सुनाना, यह कहकर श्रवण ने राम-राम कहकर प्राण त्याग दिये।

राजा दशरथ जल से भरा हुआ तुम्बा लेकर श्रवण के माता-पिता को पानी पिलाने के लिए चल पड़े। राजा दशरथ मन में पछता रहे हैं- मैं कैसे पानी पिलाऊँगा ? उन्हें क्या जबाव दूँगा। हे भगवान! ये क्या हुआ, बहुत बुरा किया ? अब मैं क्या कहूँगा, श्रवण के माता-पिता को? ऐसा सोचते हुए कावड़ के पास पहुँचे। पानी का तुम्बा माता-पिता के सामने रख दिया। चुप खड़े हैं। तब श्रवण की माता ने कहा- बेटा श्रवण कुछ तो बोल, तुम्हें इतनी देर कैसे हो गई ? कहाँ से पानी लाया है? हे बेटा! जब तक तू नहीं बोलेगा। हम पानी नहीं पियेंगे। हम दोनों यदि प्यास से मर भी जायें तो मरें, लेकिन जब तक तू नहीं बोलेगा तब तक हम दोनों पानी नहीं

पियेंगे। अंधे माता-पिता को रोता देखकर राजा शोक विह्वल हो गये।

श्रवण की माता ने कहा- मैंने तुम्हें पहचान लिया है। तुम मेरे बेटे श्रवण नहीं हो। तुम कौन हो? जल्दी से बोलो। मेरा श्रवण कहाँ है, तू कौन है? तब राजा दशरथ ने कहा- बहन मेरी बात सुनो, पहले पानी पी लो। तब माता ने कहा- नहीं, हम पानी नहीं पियेंगे। पहले बताओ, श्रवण कहाँ है? तब राजा दशरथ ने कहा- मैंने शब्द भेदी बाण मारा और तुम्हारे पुत्र के कलेजे में लग गया। श्रवण की मृत्यु हो गई है। मैं हत्यारा हूँ। मैंने अपने ही भानजे की हत्या की है। आप मुझे श्राप जरूर दीजिए। क्योंकि मैंने श्रवण की हत्या की है। तब दोनों ने राजा दशरथ को श्राप दिया कि पुत्र वियोग में हम जिस प्रकार तड़प-तड़प कर मर रहे हैं। उसी प्रकार पुत्र वियोग में तुम्हारी भी मृत्यु होगी। श्राप देने के बाद दोनों ने प्राण त्याग दिये। श्रवण के माता-पिता के श्राप के कारण ही राम को वनवास हुआ और पुत्र वियोग में दशरथ की भी मृत्यु हुई। धनदास कहते हैं- श्रवण कुमार जैसा माता-पिता के सेवक पुत्र की भक्ति सबके मन में उत्पन्न हो। परमात्मा मुझे उनकी शरण सदैव बनाये रखे।

मृत्यु गीत

कैसा सोया रे प्राणीला, कैसी नीद्रा हो लागी॥
ताम्बा पीतल थारो अती घणो, कछु काम नी आए॥
काम आयो रे माटी को घड़ो, थारा संग फूटी जाए॥
आरी रे जरी का थारा पर्दा, कछु काम नी आया।
काम आयो रे एको जड़ियो, थारी काया पर बड़ायो॥
धन रे माल थारो अती घणो, कछु काम नी आयो॥
काम आई रे बन की ळाकड़ी, थारा संग जली जाय॥
कहत कबीरा बैठा झाज पर, भव सागर उतरो पे पार॥
चलावण वाळे ऐकई, नीळा आज रंग पार॥

हे प्राणी! तू किस घोर निद्रा में सोया है। तुझे कैसी निद्रा लग गई है। हे प्राणी! तूने कितने ही सामान अपनी जिन्दगी के लिये इकट्ठे कर लिये। लेकिन तेरे काम कुछ नहीं आया। जब तेरी मृत्यु हुई तो घर में रखा हुआ मिट्टी का घड़ा ही तेरे काम आया है।

हे प्राणी! तूने अपने जीवन में बहुमूल्य कीमती वस्त्रों को इकट्ठा किया। पर तेरे काम कुछ नहीं आया। काम में आया तो पाँच हाथ का एक कपड़ा जो तेरे मृत शरीर को ढँका गया। या जो तुझे कफन ओढ़ाया गया। धन-दौलत तेरे पास बहुत ही थी, लेकिन वह भी मरते समय कुछ काम नहीं आयी। काम में आई तो जंगल की लकड़ी, जिससे तेरे मृत शरीर को अग्नि दाह दिया गया। कबीरदास जी कहते हैं- हे प्राणी! तू ऐसे जहाज पर बैठना जिससे नीले भवसागर से पार हो जाये, तेरा आवागमन मिट जाये, तेरा उद्धार हो जाये।

मृत्यु गीत

तम बिन म्हारो कोई नई, समझो म्हारा नाथ॥
चितौड़गढ़ का राजवी, बूंदी रयवासी॥
वा घर मीरा जळमिया, घर-घर मंगलाचार॥
पाँच बरस की मीरा भई, सखी नऽ मऽ खेळण जाय॥
अंग को गयणू उतारिया, बाई का भोळा रे स्वभाव॥
बारा बरस की मीरा भई, साधू नऽ मऽ बैठन जाय॥
लोग लुगाई यूं कहे, आ रे मीरा बिगड़ी रे जाय॥
येक हाथ मीरा तन्दूरो, दूजा हाथ करतार॥
पाँव मऽ घूघरू बाँधिया, रमती साधू नऽ का सात॥
पियर तारियो मीरा सासरो, तारियो कुटुम परिवार॥
बाई ओ मीरा थारा कारणा, दर्शन दिया भगवान॥

हे गोविन्द! मेरा तो तुम्हारे सिवाय कोई नहीं है। हे नाथ! मुझे तुम्हारा ही सहारा है। तुम्हारे अलावा मेरा कोई नहीं है। चित्तौड़गढ़ के पास बूंदी के राजसी परिवार में मीरा का जन्म हुआ था। उस दिन घर-घर मंगलाचार हो रहे थे। पाँच वर्ष की उम्र में मीरा सहेलियों के साथ ऐसे खेलती थी, जैसे वह सहेलियों की मुखिया हो। उसका स्वभाव इतना भोला था कि सहेलियों को शरीर पर पहने बहुमूल्य गहने सहज ही उतार कर दे देती। फिर वापस नहीं लेती। उसे गहनों से बचपन से ही मोह नहीं रहा। बारह वर्ष की उम्र में मीरा साधु-संतों के बीच बैठने लगी थी। वह साधु-संतों के प्रवचनों को बड़े ध्यान से सुनती। लोग कहते- मीरा बिगड़ गई है। और बड़ी होने पर मीरा भगवान की भक्ति में तल्लीन हो गई। मीरा ने एक हाथ में तम्बूरा ले लिया था और दूसरे हाथ में खड़ताल ले ली थी। पैरों में घुँघरू बाँधकर अपने आराध्य के ध्यान में लीन हो जाती थी। धीरे-धीरे मीरा कृष्ण भक्ति के रंग में पूरी तरह से रंग गई। अपने आराध्य की भक्ति करके मीरा ने ससुराल को और मायके दोनों परिवारों का उद्धार कर दिया। धन्य है मीरा, जिसने अपने आराध्य के दर्शन किये और अपना जीवन धन्य किया।

मृत्यु गीत

अभिमन्यु स्वर्ग सिधारिया, माता रोवे समुन्द्र॥
पुत्र-पुत्र रोवती, बेटा रे अभिमन्यु॥
येमऽ येकळो पुत्र थो, जीनऽ घर नहीं राखियो॥
पाण्डव कुल रोवता लाग्या, बेटा रे अभिमन्यु॥
बाप तुम्हारो घर नहीं, जिनकऽ कोई रे बतलावा॥
कौन की माता रे, किनका पिता, किनका कुटुम्ब परिवार॥

झूठी रे माया जगत है, झूठा जगत फसारा॥
तुलसीदास की बिनती, राखो शरण लगाय॥
दास धन्जी कयणे लगे, तारी लेवा रघुनाथ॥

अभिमन्यु का वध किया गया है। माता सुभद्रा रो रही हैं। वह पुत्र-पुत्र की रट लगा रही है। हे मेरे कुल दीपक! मैंने तुझे भी अपने पास नहीं रखा। तुझे भी महाभारत के युद्ध में मौत के मुँह में झोंक दिया। सभी पांडव-बेटा अभिमन्यु! बेटा अभिमन्यु! पुकार कर रो रहे हैं।

सुभद्रा रोते-रोते कह रही हैं- बेटा, जब तुम्हारे पिताजी लौटकर आयेंगे, तब मैं क्या जवाब दूँगी? जब वह मुझसे पूछेंगे कि मेरे अभिमन्यु को क्या हुआ ? मेरा अभिमन्यु कहाँ गया? तब मैं क्या जवाब दूँगी, ऐसी करुणा करके सुभद्रा रो रही हैं।

भगवान श्रीकृष्ण युद्ध से वापस आते हैं। तब सुभद्रा भगवान से प्रार्थना करती हैं। आपका अकेला भानजा मौत के मुँह में चला गया है। हे मधुसूदन! कुछ कीजिए। सुभद्रा का मोह भंग करने के लिये भगवान कुछ पल के लिये अभिमन्यु को जीवित कर देते हैं।

जीवित होने पर अभिमन्यु कहता है- हे माता! किसका पिता और किसकी माता ? किसका कुटुम्ब परिवार ? मेरा कोई नहीं है। व्यर्थ शोक मत करो। यह सारी माया ममता झूठी है। संसार का सारा प्रसार झूठा है। यह यथार्थ नहीं है। जिसने शरीर धारण किया है, उसकी मृत्यु निश्चित है। इसलिए मेरा शोक मत करो। आत्मा अजर-अमर है। धनजीदास कहते हैं- जैसे तुलसी ने राम भक्ति में अपना जीवन लगा दिया। ठीक ऐसे रघुनाथ यानी श्रीराम में मेरी भक्ति लगी रहे। ऐसी ज्ञान की बातें बताकर अभिमन्यु वापस मृत्यु की गोद में लीन हो जाता है।

मृत्यु गीत

हाऊँ रे गरीब जन एकळो, दया करो म्हारा नाथ॥
हाऊँ रे गरीब जन एकळो .... उड़ान
महू फुल्या जसा को फुल्या, फुल्या अमुवा डाळ॥
जां म्हारो चन्दन एकळो, जाकी निरमळ वास॥
हाऊँ रे गरीब जन एकळो ....
तारा मंडळ दल छाई र्‌यो, छाई र्‌यो रे आकाश॥
जां म्हारो चन्द्रमा एकळो, जाकी निरमळ जोत॥
हाऊँ रे गरीब जन एकळो ....
नौ लाख पंछी बैठिया, बैठिया पंख पसार॥
जां म्हारो हंसा एकळो, मोती चुग-चुग खाय॥
हाऊँ रे गरीब जन एकळो ....

कहे जन दलु जाकी बिनती, उतरो भव पार॥
कहने वाळा यो कहे, लीला अपरमपार॥
हाऊँ रे गरीब जन एकळो ....

गीत-श्री सीताराम कुशवाहा, दवाना.

हे स्वामी! मुझ पर दया कीजिये- मैं गरीब, अनाथ, अकेला हूँ। मुझ पर दया बनाये रखें। मैं तुम्हारे भक्तिमार्ग में अकेला ही चलने वाला हूँ। जिस प्रकार महुआ का पेड़ फलों से लद जाता है, और आम का पेड़ भी बौर और आम से लद जाता है। इस तरह हजारों तरह के पेड़-पौधे-वनस्पतियाँ पृथ्वी पर हैं, पर उनमें मैं चन्दन का पेड़ अकेला हूँ। जिसकी निर्मल सुगन्ध से सारा जंगल महकता है।

आकाश मंडल में लाखों तारे हैं, जिनका झिलमिल प्रकाश फैलता है, लेकिन उन लाखों तारों में चन्द्रमा के समान अकेला हूँ, जिसका प्रकाश सारी पृथ्वी पर चाँदनी बनकर छिटक जाता है। मेरी भक्ति चन्द्रमा के समान स्वच्छ, निर्मल और शीतल है, इसे मैं बहुत ही विनम्र भाव से स्वीकार करता हूँ। सृष्टि में नौ लाख प्रकार के पंछी यानी जीव-जन्तु-प्राणी विद्यमान हैं, जो अपने-अपने पंख फैलाकर कर्म करने में लगे हुए हैं, उनके बीच मैं नीर-क्षीर, विवेकी हंस अकेला हूँ जो मोती चुग-चुग कर खाता है। यानी ज्ञान के एक-एक मोती चुनकर मगन रहता है। ठीक उसी प्रकार मैं ज्ञान के श्रेष्ठ सार को ग्रहण करता हूँ।

धनजीदास जी कहते हैं- जिन्होंने परमात्मा का भजन नहीं किया, गुरू दीक्षा नहीं ली, वे इस भवसागर से पार नहीं हो सकते हैं। जिन्होंने हरि का ध्यान किया, गुरू का आदर किया, वे इस भवसागर से बिना संकोच के निसंदेह पार हो सकते हैं।

मृत्यु गीत

मनवा रे भीतर बायर नहीं जाणा॥ टेक॥
मन भीतर देव देवता भीतर पंडित काजी॥
बिना जिरभा पोथी बाचणा, ऐसी करम की लागी॥
मनवा रे भीतर खेळणा ....
दस दरवाजा बंद किया, चारी किया कुलूप॥
दो दरवाजा छोड़िया, आशा रे सुर पाया॥
मनवा रे भीतर खेळणा ....
आ रे तू सागर दरियाव है, ऊपर कमल हो तिरिया॥
ऊपर आप बिराजे, प्रभु दीन दयाला॥
मनवा रे भीतर खेळणा ....

अणहद बाजा बाजिया, सत गरू दरबार॥
सेन भगत की बिनती, राखो शरण लगाय॥
मनवा रे भीतर खेळणा ....

गीत–श्री सीताराम कुशवाहा, दवाना

हे मन! तू अन्दर ही अन्दर खेलना, बाहर कहीं नहीं जाना। आत्मा रूपी घर में सभी कुछ मौजूद है। इसी आत्मा के अन्दर देवी–देवता, पंडित और काजी यानी सारा ज्ञान सभी कुछ मौजूद हैं। ज्ञान का मार्ग एकदम विपरीत है, उलटा है। यहाँ बिना जीभ के ज्ञान की बातें कहना या बिना पोथी के सब कुछ पढ़ लेना, यह सब योग साधना में संभव है, यह रास्ता कठिन है, पर इस पर चलकर अनेक साधु–सन्त और योगियों ने जीवन सफल किया है।

मनुष्य के शरीर में दस दरवाजे हैं। दस इन्द्रियाँ हैं। इन दरवाजों को बंद करके यानी वश में करके केवल श्रवण और श्वांस लेने के द्वार छोड़कर साधना करना चाहिए। चार दरवाजों में दो कान के दरवाजे भी बंद कर लें, फिर केवल श्वांस–प्रश्वास के दो ही दरवाजे चलने दें, खुले रखें। इसी प्रकार लगभग सभी दरवाजों को बंद करके तू हरि का ध्यान कर जिससे तुझे मोक्ष मिले। इसी शरीर रूपी सागर में आत्मा रूपी कमल तैर रहा है। उस कमल पर भगवान श्रीहरि का वास है। अपने आत्म ध्यान से हरि को पहचान, अपने मन को श्रीहरि के चरणों में लगा तो तेरा उद्धार होगा। तेरा आवागमन मिट जायेगा। वरना एक दिन पछतायेगा और कालरूपी मौत के मुँह में समा जायेगा। सेनभगत कहते हैं- भगवान का भजन करना उचित है।

मृत्यु गीत

सुन चतुर सुजान को, ज्ञान कोई नहीं पारके॥
घर कुआँ हो बावड़ी, ऊपर घर रतन तळाव॥
फूल–फूलियो रे गुलाब को, यो फिरी कोमलाय॥
सुण चतुर सुजान .... (1)
घर छे अंबो घर आमली, घर नाना–ताना बाळ॥
घर छे नार सतवंती, पर घर काय को जाय॥
सुण चतुर सुजान .... (2)
घर छे धाबा ऊपरी, कंचन महळ बणाया॥
महळ को पंछी उड़ी गयो, महळ सूनो कवाय॥
सुण चतुर सुजान .... (3)
कहे कबिरा हरिनाम से, साचो सको व्यवहार।
जो हरि की भक्ति करे, सदा रे सुख पावऽ॥

ज्ञान की महिमा अपार है। जो चतुर है, वह ज्ञान की महिमा को समझ सकता है। ज्ञान की

महिमा को मूर्ख क्या समझ सकता है ? ज्ञान की महिमा अपार है। तुम्हारे शरीर रूपी घर में सभी कुछ विद्यमान है। इस घर में कुआँ, बावड़ी हैं। इन कुओं, बावड़ियों तथा शरीर के भीतर के सात चक्र के ऊपर रत्नों का तालाब भरा है। वह रत्नों का तालाब अमृत से भरा सदैव झिलमिल प्रकाशित है। तेरा हृदय गुलाब के फूल के समान खिला हुआ है। इस खिले हुये फूल को कुम्हलाने मत देना। मनुष्य जन्म ही गुलाब के फूल के समान है। इसमें ईश्वर भक्ति खिलाए रखना। तुम्हारे शरीर रूपी घर में आम है, इमली है और तुम्हारे घर में छोटे-बड़े बच्चे हैं। और घर में एक पतिव्रता स्त्री है। फिर भी पराये घर की आशा क्यों करता है ?

तेरे शरीर रूपी घर में एक से एक ऊँचे छज्जे (ऊर्ध्व चक्र) हैं। तेरा यह स्वर्ण महल है। जब तेरे शरीर रूपी महल से जीव रूपी पंछी उड़ जायेगा, तब यह शरीर रूपी महल सूना हो जायेगा। इसलिये कबीर कहते हैं- हे मनुष्य! तू हरि का ध्यान कर, जिससे तेरा उद्धार होगा, तेरा आवागमन मिट जायेगा और तू सदा के लिये सुख पा लेगा।

मृत्यु गीत

सीता हो राम सुमर ळेणा, भजी लेवो भगवान,
सीता हो राम ....
तो सपना की सम्पत भई, वा दियार गजराद।
भोर भई जागिया, नर जोग निवान
सीता हो राम ....
तो वायो सोनो नहीं निपजे, मोती लाग्या रे डाळ।
भाग बिना रे कासे पावणा, तपस्या बिन राज।
सीता हो राम ....
राजा दशरथ थे अयोध्या में, जलम लियो रघुवीर।
माता जिनकी कौशल्या, लक्ष्मण बलवीर।
सीता हो राम ....
अणहद बाजा बाजिया, बाजा गरू दरबार,
तुलसीदास की बिनती, राखो शरण लगाय।

गीत-श्री तरूवरदास महन्त, दवाना

हे मन! तू राम का स्मरण करना। राम का भजन करना। यहाँ पर जो कुछ है वह सब सपने की सम्पत्ति के समान ही है। जिस प्रकार सपने में सम्पत्ति दिखाई देती है, हाथी-घोड़े, पालकी, माल-खजाना, रुपया-पैसा सभी कुछ दिखाई देता है, लेकिन आँख खुलने पर कुछ नहीं मिलता। उसी प्रकार यह संसार भी झूठा सपना ही है। सोना बोने पर सोना उपजता नहीं है। मोती बोने से मोती भी नहीं उपजते हैं। अच्छे कर्म बोईये, अच्छे कर्म करो तो परिणाम भी अच्छा ही मिलेगा, अच्छी तपस्या करोगे तो तुम्हारा उद्धार होगा, आवागमन मिट जायेगा।

राजा दशरथजी ने अच्छे कर्म किये थे, तभी तो उनके यहाँ भगवान श्रीरामचन्द्रजी का जन्म हुआ, माता कौशिल्याजी ने पूर्व जन्म में अच्छे कर्म किये होंगे, तभी तो उन्हें जगतपति की माता बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और लक्ष्मण जैसे बलशाली की भी माता कहलाईं। तुलसीदास की छाप वाला यह पद लोकरचना है। तुलसीदास कहते हैं– गुरू की कृपा से शिष्य साधना के उस शिखर पर पहुँच सकता है, जहाँ ब्रह्म का अनहद नाद सुनाई दे सकता है। गुरू के शरण में ही यह सम्भव है।

मृत्यु गीत

म्हारो मन लग्यो बयराग सी, रमता जोगी की ळारऽ॥
महळ से मीरा उतरी, हाथ मऽ सोवन थाळ॥
दुवार बतावो इना सन्त को, करूँ गुरू रोहित दास॥
आमऽ सामऽ कुआँ बावड़ी, सामऽ सूरज दुवार॥
येरा दुवार हरि संत को, आँगण तुलसी रो झाड़॥
तू छे बेटी राणा राव की, हाँऊ छे जात कहार।
काळ कदर कोई जाण से, देखऽ कोण हवाळ॥
सरप रे टिपारा राणा ने भेजा, भेजा बाँदी का हाथ॥
ळई रे टिपारा मीरा खोलिया, निकल्या नवसरियो हार॥
जयर का प्याळा राणा ने भेजा, भेजा दासी का हाथ॥
ळई रे मीरा पी गई, वो तो अमरित होय॥
अणहद बाजा बाजिया, बाजा गरू दरबार॥
बाई वो मीरा थारी बिनती, राखो शरण ळगाय॥

यह भजन मीराबाई की छाप वाला भजन है। इस भजन में मीराबाई ने स्वामी रैदासजी को अपना गुरू बनाया। ऊँच–नीच के भेदभाव का त्याग किया और गुरू को सम्मान दिया। मीराबाई जन्म से वैराग्यमयी नारी थीं।

मीरा कहती हैं– मेरे मन में वैराग्य उत्पन्न हो गया है। यह संसार झूठ, कपट, माया, मोह, तृष्णा से भरा है। मेरा मन साधु–संतों की संगत में रम रहा है। हाथ में सोने की थाली लेकर मीराबाई राजभवन से नीचे उतरी हैं और रैदासजी को गुरू बनाने के लिये चल पड़ी हैं। उन्होंने राहगीर से पूछा कि– रैदासजी का घर कहाँ है? तब लोगों ने बताया– सामने कुएँ, बावड़ी के सामने जो दरवाजा दिखाई दे रहा है, वहीं पर तुलसी का पौधा लगा है, वही घर संत रैदासजी का है। तब मीराबाई उस घर में जाती हैं और रैदासजी को गुरू बनाने की बात कहती हैं। रैदासजी मना कर देते हैं। कहते हैं– तुम एक राजा–रईस की बेटी हो। मैं तुम्हें गुरू दीक्षा नहीं दे सकता हूँ। कभी मेरे ऊपर संकट आ सकता है, मुझे मारा–पीटा जा सकता है। मैं तुम्हें शिष्या नहीं बना

सकता हूँ।

बहुत मनाने पर वे मीराबाई को गुरू दीक्षा देते हैं और मीरा को अपनी शिष्या स्वीकार कर लेते हैं। रैदास की शिष्या बनने के बाद राणा ने बदनामी के डर से मीरा को विषपान कराया, नाग से डसवाया, लेकिन मीरा तो भगवान की छत्रछाया में थीं। कुछ नहीं हुआ मीराबाई को। अंत में वे अपने आराध्य देव गोविन्द में लीन हो गई।

मृत्यु गीत

स्वामी म्हारो बसे अमरपुरी, कैसा मिळणा होय॥
गुरू बिन पंथ सूजे नहीं, मन समझावो तोय॥
स्वामी म्हारो बसे ....
जेठ जिठाणी पागळा, सासु करण कुँवारी।
ससरा हमारा थिगल्या भरऽ, ववु पाणी कऽ चाळी।
स्वामी म्हारो बसे ....
सासू कुँवारी ववर परणेळी, घर नात्या को याव॥
ससरा की मुंडन भई, परवारी घर आया॥
स्वामी म्हारो बसे ....
सासू बैठी बहू पाणी गई, गई अवगढ़ घाट।
नीर घागर फूट गई, घर काई ळई जाय॥
स्वामी म्हारो बसे ....
पतिबरता सत पर ठाढ़ी, कोई देखो रे भाई॥
यहाँ का गया पाछा नहीं आया, घड़ी काय को गमाई॥
स्वामी म्हारो बसे ....
अणहद बाजा बाजिया, बाजा गरू दरबार।
सेन भगत की बिनती, राखो शरण ळगाय॥
स्वामी म्हारो बसे ....

गीत–श्री सीताराम कुशवाहा, दवाना

मेरा स्वामी यानी वह परमतत्त्व अमरापुर अर्थात् अमर्त्यनगर (स्वर्ग) में निवास करता है। उससे मिलना किस प्रकार हो सकता है? बिना सद्गुरू के उस कठिन मार्ग पर चलना कौन बता सकता है? इसलिये सबसे पहले सद्गुरू का मिलना जरूरी है। कोई समर्थ गुरू ही उस परब्रह्म को मिला सकता है। हे मन! तुझे मैं समझाती हूँ। मन को आत्मा कहती है।

मेरे जेठ–जेठानी पागल हैं यानी रिश्तेदारों को इसकी जानकारी नहीं है। मेरी सास चिर–कुँवारी है, मतलब उन्हें आत्मा और परमात्मा के बारे में जरा सा भी ज्ञान नहीं है। ससुर अभी

चलना भी नहीं सीखे हैं, मतलब थोड़ा-बहुत अनुभव है। बहू बिचारी पनघट पर पानी भरती रहती है, उसे इन सब बातों को जानने की फुरसत ही नहीं है।

यह अजीब है, सास का विवाह नहीं हुआ है, लेकिन बहू विवाहित है। और तो और घर में नाती का विवाह हो रहा है। ससुर का मुंडन संस्कार करके अभी घर लाया गया है। यह उलटबासी पद है। सास आत्मा है, जिसे परमात्मा की लय नहीं लगी है। बहू मन है, जिसकी इच्छाओं का जगत पसारा है, नाती यह संसार है। ससुर विकारों का समूह है, जिनकी उम्र हो गई है, लेकिन फिर भी ज्ञान से परिचय नहीं हुआ है।

सास बैठी है, आत्मा निश्चिंत है, बहू तीनों नाड़ियाँ पानी भर रही है। ईड़ा, पीड़ा, पिंगला में जीवनी शक्ति है। जब साधना के कठिन घाट पर यानी मार्ग पर चलने की कोशिश की गई तो चढ़ने में गागर फूट गई। अब पानी किस प्रकार घर ले जाया जा सकता है। लेकिन सच्ची पतिव्रता है यानी सच्चे साधक हैं, वे पीछे मुड़कर नहीं देखते, वे अपने लक्ष्य को प्राप्त करके ही रहते हैं। हे भाई! जो इस संसार से ऐसे विदा होता है, उसकी वापसी नहीं होती। मनुष्य को समय का फायदा उठाना चाहिए। सेनभगत का यही कहना है।

मृत्यु गीत

ळाद चल्यो बणजारो, ळाद चल्यो बणजारो॥
इनी रे माटी का बर्तन घड़िया, बिना पैसा देत उधारो॥
मुद्दत आइ जब मांगणे आयो, ऐसो सेठ हमारो॥
ळाद चल्यो...................................
भाँत-भाँत का बर्तन घड़िया, घड़ी दिया न्यारा-न्यारा॥
फूटियो ठीकरो चल्यो कसेरा, घर ऐसो सेठ हमारो॥
ळाद चल्यो...................................
भाँत-भाँत की छींट रंगाई, रंग ते न्यारा-न्यारा॥
इना रे रंग की करो रे परीक्षा, रंगत निहारो रंगारो॥
ळाद चल्यो...................................
आगे-आगे चळी रे सवारी, पीछे ते बड़दो भारी॥
भाई बंधु थारा कुटुंब कबीळा, बाजा ते देव नगाड़ी॥
ळाद चल्यो...................................
राम नाम की हुझड़ी बणाई, ऊपर बठियो बणजारो॥
कहत कबीर सुण भाई साधु, रई गयो डांडो नऽ डेरो॥

मनुष्य रूपी बंजारा सारा सामान लादकर गाँव-गाँव बेचने के लिये चल पड़ा है। संसार में आकर मनुष्य भौतिक सामग्रियों के इकट्ठा करने में सुख ढूँढ़ता रहता है।

मनुष्य को पता नहीं है कि उसका यह शरीर मिट्टी से निर्मित है, जो कभी-भी टूट सकता है। उसे ईश्वर ने बिना पैसे के गढ़ा है फिर भी यह अनमोल है, इसे यानी अनमोल शरीर मनुष्य को उधारी पर मिला है लेकिन इसकी भी एक सीमा होती है। जब अन्तिम समय आ जाता है, उम्र की सीमा समाप्त हो जाती है, तब सेठ यानी ईश्वर इसकी कीमत मांगने आता है। उस परमात्मा रूपी कुम्हार ने जीवों के रूप में तरह-तरह के बर्तन बनाये हैं। सबमें कुछ न कुछ अलग प्रकार के आकार, विशेषताएँ उसने डाल दी हैं। आखिर एक दिन वह घड़ा फूट जाता है, केवल टूटे हुए टुकड़े-ठिकरियाँ बचती हैं, वही ठीकरी कसेरा यानी गढ़ने वाले के यहाँ बिक जाती है। यह उस सेठ यानी परम ईश्वर का खेल है।

रंगरेज ईश्वर ने तरह-तरह के वस्त्र बनाये और रंगे हैं, तरह-तरह के जीव और वस्तुएँ बनाई हैं। इन रंगों के उसने तरह-तरह के परीक्षण किये हैं और रंगों में निखार या चटक भरने की कोशिश की है। अन्तिम समय में जब शरीर से प्राण निकल जाते हैं, तब शव को मरघट ले जाने के लिये अर्थी सजाई जाती है। आगे-आगे अर्थी पर मृत शरीर की सवारी चार लोग लेकर चलते हैं, पीछे-पीछे सारे भाई-बन्धु परिवार, रिश्तेदार, मित्र, परिचित आदि जुलूस के रूप में चलते हैं। सबसे आगे मृत्यु की घोषणा करते हुए नगाड़े अथवा बाजे बजाते हुए लोग चलते हैं।

उस ईश्वर ने राम नाम की एक ऐसी युक्ति बनाई है, जिसके ऊपर वह परमतत्त्व बैठा है। राम नाम के सहारे ही उस परमतत्त्व को प्राप्त किया जा सकता है। बंजारा यानी मनुष्य उस राम नाम को धारण कर अपना उद्धार कर सकता है। कबीरदास कहते हैं- शरीर से आत्मा निकल जाने के बाद आदमी के डंडे और डेरे यानी भौतिक सामग्रियाँ जिसमें शरीर भी शामिल है, सब यहीं पड़े रह जायेंगे। इसलिए राम नाम का स्मरण ही महत्त्वपूर्ण है।

मृत्यु गीत

खेती खेड़ो रे हरिनाम की, जामऽ मुकतो छे लाभ॥
पाप का पाळवा कटावजो, काटी बायर राळ॥
कर्म की काशी ऐचाड़जो, खेती चोखी थाय॥
खेती खेड़ो रे हरि नाम की ....
वास-स्वास दुई बईळ छै, सुरती रास ळगाव॥
प्रेम पिराणो कर धरो, ज्ञान की आर ळगाव॥
खेती खेड़ो रे हरि नाम की ....
ओहम् बक्खर जुपजो, सोहम् सरतो ळगाव॥
मूल मंत्र बीज बावजो, खेती लटलूम थाय॥
खेती खेड़ो रे हरि नाम की ....
सत को मांडवो रोपजो, धरम की पयड़ी ळगाव॥

ज्ञान का गोला चलावजे, सुवा उड़ी-उड़ी जाय॥
खेती खेड़ो रे हरि नाम की ....
दया की दावण राळजो, बहुरी फेरा नहीं होय॥
कहे सिंगा पइचाण लेवो, आवागमन नहीं होय॥
खेती खेड़ो रे हरि नाम की ....

हे मनुष्य! तू हरि नाम की खेती कर। पाप के सूखे पत्तों को काटकर बाहर फेंक दे। फिर कर्म के डंठलों को बीन डाल, उससे खेत साफ हो जायेगा। फिर श्वास-प्रश्वास रूपी दो बैलों को श्रुति-स्मृति की डोर लगा। प्रेम की लकड़ी हाथ में लेकर, उन्हें ज्ञान की कील से हांक, ओहम् का बक्खर लेकर, उस पर सोहम् का बीज बोने का यंत्र बाँधकर उसमें मूल मंत्र सत्य का बीज बो दे, तो तेरी खेती भरपूर हो उठेगी। फिर सत्य का मंडप बनाकर उस पर धर्म की सीढ़ी लगा। वहाँ से ज्ञान के गोले चलाना तो खेत चुगने वाले पक्षी (विकार) दूर-दूर तक भाग जायेंगे। अन्त में यदि तूने दया की दावण (अनाज निकालने का कार्य) लगाकर उस खेतीहर ईश्वर से नाता जोड़ लिया तो हे मनुष्य! तू फिर बार-बार के आवागमन से मुक्त हो जायेगा। सन्त सिंगाजी का यह सुप्रसिद्ध लोकप्रिय गीत है।

निमाड़ी संस्कार गीत

डॉ. संतोष कुमार गुर्जर

सम्पर्क–केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक–1, आयुध नगर, इटारसी, जिला–होशंगाबाद

प्रसव

पतली आमलिया पतली ओकी डाल, पतली सी छइयाँ सुहावनी ॥ टेक॥
पतली लाड़ी वऊ का लम्बा-लम्बा केश, पतली सी पटियाँ सुहावनी।
हँसि-हँसि मोठाजी भाई पूछऽ छे बात, आज गोरी धन अनमना।
कि तूखऽ भावऽ गोरी अम्बा अचार, कि तूखऽ भावऽ चोखो खोपरो।
नहीं हमकऽ भावऽ पिया अम्बा अचार, नहीं हमकऽ भावऽ चोखो खोपरो।
हमखऽ जो भावऽ पिया आज की रैनी, आज बसेरो सायब घर रहो।

स्रोत-सुभद्रा बाई खले

जिस प्रकार इमली के पतले वृक्ष की छाया सुहानी लगती है उसी प्रकार दुबली काया वाली बहू की पतली-पतली चोटियाँ और पतली माँग सुहानी लगती है। आज उस सुंदरी को थोड़ा सा उदास देखकर उसके पति देव हँसी-ठिठोली करते हुए पूछते हैं- 'क्या तुम्हें आम, अचार और ताजा खोपरा खाने की इच्छा हो रही है ?'

सुन्दरी बहू लजाकर कहती है- 'ऐसा कुछ भी नहीं है। मेरी तो इच्छा है कि आज की रात तुम घर पर ही रहो, कहीं मत जाओ।'

अगरनी

मथुरा जो नगरी मऽ आनंद बधाओ, बाई सरस बधाओ,
बाई रुखमा की आंगरनी ॥ टेक॥
हाथई बसन्ता दादाजी बोल्या, लिखियो कहां सऽ आई।
कचेरी बसन्ता बीराजी बोल्या, लिखियो कहां सऽ आई।

माची बसन्ता माताजी बोल्या, लिखियो कहां सऽ आई।
रसोई तपन्ता भावजजी बोल्या, लिखियो कहां सऽ आई।

स्रोत–गिरिजा बाई शर्मा

मथुरा नगर आज खुशियों में डूबा हुआ है, क्योंकि रानी रुक्मिणी की गोद भरी जा रही है। चारों ओर सरस बधाई गीत गाये जा रहे हैं। हाथई (घर के बाहर बना हुआ बैठने का चबूतरा) पर बैठने वाले दादाजी, कचहरी में काम करने वाला भाई, काष्ठासन पर बैठने वाली माताजी तथा रसोई में व्यस्त रहने वाली भाभीजी, सभी पूछ रहे हैं कि मथुरा नगरी में आज इतनी प्रसन्नता क्यों है ? उत्तर मिलता है कि रानी रुक्मिणी की आज गोद भरी जा रही है।

जन्म

जच्चा राणी छे कोमल कामिनी
ओखऽ हवा लगऽ कोमलाय ओ भंवर जी
जच्चा राणी छे कोमल कामिनी
ये तो हाथई बठन्ता ससरा जी
ये तो भैस्या दुहन्ता जेठऽ जी
ये तो गेंदऽ खेलन्ता देवर जी
ये तो ढोल बजन्ता नणदोई जी
ये तो गाड़्या ते गाड़ितऽ हेड़ाव ओ भंवर जी
जच्चा राणी छे कोमल कामिनी

प्रसव काल समीप है। गर्भवती वधू की माँ वधू के ससुर, जेठ, देवर, ननदोई आदि को संबोधित करते हुए कह रही है कि मेरी पुत्री कोमल कामिनी है, इसलिए उसका बहुत ध्यान रखा जाए।

जन्म

कहाँ सऽ हलदुली उबजी जी
कंई, कहाँ ते मोल एचाय वो सुआगल
बालो जलमी नऽ पेलो पेरसां जी
कंई, हलदुल देस मऽ उबजी जी
कंई, हरदा मऽ मोल एचाय वो सुआगल
बालो.........
कंई, कुण सा भाई नऽ मोल करी जी

कंई, कुणा भाई नऽ खरच्या छे दाम ओ सुआगल
बालो......
कंई, पेलो जो पेरी कई मिल्या पाट बठाई जी
गोदी मऽ लियो तानु बाल वो सुहानो
बालो.....

प्रस्तुत गीत में प्रश्नोत्तर के माध्यम से गर्भवती स्त्री कह रही है कि हरदा के बाजार में बिकने वाली हल्दी में रंगी हुई साड़ी को पहनकर मैं भाई द्वारा बिछाए पाट पर बैठूँगी तथा मेरी गोद में मेरा प्यारा लाल होगा।

जन्म

कवलऽ नऽ उबी वो कुलवऊ नार, कम्मर लागी आसी पीड़।
चिन्ता वो गोरी की कुण करऽ राज ॥ टेक॥
ससरो म्हारो हाथई बसन्तो वो राज, सासू म्हारी झूला की राणी।
जेठ म्हारो भैस्या दुवन्तो वो राज, जेठानी म्हारी मयड़ा की राणी।
देवर म्हारो नौकरी करन्तो वो राज, देराणी म्हारी रसवई की राणी।
नणदई म्हारो परायो पूत वो राज, नणद म्हारी सासरा की राणी।
स्यामी म्हारो सेज्या लोटन्तो वो राज, चिन्ता म्हारी कबई करऽ नी।

स्रोत–गिरिजा बाई शर्मा

दरवाजे की ओट में खड़ी कुलवधू उदास है। उसका प्रसवकाल करीब है। उसकी कमर में असह्य पीड़ा हो रही है। इस भरे–पूरे परिवार में उसकी चिन्ता करने वाला कोई नहीं है। वह मन ही मन में सोच रही है, 'मेरे ससुर निश्चिंत होकर बाहर बैठे हैं और सास झूले पर झूल रही है। जेठ भैंसों को दुहने में व्यस्त है और जेठानी घर की रानी है। देवर नौकरी में व्यस्त है और देवरानी रसोई बना रही है। नणदोई तो पराया व्यक्ति है और ननद अपनी ससुराल में है। मेरे स्वामी सेज पर विश्राम कर रहे हैं। ऐसी परिस्थिति में मेरी चिन्ता करने वाला कोई नहीं है।'

इसके पश्चात् वह शुभ घड़ी आती है, जब परिवारजनों को पुत्र जन्म की सूचना मिलती है। चारों ओर प्रसन्नता का वातावरण बन जाता है। बधाई गीतों के स्वर गूँजने लगते हैं। जन्मोत्सवों का आयोजन शुरू हो जाता है।

जन्म

श्री कृष्ण जी जलम लियो रे अवतारऽ
खोटा न ऽ कंई रेखा मांड्या जी महाराज

श्री कृष्ण जी बिगर कैरी को एक अम्बो
काकड़ पर जाई सोसऽ करऽ जी महाराज
श्री कृष्ण जी कैरी हूती तो ओकी आस
कभी न कभी बेड़न जाता जी महाराज
श्री कृष्ण जी बिगरऽ बछुवा की एक गौआ
जंगल मऽ जाई सोस करऽ जी महाराज
श्री कृष्ण जी बछुओ हूतो तो ओकी आस
गोया मऽ जाई हम्मर मचावऽ जी महाराज
श्री कृष्ण जी बिगर वाला की एक तिरिया
झूला पऽ जाई सोसऽ करऽ जी महाराज
श्री कृष्ण जी बालो हूतो तो ओकी आस
झूलो पऽ जाई दूध पिलावती जी महाराज

स्रोत-रंभा माय

श्री कृष्ण का जन्म हो चुका है। उन्होंने अवतार ले लिया है। चारों ओर प्रसन्नता का वातावरण है, लेकिन इसके बावजूद भी एक फलविहीन आम्र वृक्ष दुखी है। वह अपने भाग्य को कोसते हुए कह रहा है कि विधाता ने उसकी भाग्य रेखाएँ अच्छी नहीं बनाई हैं। वह यदि फलदार वृक्ष होता है तो सभी लोग उसके फलों को तोड़ने आते। वह इतना उपेक्षित और अकेला नहीं रहता।

बिना बछड़े की एक गाय जंगल में जाकर दुखड़ा रो रही है कि यदि उसका कोई बछड़ा होता तो अपनी माँ को ढूँढ़ने के लिये शोर मचाता। एक बाँझ स्त्री झूले पर बैठकर अपना दुःख व्यक्त कर रही है यदि उसकी कोई संतान होती तो वह कितनी प्रसन्नता से इस झूले पर बैठकर उसे दूध पिलाती।

जन्म

परथम गाउँ गणेश अवतार कुण दिन गणपति जलमिया
भादव मास चउथ बुधवार, उन दिन गणपति जलमिया
कुण थारी माता कुण रे पिता देव, कुण हरि नाम धराईया
गौरा जो माता पिता रे शंकर देव, गणपति नाम धराईया
काय का मेडुला कायऽ नऽ की ओकी छाल,
कायल का कसना कसाइया
लक्कड़ का मेडुला मिरग ओकी छाल,
रेशम कसना कसाइया

बजजे रे मेडुला राधेश्याम भाई दरबार,
उन घर नात्या को सोयलो

गीत में भी प्रश्नोत्तर के माध्यम से बात कही जा रही है। गणपति ने भाद्रपद मास की चतुर्थी, दिन बुधवार को जन्म दिया है। माता पार्वती तथा पिता शंकर ने उनका नाम गणपति रखा है। गणेश राधेश्याम भाई के पोते के विवाह कार्यक्रम को निर्विघ्न सम्पन्न कराने उनके घर पधारे हैं।

जन्म

येनी वाड़ी येनी वाड़ी मऽ पचरंग्यो फूल
वो सुरीमल पाँचई फूल हजारी। टेक।
तमनऽ जायो तमनऽ जायो मोटो भाई भीम।
उन्नऽ रोप्यो उन्नऽ रोप्यो बबूर खेरो झेंडो।
उन्नऽ राख्यो उन्नऽ राख्यो दादाजी को नाव।

इस बाड़ी में पाँच रंग के पुष्प पुष्पित है। हे सुरीमल! तुमने भीम जैसे पुत्र को जन्म देकर अपने पिता-दादा का मान बढ़ाया है। तुमने बबूल का पौधा रोपा है, जो आगे एक सुदृढ़ वृक्ष बनेगा।

जन्म

बड़ो रे पाठन पुर को लंबो बजार
झां रे बनिया का-हटाइये नऽ हाटऽ मांड्यो
झां रे रंगरेजा नऽ हाटऽ मांड्यो
झां रे बजादी नऽ हाटऽ मांड्यो
झां रे सोनीड़ा नऽ हाटऽ मांड्यो
धवला सो घोड़ीलो संतोष भाई असवार
सौदो इसावन वे चल्या
कओ रे बनिया इन गोला को मोल, एक मोलो रे हमें चाहिए
कओ रे रंगरेजा इन पेला को मोल, एक पेलो रे हमें चाहिए
कओ रे बजादी इन साड़ी को मोल, एक साड़ी रे हमें चाहिए
कओ रे सोनीड़ा इन गयणा को मोल, एक गयणो रे हमें चाहिए

चारों ओर पुत्र जन्म की खुशी का वातावरण है। पाठनपुर में बहुत बड़ा हाट लगा है, जिसमें बनिया, रंगरेज, कपड़ा वाले, सोनार आदि सभी व्यापारियों ने अपनी दुकानें सजाई हैं। पुत्र की माँ तथा समस्त महिलाएँ प्रत्येक दुकान से वस्तुएँ खरीदते हुए मोल भाव कर रही हैं।

जन्म

एक राजा घर दोई वो नार।
सोभागिल दोबागिल दोई मिली।
सोन्ना का घड़िलन रेशम लम्बी लेज, सोभागिल पाणी हो संचर्‍या।
माटी का घड़िलन सण सूतन की लेज,दोबागिल पाणी हो संचल्या॥
सोन्ना को दिवलो रूपा की बाट, सोभागिल महल हो सिधार्‍या।
माटी को दिवलो पोनी की बात, दोबागिल टापरी हो सिधार्‍या।
भर रे भाँदवरा मझऽ आधी रात, दोबागिल बालो अवतर्‍यो।
भर रे भाँदवरा मझऽ आधी रात, नग्रऽ म बाजा बाजबिया।
राजा राणी हँसि पूछऽ बात, नग्रऽ म बाजा हो बाजबिया।
धोबी का घर हो राजा जायो छे लाल, उन घर बाजा बाजबिया।
माप को गीत राणी वैणा की राग, म्हारा नाँव लई खऽ गीत गाईया।
तू राणी मूरख गँवार वैण की राग,म्हारा नाँव लई खऽ गीत गाईया।
तू राणी मूरख गँवार, दोबागिल म्हारो वंश राखियो॥
सुनार्‍या का बेटा पालणो लई आव, दोबागिल म्हारो वंश राखियो॥
सुनार्‍या का बेटा चूड़ा तागली लई आवऽ, दोबागिल म्हारो वंश राखियो।
दरजी का बेटा झगला टोपी लई आवऽ, दोबागिल म्हारो वंश राखियो॥
माई की जाई साती न लई आवऽ, दोबगिल म्हारी वंश राखियो॥

उपरोक्त गीत में राजा स्नानपाद की पौराणिक कथा है, जिसकी दो रानी थीं। एक का नाम था सुनीति और दूसरी का नाम था सुरुचि। ध्रुव का जन्म सुरुचि रानी से हुआ था। उन्हें प्रसव में बहुत कष्ट सहना पड़ा था। उसी का वर्णन है।

जन्म

आड़ा छे अड़दा नऽ मसरु का परदा
कोट बठी नऽ डंको देवो रे सायेब म्हारा
मती कोई लोग सुनाड़ो । टेक।
ससरा जी सुणसे तो दौड़ी नऽ आवसे
वो तो, बारा दिन दमड़ा उड़ावो रे सासरा जी म्हारा।
सासू बाई सुणसे तो दौड़ा नऽ आवसे।
वो तो, बारा दिन बालो नवाड़ो वो सासू जी म्हारी।

इसी प्रकार जेठ-जेठानी, देवर-देराणी, नणद-नणदोई से विभिन्न अपेक्षाओं का वर्णन करते हुए गीत आगे बढ़ता है।

नवजात शिशु की माँ अपने पति को संबोधित करते हुए कहती है कि पुत्र जन्म की खबर डंका बजाकर सबको सुनाओ। ससुर जी को कहते हैं कि पोते के जन्म की ख़ुशी पर रूपये पैसों को न्यौछावर करो। इसी प्रकार वह जेठ-जिठानी, देवर-देवरानी, ननद-ननदोई आदि से अलग-अलग अपेक्षाएँ रखती है। इन सबका उल्लेख करते हुए गीत को बढ़ाया जाता है।

जन्म

हाथऽ मऽ लीवी फूलऽ छावड़ी जी वो सीता माता शिव पूजन चाली
बधावो म्हारा यां आबियो।
पूजत-पूजत पारबती बोल्या, जी हो शिव जी की वाचा खुली
बधावो म्हारा यां आबियो।
दशरथ सरीका हमारा ससरा दीजो, कौसल्या सरीखी हमरी सासू।
सोबदरा सरीखी हमरी नणद दीजो, लक्ष्मण सरीको हमरो देवर।
राम सरीखा हमरा भरतार दीजो, लवकुश सरीखा हमरा पुत्र।

फूलों से सजी आरती लेकर सीता शिव-पार्वती की अर्चना करती हैं। शिव-पार्वती वरदान माँगने को कहते हैं। सीता प्रत्येक जन्म में कौशिल्या और दशरथ के समान सास-ससुर, सुभद्रा के समान ननद, लक्ष्मण के समान देवर, लव-कुश के समान पुत्र एवं श्रीराम जैसा आदर्श पति मिलने का वरदान माँगती है।

जन्म

कदम की डाल प झूलो बंधेल छे।
धीरऽ सी हलावजो म्हारो मुन्नो सोयेल छे।
सीसऽ जच्चा जी की बिन्दी सोवऽ
धीरऽ सी पेरावजो म्हारी जच्चा नदान छे।
कान जच्चा जी का झुमकी सोवऽ
धीरऽ सी पेरावजो म्हारी जच्चा नदान छे।

इसी प्रकार गला-माला हाथ-चूड़ी, पांय-पायजेब इत्यादि जोड़कर गीत आगे बढ़ा लिया जाता है।

महिलाएँ पुत्र जन्म के अवसर पर गीत गा रही हैं। कदंब की डाल पर बँधे हुए झूले को धीरे-धीरे हिलाओ क्योंकि बच्चा सोया है। विभिन्न आभूषणों का क्रमवार नाम लेते हुए कहा जा रहा है कि आभूषण धीरे-धीरे पहनाओ, क्योंकि जच्चा अर्थात् शिशु की माँ कोमल और नादान है।

जन्म

कहाँ सऽ आये काकुल मेरे, कहाँ सऽ आए बाबुल मेरे
हो एजुं, कहाँ सऽ आए वीरन भैया, तुमसे अबोलनो। टेक।
कहाँ उतारूँ काकुल मेरे, कहाँ उतारूँ बाबुल मेरे
लो एजुं कहाँ उतारूँ वीरन भैया तुमसे अबोलनो।
छज्जा उतारूँ काकुल मेरे, धाबा उतारूँ बाबुल मेरे
हो एजुं, दरवाजा उतारूँ वीरन भैया तुमसे अबोलनो।

इसी प्रकार प्रश्न और उत्तर के माध्यम से अगले अन्तरों में 'कहाँ जिमाऊँ-लाडू, पेड़ा, भात तथा कहाँ लई आए-खिचड़ी, पच, पेलो इत्यादि जोड़कर गीत को बढ़ा लिया जाता है।' प्रश्न है कि मेहमान के रूप में आए काका, पिता और भाई का स्वागत कहाँ किया जाए? उत्तर है- छत पर काका का, ऊपर धाबे पर पिता का तथा द्वार पर भाई का स्वागत किया जाए।

जन्म

सुनो सुनो नऽ रे होरील के बाप, ललन के बाप,
सांवलड़ी धन येऊँ कयऽ
पिया हमखऽ रे खिचड़ी की साटऽ
आवऽ अब रात खिचड़ी बेगऽ बुलावजो
गोरी खिचड़ी नऽ वो थारी माय पर माँगऽ
बइन पर माँगऽ हम पर मेवो माँगी लऽ
पिया हमखऽ न रे पेला की साटऽ
आवऽ अब रात पेलो बेगा बुलावजो
पेलो नऽ वो थारो बाप पर माँगऽ
वीरू पर माँगऽ हम पर पेलो माँगी लऽ
पिया बाप नऽ रे म्हारो बसऽ परदेस
गाड़ा का देस बीरो राणा जी की चाकरी
पिया माय नऽ रे म्हारी बसऽ परदेस
गाड़ा का देस बईण हमारी सुन्दर सासरऽ

यह गीत प्रश्नोत्तर के माध्यम से आगे बढ़ता है। नवजात शिशु की माँ अपने पति से खिचड़ी खाने की, पीली साड़ी खरीदने की तथा अन्य कई वस्तुओं की माँग करती है। जवाब में पतिदेव कहते हैं कि इन सारी वस्तुओं को तुम अपने माता-पिता और भाई से माँगो। इस पर पत्नि कहती है कि मेरा भाई राणा जी की चाकरी में व्यस्त है, माता-पिता बहुत दूर हैं तथा ननद ससुराल में है।

बधाई

माँगो माँगो री नणंद बाई दिल चाहे सो आज ॥ टेक ॥
गहणो तो मति माँगजो, म्हारो डिब्बा रो सिंगार।
गहणा मऽ सऽ बेसर देऊँगी, सरजा लेऊँगी काट।
कपड़ा तो मती माँगजो, म्हारी पेटी रो सिंगार
कपड़ा मऽ स ऽ लुगड़ो देऊँगी, पोलको लेऊँगी काट।

स्रोत–सुभद्रा बाई खले

प्रस्तुत गीत भाभी द्वारा पुत्र प्राप्ति पर ननद को संबोधित करते हुए गाया गया है। भाभी अपनी ननद को इस खुशी की बेला में कुछ भी माँगने को कहती है, किन्तु अपनी नारी सुलभ भावनाओं को रोक नहीं पाती है। वह कहती है– 'हे ननद बाई! मेरे श्रृंगार के डिब्बे में रखे हुए गहनों की माँग मत करना। यदि तुम माँगती भी हो तो मैं उनमें से केवल बेसर दूँगी, सरजा तो मैं अपने पास ही रख लूँगी। यदि तुम कपड़ों की माँग करोगी तो केवल लुगड़ा ही दूँगी। पोलका (ब्लाउज़) तो अपने पास ही रख लूँगी।

बधाई

धन धन वो दरतेन थारा भाग।
जुआरी लाल भुई मऽ जलम्या वो। टेक।
जाई कयजो रे ओका ससरा जी खऽ, आसा बारा दिन दमड़ा उड़ाववऽ।
जाई कयजो रे ओकी सासूजी खऽ, आसा बारा दिन बालो नवाड़ऽ।
जाइ कयजो रे ओका जेठऽ जी खऽ, वो तो बारा दिन भैस्या दुवाड़ऽ।
जाई कयजो रे ओकी जेठानी खऽ, वो तो बारा दिन हलवो सेकाड़ऽ।
जाई कयजो रे ओका देवर जी खऽ, वो तो बारा दिन चेंडू खेलाड़ऽ।
जाई कयजो रे ओकी देराणी खऽ, वो तो बारा दिन रसबई निवजावऽ।
जाई कयजो रे ओका नणदई जी खऽ, वो तो बारा दिन बाजा बजावऽ।
जाई कयजो रे ओकी नणद बाई खऽ, वो तो बारा दिन मिठई वटाड़ऽ।

स्रोत–रंभा माय

हे सौभाग्यवती महिला! तू धन्य है, तू बड़भागी है, क्योंकि तेरे यहाँ पुत्र के रूप में ईश्वर ने जन्म लिया है। कोई उस महिला के ससुर से जाकर कह दे कि पोते के जन्म के अवसर पर पूरे बारह दिनों तक पैसे न्यौछावर करें। सास को कह दे कि बच्चे को बारह दिनों तक नहलाएँ। जेठ को कह दे कि बारह दिनों तक शिशु को दूध पिलाने के लिए भैंसों को दुहें। जेठानी को कह दे कि बारह दिनों तक हलवे का आटा सेकें। देवर को कह दे कि पूरे बाहर दिनों तक शिशु को

गेंद खिलावे। देवरानी को कह दे कि बारह दिनों तक रसोई पकाए। ननदोई को कह दे कि बारह दिनों तक ढोल-नगाड़े बजाए और ननद बाई से कह दे कि पूरे बारह दिनों तक मिठाइयाँ बँटवाए।

बधाई

चलो सखी देखां देवकी बाई का ललना
अरे भला ललना झुली रह्या पालना । टेक ।
कायन का दोरा न कायन का पालना, असा कायन का लाग्या फुन्दना।
रेसम का दोरा न चन्दन का पालना, हरा नीला लगाया फुन्दना।
गोकुल जो गाँव की सखियाँ बुलाई, घर-घर आनंद बधावना।
सुरिया जो गाय को गोबर बुलायो, अरे लिपाया ते घर अंगना।

स्रोत-बलिराम यदुवंशी

इस गीत में वासुदेव की घर के सजावट तथा कृष्ण के पालना झूलने का मार्मिक चित्रण है। सुरहिन गाय के गोबर से लिपे-पुते वासुदेव के घर में गोकुल से आई सखियाँ मंगल गीत एवं बधाईयाँ गा रही हैं। रेशम की डोर में बँधे हुए चन्दन के पालने में श्रीकृष्ण झूल रहे हैं। इस दृश्य को देखने के लिए हर कोई लालायित है।

बधाई

म्हारा राकेश वाटऽ ख्याल खिलौना लाओ नऽ साहेब म्हारा रे
म्हारा वाटऽ लाओ नवरंग चूँदड़ी,
साहेब म्हारा लेणऽ लापो रंगभर चूँदड़ी । टेक ।
थारा रोकेश ख्याल खिलौना लायो नी गोरी म्हारी वो
थारा लेणऽ लायो नवरंग चूँदड़ी, गोरी थारा लेणऽ लायो, रंगभर चूँदड़ी।
बेगऽ बेगऽ दाई खऽ बुलाओ नऽ साहेब म्हारा रे
नालो तो खंडालो अपणा महेल मऽ।
बेगऽ बेगऽ सासू बाई खऽ बुलावो नऽ साहेब म्हारा रे
बालो तो नबाड़ो अपना महेल मऽ।

स्रोत-रंभा माय

प्रस्तुत गीत में पति-पत्नि का परस्पर संवाद है। 'हे साहेब! मेरे राकेश के लिए खिलौने तथा मेरे लिए नौरंगी चुनरी लाओ।' 'हे गोरी! मैं तेरे राकेश के लिए खिलौने और तेरे लिए नौरंगी चुनरी ले आया हूँ।' 'हे साहेब! तुम अपने महल में दाई को शीघ्र बुलाओ और नाल (शिशु की नाभि में लगी हुई प्रसव की नलिका) को कटवाओ। 'हे साहेब जी! तुम अपने महल में सासु जी

को अति शीघ्र बुलाओ और मेरे बच्चे को नहलाओ।'

इसी प्रकार जेठानी-हलवो, देराणी-रसवई, नणद-बतासा, पड़ोसन-मेवा, इत्यादि जोड़कर गीत बढ़ा लिया जाता है।

बधाई

जच्चा वो तूनऽ महल मऽ झूलो बांध्यो
म्हारो ससरो झुलावऽ म्हारी सासू झुलावऽ
म्हारो नानो बालो खूब रड़ऽ
सासू वो म्हारो बालो थारा सी नी रयतो
हाऊँ आले झुलाऊँ हाऊँ ओले झुलाऊँ
म्हारो नानो बालो खूब सोवऽ

स्रोत-रंभा माय

जच्चा ने अपने शिशु के लिए अपने महल में ही झूला बांध लिया है। जच्चा कहती है- 'मेरे छोटे पुत्र को मेरे सास-ससुर झुला रहे हैं। लेकिन वह खूब रो रहा है। चुप नहीं हो रहा है। मैं जब उसे स्नेहपूर्वक इधर-उधर झुलाती हूँ, तो वह मीठी नींद सो जाता है।' इसी प्रकार सासू की जगह पर देराणी-जेठानी इत्यादि लगाकर गीत को बढ़ा लिया जाता है।

बधाई

बयणी का अंगना मऽ अगर चंदन,
ओकी टिकसी पऽ हंसो बठ्यो जी।
जाई उड़ रे म्हारा हंस सुलकणा,
एक संदेशो लई जाजो जी।
जाई कयजो रे म्हारा पिताजी खऽ,
तुमरी छोरी नऽ हीरालाल जायो जी।
हीरालाल जायो ओनऽ गेंदालाल जायो,
ओका ससरा को वंश बढ़ायो जी।
एक डेचोलई लावो नऽ म्हारा पिताजी,
तो हीटऽ म्हारा मन की अबरात जी।

स्रोत-रंभा माय

बयणी (बहन) के आँगन में अगरबत्ती और चंदन की सुगंध फैल रही है। हे सुलक्षण हंस! तुम उड़कर जाओ और मेरे पिताजी से कहो कि तुम्हारी पुत्री ने हीरालाल और गेंदालाल जैसे ओजस्वी और सुन्दर शिशु को जन्म देकर अपने ससुर के वंश को आगे बढ़ाया है। उनसे

कहना कि वे मेरे लिए डेचोलई (एक लोक आभूषण) लेकर आएँ ताकि मेरी मनोकामना पूर्ण हो जाए।

जन्म के छठें दिन छठी पूजा की जाती है। ऐसा मानते हैं कि छठी पूजन से शिशु स्वस्थ रहता है, और उनका भाग्योदय होता है। इसी दिन जच्चा की खटिया के नीचे एक कोरा कागज और पेन रखते हैं। इसके पीछे लोक मान्यता है कि छठी देवी बच्चे का भाग्य उसी दिन लिख देती है। इस अवसर पर जन्म से संबंधित लोक गीत गाये जाते हैं। जन्म होने के बारहवें, सत्रहवें, इक्कीसवें दिन अथवा तीसरे महीने नामकरण संस्कार होता है, इसे जलवाय कहते हैं। इस अवसर पर बधाई गीत, झूले के गीत और कहीं-कहीं लोरियाँ भी गाई जाती हैं।

इसी प्रकार पिताजी के स्थान पर काकाजी, मामाजी, वीराजी, फुवाजी इत्यादि तथा 'डेचोलई' के स्थान पर पेलो, साड़ी, चूँदड़, जवणो इत्यादि जोड़कर गीत को आगे बढ़ाया जाता है।

बधाई

एतो, चलो सखी मथुरा ओ जावां मथुरा जो नगर सुहावनो।
राणी देवकी नऽ जायो नंदलाल वासुदेव घर आनंद बधावनो।
एतो, मथुरा कऽ चतुर सुतार, घड़ी लाओ रे बाला साटऽ पालनो।
पालनो घड़जे रे दादुर मोर, कलस जो घड़जे रे देउल फुतलई।
पालनो बांध्यो छे राज दुवार, देवो सुभद्रा बाई हिण्डोलनो।
तू तो सोईजा रे नांदड़िया सा बीर, वंश बढ़ाओ रे वासुदेव को।

स्रोत-निर्मला बाई पटवारे

हे सखी! आओ हम सुहावने मथुरा नगर चलें, जहाँ देवकी ने कृष्ण को जन्म दिया है। वासुदेव के घर आनंद-मंगल एवं बधाई गीत गाए जाएँगे। 'हे मथुरा नगर के कुशल कारीगर! तुम बालक के लिए सुन्दर पालना घड़ो और उसमें नक्काशी द्वारा दादुर और मोर बनाओ। एक कलश भी घड़ो जिसमें देवी-देवताओं के चित्रों का अँकन हो।' राजमहल के द्वार के समीप पालना टांग कर उसमें कृष्ण को सुला दिया है। बहन सुभद्रा उन्हें लोरियाँ गाकर सुला रही हैं।

मुण्डन

माता पाँच सुपारी ध्वलई ध्वजा, म्हारी नरबदा माता वो।
थारा गुरया हो निशान, गुरु बिनऽ बिनती कुण करऽ । टेक ।
माता विनती पर विनती, राधेश्याम भाई करऽ।
म्हारी नरबदा माता वो, उनकी पगड़ी नवाजऽ।

माता विनती पर विनती लाड़ी वऊ करऽ।
म्हारी नरबदा माता वो, उनको चूड़ीलो अण्हात।

स्रोत–सुभद्रा बाई खले

हे नर्मदा माता! तेरी पूजा अर्चना के लिए पाँच सुपारी, श्वेत ध्वज और मोतियों की माला लेकर हम आए हैं। राधेश्याम भाई तेरी कोटि–कोटि विनती कर रहे हैं। उनका सम्मान समाज में दुगुना करना। राधेश्याम भाई की पत्नि तेरी कोटि–कोटि विनती कर रही हैं। उसका सुहाग अमर करना।

दूसरे प्रकार के मुण्डन संस्कार के अन्तर्गत यद्यपि कोई मान–मनौती नहीं होती तथापि कुलदेवी की पूजा के समय जमाल उतारे जाते हैं। इस अवसर पर माता के गीत गाये जाते हैं।

मुण्डन

शीतलामाता शीतलामाता हुई रहई वो,
शीतलामाता केतीक दूर वो सहेलड़ी, चलो सखी देखन चलाँ। टेक।
शीतलामाता का आंगना म पीपलई वो, जहाँ बठी कपिला गाय वो सहेलड़ी।
चारा न चरऽ माता, पाणी न पियऽ वो, दे सवा घड़ा दूध पो सहेलड़ी।
आधा दूध बार म्हारी शीतलामाता न्हावऽ वो,
आधा सऽ खीर बनावऽ वो सहेलड़ी।

स्रोत–सुभद्रा बाई खले

हे सखी! चारों ओर शीतलामाता की जय–जयकार गूँज रही है। चलो, उनके दर्शन को चलें। हे सखी! शीतलामाता के आँगन में एक पीपल का वृक्ष है, जिसके नीचे एक कपिला गाय बैठी है। वह गाय न तो चारा खाती है। और न ही पानी पीती है, फिर भी सवा घड़ा दूध देती है। शीतलामाता उस गाय के आधे दूध से स्नान करती है तथा आधे दूध से खीर बनाती है। अत: हे सखी! आओ हम उन्हें देखने चलें।

जनेऊ

नानड़ कपास म्हारा, मोठाजी भाई नऽ बोयो।
म्हारी मोठी बहु जनवई कातऽ रे बना ॥ टेक ॥
या जनवई म्हारा महेश भाई पेरऽ।
काशी भणवा जाय रे बना।
काशी को रहवासी म्हारो बनड़ो।
पंडित वणी नऽ घर आयो रे बना ।

स्रोत–सुभद्रा बाई खले

मेरे ज्येष्ठ भ्राता ने कपास का एक नन्हा पौधा लगाया है, जिसकी रूई से उनकी पत्नी जनेऊ के लिए सूत कात रही है। इस जनेऊ को मेरे महेश भाई ने धारण किया है तथा वे पूर्ण संस्कार प्राप्त करने हेतु काशी जा रहे हैं। मेरा भाई काशी से पूर्ण पंडित बनकर आज ही घर लौटा है।

विवाह (गणेश पूजन)

तू तो गढ़ नरवर का गणेश, थारा बिन घड़ी नी सरऽ।
थारो सीस बड़ो रे गणेश, सपा तोलो सेंदूर चढ़ऽ।
थारी सोंड बड़ी रे गणेश, पैसो सुपारी चढ़ऽ।
थारी आँख बड़ी रे गणेश, जगमग जोत जलऽ।
थारा कान बड़ा रे गणेश, अली धर पंखा डुलऽ।
थारा दाँत बड़ा रे गणेश सोभागिन चूड़िलो सोहऽ।
थारा हाथ बड़ा रे गणेश, मोदक लड्डू सोहऽ।
थारी थोंद बड़ी रे गणेश, सवा मन मलीदो चढ़ऽ।
थारा पांय बड़ा रे गणेश, रुनऽ झुनऽ चाल चलऽ।
थारी पूँछ बड़ी रे गणेश, रिद्धि सिद्धि चँपर डुलऽ।
तूखऽ बड़ा जी भाई मनापऽ रे गणेश, लाड़ी वऊ सेवा करऽ।

स्रोत-निर्मला बाई पटवारे

हे नरवर गढ़ के गणेश! तेरे बिना हमारी एक घड़ी (क्षण) भी अधूरी है। हमें हमेशा तेरी उपस्थिति की आवश्यकता है। हे गणेश! तेरा मस्तक इतना विशाल है कि उसे तिलकित करने हेतु सवा तोला सिंदूर लगता है। तेरी लम्बी सूँड पर पैसा-सुपारी की भेंट चढ़ती है। तेरी बड़ी-बड़ी चमकीली आँखें देखकर लगता है मानो दिये जल रहे हों। तेरे विशाल कान पँखों के समान हैं। तेरे लम्बे दाँतों से बने कंगन सुहागिनों की कलाईयों की शोभा बढ़ाते हैं। तेरे लम्बे हाथों में मोदक कितने सुहाने लगते हैं। तेरे बड़े पेट की पूर्ति सवा मन मलीदे (कचूमर) से होती है। तेरे बड़े पैरों की रुनझुन चाल कितनी मनमोहक है। तेरी पूँछ के हिलने से लगता है मानो रिद्धि-सिद्धि स्वयं चँवर डुला रही हों। हे गणेश! तेरी विनती और सेवा में बड़े भैया और लाड़ी वऊ (कुलवधू) तत्पर हैं।

विवाह (गणेश पूजन)

कंई थोंद धुंदाल्यो रे गणपत सदा मतवालो।
कंई नगरी मऽ धूम मचाई नऽ रे, म्हारो गणेश धुंदाल्यो।

कंई चलो गणेश आपुन वमना घर चलां।
कंई लगुना लिखाई घर लावो नऽ रे, म्हारो गणेश धुंदाल्यो।

स्रोत–निर्मला बाई पटवारे

हे बड़े पेट वाले, तोंद वाले मतवाले गणपति! तुम्हारे पधारने से सारे नगर में धूम मच गई है। हे गणपति! तुम मेरे साथ ब्राह्मण के घर चलो और मेरे घर होने वाले विवाह कार्य हेतु शुभ समय और लगन लिखवा कर ले आओ। हे मेरे देव! तुम्हारे साथ रहने से मेरे समस्त कार्य सरलता से सम्पन्न हो जाएँगे।

खलमाटी

जीवो, धार नगर सऽ यायो, तो उतर्‌यो संतोष भाई दरबार
हो, जी हो, रंगरो पधावो। टेक ।
बऊ लाड़ी नऽ अंगणो लिपायो, वो तो गज मोती चउक पुराया।
बाई सुभद्रा नऽ आरती संजोई, तो बीरा जी खऽ लेवो बधाय।
बीरा बंधेज रे बड़ पीपल सऽ, भावज पलजे वो कड़वा लीम सऽ।

स्रोत–निर्मला बाई पटवारे

धार नगर से बधावा–दल आया है और संतोष भाई के घर पहुँचकर उन्हें आत्मीय बधाई दे रहा है। कुलवधू ने आँगन को अभी–अभी लीपा है और बड़े–बड़े मोतियों से चौक पूरा है। बहन सुभद्रा ने भाई जी (दूल्हा राजा) के लिए आरती की थाली सँजोई है तथा दूल्हे की आरती उतारकर उसे बधाई दी है।

खलमाटी

अरणऽ का पान मऽ धैया जमायो
आयो अमरदास जवई चाटी पूटी खायो
आयो नारायण जवई चाटी पूटी खायो
आयो संतोष जवई चाटी पूटी खायो
कछु रे खायो कछु मूँछ लगायो
बच्यो ते मैया का पेंदऽ लगायो

स्रोत–निर्मला बाई पटवारे

अरण के पत्ते में जो दही जमाया गया था, उसे अमरदास दामाद, नारायण दामाद और संतोष दामाद ने चाट–चाट कर खाया है। दामादों ने कुछ तो खा लिया और कुछ अपनी मूँछों में लगा लिया तथा शेष उन स्थानों पर लगा दिया, जहाँ उनकी माताएँ विराजमान होने वाली थीं।

निमाड़ के पूर्वी हिस्से में कहीं-कहीं गणेश पूजा के कुछ दिन पूर्व भी मिट्टी लाई जाती है, लेकिन साथ ही खलमाटी भी लाने की प्रथा है। इस प्रकार दो बार मिट्टी लाई जाती है। खलमाटी का उपयोग चूल्हा-कोठी बनाने में किया जाता है। चूल्हा-कोठी की पूजा मंडप में रखकर की जाती है। इन्हीं चूल्हों में से कुछ चूल्हों पर बड़ी-बड़ी रोटियाँ बनाई जाती हैं जिन्हें रोटा कहा जाता है।

खलमाटी

बधावो रे इनी नगरऽ म आयो, बाजत लागऽ सुहावणो।
बधावो रे मोठाजी भाई घर आयो, करो न मोठी बैण आरती।
थारी आरती वो बाई आदर दीसाँ, अति ही आदर दीसाँ बैठणऽ वो।
राय आंगणा बाई का बीराजी उब्या, देओ आशीष म्हारी बैणुली।
बंधजो रे बीरा बड़ऽ रे पीपल सा, होवजो रे कड़वा लीम सा।
राय हो आंगणा बाई की भावज, देओ आशीष म्हारी नणदुली।
जलमजे वो भावज पांचई पुत्र, एक जलमजे दिलहड़ी।
जिमाड़िस वो बाई गुड़ घीव भात, चुनड़ पेराई बाई खऽ मोखला।

स्रोत-सुभद्रा बाई खले

बाजे गाजे के साथ बधावा दल लेकर छोटी बहन भाई के पास पहुँचती है। बहन भाई की आरती उतार कर बधाई दे रही है। घर के बड़े आँगन में खड़ा हुआ भाई कहता है - हे बहन! तेरी आरती और बधाई का मैं सम्मान करता हूँ। तुम बैठो। मुझसे आशीर्वाद लो।

आशीर्वाद पाकर बहन धन्य हो जाती है और दुआ करती है- हे भाई! तुम वट और पीपल वृक्ष के समान सुदृढ़ बनो तथा नीम वृक्ष के समान लाभप्रद और परोपकारी बनो।

बड़े आँगन में ही भाभी भी खड़ी है, जो अपनी प्रिय ननद को आशीष दे रही है। ननद अपनी भाभी को शुभकामनाएँ देती है- हे भावज! तुम पाँच पुत्र और एक सुकन्या की माता बनो। भाभी ने प्रिय ननद को गुड़ और घी युक्त चावल खिलाए तथा चूनर ओढ़ाकर उसका स्वागत किया।

निवतार बधाना

हजार पान, सुपारी देड़ सौ, हाँ जी तुम घर नीवतो।
मोठा जी फाटक बड़े राजा आवनो। टेक।
मोठा जी फाटक घोड़ा असवार, मोठी बाई पालकी।
उनको नानो भाई बड़ो ही तुकार।

दल बादल बरसऽ मेहूलो, भींजऽ उनकी जान ।
मोठाजी भाई पगरण आरम्भियो, उनको नानो भाई देव परणाय।

स्रोत-सुभद्रा बाई खले

हजार पान और डेढ़ सौ सुपारियों के सगुन द्वारा निमंत्रित सुहासिनी नारियाँ बड़े भैया के द्वार पर पहुँच चुकी हैं। बड़े भैया घोड़े पर सवार हैं। बड़ी भाभी पालकी में विराजमान हैं। उनका छोटा पुत्र बड़ा ही नटखट है। काले घने बादलों से हो रही सुहानी वर्षा में उनका तन-मन भीग रहा है। बड़े भैया ने विवाह के मंगलोत्सव का शुभारंभ कर दिया है। आओ, उनके छोटे भाई का विवाह संपन्न करवा दें।

विवाह

मारू जी पयलो बधावो रे म्हारा आइयो
मारू जी भेजो म्हारा ससरा जी दरबार
महाराज, गढ़ नरवर को उधो चूड़ो खुली रह्‌यो।
मारू जी उधो चूड़ो रे पोयच्यो पातलो
मारू जी चूड़ी पर ऊँग्यो सुरिया भान
महाराज, गढ़ नरवर को उधो चूड़ो खुली रह्‌यो।
मारू जी ससरा नऽ लियो पगरन सार
महाराज, गढ़ नरवर को उधो चूड़ो खुली रह्‌यो।

विवाह के शुभ अवसर की प्रथम बधाई मेरे ससुर जी को स्वीकार हो। इस अवसर पर मैंने तथा सासू जी ने श्रृँगार किया है। मेरी पतली कलाई पर नरवरगढ़ का हरा कंगन सुशोभित हो रहा है।

विवाह

जो वी पांच बधावा रे, ए भला आईया रे
जो वी पहिलो पधावो रे, ए भला आईयो रे।
जो वी देखो म्हारा गाय रे भैंस रा ठाट।
म्हारा सोन्ना का खंभ बिलोवनो।
जो वी दूसरो बधावो रे, ए भला आईया।
जो वी देखो म्हार्‌या घोड़ा रे घोड़िला रा ठाट।
म्हार्‌या बान्ध्या तेजी जब चरऽ।
जो वी तीसरो बधावो रे, ए भला आईया।
जो वी देखो म्हारा देवर जेठ री जोट।
देरानी जेठानी रो झुमको।

विवाह की खुशी में मुद्रित महिला आगंतुक मेहमानों से अपने घर की सम्पन्नता का बखान कर रही है। इसके घर अनगिनत पशुधन है तथा स्वर्ण खंभ में दही बिलौती है। घोड़े इत्यादि के विषय में बतलाते हुए अपने देवर-देवरानी के ठाठ-बाट का वर्णन भी कर रही है।

विवाह

सीप भर सिलिकन थाल भर मोती
वो थाल भर मोती
सीता रानी शिव पूजन छण चली वो
वाटऽ मऽ मिलई गया उनका वो स्वामी
उनका वो स्वामी
आज गोरी वो धन कहाँ चल्या वो
हमारा पीयर मऽ साहब
बईण को ब्याव, भतेजी को ब्याव
आज को शिव साहब हम पूजां वो।

माता सीता एक थाल में सीपों से निकले नवीन मोतियों को सजाकर शिव पूजन के लिए प्रस्थान कर रही हैं। मार्ग में स्वामी श्रीराम मिलते हैं। उनके द्वारा प्रायोजन पूछने पर माँ सीता कहती हैं कि उनके मायके में बहन और भतीजी का विवाह है, अत: वह शिव पूजन को जा रही हैं।

विवाह

नंदी जो धड़ की कुसमल फूली जी
गूँथऽ देवो मालेन बाई सेवरो
लाड़ी बाई नवसर्‌यो हार जी
हार की छोलन छालन टिकली घड़ाव जी।

विवाह के शुभ अवसर पर एक स्त्री मालिन से कहती है कि नदी के किनारे जो सुन्दर पुष्प खिले हुए हैं, उन पुष्पों से उसके लिए एक नवसर हार गूँथ दो तथा बची हुई पंखुड़ियों से माथे की बिन्दिया बना दो।

विवाह

पाँच बधावा कि अन हो खरा सुहावणा॥
पाँच बधावा हो आवऽ हम सुन्या
पहिलो बधावो कि अन हो, ससुरा घर भेजो।

कि दूसरो बाप घर।
तीसरो बधावो कि अन हो, जेठ घर भेजो।
कि चौथो बधावो सहोदर ईरा घर,
पाँचवो बधावो कि अन हो कूख सुलेखणी।
जिन्नऽ बतायो हो धन को सोयलो।
अम्बा जऽ बन की अन हो, कोयल बोली,
चलो सुवा चलो सुवा, अम्बा बन आमली।
बरस न रहेसा पिया न हो, मास न रहेसा,
काचा जो पाका बनफल गद्‌गद्‌या।
माची बसन्ता कि अन हो मोठी बेण बोल्या,
चलो पिया चलो पिया, वीरा घर पावणां।
कि बरस न रहेसां कि अन हो, मास न रहेसा,
आठ जो दिन का वीराजी घर पावणां।
कि सोन्ना न लहेऊ कि अन हो रूपो न लहेऊ,
नानी भावज को गहणो चित लागियो।

विवाह के शुभ अवसर पर भेजी जाने वाली उन पाँच बधाईयों का वर्णन इस गीत में है, जो क्रमश: ससुर, पिता, जेठ, भाई और कोख (गर्भ) को दी जाती है। इन पाँच में से सर्वाधिक प्रतिष्ठा उस कोख को दी गई है, जिसके कारण यह शुभ दिन देखने को मिला है। बहन अपने भाई के घर से निमंत्रण पाते ही विवाह घर जाने के लिए ललक उठती है।

विवाह

दोई वो डोंगर बीच फूली वो चमेली
अंबो जो मौर्‌यो बीराजी का आँगणा
सुणजो कि सुणजो रे म्हारा चतुर साहेब जी
बइण परायी करी नऽ लेखजो
ये तो थारा जो सरीसी वो गोरी धन,
लामा दुई चार
माय की जाई बईण म्हारी एकली
आस जो पास गोरी धन बंगला बनाऊँ
बीच बनऊँ बईण की चाँदनी
ये तो अंगला जो बंगला गोरी का बालूड़ा खेलऽ
खिड़की झाँकऽ छोटो भानजो।

मार्ग के दोनों ओर चमेली पुष्पित है तथा भाई के आँगन में आम्र वृक्ष भी पुष्पित है। एक बहन के लिए इतना शुभ संकेत यह समझने के लिए पर्याप्त है कि उसके भाई के यहाँ कोई मंगल कार्य सम्पन्न होने जा रहा है। इधर दुर्भावना से भरी भाभी द्वारा ननद को 'परायी' कहने पर भाई अत्यन्त क्रोधित है। भाई के अनुसार पत्नी दो-चार लाई जा सकती है, किन्तु इकलौती बहन एक ही होती है और वह पराई कभी नहीं हो सकती। संबंधों की कोमल भावनाओं का सटीक चित्रण इस गीत में दिखलाई पड़ता है।

बधावा

सोरठड़ा सी पाँच बधावा, म्हारा आइया।
पहिलो बधावो म्हारा ससराजी दरबार, जाजम पर छाँटनों।
एक छाँटनो तो छाँट गोरी, आँगणो रलई आँगणों।
सामे द्वार म्हारा माट धमके, आँगणा झबके कुल बहु
अंग कू तेरे चूंदड़ सोहे, दुलरी बिन तिलरी।
बाँह बाजूबन्द बोर सोहे, मुखड़ा बेसर मोरड़ी।
चूड़ीला जो आगे कंकणा सोहे, वीर आगे वैणुली।
परिवार मांडणा पुत्र सोहे, कंथ आगे गोरड़ी॥

स्त्रियाँ बधाई गा रही हैं। विवाह घर सुसज्जित है। द्वार पर ससुर जी और सासू जी शोभायमान हैं। आँगन में सोलह श्रृंगार से सजी कुलवधुएँ गृहकार्य में व्यस्त हैं। पुत्र और पति अपने-अपने कार्यों में व्यस्त हैं। ईश्वर करे यह विवाह घर इसी प्रकार हमेशा सुखी-सम्पन्न और प्रसन्न रहे।

विवाह

अगवांड़ऽ देखूँ तो नंदी सी बह्यऽ
पिछवाड़ऽ छीर समुन्दर राज
दरवज्जा देखूँ तो हाथी सा झूलऽ
हरी-हरी दूब सुहानी लागऽ राज
आँगणा मऽ देखूं तो चौक सा पूर्‌या
कुम्भा कलस सिर बेड़ो राज
घरमा मऽ देखूँ तो रत्नऽ को दिवलो
कवलऽ की केलऽ सुहानी लागऽ राज
सुन-सुन म्हारी सासू का जाया
सपना को अरथ बतई दीजो राज
अगवाड़ऽ की नंदी थारी माय कवासे

धीर समुन्दर सासरो राज
दरवज्जा का हाथी थारा गोती कवासे
हरी-हरी दूब सुहासेण राज
अंगणा को चौक थारो पुत्रऽ परणासे
कुम्भ कलस सिर बेड़ो राज
घरमा को दीपक थारो पुत्र कवासे
कवला की केल कुल बऊ राज
भली करी रे म्हारी सासू का जाया
सपना को अरथ बतई दियो राज

दूल्हे की माँ ने स्वप्न देखा है कि घर के आगे सरिता बह रही है। पीछे समुद्र लहरा रहा है। द्वार पर हाथी खड़े हैं। चारों ओर फैली दूब की हरियाली भा रही है। आँगन में चौक (स्वस्तिक) पूरा है। वह स्वयं सिर पर कलश लिए खड़ी है। घर के भीतर रत्न जड़ित दीपक जल रहा है तथा केले का पौधा शोभायमान है। वह अपने पति से स्वप्न का अर्थ पूछती है। पति का उत्तर है- नदी तुम्हारी माँ है। समुद्र ससुराल है। हाथी कुटुम्बी है। हरी दूब सुहागिन नारियाँ हैं। कलश और स्वस्तिक शुभ और मंगल चिह्न हैं। दीपक तुम्हारा पुत्र है तथा केल पुत्र वधू की प्रतीक है। हे प्रिय! यह स्वप्न संकेत है कि शीघ्र ही हमारे घर कोई मांगलिक कार्य सम्पन्न होगा।

हल्दी लेपन

जी हो, हलदुली हलदुली हलदऽ चढ़ऽ
जी हो, हलदुली आई एचान कुंवर जी खऽ हलदऽ चढ़ऽ
जी हो, मोठाजी भाई हलदुली मोलवी
छोटो भाई खरच्या छे दाम, लाड़कड़ा खऽ हलदऽ चढ़ऽ

स्रोत-गिरिजा बाई शर्मा

हरिद्रा लेपन की बेला समीप है। हल्दी बेचने वाला कुँवर जी (दूल्हा राजा) के लिए हल्दी लेकर पहुँच चुका है। बड़े भैया ने हल्दी का मोल-भाव किया है तथा छोटे भैया ने दाम चुकाया है। लाड़ले दूल्हे राजा को हल्दी चढ़ाई जा रही है।

चिकसा

पेलई सी हल्दी अरू उजला सा चोखा, जाजे रे झवरूड़ा निवतो ॥ टेक ॥
एक गाँव नऽ जाण रे राध को, नाव नऽ जाण कुण गवरास्या घर को निवतो।
एक गाँव छे अमुक मोठाजी जंबई, म्हारी मोठीबाई का हाथ दीजे निवतो।

निवता जो सरीसा मीठा जी जबई आया, म्हारो मंडप लागऽ सुहावणो।
एक निवता जो सरीसा मोठी बाई आया, म्हारो मण्डप लागऽ सुहावणो।

धवल चावलों को हल्दी में रंग कर आमन्त्रण देने की परम्परा हमारे ग्रामीण क्षेत्रों में रही है। यहाँ निमंत्रण देने का कार्य भंवरे को सौंपा गया है। भौंरा नहीं जानता कि उसे किस गाँव में जाना है तथा किसे निमंत्रित करना है। विवाह घर के लोग भौंरे को पुत्री और दामाद का पता देकर समझाते हैं। निमंत्रण पाकर पुत्री और दामाद पधार चुके हैं उनके आगमन से मण्डप तथा पूजा-आरती का कार्यक्रम सज गया है।

हल्दी

राधेश्याम भाई को नांदड़ छोरो, सवा घड़ो दूध नावऽ वो
सवा घड़ो नीर नावऽ वो,
आँगणा मऽ कीच वो सई म्हारी किननऽ मचायो वो
गरज्यो नी तड़क्यो सई म्हारी, मेवलो सो बरस्यो वो
आँगणा म कीच सई म्हारी उननऽ मचायो वो

स्रोत-निर्मला बाई पटवारे

राधेश्याम भाई का लाड़ला बेटा सवा घड़े दूध और सवा घड़े पानी से स्नान कर रहा है। आँगन में कीचड़ देखकर सखियाँ आपस में पूछ रही हैं- कीचड़ किसने मचाया है, न तो बादल गरजा और न ही बिजली चमकी, फिर यह पानी कैसे बरसा? एक सखी उत्तर देती है- हे सखी! आँगन में कीचड़ राधेश्याम भाई के लाड़ले बेटे द्वारा स्नान करने से मचा है।

कुकड़ा (प्रातःकाल का मंगल गीत)

सुपड़ भात कुकड़ो सार बोलऽ, देस मऽ रयणो भयो
थारी चोंच रे रूड़ा पदम जड़ियो, पंख रूण झुण धुँधरी
सुता ते सुन्दर किनन जगाया, राम का गुण गाइया
तुम जो जागो रे चारई देव बोलऽ, वचन का रे कुकड़ा
इन मन्ध्याता का ओंकार देव जागिया, इन हरसूद का पारसदेव जागिया
इनी रोलगाँव का भीलटदेव जागिया, इन चारूवा का महादेव जागिया
जाग्या-जाग्या शिवई दिवई थारो, कंस, बोलऽ वचन का रे कुकड़ा
जाग्या-जाग्या वो सांवलरानी थारो, कंस, बोलऽ वचन का रे कुकड़ा
जाग्या-जाग्या वो नांगेन रानी थारो, कंस, बोलऽ वचन का रे कुकड़ा
जाग्या-जाग्या वो गंगा गौरी थारो, कंस, बोलऽ वचन का रे कुकड़ा
तुम तो जागो रे चारई वीर, बोलऽ वचन का रे कुकड़ा

इन चौकड़ी का राधेश्याम भाई जागिया।
जाग्या -जाग्या वो लाड़ी वऊ थारो कंस, बोलऽ वचन का रे कुकड़ा।

स्रोत-निर्मला बाई पटवारे

जिसकी चोंच में पद्‌म जड़ा हैं, पंख जिसके बहुरंगी हैं तथा जिसके पैरों में घुँघरू बँधे हैं, ऐसे मुर्गे ने सुप्रभात कहते हुए सभी को प्रात:काल में जगा दिया है। मुर्गा कहता है- 'रैन चली गई है अत: उठो और राम भजन करो।' उसकी इस पुकार से ओंकार देव, भीलट देव, इत्यादि सभी लोक देवता तथा राधेश्याम भाई व परिवार के अन्य सदस्य जाग गए हैं।

कुकड़ा

तू तो कुण भाई सजन का रे कुकड़ा
तू तो कुण भाई सजन की लंकी मौज
अब झड़ लागी लयर झड़ लागी रे कुकड़ा । टेक।
तुम तो संतोष भाई सजन का रे कुकड़ा।
तुम तो किशोरी याई सजन की लंकी मौज।।
तू तो कहाँ बठगो रे कुकड़ा तू तो कहाँ बठगो लंकी मौज।
तू तो चाँदनी बठगो रे कुकड़ा तू तो रूखड़ऽ बठगो लंकी मौज।

स्रोत-निर्मला बाई पटवारे

प्रस्तुत गीत में मुर्गा, जो कहीं दूर से आया है, उसका परिचय पूछा जा रहा है तथा उसकी खान-पान, इत्यादि की व्यवस्था करने हेतु उसकी रुचियों का पता लगाया जा रहा है।

कुकड़ा

कुकड़ा पयर पयर बीच बोलो, श्री राम जी को कुकड़ो।
कुकड़ा जाई रे मंधाता जाई बोलो, श्री राम जी को कुकड़ो। टेक ।
इन मंधाता का ओंकार देव जागिया, जाग्या जाग्या वो शिवई दिवई थारो कंस।

स्रोत-निर्मला बाई पटवारे

इसी प्रकार अगले अन्तरे हरसूव-पारसदेव-सांवलराणी, चारूवा-महादेव- गंगागौरी, रोलगांव-भीलटदेव-नांगेणराणी, सारनी-संतोषभाई-लाड़ीवऊ इत्यादि जोड़कर बना लिए जाते हैं।

हे श्री राम जी के प्रिय कुकड़े (मुर्गे) ! तुम प्रत्येक पहर बोलते रहो। तुम्हारे बोलने से मंधाता वासी ॐकारेश्वर तथा माता शिवानी जागती हैं। अत: हे कुकड़े! तुम अपनी मधुर आवाज़ में सदा बोलते रहो।

कुकड़ा

कुंकुं का वरण्या माय म्हारी सूरीमल उँग्यो वो
मोती का परण्या अम्बो मौरिया जी। टेक।
मोठाजी भाई का आँगणा, राना गजरा चन्देबा हो
फूल पड़ेवा चन्देबा हो, आप भणारे इन्द्र छाया करजे।
आमुलड़ा री डाल, इन्द्रासन जाई घड़जो।
पालकड़ी मऽ बठी बहुवड़ बालो खेलाव।
वंश बढ़ऽरे मोठाजी भाई रायतनो जी।

स्रोत–गिरिजा बाई शर्मा

कुमकुम के रंग के समान लाल सूर्यदेव उदित हो चुके हैं। आम्र वृक्ष ऐसा बौराया है,मानो उसकी डाल–डाल पर मोती बिछा दिए गए हों। बड़े भाई के आँगन में रतजगा करके मंगल गीत गाये गए हैं।

हे आम्रवृक्ष! तुम प्रात:काल की इस सुहानी बेला में अपने पुष्पों की वर्षा करो तथा दिन भर के लिए घनी छाया देने का वचन दो।

हे बड़े भाई! तुम आम्रवृक्ष की लकड़ी से बड़ा सिंहासन, कुलवधू के लिए पानदानी तथा एक पालकड़ी छोटा झूला बनवाओ। उस झूले पर बैठकर कुलवधू शिशु को दूध पिलाकर तुम्हारी वंश वृद्धि करेगी। इसी प्रकार शाम के समय भी मंगल गीत महिलाओं द्वारा गाए जाते हैं। वे गीत सांजुली कहलाते हैं। सांजुली शब्द सांझ से ही बना है। ये गीत सन्ध्या काल में कर्ण प्रिय लगते हैं। निमाड़ में अलग–अलग तीन धुनों में अनेक सांजुली गीत गाए जाते हैं।

कुकड़ा (प्रातः का मंगल गीत)

हाथऽ मऽ आरती वो मीरा का खोला मऽ पाती
मीरा ते शिव पूजन जाय वो
मीरा वो म्हारी राम भजनवा मऽ राजी। टेक।
हाथई बठन्ता वो मीरा का ससरा नऽ देखी
थारी मीरा रे भैया सन्तऽ मऽ राजी।
झूठी निंद्या रे ससरा जी कोई की नी करनू
अपनी करनी पार उतरनी ।
भैस्या दुवन्ता मीरा का जेठ नऽ देखी
थारी मीरा रे भैया सन्तऽ मऽ राजी।
झूठी निंद्या रे दादाजी कोई की नी करनू
अपनी करनी पार उतरनी ।

हाथ में आरती तथा गोद में बेलपत्र सँजोए मीरा को जब उसके ससुर, जेठ, देवर और ननदोई देखते हैं, तो यह आरोप लगाते हैं कि मीरा को उसके परिवार वालों से अधिक साधु संत प्रिय हैं। मीरा इसका विरोध करते हुए कहती है कि उसकी निन्दा न करें। ईश्वर सबको देख रहा है।

कुकड़ा

म्हारा जो आँगणा राजा पीपलई, जे की ते तो सरवरी डालन होय।
आहो रङ्ग राती ल कुकड़ा । टेक।
घोड़ो जो राजा लीजो हंसल्यो, पातलिया मोठाजी भाई असवार न हो।
चोली जो लीजो राजा पान की, समदण सुघड़ लीजो तुम्हरी साथ न हो।
ऊँची मयड़ी राजा गहगहे, हाँ जो हाँ पवड्या हो बाई जी रा बीर
राजा जाई लाड़ी बहु जगावती, तुम जागो हो मोठीबाई रा बीर, बिहाणो।
राजा जागी न पाग सँवारता, संवार्या हो बाघा केरा बन्द, बिहाणो।
राजा तुम बिन सूर्य न ऊँगसे, नहिं छूटे हो गौवा केरो बन्द, बिहार्णो।
राजा झारी दाँतून करो तुम्हरा, मुखड़ा भोगी गहरो तमोल, बिहाणो।
राणी बहु जागी न चीर संवारती, उठ देती कंकण पर खील, बिहाणो।

राजा जी स्वप्न देख रहे हैं। प्रात: कालीन मधुर स्वप्न में वे अनेक शाखाओं वाले पीपल वृक्ष पर बैठे बहुरंगी मुर्गे को यह शुभ संदेश देते हुए देख-सुन रहे हैं कि तुम हाथ में पान की चोली लेकर हंस के समान सफेद घोड़े पर सवार हो जाओ तथा साथ में अपनी सुन्दर पत्नी को भी ले लो।

जहाँ एक ओर राजा स्वप्न देखने में तल्लीन हैं, वहीं उन्हें बहू जगा रही है। हे राजा! जागो। तुम्हारे जागे बिना सूर्योदय नहीं होगा। उठो, दातून करो, स्नान करो और शुभ विवाह की तैयारी में जुट जाओ।

कुकड़ा

गोरी का आँगण राजा पीपलई, जेका ते हरा पानन वो
अवो रंगराव जी को कुकड़ो
हँसलो सो घोड़ो रे राजा जी नऽ कर्‌यो
पातलड़ा म्हारा राधेश्याम भाई असवारन वो
पान की चोली रे राजा हाथ धरी
कमला यायेन लीजो अगि वानन वो

चौथी पंक्ति में सभी भाइयों तथा अन्तिम पंक्ति में समधिनों के नाम क्रमश: बदलते हुए

गीत को आगे बढ़ाते हैं।

प्रात:कालीन स्वप्न में देखा गया दृश्य कितना मनोहारी है। आँगन में हरे-हरे पत्तों वाला पीपल वृक्ष लगा है, जिसके तले सुन्दर मुर्गा बाँग दे रहा है। धवल घोड़े पर राधेश्याम भाई सवार हैं, जिनके हाथ में पानी की डलिया है तथा उसकी अगुवाई कमला समधिन कर रही हैं।

कुकड़ा

चार देव नऽ फूलड़ा की साध, बेऊ नरियाला रे॥ टेक॥
लाल फूलड़ो गणपती देव खऽ सोहे, धवलो फूलड़ो महादेव खऽ सोहे॥
गुलाब को फूल नारायण खऽ सोहे, पेला फूल ईश्वरनाथ खऽ सोहे।
चार भाई न खऽ घोड़िला की साध, बेऊ नरियाला रे।
लाल घोड़िलो मोठाजी भाई खऽ सोहे, धवलो घोड़ो छोटा जी भाई खऽ सोहे॥
सेवरो घोड़िलो मजला भाई खऽ सोहे, अवल बछेरी नाना भाई खऽ सोहे।
चार बहु न खऽ चूड़िला की साध, बेऊ नरियाला रे।
पन्ना को जोड़ो मोठी बहू खऽ सोहे, रेशमी बिल्लोर छोटी खऽ सोहे॥
जयपुरी चूड़ी मजली बहू खऽ सोहे, लाख की चूड़ी नानी बहु खऽ सोहे।

गणपति, महादेव, नारायण तथा विधाता श्री ब्रह्मा जी को क्रमश: लाल, सफेद, गुलाबी और पीले रंग के सुगंधित पुष्पों की चाह है। घर के चारों भाईयों को क्रमश: लाल, सफेद, मिश्र वर्णीय तथा नन्हा घोड़ा चाहिये। इसी प्रकार घर की चारों बहुओं के मन में कंगन की चाहत है। उन्हें क्रमश: पन्ना के स्वर्ण जड़ित, बिल्लौरी, जयपुरी तथा लाख से बने कंगन चाहिए।

सांजुली

सांज भी हुई नऽ ढोर भी आया कंई दिवलो बाती संजोवऽ
ओ म्हारी भागलवंती वो सगुनी सांजुली आई। टेक।
हऊँ तुमनऽ पूछूँ म्हारी वऊ वो लाड़ी वऊ
तुमरो केसरियो साहेब कहाँ।
दिन दरियावऽ केसरियो अम्बा की डाल
कंई रात अंधेरी महल मऽ चौपट खेलऽ।

स्रोत-निर्मला बाई पटवारे

सांझ भी हो चुकी है और मवेशी भी चरकर घर लौट चुके हैं। आओ, दिया-बाती की तैयारी शुरू करें, क्योंकि यह मेरी सौभाग्यदात्री संध्या पधार चुकी है। सास कहती है-हे कुलवधू! तुम्हारा प्रिय पति कहाँ है? बहू कहती है- मेरे पति दिन तो आम्र वृक्ष की डाल पर व्यतीत करते हैं तथा रात्रि अपने महल में चौपड़ खेल कर व्यतीत करते हैं।

सांजुली

सांजलड़ी तू बड़ी वो संजोवऽ तो, गोआ का बछुवा कबऽ मिलऽ।
बड़ा जी भाई को बड़ो परवारऽ तो, गुलाब बाई को मायरो।
बाल मकुन्दभाई को बड़ो परवारऽतो, राजा बाई को मायरो।
सांजलड़ी खऽ बाँधो रे घूँघट मालऽ धमकती आवऽ सांजुली।
सांजलड़ी खऽ पावो रे काचो दूध, हमरती आवऽ सांजुली।

स्रोत–निर्मला बाई पटवारे

हे सन्ध्या! तुम कितनी सुहानी और सजीली हो। तुम्हारे आते ही हमारी गाय और बछड़े घर लौट आते हैं। बड़े भैया का बड़ा परिवार, जो गुलाब बहन का मायका है, तुम्हारा स्वागत करता है। बालमकुन्द भाई का बड़ा परिवार जो कि राजा बहन का मायका है, तुम्हारा स्वागत करता है। आओ, उछलती–कूदती हुई इस सन्ध्या को घूंघर माल पहनाएँ। आओ, भूख से चिल्लाती हुई इस संध्या को कच्चा दूध पिलाएँ।

सांजुली

हऊँ तो नानड़ की वाटुली, जेनऽ भरियो न दे चकवा भरी तेल
कि सोन्ना की डान्डी दियो बलऽ ॥ टेक ॥
दिवला घर रे जोऊँ इनी रान्धनी, उपजन रे पांचई पकवान।
दिवला घर रे जोऊँ इनी मजघर, जीमन रे अच्छा देवर जेठ।
दिवला घर रे इनी डेल म, डेल भरिया ने रे अच्छा कुंभ कलश।
दिवला घर रे जोऊँ इनी मंडप म, मंडप बैठ्या न रे अच्छा साजन लोग।
दिवला घर रे जोऊँ इनी आरती म, अरती घरऽ सदा सुहासेण जीजीबाई।
दिवला घर रे जोऊँ इनी पटसाल मऽ, मटसाल खेलऽ नाना ताना बाल।

स्रोत–गिरिजा बाई पटवारे

मैं छोटे और सफेद कपास की बाती हूँ। मुझे उस दिए में रखकर प्रज्ज्वलित करना, जिसमें लबालब तेल भरा हो तथा जिसके बीच में स्वर्ण–डांड लगा हो।

प्रज्ज्वलित करने के पश्चात् मुझे रसोई घर में रखना, जहाँ पाँच प्रकार के पकवान बन रहे हैं। मध्यगृह में रखना, जहाँ देवर–जेठ बैठे हैं। डेल पर रखना, जहाँ घड़ा और कलश रखे हैं। मंडप में रखना, जहाँ मेहमान बैठे हैं। उस आरती में रखना, जो सौभाग्यशाली बुआजी के हाथों में है तथा पटसाल में रखना, जहाँ बाल–बच्चे खेल रहे हैं।

विवाह (साँजुली)

सेज बिछाई आमुलड़ा री डाल, जामुन दियो बलऽ।
हाँ जी, पौइंया मोठाजी भाई उमरावऽ ढालो न लाड़ी बऊ रींजनो।
भाव ढुलन्ता हँसी पूछऽ बात, दूर की कमलाबाई खऽ लावसां॥
गईली न वो गोरी मूरख गँवार, थारी वो मोठीबाई की नातणऽ।
आटो पीठो डाटो देवाय, चापड़ मोकलो मेलसां॥
गुड़ घींव सान्दो देबाय कीओ, मोकळो मेलसां।
राघ सां हो पिया दिन दोई चार, चून्दड़ पेराई बाई खऽ मोखला॥

आम्र वृक्ष की छाया तले सेज बिछी हुई है, जिस पर शयन करते हुए बड़े भ्राता तथा भाभी चर्चा कर रहे हैं। दूर रहने वाले सभी संबंधियों को आमंत्रित किया जाएगा तथा उनकी यथा संभव खातिरदारी की जाएगी।

साँजुली

नागर वन्ती झोपड़ी माया को अन्त न पाय।
सरी साँझ दुहावती जिन पूजिया भगवान ॥ टेक॥
घवल्या ते धोरी म्हारया हल हाँकऽ काकड़ूया रो खेत।
साजिड़ा हल हाँकसे पुत्र गहुड़ा गावसे जिन भगवान।
आँगणा वृन्दावन तुलसी, लक्ष्मी करऽ रहेवास।
भाग कहे जो धन तणां, जिन पूजिया भगवान॥
राम रसोई म्हारा नीपजे, रान्दा से बहुवड़ चार।
दासी न चरबा ढालसे जिन ॥
भाई भतीजा म्हारा अति घणा, जीमऽ ते वीरा चार।
दासी न चरबा ढालसे जिन॥
भाई भतीजा म्हारा अति घणा, जीमऽ ते वीरा चार।
झाझो सो घींव परोसती ॥
बर राजा आया तोरणा, दिहड़ी ते मंडप माँहि।
सासुजी वर पड़ोछ से जिन।
भाग कहे जो धन घणा, जिन पूजिया भगवान॥
अवलई ते सबलई म्हारा आरती, पूजूं ते पून्नम चाँद।
आँगणा वृन्दावन तुलसी, लक्ष्मी करऽ रहेवास।
भाग कहे जो धन घणा, जिन पूजिया भगवान।

सुहागिन नारियाँ आशीर्वाद देते हुए यह गीत गा रही हैं। विवाह के घर में अन्तहीन सुख,

सम्पन्नता हो। घर पशु धन से भरपूर हो। घर के पुरुष कृषि कार्य करें तथा अच्छी उपज प्राप्त करें। महिलाएँ घर की शोभा बनें तथा सुस्वादु रसोई बनाकर परोसें। आँगन के मध्य में तुलसी और लक्ष्मीजी का वास हो। घर पर प्रभु कृपा सदा बनी रहे।

बाना

इन बाना मऽ केसर उड़ी रहई।
कस्तूरी को अंतऽ न पार कि बानो हो रालई गावसां।
इन बान मऽ संतोष भाई आवसे
सुंदरदास भाई को गज भीम, कि बानो हो रालई गावसां।
रामकुमार भाई को गज भीम, कि बानो हो रालई गावसां।

स्रोत-निर्मला बाई पटवारे

'बाना' की शोभायात्रा का वर्णन है। इस बाने में केसर उड़ रही है और कस्तूरी तो इतनी अधिक मात्रा में उड़ रही है कि उसका कोई अन्त ही नहीं है। इस बाने में संतोष भाई आने वाले हैं तथा सुंदरदास भाई और रामकुमार भाई भीम के समान हाथियों पर सवार होकर पधारने वाले हैं। हम झूम कर बाना गीत गाएँगे।

बाना

यई रे हाथई पर कौन बसत है
असा 'बालमकुन्द भाई' सहस्त्र गुणी
खूब घड़ी लाओ वजनी घुँघरी
वजनी घुँघरी वऊ ली चूँदड़ी
खूब घड़ी लाओ वजनी घुँघरी
रंगरेज को डोठो अजब रंगत है
शाल दुशाल बरानपुरी
खूब घड़ी लाओ वजनई घुँघरी
सोनी को डोठो अजब घड़त है
पायल तोड़ा गलऽ दुलरी
खूब घड़ी लाओ वजनई घुँघरी
सोनी को डोठो अजब घड़त है
पायल तोड़ा गलऽ दुलरी
खूब घड़ी लाओ वजनई घुँघरी
एतरो जो पेरी धन बाहेर निकली

देखो पिया गोरी कयसी बणी
खूब घड़ी लाओ वजनी घुँघरी

वधू की माँ अपने भाई द्वारा लाए गए आभूषणों तथा वस्त्रों को दिखाते हुए अपने पति देव से कह रही है कि उस तरफ जो बैठे हैं, वे मेरे बालमुकुन्द भैया है, जो बहुत बुद्धिमान और गुणवान हैं। वे ही मेरे लिए ये दुर्लभ और महंगे वस्त्राभूषण लाए हैं।

बाना

इनी मजलस बठ्या दस जना
जहाँ बठ्या वो 'संतोष भाई'
उमरावऽ बियालो हो रालई गावसां
जहाँ बठ्या 'रामकुमार भाई'
उमरावऽ बियालो हो रालई गावसां
उनका हाथऽ हीरा जड़यो मूँदड़ो
उनका माथऽ हो कुसमाली
पाग बियालो हो रालई गावसां
उनका हाथऽ हाथी दांत चूड़ीलो
उनका माथऽ हो झलकती मांग
बियालो हो रालई गावसां।

जन समूह से महफिल सजी है। महफिल में संतोष और रामकुमार भाई का नाम ले-लेकर महिलाएँ गीत गा रही हैं। भाईयों के हाथों में हीरा जड़ित अँगूठी है, सिर पर पुष्प निर्मित्त आकर्षक पगड़ी है, उनकी पत्नियों के हाथों में हाथी दाँत के कंगन सुशोभित हैं। उनकी मांगे कुमकुम से भरी हुई हैं।

बाना

सखी म्हारी सगला शहर मऽ बानो फिरि आयो वो
सखी म्हारी कोई न लियो हो बुलाय
सखी म्हारी लियो मोठाजी भाई बुलाय
शहर मऽ बानो फिरि आयो वो।

स्रोत-गिरिजा बाई शर्मा

एक सखी कहती है- हे मेरी प्रिय सखी! पूरे शहर में यह बाना फिर चुका है, लेकिन किसी ने भी अपने घर आमंत्रित नहीं किया। दूसरी सखी कहती है-नहीं सखी, बड़े भैया ने बुलाया है। पूरे शहर में फिरने के बाद हम वहीं जाएँगे।

बाना

मंडवा बड़े-बड़े मांडवा
म्हारा मंडवा बरस गयो मेव
सोभगिल बादल उनियो। टेक।
मंडवा के ठाकुर ओंकार देव
म्हारी बाई वो शिवई दिवई जेको कंस।
मंडवा के ठाकुर पारस देव
म्हारी बाई वो सांवलरानी जेको कं॥

स्रोत-निर्मला बाई पटवारे

इसी प्रकार महादेव-गंगागौरी, भीलट देव-नांगेणराणी, संतोष भाई-लाड़ी वऊ इत्यादि जोड़कर गीत को आगे बढ़ा लिया जाता है।

आज मेरे इस मंडप की शोभा ही निराली है। सौभाग्यपूर्ण बादल घिरकर आये और उस पर बरस गये हैं। इस मंडप की विशेष शोभा ओंकार देव, पारस देव, इत्यादि देव हैं जिनके उपस्थित होने से मंडप ज्योर्तिमय हो गया है।

बाना

तुम जावो ओंकार तुम जावो पारस देव डोंगर
तुम जावो भीलट देव डोंगर, तुम जावो महादेव डोंगर
म्हां सऽ लावो हरा नीला बांस, मोतन छावो माण्डवो। टेक।
म्हारा मांडवऽ मरदूली छाई रहईज जेकी डाल परेवल जाय॥
म्हारा मांडवऽ संतोष भाई निवतिया जेकी संग लाड़ी वऊ नार।

स्रोत-निर्मला बाई पटवारे

गीत में चारों देवताओं के आश्रम से लाए गए ताजा बाँस एवं मरदुली आदि की सहायता से निर्मित मंडप की महिमा का वर्णन है। इस मंडप में संतोष भाई सपत्नीक निमंत्रित किये गये हैं।

बाना

जी वो पयलो जो खम लगिन भर्‌यो
जी वो दूसरो जो खम हालद भर्‌यो
जी वो तीसरो जो खम गुलाल भर्‌यो
जी वो चौथो जो खम सुपारी भर्‌यो
जी वो पांचवो जो खम खारिक भर्‌यो

जी वो छटवो जो खम लऊंग भर्‌यो
जी वो सातवो जो खम डोडा भर्‌यो
जी वो आठवो जो खम बदाम भर्‌यो
जी वो नवमो जो खम नायेल भर्‌यो
जी वो दसमो जो खम अबीर भर्‌यो
जी वो ग्यारमो जो खम धंई भर्‌यो
जी वो बारमो जो खम सेन्दूर भर्‌यो
जी वो तेरमो जो खम कुक भर्‌यो
जी वो रोको म्हारा राय आँगन माय, यो जग दसरथ आरंभ्यो
जी वो परणो सिया रे श्री भगवान यो जग दसरथ आरंभ्यो

स्रोत-निर्मला बाई पटवारे

मंडप के तेरहों खंभों को विभिन्न शुभ व मंगलकारी वस्तुओं एवं मेवों से निर्मित बतलाया गया है। इस मंडप में राजा दशरथ के बारात लेकर पहुँचने और श्रीराम द्वारा विवाह करने का भाव निहित है।

उपर्युक्त मंडपगीत वर-वधू, दोनों के घर समान रूप से गाये जाते हैं। इसी दिन निमाड़ में पुरुषों को आमंत्रित करने की बड़ी ही निराली परंपरा रही है। मंडप के एक कोने में सुहासिनी स्त्रियाँ गेहूँ के चार-पाँच दानों को पत्थर से कूट कर चूर्ण को एक ताजी रोटी पर पैसे के साथ रखती हैं तथा पूर्वजों को अर्पित करते हुए गीत गाती हैं।

विवाह

सखी वो आज को मंडप म्हारो गए-गए वो
सखी वो आयो म्हारो लकपति हीरो
मोत्या जड़ लायो चूँदड़ी वो
सखी वो पेरूँ तो खिरऽ वा का मोतीड़ा वो
सखी वो बाँधूँ तो तरसऽ म्हारो जीव
मोत्या जड़ लायो चूँदड़ी वो

कन्या अपने विवाह के मण्डप की सजावट पर मुग्ध है। वह अपनी सहेली से कहती है कि मेरे पिता, काका, मामा आदि ने मोतियों से जड़ी हुई साड़ी मेरे लिये लाये हैं। जिसे यदि पहनती हूँ तो उसके मोती झड़ने का अंदेशा है और यदि उसे बिना पहने ही रख देती हूँ, तो मेरा जी भी तरसता है।

मण्डप

चारई देव की रानिया वो यऊँ कहे
अब मेरे पिया मण्डप बताओ
मण्डप के हम सादला
गोरी मण्डप को काई देखनो
'संतोष भाई' की रनिया वो यऊँ कहे
'सुंदरदास भाई' की रनिया वो यऊँ कहे
अब मेरे पिया मण्डप बताओ
मण्डप के हम सादला
गोरी मंडप को काई देखनो
ओमऽ लाग्या छे चौंसठ खम
चौरासी दिया बलऽ
दिवळा बलजे रे महा जुमरात
जबऽ रे तिल्ली हूम होय

चारों देवों की रानियाँ एवं संतोष भाई की पत्नी मण्डप देखने की इच्छुक है। उन्हें मण्डप में न ले जाकर चारों देव तथा भाई वहीं पर मण्डप का वर्णन करते हैं। मण्डप में चौंसठ खम्भें हैं, जिस पर चौरासी दीपक प्रकाशित हैं। वे तब तक प्रकाशित रहेंगे, जब तक विवाह का सारा कार्य पूर्ण न हो जाय।

मण्डप

सरग भवन की वो गिरधरनी
एक सन्देसो लई जाव
सरग का स्थाना-बूढ़ा नऽ खऽ जाई कयजो
तुम घर नातणी को याव
जो पत सरड वो ओ पत सारजो
हमारो तो आवणो नई होय
जड़ी दिया वज्जर किवाड़
अग्गल जड़ी लुआ की जी।

स्रोत-निर्मला बाई पटवारे

वर के लिए नाती तथा वधू के लिए नातणी शब्द गीत में जोड़ दिया जाता है। नाती और नातणी शब्द निमाड़ में पोता और पोती के अर्थ में प्रचलित है। दुल्हन के परिवार जन आकाश में ऊँचा उड़ने वाली गिधनी (मादा गिद्ध) के माध्यम से अपने पितरों को यह संदेश भिजवाते हैं-

हे स्वर्ग भगन तक उड़ने वाली गिधनी! तुम हमारा एक संदेश ले जाओ। स्वर्ग में हमारे पूर्वजों से कहना कि तुम्हारे घर तुम्हारी पोती का शुभ विवाह हो रहा है। अत: तुम भी उस विवाह में उपस्थित होओ।

पूर्वज उत्तर देते हैं– हमारे पुत्रों से कहना कि जिस प्रकार हो सके, उस प्रकार विवाह कार्य संपन्न कर लें। हमारा तो आना नहीं होगा क्योंकि स्वर्ग के बड़े-बड़े द्वार बन्द कर दिए गए हैं और उनमें लोहे की मजबूत कड़ियाँ लगा दी गई हैं। गीत को सुनकर सभी की आँखें नम हो उठती हैं। पूर्वजों को आमंत्रित करने की इस प्रक्रिया को रूखेड़ी पूजन भी कहा जाता है।

मण्डप

म्हारा हरिया मंडप माँहि, झड़ाको लाग्यो रे दोई नैना सऽ। टेक।
म्हारो ससरो गाँव का पटवारी हो, म्हारो बाप दिल्ली को राज।
म्हारी सासु सरस्वती नदी बहे हो, म्हारी माँय गंगा को नीर।
म्हारो देवर इच्छू को आँकड़ो हो, म्हारो भाई गुलाब को फूल।
म्हारी नणंद सरावण विजलई हो, म्हारी बैठा सरावण तीज।

स्रोत–गिरिजा बाई शर्मा

गीत में सुमधुर विनोद के दर्शन होते हैं। आज मेरे इस हरियाले मण्डप में किसी से मेरी आँखें लड़ गई हैं और उसके दो नयनों ने मुझे एक झटका सा दिया है। मेरा ससुर गाँव का मामूली पटवारी है जबकि मेरा पिता दिल्ली का राजा है। मेरी सासु सरस्वती नदी का साधारण पानी हैं जबकि मेरी माँ पवित्र गंगा का जल हैं। मेरा देवर बिच्छू का डंक है जबकि मेरा भाई गुलाब का फूल है। मेरी ननद सावन मास में चमकने वाली भयावह विद्युत रेखा है, तो मेरी बहन सावन मास में आने वाली पावन तीज है।

मण्डप

समदण रंग महल मऽ आवो, सांवलिया री सेज बिछी ॥ टेक॥
सपना नहीं देखी ऐसी सेज, नरम बिछोना बिछी
मन भावन पलंग बिछाय समदण आणो ना उरी।
ओढ़ो ओढ़ो सुंदर दखिनारो चीर, मोयिन भांग भर्‌यो
खावो मेवा मिसरी पान, समदण आओ नाउरी।
खेलो चौपट पासा सार, सांवलिया सऽ रंग रालई
थारो बढ़से बड़ो परिवार, पूतन बेलऽ फलई।

स्रोत–गिरिजा बाई शर्मा

हे समधन! तुम मेरे रंगमहल में आओ, जहाँ शयनकक्ष में साँवरिया की सेज बिछी है। मन को लुभा लेने वाले पलंग पर बिछे नरम बिछौने (बिस्तर) सेज की सुन्दरता बढ़ा रहे हैं।

तुमने ऐसी मनभावन सेज सपने में भी नहीं देखी, अत: हे समधन! तुम शीघ्र आओ।

हे समधन! तुम दक्षिण भारतीय सुन्दर वस्त्र धारण करो तथा मोतियों से अपनी माँग भरो। मिसरी खाने के पश्चात् पान से अपना मुँह रचाओ। हे समधन! तुम महल में चौपट खेलो और साँवरे के संग प्रेम करो। तुम्हारे परिवार की वृद्धि होगी। तुम्हारी पुत्र-बेल फलित होगी।

मामेरा

अरे आजाजी सबसऽ पयलऽ तुमखऽ निवतीया
रे दादाजी सबसऽ पयलऽ तुमखऽ निवतीया
रे दादाजी कहाँ रे लगाई बड़ी देर
झुकी जाजे रे फूल गुलाब का। टेक।
वो बईण थारी आजी नऽ मांडलो रूसनो
वो बईण थारी माता नऽ माण्ड्यो रूसनो
वो बईण उनखऽ मनावत लागी देर।
रे आजाजी म्हारी आजी खऽ बिंदी घड़ई देता
रे दादाजी म्हारी माता खऽ दुस्सी घड़ई देता,
रे आजाजी हरकत आवऽ म्हारा देस।

स्रोत - निर्मला बाई पटवारे

बेटी द्वारा अपने दादाजी और आजाजी से विवाह में देरी से पहुँचने का कारण पूछा जा रहा है। माताओं के रूठने का कारण सुनकर बेटी कहती है- उनके लिए आभूषण बनवा देते, हर्षित होकर मेरी माताएँ मेरे गाँव चली आतीं।

मामेरा

आज को सांवरियो बीरो म्हारो, मायरो लई आयो जी
मायरो लई आयो बीरो म्हारो, ममीरो लई आयो जी
सेला लायो टोपी लायो, बन्नात का जोड़ जी
बयणी का कारण बीरो म्हारो, बजादी बणी आयो जी

स्रोत - निर्मला बाई पटवारे

इसी प्रकार लहंगा व लुगड़ा-रंगरेज, गुड़ व शक्कर-बनिया भाई, भतीजा- कुटमाल्यो इत्यादि जोड़कर गीत को आगे बढ़ा लिया जाता है। ममीरा के आगमन पर बहिन गा रही है। मेरा सर्वप्रिय भाई ममीरा लेकर आ गया है। वह अपने साथ अनेक वस्त्र लाया है अर्थात् बजाजी बनकर आया है। वह अपने साथ पंगत हेतु खाद्य सामग्री भी लाया है अर्थात् बनिया बनकर आया है।

मामेरा

वीरा सांवरिया इनी मवसर नही आयो रे, फिर कब आवसे। टेक।
हऊँ तो जानूँ कि पीरो मायरो लावसे, अरे तू खाली हाथ चले आयो रे।
हऊँ तो थारा भरोसा सांवरिया अरे तूनऽ पंचम पद खोयो रे।
उमग-उमग हियो म्हारो हुमकऽ, म्हारी छाती भर भर आवऽ रे।
आवनो होय सो आवो सांवरिया, तात मात तुम भाई रे।

स्रोत – निर्मला बाई पटवारे

हे प्रिय भाई! विवाह का यह शुभ अवसर निकला जा रहा है। तुम अभी नहीं आओगे, तो फिर कब आओगे? मैंने तो समझा था कि तुम ममीरा लेकर आओगे, लेकिन तुम अकेले ही चले आए। हे भाई! भानजी की शादी में मामा पक्ष का स्थान प्रमुख होता है। आज तुमने उस स्थान को प्राप्त करने का अधिकार खो दिया है। मेरा मन रो रहा है। मेरी छाती भर आयी है। हे प्रिय भाई! तुम माता-पिता और सभी सगे संबंधी यदि आ सकते हो तो अवश्य आओ क्योंकि यह अवसर बीता जा रहा है।

मामेरा

झिलमिल हो राजा झिलमिल बरसगो मेव,
तो छोटी मोटी बूंद सुहावणी
जी तुम, ओका पिऊजी तुम दुल्लौ केरा बाप,
तो गोरी धन दुलियन की माऊली
जी, दुई मिलई हो राजा दुई मिलई बठ्या मंडप माय,
तो मंडप लागऽ सुहावणो

स्रोत – निर्मला बाई पटवारे

विवाह के इस शुभ और उल्लासमय वातावरण को प्रकृति अपने योगदान से द्विगुणित कर देना चाहती है। मंदगति से बरसते बादल और नन्हीं-नन्हीं बूँदों से वातावरण सुहाना हो गया है। मंडप में दूल्हा के पिताजी तथा गौरवर्णी माताजी के बिराजने से मंडप भी कितना सुहाना लग रहा है।

मामेरा

हम भी चलंगा रे थारा रथ पऽ बठंगा
नानी बाई का मायरा मऽ हम भी चलंगा
म्हारा भोला भरतार थारी संग मऽ रवंगा
नानी बाई का मायरा मऽ हम भी चलंगा। टेक।

नानी बाई की सासू बड़ी अड़ेली
ओका पगा जाई नऽ हम भी पड़ंगा।
नानी बाई की जेठानी बड़ी आड़ेली
रंई उठई नऽ मइड़ो हम भी करंगा।
नानी बाई की देराणी बड़ी छे अकड़ी
ओका वाटऽ की रसवई हम भी करंगा।
नानी बाई की नणंद बड़ी छे अकड़ी
बेड़ो उठई नऽ पाणी हम भी भरंगा।

स्रोत – रंभा माय

पति और पत्नी के संवाद से गीत आगे बढ़ता है। पत्नी द्वारा मामेरा में साथ ले चलने का हठ अपने पति से जब किया जाता है, तो पति विभिन्न प्रकार के बहाने बनाकर उसे घर में ही रुकने को कहता है, लेकिन पत्नी भी पति की हर बात का चतुराई के साथ उत्तर देती है तथा साथ चलने की स्वीकृति प्राप्त कर लेती है।

मामेरा

बयणी नऽ पगरण आरंभ्यो आरम्भियो रे बीरा,
चूँदड़ म्हारी बैण बिराज बेगो आवऽ।
अब पहिरावो रे म्हारा गुणशायर बीरा।
चूँदड़ म्हारी...... ॥ टेक ॥
संचत थोड़ी म्हार्‌या इन घणी, हो बइणा कसी पत आऊ थारा द्वार।
हमारो तो आबनो नी होय,
अब पहिरावो धो माड़ी का जाया,
चूँदड़ म्हारी .... ।
डिब्बारो गहणो गयणा मेल जो रे बीरा,
चूँदड़ म्हारी बैण बिराजे .... ।
सुहाण से नन्दिया गयणा मेलजो रे बीरा,
चूँदड़ म्हारी बैण बिराजे .... ।
बंडारा गहूड़ा गवणा मेलजो रे बीरा,
चूँदड़ म्हारी बैण बिराजे .... ।
पाँच टका का ली नऽ घोंगलो रे बीरा,
हल्दी म पेलो करि ल्याव रे। .... ।
थारा जो घर ही को काँचलो रे बीरा,
म्हारा जो घर को ही चीर।

इतरो गरभ क्यों बोलती बो बहिणी,
हम छे पाँचई भाई की जोट।
पाँच रूपैया को लीसां धोंगलो,
हल्दी म पेलो करि लांबा।
चूँदड़ म्हारी .... ।

बहन द्वारा मामेरा लेकर आ रहे अपने पाँचों भाइयों से हठपूर्वक कुछ अपेक्षाएँ की जा रही हैं। बहन गहने, हल्दी में रंगी साड़ी आदि वस्तुओं की मांग करती है। भाई उन वस्तुओं को लाने का वचन दे रहे हैं।

मामेरा

बीरा जी की वाट वो बईन केसर घोलई
रलकत आवऽ वीराजी को गाडूलो
ये तो, आजाजी भी आया नऽ, म्हारी आजी भी आई
म्हारी माता को जायो वीराजी म्हारो घर रह्यो
पिताजी आया न म्हारी माता भी आई
माता का जाया वीराजी म्हारा घर रह्या

बहन अपने भाई की बाट जोह रही है, किन्तु वह नहीं आया। बहन ने मार्ग में केसर घोलकर डाली है ताकि उसके भाई की गाड़ी फिसलती हुई आ जाये। दादा-दादी, माता-पिता सब आये हैं। किन्तु उसका सगा भाई घर रुका है।

मामेरा

काकड़ बाजऽ जंगी ढोल
महलो मऽ चौपट खेलसां जी महाराज
बाई का आजाजी आया,
चूँदड़ लाया रेशमी जी महाराज।
बाई का भैयाजी आया,
चूँदड़ लाया रेशमी जी महाराज।
नापूँ तो हाथ पचास,
तोलूँ तो तोला चार की जी महाराज।
मेलूँ तो तरसऽ म्हारो जीव,
पेरूँ तो मोती झड़से जी महाराज।

गीत में गाँव के बाहर ढोल की थाप और महल में चौसर खेलने का वर्णन है। बहन के भाई एवं पिताजी चार तोले भार की एवं पचास हाथ लंबी जो रेशमी और मोतियों से जड़ी साड़ी लाए हैं, उसे पहनने से बहन को मोती झड़ने का अंदेशा है, तथा रख देने से उसका जी तरसता है।

मामेरा

ऊँची नीची पाल तलाव की
जो चढ़ी जोऊँ छे वाटऽ
बीरा जी म्हारा कदऽ आवऽ
बीरा जी म्हारा बेगो रे आवो
चीगट म्हारी कड़ऽ रहई
भैयाजी बिन मजलस न होय
भावज रे बिन सोयलो
काकाजी बिन मजलस न होय
काकीजी रे बिन सोयलो

गीत में विवाह के अवसर पर भाई-भाभियों के न पहुँचने पर बहन द्वारा तालाब के किनारे प्रतीक्षा की जा रही है। बहन कहती है- भाई-भाभी, काका-काकी इत्यादि के बिना विवाह का मंडप तथा महफिल सूनी-सूनी लग रही है।

मामेरा

वो कुँवर बाई घर लीपूँ वो अँगनों चाँदनी
कुँवर बाई मवसर लीपूँ पटसाल वो
ममीरो कुण थारो लावसे
वो कुँवर बाई कोरा कागत कालई स्याई
अंगरेजी कारट दई भेज्या
कुँवर बाई दूर दिशा का ससरा जी आई गया
नजीक का दादाजी क्यों नी आया
कुँवर बाई माय हूती तो मन की जानती
कुँवर बाई भोजई हूती तो मन की जानती
वे काई जानऽ लखपति दादाजी
ममीरो कुण थारो लावसे
वे काई जानऽ लखपति वीरा जी

ममीरो कुण थारो लावसे
कुँवर बाई रोई-रोई भर्‌या वो तलाब
आँसू मऽ भींजऽ बाई को काचलो

बहन ने घर की लिपाई-पुताई सजावट की है, किन्तु उसके भाई, पिताजी इत्यादि चिट्ठी देने के बावजूद भी अभी तक नहीं पहुँचे हैं। बहन कहती है यदि उसकी भाभी और माँ होती, तो अवश्य आती, लेकिन उसके लखपति भाई और पिता को अपनी गरीब बहन का ख्याल क्यों आए? बहन ने रो-रोकर अपने सारे वस्त्र भिगो लिए हैं।

मामेरा

बीरा बारऽ जो बेलई को मांडवो
रे बीरा, जे पर चढ़ी जोऊँच बीरा की वाट रे
मवसर चूक्यो बीरो घर रह्यो । टेक।
वीरा कि थारी खेती मऽ टोटो आयो
रे वीरा, कि थारा घर मऽ खोटी नार रे।
तो बईण, नई म्हारा घर मऽ खोटी नार वो।
रे बीरा, पाँच टका को लीजे ढोंगड़ो
रे बीरा, हालदी मऽ पेलो करी लाजे रे।

बारह खंभों से निर्मित मण्डप पर चढ़कर बहन द्वारा उस भाई की प्रतीक्षा की जा रही है जो इस विवाह के पावन अवसर पर अनुपस्थित हैं। बहन द्वारा भाई से यह पूछने पर कि क्या उसे खेती में कोई हानि हुई है अथवा अपनी पत्नी के कारण वह नहीं आ पाया है। भाई खण्डन करता है। बहन की अपेक्षा है कि हल्दी रंगी हुई पीली साड़ी उसका भाई लाये लेकिन भाई कहता है कि हल्दी काफी महंगी है। अत: यह साड़ी संतोष और बालमुकुन्द भाई लेकर पहुँचेंगे।

विवाह

सुण समदण री, तेरो नयो जो बना गयो हेत, नई पयचाण बनी। टेक।
सुण समदण री, तेरो शीश नारेल कैसी रेख की चोटी भुजंग बनी।
''   ''   '' तेरी आँख अंबा कैसी, फाँख की भवन कमार चढ़ी।
''   ''   '' तेरी नाक सुबा कैसी, चोंच की बेसर अजब बणी।
''   ''   '' तेरे दाँत दाड़िम कैसी, बीज की होठ तमोल रची।
''   ''   '' तेरे हाथ चंपा कैसी, डाल की अंगुलई मूंगफलई।
''   ''   '' तेरो पेट पुरायन पान, की हिवड़ों सेंचऽ ढुला।
''   ''   '' तेरे जाँघ देकळ कैसी, खंभ की पिंडली बेलन बेली।

'' '' '' तेरे बिछिया री झनकार, शहर महूल मची।
'' '' '' तू नऽ मोहवा शहर का लोग, मोठाजी भाई साजन मोह लिया।
'' '' '' तेरे घाघरा रो घमघोर, शहर सब सोहेर लियो।
'' '' '' तेरो अमुक ब्याही सा जीजमान, की जोड़ी कछु न बनी।

समधनों का मधुर मिलन हो रहा है। एक दूसरे की प्रशंसा की जा रही है। नख से शिख तक प्रत्येक अंग को विभिन्न उपमाएँ देकर सौंदर्य वर्णन किया जा रहा है। इस प्रकार प्रथम परिचय की यह बेला सुखद और सुहावनी है।

कांकण दोरा

पाँच सबद बाजा बाजिया नंगारा की साई
लगिन बिना रे राईवर अड़ी रह्यो देखो चतराई
कपड़ा बिना रे राईवर अड़ी रह्यो देखो चतराई
फेटा बिना रे राईवर अड़ी रह्यो देखो चतराई
सेवरा बिना रे राईवर अड़ी रह्यो देखो चतराई
माला बिना रे राईवर अड़ी रह्यो देखो चतराई
जसो बन्नो रे कुंवर लाड़िलो जसो देव मुरारी।

स्रोत – निर्मला बाई पटवारे

वर निकासी के इस शुभ अवसर पर पाँच बधावे गाये जा रहे हैं, जिनके संग बाजे और नगाड़े बज रहे हैं। दूल्हे की चतुराई की दाद देनी पड़ेगी। उसने इस विशेष अवसर पर हठ पकड़ी है कि यदि उसे नवीन वस्त्र, साफा, तिलक माला आदि से नहीं सँवारा गया, तो वह विवाह नहीं करेगा। सचमुच हमारा लाड़ला कुँवर श्रीकृष्ण के समान नटखट है।

वर निकासी के पश्चात् पड़छने का कार्यक्रम संपन्न होता है। वर की माताजी सरिया, तकली, जूड़ा (बैलगाड़ी के सामने लगी आड़ी लकड़ी, जिसे बैलों के ऊपर रखा जाता है) इत्यादि द्वारा वर को पड़छती है अर्थात् आशीर्वाद देती हैं। विवाह के अवसर पर माता अपने पुत्र को विधिवत् आशीर्वाद देती है।

वर निकासी

परणी लाओ म्हारा अरजुन भीम
परणी न लाओ रूकमणी
कपड़ा पेरो म्हारा अर्जुन भीम
परणी न लाओ रूकमणी
सेवरो बाँधो म्हारा अर्जुन भीम

परणी न लाओ रुकमणी
माला पेरो म्हारा अर्जुन भीम
परणी न लाओ रुकमणी
जीवो परणो सिया जी श्री भगवान
परणी न लाओ रुकमणी।

वर को अर्जुन, भीम, कृष्ण, राम आदि की संज्ञाएँ देते हुए कहा जा रहा है कि वस्त्र, आभूषण इत्यादि धारण कर दूल्हा बनो। शीघ्रता से जाकर रुक्मिणी, सीता आदि से विवाह सम्पन्न करो।

वर निकासी

सरिया न पड़छ्यो वो माता, तराक न पड़छ्यो वो माता
तराक न वस्तर कताया, मूसला न पड़छ्यो वो माता
सूमला न हीरा चढ़ाया, जूड़ा न पड़छ्यो वो माता
जूड़ा न जोड़ी जुपाई, रैंया न पड़छ्यो वो माता
जूड़ा न पड़छ्यो वो माता, रैंया न गोरस घोलाया

स्रोत-निर्मला बाई पटवारे

माता ने वर को सरिया से पड़छ दिया है। माता ने उस तराक (तकली) से वर को पड़छा है, जिससे वस्त्र काता जाता है। माता ने वर को हीरे जड़े मूसल से पड़छा है तथा बैलों की जोड़ी जुताने वाले जूड़े से पड़छा है। अन्त में गोरस मथने वाली मथनी से पड़छा है।

विवाह क्रियाकलापों का केन्द्र वधू का घर हो जाता है। जहाँ मंडपाच्छादन हो चुका है और ममीरा तथा बारात के आगमन की प्रतीक्षा की जा रही है। ममीरा सुबह आ जाता है और बारात संध्या को आती है। वधू का मामा पक्ष ममीरा लेकर आता है। मामा प्रिय भानजी की शादी में अपने पूरे गाँव के लोगों को साथ में लेकर आता है। गाँव से निकलते ही स्त्रियाँ ममीरा के मधुर लोकगीत गाने लगती हैं। लोकगीतों का यह क्रम रास्ते में भी चलता है तथा विवाह वाले घर पहुँचने के बाद भी।

वर पड़छना

आरती करो हो तुम माता यशोदा साँवला हरि नी आरती जी ॥ टेक॥
जनकपुर मऽ धनुष भंजने सिया वरे रघुनाथ।
फिर गोकुल मऽ जन्म लइ नऽ परणीं लाया तो रुखमणी साथ।
कनक थार कपूर बाती मणिना दीपक जो वो।
गज मोतिन को चवक पूरि नऽ कंचन कलश मऽ लावो।

मोर मुकुट शीश शोभित गले बैजयंती माल।
बाहु बाजूबन्द राजत कुण्डल झलकत कान।
दंत पंक्ति कुन्द कली जिमि मुख कमल नी शोभा।
नयन माँहि दियो अंजन मृग मद तिलक ललाट।

वर की माँ को जशोदा, कौशिल्या आदि तथा वर को साँवरे रंग के कृष्ण तथा धनुष भंजक राम की उपलब्धियाँ देते हुए सुहागिन नारियाँ राम और कृष्ण की लीलाओं तथा महिमा का वर्णन कर रही हैं।

पड़छना

तूनऽ मूठ मूठऽ दमड़ा उड़ाया म्हारा बनरा
बालइयो सो आयो
तूनऽ कां जाई धूम मचाई म्हारा बनरा
बालइयो सो आयो
तूनऽ 'सोडलपुर' मऽ धूम मचाई म्हारा बनरा
बालइयो सो आयो
म्हारा आजाजी की जोम मऽ सऽ आयो म्हारा बनरा
बालइयो सो आयो
म्हारा पिताजी की जोम मऽ सऽ आयो म्हारा बनरा
बालइयो सो आयो

सुहासिनी स्त्रियाँ बन्ना को आशीर्वाद देते हुए गा रही हैं- तुम धन-धान्य से सदा पूर्ण रहो। गाँव-गाँव प्रसिद्धि हो तुम्हारी। अपने कुल का नाम रोशन करो।

विदा

लीम लकड़िया हो लचलची, कोई मत तोड़ो ओकी डाल
दुई धड़ सजो कुँवर लाड़लो। टेक।
आजी कय वो म्हारो नात्यो एकलो, एकलो ते ब्यावन जाय।
तू मत जानऽ आजी हाँऊ एकलो, समरथ आजाजी म्हारी साथ।
दोई धड़ सजो कुँवर लाड़ीलो
माय कयऽ वो म्हारो छोरो एकलो, एकलो ते ब्यावन जाय।
दोई धड़ सजो कुँवर लाड़ीलो
तू मत जानऽ माय हऊँ एकलो, समरथ पिताजी म्हारा साथ।
दोई धड़ सजो कुँवर लाड़ीलो

दूल्हे की माता चिन्तित होकर कहती है कि दूल्हे के रूप में सुशोभित मेरा पुत्र नीम की पनपी शाखा के समान कोमल है। वह अकेला ब्याहने निकला है। उत्तर में पुत्र कहता है- मैं अकेला नहीं हूँ,मेरे साथ मेरे पिता और दादा का आशीर्वाद है।

विवाह

चलो चलो सैयल सुहावनी हो
वर ख देखन चलां
वर की आँख लड़ी मुख वाटलो हो
पर छे पुन्नेव चाँद

स्रोत -निर्मला बाई पटवारे

चलो सखी, वह सुहावनी बेला आ चुकी है, जिसकी हमें प्रतीक्षा थी। बारात आ चुकी है। आओ, हम दूल्हे राजा का देखने चलें।

सखियाँ बारात को देखने पहुँच जाती हैं। एक सखी कहती है- हे सखी! वर की आँखें ऐसी हैं मानो मोतियों की लड़ी हो। मुख नारियल के गोले जैसा धवल है। कुल मिलाकर दूल्हा पूर्णिमा का चाँद लग रहा है।

निवाली (गारी)

रामू याई तो अंगल्या चंगल्या, नार मिली अधगेली
म्हारा याई क्वारा क्यों नी रई गया
सीकऽ बठी धंई गटकावऽ, पोर्‍या पोरई डोला मटकावऽ ।1।
आन्या कोन्या जाला लटकऽ, चूलोऽ डकारा खाय म्हारा राज ।2।
ढेल मऽ बठी ढोप्पर लोचऽ, पोर्‍या पोरई चीलड़ा कुचड म्हारा राज ।3।
मंगरा बठी हाथ हलावऽ,चलता यार बुलावऽ म्हारा राज ।4।

स्रोत-अनुसूया सेन

गीत में समधिनों द्वारा समधी को अर्ध विक्षिप्त बतलाते हुए कहा जा रहा है कि तुम्हें आधी पागल महिला से विवाह करने की बजाए कुँवारा ही रह जाना था। अगली पंक्तियों में उसकी लज्जास्पद एवं अस्वाभाविक हरकतों का सुरुचिपूर्ण चित्रण है।

समधिनें बड़ी होशियार होती हैं। वे समधिनों को गालियाँ तो देती हैं, साथ ही उनके बुद्धि चातुर्य की परीक्षा भी लेती हैं। निमाड़ में जेवनार के समय महिलाएँ अपने समधियों से पाड़छी या पारछी (पहेली) पूछती हैं। सस्वर पूछी जाने वाली इन पाड़छियों में गूढ़ अर्थ छिपा होता है। ऐसे गीत पाड़छी कहलाते हैं।

गारी

तुम सुणा लेओ लक्ष्मण राम, हमारी गाली प्रेम भरी ॥ टेक॥
नाना जिनके कौशल राजा, जिनका सुनो हवाल।
कौशल्या का रचा स्वयम्बर, ब्याहन आये भूपाल।
मुकुट दश-शीश हरी, तुम......... ।
राजा दशरथ नऽ यज्ञ कियो है, दई मुनिश्वर खीर।
खीर खाई खऽ गर्भ रह्यो छे, बाही से जाहे रघुवीर।
गजब की बात सुनी, तुम........ ।

वर के छोटे भाई को संबोधित करते हुए महिलाओं द्वारा प्रेम भरी गाली दी जा रही है। लक्ष्मण सुनो, तुम्हारे नाना जी ने कौशिल्या का स्वयंवर रचा था। स्वयंवर जीतने के बाद विवाह के समय तुम्हारे पिताजी के हाथों कौशिल्या ने यज्ञ की खीर खा ली थी और गर्भवती हो गई थी। फलस्वरूप राम पैदा हुए।

पाड़छी

पारछी को अरथ बताओ, जानो साजन हमरी पारछी
एक जो दिन को रांदेल बारई मयना वो खाय
जानो सजन हमारी पारछी
भूरी जो मुच्छी को डोकरो, हटडी हटडी एचाय
जीमता होय तो घड़ेक गम खाओ
म्हारी पारछी को अरथ बताओ
घरमा म नार चतुर होती,
सायबा खऽ देती सिखाय
जानो सजन हमरी पारछी

स्रोत - निर्मला बाई पटवारे

समधी भोजन कर रहे हैं। स्त्रियाँ उनसे पाड़छी (पहेली) पूछ रही हैं। हे साजन! हम जो तुमसे पाड़छी पूछ रही हैं उसका अर्थ पहले बताओ, भोजन बाद में करना। पहली पारछी- एक दिन पकाएँ बारहों महीने खाएँ। दूसरी पारछी- भूरी मूँछों वाला एक बूढ़ा जो हाट-हाट बिकता है। समधी जन चुप हैं, उन्हें पारछी का अर्थ समझ नहीं आ रहा है। महिलाएँ उन्हें ताना दे रही हैं- हे साजन! यदि तुम्हारे घर में कोई चतुर नारी होती तो इन पारछियों का अर्थ बतलाकर भेजती। समधी-जन स्त्रियों के इस मधुर कटाक्ष को सुनकर मंद-मंद मुस्करा रहे हैं।

पहली पारछी का उत्तर है- अचार तथा दूसरी पारछी का उत्तर है- प्याज ।

पाड़छी

बाँध बरत बैड़या चढ़्यो रे,कि ब्याई जी अध बीच मिली शिकार
शीश काट भोजन किया रे, कि ब्याई जी सुरता करो विचार।
अंतरज्ञानी छे ये कि मानगुमानी छे ये कि याई जी पारछी को अरथ बताओ
हाथेलई पर गुड़ घोल्यो, छौ मन सेक्यो कसार
साजन सगा सब जीमी गया रे, कि ब्याईजी भर्या रहया भण्डार
अंतरज्ञानी छे ये कि मानगुमानी छे ये कि याई जी पारछी को अरथ बताओ

स्रोत–निर्मला बाई पटवारे

स्त्रियाँ समधीजन से पारछी पूछ रही हैं– हे समधी जी! तुम अन्तर्यामी हो, सम्माननीय हो, हमारी इन पारछियों का अर्थ बताओ, तो जानें। पहली पारछी– मोटी रस्सी को बाँध कर टीले पर चढ़ रही थी। बीच में एक शिकार मिल गया। उस शिकार का शीश काटकर उसका भोजन बनाकर खा लिया। दूसरी पारछी – हथेली पर गुड़ को घोला तथा छः मन आटा सेंका। इस खाद्य सामग्री को सभी सगे संबंधियों ने खाया, फिर भी सामग्री उतनी ही रही, भंडार खाली नहीं हुआ।

पहली पारछी का उत्तर है– मकड़ी एवं उसका जाल। दूसरी पारछी का उत्तर है– कुमकुम। थोड़े से कुमकुम को हथेली पर घोलकर भी यदि परिवार जनों के भाल तिलकित किए जाएँ तो भी हथेली पर कुमकुम शेष रहता है।

पाड़छी

1. *सोला हाथ नी साड़ी म्हारी सिराणा धरी*
   आखी आखी रात मऽ तो ठंडऽ मरी
   सुण छोटा मोटा करो नऽ विचार
   पारछी को राजाराम भाई अरथ बताओ

2. *कला कंद की थाली म्हारा सिराणा धरी*
   आखी आखी रात हऊँ तो भूखऽ मरी
   सुण छोटा मोटा करो नऽ विचार
   पारछी को राजाराम भाई अरथ बताओ

3. *पांच मिरी को झुमको, रे, नई फलऽ रे फूलऽ म्हारा साजन*
   पयचाणो रे गरास्या म्हारा ब्याई जी पाड़छी
   इनी पाड़छी को रे ब्याईजी अरथ बताओ

4. *सासू जाड़ी नऽ पऊ पातलई, नणदल छम्मक छिंदाल*
गाड़ा मारूजी ताड़ो हो अधगेल्या ब्याईजी पाड़छी
नईं तो हारो घर की नार, गाड़ा मारूजी

5. *रात कऽ खाई रे भाजी, दिन कऽ आयो सवाद*
ताड़ो हो अधगेल्या ब्याई जी पाड़छी, नईंतो हारो घर की नार,

6. *ऊपर भी फाटी, नीचऽ भी फाटी*
बीच मऽ जड़्यो रे जड़ाव गाड़ा मारूजी
ताड़ो हो अधगेल्या ब्याईजी पाड़छी
नईं तो हारो घर की नार, गाड़ा मारूजी

7. *उच्ची गोरी न लगऽ पातलई*
जमना नावण जाय, गाड़ा मारूजी

स्रोत–अनुसूया सेन

प्रस्तुत गीत में सात पारछियाँ पूछी गई हैं–

1. सोलह हाथ लंबी साड़ी मेरे सिरहाने रखी रही, फिर भी पूरी रात मैं ठंड के मारे काँपती रही। हे राजाराम भाई और छोटे–बड़े सभी उपस्थित लोग! मेरी इस पहेली का अर्थ बताओ।
2. मेरे सिरहाने कलाकंद की थाली रखी रही, फिर भी मैं सारी रात भूखी मरती रही। हे उपस्थित जन! हमारी पहेली का अर्थ बतलाओ।
3. पाँच मिर्चियों के पौधों का ऐसा गुच्छ, जो न फलता है और न फूलता है। हे समर्थ! पारछी को पहचानो और अर्थ बतलाओ।
4. सास मोटी और बहू पतली है तथा ननद छम्मक छल्लो है। हे अर्धविक्षिप्त समधी! या तो तुम अर्थ बतलाओ या फिर अपनी पत्नी को हार जाओ।
5. रात को सब्जी खाई लेकिन स्वाद दिन निकलने पर आया। हे पागल समधी! अर्थ बतलाओ, नहीं तो समधिन को हारो।
6. ऊपर भी फटी हुई है और नीचे भी। बीच में उन्हें जोड़ने वाला जड़ाव जड़ा हुआ है। हे अर्धविक्षिप्त ब्याई जी! या तो पाड़छी का अर्थ बतला दो या फिर घर की नार को हार जाओ।
7. गोरी कन्या बहुत ऊँची है तथा दुबली–पतली दिखाई देती है। हे समधी! उत्तर दो या अपनी पत्नी हारो।

समधी काफी चतुर हैं। वे स्त्रियों की प्रत्येक पहेली का सही-सही उत्तर दे देते है। उत्तर है - 1. पगड़ी 2. मिर्ची की थाली 3. साड़ी 4. बंदूक 5. मेहंदी 6. काखई (लकड़ी की कंधी) 7. अमाड़ी का वृक्ष।

जेवनार

गजानन्द गणपति मंदरिया मऽ आवजो
देवकी माता वरऽ तो उज्वल कारज होय सब सिद्ध
कृष्ण बालाजी हरि भोजन भाव करी नऽ लीजो । टेक।
जामावंती जोबा लागी पेरी जादम साड़ी,
गुंगरी संजोरी लाई नऽ धेवर पिरसो गारी।
कृष्णी बाई तो केला लाई कृष्ण जी सारू
आकुर बदाम पिस्ता लाया नऽ मेवा लाया भारी।
देवकी लाई कढ़ी पूरी रूकमणी लाई परसाद
पछा फिरी नऽ देखण लाग्या नऽ पापड़ पिरसण आई।
यमराजा नऽ सार मंडाई पासा तीन सौ साठ
राधा कृष्ण चौसर खेलऽ कोई सी नी जीत्यो जाय।
सोन्ना रूपा का डोल्या नऽ मसूर का गलिया
राधाकृष्ण सेजऽ लोटऽ कुबजा झांकी जाय।

स्रोत - सावित्री बाई पाटिल

सब कार्यों को सिद्ध करने वाले तथा प्रथम पूजे जाने वाले श्री गणेश जी की प्रार्थना माता देवकी कर रही हैं तथा कृष्ण को रुचि लेकर खाने को कह रही हैं। कृष्ण के लिए जामावंती, कृष्णी बाई तथा देवकी तरह-तरह के पकवान लेकर आई हैं। भोजन के पश्चात् यमराज द्वारा बिछाई गई चौपट पर राधा और कृष्ण अपनी बाज़ियाँ लगाते हैं, लेकिन जीत कोई भी नहीं पाता है। इसके पश्चात् स्वर्ण-रजत जड़ित काष्ठासन पर बिछी मसरूम की गादी पर राधा व कृष्ण शयन करते हैं, जिन्हें कुबजा झाँक कर देखती है।

जेवनार

आज का साजन भला सिधार्‍या, धन्य हमारा भाग।
साजन जीमो जीमनार, हितू जीमो जीमनार । टेक ।
आज का साजन भला पधार्‍या, आया हमारा द्वार।
हरिया मूंग बरेंडिया, जी कंई और बरेंडी भात।
उपजा पूरब देश मऽ जी कंई उज्जल उनकी जात।

सुवा चोखा पालक मेथी और बथुवा की साग।
मूला बुलाया उजला, जी कंई निमक दियो मिलवाय।
सूरिया गाय को दूध मंगायो, दसमी दी बनवाय।

स्रोत – गिरिजा बाई शर्मा

आज हमारा सौभाग्य है, जो समधी जन और स्नेहीजन हमारे द्वार पर पधारे हैं। हे अतिथियों! आप प्रेमपूर्वक भोजन कीजिए। हमने हरे मूँग की साग, पूर्व देश में पैदा होने वाला स्वादिष्ट धवल चावल, पालक, मेथी और बथुवा की साग बनवाई है। सफेद चमकदार मूलियों को कटवाकर तथा उसमें नमक मिलाकर सलाद बनाया है। प्रसिद्ध सूर्या गाय का दूध दुहा है तथा दसमी (मीठी पूड़ियाँ) बनवाई हैं। अत: आप जीमना शुरू कीजिए।

जेवनार

कुंदनपुर का जोशीड़ाजी श्रीकृष्ण करो रे मनवार
साजन जीमो जेवनार, हित्तू जीमो जेवनार । टेक ।
रोटी जो करी नौ गजई, कंई पापड़ पुन्येव चाँद।
भाजी जो रांदी वल्हर की, जी कंई और भटा की साग।
लाडू जो बांध्या वाजन्या, खाजा मऽ भरी खजूर।
सीरो बनायो मिसरी, जी कंई मालपुआ गुलजार।

स्रोत – निर्मला बाई पटवारे

हे कुन्दनपुर वासी जोशीजी! आप भगवान श्री कृष्ण से मनुहार कीजिए। उनसे आज की इस जेवनार में पधारने का निवेदन कीजिए ताकि उनके आने के बाद हम अन्य उपस्थित अतिथियों को जीमने के लिए कह सकें। हे उपस्थित अतिथियों! प्रेमपूर्वक जेवनार शुरू कीजिए। हमने आपके लिए सेम और भटे सब्जी, वज़नदार लड्डू, खजूर मिश्रित खाजा, मिश्रीयुक्त हलवा तथा सुस्वादु मालपुवे बनाए हैं।

जीमनार

कुंदन पुर की नार कृष्ण की, हिलमिल गावे गारी॥ टेक॥
दाल भात मैदा की पूरी और पूरण पोलई।
लड्डू पेड़ा बरफी जलेबी, मालपुवा गुलक्यारी।
फेणी घेबर और इमरती, गुलाब जामुन न्यारी।
खोबा रबड़ी दूध मलाई, अमरस दाग चिरोंजी।
बड़ी पकौड़ी पापड़ भजिया, बन्यो रायतो भारी।
आलू गोभी परवर कन्दरी, और बहुत तरकारी।

आम अथाणा लिम्बू खटरस, चटनी बनी बहुतेरी।
सोहन थाल परोसिया बीच, घृत की रत्न कटोरी।

कृष्ण के विवाह समारोह में भोजन के समय सुहागिन स्त्रियों द्वारा प्रेमपूर्वक गारी गाई जा रही है। छप्पन प्रकार के व्यंजन स्वर्ण थालियों में परोसे गए हैं। घी, रायता आदि तरल पदार्थ रत्न जड़ित कटोरियों में परोसे गये हैं।

जीमनार

रस मीठा चीखाजी रस मीठा॥
हाँ जी हम जीम्या तेऽ झूठऽ नऽ बोलां॥ टेक॥
हाँ जी निकी पातल केल कमल की।
हाँ जी जिनका दोना सरस नगीना।
हाँ जी जिन्नऽ रोटी जो किव्ही नवगजी।
हाँ जी जिनका पापड़ पुन्नेम चान्दजी।
हो जी जिन भात जो रान्ध्यो भरियालो।
हो जी जिनका हरियाला मूंग की दाल जी॥
हो जी जिन्ने तार उतारी बड़ी करी।
हो जी जिन्ने लोंग को ढोल्यो बघार जी।
हो जी जिन्ने दही मही मोडी नऽ कढ़ी करी।
हो जी जिनने जीरला को डाल्यो बघार जी।

इस गीत में मेहमानों द्वारा भोजन की महिमा का मंडन किया जा रहा है। भोज्य पदार्थों को उपमाएँ देते हुए कहा जा रहा है कि पातल कमल पत्र, दोने नगीने के समान गोल, पापड़ पूर्णिमा के चाँद से आकर्षक हैं तथा भोजन स्वादिष्ट है।

जीमनार

इनी साजन जीमनार, जुगत से परसो जी।
तुम धीरेऽ धीरेऽ परसो जी तुम बड़ी जुगत सऽ परसो जी।
तुम बड़ी जुगत सऽ जीमो जी।
थाली बेला कंचन मिरिया, जल का लोटा परसो जी।
सरस कचोरी और फुलरा तुम दोना पातल परसो जी।
पूरी मगध कचोरी खुरमा, घेवर सरस बिन्दरसे जी।
दाल फुलकिया और तसमाही, ऊपर भूरा परसो जी।
मोतीचूर जलेबी बरफी, पेड़ा गेन्द गिलनसे जी।

खाजा गलफी बरफी जलेवी, पापड़ सुघड़ सुघड़से जी।
सुवा पालकी मेथी बथुवा, राई गोभी घींव तलत है
फूल पाचक में परसो जी।

सुहागिन नारियाँ भोजन परोसने वालों को संबोधित करते हुए कह रही है कि हमारे समधियों तथा समस्त आगंतुकों को बड़े ध्यानपूर्वक प्रत्येक व्यंजन परोसो। गीत में समस्त व्यंजनों के नाम लिए जा रहे हैं।

जीमनार

हाँ जी, जीमत राम जनक मंदिर मऽ,
सब सखी गावे गारी।
हाँ जी, माता तुम्हारी देवकी कयजो,
बन्दी खाना डाली।
हाँ जी, दूसरी माता जसोदा कयजो,
छाछ बिलोवत हारी।
हाँ जी, भुवा तुम्हारी कुन्ती कयजो,
कुंवारी न करण खऽ जायो।
हाँ जी, बईण तुम्हारी सुभद्रा कयजो,
अर्जुन संग सिधारी।
हाँ जी, भोजई तुम्हारी दुरपता कयजो,
पाँच पुरुष इक नारी।

वधू पक्ष की महिलाओं द्वारा वर पक्ष के खानदान को कृष्ण परिवार के माध्यम से कोसा जा रहा है, गालियाँ दी जा रही है। हे कृष्ण! तुम्हारी माँ देवकी है, जिसको कारावास दिया गया, तुम्हारी दूसरी माँ जशोदा है, जो जीवन भर दही बिलोती रही। तुम्हारी बहन द्रोपदी, पाँच पुरुषों की पत्नी थी।

जीमनार

हऊँ तुमनऽ बरजूं वन की वो गौआ
दूर चरन मत जाओ, साजन घर आवसे जी
हौं तुमनऽ वरजूं भाई रे बालमुकुंद भाई
दूर खेती मत जोतो साजन घर आवसे जी
हऊँ तुमनऽ वरजूं भाई रे सन्तोष भाई
दूर नौकरी मत जाओ, साजन घर आवसे जी

हऊँ तुमनऽ वरजूं वऊ वो लाड़ी बऊ
दूर पाणी मत जाओ, साजन घर आवसे जी
हऊँ तुमनऽ बरजूं बाई तो सुभद्रा बाई
दूर सासरा मत जाओ, साजन घर आवसे जी

साजन अर्थात् समधी या मेहमान के आगमन को महत्त्व देते हुए गाय से विनती की जा रही है कि तुम दूर चरने मत जाओ क्योंकि अतिथि आने वाले हैं। इसी प्रकार घर के समस्त सदस्यों से क्रमश: विनती की जा रही है कि वे घर पर ही रहें, क्योंकि अतिथियों का आगमन होने वाला है।

जीमनार

दूदा धारी ब्रह्मचारी साजन म्हारा अई रह्या रे।
साजन इनी वाटऽ बाग लगई देता रे
साजन इनी वाटऽ कुवला खुदई देता रे
नाऊण करता दातुन करता साजन म्हारा अई रह्या
कलिया टोचता गजरा गूँथता साजन म्हारा अई रह्या
साजन इनी वाटऽ पाणी समोई देता रे
साजन इनी वाटऽ भोजन बणई देता रे
भोजन जीमता भोजन जीमता साजन म्हारा अई रह्या
साजन इनी वाटऽ झारी भरई देता रे
जल पीता अचवन करता साजन म्हारा अई रह्या रे
तमोल करता विडिला चावला साजन म्हारा अई रह्या रे

अतिथियों को देवतुल्य बतलाते हुए महिलाएँ गा रही हैं। मार्ग में बगीचे लगवा दिए जाएँ और कुएँ खुदा दिए जाएँ ताकि अतिथि दातून कुल्ला कर सकें तथा कलियाँ चुनकर गजरा बना सकें। इसी प्रकार अतिथियों के स्वागत में भोजन, तंबाकू, पान आदि की व्यवस्था की जाए।

जीमनार

हम घर साजन आया, हम घर साजन आया।
राम लखन कसी जोड़ी रे
हम घर टूटी खटलिया, हम घर फाटी गोदड़िया
उनका आया सऽ भंवर पलंग हुया
हम घर टूटी टपरिया, हम घर टूटी टपरिया
उनका आया सऽ कंचन महल भया

हम घर घाटो आरु खड़िया घांटो आरु खड़िया
उनका आया सऽ पकवान बनी गया

अतिथियों को देवतुल्य बताया जा रहा है। वर–वधू के पिता को राम लखन सदृश्य बताया जा रहा है। अतिथियों के आगमन से घर की टूटी खाट और फटी गोदड़ी स्वर्ग शैया में बदल गई है। टूटी–फूटी झोपड़ी स्वर्ण महल हो गई है। दाल–दलिया उच्च पकवान हो गया है।

जीमनार

सुनी श्याम साजन आया
असा काकड़ काच डुलावो जगवेणी
लिखेली की लयरऽ सुहावणी ।टेक।
सुनी श्याम साजन आया गोया म
असा गोया म अबीर गुलाल जगवेणी।
सुनी श्याम साजन आया दरवाजऽ
असा दरवाजऽ का 'संतोष भाई' लोभाय जगवेणी।
सुनी श्याम साजन आया मजलस
असा मजलस का 'सुंदरदास भाई' लोभाय जगवेणी।

बारातियों तथा अतिथियों के आगमन की सूचना मिल गई है। स्वागत कैसा हो? इसकी तैयारी हो चुकी है। अतिथियों के ग्राम प्रवेश पर चँवर डुलाई जाएगी। गली में प्रवेश पर अबीर गुलाल लगाया जाएगा। द्वार पर संतोष भाई तथा साथ में सुंदरदास भाई विशेष स्वागत के लिए उपस्थित रहेंगे।

जीमनार

मुरली वाले सांवरिया, दो बापन के लाल रे।
पयलऽ पिता वासुदेव जी, बाबा नंद घर गोद गए।
उनकी माता देवकी, बंदी खाना डाली।
तुमनऽ माटी वो खाई, मधुबन धेनु चराई।
तुमरो नाव गिरधारी, गिरवर खंड उठाईया
तुमरो नाव मुरारी, मुरली का बजईया।

हे मुरली वादक सांवरे! तुम दो पिता के पुत्र हो, तुम्हारी माता ने तुमको कारावास में जन्म दिया। तुमने मिट्टी खाई और मधुवन में गैया चराई। तुम्हारे गिरधारी, मुरारी आदि अनेक नाम हैं।

पड़छना

तू तो तालो लगई नऽ कूची लायो रे बन्ना
तूनऽ कुणका भरोसा घर छोड़्यो रे बन्ना
म्हारी आजी का भरोसऽ घर छोड़्यो वो बन्नी
म्हारी माय का भरोसऽ घर छोड़्यो वो बन्नी
थारी आजी को भरोसो हमखऽ नई हंई रे बन्ना
थारी माय को भरोसो हमखऽ नई हंई रे बन्ना
थारी काकी को भरोसो हमखऽ नई हंई रे बन्ना

स्रोत – निर्मला बाई पटवारे

गीत में वर–वधू के बीच संवाद है। हे बन्ना! तुम ताला बंद करके चाभी तो ले आए किंतु फिर भी किसके भरोसे अपना घर छोड़ कर आए हो। हे बन्नी! मैं अपनी दादी और माँ के भरोसे अपना घर छोड़ कर आया हूँ। हे बन्ना! मुझे तुम्हारी दादी और माँ पर भरोसा नहीं है।

वधू को स्नान

सरियो सोन्ना को घड़ायो, तराक लोह की।
आजाजी पन्नाओ तोय लाड़ला
आजी चढ़ावऽ छे तेल चंपा पातलई
पिताजी पन्नाओ तोय लाड़ला
माता चढ़ावऽ छे तेल चंपा पातलई।

वर–वधू के पिता–दादा, काका आदि को संबोधित करते हुए स्त्रियाँ गा रही हैं। अपने पुत्र के विवाह हेतु सोने का सरिया तथा लोहे की तराक बनवाओ। तुम्हारे लाड़ले का विवाह है, इसलिए वर की दादी और माता तुम वर–वधू की मालिश के लिए चम्पा तेल लाओ।

लग्न

हथेलो लाग्यो लाड़ी माय, लाड़ी वो ढुलमुल रोवती
छोड़ो–छोड़ो माय बाप को लाड़
छोड़ो रे सई को खेलनो
छोड़ो–छोड़ो फुतल्या को ख्याल
छोड़ो रे सई को खेलनो

स्रोत – गिरिजा बाई शर्मा

गीत में वधू को संबोधित करते हुए महिलाएँ कह रही हैं– हे वधू! अब तुम्हारा हथेला

लग चुका है। अब तुम पराई हो चुकी हो। अब तुम्हें माँ-बाप का लाड़ छोड़ना पड़ेगा। अब तुम एक जिम्मेदार गृहिणी बन चुकी हो, अत: तुम्हें सहेलियों के साथ पुतलियों का खेल खेलना बंद करना पड़ेगा। वधू उपरोक्त बातों को सुनकर सिसक-सिसक कर रो रही है।

हथेला

ए तो, फुलड़ा जो टोचन गई वो लाड़कली
अपना आजाजी का बाग मऽ
कछु वो टोचऽ कछु टोचवा न पाई
जलगऽ स आया रे दुल्हौ राय जी
ए तो, उठो लाड़कली न बठो पालकड़ी
चलो हमारी साथ मऽ
एतो, जब हो हमारा आजाजी पंगत संजोवऽ
जब जाई चलां तुमरी साथ मऽ
ए तो, जब हो हमरा पिताजी पेरावणी संजोवऽ
एतो, जब हो हमरा फुवाजी दायजो संजोवऽ
एतो, जब हो हमरा मामाजी गौआ संजोवऽ
जब जाई चलां तुमरी साथ मऽ

वधू अपने दादाजी के बगीचे में पुष्प चुन रही है, तभी वर का आगमन होता है। वह पालकी में बैठने का आग्रह वधू से करता है। वधू कहती है, मेरे दादा, पिता, फूफा, मामा जब पंगत, पेरावनी, दहेज, गाय आदि की तैयारी कर लेंगे, तब मैं तुम्हारे साथ अवश्य चलूँगी।

हथेला

जी हाँ लाड़ी का दादाजी अस्नान करहुँ, उपज्यो ते कन्या को दान जी
इनी कूखऽ दुल्लवजी नीपज्यो, मांग्यो तेवल्या को दान जी॥
कन्या को दान रे बाबुल बहुत दोयलो, मूरख सऽ दियो नहीं जाय जी।
जनवई अरु सिलकाबाई का दायजा म देहुँ, तोय नहीं समझे दुल्लवराय जी॥
शाल अरू शवल्यो बाई का दायजा म देहुँ, तोय नहीं समझे दुल्लवराय जी॥
चरवो अरू दुकड़ी बाई का दायजा म देहुँ, तोय नहीं समझे दुल्लवराय जी॥
गौआ अरू बछुआ बाई का दायजा म देहुँ, तोय नहीं समझे दुल्लवराय जी॥
कुँवारी दीसे हो बाई मामा तुम्हारा, तोय नहीं समझे दुल्लवराय जी॥
घर की मांडण बेटी अमुक बाई देहुँ, तवऽ जाई समझे दुल्लवराय जी॥

लग्न लग चुका है। कन्या के दादाजी और माता-पिता दहेज में अन्न-धन, आभूषण तथा

अन्य सामग्री दे रहे हैं, लेकिन वर असंतुष्ट है। उसे तो दुल्हन चाहिए, लेकिन माता-पिता के लिए कन्या का दान करना मानो प्राण निकाल कर देने के समान दुष्कर प्रतीत हो रहा है।

हथेला

ओ बाई बड़ा जी भाई घर आनंद बधावनो
ओ बाई संतोष भाई घर आया हो साजन लोग
जाजमड़ा बिछावना हो भाई जी रालई दिया
ओ बाई लाड़ी बऊ गुलाब बाई सऽ अरज करऽ
ओ बाई लाड़ी बऊ दुर्गा बाई सऽ अरज करऽ
ओ बाई नणद बाई हमारी बड़ा वो सजन की दी
माड़ी का घर मोकलो वो दस दिन पावनी वो
ओ बाई हमरा जो घर धवल्या वो दोरी हल हांकऽ
ओ बाई काकड़िया पऽ चलऽ वो दुयरा हल
किरसाण्या को आवणो वो बाई जी नई होय
ओ बाई हमरा जो घर घऊँ वो चणा का बंडा भर्‍या
ओ बाई रूपईया का आया वो भर-भर थाल
सौकार्‍या को आवणो वो बाई जी नई होय
ओ बाई हमरा जो घर ....

बड़े भैया के घर बधाई गीत गाए जा रहे हैं। लगभग सभी रिश्तेदार पधार चुके हैं। घर की बहू को अपने मायके वालों की प्रतीक्षा है, लेकिन वे अपनी खेती बाड़ी और घरेलू समस्याओं में फँसे हैं, अत: उनके न आने से उन्हें बुलाने की विनती कर रही है।

हथेला

ऊंचा मंदिर छितरिया री छांय,
तो ये धर रुड़ा राधेश्याम भाई का घर
निकलो लाड़ी बऊ बायरऽ साजन आया द्वार
साजन आया भला हो आया रुड़ा हो आया
जेकी तो जोवा बाट।
अंगना वृन्दावन तुलसी लक्ष्मी करो रहवास।
बांध्या हूँ तेजी जौं चढ़या हाथी झूलऽ दरबार

राधेश्याम भाई के घर विवाह है। उनका घर किसी मन्दिर के समान पवित्र और सुशोभित है। ऊँचे मकान के समक्ष घने वृक्ष की छाया है। द्वार पर हाथी खड़े हैं। आँगन के वृन्दावन में

तुलसी लगी है, जिसमें लक्ष्मी का निवास है। स्त्रियाँ गा रही हैं कि– हे बहू! बाहर निकलो, स्वयं भगवान अतिथि के रूप में तुम्हारे घर पधारे हैं।

चौरी फिरना

हमरी स्याम सुंदर बेटी चऊक बठी
पेरो बड़ा की जाई चूँदड़ी
हमरा आजाजी देखऽ हमखऽ लाज आवऽ
हम कसां पेरां राइवर चूँदड़ी
तुमरा आजाजी बुलाया, हम आया वो दुलियन
पेरो बड़ा की जाई चूँदड़ी
भैयाजी बुलाया हम आया वो दुलियन
पेरो बड़ा की जाई चूँदड़ी

स्रोत – निर्मला बाई पटवारे

कन्या के दादाजी कहते हैं– हमारी सांवरी – सुंदरी बेटी पाट पर बैठ चुकी है। अब इस थोड़ी देर में चौरी फिरने वाली है। वर कहता है– हे वधू! तुम इस अवसर पर यह नई चूनर ओढ़ लो। वधू कहती है– यहाँ तुम हो, दादाजी हैं, मुझे लाज आती है। वर कहता है– हे दुल्हन! यहाँ हम सब तुम्हारे पिताजी और दादाजी के बुलाने पर ही आए हैं अत: इनसे कैसा शर्माना। तुम यह चूनर ओढ़कर रस्म पूरी कर दो।

चौरी फिरना

चवरी का चवरास्या रे ठाकुर, चोरी का किरण वाला
चवरी मऽ सी वर कन्या बोली, सुण म्हारा समरथ हीरा
देणू होय सो चौरी मऽ दीजो, वर कन्या जस लीजो
चवरी का चवरास्या रे ठाकुर, चौरी का किरण वाला
चवरी मऽ वर कन्या बोली, सुण म्हारा समरथ पिता
देणू होय सो चौरी मऽ दीजो वर कन्या जस लीजो

स्रोत – सावित्री बाई पाटिल

इसी प्रकार काकाजी, मामाजी, फुवाजी आदि लगाकर गीत बढ़ा लिया जाता है।

विवाह के पवित्र फेरे पड़ रहे हैं। कन्या अपने पिता, भाई, काका और मामा को संबोधित करते हुए कहती कि जो भी भेंट देना हो, इसी अवसर पर दे दो तथा वर–वधू की शुभेच्छाएँ लेकर यश कमा लो। मंद गति से नियमानुसार वर–वधू अग्नि को साक्षी मानकर सात फेरे ले लेते हैं।

चौरी फिरना

फिरी गई चवरी न सरी गया फेरा पर राजा हुया रे उतावल्या
लाड़ी का दादाजी उपास्या, लाड़ी की माता उपासई
लाड़ी का दादाजी जिमाड़ो, लाड़ी की माता जिमाड़ो
वर राजा रहई करी जासे जी
लाड़ी का मामाजी जिमाड़ो, लाड़ी की मामी जिमाड़ो
वर राजा रहई करी जासे जी

स्रोत – निर्मला बाई पटवारे

चौरी फिर चुकी है। सात फेरे पूर्ण हो चुके हैं। अब दूल्हे राजा घर लौटने के लिए उतावले हो रहे हैं। वधू के दादाजी, माताजी, मामाजी और मामीजी ने उपवास रखा था। उन्हें खाना खिलाओ, तब तक दूल्हे राजा रुके रहेंगे।

चौरी फिरना

पच्छा फिरो पच्छा फिरो लाड़ी बाई,
दादाजी करत जुवार जी।
आखई रह्यजो अम्मर रह्यजो आजाजी,
आजी को चूड़ीलो अवात जी

स्रोत – निर्मला बाई पटवारे

अंतिम पंक्तियों में आजाजी के स्थान पर भैयाजी, मामाजी, काकाजी लगाकर गीत बढ़ाते हैं।

वधू के दादाजी वधू से कह रहे हैं– हे लाड़ी बाई! तुमने आशीर्वाद ले लिया है, अब तुम प्रसन्नतापूर्वक वापिस जाओ। वधू मन ही मन दादाजी को शुभकामनाएँ दे रही हैं– हे दादाजी! तुम सदा अक्षय और अमर रहो। दादी का सुहाग अमर रहे। अब वधू की विदाई की शुभ घड़ी आ जाती है। यह ऐसा समय होता है, जब संपूर्ण वातावरण करुण रस से भर जाता है। जिस बेटी को पाल पोसकर बड़ा किया, वह आज पराई बनकर विदा हो रही है। ससुराल ही अब उसका घर होगा। मायके से तो केवल तीज–त्योहार तक का ही नाता शेष रह गया है। यही सोच माता–पिता, भाई–बहन, निकट के अन्य रिश्तेदार तथा सखी–सहेलियाँ सब फफक–फफक कर रो पड़ते हैं। इन सब लोगों में माँ की स्थिति सबसे अधिक दयनीय होती है।

फेरा

चरवा ओटलई वो बाई का दायजा मऽ दिया वो
गंगाल तुक्कस वो बाई का दायजा मऽ दिया वो

तोय नहीं समझऽ या बाई सलीता वो
नाई सलीता या बाई ललीता वो
पलंग दुलई वो बाई का दायजा मऽ दिया वो
सोफा कुरसी वो बाई का दायजा मऽ दिया वो
तोय नहीं समझऽ या बाई सलीता वो
बाई सलीता या बाई ललीता वो
सुंई दोरा नो बाई का दायजा मऽ दिया वो
जबऽ जाई समझऽ वो बाई सलीता वो

गीत में सुई धागे का महत्त्व दर्शाया गया है। लड़की के दहेज में विभिन्न बर्तन, बिस्तर, सोफा, कुरसी इत्यादि लगभग सभी आवश्यक वस्तुएँ दी गई, लेकिन जब तक सुई धागा नहीं दिया गया, तब तक वर-पक्ष की महिलाएँ संतुष्ट नहीं थी।

विदा

मात कहे बात भली, कान देवो स्याणी, कुल ना लजावजे
लक्ष धरी बात नऽ निभावजे वो स्याणी, कुल ना लजावजे। टेक।
ससरा खऽ अपणा बात सरी मानजे,
सासु खऽ माय सरी लेखजे वो स्याणी।
जेठ खऽ अपणा बाप सरी मानजे,
जेठानी को कह्यो मति टालजे वो स्याणी।
देवर खऽ अपणा भाई सरी लेखजे,
देराणी खऽ बालक जाणजे वो स्याणी।
नणंद खऽ अपणी वैण सरी मानजे,
नणदोई को मान निभाजे वो स्याणी।
कुल कीर्ति खऽ निभाती रहयजे, सबकी सेवा करती रहयजे
कुटुम्ब हिलई मिलई रहयजे वो स्याणी।

स्रोत - गिरिजा बाई शर्मा

वधू की माता अपनी बेटी की भलाई के लिए कह रही हैं- हे सयानी! तुम कान देकर सुनो। ससुराल में कोई ऐसा कार्य मत करना, जिससे हमारे कुल की लाज मिट्टी में मिल जाये। हे पुत्री! तुम अपने जेठ और ससुर को पिता समान, सास को माता के समान, देवर को भाई के समान, ननद को बहन के समान तथा देवरानी को अपनी नन्हीं बहन मानना। जेठानी का कहा कभी मत टालना तथा ननद का सदा सम्मान करना। इस प्रकार- हे पुत्री! तुम सबकी सेवा करके हमारी कुल-कीर्ति को बढ़ाना तथा अपने कुटुम्ब के साथ हिल-मिलकर प्रसन्तापूर्वक रहना।

विदा

बईण वो पिताजी नऽ अम्बो लगई दियो
बईण वो तुम बिन कुण छीछन जाय
अम्बा की कोयल उड़ी जाई
पिताजी अंबा ख जो नऽ लिम्बू रस लीजो
पिजाजी सीताफल को करो फरियार
अम्बा की कोयल उड़ी रहई

स्रोत - रंभा माय

पिताजी की जगह काकाजी, वीरजी, मामाजी इत्यादि जोड़कर गीत को आगे बढ़ा लिया जाता है। विदाई के समय वधू और उसके पिता के मध्य वार्तालाप हो रहा है- पिता- हे बेटी! मैंने कितने अरमानों से आम का पेड़ लगाया था, उसे अब कौन सींचेगा। तुम तो इस पेड़ पर बैठने वाली कोयल के समान उड़ रही हो। बेटी - हे पिताजी! अब इस आम के पेड़ के फलों को आप लोग ही खाना। नींबू का रस भी आप ही लेना। मुझे तो जाना ही होगा। आम पर बैठी कोयल तो एक दिन उड़ ही जाती है।

विदा

कंई मंडप की बेलई धरी नऽ पिताजी रोवऽ, बेटी चली वो परदेस
काई साटऽ पिताजी मखऽ पालई पोसी, काई साटऽ पायो काचो दूध
वर साटऽ वो बेटी मनऽ पालई पोसी, साजन साटऽ पायो काचो दूध

स्रोत - रंभा माय

पिताजी के स्थान पर काकाजी, मामाजी, दादाजी इत्यादि जोड़कर गीत लम्बा किया जाता है।

मंडप की बेलई (खंभा) पर अपना सिर टिका कर पिताजी रो रहे हैं। बेटी परदेस जा रही है। बेटी कहती है- 'हे पिताजी! मुझे इतने लाड़ प्यार से किस लिए पाला-पोसा तथा कच्चा दूध क्यों पिलाया? पिताजी कहते हैं- हे बेटी! वर को तुझे देने के लिए मैंने तुझे पाला-पोसा तथा सास-ससुर की सेवा करने के लिए मैंने तुझे कच्चा दूध पिलाया।

विदा

लाड़ी का दादाजी मंडपड़ो संभालो, लखेनी लाड़ी लई चल्या जी। टेक।
वो तो आयो साजनऽ रो पुत्रऽ, लखेनी लाड़ी लई चल्या जी।
लाड़ी का काकाजी मंडपड़ो संभालो, लखेनी लाड़ी लई चल्या जी।

लाड़ी का वीराजी मंडपड़ो संभालो, लखेनी लाड़ी लई चल्या जी।
लाड़ी का मामाजी मंडपड़ो संभालो, लखेनी लाड़ी लई चल्या जी।

स्रोत–गिरिजा बाई शर्मा

वर के पिता वधू पक्ष के लोगों को कह रहे हैं– बहू के दादाजी और काकाजी! अब तुम इस मंडप को संभालो। हम अपनी प्रिय बहू को ले जा रहे हैं।

विदा

हरा नीला बांस की बांसलई, वा भी ते वाजती जाय
बड़ा जी भाई की छोरी वो लाड़ली, वो भी ते सासरऽ जाय
संतोष भाई की बयणी वो लाड़ली, वो भी ते सासरऽ जाय
भैयाजी बनाऊँ म्हारा बालमकुंद भाई, झूजी करी पच्छी सी लाय

स्रोत–निर्मला बाई पटवारे

बालमुकुंद भाई के स्थान वर–वधू के अन्य भाईयों तथा निकट संबंधियों के नाम जोड़कर गीत को आगे बढ़ाया जाता है।

जिस प्रकार हरे–नीले बाँस की कोमल बाँसुरी को बजना ही होता है उसी प्रकार कन्या को भी एक दिन अपने ससुराल जाना ही होता है। हरे–नीले बाँस की बाँसुरी बज रही है और बड़े भैया की लाड़ली बेटी अपने ससुराल जा रही है। संतोष भाई की लाड़ली बेटी अपनी ससुराल जा रही है। वधू कहती है– मैं अपने बालमुकुन्द भाई से कहूँगी कि मेरी ससुराल में जी–हुजूरी करके मुझे वापस लाएँगे।

फेरा

पिताजी यो दल काय को सजी गयो रे
बेटी वो दल तुमरा वाटऽ सजी गयो वो
पिताजी हमखऽ छे पालो यो दल पच्छो फेरो रे
बेटी यो दल पच्छो नई जाय जाजम पर बठी हारी गया वो
हीरा जी यो दल अंगणा मऽ क्यों सज्यो रे
तो बयणी यो दल तुमरा कारण सजी गयो
हीरा जी हमखऽ छे पालो यो दल पच्छो फेरो रे
बयणी यो दल पच्छो नई जाय जाजम पर बठी हारी गया वो

इसी प्रकार काकाजी भतीजी, मामाजी, भानजी आदि नाम लेकर गीत गाया जाता है। विदाई की बेला है। दुल्हन अपने पिता, भाई, काका, मामा आदि से क्रमश: पूछती है कि ये जनसमूह क्यों एकत्रित हुआ है ? तो उसे उत्तर मिलता है कि ये बाराती जन तुम्हें ससुराल ले जाने

को तैयार है। दुल्हन पुन: विनती करती है कि इस जन समुदाय को वापस भिजवा दो। उत्तर में उसे समझाया जा रहा है कि पिता के घर से कन्या का विदा होकर ससुराल जाना, विधि का विधान है, यह बदला नहीं जा सकता।

विदाई

हमारी जानकी पाँच बरस की
तो थोड़ो-थोड़ो म्हैयो करावजो,
हमरी रामरामी कयजो
कयजो राणी रूकमणी स, हमरी रामरामी कयजो
हमारी जानकी सात बरस की
तो थोड़ी-थोड़ी रसवई करावजो,
हमरी रामरामी कयजो,
कयजो माता कौशल्या सऽ,
हमरी रामरामी कयजो,
कयजो माता सुमत्रा स,
हमरी रामरामी कयजो

वधू पक्ष द्वारा वर पक्ष से यह विनती की जा रही है कि हमारी जानकी (वधू) बहुत नादान व नाजुक है अत: उसे घर के काम-काज थोड़े-थोड़े करवाना। घर पहुँच कर सभी को हमारी राम-राम कहना।

विदाई

बड़ी लाड़ सऽ पालई पोसी, जरा दुख मत दीजो
संदेसो म्हारी यायेन जी सऽ हाथ जोड़कर कयजो। टेक।
वा छे पढ़ेल लिखेल बईण जी, चूलो मति फुकावजो।
घट्टी फिरानो नई हंई, अंगना मऽ चक्की लगावजो।
खाजा खुरमा पुआ परेठा, चार कावऽ चाय पिलावजो।

वधू पक्ष द्वारा वर पक्ष से हाथ जोड़कर विनती की जा रही है कि हमने कन्या को बड़े लाड़-प्यार से बड़ा किया है, पढ़ाया-लिखाया है। अत: इससे घरेलू कार्य अधिक मत करवाना। उसे सारी सुख-सुविधाएँ उपलब्ध करवाना।

विदाई

बनी का आजाजी खड्या हाथ जोड़।
राम रथ हांक लिया।

बनी का पिताजी खड्या हाथ जोड़।
राम रथ हांक लिया।
बनी माँगनू होय सो माँग, राम रथ थोब दिया
बनी की सासू बनी रे कौशल्या,
राम रथ थोब दिया
बनी का जेठ बन्या रे भोलानाथ,
जेठानी गौरा पारवती
बनी का वर तो बन्या भगवान
देवर लाल लक्ष्मण जी
राम रथ हांक दिया

गीत में दूल्हे को राम, दुल्हन को सीता तथा दुल्हन के पिता, माता, ज्येष्ठ, जेठानी और देवर को क्रमश: राजा दशरथ, कौशिल्या, शंकर, पार्वती और लक्ष्मण की संज्ञा दी गई है। विदाई वाहन को राम रथ की उपमा दी गई है।

विदाई

बईण तो सइवरी पाल पऽ बारा हीराजी उतर्या वो
बईण वो, मिलणू होय सो मिलई लीजे वो
बईण वो, हमरा माथऽ बेसरो जड़ाव वो
तो आमी की सामी कसां मिलां वो
बईण तो पटोलई का पल्लव घोड़ी आड़ा लीजो वो

सहेली, कन्या को कहती है- बहन तालाब के किनारे तेरा भाई आया है यदि मिलना हो तो मिल लेना। इसके जवाब में कन्या कहती है कि हे बहन! मेरे सिर पर बेसर (एक आभूषण) लटका है। मैं आमने-सामने से मिलूँगी तो उसके टूटने का डर है। सहेली सलाह देती है कि उसे पल्ले में बाँधकर अपने भाई से मिल लो और विदाई ले लो।

विदाई

आजाजी थारो मण्डप सम्हाल।
रमैयो सो रमी रह्यो रे।
काकाजी थारो मंडप सम्हाल,
रमैयो सो रमी रह्यो रे।
आयो हुतो सजना को पुत्र।
लखेणी वो लाड़ी लई चल्यो वो।

स्त्रियाँ वधू के दादा, काका, पिता आदि को संबोधित करते हुए कह रही हैं कि अब समधी का पुत्र (दामाद या वर) कन्या (वधू) को ले जा रहा है।

विदाई

रुकमणी खऽ मिल्यो पिताजी को लाड़
लखेणी लाड़ी बाई वाटऽ लगी। टेक।
रुकमणी हातई मिल्यो पिताजी को लाड़।
रुकमणी कऽ मिल्यो माताजी को लाड़।

इसी प्रकार काकाजी, काकीजी, मामीजी, मामाजी आदि के नाम जोड़कर गीत गाया जाता है। गीत का मूल भाव यही है कि पिता, माता, काका और भाई के बीच बड़े लाड़-प्यार से पली-बढ़ी प्यारी सी कन्या ने ससुराल की राह पकड़ ली है।

वधू आगमन

झिलमिल झिलमिल मेहुलो बरसऽ
तो, आँगल कनैयो भींजऽ ओ म्हारी माय जसोदा
आजी जसोदा हठी-हठी पूछऽ
तो, काई-काई दायजो लायो रे म्हारा कुंवर कन्हैया
चरवा भी लायो नऽ ओटलई भी लायो
गंगाल भी आयो नऽ तुक्कस भी लायो
सजना की बेटी परनी लायो, ओ म्हारी आजी जसोदा

स्रोत-निर्मला बाई पटवारे

झिलमिल-झिलमिल बादल बरस रहे हैं। आँगन में वर के रूप में कृष्ण कन्हैया खड़े हैं और भीग रहे हैं। माता जसोदा बार-बार पूछती है-हे कुँवर कन्हाई! तुम दहेज में क्या-क्या लाए हो?

कृष्ण कहते हैं- मैं चरवा, वटलोई, गंगाल और तुक्कस (गंजी) दहेज में लाया हूँ तथा तुम्हारे समधी की बेटी को पत्नी बनाकर लाया हूँ।

बारात लौटने पर

तू निकल वो आजी सपूती नात्यो परनी आयो वो
तू निकल वो माय सपूती छोरो परनी आयो वो
तू निकल वो काकी सपूती भतीजो परनी आयो वो

तू निकल वो भाभी सपूती देवर परनी आयो वो
थारा काम ओ सिराला चढ़्यो हुई गई धन की बेरा वो

सुहागिन नारियों द्वारा दूल्हे की दादी, माँ, काकी, भाभी आदि को क्रमशः पुकारा जा रहा है कि घर से बाहर निकलो और आशीर्वाद दो। दूल्हा विवाह सम्पन्न कर लौट आया है।

कांकण-डोरा

देखियो बाई नऽ सपनू देखियो
श्री कृष्ण जी परण्या छे
काकण दोरीलो बंध्यो रे, काकण दोरीलो बंध्यो
कुंकू केसर बाई जी नऽ लगिण तो लिखाड्या
हीरा पन्ना माणक मोती तोरण्यो बंध्यो
मीरा नऽ सपनूऽ देखियो, बाई नऽ सपनूऽ देखियो
हाथी आया बाग मऽ नऽ आया कुआ बावड़ी
सखी नऽ आई हरि कीर्तन मऽ हुई रई मंगलाचार
मीरा नऽ सपनू देखियो, बाई नऽ सपनू देखियो

स्रोत-सावित्री बाई पाटिल

मीरा बाई ने एक स्वप्न देखा है। उसने स्वप्न में देखा कि श्रीकृष्ण ने विवाह किया है तथा उनकी कलाई में काकण डोरा बँधा हुआ है। मीरा ने देखा कि कुमकुम और केसर लगी विवाह पत्रिका में लग्न का समय लिखा हुआ है। हीरा, पन्ना, माणिक और मोतियों से सजा हुआ तोरण बना हुआ है। बाग में तथा कुआँ-बावड़ी के पास हाथियों का झुंड खड़ा हुआ है। उसकी सखियाँ हरि कीर्तन कर रही हैं तथा मंगल गीत गा रही हैं।

कांकण-डोरा

ऐ तो, दुला जो दुलेन का साई जेवाऽ रे
दूला का आजाजी को मान तलऽ पड्यो रे
दूला का दादाजी को मान तलऽ पड्यो रे
म्हारी एव का आड़ा मऽछिपी रह्यो रे
म्हारा कवला का आड़ा मऽछिपी रह्यो रे
वो तो मांजरी हुई नऽलपी रह्यो रे

स्रोत-निर्मला बाई पटवारे

दूल्हा जब दुल्हिन को खिचड़ी खिलाता है, तो सुहासिनी स्त्रियाँ उसे चिढ़ाती हैं। उसके

साथ हँसी ठिठोली करते हुए गाती है- देखो-देखो दूल्हा-दुल्हन के मुँह में खिचड़ी का कौर दे रहा है। दूल्हे के दादाजी का मान धूमिल हो रहा है। अब वह लाज के मारे हमारे पीछे छुप रहा है। वो भीगी बिल्ली के समान झुक रहा है। घर में हँसी-खुशी का माहौल बन जाता है।

सिंघाड़ा खेलना

चटऽ मसूर की दाल, पट दई चूड़ी गई रे
दूलो पूछऽ बात, दुलेन की माय कां गई रे
ओका ते लाग्या गिराक, बजार मऽ बिक गई रे
दूलो पूछऽ बात दुलेन की काकी कां गई रे
ओका ते लाग्या गिराक, बजार मऽ बिक गई रे
हम घर दुलेन को याव, खरच मऽ उठ गई रे

इसी प्रकार दुल्हन की जीजी, भाभी, मौसी इत्यादि नाम जोड़कर गीत गाया जाता है।

इस व्यंग्यपरक गीत में कहा जा रहा है कि खड़े मसूर की दाल पक चुकी है। दूल्हे के यह पूछने पर कि दुल्हन की माँ, काकी, बुआ आदि रिश्तेदार कहाँ गए? तो उत्तर मिलता है कि उनका सौदा हो चुका है और वे बिक गए हैं। विवाह के खर्च को पूरा करने के लिए उन्हें बेच दिया गया है।

माता पूजन

खोलो किवाड़ी माता, देखों थारी वाड़ी,
दरसन की बलिहारी । टेक।
कब का हो ठांड़ा मैया, कब का हो ऊभ्या,
तोय नही खोलऽ किवाड़ी
खोलो भरी नऽ हमनऽ नायेल लाया,
माता का दर्शन आया।
खोलो भरी नऽ हमनऽ खारिक लाया,
माता का दर्शन आया।

स्रोत-गिरिजा बाई शर्मा

हे माता! तुम अपने मंदिर का द्वार खोलो। हम तुम्हारी बाड़ी देखने आए हैं। तेरे दर्शन करने आए हैं। हमें यूँ ही खड़े हुए कितनी देर हो गई है फिर भी तुमने पट नहीं खोले हैं। हे माता! हम गोदी भरकर नारियल और छुआरे लाए हैं। हम तेरे दर्शन को आए हैं। तुम अपनी बाड़ी के द्वार खोल दो।

कुलदेवी पूजन

माता बाड़ी मऽ रंग बिजारो, कंकु मऽ थाल भर्या वो।
माता का थारो संत पियारो, कुण थारी सेवा करऽ ॥ टेक॥
मोठाजी आई संत पियारो, लाड़ी बहु सेवा करऽ वो।
माता सेवा सदा फल दीजो, सदा हो आनंद करऽ वो।
पगड़ी अमर कर दीजो वो, कलजुग नाव चलऽ वा॥
माता अन-धन अखंड भंडार, चखा दूध भर्या वो।
माता उनखऽ बहुरी पुत्र दीजो, कलजुग नाव चलऽ वो।

हे माता! तेरे मंदिर में विविध रंगों से सजी थालियाँ रखी हैं। सुहागिन नारियाँ माँ से पूछती हैं कि तेरा सर्वप्रिय भक्त कौन है? तू किसकी सेवा स्वीकार करेगी? तो माँ कहती है कि सबसे बड़े भाई मेरे प्रिय भक्त है तथा उनकी पत्नी की सेवा मुझे स्वीकार्य है। नारियाँ माता से घर को अन्न-धन्न, मान-मर्यादा, पुत्रधन, कुल-महिमा तथा अखंड का वरदान देने की विनती कर रही हैं।

देवी पूजन

माता उसकल हुई वो थारी मान,
म्हारी शीतला माता खेलऽ सोगटड़ो ॥ टेक॥
माता नारियेल थोड़ा वो माता बिनती घणी।
माता खारिक थोड़ा वो माता विनती घणी।
माता सुपारी थोड़ा वो माता विनती घणी।
माता कपूर थोड़ा वो माता विनती घणी।

हे माता! हम तुझे क्या अर्पित करें। हम तेरी पूजा का विधान नहीं जानते। हम अपनी शृद्धा से नारियल, छुआरे, सुपारी कपूर आदि लाए हैं। कृपा कर इन्हें स्वीकार कर हमारी मन्नत पूर्ण करें।

माता पूजन

गाड़ी जूती म्हारी विन्ध्यासनी आई, गाड़ी खऽ कुण छुड़ावऽ॥ टेक॥
गाड़ी छुड़ावऽ मोठाजी भाई गवरास्या, वो थारी महिमा बढ़ावऽ।
गाड़ी की टूटी नाड़ीवो माता, धवल्या न लियो वो सिंगारऽ।
गाड़ी कहे मखऽ छत्र घड़ावो, कुहासिनी पेलो पेरावऽ।
गाड़ी जुपी म्हारी इन्द्रासेनी आवऽ या गाड़ी कुण छोड़ावऽ।
गाड़ी छोड़ावऽ अमुक भाई गवरास्या, वो थारी महिमा चलावऽ।

माता विन्ध्यवासिनी और इन्द्रासनी देवी बैलगाड़ी पर सवार होकर पधार गयी हैं। घर के वरिष्ठ जन देवियों की अगवानी करते हुए उनकी महिमा का बखान कर रहे हैं। देवियों के लिए पीला वस्त्र, छत्र और बैलों का शृँगार कर उन्हें प्रसन्न करें।

मसाण्या

सीताराम सुमर लेवो, तजि देवो सब काम
अरे, सीताराम सुमर लेवो तजि देवो सब काम। टेक ।
वायो सोनु नहीं उपजे, मोती लागे न डाल
भाग बिना कुछ नहीं मिलऽ, तपस्या बिन राज।
सपना मऽ बहु धन मिल्यो, बांध्यो गजराज
फजर भई उठ जागिया, तेरे वही रे हवाल।
राजा दशरथ की अयोधिया, जलम्या रघुवीर
माता जिनकी कौसल्या, लक्ष्मण बलवीर।
आस करे बैकुण्ठ की, करणी मऽ हो काचो
धन हो सिंगाजी अरज करे, कई गया शब्द में साचो।

स्रोत–दगडू गप्पल

हे मन! व्यर्थ के सांसारिक कामों को छोड़कर परमात्मा का नाम स्मरण कर। ग़लत कार्यों को करने से हाथ कुछ नहीं लगता, जैसे यदि सोने को जमीन में बोया जाये तो वह वृक्ष रूप में होकर फलेगा–फूलेगा नहीं। इसी प्रकार मोती वृक्ष की डाल पर नहीं लगता। उसे पाने के लिये सद्प्रयत्न ही करना पड़ेगा। तपस्या किये बिना किसी को अनायास ही राज्य प्राप्त नहीं हो जाता। हमारे कर्मों पर आधारित भाग्य के बिना हम कुछ भी प्राप्त करने में असमर्थ हैं।

यह सांसारिक सुख–सुविधाएँ व धन–सम्पन्नता ठीक वैसे ही है जैसे रात्रि में स्वप्न में बहुत धन का मिलना एवं वैभव के प्रतीक हाथी का घर में बाँधा जाना, किंतु सुबह नींद खुलने पर यथार्थ में कुछ नहीं। तो हे मन! जो सत्य एवं यथार्थ है उस हरिनाम को प्रतिपल स्मरण करना मत भूल। राजा दशरथ की राजधानी अयोध्या में माँ कौशल्या की कोख से ईश्वर ने रामचन्द्र के रूप में अवतार लिया, जिनके छोटे भाई लक्ष्मण जी थे। यह सब तपस्या और कर्मों का ही प्रभाव था। हे मन! तू स्वर्ग लोक की चाह करता है जबकि तेरे कर्म अभी कच्चे और अधूरे हैं।

मालवा के संस्कार गीत

कृष्णा वर्मा
सम्पर्क–एल.आई.जी. मुनि नगर तालाब के पास, उज्जैन

मालवी गीत में संस्कार

संस्कार का अर्थ होता है– शुद्धीकरण, स्वच्छ करना या माँजना। मूलत: यह दो प्रकार का होता है। बाह्य संस्कार और अन्त: संस्कार। समाज में दोनों प्रकार के संस्कार अपेक्षित हैं, तभी व्यक्तित्व निखरता है। अपने-अपने सामाजिक संस्कार सबके होते हैं। आहार, निडा, भय और मैथुन तो समस्त प्राणियों का स्वभाव होता है। इनसे आगे बढ़कर अपने जीवन को सुसंस्कृत करने के जो विभिन्न प्रयास किये जाते हैं। वे संस्कार हैं। जीवन सुचारु हो यही तो लक्ष्य है। जीवन सुखमय हो, आनन्दमय हो, यही तो चाहते हैं सभी। प्राचीन काल में ऐसे सोलह संस्कार प्रमुख बताये गये हैं। उनकी संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती गयी। उनमें से कुछ प्रधान रहे– गर्भाधान, पुंसवन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकरण, उपनयन, केशान्त (डाढ़ी बनवाना), विवाह, अंत्येष्टि आदि। ये पारम्परिक संस्कार हैं। इनसे जनजीवन गुण सम्पन्न हो जाता है। जन्म से तो तभी अशुद्ध होते हैं। इनसे जनजीवन गुण सम्पन्न हो जाता है। जन्म से तो सभी अशुद्ध होते हैं। परन्तु संस्कार से वे शुद्ध होकर नया रूप या नया जन्म ही धारण कर लेते हैं।

भारत में अनजाने काल से स्मृतियों तथा पुराणों में संस्कारों की चर्चा हो रही है। पूरे समाज के कुछ संस्कार होते हैं। कुछ क्षेत्रीय संस्कार होते हैं। कुछ जातिगत संस्कार होते हैं। परन्तु कुछ ऐसे संस्कार होते हैं जो पूरे भारत में जाने और माने जाते हैं। चाहे उनके आचरण में छोटा-मोटा क्षेत्रीय भेद रहता हो।

मालवा भारत का मध्यदेश है। अत: उसके आचरण में सबका समन्वय हो जाना स्वभाविक है। ये संस्कारगत आचरण लोक में देखा जाता है और लोक साहित्य में अभिव्यक्त होता है। विशेषत: लोकगीतों के माध्यम से नारियों के कण्ठों में ये संस्कार गूँजते रहते हैं। इन गीतों में पारम्परिक सभी संस्कारों के गीत नहीं हैं। अपितु लोकव्यापी जो अवशिष्ट कतिपय संस्कार हैं, उनके ही गीत हैं। उनमें भी कुछ संस्कारों के लोक रूपान्तर हो गये हैं। गीत भी

तदनुरूप ही मिलते हैं। जैसे पुंसवन संस्कार आदि के गीत तो नहीं मिलते परन्तु भैरव से यह प्रार्थना अवश्य की जाती है कि मुझे एक बालक दे दो भेरूजी! एक बालक न होने से मुझे कितने-कितने ताने नहीं सुनने पड़ते।

एक बालुड़ा के कारणे सासुजी दे ओलम्बो।

इस उपालम्भ से मुक्ति पाने के लिए इच्छापूर्ति की अपेक्षा तो निरन्तर रहती है।

उकी मनछा पूरण करजो रे खेजड़ी का भेरूजी।

जापा के गीत वास्तव में सन्तान प्राप्ति की नारी की उत्कट अभिलाषा की बहुरंगी अभिव्यक्ति है। उसे अपना बच्चा प्यारा लगता है-

लाल मोय भोत नीको लागे।
वे देराणी हमारे मन भावे वे दस दिन रसोई निपावे। इत्यादि

सूरजपूजा होती है। शिशु के लिए बहिन उपहार या साँजी लाती है। गीतों में उसे भी पिरोया गया है-

झोली में चमचम की नाना की टोपी रेसम की।

थोड़ा बड़ा हुआ कि उसकी पढ़ाई हेतु उपनयन संस्कार किया जाता है। पढ़ लिखकर बच्चा शिक्षित हो जाए, पंडित हो जाए यही तो आकांक्षा रहती है, माता-पिता की।

काशी का वासी-पंडित हुई घर आवो जी।

फिर विवाह की तैयारी! वर और वधू दोनों रत्न हैं। जोड़ी भली जमेगी।

साजन तमारा कुँवर ने हमके बतावजो रे।
साजन हमारा कुँवर रो काई देखणो रे।
साजन उनकी माता रतन उगालियो रे।
साजन हमारी दीयड़ को काँई देखणो रे॥

विवाह जीवन का महत्त्वपूर्ण अवसर है। उसकी कई छटाएँ हैं। उन सभी छटाओं को उल्लासमय गीतों से मालवी में प्रकट किया गया है। और जब दुल्हन विवाह कर वर-घर पर आती है तो मानो चन्दन चौक में मोती बिखर गये-

मोती वेराणा चन्दन चौक में हो राज।

और फिर अन्तिम संस्कार-

जीवड़ो जावेगा प्राणी एकलो कोई नी चालेगा साथ।
आड़ी नदी से ऊबट चालणो जाणो हे पेले पार॥

इस प्रकार मालवी के संस्कार गीतों में जन्म से मृत्यु तक की पूरे जीवन की झाँकियाँ झलकती हैं, छलकती हैं।

जापा

गोरी पाना सरीका पीला पड्या, ये तो फुलड़ा जूं रया कुमलाय
बालम बिन वी दन कुण जाणे
गोरी की सासु नणद पाछे पड़ी वी तो नित की खवाड़े खाटी राब
बालम बिन वी...........
गोरी का देवर जेठ पाछे पड्या वी तो नित उठ वेद बुलाय
बालम बिन वी...........
यो तो कांकड आयो बेटो वेद को डेली में आया देवर जेठ
बालम बिन वी...........
यो तो नाड़ी देखे हे बेटो वेद को, ई तो हाजर उषा देवर जेठ
बालम बिन वी...........
गोरी ने ताव नी नी तेजरी यो तो लगे पलंगीया या रो रोग
बालम बिन वी...........
यो तो सक्कर फांको बेटा वेद का म्हारो हरक्यो रे सोई परवार
बालम बिन वी...........
यो तो मीठो जीमो रे बेटा वेद का म्हारो हरक्यो सोई परवार
बालम बिन वी...........

महिला गर्भवती होने पर तब तक बीमार जैसी रहती है, जब तक उस बच्चे में जान नहीं आ जाती। सबसे पहले यह गीत गाया जाता है।

घर की महिलाएँ बहू से कहती हैं– बहू तुम पीली क्यों हो गई हो। सास–ननद पीछे पड़ गईं और खट्टी चीज खिलाने लगीं। देवर–जेठ वैद्य को बुला लाये। वैद्य ने खुशियों की खबर सुना दी कि तुम्हारे घर नया मेहमान आने वाला है। घर के लोग इतने खुश हुए कि वैद्य को मीठा खिलाया। यह बात सिर्फ पति ही समझ सकता है और कोई नहीं।

गोद भराई

तांबा का हंडा में तातो सो पाणी भुकेता अइगी अगरनी
रोटी ने बाटी केता अइगी अगरनी
बुवारो नीकालो बउवड़ लागो थें नीका
खूणे खूणे कचरो ओटो ई लक्खण खोटा
पाणी जावो ता बउवड़ लागो थें नीका
माथे बेड़ो बातां लागो ई लक्खण खोटा
रसोड़ो करो तो बउवड़ लागो थें नीका
खारो मोलो चाखो रांदो इ लक्खण खोटा
मेंदी लगावो बउवड़ लागो थें नीका
खाता खाता हात निरखो ई लक्खण खोटा
पील्यो ओड़ो थें बउवड़ लागो थें नीका
पाछा फरी फरी नीरखो इ लक्खण खोटा
चीके बेठो तो बउवड़ लागो थें नीका
बीराजी से बातां लागा ई लक्खण खोटा
मेलां पधारो बउवड़ लागो थें नीका
सासु नणंदरा कारां करो ई लक्खण खोटा

बहू तुम्हारी गोद भराई की रस्म का समय आ गया है। आलस्य मत करो, तुम झाड़ू निकालो तो अच्छी लगती हो, कोने में कचरा इकट्ठा मत करो, यह लक्षण अच्छे नहीं हैं। पानी भरने जाओ तो अच्छे लक्षण हैं, माथे पर बेड़ा और रास्ते में बातें करने लगो, यह लक्षण अच्छे नहीं हैं। रोटी बनाओ तो अच्छी लगती हो, सब्जी खारी होने के डर से चखो, यह लक्षण अच्छे नहीं हैं। मेहंदी लगाओ तब अच्छी लगती हो, मेहंदी के हाथों को बार-बार देखो, यह लक्षण अच्छे नहीं है। पीली साड़ी (बदांगल) पहनो तो अच्छी लगती हो, पीछे फिर-फिर कर देखो, यह लक्षण अच्छे नहीं हैं। चौके में बैठो तो अच्छी लगती हो, काम के वक्त भाई से बात करो, यह लक्षण अच्छे नहीं हैं। महल में आओ तो अच्छी लगती हो, सास ननद की बुराई करो, यह लक्षण अच्छे नहीं हैं।

गोद भराई

पेलो मास गोरी धन लागो
दूसरों मास गोरी धन लागो
तो आलें कॅवले मन जावां लागो
कुखे पत्र सरी धन लागो
तीसरों मास गोरी धन लागो

चाथों मास गोरी धन लागो
राब दही मन जावां लागो
कुखे पुत्र..........
लापसरी मन जावां लागो
राब दही री साद भलेरी
लापस री साद भलेरी
तो सुसराजी साद पुरावा लागा
पाँचवों मास गोरी धन लागो
सातवों मास गोरी धन लागो
लिम्बुड़े मन जावां लागो
घेवरीये मन जावां लागो
लिम्बुड़ा री साद भलेरी
घेवरीया री साद भलेरी
ससुरजी साद पुरावा लागा
सायब जी साद पुरावा लागा
पेलो मास गोरी धन लागो
दूसरों मास गोरी धन लागो
तो आलें कॅवले मन जावां लागो
कुखे पुत्र.........

महिला के गर्भवती होने पर जब उसकी गोद भरी जाती है, तब यह गीत गाया जाता है। पहला मास बहू को चढ़ा है, बहू गर्भवती हुई। घर में नया मेहमान आने वाला है, इससे बढ़कर धन उस बहू के लिये और क्या हो सकता है। घर में खुशियाँ ही खुशियाँ छा गई हैं। ससुरजी उसकी इच्छा पूरी करने में लगे हैं कि बहू को क्या खाने को चाहिए? नीम्बू, केरी खाने को उसका मन करने लगा। घर के बड़े उसकी हर इच्छा पूरी करने में लगे।

गोद भराई

धन ने माथे मोड़ी ने ओड़ी घांटड़ी जी
धन तो जइ बेठा सुसराजी की गोद
अवसर मूंगा........
सुसरा जी अगरणी करया,
ओ बिना नइं तरे यो तो अवसर चूक्यो नी जाय
अवसर मूंगा........
बउ के माथे मोड़ी ओ ओड़ी

घांटड़ी बउवड़ जइ बेठा जेठ जी री गोद
अवसर मूंगा........
जेठ जी घेवर बटाया बिना
नी सरे यो तो अवसर चूक्यो नी जाय
अवसर मूंगा........
बउ ने माथे मोड़ी ओ ओड़ी
चुनड़ी देवर पील्यो रंगाया बिना नई सरे
देवर बाजाओ बजाया बिना नई सरे,
यो तो अवसर चूक्यो जाय
अवसर मूंगा........
बउ के माथे मोड़ी ने ओड़ी घांटड़ी,
बउवड़ बेठा बाइजी री गोद
अवसर मूंगा........
बइसा साद पुराया बिना नी सरे
बइसा अवसर चूक्यो नी जाय
अवसर मूंगा........

मुझसे ब्याह रचाने पिया आप सिर पर मौर बाँधकर आये और मैंने आपकी लाई हुई घाटड़ी (चुन्नी) पहनी, अब गोद भराई का अवसर आया है। गोद भराये बगैर नहीं चलेगा। चुन्नी पहनकर बहू जेठजी की गोद में जा बैठी। जेठजी से कहा- जेठजी! अब घेवर बटाया (खाद्य पदार्थ) बगैर काम नहीं चलेगा। बहू देवरजी से कह रही है- देवरजी! मुझे पीली चुन्नी लाकर दो, उसके बिना काम नहीं चलेगा। देवरजी! बाजा बजाओ, बजाये बिना काम नहीं चलेगा। बहू ने चुनरी पहनी और सास की गोद में जाकर बैठ गई। कहा- सासूजी! मेरी गोद भराई रस्म पूरी करो, इस रस्म के बिना काम नहीं चलेगा, यह अवसर बहुत ही मूल्यवान है इसे चूकना नहीं है।

गोद भराई

पामणा तो हांलू चालू हुई रया
सिद्धूजी तो चालवा नी दे
पिरत लगाड़ी वो प्यारा पांमणा
पामणा तो ढोल्या में उदां पड़ी रया
प्रेमनाराण जी तो चालवा नी दे
पिरत लगाड़ी वो.......
पामणा तो ठेल मांय पड़ी गया
जोगेन सिंग तो चालवा नी दे

पिरत लगाड़ी वो ....
पामणा तो जलेबी झाड़ी रया
पामणा तो कुल्लड़ चाटी रया
भेरूलाल जी तो चालवा नी दे
पिरत लगाड़ी वो.......

गोद भराई करके मेहमान जब विदा होते हैं, तब यह गीत गाया जाता है।

मेहमान थक गये हैं। सिद्धूजी मान नहीं रहे हैं कि मेहमान की हालत ठीक नहीं है। यह कैसी प्रीत लगाई है। मेहमान पलंग पर औंधे पड़े हैं। प्रेमनारायण तो मानने को तैयार नहीं हैं। यह कैसी प्रीत लगाई है। मेहमान तो ठेल (गायों को पानी पीने की जगह) के अन्दर गिर गये। योगेन्द्र मानने को तैयार नहीं हैं। मेहमान तो जलेबियाँ खा रहे हैं, कटोरा चाट रहे हैं, यह कैसी प्रीत लगाई है। (मेहमानों को गंजेड़ी, नशेड़ी आदि बोलकर हँसाया जाता है, विशेष रूप से समधियों को)

संदेशा

उड़-उड़ रे म्हारा लाल पेरवा, नगर बधावो जाजे रे
गाम नी जाणू ने नाम नी जाणू, कणी घर जाऊँ बधावो रे
वा रतनारी दियड़ी तमारी सीता बाई दीनड़ो जायो रे
अणी रे परेवा ने कंइ-कंइ देस्या धन-धन लायो बधावो रे
पांच रुप्या ने पानरा बिड़ला सोवन मुरकी काना रे
उड़-उड़ रे म्हारा लाल..........
गाम अयोध्या ने नाम दसरथ जी, वणी घर जाय बधायो रे
वा रतनारी कुल बऊ तमारी लाड़ी बऊ दीनड़ जायो रे
अणी रे परेवा ने कंइ-कंइ देस्या धन-धन लायो बधावो रे
पांच रुप्या ने पानरा..........
संसार रो सुख आज देख्यो, खोले दिनड़ियो धरावीयो
पांच बधावो म्हारा जोसी ने दीजो, नाना रो नाम धरावसी
छटो बधावो म्हारा ढोली ने दीजो पड़ोसी ने दीजो
जुग-जुग जीवजो जोसी हमारा, नाना रो नाम धरावीया
जुग-जुग जीवजो नणद हमारा कंवले साती पूड़ा मांड़िया
जुग-जुग जीवजो पड़ोसन हमारा दन दस मंगल गावीया
जुग-जुग जीवजो ढोली हमारा, दन दस ढोल घोरावीया
अम्बे तो खम्बे बले ओ दीचला जणे चतरभुज जनमिया
संसार रो सुख आज देख्यो खोले हलरिया धरावीया

जापा का संदेश लड़की के ससुराल पहुँचाया जाता है।

हे मेरे पक्षी! नगर गाँव में जा और मेरा यह संदेशा देकर आना कि आपकी बहू ने बालक को जन्म दिया है। पक्षी कहने लगा– मुझे गाँव का नाम नहीं मालूम, व्यक्ति का नाम नहीं मालूम, कहाँ जाऊँ ? नाम दशरथजी, गाँव अयोध्या। पक्षी बधावा देने गया तो पक्षी को बहुत धन्यवाद मिला, पान का बीड़ा मिला, धन दौलत मिली और सम्मान मिला।

जापा

जाजौ पिया तुम डूंगरी कंई बांस तो लजो हरिया बांस रे
मादल रलक्यो जाय रे
जणी को घड़ावां पिया ढोलियो कांई रेसम बाण बुणाया रे
मादल रलक्यो जाय रे
आप तो पोड़्या गोरी ढोलियों कांई म्हाने बी छादरी बताव रे
मादल रलक्यो जाय रे
आप तो पिवो गोरी लापसी कांई म्हाने बी चाटू चटाव रे
मादल रलक्यो जाय रे
आप तो जिम्मो गोरी लाडुला कांई म्हाने बी चुरो चखाव रे
मादल रलक्यो जाय रे
गेला पियूजी तम बावला लाडुला रा लागा दाम रे
मादल रलक्यो जाय रे
आप तो ओड़ी गोरी चूनड़ी कांई म्हाने बी लटको बताव रे
मादल रलक्यो जाय रे
आप तो पेर्या गोरी चूड़लो कांई म्हाने बी लटको बताव रे
मादल रलक्यो जाय रे
गेला पियूजी तम बावला चूनड़ का लागा घणा दाम रे
चूड़ला रा लागा घणा दाम रे म्हारा बीराजी का लागा दाम
मादल रलक्यो जाय रे
आप तो खेलावो गोरी बालुड़ो थाकी गोदायो के
नानक्यो म्हाने बी मुखड़ो बताव रे
गैला पियूजी तम बावला नानक्या नी आई घणी पीड़ रे
मादल रलक्यो जाय रे

जापा गीत के साथ यह गीत गाया जाता है।

हे पिया! आप पहाड़ों पर जाकर वहाँ से बाँस लाना, उसका पलंग बनवायेंगे, रेशम की

डोर से उसको बुनवायेंगे। अब बालक जन्म लेने का समय नजदीक आ रहा है, किसी भी समय बालक जन्म ले सकता है। इसी प्रकार अन्य उपयोगी वस्तुओं को मंगाने की बात कही गयी है।

जापा

माथा ने भम्मर घड़ाव जो जी
टीको रतन जड़ाव
सुसराजी का राज में,
अगरनी कराव जी राज
काना ने झालज घड़ाव जो जी,
झुमड़ा रतन जड़ाव
सुसराजी का राज में,
अगरनी करावो जी राज
सासु जी का राज में,
घेवरिया छंटाव जी राज
बइंया ने बाजूबंद लावजो जी
झुमणा रतन जड़ाव
गजरे मुजरो लगाव
सुसरा जी का राज में,
अगरनी कराव जी राज
सुसरा जी का राज में
घेवरिया छंटाव जी राज

जापा के गीत पाँच दिनों तक गाये जाते हैं, उसमें यह गीत भी गाया जाता है।

हे पिया! मुझे सिर के लिए भम्मर बनवाओ, कानों के लिये झालज बनवाओ तथा मेरी बाँहों के लिये बाजूबंद लेकर आओ। मेरे ससुरजी का राज है, उनके राज में मेरी गोद भराई करवाओ। मेरी सासूजी के राज में घेवर मँगवाकर सब को बँटवाओ।

जापा

म्हारा माथा ने भंवर घड़ावो गाड़ा मारूजी हां हो झीणा मारूजी
चकरी को चूड़ो रायचन्द बंगड़ी सोना की
म्हारा काना ने झालज घड़ावो गाड़ा मारूजी हां हो झीणा मारूजी
चकरी को चूड़ो..........
में तो थांई देखां थांई देखां जीवा गाड़ा मारूजी हां हो झीणा मारूजी
चकरी को चूड़ो ....

में टांक भर्यो अन खावां गाड़ा मारूजी हां हो झीणा मारूजी
चकरी को चूड़ो ....
में तो ओस झर्यो पाणी पीवां गाड़ा मारूजी हां हो झीणा मारूजी
चकरी को चूड़ो.........
अतरो सुणता आया गोरी रा भरतार, थें पियो नी सुवागणा पीपलो
पियुजी दोज म्हारे चन्द्र बदन दोइ होट
पिपला मूल लागे चरपरो
गोरी लावां लावां थापा ऊपर लोड़ी सोक, जोथें नी पियो पीपलो
में घट-घट पिवां पीपलो

बालक जन्म लेने के सवा माह बाद माँ का चूड़ा बदला जाता है, तब यह गीत गाया जाता है।

हे पिया! मुझे चकरी का चूड़ा (नगोसे भरा) और बाँहों के लिये बगड़ी सोने की बनवाना, मुझे कानों के लिये झालज बनवाना। मैं तुम्हें देख कर ही जी रही हूँ। मैं खाना भी थोड़ा सा खाती हूँ, पानी भी गरम पीती हूँ। इतना सुनने के बाद पति आये और कहने लगे- तुम बहुत कमजोर हो, पीपलामूल का पानी पियो। पिया! पीपलामूल मुझे कड़वा लगता है। पति कहते हैं- जो तुम यह दवाई नहीं पियोगी तो मैं तुम्हारी सौत ले आऊँगा। पत्नी कहती है- नहीं, मैं घूँट-घूँट करके पी लूँगी।

जापा

बाई वो हालरिया ने आवे अरवो भान
बऊ सुख आवे नींद डली
बाई वो सासुजी थारा घोटा घुटईने लाया
सुसराजी उबा बिनवे, सुसराजी उबा बिनवे
बाई वो बउवड़ म्हारा मोटा घर की दीय
तम पियो वो सुवागण पीपलो
बाई वो जेठाणी थारा घोटा घुटई ने लाया
जेठजी उबा बिनवे, जेठजी उबा बिनवे
बाई वो बउवड़ म्हारा मोटा घर की दीय
तम पियो वो सुवागण पीपलो
ससुरजी दीय म्हारो चन्द्र बदन होई होट
पीपला मूल लागे चरपरो
जेठजी दीय म्हारो चन्द्र बदन दोई होट
पीपला मूल लागे चरपरो

जब बच्चा पैदा होता है तो दवाई के तौर पर घरेलू इलाज, उसे पीपला पिलाया जाता है, तब यह गीत गाया जाता है। जापा के लड्डू में पीपलामूल जरूर डाला जाता है।

बच्चे की माँ कह रही है कि पीपलामूल के लड्डू कड़वे लगते हैं। सास कहती है- पीपलामूल के लड्डू खाओगी तो माँ को दूध अच्छा आयेगा। दूध बच्चा पियेगा तो उसे गहरी नींद आयेगी और नौ माह तक बच्चे को पेट में रखा, वह अकड़न पीपलामूल से निकल जायेगी। तुम जरूर पियो यह पीपलामूल, उससे तुम्हारा शरीर अच्छा रहेगा।

जापा

गोदड़ी ओड़ीने नाना की दादी मां नाची
कंई-कंई रोल मचाई वो गोदड़ी रंग लागी
गोदड़ी ओड़ीने नाना की काकी मां नाची कंई
कंई-कंई रोल.........
गोदड़ी ओड़ीने नाना की भुंवा मां नाची
कंई-कंई रोल.........
गोदड़ी ओड़ीने नाना की मामी मां नाची
कंई-कंई रोल ....
गोदड़ी ओड़ीने नाना की नानी मां नाची
कंई-कंई रोल ....
गोदड़ी ओड़ीने नाना की ब्याण मां नाची
कंई-कंई रोल.........
गोदड़ी ओड़ीने ब्यायजी नाच्या
कंई-कंई रोल ....

बच्चे के जन्म के बाद तो उसकी छोटी-छोटी गोदड़ी लेकर (कतल्ये) मजाक के तौर पर यह जच्चा गाई जाती है।

बच्चे की दादी माँ छोटी गोदड़ी सिर पर रखकर एक दूसरे को ओढ़ाकर नाचती हैं, दूसरी महिला को नाचने के लिये उठाती हैं। बच्चे के मूत्र की गोदड़ी एक दूसरे के सिर पर डालकर तथा एक दूसरे के पति का नाम लेकर नाचती हैं कि ब्यायजी भी नाचे हैं। खुशी के मारे सभी नाचते हैं।

जापा

हो म्हारा सार खेलन्ता नाय पासा दुर करोजी म्हारा राज
हो म्हारी चन्दा वरणी नार थारे कंई वो दु:खेजी म्हारा राज

हो पिया लाज सरम की है बात तमारा से कंई केवा जी हां
हो राजा झीणो सो घुंगट काड़ पिया अगाड़ी के दियो जी हां
हो राजा कसमस दुखे पेट कमर मांय आण बुजे जी हां
हो पिया लीली घोड़ी असवार दाई ने लावो दौड़ के जी हां
हो राजा पुछे पाणी की पणीयारी छाणा की छणीयारी जी हां
दाई रो घर रे कैसो जी हां
हो राजा सुरज सामी पोल आंगण एलची जी हां
हो राजा दाई काते झीणो सूत खोंला मांय पूत
सकुन भला हुआ जी हां
हो राजा झरमर बरसे मेय भिजें म्हारी चुनड़ी जी हां
हो राजा दाई ने कामली ओड़ावो नी आपे चालो अगाड़मां
हो राजा रपट पड़या म्हारा पांवहो दाई ने थे घड़ले असवार
पंगा तो म्हे चलां जी हां
हो दाई जो म्हारे जनमेलो पूत घड़वा थारे तीमन्यो जी हां
हो दाई जो जनमेली म्हारे दीय ओड़ावा थारे चूनड़ी जी हां
हो दाई डली मायॅ चतरभुज जनम लियो जी हां
हो राजा देवर जेठ दाई ने दो धकको जी हां
हो राजा अगवाड़े ब्याणी रे गाय पछवाड़े कुतरी जी हां
हो राजा अगवाड़े बेराणा मूग दाई दारी रपट पड़े जी हां
हो राजा नुगरी हालरिया री माय निसर्यो ने बिसर गई जी हां

बच्चे की माँ को पीड़ा होती है, तब यह गीत गाया जाता है।

पत्नि-पति से कह रही है- हे पिया! चौपड़ खेलना तुम बंद करो। मुझे अब बालक के जन्म का समय आ गया है, तुम दाई को बुलाकर लाओ। पति को दाई का घर मालूम नहीं रहता। पानी की पनिहारी से पति पूछता है कि- दाई का घर कहाँ है? पनिहारिनें कहती हैं कि सूर्य उगता है उसके सामने दाई का आँगन है, वहाँ वह सूत कातती है। उसके आँगन में इलायची का पेड़ है, वहीं दाई तुम्हें मिलेगी।

जापा

बाई वो ताम्बा केरी तोलड़ी मंगाव
म्हारे रुपा वरणी घुँगरी
बाई वो तेड़ो-तेड़ो नावीड़ा री नार
म्हारी नगर बटाओ घुंगरी

बाई वो दीजो-दीजो ऐले पेले पार
नणदल घर मत दीजो घुंगरी
बाई वो नावीड़ा री असल गवांर
नणदल घर दई आयो घुंगरी
बाई वो पियूजी से लड़ीया आंखी रात
कोई जगाड़ो आंखी रात
म्हारी पाछी लई दो घुंगरी
बाई वो उठो बालम लीलड़ी पलाणो
थारी सांड़ली सिनगारो
नणदल से लाओ घुंगरी
बाई वो भावज थारी ओछा घर की नार
वां पाछी मांगे घुंगरी
बाई वो आदी थारा बालुड़ा समजाय
म्हारा भानेजा ने बीलमाव
म्हारे आदी दइदे घुंगरी
बीरा रे बालुड़ा ने लाडु दई बिलमाओ
म्हे पेड़ा दई रिझांवा थारी सगली ले घुगर
बीरा रे म्हारे आंगण गंगा जमना खोब
हु नत की रांदु घुंगरी
वीरा जो हु होती नरघबनीया री नार
थारी कां से लाती घुंगरी
वीरा से आयो आयो राखी को तेवार
थारी राखी कुण बांदसी
बाई वो म्हारे हे या राठोड़ारी रीत
म्हारी साली राखी बादसी
बाई वो आयो आयो भाणेज रो ब्याव
थारे मामेरो कुण लावसी
वीरा रे म्हारे हे यो मुंडे बोल्यो वीर
म्हारे मामेरो लई आवसी
वीरा रे तम तो हो जो समंदरिया रा हंस
म्हारी भावज सेर्या मायं री कुत्री
वीरा रे लईजा थारी सगली घुंगरी

जापा गीत और जापा के समय घूगरी गीत भी गाया जाता है। गेहूँ की घूगरी उबाली जाती

है, उबालते समय थोड़ा-सा गुड़ डाल दिया जाता है। वह घूगरी सब रिश्तेदारों में बाँटी जाती है।

पत्नी पति से कहती है कि यह घूगरी सब दूर बाँटना, पर ननद के घर मत देना। अगर दे दी है तो वहाँ से वापस लेकर आना। नाई की पत्नी ननद के घर भी दे आई है। पिया! तुम जाओ और घूगरी वापस लेकर आओ। भाई जाता है और बहन से कहता है- तेरी भाभी वह घूगरी वापस मँगवा रही है। बहन तू ऐसा कर कि आधी घूगरी रख ले और आधी घूगरी वापस दे दे। बहन कहती है- भाई! मेरे घर में अन्न-धन का भण्डार भरा है, तू तेरी घूगरी सब वापस ले जा।

जच्चा

को तो जच्चा तमारे भम्मर घड़ावां
कोयल बोली अनार, को दिल बोर से राजी
कईं वो करांगा भावज झूमणा
अई हे हुलरिया री पीड़
के दिल बोर से राजी
अई वो नानरिया री पीड़
के दिल बोर से राजी ..... कईं वो
हां तो मेली हे जरी को दुपट्टो
जोगेन्द्र लाल डूगर जावे
हांता में गुलाब की छड़ी ..... कईं वो
नीचे बिछावो जरी को दुपट्टो
झरमर झूड़्या हे बोर
दिल बोर से राजी ..... कईं वो
बोर जो लई घरे वो आया
लो अलबेली या बोर
कई वो करांगा तमारा झाडूल्या बोर ने
अई हे नानारी पीड़
दिल बोर से राजी ..... कईं वो

जच्चा-जापा गीत के साथ यह गीत भी गाया जाता है।

भाभी कहती हैं कि- तुम कहो तो तुम्हारे लिये गहने बनवा दें। जच्चा कहती है- नहीं भाभी! मुझे बच्चे की पीर हो रही है, मुझे बेर खाना हैं। उसके पति तुरन्त जरी का दुपट्टा लेकर बेर तोड़ने गये हैं। और बेर तोड़कर पत्नी को दिया। पत्नी कहने लगी- अब तो बच्चा घर में आने का वक्त आ गया है, अब बेर खाने की भी इच्छा नहीं है।

जच्चा

मोहर लई दई मां का जाजो के धन का नायकजी ....
म्हारे आवतो सो दीनड़ झेले म्हारा राज, मोहर पाछी लई दीजो
तम सुणो तो सई ओ अलबेली का नाय .... मोहर पाछी लई दीजो
म्हारे रुपये ब्याज चड़ेगा म्हारा राज .... मोहर पाछी लई दीजो
मोहर लई सासुजी के जाजो के धन का नायकजी
म्हारे कंवल पटोली में सेले म्हारा राज .... मोहर पाछी लई दीजो
म्हारे रुपये ब्याज बड़े हे म्हारा राज .... मोहर पाछी लई दीजो
मोहर लई जेठाणी के जावजो के धनरा नाय जी
मोहर लई देराणी के जावजो के धनरा नाय जी
म्हारे फुंको चड़ावे म्हारा राज, मोहर पाछी लई दीजो
म्हारे पड़दा में पलंग बिछावे म्हारा राज
मोहर पाछी लई दीजो

जापा गीत के साथ जच्चा गाई जाती है। हे पिया! आप दाई माँ के पास जाना। मेरे बालक का जन्म वही करायेंगी। सासु को मत बुलाना और जेठानी को मत बुलाना। वे खूब खर्च करवायेंगी। इतना खर्चा हम नहीं करें, यही पैसा हम बचायेंगे, जो हमारे काम आयेगा, उसका ब्याज बढ़ेगा। हे पिया! मेरे लिये दवाई वगैरह भी आप ले आना। आप मेरा पलंग परदे में बिछा देना और मेरी मोहर वापस ला देना।

जन्म

पस भर मोती में संग चिया, पस भर मोती में संग चिया
दीजो रे उनी दाई की हात, समचे-समचे चतरभुज जनमियां
दाई रे आवतो सो दिनड़ झेल, समचे-समचे ....
सासु ए कंवर पटोल्यो में झेलो, समचे-समचे ....
पस भर मोती में संग चिया, पस भर ....
दीजो रे उस जेठीणी रे हात, म्हारी देराणी रे हात
समचे-समचे ....
जेठाणी ओ चखे फुंको चड़ाय देराणी ये परदा में पलंग
समचे-समचे ....
पस भर मोती में संग चिया, पस भर ....
दीजो रे म्हारा नणदल रे हात, म्हारी पड़ोसन रे हात
दीजो रे उना ढोली रे हात, उना जोसी रे हात
समचे-समचे ....

नणदल ओ कंवले साती पूड़ा मांड़ो, पड़ोसन ए दन दस मंगल
गावे जोसी ओ नाना रो नाम धरावो
ढोली ओ दन दस ढोल गोराव
समचे-समचे ....

बालक जन्म के समय यह गीत भी गाया जाता है।

हे पिया! रुपयों की थैली भरकर दाई को दे दो, उसने मेरे बच्चे का जन्म करवाया है। सासुजी ने गोद में लिया है, जेठानी मुझे लड्डू बनाकर खिलायेंगी। नेंग मेरी ननद को देना। मेरी पड़ोसन को देना, उस ढोली को देना। पड़ोसन मंगल गीत गायेगी। ब्राह्मण के यहाँ जाओ और बच्चे का नाम धरवाओ।

जापा

राम लखन खेती करें
साल बोवाड़ो बालमा
तम दो हो नाराण लालना ....
धामक धइयां सालज खांडी
कम्मर ऐसी दुखे बालमा
बायर से तो घर में आया
छटक पड्या हे नन्दलाल .... तम दो हो नाराण
पाड़ पड़ोसन पूछन लागी
किने जायो के नन्दलाल
हरता तो फरता सायब पूछे
दीनज जाया हे लालना .... तम दो हो नाराण
दीनज जावे तमारी काकी भाबी
हमने जाया हे नन्दलाल
दीनज जावे तमारी मामी मासी
हमने जाया हे नन्दलाल .... तम दो हो नाराण
रोप रोपइया खरचा लागा
ओर दिया है कंगणा
रोप रोपइया खरचा लागा
हात सांकलो बालमा
बरस दिन का फेर ई जाणा
होवे खरचा म्हारे बालमा
तम दो हो नाराण लालना

जापा के समय यह गीत भी गाया जाता है।

हे पिया! अपने खेत में साल (चावल) की बुआई करवाना। रामलखन अपनी मदद करेंगे। मैं भगवान से छोटा-सा नन्दलाल मागूँगी। जच्चा धमा धम साल खाँडने लगी और कमर दुखी कि बच्चे ने जन्म ले लिया। मेरी पाड़-पड़ोसन पूछने लगीं कि किसने बच्चे को जन्म दिया है। पिया ने कहा कि- बच्चे को नहीं बच्ची को जन्म दिया है। जच्चा को गुस्सा आया, वह कहने लगी- बच्ची को तुम्हारी काकी-भाभी जन्म देंगी, मैंने तो बच्चे को जन्म दिया है। मैंने बहुत रुपये खर्च किये हैं और हाथ के कंगना दिये हैं। मेरे पिया ने सांकला दिया है तब बच्चा हमने गोद में देखा है। यह कैसी माया है प्रभु तेरी कि खर्च पे खर्च होता जा रहा है, प्रभु मुझे एक बालक दो।

जापा

जाई ने किजो उना चीरां का पेरयां से पेंचा का निरखइयां से
दाई ने बेग बुलाव इना घर में, रंग उड़े रे गुलाल इना घर में
पाणी पड़े रे तुसार इना घर में, रंग उड़े रे गुलाल इना घर में।
आप तो जच्चा रानी लाल लई सूता गोपाल लई सूता
हमने लगाई दौड़ा दौड़ इना घर में, रंग उड़े रे गुलाल इना घर में
पाणी पड़े रे तुसार इना ....
जाइने किजो उना पागां का पेरइयां से पेंचा का निरखइयां से
के सासु ने बेग बुलाव इना घर में, रंग उड़े रे गुलाल इना घर में
पाणी पड़े रे तुसार इना ....
आप तो जच्चा रानी लाल लई सूता गोपाल लई सूता
हमने लगाई दौड़ा दौड़ इना घर में, रंग उड़े रे गुलाल इना घर में
पाणी पड़े रे तुसार इना ....

जापा के समय यह गीत भी गाया जाता है।

उस राजसी कपड़े पहनने वाले से, पगड़ी की पेंचों को निहारने वाले से जाकर कहना कि दाई माँ को जल्दी बुलाकर लायें, इस घर में खुशियाँ आने वाली हैं। जच्चा रानी! आप तो बालक लेकर पलंग पर सो गई हैं। हम लोगों से दौड़ लगवा दी है। इस घर में खुशियाँ आने वाली हैं तथा रंग बिखरने वाला है।

जापा

म्हारी बीजासन को मंदर कीने नोतियो हो मांय
नोत्यो-नोत्यो ए बई म्हारी बालुड़ा री मांय
नाना हालरिया री मांय, हालरो हलरावत बाजे घूगरा

हो मांय ....
म्हारी बीजासन को मंदर कीने छाबीयो हो मांय
छाब्यो-छाब्यो ए बई म्हारी बालूड़ा री मांय
नाना हालरिया री मांय, हालरो हलरावत बाजे घूगरा
हो मांय ....
म्हारी बीजासन को मंदर कीने लीपीयो हो मांय
लीप्यो-लीप्यो ए बई म्हारी बालुड़ा री मांय
नाना हालरिया री मांय, हालरो हलरावत बाजे घूगरा
हो मांय ....
म्हारी बीजासन को मंदर कीने पूजियो हो मांय
पूज्यो-पूज्यो ए बई म्हारी बालुड़ा री मांय
नाना हालरिया री मांय, हालरो हलरावत बाजे घूगरा
हो मांय ....

जापा गीत के समय देवी-देवता के गीत गाये जाते हैं, उसमें से एक यह गीत भी गाया जाता है। बीजासन माता के मन्दिर में न्यौता किसने भेजा है ? उनका मन्दिर किसने छाबा है ? उनका मन्दिर किसने लीपा है तथा उनके मन्दिर में पूजा किसने की है ? बीजासन माता के मन्दिर में न्यौता, छाबना, लीपना और पूजा हमारे बच्चे की माँ ने की है। वह बच्चे को खिलाती गई और मन्दिर में काम करती गई।

सूर्य पूजा

आज म्हारे लीपन पोतनीयां चन्दन चौक पुरावो
आज म्हारे सब कोई आवो, के वा म्हारी गोठनियां
सासु बुलउं सवेरियां नणद दुफेरी मांय
जेठाणी के बुलउं सामीसांज, के वा म्हारी गोठनियां
सासु बेठाउं खटोलिया नणद पाथरिया
जेठाणी बेठाउं पदमिया, के वा म्हारी गोठनियां
सासु जीमांडु खीचड़ियां नणद लापसियां
जेठाणी के मोती चुरया भांत, के वा म्हारी गोठनियां
सासु ओड़ाऊ पोमचीया नणद चूनड़िया
जेठाणी के दखणी का चीर, के वा म्हारी गोठनियां
सासुरा जाया नणद भाणेजीयां
जेठाणी का जाया म्हारा लाल, के वा म्हारी गोठनियां
सासु ने खरची आवे तिया नणद पावलीया

जेठाणी ने खरचा सवा लाख, के वा म्हारी गोठनियां
सासु पोचांऊ सवेरिया नणद दफोरिया
जेठाणी के राखु मइना पास, के वा म्हारी गोठनियां

बालक जन्म के ग्यारहवें दिन, इक्कीसवें दिन या सवा महीने में सूर्य की पूजा की जाती है। उस समय यह गीत गाया जाता है।

आज मेरा घर बिलकुल साफ-सुथरा है। मैंने उसे लीपा है और उसमें चौक भी बनाया है क्योंकि आग सूरज पूजा है। मैं सास को सुबह बुलाऊँगी, ननद को दोपहर में और जेठाणी को तो पहले से ही बुला लूँगी। सास को खाट पर बिठाऊँगी, ननद को चटाई पर और जेठाणी को पलंग पर बिठाऊँगी क्योंकि सास ने कुछ-कुछ रुपया खर्च किया है, ननद ने मेरे जापे में हुए खर्च का चौथाई खर्च किया है तथा जेठानी ने मेरे जापे में बहुत खर्च किया है और मैं जेठानी से प्रेम करती हूँ इसलिये मैं जेठानी को अपने पास सवा महीने रखूँगी।

सूर्य पूजा

म्हारा मांथा ने भम्मर घड़ाओ केसरिया हो राज
हाँ हो पातलिया हो राज जदी हम सुरज जुंवारा जी
म्हारा काना ने झाला घड़ाओ केसरिया हो राज
हाँ हो पातलिया हो राज ....
जाया हो जाया ये तो कीकाजी जाया हो राज
दीनड़ जाई हो राज पिया म्हारी साद नी पुरी हो राज
म्हारा कल्यां सालु रंगावो केसरिया हो राज
हाँ हो पातलिया हो राज ....
जाया हो जाया मैं तो कुँवर जाया हो राज
कन्या बई जाई हो राज पिया थारो बंस बड़ायो जी
म्हारा हीवड़ा ने हंसज घड़ाओ केसरिया हो राज
हाँ हो पातलिया हो राज ....
म्हारा पोंचा के गजरा पेरावो केसरिया हो राज
हाँ हो पातलिया हो राज ....

जब बच्चा जन्म ले लेता है तो उसके ग्यारह दिन या इक्कीस दिन बाद सूरज पूजा की जाती है, तब यह गीत गाया जाता है। हे पिया! पिया सूरज पूजा हो रही है। मेरे सिर के लिये भम्मर, मेरे कान के लिये झाले और हाथों के लिये गजरा बनवाओ, यह सब पहनकर मैं सूरज पूजा करूँगी। पिया! मुझे पहले लड़की हुई थी इसलिये मेरी सूरज पूजा नहीं हुई थी। अब मैंने बालक को जन्म दिया है, इसलिये आप मुझे गहने बनवा दो तो मैं सूर्य पूजा करूँगी।

जलवाय पूजा

माथा ने भम्मर घड़ावजो, माथा ने भम्मर घड़ावजो
म्हारे टीको रतन जड़ाओ हो रसिया, लइदो वाला चुनड़ी
लइंदा-लइंदा कांई करो, लइंदा-लइंदा कांई करो
म्हारे आज जलमा की रात हो रसिया, लइदो वाला चुनड़ी
हिवड़ा ने हंसज घड़ावजो, हिवड़ा ने हंसज घड़ावजो
म्हारे माला पाट पोवालो हो रसिया, लइदो वाला चुनड़ी
म्हारी सासूजी का छाने, म्हारी बाइजी का छाने
छोटा देवरिया रा हाते हो रसिया, लइदो वाला चुनड़ी
अंग ने सालु रंगावजो, अंग ने सालु रंगावजो
म्हारे के सच्ची कोर लगावो हो रसिया लइदो वाला चुनड़ी
लइंदा-लइंदा ....
म्हारे आज जलवां की रात हो रसिया, लइदो वाला चुनड़ी

सूर्यपूजा के बाद जलवायु पूजन करने जच्चा को ले जाते हैं और कुआँ पूजन करवाते हैं उस समय यह गीत गाया जाता है।

हे पिया! मेरे सिर के लिए भम्मर (आभूषण) बनवा दो और उसमें रत्न जड़वा दो। हे पिया! मेरे गले के लिये हंसज बनवा दो और माला में रत्न जड़वा दो। मेरे पहनने की साड़ी रंगवा दो, उसमें सच्चे (पक्के) मोतियों की किनार लगवा दो, क्योंकि आज मेरा जलवायु पूजन का दिन है। इन्हें पहनकर मैं जलमा पूजा करने जाऊँगी। आप टालमटोल मत करो। अपनी माँ अर्थात् मेरी सासूजी से छिपाकर चुपके से मेरे देवर को भेजकर मँगवा दो।

पगल्या

पेलो बधावो म्हारे आवियो
आवतो सो दीनड़ झेलसी
दुसरो बधावो म्हारे आवियो
दुसरो बधावो म्हारी सासु ने दीजो
कंवर पटोली में झेलसी
जुग-जुग जीवजो दाई हमारा
आवतो सो दीनड़ झेलसी
अम्बे तो खम्बे बले हो दीवलो
जाणे चतरभुज जनमिया
सासरा रो सुख आज देख्यो

खोले दिनड़ीयो धवाविया
जुग–जुग जीवजो जेठाणी हमारा
चरवे हो फुको चड़ाविया
जुग–जुग जीवजो देराणी हमारा
पड़दा में पलंग बिछाविया
अम्बे तो खम्बे बले हो दीवलो
जाणे चतरभुज जनमिया

हमारे यहाँ धन्यवाद का अवसर आया। दाई को धन्यवाद, जिसने बच्चे को गोदी में लिया। ससुराल का सुख मन को कितना खुश कर देता है, वह मैंने आज देखा। दूसरा सासुजी को जिन्होंने बच्चे को गोद में लिया। जेठानी को धन्यवाद कि हरीरा बनाकर खिलाया और देवरानी को धन्यवाद कि मेरे लिये पलंग बिछाया और परदा लगाया।

मालवांचल में बेटी का प्रथम प्रसव मायके में होता है। उसका समाचार ससुराल भेजने के लिए पगल्या चित्र बनाये जाते हैं, जिसके माध्यम से समाचार भेजा जाता है।

झूला

नानो तो म्हारो राया को, दुद पिवे दस गांया को
सुई जा रे नाना झोली में, थारी मां गई पाणी भरवा
हालर हुलर हांसी को, लाल चुड़ो थारी मासी को
नानो तो म्हारो रायां को, दुद पीवे दस गायां को
झोली में से चमचम की, नाना की टोपी रेसम की
चुनड़ चमके बेन्या की, बिच्छा बाजे भावज की
सुई जा रे नाना झोली में थारी मां गई हे पाणी रे
नानो तो म्हारो रायां को दुद पीवे दस गायां को
थारी मां नी झुलावे थारो बाप नी झुलावे
गोल की गांगड़ी तो देती जा वो मां

जलमा के दिन बच्चे को झुलाने के लिए चार किशोर बालक बुलाये जाते हैं। झूले के चार पल्ले पकड़कर बच्चे को झुलाते समय महिलाएँ गीत गाती हैं। महिलाएँ झुलाने आये चार बच्चों को बताशा देकर विदा करती हैं।

मेरा छोटा–सा बच्चा खूब लखपति राजकुमार है, दूध वह दस गायों का पीता है। गोदी में उछाल कर बच्चे को कहते हैं– लाल चूड़ा तेरी मौसी का है, झोली में चमकती चीज़ चम–चम की और बच्चे की टोपी रेशम की है। तेरी माँ ने नहीं झुलाया और तुम्हारे पिता ने नहीं झुलाया, इसलिये मैं झुलाऊँगी।

झूला

नाना थारो पालणों बन्दई दूँ पटसाल रे
कुकां थारे पालणों बन्दई दूँ पटसाल रे
आवतड़ा ने जावतड़ा थारा दादाजी झुला देसी रे
आवतड़ा ने जावतड़ा थारा काकाजी झुला देसी रे
तु हुलरे नाना हुलरे तु दुदु पतासा जीम रे
थारो सोना को सांकलियो थारे रूपा को मादलियो
थारे रेसम लाबी डोर लाल म्हारा आंगण नाचे मोर
नाना थारो पालणों बन्दई दूँ पटसाल रे
आवतड़ा ने जावतड़ा थारी माताजी झुला देसी रे
आवतड़ा ने जावतड़ा थारी काकी झुला देसी रे
तु हुलरे नाना हुल तु दुदु पतासा जीम रे
थारो सोना को सांकलियो थारे रूपा को मादलियो
आवतड़ा ने जावतड़ा थारा भुवा झुला देसी रे
आवतड़ा ने जावतड़ा थारा जीजा बई झुला देसी रे
तु हुलरे नाना हुलरे तु दुदु पतासा जीम रे
थारो सोना को सांकलियो थारे रूपा को मादलियो

बच्चे को रस्सी की झोली बाँधकर झुलाया जाता है। पाँच क्वाँरी लड़कियाँ झूला देती हैं, झूला देने के बदले गुड़ की डल्ली खाने को दी जाती है और झूला रस्म के समय यह गीत गाते हैं।

बच्चे तेरा पालना आँगन में बँधवाया है। आते-जाते तेरे पिताजी, तेरे काकाजी झूला देंगे। तू झूल बच्चे, तू दूध बताशा खाना, तेरे घर में खुशियों का दिन आया है। तेरे पालने की डोर रेशम की है, उसे खींच कर झूला देंगे। यह सब खुशियाँ देखकर सब पुलकित होंगे जैसे आँगन में मोर नाच रहा है।

ख्याली

गढ़ पे से बान्द्रो उतर्यो, घर हो मांगीलाल घरे जाय
दौड़ वो जीजी बान्द्रो आयो, घट्टी पिसवा बान्द्रो आयो
रोटी करवा बान्द्रो आयो, पाणी भरवा बान्द्रो आयो
बासण मांजवा बान्द्रो आयो बारो सोरवा बान्द्रो आयो
छोरा छोरी खेलाड़वा बान्द्रो आयो, जीजी बान्द्रां आयो

महिलाएँ हँसी मजाक करके एक दूसरे के पति का नाम लेकर डराती हैं कि बन्दर आया

है, भागो, गढ़ के ऊपर से उतर कर आया है। बन्दर रोटी बनाने आया है, कचरा साफ करने आया है। वह बरतन भी माँज देगा, बच्चे को खिलाने बन्दर आया है।

ख्याली

सायबा म्हारे लइदो करण फूल झूमको
लइदो करण फूल झूमको .... सायबा म्हारे॥ टेक॥
झुमको पेरी ने हूँ तो सासु कने गई थी
सासुजी के लागी गयो चरको .... सायबा म्हारे।
झुमको पेरी ने हूँ जेठाणी कने गई थी
जेठाणी ने मार दियो टणको .... सायबा म्हारे।
झुमको पेरी ने हूँ देराणी कने गई थी
देराणी के लागी गयो छणको .... सायबा म्हारे।
झुमको पेरी ने हूँ नणदल कने गई थी
नणदल ने मांगी लियो झूमको .... सायबा म्हारे।
झुमको पेरी ने हूँ तो सोकड़ कने गई थी
सोकड़ ने छीन लयो झूमको .... सायबा म्हारे।

हर मंगल गीत खत्म होने पर एक ख्याली गीत जरूर गाया जाता है।

हे पिया! मुझे कमर में लगाने वाला झुमका खरीद कर ला दो। पिया ने झुमका लाकर दिया, उसे पहनकर सास के पास गई तो सास को मिर्ची लग गई। जेठानी के पास गई तो जेठानी ने टल्ला मार दिया। देवरानी के पास गई तो उसे बुरा लग गया। ननद के पास गई तो उसने माँगने के लिये अपना आवेदन दिया। सौतन के पास गई तो उसने तो मेरा झुमका छीन ही लिया है।

जनेऊ

दादाजी ने नानण वन पाया प्यारा बनड़ा
माता बाई ने कात्या झीणा सूत जी बनड़ा
काकाजी ने नानण वन पाया प्यारा बनड़ा
काकीजी ने कात्या झीणा सूत जी बनड़ा
पेरो म्हारा कुँवर कन्हैया जनोई कासीजी भणवा जाजो
प्यारा बनड़ा पेरो म्हारा कुँवर कन्हैया जनोई
मामाजी ने नानण वन पाया प्यारा बनड़ा
मामीजी ने कात्या झीणा सूत जी बनड़ा
मासाजी ने नानण वन पाया प्यारा बनड़ा

मासीजी ने कात्या झीणा सूत जी बनड़ा
पेरो म्हारा कुँवर कन्हैया जनोई
कासीजी भणवा जाजो प्यारा बनड़ा
कासी का वासी सदा सुख रासी पंडित हुई
घर आजोजी प्यारा बनड़ा

जन्म के बाद बच्चे के लिए पहली रस्म होती है। बच्चा जब स्कूल जाने लायक होता है उसे जनेऊ पहनायी जाती है, उस रस्म के समय यह गीत गाया जाता है।

पिताजी वन से कपास लाये और माँ ने उस कपास का सूत कातकर जनेऊ बनाई और उस बच्चे को पहनायी। जनेऊ रस्म में पूरी विवाह की रस्म की जाती है। बालक जनेऊ वाले समय भागकर छुपता है, फिर मामा उसे नेंग देते हैं और वापस लाते हैं।

सगाई

मेरी मई कां यां का साजन उमग्या
मेरी मई कां यो तो दियो रे मुकाम
राज सोनो दई, साजन लिया
मेरी मई चिकली का साजन उमग्या
मेरी उज्जवण मांय दियो रे मुकाम
मेरी मई अलियां तो गलियां साजन फरीरया
मेरी मई जानूलाल घर रे बताव रे राज
सुन्नो दई साजन लिया
मेरी मई आया तो साजन भले आया
मेरी मई सामे या सुरज पटसाल
सोनो दई साजन लिया
मेरी मई पोली पोवाडू साजन पातली
मेरी मई हरिया मुंगा केरी दाल
सोनो दई साजन लिया
मेरी मई चोंखा रदाडू साजन नख छोल्या
मेरी मई उपर तो गाया केरो घी
सोनो दई साजन लिया
मेरी मई थाल परोसा साजन सगभरी
मेरी मई अद्दर सक्कर केरो खांड
सोनो दई साजन लिया
मेरी मई जिमी तो चूंठी चलूं कर्या

मेरी मई बिड़ला तो पान पचास
सोनो दई साजन लिया

ये कहाँ के समधी आये हैं और कहाँ इन्होंने अपना मुकाम रखा है? यह समधी तो गलियों-गलियों में घूम रहे हैं। खूब नोट खर्च किये तब समधी बने हैं। यह चिकली के समधी आये हैं, उज्जैन में जाकर इन्होंने ठहराव किया है। मेहमान आये तो ठीक है यह सामने बरांडा है यहाँ रुकेंगे। समधी जी! आपको पतली रोटी और हरे मूँग की दाल बनाकर खिलाऊँगी। समधीजी! चावल नाखूनों से छिले हुए बनाऊँगी, उसके ऊपर गाय का घी डालूँगी। समधी सब तरह के व्यंजन भरी थाल परोसकर लाऊँगी, उसके ऊपर शक्कर डालूँगी। समधीजी खाना खा-पीकर चलने लगे तो कहा- समधीजी! पान तो खाते जाओ।

सगाई

बई रई गंगा झलक रई जमना बीच मांय साजन अड़ी रया
ऐसा हमारा दुलेसिंग साजन रा साबल्या साजन के पार
उतारी लाया हो
घेर दार अंगिया गुलाबी दार सांपो
साजन तो आऊ जाँऊ हुई रया हो
बई रई गंगा झलक रई जमना बीच मांय साजन अड़ी रया
ऐसा हमारा पुनाजी साबल्या साजन के पार
उतारी लाया हो

जब सगाई वाले मेहमान आते हैं, तब यह गीत गाया जाता है।

गंगा और जमुना के बीच में साजन (मेहमान) अड़ गये हैं, उन्हें पार करके लाओ। मेहमान ने घेरदार अँगी और गुलाबी रंग का साफा पहन रखा है। मेहमान की हालत ऐसी है कि आज मरे कि कल मरे। फिर भी लड़की वाले मेहमान की इच्छा रखते हैं, उन्हें पार उतारकर लाये हैं।

सगाई

रईग्यो वो म्हारो बाजोट्यो,
धर्यो म्हारा राय आंगण बीच
साजन आया मुलकता
देखो म्हारा कांकड़िया री सोब
काकेड़या म्हारे अंत घणा
देखो म्हारा गोया री सोब

गुवाला म्हारे अंत घणा
देखो म्हारा बागां री सोब
भगवान्या म्हारे अंत घणा
देखो म्हारा पणघट री सोब
पणियारी म्हारे अंत घणी
देखो म्हारी सैंर्या री सोब
सहेंल्या म्हारे अंत घणी
देखो म्हारा राय आंगण री सोब
बालुड़ा म्हारे अंत घणा
देखो म्हारा मेंला री सोब
कुल बउबड़ म्हारे अंत घणी
देखो म्हारा चौका री सोब
राम रसोई म्हारे नीबजे
देखो म्हारी परेंडी री सोब
जल पोस्या बेड़ा सब भर्या

सगाई वाले मेहमान आते हैं, तब यह गीत गाया जाता है।

मेहमानों के लिये पाट बिछाया था, पाट एक तरफ ही रखा रह गया। मेरे घर बहुत सारे मेहमान आ गये। मेरे गाँव किनारे की शोभा देखो, मेरे खले की शोभा देखो, मेरे पनघट की शोभा देखो, मेरे चौके की और मेरी परेंडी की शोभा मेहमानों के आने से सौ गुनी हो गई है।

सगाई की गाली

हां के भई रे, लौगां रो भात मरच की थुली
हां के भई रे, हमारा रतन सिंग रसिया जीमण बैठा
हां के भई रे, दादी बेवईजी वाली परसण लागी
हां के भई रे, परसत-परसत बैंया मरोड़ी
हां के भई रे, छोड़ी दो रंगीला बेवई,
छोड़ी दो छबीला बेवई बैंया हमारी
हां के भई रे, आज की रेण घोड़ी वाला घर में
हां के भई रे, आज की रेण बंगला वाला घर में
हां के भई रे, आँगणै तमारी ने घर में हमारी

सगाई के मेहमानों को जब खाना खिलाया जाता है, तब यह गाली गायी जाती है।

समधिन लौंग के चावल बनाती है और मिर्ची का दलिया बनाकर समधियों को परोसा जाता है। परोसने के लिये समधिन ही जाती है, वहाँ समधी लोग उससे मजाक करते हैं। समधिन कहती हैं– छोड़ दो समधीजी, रंगीले समधी जी।

सगाई

म्हारी गाल्या को बुरो मती मानो
भुवानसिंग बेवई दोई नाता रे
तमारी अई लेस्या बई लेस्या दोई नाता रे
म्हारी गाल्या रो बुरो मती मानो
मांगीलाल बेवई दोई नाता रे
तमारी अई लेस्या बई लेस्या दोई नाता रे
म्हारी गाल्या रो बुरो मती मानो
छिताजी बेवई दोई नाता रे
तमारी अई लेस्या बई लेस्या दोई नाता रे

जब सगाई के मेहमान विदा होते हैं तो महिलाएँ उन्हें छोड़ने जाती हैं, तब यह गीत गाया जाता है।

समधीजी! मेरी गालियों का बुरा मत मानना, मैं उधर से भी आपकी रिश्तेदार हूँ और इधर से भी। इसलिए मुझे दोनों रिश्ते निभाने होंगे।

सगाई गाली

मेला खाई कांकड़ी झरूखे राल्या बीज
दारी बेवइजी वाली सांवणीया री तीज
छोरी छम्मा जरा सी आग ताई देवो
आग लई दे दाग लई दे झरमर लई झारी
खेलावा ने चौपड़ लई दे जोवन की तैयारी
छोरी छम्मा जरा सी आग लई देवो
मेला खाई कांकड़ी झरूखे राल्या बीज
दारी बेवइजी वाली सांवणीया री तीज

सगाई के वक्त समधी-समधिन खाना खाते हैं, तब यह गाली गायी जाती है।

महल में खायी ककड़ी, झरोखे से फेंके बीज, यह देखकर समधी का मन बेईमानी करने लगा कि मुझे चौपड़ खेलने को ला दे, जवानी की तैयारी है। समधिन आ जा तुम बहुत ही सुन्दर हो, जरा सी आग लाकर दे दो, मैं बीड़ी पीना चाहता हूँ।

विवाह (गाली)

तू एक पतासो लईले वो जेलू अईजा म्हारी गोदी में
अईजा म्हारी गोदी में तू सुईजा म्हारी गोदी में
तू तीन पतासो लईले वो नाचण अईजा म्हारी गोदी में
भेरूसिंग भड़वा को डर मती राखे अईजा म्हारी गोदी में
थने आड़ी लईलू गोदी में थने उबी लईलू गोदी में
अईजा म्हारी गोदी में तू सुईजा म्हारी गोदी में
रामचंदर भड़वा को डर मती राखे अईजा म्हारी गोदी में
थने आड़ी लईलू गोदी में थने उबी लईलू गोदी में
अईजा म्हारी गोदी में तू सुईजा म्हारी गोदी में

विवाह की इस गाली को सगाई के समय भी महिलाएँ गाती हैं।

समधी कहता है- जेलू (एक तरह की गाली) एक बताशा देता हूँ। तुम मेरी गोद में आ जाओ, तुम मन में किसी का डर मत रखो। आ मेरी गोद में आ जा, सो जा मेरी गोद में, तू अपने पति का डर मत रखना, मेरी गोद में आ जा।

छींक भवानी

हो जी, छींक भवानी के भम्मर सोवे
टीका की छब न्यारी
हो जी, जुग-जुग जीवो म्हारा छींकण वाला
चट जनम्या ने पट छींक्यां
हो जी, छींक भवानी के ठुस्सी सोवे
माला की छब न्यारी
हो जी, छींक भवानी के बाजुबंद सोवे
झूमणा की छब न्यारी
हो जी, छींक भवानी के चूड़लो सोवे
हिरा की छब न्यारी
हो जी, छींक भवानी के कड़िया सोवे
बिछिया की छब न्यारी
हो जी, जुग-जुग जीवो म्हारा छींकण वाला
चट जनम्या ने पट छींक्यां

शादी या अन्य शुभ कार्य पर गीत गाने के बाद छींक को सम्मान स्वरूप गाते हैं। अगर

शुभ कार्य करते वक्त छींक आ गई, तो उसे शुभ नहीं मानते हैं।

शादी ब्याह के मामले में छींक को भी पूजा जाता है, छींक को भवानी माता का दर्जा दिया गया है। छींक भवानी को भम्मर भी पहनाते हैं, ठुस्सी पहनाते हैं, बाजूबंद पहनाते हैं, चूड़ा पहनाते हैं, पाँवों की कड़ियाँ पहनाते हैं। सब चीजें (गहने के रूप में) चढ़ाते हैं। उनके भम्मर के साथ टीका की छवि प्यारी लग रही है। बच्चा जन्म लेता है तो जन्म के तुरन्त बाद छीकना चालू कर देता है। युग-युग तक जीयो मेरे छींकने वाले।

सगाई गाली

नानी थुली ने मोटो रवो जीमजे रे लाड़ा
थारी माता जाय न्हारी, म्हारा दादाजी लावे पाछी
जीमजे रे लाड़ा
नानी थुली ने मोटो रवो जीमजे रे लाड़ा
थारी काकी जाय न्हारी, म्हारा काका लावे पाछी
जीमजे रे लाड़ा
नानी थुली ने मोटो रवो जीमजे रे लाड़ा
थारी मासी जाय न्हारी, म्हारा मासा लावे पाछी
जीमजे रे लाड़ा
नानी थुली ने मोटो रवो जीमजे रे लाड़ा
थारी मामी जाय न्हारी, म्हारा मामा लावे पाछी
जीमजे रे लाड़ा

मेहमानों को खाना खिलाया जाता है, तब यह गीत गाली के रूप में गाई जाती है।

छोटी थुली (दलिया), बड़ा रवा (सूजी) का हलवा खाना। हे दूल्हा! तेरी माँ भागकर जाती है, तेरी काकी भागकर जाती है, तेरी मौसी भागकर जाती है, तेरी मामी भागकर जाती है तो मेरे पिताजी, मेरे काकाजी, मेरे मौसाजी, मेरे मामाजी उन्हें वापस पकड़ कर लाते हैं और तुम्हारे पास छोड़ते हैं।

सगाई गाली

ब्याइजी तो अणग्या छणग्या, नार मिली अदगेली
म्हारा राज, कुँवारा क्यों नी रईग्या जी
कुँवारा रेता तो कुंवर केवता
परण्या भांड केवाया म्हारा राज, कुँवारा क्यों नी
चतरभुज तो अणग्या छणग्या, नार मिली अदगेली

म्हारा राज, कुँवारा क्यों नी रईग्या जी
कुँवारा रेता तो कुंवर केवता
परण्या भांड केवाया म्हारा राज, कुँवारा क्यों नी
भेरो जी तो अणग्या छणग्या, नार मिली अदगेली
म्हारा राज, कुँवारा क्यों नी रईग्या जी
कुँवारा रेता तो कुंवर केवता
परण्या भांड केवाया म्हारा राज, कुँवारा क्यों नी
चम्पालाल जी तो अणग्या छणग्या, नार मिली अदगेली
म्हारा राज, कुँवारा क्यों नी रईग्या जी
कुँवारा रेता तो कुंवर केवता
परण्या भांड केवाया म्हारा राज, कुँवारा क्यों नी

समधी जब एक दूसरे के घर आते-जाते हैं और खाना खाते हैं, उस समय उन्हें सुनाकर गाली दी जाती है।

समधीजी तो नखराले हैं लेकिन उनकी पत्नी आधी पागल है। ऐसी पत्नी से तो कुँआरे ही अच्छे थे। कुँआरे रहते तो बहुत-सी लड़कियाँ आगे-पीछे घूमतीं, अब शादी की है तो भाँड (एक तरह की गाली) कहलाओगे। तुम्हारी पत्नी तो आधी अच्छी है आधी पागल है। आप तो राजकुमार जैसे अच्छे सुन्दर लगते हो।

विवाह का बिच्छू

हूँ तो सूती थी रंग महल में
बिच्छू खई गयो गोरा बदन में
म्हारा ससरा ने बेगी बुलाओ रे
बिच्छू खई गयो गोरा बदन में
म्हारा जेठजी ने बेगी बुलाओ रे
बिच्छू खई गयो गोरा बदन में
म्हारा ससरा उतारे दुणो चड़े रे
बिच्छू खई गयो गोरा बदन में
म्हारा जेठजी उतारे दुणो चड़े रे
बिच्छू खई गयो गोरा बदन में
हूँ तो सूती थी रंग महल में
बिच्छू खई गयो गोरा बदन में
म्हारा देवरीयां ने बेगी बुलाओ रे
बिच्छू खई गयो गोरा बदन में

देवरजी उतारे दुणो चड़े रे
बिच्छू खई गयो गोरा बदन में
म्हारा सायब जी ने बेगी बुलाओ रे
म्हारा सायब जी उतारे दुणो उतारे रे
बिच्छू खई गयो गोरा बदन में

शादी, सगाई, माता पूजन आदि में नाचने का गीत है।

नाचने वाली कह रही है कि- मैं रंगमहल में सोई थी मुझे बिच्छू ने काट खाया है (झूठी खबर फैलाई)। जेठ उतारते हैं बिच्छू तो ज्यादा चढ़ता है, ससुर उतारते हैं तो भी ज्यादा चढ़ता है, देवर के उतारने से भी ज्यादा चढ़ता है। मेरे पिया तुरन्त उतर जाता है।

फूंदी नाच

यो तो घूमर दई-दई नाचे रे, बन को मोरियो
यो तो थाली की कोर पे नाचे रे, बन को मोरियो
यो तो सम्पत बई को बीरो रे, बन को मोरियो
यो तो राजल बई को बीरो रे, बन को मोरियो
यो तो घूमर दई-दई नाचे रे, बन को मोरियो
यो तो थाली की कोर पे नाचे रे, बन को मोरियो
यो तो राजल बई को बीरो रे, बन को मोरियो
यो तो सुगणा बई को बीरो रे, बन को मोरियो

सगाई में जब महिलाएँ मटकी नाचती हैं, तब यह गीत गाया जाता है।

यह गोल-गोल घूमकर नाच रहा है जैसे वन में मोर नाचता हो। थाली की किनार पर नाच रहा है। अरे! यह तो सम्पत, राजल और सुगणा बहन का भाई नाच रहा है। ये सभी घूमर दे-दे कर नाच रहे हैं।

आड़ा

जद ये मिजाजण भम्मर पेरी ने नीसरी ए
थारो टिका ने मन मोयो वो मिजाजण
थे म्हारो गेंदो छिपायो
जद ये मिजाजण बेसर पेरी ने नीसरी ए
थाने माला ने मन मोयो वो मिजाजण
थे म्हारो गेंदो छिपायो
गेंदो छिपायो दारी ये मन मोयो सेल्या वालो

नजरां नी आया ए मिजाजण
थे म्हारो गेंदो छिपायो
जद ये मिजाजण बजाजी क्यां गई थी
बजाजी रो मनड़ो मोयो वो मिजाजण
थे म्हारो गेंदो छिपायो
जद ये मिजाजण कण्ठाल्या क्यां गई थी
कण्ठाल्या रो मनड़ो मोयो वो मिजाजण
थे म्हारो गेंदो छिपायो

किसी भी शुभ अवसर पर ज्यादातर शादी में या सगाई में जब महिलाएँ जोड़ बनाकर नाचती हैं, तब यह गीत गाया जाता है।

नखराली महिला जब माथे की भम्मर, टीका, नाक का बेसर आदि गहने पहनकर निकली तो सबका मन मोह लिया। नखराली महिला की माला ने बजाजी का मन मोह लिया है। जब नखराली महिला कण्ठाल्या के यहाँ गई थी तो उसका मन भी मोह लिया।

भैरव सगाई

ओटला पे बेठा भेरू घुगरो बजावे
आवती सी कुमारण मोइ रे लाल
गंगा जमना का भेरू बांसरी बजावे
क्यों वो कुमारन म्हारा सारू कलस क्यों नी लाई
अबे थारे परचो बतऊं रे लाल
गंगा जमना का भेरू बांसरी बजावे
बांसरी बजावे भेरू जी घूगरा बजावे
आवती सी सुतारण मोइ रे लाल
गंगा जमना का भेरू बांसरी बजावे
क्यों वो सुतारण म्हारा सारू बाजोट्यो नी लाइवो
अबे थारे परचो बतऊँ रे लाल
गंगा जमना का भेरू बांसरी बजावे
सिंगासण पे बेठा भेरूजी घूगरा बजावे
आवती सी मालन मोइ रे लाल
गंगा जमना का भेरू बांसरी बजावे
क्यों वो मालन म्हारा सारू फुलड़ा क्यों नी लईवो
अबे थारे परचो बतऊँ रे लाल
गंगा जमना का भेरू बांसरी बजावे

सगाई में भैरव की मीठी मान (बाल उतारना) करते हैं तो पूजा करना पड़ती है और भैरव के गीत जरूर गाये जाते हैं। यह कहना कि हमारा काम (मान) सिद्ध होगा तो हम आपके पैर छुआने दूल्हा-दुल्हन को जरूर लायेंगे। भेरूजी चबूतरे पर बैठे हैं उधर से कुमारन निकली। भेरूजी कहते हैं- क्यों कुमारन! मेरे लिये कलश क्यों नहीं लाई? मेरे लिये पाटला बैठने का क्यों नहीं लाई? मेरे लिये फूल क्यों नहीं लाई है? मैं तुमसे नाराज हूँ। भेरूजी गुस्से में बैठे बाँसुरी बजा रहे हैं।

भैरव सगाई

सीसरी पांगा अद बणी वो भेरूजी
काना रा मोती अद बण्या वो भेरूजी
पेचां रो अदक सरूप हटीला भेरू
छतरी बणी हे जी राज
लाला रो अदक सरूप हे जी राज
छतरी का भिज्यां कांगरा वो भेरूजी
बावड़ी को नरमल नीर
अंई तो पियर वई आड़ी सासरो भेरूजी
अदबीच लागू तमने पांव
हटीला भेरू, छतरी बणी हे जी राज
अंग का जामा अद बण्या वो भेरूजी
केसरिया रो अदक सरूप, हटीला भेरू
छतरी बणी हे जी राज
लाला रो अदक सरूप हे जी राज
सीसरी पांगा............
छतरी का भिंज्या कांगरा के भेरूजी
बावड़ी को नरमल नीर
अई तो पियर वई आड़ी सासरो भेरूजी
अदबीच लागू तमने पांव
हटीला भेरू, छतरी बणी हे राज

भैरव पूजा के समय करने जाते हैं उस वक्त छत्र चढ़ाने की मान-मंगत भी की जाती है, तब यह गीत गाते हैं।

भैरव महाराज! आपके सिर की पगड़ी बहुत अच्छी बनी है, कानों के मोती भी बहुत सुन्दर लग रहे हैं। उस पगड़ी के पेंच का स्वरूप अलग ही बना है, आपकी छाया का स्वरूप ही अलग है, जो दूल्हा-दुल्हन पर रहता है।

भैरव सगाई

डलिया फूलां की भरी लई वो मालनड़ी
भेरू म्हाराज के जई ने पेराव वो मालनड़ी
वी सूता हे सूक भर नींद वो मालनड़ी
उनके जाई ने जगाड़ो वो मालनड़ी
कंकू भरी छाबड़ी लई वो मालनड़ी
भेरूजी का मांथे टिलक लिलाड़ वो मालनड़ी
वी सूता हे सूक भर नींद वो मालनड़ी
उनके जाई ने जगाड़ो वो मालनड़ी
झन-झन झारी भरी लई वो मालनड़ी
भेरूजी के जई ने न्हावाड़ वो मालनड़ी
वी सूता सूक भर नींद वो मालनड़ी
उनके जाई ने जगाड़ो वो मालनड़ी
भेरू सारू नरेलां लई अई वो मालनड़ी
भेरूजी के जईने बदार वो मालनड़ी
वी सूता सूक भर नींद वो मालनड़ी
उनके जाई ने जगाड़ो वो मालनड़ी

सगाई में सुहागिनें जिमाई जाती हैं उस वक्त भैरव महाराज के गीत भी गाये जाते हैं, तब यह गीत भी गाया जाता है।

मालिन फूलों की डलिया भर लाई है, कंकू की पिगानी ले आई है। मालिन भेरू महाराज के लिये गंगाजल की झारी भर लाई है और नारियल लेकर आई है। वह उन्हें पहनायेगी, उनके माथे पर तिलक लगायेगी और उन्हें नहलायेगी। लेकिन भेरूजी तो सुख की नींद सो रहे हैं, बहन उन्हें कोई जाकर जगाओ कि मालिन आई है।

लगन

कांसे तो आया हंजा मारु बिड़ला
तो कांसे आया नारेल, हिन्दुराणा परणिग्या
चन्देसरा तो आया हंजा मारु बिड़ला
चन्देसरी से आया नारेल, हिन्दुराणा परणिग्या
चिकली तो आया हंजा मारु बिड़ला
उज्जैण से आया नारेल, हिन्दुराणा परणिग्या
कांसे तो आया हंजा मारु बिड़ला

तो कांसे आया नारेल, हिन्दुराणा परणिग्या
मानपेरा तो आया हंजा मारु बिड़ला
तो सेमल्या से आया नारेल, हिन्दुराणा परणिग्या

जब लड़की वालों के यहाँ से लगन आती है तो लड़के वाले लगन का स्वागत करते हैं। उस समय यह गीत गाया जाता है। यह लगन किस देश से, किसके घर से आयी है ? फलां जगह से लगन आयी है और दूल्हा-दुल्हन का विवाह हो गया।

लगन

जोसीड़ा रे म्हारा बीरा रइबर परनी ने लगना लावजो रे बीरा
बजाजी रे म्हारा बीरा रइबर परनी ने लगना लावजो रे बीरा
गेरावड़ गेरी छांय अलीजे भंवर डेरा दइ दिया जी म्हारा राज
खांतीले कुँवर डेरा दई दिया जी म्हारा राज
जाजम दीदी झपलाया ढोला ने मारुणी खेले सोयटा जी म्हारा राज
हंजा ने मारुणी खेले सोयटा जी म्हारा राज
कुर्माया रे म्हारा बीरा रइबर परनी ने कलस्या लावजो रे बीरा
मालीड़ा रे म्हारा बीरा रइबर परनी ने सेवरा लावजो रे बीरा
गेरावड़ गेरी छांय अलीजे भंवर डेरा दइ दिया जी म्हारा राज
कुवले कुँवर डेरा दई दिया जी म्हारा राज
सुनार्या रे म्हारा बीरा रइबर परनी ने गेणला लावजो रे बीरा
गंदीड़ा रे म्हारा बीरा रइबर परनी ने पुजापा लावजो रे बीरा
गेरावड़ गेरी छांय अलीजे भंवर डेरा दइ दिया जी म्हारा राज
खांतीले कुवंर डेरा दई दिया जी म्हारा राज

लगन बदाने के बाद यह गीत गाया जाता है। जोशी भाई! मुझसे मेरे पिया शादी करने आ रहे हैं, तुम जल्दी से लगन ले आओ। मेरे पिया गाँव किनारे गहरे पेड़ की छाँव में सब बारातियों के साथ रुके हैं। जैसे ही शादी हुई दुल्हन के साथ दरी पर बैठकर दूल्हा-दुल्हन एकी-बेकी (बताशे के द्वारा) खेलने लगे।

विवाह (गणेश वन्दना)

गजानन्द सकड़ली सेर्या में तमने टल्लो लागो हो
म्हारा रिद सिद रा स्वामी आपे टल्लो लागो हो
म्हारा रिद सिद रा स्वामी
गजानन्द सिसरी पागा गजानन्द सिसरी पागा
पेंचा प्यारी लागे हो म्हारा रिद सिद रा स्वामी

गजानन्द कानरा कुन्डल गजानन्द कानरा कुन्डल
मोती प्यारा लागे हो म्हारा रिद सिद रा स्वामी
गजानन्द गलारी कण्ठी गजानन्द गलारी कण्ठी
माला प्यारी लागे हो म्हारा रिद सिद रा स्वामी
गजानन्द पांवा रा झाजर पांवा रा झाजर
कड़िया प्यारी लागे हो म्हारा रिद सिद रा स्वामी

लग्न आने के पश्चात् उसे सूना नहीं छोड़ा जाता है। शाम के समय लग्न सामग्री की पूजा कर श्री गणेश वन्दना के गीत गाये जाते हैं। सभी गीत गणेश वन्दना से सम्बन्धित होते हैं, जिनकी संख्या अनिवार्य रूप से पाँच होती है।

हे गणेश देवता! मेरे घर तक पहुँचने के लिये सँकरी सड़क है, आपको धक्का लग गया होगा। हे मेरे गणेश देवता! आपकी पगड़ी की पेंच कानों के कुण्डल, गले की माला और पाँव में पहने आभूषण बहुत प्यारे लग रहे हैं, आप मेरे घर पधारो।

विवाह (गणेश वन्दना)

चिंता हरो नी चिंतामण गणेश
तम बिना घड़ी नी सरे
तमारी आंख मोटी हो गणेश
झगमग दिवलो बले
तमके सूरज जी मनावें चन्दरमा जी मनावें
श्री कृष्ण जी मनावें हो गणेश
बऊ रूखमा पांव पड़े
तमके प्रेम जी मनावें योगेन्द्र जी मनावें
नीलेश जी मनावे हों गणेश
बऊ लाड़ी पांव पड़े
चिंता हरो नी चिंतामण गणेश
तम बिना घड़ी नी सरे
तमारी सूंड मोटी हो गणेश
बासक नाग झूले

हे गणेशजी! चिंता दूर करो। आपके बगैर समय नहीं खिसकता है। आपकी आँख बड़ी है जैसे खूब तेज ज्योति जल रही हो, आपकी सूंड इतनी बड़ी है जैसे नाग देवता झूल रहे हों। आपको सूर्यदेवता और चन्द्रदेवता मना रहे हैं, श्रीकृष्णजी भी मनाते हैं। बहू रूखमा तथा घर के सभी लोग पैर छूते हैं। आप हमारी चिंता दूर करें।

विवाह (गणेश वन्दना)

चालो गजानन्द जोसी कां चालां
तो अच्छा-अच्छा लगना लिखावो
गजानन्द कोटा की गादी पे नोबत बाजे
नोबत बाजे इन्दर गड़ गाजे .... तो झीणी-झीणी
झालर बाजे गजानन्द .... कोटा की
चालो गजानन्द बजाजी कां चालां
तो अच्छा-अच्छा पड़ला मोलावो
गजानन्द कोटा ....
चालो गजानन्द गंधी कां चालां
तो अच्छा-अच्छा पुजापा मोलावो
गजानन्द कोटा ....
चालो गजानन्द खेराती कां चालां
तो अच्छा-अच्छा चुड़ला चिरावो
गजानन्द कोटा ....
चालो गजानन्द माली कां चालां
तो अच्छा-अच्छा सेवरा मोलावो
गजानन्द कोटा ....

हे गणेशजी! चलो, जोशी के यहाँ लगन लिखवाने चलते हैं। बजाजी के यहाँ से कपड़े खरीदेंगे, सोनी के यहाँ से गहने खरीदेंगे और माली के यहाँ से अच्छे सेहरे बनवायेंगे। गणेशजी! कोटा में नौबत (नगाड़ा) बज रहे हैं, उन नगाड़ों की आवाज ऐसी लग रही है जैसे बादल गरज रहे हों। यह मिली-जुली आवाज इतनी सुरीली लग रही है।

माता पूजा

गोबर भरी रे चगेंरनी बउवड़ तम कां चाल्या आज
आज सीतला माता आसण बेठा यो मढ़ पूजण जोग
माता म्हारी एक बालुड़ो देय
एकज दिजो माता दोयज दिजो तीसरा की आस बन्दाड़ो
वो जामण जाई म्हारी एक बालुड़ो देय
कुंकु भरी रे चगेंरनी बउवड़ तम कां चाल्या आज
आज सीतला माता ....
एक जो दिजो माता दोयज दिजो तीसरा की आस बन्दाड़ो
वो जामण जाई म्हारी एक बालुड़ो देय

मेदी भरी रे चगेरनी बउवड़ तम कां चाल्या आज
आज सीतला माता ....
नारेल भरी रे चगेंरनी बउवड़ तम कां चाल्या आज
आज सीतला माता ....

जब महिलाएँ दूल्हा–दुल्हन को लेकर शीतला माता का पूजन करने जाती हैं , तब यह गीत गाया जाता है।

शीतला माता! गोबर, कुंकुं, मेहंदी और नारियल की छाब भरी है, यह सब माता आपके लिये लाई हूँ, आज आपकी पूजा का दिन है। मैं आपका चबूतरा लीपूँगी, कुंकुं, मेहंदी लगाऊँगी और नारियल चढ़ाऊँगी। आप मुझे गोदी में एक बच्चा दे दो।

माता पूजन

सिली रिजो वो सीतला बेन सपूती रिजे म्हारी मांय
झूलो बान्दयो पारस पिपली वो बेन झूलो मेरी मांय
झूलेगा नानी मोटी बेनली वो बेन झूला देगा गुणा बीर
सिली सितला वो बेन सिद्धवट झूलो मेरी मांय
झूलो बान्दयो रेसम डोर को वो बेन पालणा री लागी झगाझोत
सिली रिजे वो सीतला बेन सिद्धवट झूलो मेरी मांय
सिसरा भम्मर अद बण्या वो बेन टिलड़ी री लागी झगाझोत
सिली रिजे वो सीतला बेन सिद्धवट झूलो मेरी मांय
कानारा झेला अद बण्या वो बेन मोती री लागी झगाझोत
सिली रिजे वो सीतला बेन सिद्धवट झूलो मेरी मांय
हइड़ारो हेंकल अद बण्यो वो बेन डोरा री लागी झगाझोत
सिली रिजे वो सीतला बेन सिद्धवट झूलो मेरी मांय
सिली रिजो वो सीतला बेन सिद्धवट झूलो मेरी मांय
झूलो बान्दयो पारस पिपली वो बेन झूलो मेरी मांय
बईया रा बाजुबंद अद बण्या वो बेन छंद बंद री लागी झगाझोत
सिली रिजे वो सीतला बेन सिद्धवट झूलो मेरी मांय
अंग रा सालूड़ा अद बण्या वो बेन लवरीरी लागी झगाझोत
सिली रिजे वो सीतला बेन सिद्धवट झूलो मेरी मांय

शीतला माता की पूजा के बाद वापस आते समय यह गीत गाया जाता है।

हे शीतला माता! मैंने तुम्हारे लिये सिद्धवट पर झूला बाँधा है, वहाँ पर अमर पीपल का पेड़ है। वहीं पर तुम्हारे लिये झूला लगाया, छोटी बहन झूलेगी, गुनाभाई झूला देंगे। सिर का

भम्मर, कानों के झाले और बाँहों का बाजूबंद बहुत सुन्दर बना है उसमें जो डोरियाँ लगी हैं, वह देखते ही बनती हैं। बहन! तुम सदा सुहागन रहना लेकिन पीपल पर लगाये झूलें में जरूर झूलते जाना।

माता पूजन

माता जो तम पुजापा का साबल्या
माता गंधीड़ा को बेटो हाजर होय
कुंवर झालो-झालो देती आवे हो गड़ की गूजरी
माता जो तम बाजोट्या का साबल्या
माता सुतार्या को बेटो हाजर होय
कुंवर झालो-झालो ....
माता जो तम फूलड़ा का साबल्या
माता मालीड़ा को बेटो हाजर होय
कुंवर झालो-झालो ....
माता जो तम कलस्या का साबल्या
माता कुमार्या को बेटो हाजर होय
कुंवर झालो-झालो ....

महिलाएँ दूल्हे या दुल्हन को लेकर मन्दिर जाती हैं। शीतला माता की पूजा गाजे-बाजे के साथ करने उन्हें लेकर जाती हैं, तब वहाँ यह गीत गाते हैं।

हे माताजी! आपको अगर पूजा-चढ़ौत्री की इच्छा हो तो गंधी का बेटा आपके सामने हाजिर होगा, आपको अगर बैठने के पाट की इच्छा हो तो सुतार का बेटा तुरन्त हाजिर होगा। यदि आपको फूलों की चाह हो तो माली का बेटा तुरन्त हाजिर होगा और अगर आपको ठंडे पानी की चाह है तो कलश लेकर कुम्हार का बेटा हाजिर होगा। आप आदेश दो, माता! मैं अपने पल्ले से आपका रास्ता साफ करती हुई दौड़ती चली आऊँगी।

विवाह (गुणा भई)

सोनो घड़े रे सोनीड़ो वीरा
मुंदड़ी सोवे म्हारा जुझार जी रा हात
हताई बेठन्ता तमारा दाउजी बरजीया
बेटा मती जाओ रण में आज
पाछां फरां तो दादाजी लाजे म्हारी झरणी रो दूद
पालणे बेठन्ता माता बई बरजीया

बेटा मती जाओ रण में आज
पाछां फरां तो माता म्हारो कुल लाजे
लाजे म्हारी झरणी रो दूद
घोड़ीला फेरन्ता भईजी बरजीया
भई मती जाओ रण में आज
पाछां फरां तो दादा म्हारो कुल लाजे
लाजे म्हारी झरणी रो दूद
रसोड़ा करन्ता भाभीसा बरजीयो
देवर मती जाओ रण में आज
पाछां फरां तो भाभी म्हारो कुल लाजे
लाजे म्हारी झरणी रो दूद

गुणा बापजी, भेरूजी एवं जुझार तीनों भाई माने जाते हैं, तीनों के गीत गाये जाते हैं। माता के पूजन के बाद गुणा भाई की पूजा की जाती है, तब यह गीत गाते हैं।

सोनी ने सोने की अँगूठी बनाई, जो जुझार बाप जी (देवता) के हाथों की शोभा बनी। तखत पर बैठे दादाजी कहते हैं– बेटा! युद्ध करने रण में नहीं जाओ। बेटा कहता है– पिताजी! मैं अपना घोड़ा वापस नहीं पलटाऊँगा, अगर ऐसा करूँगा तो मेरी बदनामी होगी और मेरी माँ का दूध जो मैंने पिया है उसका कर्ज कैसे चुकाऊँगा।

विवाह (गुणा भई)

गुणा बीर सीसरी पांगा तो, पेंचा प्यारी लागे रे
गुणा बीर काना रा मोती तो झूमण प्यारा लागे रे
म्हारा गुणा बीर, तमारा छंद में चालां रे
बीरा मालवे जावां तो लारे मती आजो रे
म्हारा गुणा बीर तमारा छंद में चालां रे
बेन्या म्हारी मालवे जावो तो लारां म्हाने लई चालो
म्हारी सीतला बेन, मालवे जावो तो दुनिया डरे रे
गुणा बीर अंगरा जामा केसरिया प्यारा लागे रे
गुणा बीर पांवा री मोजड़ी, पन्नी प्यारा लागे रे
म्हारा गुणा बीर, तमारा छंद में चालां रे
बीरा मालवे जावां तो लारे मती आजो रे
म्हारा गुणा बीर तमारा छंद में चालां रे

मालवा में गुणा बापजी की पूजा की जाती है। शीतला माता का भाई माना गया है।

शीतला माता कहती हैं– भाई! तुम्हारे सिर का साफा और उसकी पेंच बहुत प्यारी लगती है, तुमने जो केशरिया कपड़े पहन रखे हैं वह और पाँवों की मोजड़ी बहुत प्यारे लगते हैं, लेकिन भाई! मैं मालवा में जाऊँगी तो तुम मेरे साथ मत आना। गुणा भाई कहते हैं– नहीं–नहीं बहन! मुझे भी साथ ले चलो। बहन कहती है– नहीं भाई! मालवा के लोग तुम्हारे नाम से डरते हैं।

विवाह (गुणा बापजी)

गुणा भई सिसरी पांगा सवा लाख की
गुणा भई कानो रो मोती सवा लाख रो
गुणा भई पेंचा को अदक सो रूप म्हारा बीरा रे
गुणा भई रा पग बाजे घुगरा
गुणा भई हात चट्यो ने पग पावड़ी
गुणा भई सेर्या में रमवा आवो म्हारा बीरा रे
गुणा भई रा पग बाजे घुगरा
गुणा भई गळा री कण्ठी सवा लाख की
गुणा भई अंग रा जामा सवा लाख रा
गुणा भई हिरां रो अदक सो रुप म्हारा बीरा रे
गुणा भई रा पग बाजे घुगरा
गुणा भई सेर्या में रमवा आवे म्हारा बीरा रे
गुणा भई हात चट्यो ने पग पावड़ी
गुणा भई रा पग बाजे घुगरा

गुणा भाई! तुम्हारे सिर के लिये पगड़ी लाई हूँ जो बहुत ही अनमोल है, उसके पेंच का स्वरूप अलग ही है। गुणा भाई! उसको पहनो। तुम जब चलते हो तो तुम्हारे पैरों के घुँघरू की आवाज से मन मुग्ध हो जाता है। गुणा भाई हाथों में चट्या, पैरों में पाँवड़ी (गुणा भाई को चढ़ने वाली लकड़ी की वस्तुएँ) लेकर आई हूँ। तुम सड़कों पर खेलने आओ। जब तुम खेलते हो, तो तुम्हारे पैरों के घुँघरू की आवाज मीठी लगती है।

विवाह

थें म्हारो गेंदो छिपायो वो मिजाजण
थें म्हारो गेंदो छिपायो
जद वो मिजाजण कंठाल्या क्यां गई थी
कंठाल्या रो मनड़ो मोयो वो
कंठाल्या रो नजरा नी आयो वो मिजाजण

थें म्हारो गेंदो छिपायो
जद वो मिजाजण तम्बोली क्यां गई थी
तम्बोली रो मनड़ो मोयो वो
तम्बोली रो नजरा नी आयो वो मिजाजण
थें म्हारो गेंदो छिपायो
जद वो मिजाजण लखारा क्यां गई थी
लखारा रो मनड़ो मोयो वो
लम्बारा रो नजरा नी आयो वो मिजाजण
थें म्हारो गेंदो छिपायो

शादी में जब महिलाएँ नाचती हैं तो यह गीत गाती हैं। नखराली औरत! तूने मेरा पति चुरा लिया है। तू जिसके यहाँ जाती है उसका मन मोह लेती है। तू इस तरह सबका दिल चुरा लोगी तो कैसे काम चलेगा? इसलिये अपने नखरे दिखाना छोड़ो और अपने रास्ते चलो।

विवाह

सीस तेरे सवा लाख का चीरा कान तेरे दरिया पार का मोती
तो पेंचा भोत हजारी नवल बना लाला भोत हजारी
कमरू देस की असल कामणी तो मेरो बनो जादुगीर को,
नवल बनो मेरो बनो जादुगीर को, जादु बी जाणे ने टोमा
बी जाणे तो लेर उतारे कामण की, नवल बनो लेर उतारे कामण की
बनणो बी रंग में बनड़ी बी रंग में तो बोरा जी पड़ गया
फंद में, चतर बनी बोराजी पड़ग्या फंद में
कंठ तेरे हीरा जड़ की कंठी अंग तेरे अतलस का जामा
तो केसर भोत हजारी तो चोसर भोत हजारी
कागद की दोई नाव बनाई तो पाणी में पुतली नचाई
नवल बना पाणी में पुतली नचाई

विवाह के अवसर पर दूल्हा-दुल्हन के किसी भी काम के करते समय यह गीत गाया जाता है।

मेरे प्यारे दूल्हे! तुम्हारे सिर की पगड़ी बहुत कीमती है, उसमें जो मोती लगे हैं वह सात समंदर पार से मँगवाये गये हैं। उन मोतियों के साथ पगड़ी के जो पेंच लगे हैं वह बहुत ही मन मोह लेने वाले हैं। कमरू देश की खास जादूगरनी दुल्हन है तो दूल्हा भी कम नहीं है। दूल्हा कामण की लहर उतार देता है। दुल्हन भी खुश है और दूल्हा भी खुश है, फिर कमरू देश के मुल्लाजी चक्कर में पड़ गये हैं।

विवाह

तमने बांदयो हे लेरदार सांपो बागां में मती जाया करो
बांगा की मालन मजेदारी नजर मती लाख्या करो
उनी मालन ने लाखी दियो गजरो उबा पछताया करो
पनघट की पणियारी मजेदारी नजर मती लाख्या करो
सेर्या की सहेल्या मजेदारी नजर मती लाख्या करो
उनी सहेल्या ने लाखी दिदी नजरा उबा पछताया करो

शादी में महिलाएँ नाचती हैं तब यह गीत आड़े नाच पर गाया जाता है। माता पूजने के बाद ढोल पर पाँच महिलाएँ जरूर नाचती हैं।

हे पिया! आपने लहरिये वाला साफा बाँधा है, आप बहुत सुन्दर लग रहे हो। बागों की ओर मत जाना, मालिन तुम्हारे ऊपर मर मिटेगी। पनघट पर भी मत जाना, पानी भरने वाली पनिहारी तुम्हारे ऊपर फिदा हो जायेगी। सड़क पर भी मत जाना, मेरी सहेलियाँ तुम्हें अपने जाल में फाँस लेंगी।

विवाह

सात सहेल्यां मिल झूलो झुले वो
को नी म्हारा दिलड़ा री बात, कटारी वो
म्हारा पछवाड़े केवड़ो वो
जि पर झूले बासक नाग
खायो थो पण भली बची वो
भला म्हारा परण्या रा भाग, कटारी वो
मड़-मड़ मेड़ या चड़ी गई वो
जई उबी परण्या रा पास, कटारी वो
जागता सा बालम सुईग्या वो
मुखड़ा से राल्यो हे रूमाल, कटारी वो
सुता सा बालम जागीग्या वो
मुखड़ा से हेड्यो हे रूमाल, कटारी वो

विवाह में महिलाएँ नाचते समय यह गीत गाती हैं।

सात सहेलियों ने झूला बाँधा है और मैं झूलने चली गई, तो पतिदेव नाराज हो गये। जाग रहे थे, पर जबरदस्ती सो गये। मुँह के ऊपर जबरन रूमाल रख लिया। वापस पलटने लगी तो सोये हुये पिया तुरन्त जाग गये। रूमाल मुँह पर से हटा लिया और मेरा रास्ता रोक लिया।

विवाह

चाँदी सोना रो म्हारो बटवो थो
लाल पलंग पे धरीयो थो
लादी जारे बटवा झुकी जऊवां
सासु सुणेगा म्हारो जीव लेगा
सासुरा सुणेगा म्हारो अन्त लेगा
चाँदी सोना रो म्हारो बटवो थो
लाल पलंग पे धरीयो थो
लादी जारे बटवा झुकीं जऊवां
जेठाणी सुणेगा म्हारो जीव लेगा
जेठजी सुणेगा म्हारो अन्त लेगा
चाँदी सोना रो म्हारो बटवो थो
लाल पलंग पे धरीयो थो
लादी जारे बटवा झुकी जऊवां
देराणी सुणेगा म्हारो जीव लेगा
देवर सुणेगा म्हारो अन्त लेगा
चाँदी सोना रो म्हारो बटवो थो
लाल पलंग पे धरीयो थो
लादी जारे बटवा झुकीं जऊवां
ननद सुणेगी म्हारो जीव लेगा
नणदोई सुणेगा म्हारो अन्त लेगा

महिलाएँ जब नाचती हैं तब यह गीत गाती हैं और इस गीत के साथ ढोल पर मटकी नृत्य होता है।

महिला कह रही है कि– चाँदी सोने का मेरा भरा पर्स था जिसे मैंने पलंग पर रखा था, पता नहीं कहाँ गुम हो गया है ? यह बात सासजी को मालूम पड़ेगी तो वह मुझसे लड़ाई करेंगी और ससुर को मालूम पड़ेगा तो वह भी मुझे डाँटेंगे। इसी प्रकार जेठ–जेठानी, देवर–देवरानी और ननद–ननदोई के लिए कहा गया है। मेरा बटुवा मुझे मिल जाये तो उनकी डांट नहीं खाना पड़ेगा।

चाक बधाना

कुमार कारे कुमारण मांगे टोंटी झुमको
कुमार कारे कुमारण मांगे खारक खोपरो
जेलू रांडका रे कुमार्या तू बासण घड़नो छोड़दे

जेलू रांडका रे कुमार्या तू हांडो घड़नो छोड़दे
कुमार कारे कुमारण मांगे चोली पोलको
कुमार कारे कुमारण मांगे लूगड़ो घाघरो
कुमार कारे कुमारण मांगे घी को चूरमो
कुमार कारे कुमारण मांगे खारक खोपरो

कुम्हार के यहाँ जब चाक बदाने जाते हैं तब यह गीत गाया जाता है। बरतन बनाने के गोल घेरे को चाक कहा जाता है। चूल्हा बनाने के लिये पीली मिट्टी लेने कुम्हार के यहाँ जाते हैं, तब चाक की भी पूजा करते हैं। चाक बदाने जब महिलाएँ जाती हैं तो कुम्हार की पत्नी उनसे नेंग माँगती है कि मुझे टोटी-झुमके लाकर दो। दूल्हा-दुल्हन के घर की महिलाएँ कुम्हार को खरी-खोटी सुनाती हैं। हे माँ (जलकुकड़ी विधवा) के बेटे! तू बरतन बनाना छोड़ दे, तेरी पत्नी चोली ब्लाउज माँगती है, घी का चूरमा माँगती है, इसलिये तू बरतन बनाना बन्द कर दे।

बधावा

सुवारे पेलो बदावो म्हारे आवीयो
सुवारे मोकल्यो म्हारा सुसराजी री पोल
सुन्ना की डंडी दिवो बले
सुवारे दुसरो बदावो म्हारे आवीयो
सुवारे मोकल्यो म्हारा जेठजी री पोल
सुन्ना की डंडी दिवो बले
सुवारे तीसरो बदावो म्हारे आवीयो
सुवारे मोकल्यो म्हारा देवरिया री पोल
सुन्ना की डंडी दिवो बले
सुवारे चारमो बदावो म्हारे आवीयो
सुवारे मोकल्यो म्हारा नणदोईजी री पोल
सुन्ना की डंडी दिवो बले
सुवारे पांचवो बदावो म्हारे आवीयो
सुवारे मोकल्यो म्हारा सायबजी री पोल
सुन्ना की डंडी दिवो बले

कुम्हार के यहाँ से पीली मिट्टी लेकर जब महिलाएँ घर जाती हैं तब यह गीत गाया जाता है। मिट्ठू को सम्बोधित करके कहती है कि- मिट्ठू! मेरे यहाँ पहली शादी है। मैंने इस शुभ कार्य का धन्यवाद मेरे ससुरजी को दिया है, जहाँ दिया भी सोने की डंडी पर जलता है। उस दिये से हमारे घर में उजाला ही उजाला हो गया है, रामजी की कृपा से सब खुश हैं। इसी तरह से नायिका जेठ जी देवर जी, ननदोई जी और पति देव को धन्यवाद देती है।

बधावा

भंवरा पेंलो बदावो म्हारे अवीयो भंवरा मोकल्यो म्हारा
सुसराजी री पोल बाड़ीरा भंवरा दाक मिठी ने रस सेवरो
भंवरा दुसरो बदावो म्हारे अवीयो भंवरा मोकल्यो म्हारा
जेठजी री पोल बाड़ीरा भंवरा दाक मिठी ने रस सेवरो
भंवरा तीसरो बदावो म्हारे अवीयो भंवरा मोकल्यो म्हारा
देवरीया री पोल बाड़ीरा भंवरा दाक मिठी ने रस सेवरो
भंवरा चौथो बदावो म्हारे अवीयो भंवरा मोकल्यो म्हारा
ननदोईजी री पोल बाड़ीरा भंवरा दाक मिठी ने रस सेवरो
भंवरा पाचमो बदावो म्हारे अवीयो भंवरा मोकल्यो म्हारा
सायब री पोल बाड़ीरा भंवरा दाक मिठी ने रस सेवरो

पहला धन्यवाद मेरे यहाँ आया है जो मैंने ससुरजी को दिया है। दूसरा धन्यवाद जेठजी को दिया है, तीसरा देवर को, चौथा ननदोई को और पाँचवा मेरे पति को दिया है। इन्हीं सज्जनों की वजह से आज मेरे यहाँ यह दिन देखने को मिला है।

विवाह (गणेश वन्दना)

कंई चलो गणेश अपण जोसी क्यां चलां
कंई अच्छा-अच्छा लगन मोलाड़ो गणेस
म्हारा गणेस दुंदाला
कंई दुंद दुंदाला रे गणपत सुंड सुण्डाला
कंई बुड़ारा बालक हुई ने आवो गणेस
म्हारा गणेस दुंदाला
कंई नानो सो झगल्यो रे गणपत
मकदूरारी टोपी कंई बुड़ारा बालक हुई ने
आवो गणेस म्हारा दुंद दुंदाला
कंई चलो गणेस अपण कण्ठाल्या क्यां चलां
अच्छी-अच्छी हलदी मोलाड़ो गणेस
म्हारा गणेस दुंदाला, दुंद दुंदाला रे गणपत
सुंड सुंड़ाला
कंई चलो गणेस अपण तम्बोली क्यां चलां
तो अच्छा अच्छा बिड़ला मोलावां गणेस
म्हारा गणेस दुंदाला
कंई बुड़ारो बालक हुई ने आवो गणेस

म्हारा गणेस दुंदाला, दुंद दुंदाला रे गणपत
सुंड सुंड़ाला
कंई चलो गणेश अपण सोनी क्यां चलां
तो अच्छा-अच्छा गेणांला मोलावो गणेस
म्हारा गणेस दुंदाला

हे गणेशजी! चलो हम जोशी के यहाँ चलते हैं, वहाँ अच्छे लगन लिखवायेंगे। मेरे मोटे गणेश! तोंद (पेट) वाले गणेश! छोटी सी टोपी और छोटा सा झबला (फ्राक) पहनकर बच्चे का रूप रखकर आओ। इसी तरह पंसारी के हल्दी लेने, तम्बोली के यहाँ पान लेने, सोनी के यहाँ आभूषण लेने हम साथ चलेंगे।

विवाह (गणेश वन्दना)

गवली से गणपत उतर्या
क्यों म्हारा गणपत रूस्या जी
सिद्धूजी मनावे म्हारा गणपत
क्यों म्हारा गणपत रूस्या जी
सवा मण की घूगरी रदांडू
सवा मण का लाडू जी
इत्रो तो हमसे नई बणे गणपत
सगली परजा कुंवारी हे
गवली से गणपत उतर्या
क्यों म्हारा गणपत रूस्या जी
प्रेमनाराण मनावे म्हारा गणपत
क्यों म्हारा गणपत रूस्या जी

हे गणेशजी! आप क्यों नाराज हैं आपको सिद्धूजी मनाते हैं, आपको प्रेमजी मनाते हैं। आप हमारे यहाँ पधारे हो तो गुस्सा मत करो। सवा मन (पच्चीस किलो) की घूगरी या लड्डू बनाने की हमारी हैसियत नहीं है। इतना मुझसे नहीं बनेगा क्योंकि मेरी सारी प्रजा कुँआरी (भूखी) है।

विवाह (गणेश)

पांच लाडू पगे धर्या
सिद्धूजी तो पगे पड्या
नांचो रे म्हारा गणपतिया
गणपतियो तो नाचेगो
पांव घुगरिया बांदेगो

सेंर्या में रोल मचावेगो
नाचो रे म्हारा गणपतिया
पांच लाडू पगे धर्या
प्रेमनारायण तो पगे पड़्या
नांचो रे म्हारा गणपतिया
गणपतियो तो नाचेगो
पांव घुगरिया बांदेगो
सेंर्या में रोल मचावेगो
नाचो रे म्हारा गणपतिया
पांच लाडू पगे धर्या
जोगेनलाल तो पगे पड़्या
नाचो रे म्हारा गणपतिया
गणपतियो तो नाचेगो
पांव घुगरिया बांदेगो
सेंर्या में रोल मचावेगो
नाचो रे म्हारा गणपतिया

गणेश को मनाने के लिये पाच लड्डू चढ़ाये हैं। हे गणेश! तुम नाचो। गणेश पैरों में घुँघरू पहनकर नाचेंगे, सड़क पर धूम मच जायेगा, जब गणेशजी नाचेंगे। घर में वारे-न्यारे हो जायेंगे, गणेश मेरे देवा! तुमसे विनती है तुम नाचो।

विवाह (गणेश वन्दना)

गजानन ने सोवे देवा दो नारी
गणपत जी ने सोवे देवा दो नारी
हो जी दो नारी जाकी मइमा भारी
एक नारी विकी थाल परोसे
दूजी नारी भर लावे झारी
गजानन ने सोवे देवा दो नारी
एक नारी तो देवा की आरती उतारे
दूजी नारी विका चरणा में वारी
गजानन ने सोवे देवा दो नारी
एक नारी तो उनकी सेज बिछावे
दूजी नारी पोड़न की मनवारी
गजानन ने सोवे देवा दो नारी

एक नारी विनका बिड़ला बणावे
दूजी नारी देव देवा ने वारी
गजानन ने सोवे देवा दो नारी

गणेश को दो पत्नी ही अच्छी लगती हैं। एक पत्नी भोजन लाती है दूसरी पत्नी गंगाझारी भरकर लाती है। एक पत्नी गणेशजी की आरती करती है, दूसरी पत्नी उनके पैरों को दबाती है। एक पत्नी उनका बिस्तर बिछाती है दूसरी पत्नी उनके बगल में सोती है। एक पत्नी उनका पान बनाती है दूसरी पत्नी उनको खिलाती है।

विवाह (परीबाई)

थुली चौखा ने डोडा एलची वो परी बई
नारेलां री करां मनवार
आज कुण रई धरे नोत्या वो परी बई
कंई कंई करी मनवार .... थुली चौखा
आज सिद्धू जी धरे नोत्या वो परी बई
नारेला री करी मनवार ....
थुली चौखा ने रांदी लापसी वो परी बई
नारेला री करी मनवार ...... थुली चौखा
आज कुण रई धरे नोत्या वो परी बई
कंई कंई करी मनवार .... थुली चौखा
आज प्रेमनारायण घर नोत्या वो परी बई
ओड़नी री करी मनवार .... थुली चौखा

शादी शुरू होती है तो सुहागिनें जरूर जिमाई (भोजन) जाती हैं, तब यह गीत गाते हैं।

घर की सुहागिन जो मर जाती है उसे घर के लोग याद करते हैं। उसकी पुण्यतिथि पर सुहागिनों को खाना खाने को बुलाते हैं, तब यह गीत गाया जाता है। परी बाई दलिया-चावल इलायची से बनाये हैं और नारियल से तुम्हारा स्वागत करते हैं। आज इस घर तुमको न्यौता दिया है और मनवार की है।

विवाह (परी बाई)

आप मोटा ने हम छोटा वो परी बई
तमारी होड़ नी होय
कांकड़िया री खेती वो परी बई
जीमें बांटो होय ....

केसरिया दरबार सिदार्या
मेला में झगड़ो होय
डब्बा मांय को गोणो वो परी बई
जीमें बांटो होय ....
पेटी मांय का सालुड़ा वो परी बई
जीमें बांटो होय,
केसरिया दरबार सिदार्या
मेंला में झगड़ो होय ....
झोली में का बालुड़ा वो परी बई
जिमें बांटो होय
केसरिया कचेर्या सिदार्या
मेंला में झगड़ो होय ....
आप मोटा ने हम छोटा वो परी बई
तमारी होड़ नी होय
कांकड़िया री खोती वो परी बई
जीमें बांटो होय

शादी के समय सुहागिनों को जब खाना खिलाया जाता है, तब यह गीत गाया जाता है।

सुहागिन महिला का स्वर्गवास हो जाता है तो वह परी के नाम से जानी जाती है। परी बाई! आप बड़ी हो और हम बहुत छोटे हैं। आप हमें छोड़कर चली गईं यह सोचकर आत्मा को शांति देते हैं कि खेती होती तो उसमें भी बँटवारा होता है, गहने होते तो उसमें भी बँटवारा होता है। पिया अगर नौकरी पर जाते हैं तो महल में झगड़ा होता है, इसी तरह सोचकर मन को समझाते हैं।

विवाह (परी बाई)

उबल्या छबल्या गुथई लो म्हारी बेन
फुलड़ा बिनवा हमारी परी बई जांय
बिणता चुणता पड़ी गई सांज
आज की रैण हमारा जोगेन्द सिंग घरे रात
आज की रैण हमारा धनसिंग घरे रात
आज की रैण हमारा उदयसिंग घरे रात
ढाली दिया ढोली या बिछई दीदी सेज
नम नम लागे उनकी जोड़ा बऊ पांव
सिला रिजो बउवड़ सपुता हो रीजो

जुग-जुग जीवे तमारो अमर ऐवात
जुग जुग जीवजो तमारा गोदी में का लाल

मेरी परी फूल चुनने गई है। छोटी-छोटी टोकनी में वह फूल भर कर लाई है। फूलों को चुनते-चुनते शाम हो गई है। घर दूर है। योगेन्द्र के घर रात रही, योगेन्द्र ने पलंग बिछा दिया, बिस्तर लगा दिया। योगेन्द्र की बहू ने परी बाई के पैरों को खूब दबाया। दबाने के बाद झुक-झुक कर उनके पैरों को धो दिया। परी बाई कहती है- बहू! तू सुहागन रहना, दूधो नहाओ और पुत्रों से फलो, युगों-युगों तक तुम जीना और तुम्हारा सुहाग सलामत रहे। अमर तुम्हारी गोद का बेटा रहे।

विवाह (परी बाई)

परी बाई कां तो पियर तमारो सासरो
परी बई कां जाई दियो हे मुकाम
हो मोटा री जाई हमारे बन्दाड़ो झरणी पालणो
परी बाई लिम्बोदा पियर बांगर सासरो
परी बई बांगा में दियो हे मुकाम
हो मोटा री ....
परी बाई किस बिद छोड़्या सासु सुसरा
किस बिद छोड़्या मायन बाप हो
हो मोटा री ....
परी बाई रोवता छोड़्या हे मायन बाप हो
मोटा री जाई झूरता छोड़्या हे सासु सुसरा
परी बई रोता छोड़्या हे गोदी मेरा लाल
हो मोटा री ....

हे परी बहन! कहाँ तुम्हारा ससुराल है, कहाँ मायका है और तुमने कहाँ जाकर अपना स्थान बनाया है? परी बहन, हमारे ऊपर मेहरबानी करें, आशीर्वाद देकर हमारे घर भी एक पालना बँधवाएँ, जिसमें बालक झूलें। परी कहती है- मेरा मुकाम बागीचा में है। परी बहन, तुम हमें क्यों छोड़कर चली गई हो? तुम्हारे माँ-बाप, सास-ससुर बहुत दु:खी हैं।

विवाह (परी बाई)

सुतार्या री सेंर्या के परी बई
कंई वो करे, कंई वो करे
परी बई कंई वो करे
बाजोट्यो मोलावे के म्हारा मन भावे

के हइड़े हरक नी मावे
वो परी बई, कंई वो करे
कुमार्या री सेंर्या के परी बई
कंई वो करे, कंई वो करे
परी बई कंई वो करे
कलस्यो मोलवावे के म्हारा मन भावे
के हइड़े हरक नी मावे
वो परी बई, कंई वो करे
के परी बई दूद पीवे
पीवे जो तो पीवे, सहेंल्या ने पावे
बेन्या बई के पावे, के परी बई
कंई वो करे।

घर की स्वर्गवासी सुहागिन के नाम से सुहागिनें जिमाई जाती हैं, उन्हें खाना खिलाया जाता है और सुहागिन के नाम से धूप दी जाती है, तब यह गीत गाते हैं।

परी बाई सुतार के वहाँ क्या कर रही हैं? सुतार के यहाँ परी बाई बाजोट (पाटला) खरीदने गई हैं। कुम्हार के वहाँ परी बाई क्या कर रही हैं? कुम्हार के यहाँ परी बाई कलश खरीदने गई हैं। परी बाई दूध पीती हैं, और अपनी सहेलियों तथा बहन को भी पिलाती हैं।

विवाह (परी बाई)

परी बई आयो–आयो परी बई रो सांत
बागां में डेरा दई दिया वो म्हारी मांय
परी बई फरी गया सारा बगीचा रा मांय
आम्बा का नीचे उतर्या वो म्हारी मांय
परी बई फूलड़ा बिण्या वो दस बीस
कलियां तो चूंटी डेढ़ सौ वो म्हारी मांय
परी बई फुलड़ा का गुथ्या चन्दर हार
कलियां का गुथ्या गजरा वो म्हारी मांय
परी बई आयो ....
परी बई हइड़ा का सोवे चन्दर हार
हाता में सोवे गजरा वो म्हारी मांय

सुहागिनों को भोजन कराने के बाद घर की महिलाएँ मेहंदी लगाती हैं और गीत गाती हैं।

हमें परी बहन का साथ मिल गया है जिनका स्थान बगीचे में आम के पेड़ के नीचे है।

परी बहन हमने दस-बीस फूल बीने हैं, कलियाँ भी डेढ़ सौ चुनी हैं, फूलों का आपके लिये हार बनवाया है, कलियों का गजरा बनाया है, परी बाई आपका आशीर्वाद चाहिये।

विवाह (भैरव)

भेरू जी लीप्या छाब्या म्हारे आंगणा
म्हारे लीपण को घूंदण वालो
दोनी अंतरयामी पाती दोनी हो कड़वा लीम की
भेरू जी गायां ने भेंस्या म्हारे अंत घणा
म्हारे दूंद्या को पीवण वालो
दोनी अंतरयामी ....
भेरूजी बाग बगीचा म्हारे अंत घणा
म्हारे बागां को सींचण वालो
दोनी अंतरयामी ....
भेरूजी अन धन लछमी म्हारे अंत घणी
म्हारे धन को बिलसण वालो
दोनी अंतरयामी ....
भेरूजी चांदी सोना का बांदु पालना
म्हारे पालना में झूलनवालो
दोनी अंतरयामी ....

मण्डप के समय भैरव महाराज का गीत भी गाया जाता है।

भेरू महाराज! मेरे घर में रामजी की मौज है। आपके आशीर्वाद से किसी बात की कमी नहीं है, बस मेरी गोद सूनी है। इन चीज़ों को उपयोग करने वाला कोई नहीं है। एक बालक की इच्छा है, वह मैं आपसे माँगने आई हूँ। मेरे घर में दूध की कमी नहीं है, चाँदी-सोना की कमी नहीं है, लेकिन यह सब किसी काम का नहीं है।

विवाह (भैरव)

पीपली दरवाजे सूतारण हेला पाड़े जी
सुतारण हेला पाड़े जी
हाजर बाजोट्यो लावे जी
आज का सपना में गोदी में लाल रमाया जी
ऐसो सपनो आयो जी
पीपली दरवाजे मालण हेला पाड़े जी

मालण हेला पाड़े जी
हाजर फुलड़ा लावे जी
आज का सपना में गोदी में लाल रमाया जी
ऐसो सपनो आयो जी
पीपली दरवाजे सुनारण हेला पाड़े जी
सुनारण हेला पाड़े जी
हाजर गेणला लावे जी
आज का सपना में गोदी में लाल रमाया जी
ऐसो सपनो आयो जी
पीपली दरवाजे गन्दीड़न हेला पाड़े जी
गन्दीड़न हेला पाड़े जी
हाजर कंकू चोखा लावे जी
आज का सपना में गोदी में लाल रमाया जी
ऐसो सपनो आयो जी

आज मैंने ऐसा सपना देखा कि बच्चे को गोद में खिला रही हूँ। मुझे सुतारन की आवाज सुनाई दे रही है। मुझे मालिन की आवाज सुनाई दे रही है। मुझे सुनारन की आवाज सुनाई दे रही है। मुझे गन्धी की आवाज आ रही है। ये सभी लोग भेरू महाराज के लिये पाट, फूल, गहने, कंकू, चावल लेकर खड़े हैं। भेरू महाराज का आशीर्वाद हो तो सचमुच मेरी गोदी में मेरा बच्चा खेलेगा।

विवाह (भैरव)

भेरूजी गाड़ो भरी ने गारो लावसी
भेरू जी मंदर थेपण अइहो
अंतरयामी घरे तो जावादो नानो रोवस्यां
भेरूजी एक गोद्या में दूजो पालने
भेरूजी तीसरा की आस बंदावो हो
अंतरयामी घरे ....
भेरूजी गाड़ो भरीने गोबर लावसी
भेरूजी मंदर लीपण अइहो
अंतरयामी घरे ....
भेरूजी एक गोद्या में दूजो पालने
भेरूजी तीसरा की आस बंदावो हो
अंतरयामी घरे ....

भेरूजी गाड़ो भरी ने फुलड़ा लावसी
भेरूजी फुलड़ा चड़ावा ने अइहो
अंतरयामी घरे ....
भेरूजी एक गोद्या में दूजो पालने
भेरूजी तीसरा की आस बंदावो हो
अंतरयामी घरे ....

शादी के समय अगर कोई मान (बाल उतारना) हो तो भी शादी में भैरव की पूजा करना पड़ती है, तब यह गीत गाते हैं।

हे भेरूजी! मैं गाड़ी भर कर गारा (मिट्टी), गोबर और फूल लाऊँगी और तुम्हारा मंदिर बनाऊँगी, मंदिर को गोबर से लीपूँगी, फूलों के हार पहनाऊँगी तथा सब कुछ करूँगी, लेकिन अभी मुझे घर जाना है, मेरे बच्चे घर पर रोते होंगे। एक मेरी गोदी में है, दूसरा पालने में है, तीसरा तुम और देना, लेकिन अभी मुझे घर जाने दो, बच्चे रोते होंगे।

विवाह (रातीजगा)

हुँ तमने पुंछु पीपल राज पुंवार
सुना मेंला में दीवला क्यों जोया जी
आया सासुजी म्हारा देव धणी भरतार
सुना मेंला में दीवला युं जोया जी
हुँ तमने पुंछु पीपल राज पुवांर
सुना मेंला में उना पाणी किने मेल्या जी
आया सासुजी म्हारा देव धणी भरतार
सुना मेंला में उना पाणी किने मेल्या जी
हुँ तमने पुंछु म्हारी पीपल राज पुवांर
सुना मेंला में भोजन किने मेल्या जी
आया सासुजी म्हारा देव धणी भरतार
सुना मेंला में भोजन युँ मेल्या जी राज
सुना मेंला में भोजन युँ मेल्या जी राज
हुँ तमने पुंछु पीपल राज पुवांर
सुना मेंला में ढोल्यों क्यों ढाल्यों जी राज
आया सासुजी म्हारा देव धणी भरतार
सुना मेंला में ढोल्यों युँ ढाल्यों जी राज

दूल्हा–दुल्हन जब आते हैं, तब राती जगा किया जाता है। दूल्हा–दुल्हन दोनों पूजा करते

हैं। यह पूजा कोई बाहर का व्यक्ति नहीं देख सकता। यह गीत गाया जाता है।

सासजी बहू से कह रही है कि- मेरा बेटा तो मर गया है फिर तुमने सूने महल में उजाला किसके लिये किया है? बहू कहती है- सासूजी! रात में आपका बेटा आया, मेरे पति आये थे इसलिये दिया जलाया है। सासूजी कहती है- बहू! तुम झूठी हो, तुम्हारी गोत्र झूठी है, इन्द्रासन (स्वर्ग) गया मेरा बेटा वापस नहीं आ सकता है।

विवाह (भैरव)

चार जणी मिल डोरो मिल्यो
पांच जणी मिल पोयो म्हारो हार
पोयो म्हारो हार, हार दो नी म्हारा लाड़ला ओ भेरू
हार का कारण म्हारी सासुजी रिसाणा
सासुराजी सुणेगा देगा हमके गाल
देगा हमके गाल, हार दो ....
हार का कारण म्हारी सोकड़ रिसाणा
सायब जी सुणेगा देगा हमके गाल
देगा हमके गाल, हार दो ....
हार का कारण म्हारी जेठाणी रिसाणा
जेठजी सुणेगा देगा हमके गाल
देगा हमके गाल, हार दो ....
हार का कारण म्हारी देराणी रिसाणा
देवरीयो सुणेगा देगा हमके गाल
देगा हमके गाल, हार दो ....
हार का कारण म्हारी नणद रिसाणा
नणदोई जी सुणेगा देगा हमके गाल
हार दो ....
हार का कारण म्हारा सायब जी रिसाणा
सौकड़ीया सुणेगी देगा हमके गाल
हार दो ....

मण्डप गाड़ने के बाद भैरव महाराज की पूजा करने जाते हैं, उस वक्त यह गीत जरूर गाया जाता है।

भेरूजी आपके लिये चार-पाँच महिलाओं ने मिलकर हार बनाया है। आप वह हार हमें वापस दे दो, उस हार के कारण मेरी सास गुस्सा हो गई हैं और ससुरजी मुझे गाली देंगे। मुझे

परेशान करेंगे और ताने देंगे इसलिए आप मेरा हार वापस दे दो। इसी तरह पति, जेठजी, ननदोई जी के लिए कहा गया है।

माताजी का बधावा

बिंदराबन में चंपलो मोर्यो
जणे कोई मोड़े डाल हो
बाई ऐसो नी बधावो गीरधारी लाल को जी
मोड़े सूरज जी पातला हो
बऊ लाड़ी का भरतार ..... हो बाई ......
मोड़े चंदरमा जी देवता
बऊ जोड़ा का भरतार ...... हो बाई ....
उठो बाई बेन्या करो आरती
घरे आया थारा समरथ वीर ...... हो बाई ....
कणी हाते कंरु बीरा आरती
कणी हाते तिलक लिलाड़ ...... हो बाई ....
डाबा हाते करो बेन्या आरती
जीमणा से तिलक लिलाड़ ...... हो बाई ....
आरती करी ने बाई बोल्या
बीरा दो नी म्हारी आरती को नेग ...... हो बाई ....
आरती करी ने नानी बई बोल्या
बीरा दो नी म्हारे असीस ...... हो बाई ....

वृंदावन में चम्पा का झाड़ लगा है, जो राधाजी को बहुत प्यारा है। उस चम्पा के झाड़ को सूरजजी और चन्द्रमाजी नमस्कार करते हैं। उठो बहन! आरती करो, तुम्हारे घर तुम्हारा प्यारा भाई आया है। बहन कहती है– भाई! किस हाथ से आरती करूँ और किस हाथ से तुम्हें तिलक लगाऊँगी? भाई कहता है–बहन! बायें हाथ से आरती करो और दाहिनें हाथ से तिलक लगाओ। आरती करने के बाद बहन बोली– भाई! मुझे आरती और तिलक का नेंग देकर आशीर्वाद दो।

हल्दी

हलदी गांठ गठिली वो हलदी भोत रंगीली
निबजे वो वेलू रेत में
ई तो मोल मोलावे लाड़िरा
समरत दादाजी, दादी सुवागण

हलदी केलवे ....
ई तो मोल मोलावे लाड़िरा
समरत बीराजी, भाबी सुवागण
हलदी केलवे ....
ई तो मोल मोलावे लाड़िरा
समरत काकोसा, काकी सुवागण
हलदी केलवे ....
ई तो मोल मोलावे लाड़िरा
समरथ मामोसा, मामी सुवागण
हलदी केलवे ....

लाड़ा या लाड़ी को हल्दी लगाते समय यह गीत पाँच या सात महिलाओं द्वारा गाया जाता है। हल्दी की गाँठ जितनी मजबूत है उतना हल्दी का रंग तेज है। हल्दी दूल्हा-दुल्हन के शरीर पर खिलती है। हल्दी को दूल्हे और दुल्हन के पिताजी खरीदते हैं, माता सुहागिन हैं वो हल्दी लगायेंगी। भाई-भाभी, चाचा-चाची और मामा-मामी के लिए इसी तरह से गीत में उल्लेखित किया गया है।

हल्दी

हलद हटली वो लाड़ी लौंगा री पीठी
आवेगा थारा दाउजी उतार लेगा पीठी
आवेगी थारी माताबाई उतार लेगी पीठी
हलद हटली ....
आवेगा थारा बीराजी उतार लेगा पीठी
आवेगी थारी भावज उतार लेगी पीठी
हलद हटीली ....
आवेगा थारा फूफोसा उतार लेगा पीठी
आवेगी थारी भुवाजी उतार लेगी पीठी
हलद हटीली ....
आवेगा थारा काकोसा उतार लेगा पीठी
आवेगी थारी काकीसा उतार लेगी पीठी
हलद हटीली ....
आवेगा थारा मामोसा उतार लेगा पीठी
आवेगी थारी मामीसा उतार लेगी पीठी
हलद हटीली ....

दुल्हन या दूल्हा को हल्दी लगाते समय यह गीत गाया जाता है।

हल्दी इतनी पक्की है कि शरीर पर लगाने के बाद छूटती नहीं है। उसमें लौंग आदि मिलाकर दुल्हन को लगाने के लिए पीठी बनाई है। तुम्हारी लगी हल्दी का रंग दुल्हन के पिताजी-माताजी, भाई-भाई, फूफाजी-बुआ, काकाजी-काकीजी, मामाजी-मामीजी ये उतार देंगे। तुम जब ससुराल जाओगी तो इन्हें बहुत दु:ख होगा। ये इतने रोयेंगे कि हल्दी का रंग हल्का हो जायेगा।

हल्दी

तू तो धार नगर से अई म्हारी हलदी एकली वो
तू तो खेंत में बोवाणी म्हारी हलदी एकली वो
तू तो तड़का में सुकाणी म्हारी हलदी एकली वो
तू तो घट्टी में पिसाणी म्हारी हलदी एकली वो
तू तो चालणी में छणानी म्हारी हलदी एकली वो
तू तो पाणी में घोलाणी म्हारी हलदी एकली वो
तू तो लाड़ लड़ीरा अंग लगाणी म्हारी हलदी एकली वो
तू तो धार नगर से आई म्हारी हलदी एकली वो

दूल्हा या दुल्हन को लगाने के लिये हल्दी घोलते समय यह गीत गाया जाता है।

महिलाएँ कह रही हैं कि- हल्दी! तू धार नगर से आई है। तूने खेत में बुआकर, घट्टी में पिसाकर, धूप में सूखकर, चालनी (झारी) में छनकर, पानी में घुलकर, दुल्हन और दूल्हा के शरीर पर रंग चढ़ाया है। हल्दी तुम्हारा बहुत महत्त्व है। शादी में जब तक हल्दी ना लगे दुल्हन-दुल्हन नहीं मानी जाती है।

हल्दी

हलदी उतरी बाग में, म्हारो बनड़ो जिमें मेंला में
कुंवारी कन्या ने कारट भेज्यो
रईवर जल्दी आवो रे, हम कैसे आवों बनड़ी
म्हारा दाउजी के लारा लावां जी
हलदी उतरी गोया में, म्हारा बनड़ो जिमें मेंला में
कुंवारी कन्या ने कारट भेज्यो
रईवर जल्दी आवो रे, हम कैसे आवां बनड़ी
म्हारा काकोसा लारा लावां जी
हलदी उतरी कुंवा पे, म्हारा बनड़ो जिमें मेंला में

कुंवारी कन्या ने कारट भेज्यो
रईवर जल्दी आवो रे, हम कैसे आवां बनड़ी
म्हारा मामोसा लारा लावां जी
हलदी उतरी सेर्या में, म्हारो बनड़ो जिमें मेंला में
कुंवारी कन्या ने कारट भेज्यो
रईवर जल्दी आवो रे, हम कैसे आवां बनड़ी
म्हारा जीजोसा लारा लावां जी

दुल्हन या दूल्हे को हल्दी लगाते समय यह गीत गाये जाते हैं।

दुल्हन ने दूल्हे के नाम चिट्ठी भेजी है– हे दूल्हे ! हल्दी लगना चालू हो गई है, तुम मुझे लेने बारात लेकर जल्दी आओ। दूल्हा कहता है– दुल्हन हम अकेले नहीं आ सकते, मैं पिताजी को, काकाजी को, जीजाजी को साथ लेकर आऊँगा।

नहाने का गीत

खलीयल खलीयल नदी बहे
गौरी लाड़ा नहावा ने बैठा हो राज
बनड़ी पूछे सुणो रे दुलईया
कायरा कारण आया हो राज
तमारा दादाजी रा बोला वचन हम
कांकड़ देखण आया हो राज
कांकड़ रो कंई देखणो दुलईया
कांकड़ हे परायो हो राज
खरचा–खरचा रोक रुपया
जद हम कांकड़ देख हो राज
तमारा बीराजी रा बोला वचन हम
मांड़वो देखण आया हो राज
मांड़वा रो कंई देखणो दुलईया
मांड़वा हे परायो हो राज
खरचा–खरचा.........
तमारा काकाजी रा बोला वचन हम
मांड़वा देखण आया हो राज
कांकड़ रो कंई देखणो दुलईया
कांकड़ हे परायो हो राज
खरचा–खरचा.........

हल्दी लगाने के बाद जब दुल्हन को पाँच सुहागिनें नहलाती हैं, तब यह गीत गाया जाता है। दुल्हन नहा रही है नदी जैसा पानी बह निकला, दुल्हन पूछती है- बना! तुम किसलिये यहाँ आये हो ? दूल्हा कहता है- तुम्हारे पिताजी ने हमसे वचन लिया था कि हमारा गाँव किनारा देखने आना। बनी कहती है कि- कांकड़ (गाँव किनारा) को क्या देखना? वह तो पराया है। बना कहता है- बहुत रुपये खर्च किये हैं, तब हम कांकड़ देखने आये हैं।

विवाह

धरती तू मती जाणे वो धरती हूं मोटी
धरती तू मती जाणे वो धरती हूं मोटी
म्हारा लिप्या बिना थारी केसी सोभजा
तू कर म्हारी क्रांसी आरती
लिप्या मू मती जाणे रे लिप्या
हूं मोटो म्हारा चोकज बीना थारी कैसी सोभया,
तू कर म्हारी ....
थारी आरतड़ी में रुप्या केरो नेग
तू कर म्हारी ....
चोकज तू मती जाणे रें चौकज
हूं मोटो म्हारा बनड़ा बिना थारी केसी सोभजा,
तू कर म्हारी ....
नक चक चोक भर्यो रे
यो चौक पुपड़ा सा चुगी रया
पुपड़ा री राती-राती चोच
घोड़ा हो फेरी उबा रया

दूल्हा-दुल्हन को चौक में बिठाया जाता है। चौक बनाते समय यह गीत गाया जाता है।

धरती तू यह नहीं सोचना कि मैं बड़ी हूँ, लेकिन मेरे छाबने से ही तू बड़ी है। छाबना तू यह नहीं सोचना कि तू बड़ा है, लीपने के बगैर तू बड़ा नहीं है। लीपना तू यह नहीं सोचना कि तू बड़ा है, जब तक उस पर चौक पाट नहीं बनेंगे, तेरी शोभा नहीं है। चौक पाट तू यह नहीं सोचना कि तू बड़ा है, जब तक उस पर दुल्हन या दूल्हा नहीं बैठेंगे, तेरी शोभा नहीं है।

कौल खिलाना

म्हारो नानो सो लाड़ो कोल्या जीमे रे
वा तो मेरे बेठी लाड़ा की भाबी टुंगी रया वों

भाबी म्हारा वो बाजाट्या हेटे छिपी रीजे वो
भाबी अरच खरच सब बिणी खाजे वो
भाबी गज-गज धरती खोदी खाजे वो
म्हारो नानो सो लाड़ो कोल्या जीमे रे
वा तो मेरे बेठी लाड़ा की भुवा टुंगी रया रे
भुवा म्हारा वो बाजोट्या हेटे छिपी रीजे वो
म्हारो नानो सो लाड़ो कोल्या जीमे रे
वा तो मेरे बेठी लाड़ा की बेन्या टुंगी रई वो
भुवा म्हारा वो बाजोट्या हेटे छिपी रीजे वो
बेन्या मिनकड़ी क्यो नी सरजीवी वो
बेन्या अरच खरच सब बिणी खाजे वो
म्हारो नानो सो लाड़ो कोल्या जीमे रे
वा तो मेरे बेठी बेन्या बई टुंगी रया रे

दूल्हे को कोल्या (सुहागिन स्त्रियों द्वारा मिष्ठान खिलाना) दिया जाता है, तब यह गीत गाया जाता है।

मेरा छोटा सा दूल्हा कौल जीम (खाना) रहा है। पास में दूल्हे की भाभी, बुआ, बहन सब मुँह देख रही हैं। बहन, बुआ से कहा जा रहा है कि कौल खाने के बाद जो खुरचन बची है वह तुम खा लेना।

विवाह (छाना-बाना)

उंची-उंची मेंड़ी ने लाल किमाड़ी लाल किमाड़ी
घर वो मांगीलाल जी घर कां को वो
घर वो मांगीलालजी को घर
दिवलो बले बत्तिसार्यो वो
उंची-उंची मेंड़ी ने लाल किमाड़ी लाल किमाड़ी
घर वो नागूजी को घर कां को वो
घर वो नागूजी को घर
दिवलो बले बत्तिसार्यो वो
उंची-उंची मेंड़ी ने लाल किमाड़ी लाल किमाड़ी
घर वो चन्दरबा को घर कां को वो

बाना निकालने के बाद आरती होती है, उसके बाद छाना बाना किया जाता है, तब यह गीत गाया जाता है।

ऊँची-ऊँची हवेली है और लाल दरवाजे हैं। माँगीलाल का घर कौन-सा है ? माँगीलाल जी, नागू जी और चन्दर जी का घर वह है जहाँ बत्ती वाली चिमनी जल रही है।

विवाह (बनड़ा)

हां रे बना लगना तो जोसी देसरा लावजो, लगनारी लिखत हजार रे
चतर बना डुपट्टो लाल जरी को
हां रे बना आंटी में आंटी दुसाला में, आंटी बनड़ी से करे दूले हांसी रे
नादान बना डुपट्टो लाल जरी को
हां रे बना दादाजी तो थारो मन समजावे माताजी लावे परनाय रे
नादान बना डुपट्टो लाल जरी को
हां रे बना पड़ला तो बजाजी देसरा लावजो पड़ला रो मीसरू हजार रे
नवल बना डुपट्टो लाल जरी को
हां रे बना पड़ोसी काका थारो मन समजावे काकी बइ लावे परनाय रे
नवल बना डुपट्टो लाल जरी को

दूल्हे जल्दी से लगन लिखवाकर ले आओ और मुझे ले चलो। तुम्हारे पिताजी सिर्फ तुम्हारा मन समझायेंगे। अभी माता के पास चलते हैं। माँ जल्दी से शादी करवाकर ले आयेगी। मेरे प्यारे चतुर दूल्हे ! तुम जल्दी से पड़ला (कपड़े) खरीदकर ले आओ।

विवाह (बना-बनी)

सड़क पे आफु की क्यारी रे सड़क पे केसर की क्यारी
नवल बनाजी को रथ तिनगार्यो हवा करो प्यारी
छे छल्ला छे मूंदड़ी जी कइं छल्ला भरी रे परात
एक छलारे कारणे सो कइं छोड़्या माय ने बाप
सड़क पे आफु ....
बनाजी थारी मुलाकात भारी रे दुलेजी थारी मुलाकात भारी
चन्द्र कोट दरवाजा ऊपर चले रेलगाड़ी
आंटी डोरा कांगसी सो कइं सीस गुथावा जाय
सामे मिलग्या सायबातो कइं छाती घड़का खाय
बनाजी थारी ....
कलाकंद केसर को भावेरे रायतो दाखांरो भावे
बनड़ी जोवे बाट बनाजी म्हारे तोरण कदी आवे
आंगण बोऊं ए लचीसो कइ कंवले नागरबेल
बिड़लाराम से आवजो जी मुजरो लीजो झेल

कलाकंद केसर ....
आम पर केरी लग रइ रे आम पर केरी लग रइ रे
घीं को चड़ग्यो भाव सकर तो मेंगी वइ गी रे
लाड़ु म्हारा सुसरा बना पेड़ा देवर जेठ
घेवर मोजी सायबा कइं नणदल खारी सेब
आम पर केरी लग रइ ....
बना म्हारा चड़ घोड़ले असवार सासरो देखलो
बना म्हारा सोना की तलवार तोरण मारलो
में तो खड़ी सुकाऊं केस नजर भर देखलो
रंगा लाड़ीरा भरतार लारले चालजो
म्हारो तरसे नाजुक जीव छोड़ मती जावजो
सीरा भरीयो बाटको सरे टपकण लागो घींय
गोरी चली बाप क्यां सरे तरसण लागो जीव
लेवो-लेवो जी सीरदार कजलीया पोमचो
जीपे सोवे लप्पादार टूल को घाघरो
जी पे सोवे चंदरहार जरी की कांचली
नीरखो-नीरखो जी सरदार आपकी गोरड़ी
बेटा सउकार का थांपर चंवर ढुले हे जी राज
बेटा हुंडी वाल का थारा रंग उड़े हे जी राज
चंवर ढुले मोती तपे रे बना लालां तपे लीलाड़
बेटो हुंडी वालको बनो प्यारो लागे जी राज
तांबा पीतल को बेवड़ो जी पतली सी पनीयार
चातुर नीरखे बेवड़ो जी मूरख नीरखे नार
बेटो हुंडी ....
बागां जाजो बालमाजी लीम्बु लाजो चार
नारंगी मत लावजो जी सोकड़ ली रो लाल
बेटो सउकार ....
सायब सेर्यां नीसर्याजी घाल पट्टा में तेल
खीस्या में कोड़ी नइं जी पर नार्यां से मेल
बेटो हुंडी ....
आवण जावण करगया जी कर गया कोल अनेक
गीणता गीणता घीस गइ जी आंगलीया की रेख
बेटो ....

मेरे प्यारे दूल्हे! मेरे मायके के लोग मुझे इतना चाहते हैं कि कुछ कहा नहीं जाता, लेकिन एक तेरे बिना मैं नहीं रह सकती हूँ। तुम्हारे कारण मैंने अपने माँ-बाप को छोड़ा, अब मुझे तुम वहाँ ले चलो।

विवाह (बना-बनी)

उज्जैणिया रो रांय चम्पो यूं बोल्यों
राजा हमने चोपो सरवर पाल
कलियां ओ आयो मोगेरो
दाउजी की रांई बेटी यूं बोली
दादाजी हमने खूबी से परणाओ
कलियां ओ आयो मोगरो
काकोसा रो रांई भतिजी यूं बोली
काका सा हमने खूबी से परणाओ
कलियां ओ आयो मोगरो
वीरा जी री रांई बेन्या यूं बोली
बीराजी हमने खूबी से परणाओ
कलियां ओ आयो मोगरो
जीजोसा री रांई साली यूं बोली
जीजोसा हमने खूबी से परणाओ
कलियां ओ आयो मोगरो

चौक पाट होने के बाद महिलाएँ बना-बनी गाती हैं, उसमें यह गीत गाया जाता है।

बेटी अपने पिता से कह रही है- पिताजी! अपने आँगन में मोगरे का पौधा लगा है, उसमें जो कलियाँ लगी थीं, वह खिल गई हैं। पिताजी! मुझे ध्यान से देखो, आपकी बेटी युवा हो गई है, अब मेरी शादी कर दो। मेरी शादी की उम्र हो गई है।

विवाह (बना)

स्याले-स्याले आपनी उनाले म्हारा बाप
चौमासा में पियर पोयंई दो रे बना
स्याले चुड़ी कांच उनाले चूड़ी घट्टी की
चौमासा में चम्मक चुड़ी लई दो रे बना
स्याले खाई लात की उनाले मारी मुक्की की
चौमासा में लाल पराणा झाड़या रे बना

स्याले टीकी गुंद की उनाले टीकी गंद की
चौमासा में टिकड़ी घड़ई दो रे बना
स्याले ओड़नी घाट की उनाले ओड़नो वायल की
चौमासा में रेण्यो मोलदे दो रे बना

दिन में महिलाएँ इकट्ठी होकर गेहूँ, चावल बीनने लग जाती हैं, उस वक्त बना गाया जाता है।

पिया ठंड में आपके पास रहूँगी, गरमी में पिताजी के पास, बरसात में मायके पहुँचा देना। ठंड में चूड़ी काँच की, गरमी में घट्टी पीसने वाली मजबूत, बरसात में चमकने वाली चूड़ी ला देना। ठंड में लात मारी, गरमी में मुक्का मारा और बरसात में डंडे से मारा है। ठंड में बिन्दी गोंद की, गरमी में गंध की और बरसात में टीका बनवा देना।

विवाह (बना)

बना थारी सोनारी अंगूठी झावर लूटी रे
बना थारा ढोल्या का सिराणे रम्बा उबी रे
हरियाला बना थारो भाभो सा परणावे परणो क्या नीरे
हरियाला बना तम बोली ने बोसाड़ो हिरदा खोलो रे
हरियाला बना सोनारी अंगूठी झावर लूटी रे
हरियाला बना ....
थारा ढोल्या का सिराणे लाड़ी बऊ उबी रे
हरियाला बना थारा मामोसा परणावे परणो क्यों नी रे

गेहूँ-चावल बीनते समय या कोई भी कार्य करते वक्त यह गीत गाया जाता है।

तुम्हारी सोने की अँगूठी के कारण मैं तुम्हारी हो गई हूँ। तुम दादाजी से कहते क्यों नहीं? मुझे शादी करके जल्दी लेकर जायें। मैं तुम्हारे पलंग के किनारे खड़ी रहूँगी। बना! मुझे जल्दी विदा करवा कर ले चलो।

विवाह (बनी)

बनी हम तो चला परदेस थने तो तड़फावांगा
बना तड़फे म्हारी बला से पीयर चल्या जावांगा
बनी पीयर का लोग खराब नजर भर देखेगा
बनी लाखी दांगा नीचा केरा नेण बागां में चल्यां जावांगा
बनी बंगा में हे दादर मोर थाने तो डर लागेगा
बना लाखी दांगा दुदया मोरी दाल चुंगी ने उड़ी जावांगा

बनी तम तो घणी होसीयार थां पर लावां सोकड़ली
बना एक छोड़ी ने दोय चार लाव मोटी तो हम बाजांगा
बनी हम तो ....

शादी के घर में महिलाएँ दिन भर में कोई सा भी कार्य करें, उस अवसर पर यह गीत गाया जाता है। दूल्हा-दुल्हन से कहता है कि हम तो परदेश चले जायेंगे, तुम्हें तड़फता हुआ छोड़ जायेंगे। तब दुल्हन कहती है कि मैं परेशान नहीं होऊँगी, मैं मायके चली जाऊँगी। मायके के लोग खराब हैं, तुम्हें वहाँ सब शंका की नजर से देखेंगे। पिया! हम बगीचे में चले जायेंगे। बनी! बगीचे में मोर हैं और मोर से तुम्हें डर लगता है। हम मोर को दाल खिलायेंगे, तो वह उड़ जायेगा। दुल्हन! तुम बहुत होशियार हो, मैं तुम्हारी सौतन ले आऊँगा। एक छोड़कर भले दो-चार ले आओ, लेकिन बड़ी तो हम ही कहलायेंगे।

विवाह (बना)

झरमर-झरमर बरसे मोतीड़ा री झींण
काकाजी की ओड़्या डोड्यो कंई उबा
बनड़ी जी आरा आवो जी राज
हातीड़ा हलकार घोड़ीला हींसता
देवता नारेला वदाता, आवो जी राज
झरमर-झरमर बरसे भम्मर री झींण
झरमर-झरमर बरसे हंसज री झींण
बीराजी का पेर्या डोड्या कंई उबा
बनड़ी जी आरा आवो जी राज
हातीड़ा हलकार ....

चौक पाट करने के बाद दूल्हे को घर के बाहर दस कदम चलाया जाता है, उस वक्त चार मेहमान चादर की छत तानते हैं। दूल्हा बीच में खड़ा होता है और अपनी कटार से छत ऊपर तानता है, उस वक्त यह गीत गाते हैं जिसे झरमरिया कहा जाता है।

बाना निकालने के बाद घर में घुसने से पहले झरमरिया किया जाता है। काकाजी, भाईजी की देहरी पर क्यों खड़े हो। जल्दी से घर आओ। हाथी पर बैठकर, घोड़ों को साथ लेकर, भगवान को नारियल चढ़ाते हुए घर के अन्दर आओ।

विवाह (बना)

जोसी देस का लगना लई आवो रे
समंद घर चालणो

वारी-वारी रे दिल्ली का दिवान
समंद घर चालणो
वारी-वारी पाटन का पटवारी
वारी-वारी आगर का अगवानी
वारी-वारी रे दिल्ली ....
बजाजी देस का पड़ला लई आवो रे
समंद घर चालणो
वारी-वारी रे दिल्ली ....

दिन में किसी भी वक्त फुरसती महिलाएँ बना गीत गाने बैठ जाती हैं।

जोशीजी! लगन ले आओ, अपने को समधी के घर चलना है। दीवान! मैं तुम्हारे ऊपर न्यौछावर होती हूँ, पटवारी तुम्हें धन्यवाद देती हूँ। कपड़े वाले के यहाँ से कपड़े ले आओ, समधी के घर चलना है। धन्यवाद आगर के अगवानी करने वाले को, समधी के घर चलना है।

विवाह (बनड़ी)

बनी भमर पेरी ने बेगा अई जाजो वो
बनी मती जावो जमना को पाणी
जमना जी को घांटो टेड़ो हे
तम रपट पड़ो गुल गेंदा वो
म्हारी बनी मती जावो जमना को पाणी
उकी सासुजी के बऊ सांवली
उका रामचंद के गुल गेंदा वो
म्हारी बनी मती ....
बनी झेला पेरी ने बेगा अई जाजो वो
बनी मती जावो ....
बनी झूमणा पेरी ने बेगा अइ जाजो वो
बनी मती जावो ....
उकी नणदल के भाभी सांवली
उका दुलैया के गुल गेंदा वो
म्हारी बनी मती ....
बनी माला पेरी ने बेगा अई जाजो वो
बनी मती जावो ....
बनी बाजूबंद पेरी ने बेगा अइ जाजो वो
बनी मती जावो ....

उका ससराजी के बऊ सांवली
उका बनड़ा जी के गुल गेंदा वो
म्हारी बनी मती ....

चौक पाट करने के बाद महिलाएँ बनी गीत गाती हैं।

दुल्हन! भम्मर पहनकर तुम जल्दी आ जाना, तुम जमुनाजी में पानी भरने मत जाना, वहाँ की राह बहुत आड़ी-टेड़ी है। मेरी प्रिय दुल्हन! तुम बहुत नाजुक हो। सासुजी कहती हैं- मेरी बहू साँवली है, लेकिन पति कहते हैं- वह मेरे लिये फूलों के समान सुन्दर है। दुल्हन! तुम पानी भरने मत जाना, तुम फिसल जाओगी।

विवाह (बना)

बनाजी का चीरा हे घणा भारी, दुलेजी का मोती हे घणा भारी
पेंचा का बीच लाल लाग्या म्हारा राज
बनाजी का दादाजी सजे हे बरात, दुलेजी का काकाजी सजे हे बरात
हाती का होदे नीसर्या जी म्हारा राज
बनाजी की बनड़ी जोवे हे बाट, दुलेजी की लाड़ली जोवे हे बाट
असुरा रइवर क्यों आया जी म्हारा राज
बनीजी हमारो तो भोलो परवार लाड़ीजी हमारो तो भोलो परवार
आला तो झेला हुइग्या जी म्हारा राज
बनाजी को जामो हे घणो भारी, दुलेजी की मोजड़ी हे घणी भारी
मूंदड़ी का बीच लाला लाग्या जी म्हारा राज
बनाजी का फूपाजी सजे हे बरात, बनाजी का ज्याजी सजे हे बरात
हाती का होदे नीसर्या जी म्हारा राज
बनाजी की बनड़ी जोवे हे बाट, दुलेजी की लाड़ली जोवे हे बाट
असुर रइवर क्यों आया जी म्हारा राज
बनीजी हमारो तो भोलो परवार, लाड़ीजी हमारो तो भोलो परवार
आला तो झेला हुइग्या जी म्हारा राज
बनाजी का मामाजी सजे हे बरात, बनाजी का मासाजी सजे हे बरात
हाती का होदे नीसर्या जी म्हारा राज
बनीजी हमारो तो भोलो परवार, लाड़ीजी हमारो तो भोलो परवार
आला तो झेला हुइग्या जी म्हारा राज

दिन से लेकर रात कभी-भी बना-बनी गीत गाते रहते हैं।

दूल्हे ने साफा पहना है, वह बहुत सुन्दर है, उसमें मोती लगे हैं। दूल्हे के पिताजी,

काकाजी बारात को दुल्हन के यहाँ ले जाने की तैयारी कर रहे हैं। बारात में हाथी, घोड़े, पालकी सब लेकर दुल्हन के यहाँ चले। दुल्हन कहती है– दूल्हे राजा! इतनी देर क्यों कर दी, मैं तुम्हारी राह कब से देख रही हूँ, तुम इतनी देर से क्यों आये हो? दूल्हा कहने लगा– बनी! मेरे घर के सब लोग बहुत सीधे हैं, काम ज्यादा बढ़ने से सब घबरा गये हैं, किसी को सूझ नहीं पड़ रहा है कि क्या करें?

विवाह (बनी)

बनी दादाजी के आंगण उंड़ो जी कुवो
बनी काकाजी के आंगण उंड़ो जी कुवो
जां सोले से पणीयारी को धनुस तणे
दल बादली को पाणी सैंया कोण भरे
हुं भी भरु ने म्हारी सैंया भी भरे
वां सेल्या वाला डावड़ा उबा जी अड़े
दल बादली को ....
बनी मामाजी का आंगण उंड़ो जी कुवो
बनी मासाजी के आंगण उंड़ो जी कुवो
जा सोले से पणीयारी को धनुस तणे
दल बादली को ....
हुं भी भरु ने म्हारी सैंया भी भरे
वां सेल्या वाला डावडा उबा जी अड़े
दल बादली को ....
बनी फूपाजी का आंगण उंड़ो जी कुवो
बनी ज्याजी का आंगण उंड़ो जी कुवो
जा सोले से पणीयारी को धनुस तणे
दल बादली को ....
हुं भी भरु ने म्हारी सैंया भी भरे
वां सेल्या वाला डावडा उबा जी अड़े
दल बादली को ....

बाने बैठने के बाद दिन में कभी-भी बनी गाई जाती है।

बनी (दुल्हन) के पिताजी के आँगन में बहुत गहरा कुआँ है, जहाँ पनिहारिनें तैयार होकर पानी भरने आती हैं। जहाँ पानी की कभी कमी नहीं आती। बरसात में भी वहाँ पनिहारिनें पानी भरती हैं। सब सहेलियाँ मिलकर पानी भरती हैं। वहाँ साफा पहने हुए लड़के खड़े रहते हैं, जो भी पनिहारिन पानी भरकर निकलती है उससे छेड़खानी करते हैं और उसकी राह रोकते हैं।

विवाह (बना)

हां रे बना चीरा पेरो तो प्यारा लागो
पेंचा में राखो मोयनी
हां रे बना लाला पेरो तो प्यारा लागो
कंठी में राखो मोयनी
हां वो बनी मेंला में धीरा धीरा बोलो
लोड़ी रो म्हाने डर घणो
हां रे बना ऐसा डरपो तो परण्या क्यों रे
हजारी पोंचो छोड़ी दो
हां रे बना बागा पेरो तो प्यारा लागो
केसर राखो मोयनी
हां वो बनी मेंला में धीरा थोड़ा बोलो
लोड़ी रो म्हाने डर घणो
हां रे बना ऐसा डरपो तो परण्या क्यों रे
हजारी पोंचो छोड़ी दो
हां रे बना एक चणा री दोय दाल
दोई ने राखो सार की जी

विवाह के समय महिलाएँ घट्टी में पीसती हैं, उस वक्त भी बना गाया जाता है। दुल्हन कह रही है– हे पिया! तुम कपड़े पहनकर सजते–सँवरते हो तो बहुत प्यारे लगते हो, तुम्हारी पगड़ी के पेंच में मोहिनी है जो तुम्हारे तरफ खींचती है। दूल्हा कहता है– गोरी! महल में तुम धीरे–धीरे बोलो, तुम्हारी सौतन से मुझे डर लगता है। दुल्हन कहती है– अगर ऐसा ही डर था तो मुझसे क्यों ब्याह रचाया? मेरा हाथ छोड़ दो। पिया! एक चने की दो दाल बराबर निकलती हैं उसी तरह हमें भी दोनों को बराबर रखो।

विवाह (बना)

चीरा तो तम पेरो प्यारा बनड़ा
मोती तो तम पेरो प्यारा बनड़ा
पेंचा भोत हजार, तो लाला भोत हजार
जी बना चलो मंडप में, लगर्‌या बिजली ग्यास
बिजली ग्यास की लगी रोशनी
उड़र्‌या अबीर गुलाल जी बना
चलो मंडप में लग रया बिजली ग्यास
जामा तो तम पेरो प्यारा बनड़ा

तेजी तो तम बैठो प्यारा बनड़ा
केसर भोत हजार, चाबुक भोत हजार
जी बना चलो मंडप में, लगर्‌या बिजली ग्यास

शादी के वक्त दिन में कई बार बना (दूल्हा) बनी (दुल्हन) गायी जाती है, उन्हीं में से एक बना गीत यह भी गाया जाता है। हे दूल्हे! तुम नये कपड़े अच्छे पहनो। तुम्हारी पगड़ी के पेंच (आंटे) बहुत ही सुन्दर लग रहे हैं, उन पेंचों पर हीरे-मोतियों की लड़ी बहुत अच्छी लग रही है। तुम तैयार होकर मण्डप में चलो, वहाँ गैस बत्ती की रोशनी लगी है और बाहर सब लोग अबीर-गुलाल उड़ा कर खुशियाँ मना रहे हैं।

विवाह (बना)

धूप पड़े धरती तपे रे बना
चन्द्र बदन कुमलाय ....
जो में होती दल बादली रे बना
सूरज लेती छिपाय .... धूप पड़े ....
जो में होती आम्बा बिजली रे बना
मेवलो देती बरसाय .... धूप पड़े ....
सीस रो टीको अद बठ्‌यो रे बना
झूमणा को अदक सरूप .... धूप पड़े ....
गला को हंसज अद बझयो रे बना
मोती रो अदक सरूप .... धूप पड़े ....
थारो तो रूप अद बण्यो रे बना
निराखत उम्मर जाय .... धूप पड़े ....

जब दुल्हन का माता पूजन होता है, तब कपड़े की छत चार लोग बनाकर पकड़ते हैं, उस छत के नीचे लाड़ी को छाँव करके ले जाते हैं।

बनी-बने से कहती है- हे बना! धूप लग रही है, तुम्हारा कोमल बदन कुम्हलायेगा। अगर मैं पानी की बदली होती तो सूरज को छुपा लेती या मैं बिजली होती तो पानी बरसा देती। बना! तुम्हारा सुन्दर रूप इतना सलोना लग रहा है कि उसे देखते-देखते मेरी उम्र गुजर जायेगी।

विवाह (बनड़ी)

म्हारी बालक बनड़ी हो राज
दादाजी से अरज करे
दादाजी ऐसा घर दीजो हो राज

बेटी तमारी राज करे
म्हारी बालक बनड़ी हो राज
माता बई से अरज करे
माता बई ऐसा घर दीजो हो राज
बेटी तमारी पालणे झुले
म्हारी रायजादी हो राज
बीराजी से अरज करे
बीराजी ऐसा घर दीजो हो राज
बेटी तमारी दुद रा कुल्ला करे
म्हारी गेंद गजरा हो राज
भावज से अरज करे
भावज ऐसा घर दीजो हो राज
नणदल थांकी राज करे
म्हारी बालक बनड़ी हो राज
मामाजी से अरज करे
मामाजी ऐसा घर दीजो हो राज
भाणेज तमारी पालणे झुले
म्हारी बालक बनड़ी हो राज
मामीजी से अरज करे
मामीसा ऐसा घर दीजो हो राज
भाणेज थांकी राज करे

दुल्हन अपने पिताजी और माताजी से निवेदन कर रही है कि– हे पिताजी! मुझे ऐसे घर में ब्याहना कि तुम्हारी बेटी उस घर में राज करे। तुम्हारी बेटी उस घर में पालने में झूले। तुम्हारी बेटी को किसी तरह की तकलीफ (सास, ननद से) न हो।

विवाह (बनी)

छोड़ो–छोड़ो रे रईबर छेड़ो हमारो
तो उबा दादाजी म्हारा देख हो
रायजादी का मेंला में हुई गुल क्यांरी
दादाजी तमारा गोरी सुसरा हमारा
तो चांद सुरज दोई साखी हो
रायजादी का मेंला में हुई गुल क्यांरी
म्हारा पिछवाड़े जोसीड़ा का डेरा

तो लगना रा मिस आया हो
रायजादी का मेंला में हुई गुल क्यांरी
छोड़ो-छोड़ो रे रईबर, छेड़ो हमारो
तो उबा काकाजी म्हारा देख हो
रायजादी का मेंला में हुई गुल क्यांरी
काकाजी तमारा गोरी सुसरा हमारा
तो चांद सुरज दोई साखी हो
रायजादी का मेंला में हुई गुल क्यांरी
म्हारा पिछवाड़े बजाजी का डेरा
तो पड़ला रा मिस आया हो
रायजादी का मेंला में हुई गुल क्यांरी
छोड़ो-छोड़ो रे रईबर, छेड़ो हमारो
उबा मामाजी म्हारा देख हो
रायजादी का मेंला में हुई गुल क्यांरी
मामाजी तमारा गोरी सुसरा हमारा
तो चांद सुरज दोई साखी हो
रायजादी का मेंला में हुई गुल क्यांरी

हे मेरे पिया! मेरा घूँघट छोड़ दें, मुझे बहुत शर्म आ रही है। सामने मेरे पिताजी खड़े हैं, वे देख रहे हैं। दूल्हा कहता है कि- दुल्हन! पिताजी तुम्हारे ससुरजी हमारे हैं, हम दोनों शादी के बंधन में बँधे हैं इसके साक्षी चाँद और सूरज हैं। दुल्हन यह सुनकर महल में शर्म से पानी हो गई है, लेकिन दूल्हे ने उसका घूँघट नहीं छोड़ा।

विवाह (बना-बनी)

ससरा घोड़ीले, भाणेज पालणे, देवर पतंग उड़ाय
सुणीले सुसराजी म्हारी बीनती सुणीलो चंत लगाय
दुलेसा आवेगा घोड़ीले बैठी ने बीच में झंड़ीतणाव
बनासा आवेगा खादें बैठी ने बीच में रंडी नचाव
बनासा आवेगा बैलगाड़ी से बीच में राव टी तणाव
बनी सा आवेगा पालकी से बीच में सेज सजाव
सुणीला सुसराजी म्हारी बीनती सुणीलो चंत लगाय

बारात के ठहरने के बाद दुल्हन पक्ष की महिलाएँ वहाँ जाकर गीत गाती हैं। ससुर घोड़ी पर, भानेज पालने में झूल रहा है और देवर पतंग उड़ा रहा है। ससुरजी! मेरी बात ध्यान लगाकर सुन लो, मैं आपसे विनती करती हूँ। दूल्हा बैलगाड़ी में मुझे लेकर आयेगा । बीच राह में तम्बू

लगवाओ। दूल्हा घोड़ी पर आयेगा, बीच में झंडा लगवाओ। दूल्हा कन्धे पर बैठकर आयेगा, नाचने वाली का नाच करवाओ। आप मेरी बात ध्यान लगाकर सुनना।

घोड़ी

घोड़ी नाचत कूदत गई रे जोसीड़ा रा हाट
बछेरी घोड़ी गुजर रई
वणी जोसण बनड़ो बुलाय लियो, हेलो पाड़ लियो
ढोल्यो ढाल लियो, सुरमो सार लियो
थारे दऊ रे आछा लगना मोलाय
बछेरी घोड़ी गुजर रई
घोड़ी नाचत कूदत गई रे बजाजी रा हाट
बछेरी घोड़ी गुजर रई
वणी बजाजण बनड़ो बुलाय लियो, हेलो पाड़ लियो
ढोल्यो ढाल लियो, सुरमो सार लियो
थारे दऊ रे आछा लगना मोलाय
बछेरी घोड़ी गुजर रई
घोड़ी नाचत कूदत गई रे सोनीड़ा रा हाट
बछेरी घोड़ी गुजर रई
वणी सोनारण बनड़ो बुलाय लियो, हेलो पाड़ लियो
ढोल्यो ढाल लियो, सुरमो सार लियो
थारे दऊ रे आछा गेणला मोलाय
बछेरी घोड़ी गुजर रई

चौक पाट करने के बाद दूल्हे का जुलूस निकाला जाता है, उसे बाना निकालना कहते हैं। दूल्हे को घोड़ी पर बैठाकर गाँव में घुमाया जाता है। घोड़ी नाचती-कूदती दूल्हे को लेकर जोशीजी के यहाँ गई लगन लेने, लेकिन जोशी की पत्नी ने दूल्हे को आवाज लगाकर रोक लिया, बिस्तर बिछा दिया। जोशिन काजल सुरमा लगाकर तैयार हो गई। दूल्हे से कहने लगी कि- घोड़ी को जाने दो, तुम यहीं रुको। मैं तुम्हें अच्छे लगन लिखवा कर दूँगी, तुम मेरे पास ही रुको, घोड़ी को जाने दो।

घोड़ी

गढ़ से वो घोड़ी उतारी ओ घोड़ी थारा झांजर बाजे
झांजर बाजे घोड़ी थारा नेवर बाजे
गई हे जासीड़ा री ओल घोड़ी थारा झांजर बाजे

गई हे बजाजी री ओल घोड़ी थारा झांजर बाजे
तो सुती सी जोसन ओचकी रे घोड़ी थारा झांजर बाजे
झांजर बाजे घोड़ी थारा नेवर बाजे
म्हारी सेर्या कुण सिरदार घोड़ी थारा झांजर बाजे
म्हारी सेर्या कुण उमराव घोड़ी थारा झांजर बाजे
हम हाँ दादाजी रा लाड़ला घोड़ी थारा झांजर बाजे
हम हाँ काकाजी रा लाड़ला घोड़ी थारा झांजर बाजे
झांजर बाजे घोड़ी थारा नेवर बाजे
गढ़ से तो घोड़ी उतारी ओ घोड़ी थारा झांजर बाजे
हम हाँ माता बई रा लाड़ला घोड़ी थारा झांजर बाजे
हम हाँ काकी बई रा लाड़ला घोड़ी थारा झांजर बाजे
झांजर बाजे घोड़ी थारा नेवर बाजे
गई हे बजाजी री ओल घोड़ी थारा झांजर बाजे

जब दूल्हे को घोड़ी पर बिठाकर गाँव में घुमाते हैं, तब यह गीत गाया जाता है। दूर गढ़ी से घोड़ी पर बैठकर आये हैं। उस घोड़ी के पैरों में जो घुँघरू बँधे हैं, उसकी आवाज आ रही है। घोड़ी जोशिन के यहाँ गई है। जोशिन घोड़ी के पैरों में बँधे घुँघरू की आवाज से चमक गई कि कौन आया? दूल्हा कहता है– मैं पिताजी के लाड़ का बेटा हूँ। मैं माँ का लाड़ला बेटा हूँ।

छींक

पेली जो छींक म्हारा आंगण में आई
दुसरी जो छींक म्हारे पणघट पे आई
तीसरी में घडूल्यो फुटो म्हारा राजा
नणदल दुतेली ने सासू आगे कई दिया
सासू ने मारी नणद ने पकड़ी
देवर ने करदी घर से भायर म्हारा राजा
आदी के रात गोरी पीयर सिदार्या
सामे से अईग्या परण्या सायब म्हारा राजा
आदी के रात गोरी तम कां सिदार्या
सासू ने मारी नणद ....
सासू तमारी गोरी काल मरी जावेगा
नणद तमारी गोरी सासरे पोंचावां
देवर आदा घर को मालक म्हारा राजा

किसी भी शुभ अवसर पर गाये जाने वाले गीत के बाद छींक जरूर गाई जाती है। यदि

किसी भी शुभ कार्य करने पर छींक आ जाती है तो छींक का मान-सम्मान देने पर मन में सन्देह नहीं रहता। बहू पानी भरने गई, जैसे ही घड़ा उठाने लगी कि छींक आयी तो छींक का मान नहीं रखा और घड़ा भरा फिर तब छींक आई तो भी सम्मान नहीं दिया। घड़ा उठाकर चलने लगी तो तीसरी छींक आ गयी और घड़ा फूट गया। घड़ा फूटने पर ननद ने सास से शिकायत कर दी और सास ने मारा। ननद ने पकड़ा और मारने के बाद घर से बाहर निकाल दिया। पति से पत्नी ने शिकायत की। पति ने कहा- सास तुम्हारी कल मर जायेगी, ननद को ससुराल पहुँचा देंगे, तुम वापस घर चलो, मायके में नहीं रहना।

प्रभाती

राजा उंचो तो चंवर्यो चोखण्ड्यो
जीपर राली या टूटी फाटी खाट
हरी बोलो दीवान जीरा कुकड़ा
जीपर पोड्या हीरालाल जी भांड
जीपर पोड्या गेंदालाल जी हो भांड
हरी बोलो दीवान ....
बइ तारा थारो नाय जगाव जो
बइ सरजु थारो नाय जगाव जो
जागो-जागो बांगड़ बइरा बीर
हरी बोलो दीवान ....
जागो-जागो जेलु बइरा बीर
भांडज जागीने चिंदा सांवरिया
तमारा चिंदा जूं उंदरा रा लूम
हरी बोलो दीवान ....
राजा उंचो तो चवर्यो चोखण्ड्यो
जीपर राली या टूटी फूटी खाट
हरी बोलो दीवान ....
जीपर पोड्या मांगीलाल जी भांड
जीपर पोड्या शंकरलाल जी भांड
हरी बोलो दीवान ....
बइ केसर थारो नाय जगाव जो
बइ सीता थारो नाय जगाव जो
जागो-जागो बांगड़ बइरा बीर
हरी बोलो दीवान ....

शादी में सुबह-सुबह महिलाएँ सूर्य देवता, गणेश देवता, घर के पूर्वजों आदि को जगाने के लिये यह गीत गाती हैं। पिया! ऊँचा चबूतरा है, जिसपर टूटी-फूटी खटिया डली है, उस पर समधीजी सोये हैं। समधिन गाली देकर उन्हें जगा रही हैं। तुम किस बांगड़ (मालवी गाली) बहन के भाई हो। सुबह-सुबह मुर्गे ने बाँग दी है अब जागो, उठ जाओ। उठते ही समधी अपने कपड़े को संभालने लगे, तो समधिन कहती है- भांडजा (मालवी गाली) समधीजी, आपके कपड़े ऐसे लटक रहे हैं जैसे चूहे लटक रहे हों।

प्रभाती

बई वो चम्पों नमे चमेली नमें
वीकी डाल नमी-नमी जाय
बई वो कृष्ण जी तो कायका नमे
उनका सीस भर्या हें मुंगट
बई वो राधा रूकमणी कायकी नमें
उनका मेंदी भरिया हात
बई वो लछमी जी तो कायकी नमे
उनका फुलड़ा भरिया हात
फूलड़ा हाता कूमलई गया
उनकी बासना रई गई हात
बई वो नीलेस जी तो कायका नमें
उनका सीस कसूमल पाग
लाड़ी बऊँ तो कायकी नमें
उनका मेंदी भरिया हात
बई वो मेंदी को बाटको ढुली गयो
पतासा रईग्या हात
बई वो पतासा तो छोरा छोरी खईग्या
सिंगोटो रईग्या हात

चम्पा भी झुकता है, चमेली भी झुकती है और उसकी डाली भी नरम रहती है, वह भी झुक जाती है। बहन! कृष्णजी नहीं झुकते हैं, क्योंकि उनके सिर पर मुकुट है। राधा-रुक्मिणी भी नहीं झुकती हैं क्योंकि उनके मेहंदी भरे हाथ हैं। लक्ष्मीजी भी नहीं झुकती हैं क्योंकि उनके हाथों में फूल भरे हैं। फूल कुम्हला गये हैं लेकिन उनकी खुशबू हाथों में रह गई है। नीलेशजी भी नहीं झुकेंगे, उनके सिर पर पगड़ी है। लाड़ी बहू भी नहीं झुकेगी क्योंकि उनके मेहंदी भरे हाथ हैं। मेहंदी का कटोरा गुड़क (बिखर) गया, सिर्फ बताशे जो हाथों से बनाये थे, वह रह गये। बताशे भी बच्चे खा गये, सिर्फ हाथों में अँगूठा रह गया है।

प्रभाती

पाँच सुपारी ने पान को हो बीड़ला, तो तम घर नोतो सूरज जी बेगा
आवजो यो तम घर नोतो, चन्दर मां जी बड़े बेगा आवलो
सूरज जी घोड़ीले बउ लाड़ी पालकी चन्दरमा जी घोड़ीले बऊ
जोड़ा हो पालकी थारा नाना मोटा बेठ, सिंगासन बेगा आवजो
घर आयो थारी परजा को ब्याव मायाकर आवजो
पांच सुपारी ने पान का हो बीड़ला तो तम घर नोतो थावरजी यो तो
तम घर नोतो कुंवर जी बड़े बेगा आवजो
कुंवर जी घोड़ीले बउ जमना हो पालकी थावर जी घोड़ीले बउ
केसर ओ पालकी थारा नाना मोटा बेठ पालणा, मायाकर आवजो घर आयो
थारा कुंवर को ब्याव बेगा बेगा आवजो
पांच सुपारी ने पान का हो बीड़ला तो तम घर नोतो भेंरूलाल जी
बड़े बेगा आवजो घर आया थारा साला केरो ब्याव बड़े बेगा आवजो
घर आयो थारा भतीजा को ब्याव बेगा बेगा आवजो

(पाँच-पाँच) सुपारी और पान सूरज जी और चन्द्रमा जी के यहाँ भेजा। यह शगुन है कि आपके यहाँ शादी है, आप पूरे परिवार को लेकर आओ। पुराने समय में शादी का न्यौता सुपारी और पान भेजकर ही दिया जाता था। सूरजजी आप घोड़े पर बैठकर आना, बहू को पालकी में बिठाकर लाना और आपके छोटे-बड़े बच्चों को सिंहासन पर बिठाकर लाना लेकिन आप लोग जरूर आ जाना।

प्रभाती

उठो म्हारा गोरा हो लाड़ा दांताणिया समाळो
सोनारी झारी रे लाड़ा जायलड़ीरा दांतण
ऐसा ने दांतणिया हो लाड़ा री नावण बई संवारे
उठो म्हारा गोरा हो लाड़ा दांताणिया समाळो
कंकू पिंगाणी रे लाड़ा मोतीड़ा रा अखत
ऐसा ने तिलकियां हो लाड़ारी नावण बई संवारे
उठो म्हारा गोरा हो लाड़ा भोजनिया समाळो
लचलची लापसी रे लाड़ा उपर घी को झारो
ऐसा ने भोजनियां हो लाड़ा री भावज बई संवारे
उठो म्हारा गोरा हो लाड़ा पोढ़णियां समाळो
गादी ने गलीचा रे लाड़ा डाबा वरणी खाट
ऐसा ने पोढ़णियां हो लाड़ा री भुवा बई संवारे

उठो म्हारा गोरा हो लाड़ा बिड़िला समाळो
कथ्थो ने चुन्नो लाड़ा नागर बेलरा पान
ऐसा ने बिड़िला रे लाड़ा की मासी बई संवारे

मेरे प्यारे दूल्हे! उठो, मंजन संभालो, तैयार हो जाओ। मैं कूंकूं की डिबिया तुम्हें तिलक निकालने के लिये हाथ में लेकर खड़ी हूँ। मैंने तुम्हारे खाने के लिये बढ़िया हलवा बनाया है। तुम्हारे सोने के लिए गादी-गलीचा लगाया है। खाने के लिये पान लगाया है। तुम उठकर तैयार हो जाओ।

प्रभाती

म्हारे गऊं रे चणा का ढेर पड़्या
ई तो आवता हो लाड़ी का दादाजी रपट पड़्या
थाने घणी रवमा हो म्हारा दाऊजी क्यु हो पड़्या
बाई तमारा वीवा की म्हारे फीकर घणी
म्हारी सुद बी गई ने म्हारी बुद हो गई
म्हारे पागड़ी समालवा की सुद बी नई
म्हारे धोती समालवा की सुद बी नई
म्हारे गंऊ रे चणा का ढेर पड़या
ई तो आवता हो लाड़ी का मामाजी रपट पड़्या
थाने घणी रवमा हो म्हारा मामाजी क्यु हो पड़्या
बाई तमारा वीवा की म्हारे फीकर घणी
म्हारे पागड़ी समालवा की सुद बी नई
म्हारे धोती समालवा की सुद बी नई

शादी के लिये घर में गेहूँ, चने के ढेर लगे हैं। दुल्हन के पिताजी हड़बड़ाहट में चलते हुये आये। गेहूँ, चने के ढेर बिखरे पड़े थे, वहाँ फिसल गये। दुल्हन पूछती है- पिताजी! आप कैसे फिसल गये। पिताजी कहते हैं- बेटी! तुम्हारे विवाह की मुझे बहुत चिंता लगी है, मेरे होशो-हवास गुम हो गये हैं, जब तक तुम्हें विदा नहीं कर देता, मुझे चैन नहीं मिलेगा।

प्रभाती

सुरज उगो हो केवड़ा री पड़छ में वानोल्या भले उगीयो
तम जागो हो सुरज जी हो देव गणेस जी हो देव
सगला देवता हो देव सुरज भले उगीयो
तम लीजी हो सोना झारी हात बड़ी परबात

सूरज भले उगीयो, तम लीजी हो श्री कृष्ण को नाम
बड़ी परबात सूरज भले उगीयो
तम दीजो हो सोना चांदी रो दान
हीरा मोती रो दान बड़ी परबात
सूरज भले उगीयों
सूरज उठो हो बिड़ला री हो कोर
सुरज भले उगीयो
तम जागो हो पिरेम सिंग हो राज, मांगीलाल हो राज
बड़ी परबात सूरज भले उगीयो
तम लीजी हो दांतण झारी हात
बड़ी परबात सुरज भले उगीयो,
तम लीजी हो श्री कृष्ण रो नाम प्रभुजी रा नाम
बड़ी परबात सूरज उगीयो
तम दीजो हो गऊं केरो दान
बड़ी परबात, सूरज भले उगीयो
सुरज उगो हो आंकड़ा री कोर सुरज भले उगीयो
तम जागो हो जमई जी हो भाण, जमई जी हो भाण
बड़ी परबात सूरज भले उगीयो
तम लिजो हो मुत्तर झारी हात बड़ी परबात
सुरज भले उगीयो, तम लीजी हो अल्ला खूदा रो नाम
तम दीजो रो तमारी मांय बेनरो दान
बड़ी परबात सूरज भले उगीयो

हे देवताओं! बहुत मुश्किल से आज यह खुशी का दिन हम परिवार वालों को देखने को मिला है। आप इस काम में हमारी मदद करना। आप जागो, आपके लिये दातुन की सभी सामग्री रखी है और दूल्हे के पिता हाथों में गंगाजल की झारी लेकर आपकी अगवानी करने के लिये खड़े हैं। आप यहाँ पधारो और हमारा काम सिद्ध करो।

प्रभाती

सात सली को टोपलो गुंथायो
धरियो सुदीप सिंग का माथे हो
हमारा पिरेम सिंग का गंवड़ा हो पाका
उ मोल्यो गऊं बिणवां जाय
बिणता नी आवे चुणता नी आवे

खांपा से टोपलो भरियो वो
हमारी बेन्या बई के रिस जो लागी
तो ढेपड़े-ढेपड़े मार्यो वो
तम कंई मारो मोटा की जाई
टोटा का कारण आयो हो
सात सली को टोपलो गुंथायो
धरियो जमई जी का माथे हो
हमारा दादाजी का गंवड़ा हो पाका
उ मोल्यो गऊं बिणवां जाय

प्रभातिये गाने के समय उसके साथ जमाई गीत भी गाया जाता है। मेहमान से मजाक के तौर पर यह गीत गाया जाता है।

बाँस की बारीक (पतली) कतरन से टोपला बनाया और जमाई के सिर पर देकर कहा- जाओ! खेत से गेहूँ चुनकर ले आओ, लेकिन जमाई को गेहूँ चुनना नहीं आता था। कचरे से (ज्वार की जड़) टोपला भर लिया। पत्नी को गुस्सा आया तो मिट्टी के ढेलों से उसने पति को खूब मारा। दामाद कहता है- बड़े बाप की बेटी! मेरे घर में रुपयों की कमी है इसलिए तुम्हारे यहाँ घर दामाद बनकर तुम्हारे मायके में आया हूँ, तुम गुस्सा क्यों कर रही हो?

प्रभाती (दांतण)

इना वो समंदर का मोती सांचल्या मोती बया-बया जाय
चार घणा का लाड़ा का दांतण होय, दांतण कराव
दांतण मोलावे राधा रूकमणी
टीलक मोलावे राधा रूकमणी
पींगाणी सीता का हात
भोजन मोलावे राधा रूकमणी
बिड़ला चबावे राधा रूकमणी
घेवर सीता के हात
भोजन जिमावे राधा रूकमणी
हात धोवाड़े राधा रूकमणी
कथ्यों सीता का हात
पोड़न बिछावे राधा रूकमणी
चोप जीतावे राधा रूकमणी
खेलावे पास सीता का हात

अक्कल कंवारा बनड़ी परणाव
बनड़ी परणावे राधा रूकमणी
जोड़ी सीता का हात
इना वो समंदर का मोती सांचल्या मोती बया-बया जाय
चार घणा का लाड़ा का दांतण होय, दांतण कराव

सुबह-सुबह देवता, पूर्वज, घर के दूल्हा-दुल्हन को जगाने के लिए गीत गाकर मंजन करवाया जाता है।

इस परिवार के लोग सीधे-सच्चे हैं, जिधर कहो उधर चल देते हैं। दूल्हा को चार वक्त का दातुन (मंजन) कराओ। उसके दातुन खरीदकर लाती हैं राधा रुक्मिणी, टीका निकालने की पिंगानी (कूंकूं चावल रखने का पात्र) सीताजी के हाथ में है। लाड़ी की शादी करवा रही हैं राधा-रुक्मिणी, दोनों की जोड़ी बनी रहे सीता जी ऐसा आशीर्वाद देती हैं।

विवाह (गणेश)

सामी भींते मांड्यो रे गणेस, के कंवले ओ मांडी पूतली
पूतली कइये सुरजजी घरनार, बउ जोड़ाओ कइये पूतली
पिया हमने भम्मर घड़ावो तो हम घर पेली बरदड़ी
पिया हमने झालज घड़ावो तो हम घर पेली बरदड़ी
सामी भींते मांड्यो रे गणेस तो कंवले ओ माड़ी पूतली
पूतली कइये चंदमाजी की नार बउ लाड़ीओ कइये पूतली
पिया हमने झूमका घड़ावो तो हम घर पेली बरदड़ी
पिया हमने हंसज घड़ावो तो हम घर पेली बरदड़ी
सामी भींते मांड्यो रे गणेस कंवले मांडी पूतली
पूतली कइये पूनमचंदजी घरनार बउ रांदल कइये पूतली
पिया हमने केसरिया रंगाव तो हम घर पेली बरदड़ी
पिया हमने चूड़ला चीरावो तो हम घर पेली बरदड़ी

जब दीवार पर गणेश बनाये जाते हैं, उस वक्त घर की महिला पति से कहती है- मुझे फलाँ-फलाँ गहने लाकर दो, घर में पहली शादी है।

सामने की दीवार पर गणेश बनाये हैं, दरवाजे के आसपास रिद्धि-सिद्धि बनाये हैं। पिया! मुझे सिर पर पहनने के लिये भम्मर, कानों में पहनने के लिए झुमका, ओढ़ने के लिये केशरिया लूगड़ा, हाथों में पहनने के चूड़ा मँगवाओ। हमारे घर पर पहली शादी है, मैं तुम्हारी पत्नी हूँ, इस घर की कुल बहू हूँ। मुझे शादी में पहनने के लिये गहने लाकर दो।

मंडप (मांडवा)

तम जाजो सुरज जी अनवाड़्या पनवाड़्या हो
वाँ से लाजो काचा पाका पान
मोत्या छायो मांडवो हो
मैं तो अनवाड़्या पनवाड़्या सब ढुड्या वो
म्हारे कंई ये नी लादा पाका पान
मोत्या छायो माँडवो हो
तम जाजो जमई जी अनवाड़्या पनवाड़्या हो
वाँ से लाजो काचा पाका पान
मोत्या छायो माँडवो हो
मैं तो अनवाड़्या पनवाड़्या सब ढुड़्या वो
म्हारे कंई ये नी लादा पाका पान
मोत्या छायो माँडवो वो
तम जाजो चन्दरमाजी अनवाड़्या पनवाड़्या हो
वाँ से लाजो काचा पाका पान
मोत्या छायो मांडवो हो
मैं तो अनवाड्या पनवाड्या सब ढुड़्या वो
म्हारे कंई ये नी लादा पाका पान
मोत्या छायो माँडवो वो

जब मण्डप बनाया जाता है तब यह गीत गाया जाता है।

महिलाएँ दामादों से कहती हैं- दामाद जी। पनवाड़िया पान की दूकान पर जाकर पान लाना। पान मंडप की पूजा करने के लिये चाहिये। लेकिन दामाद को बहुत ढूँढ़ने पर भी कहीं पान नहीं मिला। चारों दिशा ढूँढ़ा लेकिन पान पके हुए कहीं नहीं मिले।

मंडप (चिरकली)

या तो कां से आई म्हारी पिली चिरकली
कां से तो आयो माणक खम्ब
सुपारी ने बिड़ला पान का
बाई वो आम्बे उतरी आई पिली चिरकली
बाई वो नगर-नगर से आवे माणक खम्ब
सुपारी ने बिड़ला पान का
बाई वो कां बन्दाडू पिली चिरकली

बाई वो कां बन्दाडू माणक खम्ब
सुपारी ने बिड़ला पान का
बाई वो मोतीड़े बन्दाडू पिली चिरकली
बाई कुड़े बन्दाडू माणक खम्ब
सुपारी ने बिड़ला पान का
बाई वो कईयाड़ी उतारु पिली चिरकली
बाई वो कईयाड़ी उतारु माणक खम्ब
सुपारी ने बिड़ला पान का
बाई वो मांडवे उतारु पिली चिरकली
बाई वो कँवले उतारु माणक खम्ब
सुपारी ने बिड़ला पान का
बाई वो कांई जीमाडू पिली चिरकली
बाई वो कंई जीमीडू माणक खम्ब
सुपारी ने बिड़ला पान का
बाई वो चोखा जीमाडू पिली चिरकली
बाई वो सोब जीमेगा माणक खम्ब
सुपारी ने बिड़ला पान का

बाँस का मंडप चार दामादों से बनवाया जाता है। चार बाँस चारों दामाद के हाथ में पकड़ा दिये जाते हैं और दामादों को ससुर स्वागत करके टीका लगाते हैं। चारों बाँस में पीले चावल करके सफेद कपड़े में बाँधकर बाँस में बाँध दी जाती है, उसी को चिड़िया का नाम दिया है। बाँस गाड़ने वाले गड्ढे में भी पूजा की जाती है। उसी जगह मंडप के पास माणक खम्ब भी गाड़ा जाता है। जब तक माणक खम्ब नहीं गाड़ा जाता, तब तक मंडप को अधूरा माना जाता है।

यह बाँस में बँधी चिड़िया कहाँ से आई है और कहाँ से माणक खम्ब आये हैं ? इन्दौर से चिड़िया लाये हैं, उज्जैन से माणक खम्ब लाये हैं। इन सबकी मैं स्वागत के साथ पूजा करूँगी। उन्हें अच्छी जगह ठहराऊँगी। उन्हें अच्छा भोजन करवाऊँगी। उन्हें अच्छे पान में सुपारी लेकर चढ़ाऊँगी।

मंडप (बधावा)

पाणी मांय की सारस वो
म्हारा अलीजा से अड़ी रई वो
सारस तमने घड़ावां टोटी झूमका
छोड़ो म्हारा अलीजा री सांत वो
पाणी मांय की ....

सारस तमने घड़ावा नव सर्यो हार
छोड़ो म्हारा अलीजा रो सांत वो
पाणी मांय की ....
सारस तमने घड़ावा बैंया रो बाजूबंद
छोड़ो म्हारा अलीजा रो सांत वो
पाणी मांय की ....
सारस तमके रंगावा पंचरंगी चुनड़ी
छोड़ो म्हारा अलीजा रो सांत वो
पाणी मांय की ....

शादी पूरी होने पर मंडप को निकालकर महिलाएँ नदी में डालने जाती हैं। नदी जाते समय यह गीत गाया जाता है।

पानी के अन्दर रहने वाली सारस मेरे पिया का रास्ता रोक रही है। हे सारस! हाथ जोड़कर विनती करती हूँ। मैं तुम्हें टोटी, झुमके, नवसर्या हार, बाजूबंद, पंचरंगी चुनरी लाकर दूँगी, तुम मेरे पिया का साथ छोड़ दो।

मंडप (बधावा)

समंदर जाजो सांचा मोती लाजो
म्हारी सैंया वो 2
वी मोती सोवे हमारा सूरज सिंगरी पांगा
म्हारी सैंया वो .... सांचा मोती लाजो
गोरा-गोरा मुखड़ा पेंचा प्यारी लागे
म्हारी सैंया वो .... सांचा मोती लाजो

शादी पूरी होने के बाद मंडप को नदी में प्रवाहित किया जाता है। नदी से वापस घर आते समय यह गीत गाया जाता है।

मेरी सहेलियों! समुद्र में से पक्के मोती लाना, वह पक्के मोती मैं अपने पिया की पगड़ी में जड़वाऊँगी। उनकी पगड़ी में वही पक्के मोती अच्छे लगेंगे।

मंडप

इनी मांडवे सुपारी केरो चाव
इनी मांडवे नारेला केरो चाव
पलाणो गजानन जी सांडली
इनी मांडवे कंकू केरो चाव

पालणो पदोल्या सांडली
सांडली गले घुगर माल
वा रपके वो चाली सांडली
सांडढली रा ओछा लाम्बा केस
वा घणी रूपली सांडढली
पावो रे काचा दूद सांडली
घणी वो सुवावणी
पालणो गजानन जी सांडली
सांडढली के झुकाड़ो म्हारे मांडने हेट
नीराव लाखे नागर बेलड़ी
गुलजाम्बू आम्बा पत्ता सांडली

मंडप बनाते समय उसमें जो भी चीज़ें लगती हैं, वह मँगवाकर मंडप सजाया जाता है। सुन्दर बनाकर मंडप की पूजा की जाती है।

इस मंडप को सजाने के लिये नारियल, सुपारी, पान, आम, जामुन के पत्ते आदि सामग्री ससुरजी कहीं से भी लाकर हमें दें, जिससे मण्डप सजाया जा सके। ससुरजी आप घोड़ी तैयार करो और जाओ। मुझे सामान लाकर शीघ्र दो, मंडप की तैयारी करना है।

मंडप

सूरज जी ने राधा बऊ यू कये
पिया हमने मंडप बताड़ो
मंडप रा हम साबल्या
घड़ी गया चौसर खम्ब
चौरासी दिवला बले
गेला गोरी वो मूरख गंवार
हज्जाप मंडप रो कईं देखणां
घड़ी गया चौसर खम्ब ..... चौरासी दिवला बले
निलेसलाल ने लाड़ी बऊ यू कये
पिया हमने मंडप बताड़ो
मंडप रा हम साबल्या
घड़ी गया चौसर खम्ब
चौरासी दिवला बले
गेला गोरी वो मूरख गंवार

हज्जाप मंडप रो कंई देखणो
घड़ी गया चौसर खम्ब ..... चौरासी दिवला बले

जब मंडप पूरा हो जाता है, तब यह गीत गाया जाता है। दुल्हन दूल्हे से कहती है- हे पिया! हमको मंडप बताओ, मंडप देखने की बहुत चाह है। वहाँ चौंसठ खम्बे लगाये हैं और चौरासी दिये जलते हैं। दूल्हा कहता है- गोरी! उस मंडप को क्या देखना? जो शादी के बाद टूट जायेगा, आप बिलकुल गंवार हों टूटने वाले मंडप को क्या देखना?

विवाह (घट्टी)

जद बणजारी ने भम्मर सोवे
टीको रतन जड़ाओ ओ म्हाने टोवो
वो म्हाने टोवो, जाजम पर झुकी रई बणजारी
जद बणजारी ने हंसज सोवे
माला रतन जड़ाओ ओ म्हाने टोवो
वो म्हाने टोवो, जाजम पर झुकी रई बणजारी
जद बणजारी ने झेला सोवे
मोती रतन जड़ाओ ओ म्हाने टोवो
वो म्हाने टोवो, जाजम पर झुकी रई बणजारी
जद बणजारी ने बाजूबंद सोवे
छंद बन्द रतन जड़ाओ ओ म्हाने टोवो
वो म्हाने टोवो, जाजम पर झुकी रई बणजारी
जद बणजारी ने हेंकल सोवे
खंगाली रतन जड़ाओ ओ म्हाने टोवो
वो म्हाने टोवो, जाजम पर झुकी रई बणजारी

शादी में महिलाएँ गेहूँ पीसती हैं। दो महिला एक साथ गीत की कड़ी बारी-बारी से उठाती हैं ताकि न पीसते समय थकें न गाते समय।

बन्जारी भम्मर पहनती है तो सुन्दर लगती है। उसमें मोती और रत्न जड़वा दिये जाते तो भम्मर में चार चाँद लग जाते। बन्जारी अपने पति को आकर्षित करने के लिए ही अनेक प्रकार के आभूषण पहनती है। सजती-सँवरती है।

विवाह (घट्टी)

हां वो कलालण थारा आंगण समंद तलाव
हां वो कंई दूरा दिशा से वो पंछी तिसिया

हां वो कंवर जी म्हारा आंगण समंद तलाव प्यारा
हां वो कंई दइदो वो झकोलो ने पीलो नीर जी
हां वो कलालण थारा घडुल्या रो पाणी पीवां प्यारी
हां वो कंई लेट उतारा वो बासक नाग की
हां वो कंवरसा म्हारा परण्या चतर सुजान प्यारा
हां वो कंई लेट उतारे ओ काला नाग की
हां वो कलालण कोई दन म्हारा घरे आवो प्यारी
हां वो कंई खूब करांगा मनवार ने
हां वो कंवर जी कुण दिसा थारो गाम प्यारा
हां वो कंई कणी दिसा में बाराणा दिसीया
हां वो कलालण उगमणी दिसा म्हारो गांम प्यारी
लाम्बी बन्दी हे पटसाल ने

कलारन से राहगीर कहता है- मैं बहुत दूर से आया हूँ और तुझे चाहने लगा हूँ। कलारन तुम मेरे घर आओ, मैं तुम्हारी बहुत मनुहार करूँगा। मेरा गाँव पूर्व दिशा में है। गाँव में घुसते ही लम्बे-लम्बे हाल में घोड़े बँधे हैं। कलारन कहती है- तुम मेरे घर आओ, लेकिन मेरे पति बहुत ही चालाक हैं। कुँवरजी! तुम्हारा घर देखने मैं जरूर देखने आऊँगी।

विवाह (बरद)

दो म्हारा ससरा जी बरद को नेग
बरद हम भरी लाया रे
इनी बरद का कारणे
लाड़ी बऊ अड़ी रया रे ....
दो म्हारा जेठ जी बरद को नेग
बरद हम भरी लाया रे
इनी बरद का कारणे
जोड़ा बऊ अड़ी रया रे ....
दो म्हारा नणदोई सा बरद को नेग
बरद हम भरी लाया रे
इनी बरद का कारणे
कुल बऊ अड़ी रया रे ....

ससुरजी! मैंने सातंग व्रत की रस्म पूरी करके अपना बहू होने का फर्ज निभाया है। आप मुझे व्रत का नेग दीजिए।

नई बहू मिट्टी का कलश कुएँ से भरकर लाती है, उसे बरत लाना कहते हैं, उस भरे हुए कलश की पूजा अर्चना की जाती है। बहू बरत भरकर लाई है। ससुरजी से कह रही है- ससुरजी! बरत भरकर लाई हूँ, इसका मुझे नेग दो। जेठजी, ननदोईजी बरत भरकर लाई हूँ, मुझे इसका नेग दो। जब तक नेग नहीं मिलेगा, मैं अन्दर नहीं जाऊँगी। यहीं खड़ी रहूँगी।

विवाह (बरद)

कुण सा राय ने सखरियो खणायो रे
कुण सा राय ने बांदी सरवर पाल रे
सखरियो म्हारो सग चड़्यो
सिद्धूजी ने सरवरियो खणायो रे
प्रेमनाराण जी ने बांदी सरवर पाल रे
सरवरियो म्हारो सग चड़्यो
कुण सा राय ने बाग लगाया रे
कुण सा राय ने दिदी चम्पा चोप रे
सरवरियो म्हारो सग चड़्यो
सिद्धूजी हरियो बाग लगायो रे
प्रेमनाराण जी ने दिदी चम्पा चोप रे
सरवरियो म्हारो सग चड़्यो
कुण सा राम ने सरवरियो खणायो रे
कुण सा राय ने बांदी सरवर पाल
सरवरियो म्हारो सग चड़्यो

मिट्टी का कलश कुएँ से जब भरते हैं, उस समय यह गीत गाया जाता है। कौन साहब ने यह कुआँ खुदवाया है। कौन से साहब ने इसकी पाल बनवाई है ? सिद्धूजी ने कुआँ खुदवाया है। प्रेमजी ने इसकी पाल बनवाई है। सिद्धूजी ने बगीचा लगवाया। प्रेमजी ने चम्पा का रोप लगाया है। यह हरा-भरा परिवार किसका है, किसने इसे इतना हरा-भरा रखा है ?

विवाह (बरद)

घड़्यो रे घड़ायो बाजोट जावद जाई चीत्यो
मेल्यो म्हारा ओरा पटसाल कुकड़े बदावीयो
पिया हमने भमर घड़ावो घरे ओ आई बरदड़ी
पिया हमने टीको घड़ावो घरे ओ आई बरदड़ी
घड़्यो घड़ायो बाजोट जावद जई चीतयो
मेल्यो म्हारा ओरा पटसाल मोतीड़ा बदावीया

गजानन्द जी की राण्यां राजा इमे बणी
पुनमचन्द्र जी री राण्यां राजा इमे बणी
पिया हमने गजरा गुथावो घरे आई बरदड़ी
पिया हमने चुड़ला चीरावो घरे ओ आई बरदड़ी
घड़यो घड़ायो बाजोट जावद जाई चीत्यो
मेल्यो म्हारा ओरा पटसाल कुकड़े बदावीयो

पिया! जावद से बाजोट बनवाकर मँगवाया है और मेरे आँगन में रखा है। उसकी पूजा की है और फिर सम्मान के साथ घर लाये हैं। पिया! मुझे सिर के लिये भम्मर बनवाओ। पिया! मुझे हाथों के लिये चूड़ा बनवाओ, गजरे बनवाओ। अपने घर शादी होने वाली है, मैं यह सब पहनकर बरत रस्म पूरी करूँगी।

विवाह (बरद)

आंबा तो मउ का गोयरे जोसी सूतो रे नचीत
आंबा तो मउ रे गोयरे कुमार्या सूतो रे नचीत
जाय जगायो गोरा लाड़ले तू कई सूतो रे नचीत
म्हारे घर पेली बरदड़ी लगना लइ बेगी आव
म्हारा घर पेली बरदड़ी कलस्या लइने बेगी आव
आंबा तो मउ रे गोयरे सोनीड़ा सूतो रे नचीत
आंबा तो मउ रे गोयरे बजाजी सूतो रे नचीत
जाय जगायो गोरे लाड़ले तू कई सूतो रे नचीत
म्हारे तो घरे पेली बरदड़ी गेणला लइ बेगी आव
म्हारे तो घरे पेली बरदड़ी पड़ला लइ बेगी आव
आंबा तो मउ रे गोयरे खेराती सूतो रे नचीत
आंबा तो मउ रे गोयरे मालीड़ा सूतो रे नचीत
जाय जगायो गोरा लाड़ले तू कईं सूतो रे नचीत
म्हारे रे घरे पेली बरदड़ी चुड़ल लइ बेगी आव
म्हारे तो घर पेली बरदड़ी फुलड़ा लइ बेगी आव

बरत रस्म जैसे ही शुरू होती है, सबसे पहले यह गीत गाते हैं।

घर में पहली शादी है और जोशी जी निश्चिंत होकर आम और महुड़ी के पेड़ के नीचे सोये हैं। कुम्हार भी निश्चिंत होकर सोये हैं। दुल्हे ने जोशीजी को और कुम्हार को जगाया है– जोशी भाई! मेरे घर पहली शादी है, इस तरह निश्चिंत होकर क्यों सोये हो? लगन और कलश लेकर जल्दी आओ।

विवाह (बरद)

रमा झमा हो करती बरद आई, आय आंगण पग दियो
सुता के जागो राज सूरजजी तम घर बरद उतावली
सुता के जागो राज चंदरमा जी तम घर बरद उतावली
रमा झमा हो करती ....
सुता के जागो राज गजानन्द जी तम घर बरद उतावली
सुता के जागो राज पुनमचन्द जी तम घर बरद उतावली
रमा झमा हो करती ....
सुता के जागो नींद नी आवे हम घर गोरो लाड़ो परणसी
सुता के जागो नींद नी आवे हम घर कन्या परणसी

खुशियाँ लेकर शादी आई है, आँगन में दूल्हे के पिता तुम सोये हो कि जाग रहे हो, तुम्हारे घर पर शादी है। हमारे घर लड़के की शादी है तो हमें कैसे नींद आ सकती है। विवाह वाले घर के विभिन्न नामों को जोड़कर गीत बड़ा किया है।

विवाह (बरद)

राजा बरदड़ली रे सवाई हो लागे म्हारे चारो ई देव तेड़ावजो
राजा बरदड़ली तेड़ावजो
राजा देवपुरी से गगन मंडल से म्हारे सूरजजी देव तेड़ावजो
राजा इन्द्रपुरी से ने तारा मंडल से म्हारे चन्द्रमाजी देव तेड़ावजो
राजा रणत भंवर से राज गजानन्दजी म्हारे रिद सिद सातें लेता आवजो
राजा चारी देव म्हारे मंडप बिराजे म्हारी बरदड़ी लागे रलीया वणी
राजा बरदड़ी रे सवाई हो लागे म्हारे चारो ई राजा तेड़ावजो
राजा घांसीरामजी ने हो राजा भेरूलाल जी म्हारे मोतीलाल जी राज तेड़ावजो
राजा चारू ई राज म्हारे मंडप आवे म्हारी बरदड़ी लागे लीया वणी
राजा बरदड़ली रे चाराई वीर तेड़ावजो,
राजा काका बाबा के मामा भुवा का म्हारो माड़ी रो जायो बीर तेड़ावजो
राजा रतलाम नगर म्हारे राज रतनलालजी मांगीलाल जी वीर तेड़ावजो -
राजा धारा नगर से ओ बीर भेराजी म्हारे भावज भतीजा लारां लावजो
राजा चारों ई बीर म्हारे मामेरो लावे म्हारी बरद लागे रलीयावणी
राजा बरदड़ली सवाई हो लागे म्हारे चारोई कुंवासी तेड़ावजो
राजा का काका बाबा की ने भुवा की म्हारे जामण री जाई बेन तेड़ावजो

बरत रस्म के समय दुल्हन का भाई उसके और उसके पति के लिये कपड़े वगैरह लाता

है और पहनाता है। पति से पत्नी कह रही है- पिया! मुझे बरत (रस्म) बहुत ही सुहानी लगती है। मन में खुशियाँ लाती हैं कि मेरा भाई मेरे लिये कपड़े और आभूषण लेकर आयेगा। पिया! सभी देवताओं को न्यौता भेजूँगी, सभी देवता मंडप के नीचे बैठेंगे, घर में बहन-बेटियों को भी बुलायेंगे।

विवाह (बरद)

गंगा से गार मंगाव के दूदा सीयाड़ जी
जिनकी तो बरद घड़ाव
के बरद म्हारी उतावली ये
बरद कुण लाल भर लावें
सुरजजी डोकरा रे
बरद चंदरमाजी भर लावे
के बरद म्हारी उतावली ये .... गंगा से........
बरद कुण राय भर लावें
जोगेन लाल डोकरा रे
बरद निलेस लाल भर लावें
के बरद म्हारी उतावली ये .... गंगा से........
बरद कुण राय भर लावें
सिद्धूजी डोकरा रे
बरद प्रेमनाराण भर लावें
के बरद म्हारी उतावली ये .... गंगा से.......

बरत रस्म के लिये जो जोड़ा मटकी भर कर लाता है, उसका नाम लेकर कहा जाता है कि कौन साहब बरत भर कर लाये हैं।

गंगाजी से मिट्टी मँगाकर बरत बनाऊँगी। मेरी जल्दी में बरत उतावली आने को हो रही है। सूरजजी बरत नहीं भर पायेंगे, क्योंकि वह वृद्ध हो गये हैं। चन्द्रमाजी वृद्ध नहीं हुये इसलिए बरत चन्द्रमाजी भर लायेंगे, क्योंकि बरत आने को उतावली हो रही है।

विवाह (बरद)

ई तो बऊ सा तो चाल्या पाणी
हिरामणी तो सेके घाणी
उने मुट्ठीक दई दी घाणी
वी तो रूग-रूग चाल्या पाणी

तम पिवो सुवागण पाणी
गल्णा को छाण्यो पाणी
ई तो बऊ सा चाल्या पाणी
राधा राणी तो सेके घाणी
उने मुट्ठीक दई दी घाणी
वी तो रूग-रूग ....
ई तो बऊ सा चाल्या पाणी
कंचन राणी तो सेके घाणी
उने मुट्ठीक दई दी घाणी
वी तो रूग-रूग ....

एक बहू पानी लेने चल दी हैं, दूसरी बहू धानी सेक रही है। एक मुट्ठी धानी की दे दी तो धीरे-धीरे खाते-खाते पानी भरने चल दी । बहू पानी भरकर लायेगी। सभी सुहागिनों कपड़े का छना ठंडा पानी पियो।

विवाह (बरद)

गोतीड़ा कुण राय परणाय
गोती म्हारा वेग ला रे
परणावे योगेस लाल रा निलेस डोकरा
गोती म्हारा वेग ला रे
वरद कुण राय परणाय
वरद म्हारा वेग ला रे
परणावे सिद्धूलाल रा प्रेम
गोती म्हारा वेग ला रे
गोतीड़ा कुण राय परणाय
गोती म्हारा वेग ला रे
परणावे मथरालाल रा राधेश्याम
गोती म्हारा वेग ला रे

गेहूँ का चौक बनाकर उसपर कलश रखा गया है। एक गोत्र के सभी लोग कलश को गोतीड़ा मानते हैं। चाँदी का कड़ा या किसी भी जेवर से कलश पर फेरा लगाते हैं। वह कार्य सभी एक गोत्रीय एक साथ करते हैं। फेरे की क्रिया सात बार की जाती है। इस तरह गोतीड़ा की शादी हो जाती है, उसके बाद ही दूल्हा-दुल्हन के फेरे होते हैं।

विवाह (उकल्डी)

उकल्डी -उकल्डी कुण-कुण लौटे
उकल्डी-उकल्डी जमाई हुण लौटे
छोड़ उकल्डी वो घर जावा दे
छोड़ उकल्डी वो घर लागी जावा दे
उकल्डी-उकल्डी ....
छोड़ उकल्डी वो घर लागी जावा दे
उकल्डी-उकल्डी ब्यायजी लौटे
उकल्डी-उकल्डी ब्यानजी लौटे

उकल्डी (विवाह की एक रस्म) जब पूजी जाती है तो वहाँ जमाई को मजाक के तौर पर उस उकल्डी पर (पूजा की जगह) लोट लगाने को कहा जाता है।

जब बच्चे का जन्म होता है तो महिला के पेट से बच्चे के साथ आंवल (नाल) निकलती है। वह आँवल को फेंकने के बजाय कचरे के ढेर के नीचे मिट्टी में गाड़ा जाता है। उस कचरे के ढेर को गाँव में उकल्डा कहते हैं। नाल गाड़ने की जगह उकल्डी पूजा की रस्म शादी में पूरी की जाती है।

विवाह (गाली)

चलो हो रामजी वेवई रामनाम सुपाई दू
तमरा तकदीर में मोल्या बईरा बी नई रे
बाबोजी बोले अमरत बानी
गारा की घड़ावां तो गली-गली जावें
गोबर की घड़ावां तुरत कीड़ा पड़ेरे
बाबोजी बोले अमरत बानी
चाँदी की घड़ावां तो चोल्डा लई जावे
सून्ना की घड़ावां तो चोल्डा लई जावे
बाबोजी बोले अमरत बानी

समधीजी! आपकी पत्नी नहीं है तो चलो आपको राम नाम ही दिलवा दूँ, क्योंकि तुम्हारे तकदीर में औरत नहीं है। मिट्टी की बनायेंगे तो गल जायेगी, गोबर की बनायेंगे तो उसमें कीड़े पड़ जायेंगे, सोने-चाँदी की बनवायेंगे तो चोर ले जायेंगे। तुम्हारे किस्मत में औरत नहीं है तो आपको राम नाम का जाप करना सिखा दूँ।

जमाई गाली

आप लाफर बाप लाफर जिका जाया आप
हो म्हारा रंगीला जमई हो म्हारा छबीला जमई
तमने गाल गावाँ हो
गाल गावाँ रीत की दुणा करां लाड़ा हो म्हारा केसरिया
जमई हो म्हारा पातलिया जमई तमने गाल गावाँ हो
काका लाफर काकी लाफर जिका जाया आप
हो म्हारा रंगीला जमई हो म्हारा नखराला जमई
तमने गाल गावाँ हो
गाल गावाँ रीत की दुणा करां लाड़ा हो म्हारा केसरिया
जमई हो म्हारा पातलिया जमई हो म्हारा नखराला
जमई तमने गाल गावां हो
मामा लाफर मामी लाफर जिका जाया आप
हो म्हारा रंगीला जमई हो म्हारा छबीला जमई
तमने गाल गावां हो
गाल गावां रीत की दुणा करां लाड़ा हो म्हारा केसरिया
जमई हो म्हारा पातलिया जमई तमने गाल गावां हो
दामाद ससुराल में आते हैं, तब यह जमाई गाली गाते हैं।

रंगीले दामाद! इतराने वाले दामाद! आपके बाप भी लोफर, आप भी लोफर हम आपको गाली देते हैं। गाली भी हम रीति-रिवाज के अनुसार देंगे। समय आने पर हम लाड़-प्यार भी करेंगे, लेकिन गाली ज़रूर देंगे।

नाचने का (आड़ा)

जाजो-जाजो उज्जैणिरा हाट साजें तो बेगा
अई जाजो जी
मिल्या-मिल्या जोड़ी रा जवान दारुड़ी पीवा
लागा ग्या जी
दारु के झोंकु चुल्हा माँय अनबोल्या
पीयर चल्यां जावांगा
जाजो-जाजो इन्दौर्या रा हाट
साजें तो बेगा अई जाजो जी
मिल्या-मिल्या जोड़ीरा सिरदार दारुड़ी पीवा

लागी ग्या जी
दारु के झोंकु चेल्हा माँय अनबोल्या पीयर
चल्यां आवांगा
बाटल रे झोंकु चुल्हा मांय अणबोल्या
पीयर चल्यां आवांगा

शादी के समय महिलाएँ तरह-तरह के नाच नाचती हैं, उस समय गीत भी गाये जाते हैं।

पिया! आप उज्जैन का बाजार करने जाना लेकिन शाम को जल्दी घर आ जाना। आप दोस्त के साथ दारू पीने मत बैठ जाना। दारू की बाटल अगर मुझे दिखेगी तो मैं उसे चूल्हे में रखकर आग लगा दूँगी।

नाचने का (आड़ा)

चार-चार मईनो स्यालो बी आयो
नणद बाई ठन्ड पड़े वो लसकर में
जीजां बाई ठन्ड पड़े वो लसकर में
चार-चार मईनो उनालो बी आयो
नणद बाई गरमी पड़े वो लसकर में
जीजां बाई गरमी पड़े वो लसकर में
चार-चार मईनो चौमासौ बी आयो
नणद बाई झड़ पड़े वो लसकर में
जीजां बाई झड़ पड़े वो लसकर में

शादी में महिलाएँ आड़ा नाच नाचती हैं, तब यह गीत गाया जाता है।

चार महीने ठंड रहती है, ग्वालियर (लश्कर) में ज्यादा ठंड लगती है, ननदबाई ग्वालियर में ठंड पड़ती है। गर्मी भी चार माह होती है, गर्मी भी लश्कर में ज्यादा होती है और बारिश भी लश्कर में ज्यादा होती है।

नाचने का (मटकी)

सायब चाल्या चाकरी हूँ पाणी भरवा गई थी
पाणी को बायनो थी पण हाट करवा गई थी
सासू सूती खाटले हूँ पग चबदवा गई थी
पग को बायनो थो हूँ चिमटया खोड़वा गई थी
नणदल चाली सासरे हूँ बिदा करवां गई थी

बिद्दा को बायनो थो हूँ पण थक्को देवा गई थी
देवर जी ने रोटा हूँ तो सक्कर देवा गई थी
सक्कर को बायनो थो पण टक्कर लेवा गई थी

शादी में ढोल पर मटकी नाच के समय महिलाएँ यह गीत गाती हैं।

पति नौकरी करने बाहर निकला और पत्नी पानी भरने के बहाने बाजार करने निकल गई। सास पलंग पर सोई थी, उनके पाँव दबाने के बहाने उनको चिमटी लेने गई। ननद को ससुराल विदा करने के बहाने उसे धक्का देने गई थी। देवर को शक्कर और रोटी देने के बहाने उससे मुँह जोरी (टक्कर) करने गई थी।

नाचने की नार (फूंदी)

अलबेला की नार नाचे भमर्यो ले रे ले।
सज सोला सिणगार नाचे, भमर्यो ले रे ले।
आड़ी नाचे ऊबी नाचे भमर्यो ले रे ले।
छम छमाछम दारी नाचे भमर्यो ले रे ले।
सूरा की सतवंती नाचे भमर्यो ले रे ले।
ग्यानी की गुणवंती नाचे भमर्यो ले रे ले।
साजन की सुवागण नाचे भमर्यो ले रे ले।
घर में नाचे आंगणे नाचे भमर्यो ले रे ले।
गिरधारी की नार नाचे, भमर्यो ले रे ले।
थाली की किनोर पे नाचे, भमर्यो ले रे ले।
छंदगाली नार नाचे, भमर्यो ले रे ले।
पातली सी नार नाचे, भमर्यो ले रे ल॥

महिला सोलह श्रृँगार करके नाच रही है, इसका पति बहुत रंगीला है और महिला भी नाचने में तेज है। यह ऐसे नाच रही है जैसे भँवरी (लट्टू) घूमता है। आड़ी होकर, खड़ी होकर, बैठकर नाच रही है जैसे भँवरी घूम रही है।

नाचने की नार (आड़ा)

घरे कुवलो घर बावड़ी पराया कुवला पे न्हावा जाय
मिजाजी थारा नखरा पे मरी जांऊ रे
रांगड़िया थारा नखरा पे मरी जांऊ रे
घरे आंगण घरे ओटला पराया ओटला पे बेठण जाय
मिजाजी थारा नखरा पे मरी जांऊ रे

हटीला थारा नखरा पे मरी जांऊ रे
घरे छोरा घरे छोरी पराया पुत्तर के रमांवा जाय
मिजाजी थारा नखरा पे मरी जांऊ रे
केसरीया थारा नखरा पे मरी जांऊ रे
घरे ओरी घरे गोरी पराई क्ंया बेठण जाय
मिजाजी थारा नखरा पे मरी जांऊ रे
भम्मर जी थारा नखरा पे मरी जांऊ रे

शादी में महिलाएँ नाचती हैं, तब यह गीत गाया जाता है। पत्नी-पति से कहती है- पिया! तुम्हारे घर में कुआँ है, बावड़ी है फिर दूसरे के कुएँ पर क्यों नहाने जाते हो? रंगीले पिया! मैं तुम्हारे नखरे पर ही मर जाती हूँ। घर पर चबूतरा है, फिर दूसरे के चबूतरे पर क्यों बैठने जाते हो? घर में लड़का-लड़की हैं फिर दूसरे के बच्चे को क्यों खिलाने जाते हो? घर में तुम्हारी पत्नी है फिर दूसरी औरतों पर क्यों ताक-झाँक करने जाते हो? रंगीले मिजाजी पिया! तुम्हारे इस नखरे पर तो मैं मर मिटी हूँ।

नाचने का (मटकी)

भंमर घड़ई दे रे छोरा गुजर का
झालज घड़ई दे रे छोरा गुजर का
अररर मटकी सररर सटकी
ऐ ढोल घुमई दे रे छोरा गुजर का
थारे ने म्हारे छोरा प्रीत है पुराणी
ढोल घुमई दे रे छोरा गुजर का
हंसज घड़ई दे रे छोरा गुजर का
झूमणा घड़ई दे रे छोरा गुजर का
अररर मटकी ....
थारे ने म्हारे सैंया प्रीत है पुराणी
म्हारे नचई दे रे छोरा गुजर का
बाजूबंद घड़ई दे छोरा गुजर का
पोंची मटकई दे छोरा गुजर का
अररर मटकी ....
थारे ने म्हारे ढोला प्रीत है पुराणी
थारे नचांडू छोरा गुजर का
अररर मटकी .....

महिलाएँ मटकी नाच करती हैं, तब यह गीत गाती हैं। गूजर के लड़के मुझे भम्मर बनवा

दे, मुझे कानों के पहनने के झालज बनवा दे। मेरे बगल की मटकी खसक रही है। लड़के ढोल बजा दे, मेरी नाचने की इच्छा हो रही है। लड़के तेरी और मेरी प्रीत बहुत पुरानी है, इसलिए मुझे हंसज बनवा दे, बाजूबंद बनवा दे, पोंची बनवा दे। लड़के तुझसे मैं बहुत प्रेम करती हूँ और यह प्रेम बहुत पुराना है। मेरे कमर की मटकी खसक रही है, तू ढोल बजा दे ताकि मन भर के नाच सकूँ।

नाचने का (आड़ा)

भम्मर घड़ई दो म्हारी जान
हमने तो नई पेर्या जी
हमने तो नई पेर्या, सोकड़ जी ने पेर्या जी
अबे घर आवो बेइमान, लुटइ दूं सारो डेरो रे
हंसज घड़इदो म्हारी जान
हमने तो नई पेर्या जी
हमने तो नई पेर्या, सोकड़िया ने पेर्या जी
अबे घर आवो बेइमान, लुटइ दूं सारो डेरो रे
बाजूबंद घड़इदो म्हारी जान
हमने तो नई पेर्या जी
हमने तो नई पेर्या, सोकड़िया ने पेर्या जी
अबे घर आवो बेइमान, लुटइ दूं सारो डेरो रे
कड़िया घड़इदो म्हारी जान
हमने तो नई पेर्या जी
हमने तो नई पेर्या, सोकड़िया ने पेर्या जी
अबे घर आवो बेइमान, लुटइ दूं सारो डेरो रे

महिलाएँ आड़ा नाच शादी में नाचती हैं। दो-दो की जोड़ बनाकर गाती हैं।

मेरे पिया! मुझे सिर पर पहनने का भम्मर बनवा दो। गले में पहनने का हंसज बनवा दो। बाँहों में पहनने का बाजूबंद बनवा दो। पैरों में पहनने को कड़िया बनवा दो। जो मैंने आज तक नहीं पहनी है। हमने नहीं पहनी, लेकिन सौतन ने जरूर पहना है। पिया! तुम अब घर आ जाओ, मेरे साथ बेईमानी नहीं करो। मैं तुम्हारे ऊपर अपने आपको न्यौछावर कर दूँगी।

नाचने का (केरवा)

म्हारो चूड़ो चमके म्हारी नथ भलके, म्हारा झांजरिया रो ठमको
प्यारो लागे हो रसिया ...... गेरो फूल गुलाब को
थें तो गेरा-गेरा बाईसा रा बीरा हो रसिया, गेरो फूल गुलाब को

म्हारा माथा का परमाणे भम्मर लाजो हो रसिया, गेरो फूल गुलाब को
म्हारा माथा का परमाणे टीको लाजो हो रसिया, गेरो फूल गुलाब को
थें तो गेरा-गेरा बाईसा रा बीरा हो रसिया, गेरो फूल गुलाब को
म्हारो चूड़ो चमके म्हारी नथ ....
म्हारा काना का परमाणे झालज लाजो हो रसिया, गेरो फूल गुलाब को
म्हारा काना का परमाणे झुमका लाजो हो रसिया, गेरो फूल गुलाब को
थें तो गेरा-गेरा बाईसा रा बीरा हो रसिया, गेरो फूल गुलाब को
म्हारो चूड़ो चमके म्हारी नथ ....
म्हारा हिवड़ा का परमाणे हंसज लाजो हो रसिया, गेरो फूल गुलाब को
म्हारा गला का परमाणे माला लाजो हो रसिया, गेरो फूल गुलाब को
थें तो गेरा-गेरा बाईसा रा बीरा हो रसिया, गेरो फूल गुलाब को
म्हारो चूड़ो चमके म्हारी नथ ....
म्हारी बैंया का परमाणे बाजूबंद लाजो हो रसिया, गेरो फूल गुलाब को
म्हारा हांता का परमाणे चूड़लो लाजो हो रसिया, गेरो फूल गुलाब को
थें तो गेरा-गेरा बाईसा रा बीरा हो रसिया, गेरो फूल गुलाब को
म्हारो चूड़ो चमके म्हारी नथ ....
म्हारो चूड़ो चमके म्हारी नथ भलके, म्हारा झांजरिया रो ठमको
प्यारो लागे हो रसिया .... गेरो फूल गुलाब को
थें तो गेरा-गेरा बाईसा रा बीरा हो रसिया, गेरो फूल गुलाब को

महिलाएँ जब ढोल पर नाचती हैं, तब यह गीत गाया जाता है।

मेरा चूड़ा चमक रहा है, मेरी नाक की नथुनी झोले खा रही है। पायल पहनकर जब चलती हूँ तो ऐसा ठुमका लगता है कि हे पिया! तुम पलट कर देखने लग जाते हो। लेकिन मेरे सिर के लिये, गले के लिये, कानों के लिये जेवर बनवा दो। मेरी प्यारी ननद के भाई! यह सब पहन कर मैं ऐसी लगूँगी जैसे खिला हुआ गुलाब हो।

नाचने का (आड़ा)

ऐजी राजा तम्बाकूड़ी आवे परमल बाँस
ढोल्यां से नीचे उतरो जी म्हारा राज
राणी देस छोड़ी ने परदेस जी म्हारा राज
तम पर तो लावां दूसरी जी म्हारा राज
ऐजी राजा एक छोड़ी ने दोय चार जी म्हारा राज
मोटा तो कंवराणी हम बाजांगा जी म्हारा राज
ऐजी राजा तम्बाकूड़ी आवे बागां में बास

डाल्यां से नीचे उतरो जी म्हारा राज
राणी देस छोड़ी ने ....

उकल्डी पूजा होती है तब वहाँ भी महिलाएँ नाचती हैं और यह गीत गाते हैं। पिया! मुझे तम्बाकू की बास (बदबू) आती है, आप पलंग से नीचे उतरो। पति कहता है– मैं देश छोड़कर परदेश चला जाऊँगा और दूसरी पत्नी ले आऊँगा। पत्नी कहती है– पिया! एक छोड़कर दो–चार ले आओ, लेकिन बड़ी तो हम ही कहायेंगे, लेकिन मुझे तम्बाकू की बास अच्छी नहीं लगती है। आप पलंग से नीचे उतर जाओ।

नाचने का (आड़ा)

रतन कुवो मुख साँकड़ो जी कंई रेसम लाम्बी डोर अकेली गुजरी
दो गोरी दो सांवली जी कंई हिलमिल पाणी जाय अकेली गुजरी
बिचली के काटो भागीयो जी चारी मिल झोला खाय
बाट बटउड़ा तुई म्हारो वीरो तुई म्हारो कांटो हेड़
अकेली गुजरी
कांटो हेड़ई कंई दे पणियारी के थारा मनड़ा री बात
हाता की दऊं थाने मूंदूड़ी रे वीरा ओर गला को हार
अकेली गुजरी
पत्थर पे फोडू थारी मूंदूड़ी वो म्हे तो नदिया बेवाडू
हार काटो तो थारो जद हेडू वो तू होवे म्हारा घर की नार
अकेली गुजरी
हट मुवा हट पापीड़ा रे थारी जीबड़ी में डसे कालो नाग
देवर काटों काड़सी रे म्हारा सायब पकड़े पांव
अकेली गुजरी
सासुजी पाटटी बाधं सी रे म्हारी नणदल सेके पांव
रतन कुवो मुख सांकड़ो जी कंई रेसम लम्बी डोर
अकेली गुजरी

चार महिलाएँ पानी भरने गईं, वहाँ बीच वाली को पैरों में काँटा लग गया, एक राहगीर से कहा– तू मेरा भाई है, मेरा काँटा निकाल दे। राहगीर बोला– काँटा निकालने का क्या दोगी? बीच वाली बोली कि हाथ की अँगूठी दूँगी और गले का हार दूँगी। राहगीर बोला कि– तेरी अँगूठी तो पत्थर से फोड़ दूँगा और नदियों में तेरा हार बहा दूँगा। मैं तेरा काँटा तब निकालूँगा जब मेरे गले का हार बनोगी। महिला बोली कि– पापी! घर जाऊँगी तो मेरा देवर काँटा निकालेगा और मेरे पति मेरा पाँव पकड़ेंगे। मेरी सास मेरे पाँव में पट्टी बाँधेगी। मेरी ननद मेरे पाँव की सिकाई करेगी।

नाचने का (मटकी)

भम्मर पेरू तो म्हारो माथो दु:खे
माथो घणी दु:खे म्हारो पग्ल्या सड़क पेंच
नीचक बैठजा रे मादुसिंग माथो घणो दुखे
हंसली पेरूतो म्हारो हईड़ो घणो दुखे
बईया घणो दुखे म्हारा पग्ल्या सड़क पेंच
नीचक बैजा रे मादुसिंग माथो घणो दुखे
बाजूबंद पेरू तो म्हारो बैंया घणी दुखे
बईया घणो दुखे म्हारा पग्ल्या सड़क पेंच
नीचक बैजा रे मादुसिंग माथो घणो दुखे
चुड़ीलो पेरू तो म्हारो माथो घणे दुखे
पोचा घणा दुखे म्हारा पग्ल्या सड़क पेंच
नीचक बैठजा रे मादुसिंग माथो घणो दुखे
कड़िया पेस तों म्हारा पल्या चाणा दु:खे
अगल्या घणा दुखे म्हारा पल्या सड़क पेंच
नीचक बैठ जा रे मादुसिंग माथो घणो दु:खे

मेरे पिया! भम्मर पहनती हूँ या टीका पहनती हूँ तो मेरा सिर बहुत दु:खता है। हँसली पहनूँ तो मेरा कलेजा दुखता है। पिया! तुम नीचे बैठ जाओ और मेरा सिर दबाओ तो ठीक हो जायेगा।

नाचने का

झगमग रजरा चीरा म्हारा सुसरा सारू लाजो रे
लप्पा झप्पा की साड़ी, किरण गोटा की साड़ी
म्हारी सासु सारू लाजो रे
झगमग रजरा चीरा म्हारा जेठ सारू लाजो रे
लप्पा झप्पा की साड़ी, किरण गोटा की साड़ी
म्हारी जेठाणी सारू लाजो रे
झगमग रजरा चीरा म्हारा देवर सारू लाजो रे
लप्पा झप्पा की साड़ी, किरण गोटा की साड़ी
म्हारी देराणी सारू लाजो रे
झगमग रजरा चीरा म्हारा सायब सारू लाजो रे
लप्पा झप्पा की साड़ी, किरण गोटा की साड़ी
म्हारी सोकड़ सारू लाजो रे

नाचते-नाचते बहन भाई से कह रही है कि मेरे परिवार वालों के लिये अच्छे कपड़े लाना।

भाई! मेरे ससुर के लिये, मेरे जेठ के लिये, मेरे देवर के लिये, मेरे पति के लिये अच्छे कपड़े लाना। चमकने वाले जो शोभा दें। मेरी सास के लिये, जेठानी के लिये, देवरानी के लिये, मेरी सौतन के लिये अच्छी गोटे किनारी वाली साड़ी लाना।

विवाह (नाचने का)

घागरो पेरूं तो गामड़ा की लागूं
लेगों लइदे रे मांगीलाल सेटाणी बाजू
लूगड़ो ओढूं तो गामड़ा की लागूं
साड़ी लइदे रे मांगीलाल सेटाणी बाजू
काँचली पेरूं तो गामड़ा की लागूं
पोलको लइदे रे मांगीलाल सेटाणी बाजू
कड़ियां पेरूं तो गामड़ा की लागूं
पाजेब लइदे रे मांगीलाल सेटाणी बाजू
पन्नी पेरूं तो गामड़ा की लागूं
रे मांगीलाल सेटाणी बाजू

विवाह में नाचते समय यह गीत गाते हैं। पति से पत्नी कह रही है कि मैं घागरा, लूगड़ा, कांचली या कड़ियाँ पहनती हूँ तो गाँव जैसी लगती हूँ। मुझे घागरे की जगह लहँगा, लूगड़े की जगह साड़ी, काँचली की जगह ब्लाउज, कड़ियों की जगह पाजेब लाकर दो ताकि मैं शहर की महिला लगूँ।

नाचने का

लिप्पा तो छाब्या आंगण ओटला वो छोरी
जिपे कमल केरो फूल वो, बटवड़ा ने दिल मोयो
ऐसी उड़उंवा सवी सांज की वो छोरी
दनड़ो उगऊंवो नदी मांय वो, बटवड़ा ने दिल मोयो
नदियां उतरूं तो म्हारा पगल्या भिंजे रे छोरा
बिछिया भराय रे बालू रेत रे, बटवड़ा ने दिल मोयो
रूमाल से पोंछूं थारा पगल्या वो छोरी
चिमटी हेड़इंदू बालू रेत रे, बटवड़ा ने दिल मोयो
चाली-चाली ने म्हारा पगल्या दुखे रे छोरा
कितरी यो दूर थारो गाम रे, बटवड़ा ने दिल मोयो

उण्डा-उण्डा ई आम्बा आमली वो छोरी
उंची हवेली म्हारो घर वो, बटवड़ा ने दिल मोयो
पालणे बैठन्ता थारा कुण लागे रे छोरा
घोड़ीले बैठन्ता थारा कुण रे, बटवड़ा ने दिल मोयो
पालणे बैठन्ता म्हारी माता लागे वो छोरी
घोड़ीले बैठन्ता म्हारा बाप वो, बटवड़ा ने दिल मोयो
रसोड़ो करन्ता थारी कुण लागे रे छोरा
भेंस्या दुवाता थारा कुण रे, बटवड़ा ने दिल मोयो
रसोड़ो करंता म्हारी भावज लागे वो छोरी
भेस्यां दुवाता म्हारा भई वो बटवड़ा ने दिल मोयो

मालवा में आँटीदार आड़ा नाच किया जाता है। हाथों से चुटकी बजाकर पैरों में आँटी लेकर यह नृत्य किया जाता है।

लड़की ने आँगन लीपा, उस पर सुन्दर फूल बनाया, उधर से राहगीर निकला तो उस फूल को देखकर लड़की पर मोहित हो गया। लड़की तुझे भगाकर ले जाऊँगा, तुझे किसी बात की तकलीफ नहीं आने दूँगा। मैं बड़े घर का लड़का हूँ, मेरी माँ पालने में झूलती है, मेरे पिता घोड़ों पर सवार घूमते हैं। तू चल मेरे साथ, मेरा मन तुझपर आ गया है, मैं तुझसे प्रेम करने लगा हूँ।

(नाचने का) विवाह

हरी बाड़ी का करेला मत लाजो रसिया
मैं बालक थी जब पास रसिया
म्हारी भरी रे जवानी परदेस रसिया
तांबा का हंडा में तातो सो पाणी
न्हावो-न्हावो जी पिया, परदेस रसिया
हरी बाड़ी का करेला मत लाजो रसिया
सुन्ना की झारी गंगाजल पानी
पीवो-पीवो जी पिया परदेस रसिया
हरी बाड़ी का करेला मत लाजो रसिया

मटकी नाच नाचते समय महिला अपने पति से कहती है- मेरे पिया! मैं जब बच्ची थी, तब आप मेरे पास थे। मैं अब जवान हो गई तो आप परदेश चले गये। मैंने आपके लिये गरम पानी नहाने के लिये रखवाया। मैंने आपके लिये शुद्ध गंगाजल पीने के लिये मँगवाया है, लेकिन मैं भी कैसी पागल हूँ, आप तो परदेश चले गये हो।

ख्याली

म्हारो सो कली को घाघरो वो
चुनड़ तो म्हारी नवी धरी
लाड़ी का दाउजी बुरो मतो मान जो हो
तमारा आंगण रपट पड़ी
म्हारो सो कली ....
लाड़ी का काकाजी बुरो मतो मान जो हो
तमारा आंगण रपट पड़ी
म्हारो सो कली ......
लाड़ी का वीराजी बुरो मतो मान जो हो
तमारा आंगण रपट पड़ी
म्हारो सो कली ....
लाड़ी का मामाजी बुरो मतो मान जो हो
तमारा आंगण रपट पड़ी

दूल्हे का चौक पाट होने के बाद महिलाएँ बारी-बारी से नाचती हैं। हँसी-मजाक करती हैं और लाड़ी के पिताजी, काकाजी को सम्बोधित करके कहती हैं।

मेरा घाघरा घेरवाला है और नया है। मेरी चुनरी भी नयी है। लाड़ी के पिताजी! आप बुरा मत मानना, मैं आपके आँगन में अपने कपड़े नहीं सँभाल पाई हूँ और फिसल गई हूँ।

विवाह (ख्याली)

चांदा थारी चांदणी सी तारा छाई रात राज
उगता सुरीया में गुण गविया जी राज
रम्या-रम्या घड़ी दोय चार राज, घड़ी दोय चार
नेणा में अईनी बेंरण नीदड़ी जी राज
उठो सायबा उठो सायब भड़क्या उगाड़ो राज,
भड़क्या सा खोलो राज
नेणा में अईगी बेंरण नींदड़ी
जलता भलता भड़क्या सा खोल्या राज,
भड़क्या सा खोल्या
खूंठिये से हेड़या चांदी चांपका जी राज
मार्या-मार्या दोयने चार राज, चांपका दोयने चार राज
दन तो उगोया म्हारा बाप कां जी राज
आवो बेटी बैठो पटसाल राज बैठो पटसाल राज

काय का कारण मार्या, मार्या गेन्दा चांपका जी राज
काहो जमई काहो जमई काय का कारण मार्या, चापका जी राज
तामरी बेटी तामरी बेटी हात की चालक राज
जीब की बोलकार राज इका सारु मायां चांदी चांपका जी राज
म्हारी बेटी म्हारी बेटी होली केरी झाल राज सावन केरी तीज
कांय का कारण मार्या चापका जी राज

शादी की धमाचौकड़ी में घर की महिलाएँ और मेहमान आदि रात-रात भर नाचते हैं।

चंदा तेरी चाँदनी छिटकी है, उसमें लड़कियाँ खेलने जा रही हैं। एक लड़की अपने पति को अकेला छोड़कर खेलने चली गई। खेलने के बाद जब घर आई तो पति ने दरवाजा नहीं खोला। कुछ देर से जलते-भुनते दरवाजा खोला और खूँटी पर से चाबुक निकालकर दो-तीन चाबुक मार दिये। पत्नी को गुस्सा आया और मायके चली गई। जमाई पत्नी के पास मायके गया तो सासू ने जमाई से पूछा- क्यों जमाई जी! हमारी बेटी को क्यों मारा? हमारी बेटी होली जैसी तेज है, सावन जैसी सुन्दर है। दामाद बोले- आपकी बेटी हाथ की चालाक है, जुबान की तेज है, इसलिये मारा।

ख्याली

पेलो जो आणो म्हारा ससरा जी आया
ससरा का सांते म्हारी जाय बलाय
फांगण फरग्यो रे हजारी,
ढोला लई क्यों नी जाय ..... फागण फरग्यो
दुसरा जो आणे म्हारा जेठजी आया
जेठजी का सांते म्हारी जाय बलाय
फांगण फरग्यो रे हजारी,
ढोला लई क्यों नी जाय ..... फागण फरग्यो
तीसरा जो आणे म्हारा नणदोई जी आया
नणदोई का सांते म्हारी जाय बलाय
फांगण फरग्यो रे हजारी,
ढोला लई क्यों नी जाय ..... फागण फरग्यो
चौथा जो आणे म्हारा सायब जी आया
सायब का सांते हुँ तो काल की तैयार
फागण फरग्यो, म्हारा मारूजी लेवां ने आया ..... फागण फरग्यो

सबसे पहले गौना कराने मेरे ससुरजी आये, दूसरी बार मेरे जेठजी आये, तीसरी बार मेरे

ननदेऊ आये लेकिन मैं इनके साथ नहीं जाऊँगी। मैं तो अपने पिया का रास्ता देख रही हूँ, पिया तुम क्यों नहीं लेने आये। फागुन चला गया है। चौथी बार उसके पिया लेने आये तो वह तुरन्त जाने के लिये तैयार हो गई।

ख्याली

कोठी मांय से गंवड़ा हेइया झटपट बिण्या गंवड़ा
हाय रंगीली गांकरिया
बीणी चुंणी ने पिसण बेठी तड़ तड़ फाटी मांकड़िया
हाय रंगीली गांकरिया
पीसी पासी ने पोवड़ बैठी सोळे पाई गांकरिया
हाय रंगीली गांकरिया
पोई पाई ने खावण बेठी सोळे खाई गांकरिया
हाय रंगीली गांकरिया
खई पीवी ने कोंळे बेठी तड़-तड़ फाटी कूंपलिया
हाय रंगीली गांकरिया
हरता फरता म्हारा ससराजी बोल्या म्हारी बउवड़ ने लागी डाकणीया,
हाय रंगीली गांकरिया
हरता फरता जेठजी बोल्या म्हारी छोटी बउवड़ ने लागी डाकणीया,
हाय रंगीली गांकरिया
कोठी मांय से गवड़ा हेइया झटपट बिण्या गंवड़ा
हाय रंगीली गांकरिया

कोठी के अन्दर से गेहूँ निकालकर बीना और पीसने बैठी। पीसते-पीसते कमर दर्द करने लगी। पीसने के बाद सोलह बाटी बनाकर सेकी। बाटी सेकने के बाद सभी सोलह खा गई। बाटी खा-पीकर दरवाजे के बाहर बैठी तो इतना खा लिया था कि बैठने की नहीं बनी। इधर-उधर हो रही थी तो ससुरजी ने देख लिया। बहू को डाकनी लगी है, यह तो पागल हो गई है, मैंने ऐसी बाटी खाई।

ख्याली

बीरा म्हारा रे उबा रिजो बड़ तले
कुँ म्हारा दिलड़ा री बात, नाना गेंदा रे
बीरा म्हारा रे सासू मारे मोगरी ने
नणदल मारे बीर, नाना गेंदा रे
बेन्या म्हारी वो सासू तमारी ने पियर पोंचईदा

नणदल सासरिए री बाट, नाना गेंदा रे
बीरा म्हारा रे उबा रिजो बड़ तले
बीरा म्हारा रे उबा रिजो बड़ तले
कुँ म्हारा दिलड़ा री बात, नाना गेंदा रे
बीरा म्हारा रे जेठानी मारे मोगरी
नणदल मारे बीर, नाना गेंदा रे
बेन्या म्हारी ओ जेठाणी तमारी ने पीयर पोंचावा
नणदल सासरिए जाय, नाना गेंदा रे

रात में महिलाएँ, लड़कियाँ खेलने जाती थीं, उसको हलूर गाना (हलूर देती थी) कहते हैं। चार महिलाएँ इधर से और चार लड़कियाँ उधर से आमने-सामने गाती हैं।

मेरे भाई! वट वृक्ष के नीचे खड़े रहना, वहाँ मैं अपने दिल की बात तुम्हें बताऊँगी। मेरे भाई! सासू मुझे बहुत दु:ख देती है, ननद भी खार करती है। मेरे भाई! ससुराल में मुझे बहुत दु:ख है, इसलिये मन की बात तुम्हें बता रही हूँ।

गंगा विवाह

गंगाजी री बांटे बसे रे सोनीड़ो
अच्छा-अच्छा गेणला मोलावां भोला संगवी
उठो राधा रुखमा ने पुजो पथवारी
पूजो पथवारी ने करो एकासणा
दूणो-दूणो धरम बड़ावो भोला संगवी
उठो राधा रुखमा ने पुजो पथवारी
जमनाजी री बाटे बसेरे गन्दिड़ो
अच्छा-अच्छा कंकूड़ो मोलाड़ो भोला संगवी
उठो राधा रुखमा ने पुजो पथवारी
गंगाजी री बाटे बसे रे मालीड़ो
तो अच्छा-अच्छा गजरा मोलाड़ो भोला संगवी
उठो राधा रुखमा ने पुजो पथवारी
गंगाजी री बाटे बसे रे बजाजी
तो अच्छा-अच्छा नारेला मोलाड़ो भोला संगवी
उठो राधा रुखमा ने पुजो पथवारी

जब घर के लोग गंगाजी तीर्थ जाते हैं तो वहाँ से गंगा माता का जल भरकर लाते हैं, घर में पूजा कर रखते हैं। जब उनके घर में शादी होती है तो गंगा माता का भी दूल्हा-दुल्हन के साथ

विवाह किया जाता है। गंगा माता की पूरी शादी की रस्म की जाती है। गंगा माता को बेटी के साथ विदा कर दिया जाता है। गंगा माता के तब गीत गाते हैं।

गंगाजी के रास्ते सोनी रहता है। पिया! अच्छे-अच्छे गहने बनवाओ, राधा-रुकमा उठो, पथवारी की पूजा करो, अपना धर्म बढ़ाओ।

गंगा विवाह

कोण राय का नांदिया हो संगवी, काकी कुल बउ का पूत
गंगाजी को संग चाल्यो
बाबा जो नन्द का नांदिया हो संगवी, माता जसोदा का पूत
गंगाजी को संग चाल्यो
डेरो तो दिजो हरिया बाग में रे संगवी, तंबूड़ा तणाव तलाव
गंगाजी को संग चाल्यो
गांठ्या तो गऊ का जिमणा हो संगवी, सिदड़ा केरो घीय
गंगाजी को संग चाल्यो
बेलु तो रेत का चालना हो संगवी, घणी रे कठन की बाट
गंगाजी को संग चाल्यो
कोण राय का नांदिया हो संगवी, का की कुल बउ का पूत
गंगाजी को संग चाल्यो
दसरथ जी का नांदिया हो संगवी, माता कोसल्या का पूत
गंगाजी को संग चाल्यो
डेरा तो दिजो हरिया बाग में रे संगवी, तंबूड़ा तणाव तलाव
गंगाजी को संग चाल्यो
गांठ्या तो गंऊ का जीमणा हो संगवी, सीदड़ा केरो घीय
गंगाजी को संग चाल्यो
बालु तो रेत का चालणा हो संगवी, घणी रे कठन की बाट
गंगाजी को संग चाल्यो

शादी में गंगा माता का विवाह किया जाता है, इसे उद्यापन भी कहा जाता है। गंगा माता को बेटी बनाकर लाते हैं और उसका विवाह बेटी के ब्याह की तरह ही किया जाता है।

आप कौन साहब के बेटे हो और कौन सी माँ के लाड़ले बेटे हो? बाबा नन्दजी का बेटा और यशोदा माँ का लाड़ला हूँ। पिया! हरे-हरे बगीचा में तम्बू लगवा, गंगाजी चलो। गाँठिये गेहूँ के बने हैं वही खाना मिलेगा और बालू रेत में चलना पड़ेगा, गंगाजी का चलना बहुत ही कठिन राह है।

गंगा विवाह

नानो सो आम्बो मेली गया रे संगवी
यो आंबो हुवो केरी जोग, भोला संगवी
यो बन बिणु रे अकेली

आऊं तो अकेली राम जाऊं तो अकेली
मीली गयो गंगाजी रो सांत भोला संगवी
यो बन बिणु रे अकेली

नानो सी तुलसा मेली गया रे संगवी
या तुलसा हुई विवा जोग, भोला संगवी
यो बन बिणु रे अकेली
आऊं तो अकेली ....

नानो सो कुंवर मेली गया रे संगवी
यो कुंवर हुवो विवा जोग, भोला संगवी
यो बन बिणु रे अकेली

आऊं तो अकेली ....

शादी में गंगा माताजी का विवाह विधि के अनुसार उद्यापन किया जाता है, तब यह गीत गाते हैं।

छोटा सा आम का पौधा लगाकर गये थे। अब वह पेड़ फल लगने लायक हो गया है, और मुझे गंगा माता का साथ मिल गया है। अब मुझे किसी की परवाह नहीं, अकेली आती हूँ। अकेली जाती हूँ, गंगाजी मेरे साथ हैं।

गंगा विवाह

भागीरथ भई पूछे सुणो गंगा बेनोली
बाई थारे कायकेरां न्हायण होय
गंगा माता री ओड़नी फुलां भरी
बीरा म्हारा दई दूद केरा न्हायण होय
गंगा मातारी गंगा।
भागीरथ भई पूछे सुणो गंगा बेनोली
बाई थारे कायकेरां तिलक होय
गंगा माता री ....
बीरा म्हारे चन्दन रो तिलक होय

गंगा माता री गंगा.........
भागीरथ भई पूछे सुणो गंगा बेनोली
बाई थारे कायकेर भोजन होय
गगां माता री ....
बीरा म्हारा मिसरी का भोजन होय
गंगा माता री, ...

शादी में गंगा माता की रसोई अलग दी जाती है, तब यह गीत गाते हैं।

भागीरथ भाई अपनी गंगा बहन से पूछते हैं- बहन! तेरे यहाँ किस चीज के स्नान का नहान होता है ? लोग क्या-क्या तुम्हें चढ़ाते हैं ? तुम्हारी चुन्नी हमेशा फूलों से भरी रहती है। बहन कहती है- हे मेरे भाई! यहाँ लोग मुझे दही-दूध से नहलाते हैं, चन्दन का तिलक लगाते हैं और मिश्री का भोजन करवाते हैं, इसलिये मेरी ओढ़नी हमेशा फूलों से (खुशी) भरी रहती है।

गंगा आरती

बउवड़ वो तू गरब मती करजे दंई दूद लइने सवेरा से आवजे
परोड़ा से आवजे हो गंगा माता की आरती कीजो
आरती कीजो चरणामत लीजो, हरी को नाम सदां उठ लीजो
नित उठ लीजो हो गंगा माता की आरती कीजो
मालण वो तू गरब मती करजे, फुलड़ा लईने सवेरा से आवजे
परोड़ा से आवजे ...... हो गंगा माता की आरती कीजो
बजाजण वो तू गरब मती करजे चुनड़ी लइने सवेरा से आवजे
परोड़ा से आवजे .... हो गंगा माता की आरती कीजो
कंठालण वो तू गरब मती करजे श्रीफल लइने सवेरा से आवजे
परोड़ा से आवजे .... हो गंगा माता की आरती कीजो
तंबोलण वो तू गरब मती करजे बीड़ला लइने सवेरा से आवजे
परोड़ा से आवजे .... हो गंगा माता की आरती कीजो
कुमारण वो तू गरब मती करजे..... गंगोड़्या लइने सवेरा से आवजे
परोड़ा से आवजे .... हो गंगा माता की आरती कीजो

गंगा माता का विवाह जब किया जाता है तब उसकी आरती भी की जाती है, तब यह गीत गाया जाता है।

बहू! तुम कभी गर्व और घमण्ड मत करना। दही, दूध, कूलर (आटा सूखा, गुड़, घी मिलाकर) बल बाकल (चना, गेहूँ गले हुये) घी-गुड़ की धूप, दिया, कूंकूं, अक्षत चढ़ाकर तुम पूजा करना। गंगा माता का चरणामृत लेना और आरती करना।

गंगा विवाह

सीस का चीरा गंगाजी में बकस्या तो पेंचा
धरम करी आया रे बाला, सांवलो रंग लाया
हात मांय रे संगवी तुलसा की माला तो राम
भजन करी आया रे बाला, सांवलो रंग लाया
काना का मोती गंगाजी मे बकस्या तो चुनी
धरम करी आया रे बाला, सांवलो रंग लाया
हात मांय रे ....
गला की कंठी गंगाजी में बकस्या तो माला
धरम करी आया रे बाला, सांवलो रंग लाया
हात मांय रे ....
अंग का जामा गंगाजी में बकस्या तो केसर
धरम करी आया रे बाला, सांवलो रंग लाया
हात मांय रे ....

गंगा माता से लोटी भरकर लाते हैं और उनका विवाह भी करते हैं। सोना, चाँदी, जेवर, गहने, रुपये, पैसे सब गंगाजी में धर्मार्थ दान कर दिया है और उधर से योगी बनकर पक्का रंग चढ़ाकर आये हैं। भजन, भाव और भक्ति में मन लगाकर आये हैं।

गंगा विवाह

तमरा सीस का चीरा संवारो भोला संगवी, गंगा का धोरे गुल क्यारी
या तो गुल क्यारी ने मइमा भारी, म्हारी जरनी, गंगा का धोरे गुल क्यारी
ई तो पाना आया ने फूलो मेलो, म्हारी जरनी ....
तमरा काना का मोती संवारो भोला संगवी, गंगा का धोरे गुल क्यारी
या तो गुल क्यारी ने मइमा भारी ....
तमरा कंठ की कंठी संवारो भोला संगवी, गंगा का धोरे गुल क्यारी
या तो गुल क्यारी ने मइमा भारी ....
तमरा हांता का कड़ा संवारो भोला संगवी, गंगा का धोरे गुल क्यारी
या तो गुल क्यारी ने मइमा भारी, म्हारी जरनी, गंगा का धोरे गुल क्यारी
ई तो पाना आया ने फूलां मेलो, म्हारी जरनी, गंगा का धोरे गुल क्यारी
तमरा अंग का जामा संवारो भोला संगवी, गंगा का धोरे गुल क्यारी
या तो गुल क्यारी ने मइमा भारी ....
तमरा पांव की मोजड़ी संवारो भोला संगवी, गंगा को धोरे गुल क्यारी
या तो गुल क्यारी ने मइमा भारी ....

विवाह के समय गंगा माता की शादी की जाती है, तब यह गीत गाये जाते हैं। मेरे पिया! सिर पर साफा बाँधो, हम गंगा स्नान करने चलेंगे। वहाँ इतना अच्छा बगीचा लगा है कि शोभा देखते नहीं बनती। गंगा की महिमा माँ के समान है, हम ज्यादा वक्त वहाँ नहीं लगायेंगे लेकिन आप तैयार होओ और गंगाजी चलो। हे गंगा माता! हम आपके दर्शन के लिये खाली हाथ आये थे। अब आप अपना निर्मल नीर हमें ले जाने की अनुमति दो ताकि हम खाली हाथ नहीं जायें। हे गंगा माता! हमें आशीर्वाद दो कि हमारा काम सफल हो।

गंगा विवाह

संगवण पूछे सुणो भोला संगवी, राय आंगण कुवलो खणाबो भोला संगवी
आवेगा तीरथ वासी ठंडो पाणी पीवेगा, इतरो धरम तमके होय भोला संगवी
घी बिना होम ने तल बिना तरपण, पूत बिना पिंड कैसे होय भोला संगवी
संगवण पूछे सुणो भोला संगवी, राय आंगण बगीचो लगावो भोला संगवी
आवेगा तीरथ वासी ठंडी ठंडी छायां बेठेगा, इतरो धरम तमके होय भोला संगवी
गुरू बिना गयान गंगा बिना तीरथ बेन्या बिना आरती नी होय भोला संगवी
संगवण पूछे सुणो भोला संगवी, राय आंगण मालीड़ा बेठावो भोला संगवी
आवेगा तीरथ वासी फूलड़ा मोलावेगा, इतरो धरम तमके होय भोला संगवी
तीरथ जाणो ने गंगा को न्हाणो, न्हाया बिना पूजा केसे होय भोला संगवी
संगवण पूछे सुणो भोला संगवी, राय आंगण कुमार्या बेठावो भोला संगवी
आवेगा सोरम का वासी गंगोड्या मोलावेगा, इतरो धरम तमके होय भोला संगवी
भाव बिना भजन भजन बिना भक्ति, भक्ति बिना मुक्ति केसे होय भोला संगवी
संगवण पूछे सुणो भोला संगवी, राय आंगण कंठाल्या बेठावो भोला संगवी
आवेगा तीरथवासी पुजायो मोलावेगा, इतरो धरम तमके होय भोला संगवी
संगवण पूछे सुणो भोला संगवी, राय आंगण तुलसा बोवाड़ो भोला संगवी
आवेगा तीरथवासी तुलसा परनावेगा, इतरो धरम तमके होय भोला संगवी
संगवी ने संगवण गंगाजल बांटे, इतरो धरम तमके होय भोला संगवी

गंगा माता का शादी में उद्यापन अधिकतर मालवा में किया जाता है। पूरे गाजे-बाजे के साथ गंगा की शादी की जाती है।

पत्नी-पति से कहती है- पिया! अपने आँगन में कुआँ खुदवाओ। तीर्थ यात्रा से लोग आयेंगे, तो ठंडा पानी पीयेंगे, हमको बहुत धर्म लगेगा। जिस तरह घी के बगैर हवन, तिल के बगैर तिरपिड़ी नहीं होती वैसे पुत्र के बगैर पिण्ड नहीं होता है। गुरू के बगैर ज्ञान नहीं मिलता, गंगा के बगैर तीर्थ नहीं होता और बहन के बगैर भाई की आरती नहीं होती। तीर्थ और गंगाजी के स्नान के बाद किसी और पूजा का कोई महत्त्व नहीं है। मन में भक्ति न हो तो भजन नहीं कर सकते, भजन नहीं करेंगे तो भक्ति नहीं मानी जाती। भक्ति के बगैर मुक्ति कैसे होयेगी?

विवाह (सातंग)

सोभाग राणा सातंग हो बैठा जो बीच में बैठा सुरजजी
सोभाग रेणा जो बीच में बेठा चन्दरमाजी सोभाग रेणा
जउ तल घी गोल होम दीया सोभाण रेवा धूवो गयो रे
आकास में सोभाग रेणा आकास रा नेवता यूं केवे
पुरबज यूं कहे सोभाग रेणा
पुरबज यूं कहे सोभाग रेणा खाजो ने पीजो वरसजो सोभाग रेणा
नीत की होजो रे थारे वरद सोभाग रेणा
सातंग बैठा सो जणा सोभाग रेणा
जो बीच में बैठा पूनम चन्द जी सोभाग रेणा
जउ तल घी गोल होम दीया सोभाग रेणा
धूवो गयो रे आकास में सोभाग रेणा
पुरबज यूं कह सोभाग रेणा सोभाग रेणा
खाजो ने पीजो बीलसजोरे सोभाग रेणा
नित की होजो थारे बरदड़ी रे सोभाग रेणा

सातंग बरत एक रस्म है, विवाह में जब तक सातंग बरत नहीं होते तब तक दूल्हा-दुल्हन की शादी नहीं होती।

मंडप बनने के बाद घर की बहू यह रस्म निभाती है। सातंग बरत में कुम्हार के यहाँ से मिट्टी के मटके लाते हैं, उन्हें एक मटकी में पानी भरकर पूजा के लिये सामने रखते हैं। चाँदी का कोई भी जेवर लेकर उस मटकी के ऊपर सात बार फिराया जाता है और पूजा की जाती है। यानी मटकी और चाँदी का जेवर दोनों का विवाह हो जाता है, उसे कहते हैं कि गोतीड़ा की शादी हो गई। यह सब अपने गोत्र की पूजा करने के लिये किया जाता है।

सातंग बरत (रस्म) की पूजा जब होती है तो यह मान्यता है कि जौ-तिल के हवन से पूर्वज के पास अपनी आस्था भेजी जाती है। आशीर्वाद स्वरूप सुखी एवं सम्पन्न रहने का पूर्वजों का आशीष प्राप्त होता है।

पूर्वज

सरग भवंती सांवरी एक सन्देसो लेती जाय
जाय बुड़ा गल्डा से युं किजो तम घर वरदड़ी होय
वरद करो रे विवा करो हमारा तो अवणा नी होय
काचा सुत्तर का बान्दया पालणा बन्दया सरग दुवार

ताला जड़्या हो बिजड़ सार का जड़ीया बजर किमाड़
सरग भवंती सांवरी एक सन्देसो लेती जाय
जाय-जाय रम्बा बाई से युं किजो तम घर वरदड़ी होय
सरग भवंती सांवरी एक सन्देसो लेती जाय
जाय बुड़ा गल्डा से युं किजो तम घर वरदड़ी होय

जब पूर्वज लोगों को याद किया जाता है तब सभी पूर्वजों का नाम याद करके यह गीत गाया जाता है।

उकल्डी पूजने के बाद परिवार के सब लोग मंडप के नीचे इकट्ठे होकर बैठते हैं। दूल्हा और उसकी माँ मंडप के नीचे एक चौक बनाकर एक खाने की खाली पत्तल या थाली रखते हैं। अपने पूर्वज के नाम लेकर पीले चावल उनको खिलाने हेतु चढ़ाते हैं।

स्वर्ग में रहने वाली व्यागसाली (एक जानवर) मेरा एक संदेशा लेकर जाना और हमारे पूर्वज लोगों को कहना कि तुम्हारे घर में शादी हो रही है, आप पधारो। व्यागसाली पूर्वज लोगों को यह संदेश देती है। पूर्वज लोग वापस जवाब देते हैं कि शादी हो या कुछ भी काम हो, हमारा आना नहीं होगा, क्योंकि यहाँ कच्चे सूत के पालने बँधे हैं। (मरने पर व्यक्ति को कच्चे सूत से बाँधकर ले जाया जाता है।) जिसे हम छोड़ नहीं पाते और लोहे के दरवाजे में पक्के ताले लगे हैं जिसे हम खोल नहीं पायेंगे (एक बार व्यक्ति मरने के बाद वापस नहीं आता है।)

तेल चढ़ाना

हुँ तमने पुंछु म्हारी तेलण राणी तेलण राणी
कायको तेल ने कायकी घाणी
अलस्या रो तेल ने लक्कड़ की घाणी लक्कड़ की घाणी
तेल चढ़ावो रामाजी की राणी
हुँ तमने पुंछु म्हारी तेलण राणी तेलण राणी
कायको तेल ने कायकी घाणी
अलस्या रो तेल ने लक्कड़ की घाणी लक्कड़ की घाणी
तेल चढ़ावे रामाजी की राणी

बारात आने की खबर मिलते ही दुल्हन को तेल चढ़ाकर, उतारकर और नहलाकर तैयार किया जाता है। तेल चढ़ाते वक्त यह गीत गाया जाता है।

तेली की दुल्हन से पूछा जाता है कि- तेलन रानी! किस चीज का तेल बनाया और कौन सी घानी से निकाला है ? तेलन रानी कहती है- अलसी का तेल है और लक्कड़ की घानी से निकाला है।

तेल चढ़ाना

हुँ तमने पुंछु म्हारी तेलण राणी, तेलण राणी
कायको तेल ने कायकी घाणी
अलस्या रो तेल ने लक्कड़ की घाणी, लक्कड़ की घाणी
तेल चड़ावे सुरज जी की राणी
हुँ तमने पुंछु म्हारी ....
अलस्या रो तेल ने लक्कड़ की घाणी, लक्कड़ की घाणी
तेल चड़ावे चन्दरमाजी की राणी
हुँ तमने पुंछु म्हारी ....
अलस्या रो तेल ने लक्कड़ की घाणी, लक्कड़ की घाणी
तेल चड़ावे रामाजी की राणी
हुँ तमने पुंछु म्हारी ....
अलस्या रो तेल ने लक्कड़ की घाणी, लक्कड़ की घाणी
तेल चड़ावे पिराजी की राणी
हुँ तमने पुंछू ....

दूल्हा-दुल्हन को जब तेल चढ़ाया जाता है तब यह गीत गाकर तेलन रानी से पूछा जाता है कि किस चीज का तेल है और कौन सी घानी से निकाला है ? तेलन रानी कहती है- अलसी का तेल है और लक्कड़ की घानी से यह तेल निकाला गया है। यह तेल दूल्हा-दुल्हन (दोनों में से एक) को सूरजजी और चन्द्रमाजी की रानी चढ़ा रही हैं।

तेल चढ़ाना

ई तो सिद्धूजी पूछे वालरीया
गोरी चुनड़ चीगट कां करीया
गोरा लाड़ा ने तेल चड़ावतिया
रायजादा ने तेल चड़ावतिया
ई तो प्रेमनाराण जी पूछे वालरीया
गोरी चुनड़ चीगट का करीया
रायचंद जादी ने तेल चड़ावतिया
म्हारी लाडली ने तेल चड़ावतिया

जब बारात दुल्हन के शहर में पहुँच जाती है। तब दुल्हन के यहाँ यह खबर जैसे ही मिलती है, दुल्हन को तेल चढ़ाते हैं। मीठा तेल, हाथ में सूवा और कागसी एक साथ लेकर दसों अँगुलियाँ तेल में डुबाकर सबसे पहले दुल्हन के पैरों पर फिर दोनों हाथ, दोनों घुटने, दोनों कंधे, सिर और मंडप के बीच में लटकते सुवे को तेल चढ़ाते हैं। यह क्रम पाँच बार पाँच सुहागिन

महिलाएँ करती हैं। जिस तरह तेल चढ़ाते हैं वही क्रम तेल को उतारने का चलता है। चढ़ाना-उतारना दोनों गीतों के साथ किया जाता है।

पति-पत्नी से पूछता है कि- गोरी दुल्हन के कपड़े कहाँ रखे हैं ? अपनी लाड़ली बेटी को तेल चढ़ाना है।

तेल चढ़ाना

चतरभुज जी घर नार तम सुता के जागो
लाड़ा ने तेल चड़ाव के चम्पा पांखड़ी रे
सरीरे सोना की घड़ावो के
कुंवरजी घर नार तम सूता के जागो
लाड़ी ने तेल चड़ावो के चम्पा पांखड़ी रे
सरी रे सोना की घड़ाव

घर की महिलाएँ पति का नाम लेकर उसकी पत्नी से कहती हैं- तुम जाग रही हो कि सो रही हो। दूल्हे को तेल चढ़ाना है, चम्पा का तेल लाना और सोने की सुवा से दूल्हे को तेल चढ़ायेंगे।

नहलाने का

तु तो लाख ले रे लाड़ा लखवतों होवजे
तु तो चणा ले रे लाड़ा चणावतों होवजे
तु तो धणो ले रे लाड़ा धनवतों होवजे
तु तो रुप्या ले रे लाड़ा रुपवतों होवजे

मंडप में जब दूल्हे को या दुल्हन को नहलाया जाता है तब पाँच महिलाएँ एक साथ दूल्हे के ऊपर चादर तान कर पाँच कुल्हड़ दूल्हे के ऊपर लेती हैं और बच्चे की माँ, दूल्हे के ऊपर अपने दूध की सेड़ (धार) डालती है, तब यह गीत गाया जाता है।

दूल्हा! तू लाख (चूड़े की लाख) ले-ले, लखपति होयेगा। तू चने ले-ले, तू चने का व्यापारी होयेगा। तू धनिया ले-ले, तू धनवान होयेगा। तू रुपया (सिक्का) ले-ले, तू सुन्दर होयेगा और नहा ले, तू अच्छा बन जाएगा।

नहाने का

गाज्यो ने गड़ल्यो वो मेरी मई
मेवलो नी बरस्यो वो मेवलो नी बरस्यो
आंगण कीचड़ मेरी मई, क्यो मच्यो

आज सिद्धूजी की दिनड़ी न्हावा ने बैठी
हो न्हावा ने बैठी, हो आंगण कीचड़
मेरी मई क्यों मच्यो ....
आज दादोजी री लाड़ली न्हावा ने बैठी
हो न्हावा ने बैठी, हो आंगण कीचड़
मेरी मई क्यो मच्यो ....
गाज्यो ने गड़ल्यो वो मेरी मई
मेवलो नी बरस्यो वो मेवलो नी बरस्यो
आंगण कीचड़ मेरी मई क्यों मच्यो
आज मामोसा री भानेज न्हावा ने बैठी
हो न्हावा ने बैठी, हो आंगण कीचड़
मेरी मई क्यों मच्यो ....

लड़की या लड़के को हल्दी लगाने के बाद नहाने बैठाया जाता है, उस समय यह गीत गाया जाता है। न बादल गरजे हैं, न बादल पानी भरकर लाये हैं, फिर आँगन में कीचड़ कैसे हो गया है? आज दादाजी की बेटी नहाने बैठी है। आज भाई की बहन नहाने बैठी है, इसलिए आँगन में कीचड़ हुआ है।

बारात

तमारा सासरिया से पांगा आई हो राज
म्हारी सांकली को तोड़ो, म्हारी बिन्दि को मकोड़ो
म्हारी डलीयल नथ का मोती
तम पर वारी जाऊँ हो
चतर बना कंई हट लागी हो राज
तमारा सासरिया से मूरकी आई हो राज
म्हारी सांकली को तोड़ो ....
तमारा सासरिया से जामा आया हो राज
म्हारी सांकली को तोड़ो ....
तमारा सासरिया से मोजड़ी आई हो राज
म्हारी सांकली को तोड़ो ....

दूल्हे को बारात जाने हेतु तैयार किया जाता है, तब यह गीत गाते हैं। बना! तुम्हारी ससुराल से साफा आया, मूरकी आई, जामा (कपड़े) आये, मोजे आये हैं। मैं तुम पर वारी-वारी जाऊँ। मेरे बना और अब तुम क्यों अड़े हो, तुमको और क्या चाहिये? सब कुछ मिला है, ज्यादा होशियार मत बनो और अपनी हठ छोड़ दो।

दूल्हे की आरती

म्हारा लाड़लड़ीरा उबा दुख पाय
तू करवो बेन्या आरती
तू करवो क्कांसी आरती
थारी आरतड़ी में रुप्या मेंलू पांच
अंधेलो मेंलू डेड़ सौ
थारी आरतड़ी में ढोली केरी नेग
नावीड़ारो नेग तू करवो बेन्या आरती
थारी आरतड़ी में कुम्यारो नेग
बेन्या केरो नेग, तू करवो बेन्या आरती

जब महिलाएँ बनोला निकालती हैं और दरवाजे पर दूल्हे को खड़ा करके बहन दरवाजा रोक लेती है, आरती गाती है और नेंग माँगती है तब यह गीत गाते हैं।

मेरा लाड़ का पुत्र दरवाजे पर खड़ा है। बहन, क्काँसी उसकी आरती उतारो ताकि वह घर के अन्दर आ सके। तू आरती करेगी तो मैं आरती के बदले तुझे रुपयों का नेंग दूँगी। उस नेंग में से नाई का भी हिस्सा तुम्हें देना पड़ेगा। ढोली का भी हिस्सा तुम्हें देना पड़ेगा। बहन! तू जल्दी आरती कर दे, मेरा लाड़ला घर के अन्दर आ जाएगा।

सेहरा

में तो हातां में लाउं रे फुला छाबड़ी
थें तो लगना रा मिस आओ रईवर
फुलां भराउं रे थारो सेवरो
में तो हातां में लाउंरे फुला छाबड़ी
थें तो पड़ला रे मिस आओ रईवर
फुलां भराउं रे थारो सेवरो
में तो हातां में लाउंरे फुला छाबड़ी
थें तो गेणला रा मिस आओ रईवर
फुलां भराउं रे थारो सेवरो
थें तो सेवरा रे मिस आओ रईवर
फुलां भराउं रे थारो सेवरो
में तो हातां में लाउंरे फुला छाबड़ी
थें तो चाबुक रा मिस आओ रईवर
फुलां भराउं रे थारो सेवरो

थें तो चुड़ला रे मिस बिड़लारे आओ रईवर
फुलां भराउं रे थारो सेवरो
में तो हातां में लाउंरे फुला छाबड़ी
थें तो जोड़ीरा मिस आओ रईवर
फुलां भराउं रे थारो सेवरो

दूल्हे के सिर पर खोड़ये (खजूर) का सेहरा बनाया जाता है, जब दूल्हा सेहरा पहनता है तब यह गीत गाया जाता है।

दूल्हे के पिताजी सेहरे वाले को बुलाने जाते हैं तो मालिन कहती है- दूल्हे राजा! तुम लगन लगाने के बहाने आओ। मैं तुम्हारा सेहरा लेकर आई हूँ, फूलों से छबड़ी भर कर लाई हूँ। तुम आओ, मैं तुम्हें सेहरा पहनाऊँगी। मेरा माली नहीं आने देगा, लेकिन मैं फिर भी तुम्हारा सेहरा बनाकर लाऊँगी।

मामेरा

म्हारे पछवाड़े बीरा लौंगा सड़क
म्हारा बीराजी रा छकड़ा जाय
थारा देस में बेन्या चारो नई वो
म्हारा बलद्या भूका जाय ....
सड़क-सड़क वीरा गंजी लगई दूं
थारा बलद्या धाप्या जाय
सड़क-सड़क वीरा ठेल बणई दूं
थारा बलद्या धाप्या जाय
म्हारा पछवाड़े बीरा.........
थारा देस में बेन्या गउंवड़ा नई वो
म्हारा बालुड़ा भूका जाय
थारी भावज भूकी जाय
सड़क-सड़क बीरा हलवई पोचाइ दूं
म्हारा भाणेज जीमता जाय
म्हारी भावज जीमती जाय
तम सब धाप्या जा
म्हारा पछवाड़े बीरा ....
सड़क-सड़क बीरा कुवला खणई दूं
थारा बालुड़ा पाणी पीता जाय
सड़क बणई दूं मामेरा उबाण्या नी जाय

बहन–भाई का रास्ता देख रही है कि कब मेरा भाई मेरे लिये मामेरा लेकर आयेगा। भाई बहन से शिकायत करता है।

भाई! मेरे घर के पिछवाड़े एक जैसी सड़क है। भाई! तुम छकड़ा लेकर आ जाओ। भाई कहता है– बहन। तेरे देश में चारा नहीं है, मेरे बैल भूखे रह जाते हैं। बहन कहती है– भाई! सड़क के किनारे–किनारे मैं चारे की गंजी लगवा दूँगी, तेरे बैल पूरा पेट भर खायेंगे। भाई कहता है– बहन! तेरे देश में गेहूँ भी नहीं हैं, मेरे बच्चे और तेरी भाभी भूखी रहती हैं। बहन कहती है– भाई, हर तरफ मैं हलवाई पहुँचा दूँगी, तेरे बच्चे और मेरी भाभी भर पेट खाकर जायेंगे। भाई! सड़क किनारे कुएँ भी खुदवा दूँगी, तेरे बच्चे और मेरी भाभी भी प्यासी नहीं रहेंगी।

मामेरा

खांक मांय बेवड़ो खांदे रलकती नेज
जीजा बई पाणी निसर्या वो
बेवड़ो मेल्यो सखरीया री पाल तो
चुमली मेंली चम्पा डाल पे
जोवां–जोवां बीराजी री बाट
तो माड़ी रो जायो नई आयो वो
आया–आया सासूजी रा बीर
माड़ी रो जायो नई आयो वो
आया–आया जेठाणी रा बीर
म्हारो माड़ी जायो नई आयो वो
खांक मांय बेवड़ो, खांदे रलकती नेज
जीजा बई पाणी निसर्या वो
आया–आया सोकड़िया रा बीर
म्हारो माड़ी जायो नई आयो वो
आवी–आवी सोकड़िया री भावज
म्हारी भावज नई आवी वो

बहन–भाई का रास्ता देख रही है। सबके भाई आ गये, लेकिन उसका भाई नहीं आया तो बहन परेशान होकर पानी भरने चल दी और रो–रो कर यह गीत गाती है।

बगल में घड़ा, कन्धे पर फिसलती हुई रस्सी लेकर बहन–भाई की राह देख–देख कर पानी भरने चल दी। घड़ा पनघट की पाली पर और चूमली (घड़ा रखने के लिये कपड़े की गोल आकृति) चम्पा की डाली पर टाँग दी और बैठ गई। भाई की राह देखने लगी। सोचने लगी कि मेरी सास के भाई आ गये हैं, जेठानी के भाई आ गये हैं, सौतन का भाई आ गया। सौतन की

भाभी आ गई है, लेकिन मेरी माँ का जाया मेरा भाई अभी तक क्यों नहीं आया? इस तरह निराश होकर भाई की राह देखती है।

मामेरा

गाड़ी तो रलकी रेत मे रे बीरा, उड़ रई गगना घेस
चलो म्हारा धोरी उतावला रे, म्हारी बेन्या बई जोवे बाट
धोरी का चलक्या सींगड़ा रे, म्हारा बीराजी की पचरंग पाग
भावज को चलक्यो चूड़ला रे, म्हारा भतीजा को झगल्यो झूल
गाड़ी तो रलकी रेत मे रे ....
काका ने बाबा म्हारे अंत घणा रे, म्हारा गोयरे होता जाय
माड़ी को जायो बीरो एक घणो रे, म्हारी बरद उजाली जाय
गाड़ी तो रलकी रेत में रे ....
मामा ने मासी म्हारे अंत घणा रे, म्हारा गोयरे होता जाय
माड़ी को जायो बीरो एक घणा रे, म्हारी बरद उजाली जाय
गाड़ी तो रलकी रेत में रे ....

बहन भाई का रास्ता देख रही है। कहीं दूर गाड़ी दिखाई दे रही है, धूल उड़ रही है जरूर मेरा भाई मामेरा लेकर आ रहा है। दूर कहीं धूल उड़ती हुई दिख रही है। भाई की गाड़ी आती हुई दिख रही है। बैल से भाई कहता है– जल्दी–जल्दी चलो, मेरी बहन मेरी राह देख रही होगी।

बैल के सींग चमक रहे हैं और मेरे भाई की पगड़ी दिख रही है। भाभी का चूड़ा चमक रहा है और मेरे भतीजे का झबला दिख रहा है। बहन कहती है– भाई। मेरे काका! बाबा के भाई बहुत हैं जो गाँव किनारे से निकल जाते हैं। माँ का जाया एक भाई बहुत है जो मुझे साड़ी पहनाता है तो मेरी शादी सफल हो जाती है। भाई! मेरे यहाँ शादी हो तो तुम जल्दी आना।

मामेरा

माथा ने भम्मर घड़ावो जी पिया
टीलड़ी जड़ावो, म्हारा बीराजी
छानी रईजा, चुप्पी रईजा बोले मती नार
थारा वो बीराजी के जाण्या था
जाण्या था पेचाण्या था, परण्या जद का जाण्या था
ताल बजावे ने भजन करें
नरसी मायरो कायको भरें
लो नी बेन्या हरिजी को नाम
मायरो भरेगा म्हारो सिरी भगवान

गला ने हंसज घड़ावो जी पिया
कुंदण जड़ावो, म्हारा बीराजी
छानी रईजा, चुप्पी रईजा बोले मती नार
थारी वो बीराजी के जाण्या था
जाण्या था पेचाण्या था, परण्या जद का जाण्या था

पत्नि-पति से कहती है- मेरा भाई मेरे लिये रत्नों जड़ा टीका लायेगा, माहेरा भर लायेगा। पति कहता है- बावली! तुम्हारे भाई को मैं पहले से ही पहचानता हूँ, कुछ नहीं लायेंगे, भजन करते आयेंगे।

पिया! मेरे सिर के लिये भम्मर बनवाओ, उसमें रत्नों की बिन्दी जड़ाओ। पिया! गले के लिये हंसज बनवाओ, उसमें कुंदन जड़वाओ, मैं पहनूँगी। मेरा भाई मामेरा लेकर आयेगा। पति कहता है- तू कुछ भी मत बोल, मैं तेरे भाई को अच्छी तरह पहचानता हूँ, वह हाथ में तम्बूरा लेकर भजन करता फिरता है। नरसी जी बहन नानीबाई से कहते हैं- बहन! प्रभु का नाम लो, श्री भगवान तुम्हारे यहाँ मामेरा लेकर आयेंगे।

मामेरा

कांको बीरो आयो, बई म्हारा दादा बी आया
माड़ीरो जायो वो बीरो म्हारो नई आया
एक तम क्यों नी आया म्हारा माड़ीरा जाया
तम बीना सुनी वो लागे बरदड़ी
एक बरद उजालो वो बीर
म्हारो मांडवो उजालो ओर
उजालो सायर बेन के
कांको बीरो आयो, बई म्हारा मामा बी आया
माड़ीरो जायो वो बीरो म्हारो नई आया
एक तम क्यों नी आया म्हारा माड़ीरा जाया
तम बीन सूनी वो लागे बरदड़ी
एक बरद उजालो ....

दुल्हन की माँ भाई का रास्ता देख रही थी कि सबके भाई आ गये हैं, मेरा भाई अभी तक क्यों नहीं आया? भाई को याद कर कहती है- भाई! तुम्हारे बगैर मेरा माहेरा मंडप सूना है।

किसका भाई आया है? दादाजी पिताजी भी आये हैं लेकिन मेरा भाई नहीं आया। भाई! तुम क्यों नहीं आये, तुम्हारे बगैर शादी की बरद (एक रस्म) फीकी लग रही है। आप माहेरा मुझे पहनाओगे तो मेरा मान-सम्मान बढ़ेगा। मेरे मंडप की शोभा बढ़ेगी, इसलिए आप जल्दी आओ।

मामेरा

सुणो-सुणो हो सुसराजी हमारी बिनती
अच्छा बाग लगई दो अच्छा बगीचा लगई दो
हू तो जां उतारु माड़ो जायो बीर के
अच्छी रावटी तणाव अच्छा तम्बूड़ा तणई दो
हू तो जां उतारु माड़ो जायो बीर के
सुणो-सुणो हो जेठजी हमारी बिनती
अच्छा कुवला खणई दो अच्छी मेड़ी रलई दो
हू तो जां वो उतारु माड़ो जायो बीर के
सुणो-सुणो हो देवरजी हमारी बिनती
अच्छा ढोल्या ढलई दो अच्छी गादी लगई दो
हू तो जां बेठाडू माड़ो जायो बीर के
सुणो-सुणो सायब जी हमारी अरजी
अच्छा हलवई बेठई दो घेवर रलई दो
हू तो जां वो जिमाडू माड़ी जाया बीर के

जब माहेरा भरकर भाई आ जाता है, तो बहन स्वागत कर घर ले जाती है, तब यह गीत गाया जाता है।

बहू कहती है- ससुरजी! मेरी एक विनती है, अच्छे बाग-बगीचे लगवा दो, अच्छे तम्बू तनवा दो, अच्छे पलंग बिछवा दो, अच्छे हलवाई लगा दो ताकि मेरे भाई का स्वागत वहाँ हो, जहाँ मैं अपने भाई को अच्छे से खाना खिला सकूँ।

बान

बरसो म्हारी काली बादली बरसो सवाई रे
बरसो सिद्धजी रा प्रेम बरसो सवाया रे
बरसो छिताबा का मांगीलाल बरसो सवाया रे
खोलो फेंटा रो पल्लो मेंलो रुपययो रे
थाली में ठमको बाजो हईड़ो सिलाणो रे
आटो साटो ने जिको ब्याज ने बाटो रे
बरसो म्हारी काली बादली बरसो सवाया रे

घर बाहर के लोग दूल्हे को कुछ न कुछ भेंट देते हैं, उसे बान कहा जाता है। जब दूल्हे को घोड़ी पर बैठाते हैं उसके पहले उसे उगलाया जाता है, उगलाने के समय घर परिवार तथा रिश्तेदारों को जो भी कुछ देना होता है, उसे बान कहा जाता है।

बरसो काली बादली बरसो। सवाई साफे का पल्ला खोलकर बिछाओ क्योंकि थाली में बान करने का ठुमका (आवाज) लगा है, तो आपके मन में खुशी की लहर दौड़ गई है। एक दूसरे के बदले हम दूल्हा-दुल्हन के घर वालों को कुछ नहीं दे रहे हैं, इनका ब्याज हमें प्यारा लगेगा।

विवाह (मांय माता)

उपर वाड़ा से जोसण झांके हो राज
देखो इना रइवर के पागा बिराजे हो राज
मोती बिराजे हो राज
हां वो कोदल का फूंदा चड़ो अणी घोड़ी
चड़ो अणी घोड़ी ने बागां मरोड़ी
चड़ो अणी घोड़ी
अणी सेर्या से बजाजण झांके हो राज
देखो इना रइवर के मुरकी बिराजे हो राज
झुमका बिराजे हो राज
हां वो कोदल का फूंदा चड़ो अणी घोड़ी
चड़ो अणी घोड़ी ने बागां मरोड़ी
वड़ो अणी घोड़ी
अणी बागां से मालण झांके हो राज
देखो इना रायजादा के सेरा बिराजे हो राज
मोड़ बिराजे हो राज
हां वो कोदल का फूंदा...........

जब मांय माता के आगे बैठाकर दूल्हे को बारात के लिये तैयार किया जाता है, तब यह गीत गाया जाता है। जोशीजी की पत्नी ऊपर से झाँक रही है। इस राजकुमार को पगड़ी पहनाओ, उस पर मोतियों की लड़ी लगाओ, सभी क्वाँसी (मेहमान) भी झाँक-झाँक कर देख रही हैं। इस दूल्हे को तैयार करो ताकि जल्दी यह दुल्हन को लेकर आयेगा। घोड़ी पर बैठकर जायेगा और तोरण मारकर दुल्हन को लेकर आयेगा।

घोड़ी चढ़ना

केसरिया केसरिया सब सिनगार्या
लाड़ला तम चड़ो अणी घोड़ी ने बाग मरोड़ी
बनाजी री जान दादाजी सिदार्या
दुल्हाजी री जान काकोसा सिदार्या

लाड़ला तम चड़ो अणी घोड़ी
चड़ो अणी घोड़ी ने बाग मरोड़ी
केसरिया-केसरिया सब सिनगार्या
लाड़ला तम चड़ो अणी ....
चड़ो अणी घोड़ी ने बाग मरोड़ी
लाड़ला तम चड़ो अणी ....
केसरिया-केसरिया सब सिनगार्या
बनाजी री जान मामाजी सिदार्या
लाड़ला तम चड़ो अणी ....
चड़ो अणी घोड़ी ने बाग मरोड़ी
लाड़ला तम चड़ो अणी ....

दूल्हे का केशरिया श्रृँगार किया गया है जिसमें वह दूल्हा सुन्दर दिखाई दे रहा है। दूल्हा, पिताजी की जान है। काकाजी की जान है। दूल्हा, तुम तैयार हो गये हो, चढ़ो इस घोड़ी पर और ससुराल जाकर अपनी दुल्हन को ब्याह कर ले आओ। मेरे लाड़ले! तुम इस घोड़ी पर चढ़ो।

आशीष (बना)

बना तम उबा रिजो बड़ तले रे
माता बई दे तमने सिस
बना तम उबा रिजो बड़ तले रे
काकी बई दे तमने सिस
बना तम खाजो पिजो बलसजो रे
जीवाजो करोड़ बरस
बना तम उबा रिजो बड़ तले रे
बेन्या बई दे तमने सिस
बना तम उबा रिजो बड़ तले रे
भुवाजी दे तमने सिस
बना तम खाजो पिजो बलसजो रे
जीवाजो करोड़ बरस
बना तम उबा रिजो बड़ तले रे
मामाजी दे तमने सिस
बना तम खाजो पिजो बलसजो रे
जीवाजो करोड़ बरस

बारात जब दूल्हे के घर से विदा हो जाती है तब माँ की ओर से आशीर्वाद के रूप में गाँव

के किनारे पहुँचने पर यह आशीष गीत गाया जाता है।

महिलाएँ गाती हैं- बना! तुम वटवृक्ष के नीचे खड़े रहना, माँ तुम्हें आशीर्वाद देगी। माँ आशीर्वाद देती है कि बेटा! तुम अच्छा खाना, अच्छा पहनना, अच्छे से रहना और तुम्हारी उम्र करोड़ों बरस की हो, यही मेरा आशीर्वाद है। इसी तरह प्रत्येक सम्बन्धी द्वारा आशीष दिया जाता है।

विवाह (माँ का नेग)

नव मईना रे बेटा गरब में राख्यो
नव मईना रे नाना गरब में राख्यो
जिनको नेग चुकाड़जो रे बेटा
तम सारू वो माता बई नानी लाड़ी वो लावां
तम सारू वो माता कूकी लाड़ी वो लावां
नम-नम लागे तमारा पांय
छः मईना रे बेटा दुदड़ा पिवाड़या
जिनको नेग चुकाड़जो रे बेटा
तम सारू वो माता बई बऊ लाड़ी लावां
तम सारू वो माता कुल बऊ लावां
झुकी-झुकी लागे तमारा पांय

दूल्हा घोड़ी पर बैठकर जब दुल्हन लेने जाता है उस वक्त दूल्हे की माँ की ओर से यह गीत गाया जाता है। माँ कहती है- बेटा! नौ माह तक तुझे गर्भ में मैंने रखा है, उसका कर्जा चुकाकर जा। छः महीने तक बेटा मैंने तुझे दूध पिलाया है, मैं गीले में सोई पर तुझे सूखे में सुलाया है, उसका कर्जा चुकाकर जा। बेटा कहता है- माँ! मैं तुम्हारे लिये छोटी-सी सुन्दर सी बहू लेने जा रहा हूँ, वह तुम्हारी दिन-रात सेवा करेगी, तुम्हारे पैर दबायेगी, तुम्हारे झुक-झुक कर पैर छुएगी। तुम्हारे कुल का नाम आगे बढ़ायेगी।

विवाह (घोड़ी)

अबे में ओ जोसण थने वरजी थी
अणी सेर्या हाटड़लो मती मांड
रइवर घर आवेगा
रइवर घर आवेगा हाती की हलकार
घोड़ा की घमस्यान, रइवर घर आवेगा
अबे में ओ बजाजण थाने वरजी थी

अणी सेर्या हाटड़लो मती मांड
रइवर घर आवेगा
रइवर घर आवेगा हाती ही हलकार
घोड़ा की घमस्यान, रइवर घर आवेगा
अबे मै ओ तम्बोलण थाने वरजी थी
अणी सेर्या हाटड़लो मती मांड
रइवर घर आवेगा
रइवर घर आवेगा हाती की हलकार
घोड़ा की घमस्यान रइवर घर आवेगा

बारात दुल्हन के घर आती है तब महिलाएँ यह गीत गाती हैं। सड़क साफ होना चाहिये, हमारे दूल्हे राजा बारात लेकर आ रहे हैं।

जोशन बहन, बजाजन बहन, तम्बोलन बहन! मैंने पहले तुम्हें मना किया था कि इस सड़क पर हाट (बाजार) मत लगा, इधर से मेरे पिया घर आयेंगे। वह हाथी पर बैठकर, घोड़े पर बैठकर बारात लेकर आयेंगे।

हलवा (कसार)

बई नाना चोखा की रांदी खिचड़ी
बाई मोटा चोखा का ई भांत
अनधन लछमी अंत घणी वो बाई
मोतीड़ा रा भर्या रे भण्डार
बाई नाना मोतीड़ा की बणांवा गलसरी
वो बाई मोटा मोती का चंदर हार
नाना चोखा की रांदी ....
बाई नाना मोतीड़ा की बणांवा भम्मर
वो बाई मोटा मोतीड़ा का झूमर झाट
नाना चोखा की रांदी ....

बारात को ठहराने के बाद हलवा बनाया जाता है। जिसे कसार कहा जाता है। वह दूल्हे के लिये भिजवाया जाता है, उसमें घी की सात धार डालते हैं। सबसे पहले थाली में घी-शक्कर, उसके ऊपर चावल घी-शक्कर फिर ऊपर से हलवा इस तरह से सात परत बनती हैं।

छोटे-छोटे चावल की खिचड़ी बनाई और बड़े चावल का भात बनाया। अन्न-धन बहुत है, मोतियों के भण्डार भरे हैं। मोतियों की गले के लिये गलसरी (गले का जेवर), बड़े मोती का चन्द्रहार बनवाया है, लेकिन खिचड़ी जरूर बनवाऊँगी।

विवाह

ब्याइजी तो अनग्या छनग्या
नार मिली अदगेली म्हारा राज
कुंवारा क्यों नी रईग्या जी
कुंवारा रेता तो कुंवर केवाता
परण्या भांड केवाया म्हारा राज
कुंवारा क्यों नी रईग्या जी
बायर जइने मूंछ मरोड़े
घर में डलहल रोवे म्हारा राज
कुंवारा क्यों नी रईग्या जी
घर में बैठी डोर हिलावे
चलता यार बुलावे म्हारा राज
कुंवारा क्यों नी रईग्या जी

शादी ब्याह में समधियों के लिये गालियाँ जरूर गाई जाती हैं, उन्हीं में से एक गाली यह है। समधीजी तो इतराते हैं, उनकी पत्नी आधी पागल हैं, इससे अच्छा तो कुँआरे रह जाते। कुँआरे रहते तो कुँअर साहब कहलाते। शादी की तो अब भांड (गाली) कहलाओगे। बाहर जाकर तो मूँछें मरोड़ते हो, लोगों को डराते हो, घर के अन्दर आते हो तो पत्नी के डर से टपा-टप आँसू टपका कर रोते हो। तुम्हारी पत्नी घर में बैठी-बैठी झूला झूलती है और रास्ते चलते प्रेमी को बुलाती है।

गाली

कोरी-कोरी गागर सुपारी को बटको
मांग्या तुग्या जान्या लायो
कंई करे लटको
कोरी-कोरी गागर सुपारी को बटको
माँगी तुंगी घोड़ी लायो
कंई करे लटको
कोरी-कोरी गागर सुपारी को बटको
माँगी तुंगी गाड़ी लायो
कंई करे लटको
कोरी-कोरी गागर सुपारी को बटको
मांग्या तुग्या पड़लो लायो
कंई करे लटको

कोरी-कोरी गागर सुपारी को बटको
लंगड़ा लुला जान्या लायो
कंई करे लटको
कोरी-कोरी गागर सुपारी को बटको
माँग्या तुग्या गेंणला लायो
कंई करे लटको

जब बारात आती है उस वक्त बधाते समय मजाक के तौर पर यह गीत भी गाया जाता है। नये-नये समधी हैं लटके-झटके दिखाते हैं। समधी जी! ऐसा लटका-झटका मत दिखाओ। मँगते जैसे माँग-माँग कर बाराती लाये हो, घोड़ी भी माँग कर लाये हैं। बाराती लंगड़े-लूले लाये हो फिर तुम क्यों इतराते हो?

बारात

ई तो हवेली का कवेलू उड़ावेगा
होजी देस परायो रईवर आवेगा
लाड़ी का दादाजी का होस उड़ावेगा
होजी देस परायो रईवर आवेगा
ई तो काको सा रा होस उड़ावेगा
होजी देस परायो रईवर आवेगा
ई तो बीराजी का होस उड़ावेगा
होजी देस परायो रईवर आवेगा
लाड़ीरा मामाजी रा होस उड़ावेगा
होजी देस परायो रईवर आवेगा
ई तो हवेली का कवेलू उड़ावेगा
होजी देस परायो रईवर आवेगा

बारात जब दुल्हन के घर आती है, तब दुल्हन की ओर से महिलाएँ यह गीत गाती हैं। दूल्हा बारात लेकर आ रहा है, लाड़ी के पिताजी के और माता के होश उड़ा देगा। लाड़ी को विवाह करके अपने साथ लेकर चलता बनेगा, सब देखते रह जायेंगे। दूल्हे के लिये यह देश पराया है तो क्या हुआ। सबके होश उड़ा देगा।

पड़छन

लावो रे मई को बिलोवणो इना वरणे पड़छो रे
लावो रे हिरा रो झाटकनो इना वरणे पड़छो रे
लावो रे हिरा रो खाडन्यो इना वरणे पड़छो रे

लावो रे हल रो हाकणों इना वरणे पड़छो रे
लावो रे तालको इना वरणे पड़छो रे
लावो रे चाँदी को रुप्या इना वरणे पड़छो रे
लावो रे नाड़ो इना वरणे पड़छो रे
लावो रे कागसी इना वरणे पड़छो रे

दूल्हा जब तोरण मारने लड़की के घर जाता है, तोरण के बाद सास उसे स्वागत के तौर पर पड़छती है, उस समय यह गीत गाया जाता है।

छाछ करने की खाई से दामाद को सिर चढ़ाकर स्वागत करती है। सूपड़ा से भी दामाद का स्वागत सिर चढ़ाकर करती है। मूसली, हल, सूवा, चाँदी का रुपया, नाड़ा, कागसी इन सबसे दुल्हन की माँ दूल्हे का स्वागत करती है।

विवाह (कामण)

भर भादवड़ा री रेण इंदरी कामण करवा चाल्या हो राज
हूं कामण नई जाणू म्हारी बनड़ी, माता बई कामण गहर्या हो राज
हूं कामण नई जाणू म्हारी बनड़ी, काकी बई कामण गहर्या हो राज
माता बई कामण गहर्या म्हारी बनड़ी, दादाजी ने बसकर राख्याजी राज
काकी बई कामण गहर्या म्हारी बनड़ी, काकाजी ने बसकर राख्याजी राज
लोड़यो देवर पीसे ने पोवे, जेठ भरेगा पाणी हो राज
सासू नणदल टगर-मगर देखे, म्हारी बनड़ी घर घरियाणी को राज
भर भादवड़ा री रेण इंदरी कामण करवा चाल्या हो राज
हूं कामण नई जाणू म्हारी बनड़ी, भावज कामण गहर्या हो राज
हूं कामण नई जाणू म्हारी बनड़ी, काकी बई कामण गहर्या हो राज
भावज कामण गहर्या म्हारी बनड़ी, बीराजी ने बसकर राख्याजी राज
मामीजी कामण गहर्या म्हारी बनड़ी, मामाजी ने बसकर राख्याजी राज
लोड़यो देवर पीसे ने पोवे, जेठ भरेगा पाणी हो राज
सासू नणदल टगर-मगर देखे, म्हारी बनड़ी घर घरियाणी को राज
भर भादवड़ा री रेण इंदरी कामण करवा चाल्या हो रा
हूं कामण नई जाणू म्हारी बनड़ी, मासीजी कामण गहर्या हो राज
हूं कामण नई जाणू म्हारी बनड़ी, बेन्या बई कामण गहर्या हो राज
मासीजी कामण गहर्या म्हारी बनड़ी, मासाजी ने बसकर राख्याजी राज
बेन्या बई कामण गहर्या म्हारी बनड़ी, ज्याजी ने बसकर राख्याजी राज
सासू नणदल टगर-मगर देखे, म्हारी बनड़ी घर घरियाणी को राज

पड़छने के बाद वधू पक्ष की महिलाएँ कामण (विवाह की रस्म) गीत गाती हैं, लेकिन कामण गीत वही महिला गाती है जिसे कामण उतारना आता हो। अगर महिला ने दूल्हे को देखकर कामण चढ़ाने वाली गा दी और उस कामण को उतारने वाला गीत नहीं गाया तो दूल्हे के ऊपर कामण चढ़ जाता है और दूल्हा चक्कर खाकर गिर जाता है। यह कामण गीत उन्हीं गीतों में से एक है।

भादौं महीना की रात अँधेरी है, कामण क्या होता है, मैं नहीं जानती? मेरी माँ ने, काकी ने कामण के नाम से मेरे पिताजी को, मेरे काकाजी को, काकी ने सँभाल कर रखा है। कामण के बाद दूल्हा-दुल्हन के वश में हो जाता है।

सुहाग (कामण)

सूवाग मांगण चाली अपणा माता बई का आगे
सूवाग मांगण चाली अपणी काकी बई का आगे
माता बई के आगे ..... सदा सुवागण का आगे .... पीयर पूरी का आगे
मीठी बोली का आगे......... अरी मई
कामण घोर घोर लागे
माथा की बिन्दली हुई के लागे
नाक की नथड़ी हुई के लागे
दांता मिस्सी हुई के लागे
बई म्हारी हूँ कंई जाणू कामण घोर घोर लागे
सूवाग मांगण चाली अपणी भावज का द्वार
सूवाग मांगण चाली अपणी मामीजी का द्वार
मामीजी के आगे ..... सदा सुवागण का आगे .... पीयर पूरी का आगे
हूं कंइ जाणू
कामण घोर घोर लागे
गला को हंसज हुई ने लागे
हांता तो चुड़लो हुई ने लागे
दांता मिस्सी हुई के लागे
बई म्हारी हुं कंई जाणू कामण घोर घोर लागे
सूवाग मांगण चाली अपणी माता बई का आगे
सूवाग मांगण चाली अपणी काकी बई का आगे

दुल्हन कहती है कि मैं अपनी माँ, अपनी काकी, अपनी भाभी से अपने लिये सुहाग का आशीर्वाद माँगने चली हूँ। माँ, काकी, मुझे ऐसा आशीर्वाद देना कि मैं सदा सुहागन रहूँ। मेरे

हल्दी लग गई है, मैंने बिन्दी लगाई है, नाक में नथनी पहनी है (नथनी मालवा में कुँआरी लड़की नहीं पहनती)। मेरी शादी हो गई है, मुझे अब आशीर्वाद दो कि मुझे सुहागन का नाम देकर ही पुकारा जाय।

विवाह (कामण)

कोरी-कोरी कूलड़ी में कांचा दइं जमाया हो राज
आज म्हारा रइबर ने दादाजी घर नोत्या राज
आज म्हारा रइबर ने काकाजी घर नोत्या राज
दादाजी घर नोत्या, म्हारी माता नोत जिमाया हो राज
काकाजी घर नोत्या, म्हारी काकी नोत जिमाया हो राज
लावो रे कोई काचा सूत .... बांदो रे सासुजी का पूत
बांद्या-बुंद्या करे सलाम .... एक सलाम भई दुसरी सलाम
तीसरी सलाम थारा बाप का गुलाम ... छोड़दे दादाजी की प्यारी
अब तो थारा चाकर राज .... छोड़दे काकाजी की प्यारी
अब तो थारा चाकर राज ....
चाकर था तो पेंला केता ..... अब तो कामण किया हो राज
कोरी-कोरी कूलड़ी में कांचा दइं जमाया हो राज
आज म्हारा रइबर ने बीराजी घर नोत्या राज
आज म्हारा रइबर ने मामाजी घर नोत्या राज
बीराजी घर नोत्या, म्हारी भावज नोत जिमाया हो राज
मामाजी घर नोत्या, म्हारी मामीजी नोत जिमाया हो राज
लावो रे कोई काचो सूत ....
तीसरी सलाम थारा बाप का गुलाम .... छोड़दे बीराजी की प्यारी
अब तो थारा चाकर राज .... छोड़दे काकाजी की प्यारी
अब तो थारा चाकर राज ....
चाकर था तो पेंला केता ...... अब तो कामण किया हो राज

आज मेरे दूल्हे को मैंने अपने पिताजी के घर न्यौता दिया है। वे आ रहे हैं उनकी मेजवानी मैं करूँगी और उनके आने पर सारे परिवार, सारे जाति वालों की मेजवानी मेरे पिताजी करेंगे। दुल्हन कहती है- कच्चा सूत (शादी का बंधन) लाओ, मेरी सासूजी के बेटे को बाँध दो, बाँधने पर यह सलाम करेंगे। दूल्हा कहता है कि- मैं तो तुम्हारे साथ बँधन में बँध चुका हूँ तुम्हारा नौकर हूँ। मेरी प्रिय दुल्हन! माँ की प्यारी! अब कच्चे सूत के बँधन की कोई जरूरत नहीं है।

यह कामण गीत कामण उतारने वाला है। अगर यह गीत नहीं गाया जाता है तो चड़ी

कामण में दूल्हा मूर्च्छित हो जाता है। उतारने वाले कामण गीत की एक कड़ी भी कम नहीं होना चाहिये। गलत गाने पर भी दूल्हा मूर्च्छित हो जाता है। इस गीत में दूल्हा-दुल्हन से कहता है- छोड़ दे प्यारी! मैं तेरा गुलाम हूँ और तुझसे तीसरी सलाम करता हूँ तो चढ़ी हुई कामण तुरन्त उतर जाती है।

विवाह (हातीवाला)

नागर बेल पिपल पान पिपल पान
हाती वालो जोड़ सहेली
हुं केसे जोडू म्हारा दादाजी हो देखे
हाती वालो जोड़ सहेली
तमारा दादाजी हमारा सुसराजी गौरी हमारा सुसराजी
हाती वालो जोड़ सहेली
नागर बेल पिपल पान पिपल पान
हाती वालो जोड़ सहेली
हुं केसे जोडू म्हारा काकाजी हो देखे
बीराजी हो देख हाती वालो जोड़ सहेली
तमारा काकाजी हमारा सुसराजी गौरी हमारा सुसराजी
तमारा बीराजी हमारा सालाजी गौरी हमारा सालाजी
हाती वालो जोड़ सहेली
नागर बेल पिपल पान पिपल पान
हाती वालो जोड़ सहेली

दूल्हे को मांय माता के आगे बिठाया जाता है, वहाँ पंडित दूल्हा और दुल्हन की हथेलियों के बीच में पान सुपारी रखकर जोड़ता है जैसे दोनों हाथ मिला रहे हों। उस रस्म को हातीवाला जोड़ना कहा जाता है। दोनों के सीधे हाथों की हथेलियाँ जोड़ी जाती हैं। इस रस्म से जन्म-जन्म का बँधन बँध जाता है। फिर उन हथेलियों को मामा छुड़वाता है। मामा इस बात का गवाह हो जाता है कि यह बँधन में बँध गये हैं। मामा हातीवाला नेग दुल्हन को देकर गाय या सोने-चाँदी की कोई भी चीज़ कबूलता है, तब हातीवाला छूटता है।

महिलाएँ दुल्हन से कह रही हैं कि- नागर बेल के पान हैं और सुपारी है। तुम दूल्हे के हाथ में अपना हाथ दे दो। दुल्हन कहती है कि मेरी प्यारी सहेली मैं कैसे हाथ दे दूँ। सामने खड़े मेरे पिताजी! मेरी माताजी देख रही हैं तो दूल्हा कहता है- गोरी! पिताजी तुम्हारे ससुरजी हमारे, माताजी तुम्हारी सासुजी हमारी हैं, इनसे शर्म रखोगी तो कैसे काम चलेगा? मैं तो तुम्हें विवाह करा कर ही अपने घर ले जाऊँगा। तुम मेरी हथेली पर अपना हाथ रखो और यह रस्म निभाओ।

विवाह (फेरों का गीत)

पेलो जो फेरो फरे रे गरास्यां
माता बाई देगा तमने सीस ने
दुसरो जो फेरो फरे रे गरास्यां
काकी बाई देगा तमने सीस ने
तीसरो जो फेरो फरे रे गरास्यां
भावज बाई देगा तमने सीस ने
चौथो जो फेरो फरे रे गरास्यां
बेन्या बाई देगा तमने सीस ने
पांचमो जो फेरो फरे रे गरास्यां
मामी बाई देगा तमने सीस ने
छटमो जो फेरो फरे रे गरास्यां
भुवा बाई देगा तमने सीस ने
सातमो जो फेरो फरे रे गरास्यां
मासी बाई देगा तमने सीस ने

जब फेरे होते हैं तब एक कुँवारी लड़की (साली) बार्या मिट्टी का बर्तन लेकर दोनों के पीछे बैठती है, उसमें थोड़े नमक की डली या चिल्लर लेकर गड़गड़ाती रहती है। फेरों के वक्त महिलाएँ यह गीत गाती हैं।

दूल्हे राजा! दुल्हन के साथ पहला फेरा लगाओ माताजी तुम्हें आशीर्वाद देंगी। दूल्हे राजा दुल्हन के साथ दूसरा फेरा लगाओ। काकीजी तुम्हें आशीर्वाद देगी। मामीजी, भुआजी, बहन, मौसी भी तुम्हें आशीर्वाद देंगी। जब दूल्हा-दुल्हन के सात फेरे हो जाते हैं, तब माता-पिता को शांति मिलती है कि अब हमारी लड़की ब्याह गई है।

कन्यादान

दादाजी ने माता बाई हो वाँता हो लागा
अपणी सीता बई ने कंई-कंई देस्या
राय राणाजी री होड़ नी करस्यां
अपणी जोड़ीरो सगों जोइने देस्या
काकाजी ने काकी बई हो वाँता हों लागा
अपणी भतीजी ने कंई-कंई देस्या
राय राणाजी री होड़ नी करस्यां
अपणी जोड़ी रो सगों जोइने देस्या
बीराजी ने भावज बई हो वाँता हो लागा

अपनी बेन्या बई ने कंई-कंई देस्या
राय राणाजी री होंड़ नी करस्यां
अपणी जोड़ीरो सगो जोइने देस्या
मामाजी ने मामीबई हो वाँता हो लागा
अपणी भाणेज ने कंई-कंई देस्या
राय राणाजी री होड़ नी करस्यां
अपणी जोड़ीरो सगों जोइने देस्या

लड़की के कन्यादान के समय घर के लोग उसे उपहार देते हैं। इस वक्त हाथ में पानी लेकर उपहार को छोड़ा जाता हैं, इसे सिंचावणी भी कहा जाता है।

दुल्हन के माता-पिता बात करते हैं कि अपनी बेटी को आपने क्या-क्या देंगे? फिर निर्णय करते हैं कि जिस तरह अपने लोग गरीब हैं, उसी तरह अपने समधी भी गरीब देखकर हम रिश्ता करेंगे और उस घर में अपनी बेटी खुश रहेगी। किसी की देखा-देखी नहीं करेंगे। बड़े लोगों की होड़ नहीं करेंगे और हम अपने हैसियत के अनुसार ही कार्य करेंगे, जो बनेगा अपनी लड़की को जरूर देंगे।

दहेज गाली

घोड़ीले चड़ी ने डायजो दीजो हो दादाजी
गधड़े चड़ी ने डायजो झेलजो हो ब्याइजी
घोड़ीले चड़ी ने डायजो दीजो हो काकाजी
गधड़े चड़ी ने डायजो झेलजो हो ब्याइजी
घोड़ीले चड़ी ने डायजो दीजो हो बीराजी
गधड़े चड़ी ने डायजो झेलजो हो ब्याइजी
घोड़ीले चड़ी ने डायजो दीजो हो मामाजी
गधड़े चड़ी ने डायजो झेलजो हो ब्याइजी

जब लड़की वाले दहेज देते हैं और लड़के वाले सिर चढ़ाते हैं, उस वक्त महिलाएँ यह गाली गीत गाती हैं। घोड़े पर चढ़कर दायजा (दहेज) देना दुल्हन के पिताजी और गधे पर बैठकर दहेज लेना दूल्हे के पिताजी। जब लड़की का दहेज दूल्हे के पिताजी को देते हैं तब यह एक तरह की गाली गायी गाती है।

विदाई

कोठी पे पड़्या बई का ढेलड़ा
बई तो चेल्या परदेस
सम्पत होय तो दादाजी आवजो

नी तो रिजो तमरा देस
सम्पत थोड़ो बाई रण घणो
बाई ने लावा बड़ी बेग
सम्पत होय तो काकाजी आवजो
नी तो रिजो तमारा देस
सम्पत थोड़ो बाई रण घणो
बाई ने लावा बड़ी बेग
पाछें फिरी वो सीता देखजो
दादाजी उबा मांउव माय
कोठी पे पड़्या बई का ढेलड़ा
बई तो चल्या परदेस

जब दुल्हन को विदा किया जाता है, उस वक्त यह गीत गाया जाता है।

कोठी (गेहूँ भरने का पात्र) के ऊपर बहन के गुड़िया-गुड्डा रखे हैं, उन्हें छोड़कर बहन परदेस चल दी है। बहन कहती है- पिताजी! तुम्हारे पास धन दौलत हो तो मुझे लेने आना, नहीं तो आप अपने गाँव ही रहना। पिताजी कहते हैं- बेटी! धन-दौलत हमारे पास नहीं है लेकिन हमारा प्यार तुम्हारे प्रति कभी कम नहीं होगा, हम तुम्हें लेने जल्दी आयेंगे। विदाई वाली महिलाएँ कहती हैं- बेटी! तू जा रही है लेकिन पीछे मुड़कर देखती जा, तेरे पिता आँखों में आँसू भरकर मंडप के नीचे खड़े हैं और तुझे जाता हुआ देख रहे हैं।

विदाई

ओ सासू दुखड़लो मती दिजे वो
सासू दुखड़लो मती दिजे वो
वो सासू राय आँगण रो रमत्यो वो
सासू लडु दई ने लड़ाई वो
सासु पेड़ा दई पढ़ाई वो सासु
सासु दुखड़लो मती दिजे वो
वो सासु खाजा दई ने खेलई वो
सासु दुखड़लो मती दिजे वो
वो सासु पापड़ दई ने पोड़ाई वो
सासु दुखड़लो मती दिजो वो

जब लड़की को विदा किया जाता है तब यह गीत गाया जाता है, लड़की की सास को कहा जाता है कि इसे दुःख नहीं देना।

सासूजी! मेरी लड़की को दु:ख नहीं देना। यह मेरे आँगन की चिड़िया है, इसको पेड़ा (लालच) देकर मैं स्कूल भेजती थी, तब कहीं जाकर यह पढ़ी है। इसको खाजा दे-दे कर खिलाती थी, बहलाती थी, फुसलाती थी। सासू! तुम इसे दु:ख मत देना। मेरी लाड़-प्यार की पली बिटिया है जो तुम्हारे सुपुर्द की है।

विदाई

दउजी का लुट्या आम्बा आमली वो
माता बई की लुटी बेरण कुंख
बीराजी का लुट्या आम्बा आमली वो
भावज की लुटी नणदल लाख की
मामोसा की लुट्या आम्बा आमली वो
मामीसा री लुटी भाणेज बेन वो
काकोसा रा लुट्या आम्बा आमली वो
काकीसा री लुटी भतीजी लाड़
जिज्यासा रा लुट्या आम्बा आमली वो
बेन्या बई री लुटी बेनोली बेन

जब दुल्हन की दूल्हे के साथ विदाई की जाती है, तब यह गीत गाया जाता है।

पिताजी का तो सब कुछ लुट गया (लड़की की विदाई के बाद), माँ की कोख खाली हो गई है। भाई का भी सब कुछ लुट गया, उसकी बहन की विदाई के बाद। भाभी की ननद लाखों की, वह भी लुट गई। मामा का भी सब कुछ लुट गया। मामी की भानेज भी लुट गई है। तुम इसे लेकर जा रहे हो, सँभाल कर रखना।

विदाई

घड़ी एक घोड़िला थोबजो रे सायर बनड़ा
दादाजी से मिलवा दोनी हटीला बनड़ा
दादाजी से मिलकर कांई करो वो सायर बनड़ी
दोनी पावटड़े पाँव घरे चालां आपणा
घड़ी एक घोड़िला थोबजो रे सायर बनड़ा
काकाजी से मिलवा दोनी हटीला बनड़ा
काकाजी से मिलकर कांई करो वो सायर बनडी
दोनी पावटड़े पाँव घरे चालां आपणा
माता बई से मिलकर कांई करो वो सायर बनडी
दोनी पावटड़े पाँव घरे चालां आपणा

घड़ी एक घोड़िला थोबजो रे सायर बनड़ा
मामाजी से मिलवा दोनी हटीला बनड़ा

जब दुल्हन को विदा किया जाता है, तब दुल्हन की ओर से महिलाएँ यह गीत गाती हैं। इस गीत में सबकी आँखों में आँसू रहते हैं।

बना! एक मिनिट के लिए तुम अपना घोड़ा रोको, मुझे पिताजी से मिलने दो। बना कहता है– पिताजी से मिलकर अब क्या करोगी? जल्दी–जल्दी पैर बढ़ाओ हम दोनों अपने घर चलते हैं, अब हम यहाँ नहीं रुकेंगे।

विवाह (तंबोल)

थें म्हारे आवजो रजराजी राणी पामणा जी
थें म्हारे आवजो अणी बाट बैठो खाट
सूरज सामी पोल, मुखड़े दादरिया
तम्बोल पामणा जी
थें म्हारे आवजो हरसिद्धि माता पामणा जी
थें म्हारे आवजो अणी बाट बैठो खाट
सूरज सामी पोल, मुखड़े दादरिया
तम्बोल पामणा जी
थें म्हारे आवजो चौसट माता पामणा जी
थें म्हारे आवजो अणी बाट बैठो खाट
सूरज सामी पोल, मुखड़े दादरिया
तम्बोल पामणा जी
थें म्हारे आवजो चौबीस खम्बा माता पामणा जी
थें म्हारे आवजो अणी बाट बैठो खाट
सूरज सामी पोल, मुखड़े दादरिया
तम्बोल पामणा जी

चंवरी फेरों के बाद दुल्हन को जनवासा (जहाँ दूल्हे की बारात रुकती है उसे जनवासा कहते हैं।) दिया जाता है, वहाँ दुल्हन के धर्म के माँ–बाप बनाये जाते हैं और बताशे बाँटे जाते हैं, जिसे तम्बोल बाँटना कहा जाता है।

हे हरिसिद्धि माता, चौसण माता, चौबीस खम्बा माता! आप मेरे घर मेहमान बनकर आना। जहाँ सूर्य उगता है उसी तरफ मेरा घर है और उसी तरफ आप अपना मुख करना। बैठते वक्त मैं तुम्हारे गुणगान करूँगी, बताशे बँटवाऊँगी, आप मेरे घर जरूर आना।

स्वागत (विदाई)

चन्देसरो छोड़यो रे बनड़ा
मानपुरो बतायो म्हारा बनड़ा नई बोला
म्हारा मान गुमानी नई बोला
माता बई छोड़ाई रे बनड़ा
सासु बताई म्हारा बनड़ा नई बोला
नई बोला रेसम रा रेंजा नई बोला
मकदुल रा फुन्दा नई बोला
म्हारा मान गुमानी नई बोला........
उज्जण छोड़ाई रे बनड़ा
इन्दौर बताड़ी म्हारा बनड़ा नई बोला
नई बोला नई बोला रे म्हारा मान गुमानी
नई बोला......

जब दूल्हा–दुल्हन को लेकर अपने घर जाता है, तब दूल्हे के यहाँ की महिलाएँ यह गीत गाती हैं और ससुराल में दुल्हन का स्वागत करती हैं।

पिया! आपने मेरा मायका छुड़वा दिया है और आपका शहर बता दिया है। मेरे सम्मानित, घमंडी पिया! मैं तुमसे नहीं बोलूँगी। मेरी माँ छुड़वाई पिया। तुमने अपनी माँ से परिचय करवा दिया पिया! मैं इसलिये तुमसे बात नहीं करूँगी। मेरा मान–सम्मान अब तुम हो, मैं तुमसे नहीं बोलूँगी।

विवाह

थारा डोढलो दस गाठन रे लाड़ा
डोढलो नई छूट
थारी माता छिनाल ने बुलावो रे लाड़ी
डोढलो नई छूट
थारो डोढलो दस गाठन रे लाड़ा
डोढलो नई छूट
थारी बेज्या छिनाल ने बुलावो रे लाड़ी
डोढलो नई छूट
थारा नकट्या बाप के बुलावो रे लाड़ी
डोढलो नई छूट

जब लड़की ससुराल पहुँच जाती है, तब मंडप के नीचे दोनों के हाथों में बँधे कांकण

डोल्डे को (हाथों का धागा) दूल्हे को एक हाथ से छोड़ना पड़ता है और दुल्हन को दोनों हाथों से छोड़ना पड़ता है, तब यह गीत गाया जाता है।

तेरे हाथों में कांकण डोरा जो बँधा है उसमें दस गठान लगी हैं। दूल्हे! तेरी माँ चालबाज है जो इतनी सारी गठान बाँध दी हैं, ये लाड़ी से नहीं खुल रही हैं।

विवाह

रांयां को जीत्यो रे ढेड़्या की हार गई
रांयां को हार्यो रे ढेड़्या की जीत गई
रांयां को हार्यो रे टेगड़ा की जीत गई
रांयां को जीत्यां रे मिनक्यां की हार गई

यदि दूल्हे-दुल्हन के हाथ में शादी के समय कांकण डोरा नहीं बाँधा जाता तो शादी के बाद भी कुँआरा-कुँआरी मानते हैं। दुल्हन-दूल्हे का डोरा दोनों हाथों से छोड़ती है और एक दूसरे के ऊपर फेंक देते हैं, तब यह गीत गाया जाता है।

दूल्हे के पिता को पटेल की उपाधि देकर सम्बोधित करते हैं और दुल्हन के पिता को गाली देकर। पटेल का बेटा जीता है, ढेड्यां (दुल्हन के पिता) की बेटी की हार हुई।

विवाह

अणवट ऊपर घूगरी रे बना धीरे चलो
हड़्डा तो ऊपर चन्दर हार, लाड़ीजी ने घणी खमा
अणवट ऊपर घूगरी रे बना धीरे चलो
माथा ऊपर टिलड़ी रे बना, लाड़ीजी ने घणी खमा
अणवट ऊपर घूगरी रे बना धीरे चलो
गला ऊपर हांसली रे बना, लाड़ीजी ने घणी खमा
अणवट ऊपर घूगरी रे बना धीरे चलो
काना ऊपर झूमकी रे बना, लाड़ीजी ने घणी खमा

दुल्हन-दूल्हे के घर पहुँच जाती है, उनके हाथों के कांकण डोरा छोड़ने के बाद घर की महिलाएँ देवी-देवता के पैर छुआने सब मन्दिरों में ले जाती हैं।

दुल्हन-दूल्हे से कह रही है कि- मैंने पैरों में अणवट पहनी है उसमें घुँघरू हैं, तेज चलती हूँ तो मेरे अणवट के घुँघरू (पाँव में पहनने का जेवर) बजते हैं, तुम धीरे चलो। घर की महिलाएँ दुल्हन को धन्यवाद देती हैं कि शादी अच्छी तरह से निपट गई है इसलिये दुल्हन को धन्यवाद है।

परी का बधावा

हमारी लाड़ली बऊं ने मुट्ठी चोखा रांदया
जिमे जीमी गया सोई परवार
म्हारी बउवड़ वो तमने जुलम करी
हमारा सिद्धूजी उण्डा खाड़ा खोदिया
जिमे भरई गयो गंगा जमना नीर
म्हारा कुंवर हो तमने जुलम करी
हमारी जींजा बई ने चिमटी कंकु घोलियो
जिमे तिलक लगई दिया सोई परवार
म्हारी बेन्या वो तमने जुलम करी
हमारा प्रेमनारायण ने उण्डा खाड़ा खोदिया
जिमे भरई गयो क्षिप्रा मैंया रो नीर
म्हारा कुंवर हो तमने जुलम करी
हमारी लाड़ी बऊ ने मुट्ठी थुली रांदया
जिमे जीमी गयो सोई परवार
म्हारी लाड़ीबऊ वो तमने जुलमकरी

किसी भी शादी ब्याह या मंगल कार्य के समय अवसर विशेष के गीत के बाद बधावा जरूर गाते हैं। हमारी लाड़ी बहू ने एक मुट्ठी चावल बनाये थे, जिसमें पूरा परिवार भोजन कर गया। हमारी बहन ने एक चिमटी कूंकूं घोला था जिससे तिलक पूरे परिवार ने लगवा लिया। लाड़ी बहू ने भी गजब किया, बहन ने भी गजब कर डाला। हमारे सिद्धूजी ने एक गहरा गड्ढा खोदा था, उसमें इतना पानी निकला कि जैसे गंगा–जमुना का पानी इसमें भर गया हो। कुँवर तुमने भी गजब कर डाला।

परी का बधावा

रगड़ चंदण का प्रभु आंगणा लिप्या
मोतीयन चौक तो पुरावो वो
आज सकी राम को बंदावणो
इना चौक पे राम लछमन बैंठा
सोद्रा बेन आरती संजोवे वो
आज सकी राम को बंदावणो
आरती करां तो बीराजी केड़ लचकावे
तिलक करां तो दुखे आंगूठो

आज सकी राम को बंदावणो
आरती का दागां बेन्या रंग भर चूनड़ी
तिलक को दागां चंदर हार
आज सकी राम को बंदावणो
फाटन तो लागी बीरा चुनरी
चंदर हार गयो गुजरात
आज सकी राम को बंदावणो

गाय का गोबर मँगवाकर आँगन लिपवाया है और उसमें मोतियों जैसे चौक बनाया है। रामजी को धन्यवाद। इस चौक पर राम-लक्ष्मण बैठेंगे और सोहदरा बहन आरती उतारेंगी। बहन कहती है- भाई! अगर आरती मैं करूँगी तो मेरी कमर लचकेगी, दुखेगी और टीका निकालूँगी तो अँगूठा दुखेगा। भाई कहने लगा- बहन! आरती करोगी तो उसकी हम तुम्हें चुनरी लाकर देंगे। अगर टीका लगाओगी तो उसका चन्द्रहार बनवा कर दूँगा। बहन कहती है- भाई! चूनरी दोगे तो वह फट जायेगी, चन्द्रहार दोगे वह टूटकर बिखर जायेगा, बस आपका जो स्नेह है वह कम न हो।

जमाई

पानाजी आपका चीरा ने बईरा भंवर री जोड़ी
घणी खुलती लागे हो राज, छेल पानाजी
पानाजी आपरी पेंचा ने बईरा टीका री जोड़ी
घणी खलती लागे हो राज, छेल पानाजी
पानाजी आप तो गोरा ने बाई म्हारी संवलारा
संवलड़ी की सेज सीदारो राज, छेल पानाजी
पानाजी थे जाड़ा ने बाई म्हा दूबलारा
पातलड़ी री सेज सीदारो, छेल पानाजी
पानाजी राते आया परभाते चाल्या तो
सासरिया रो सुख सब लाजे हो राज
पानाजी मीठा बोलो तो बाई थापे जी राज
मानवारा मानी लीजो हो राज, छेल पानाजी
पानाजी आपरी कंठी ने बई री माला री जोड़ी
घणी खुलती हो राज, छेल पानाजी
पानाजी आपारा कड़ा ने बई रा गजरा की जोड़ी
घणी खुलती लागे हो राज, छेल पानाजी

जमाई जी ससुराल आते हैं, तब यह गीत गाया जाता है। जमाई जी! आप दोनों की जोड़ी बहुत ही अच्छी लगती है। जमाई जी! आप साँवले और हमारी बहिन गोरी है। जमाई जी! आप मोटे और हमारी बहिन दुबली है। जमाई जी! आप रात में आये और सुबह-सुबह चलते बने, थोड़ा रुककर जाओ। ससुराल का सुख सब तुम्हारे लिये है। आप मीठा बोलो तो हमारी बहिन बहुत खुश रहती है।

दामाद

जमई आया काकड़ वो बई के कांकड़ सूरज उगो वो
रुमाल काँ भूल्या
रुमाल ढूडन बाईस चाल्या वो अंगली में बलवट मेली वो
हतेली में दिवालो जोयो वो बाई की पतली कमर
लचकाणी वो बई की साँवली सुरत कुमलाणी वो
रुमाल काँ भूल्या
जमई आया गोया में म्हारे गोया में सूरज उगो वो
रुमाल काँ भूल्या
रुमाल ढूडन बाईस चाल्या वो अंगली में बलवट मेली वो
हतेली में दिवालो जा यो वो बाई की पतली कमर
लचकाणी वो बई की साँवली सुरत कुमलाणी वो
रुमाल काँ भूल्या
जमई आया सेर्या में बई सेर्या में सूरज उगो वो
रुमाल काँ भूल्या
रुमाल ढूडन बाई सा चाल्या वो अंगली में
बलवट मेली वो हतेली में दिवालो जोयो वो
बाई की पतली कमर लचकाणी वो बई की
साँवली सुरत कुमलाणी वो रुमाल काँ भूल्या

जब जमाई पहली या दूसरी बार अपनी दुल्हन को लेने सुसराल आता है तब या दूल्हे के पिताजी या भाई कोई भी लेने आता है तब लड़की के घर के लोग गीत गवाते हैं, उसमें जमाई, गाली, बधावा, ख्याली, देवी-देवता आदि के गीत गाये जाते हैं।

पति को पत्नी बार-बार देखने जाती है कि अभी तक क्यों नहीं आये? कोई उससे कहता है कि- तुम्हारा पति पनघट पर आया है तो वह पानी भरने के बहाने से देखने चली जाती है। कभी खुले में तो कभी गाँव किनारे कांकड़ पर। पत्नी-पति को ढूँढ़ने के लिये चिटी अँगुली में आंटे देकर बाती बनाती है और हथेली का दिया बनाकर और जलाकर पति को ढूँढ़ने रूमाल

ढूँढ़ने के बहाने से चल दी है। पत्नी इतनी खुश होती है कि उसे यह भी ध्यान नहीं रहता कि उसने अपने हाथों का दिया बना लिया है, उसकी पतली कमर में भी मोच आ जाती। उसका चेहरा मुरझा जाता है, तो भी वह अपने पति को देखने जाती है कि मुझे लेने अभी तक क्यों नहीं आये?

जमाई

पांगा दई-दई भेंजू वो सैंया म्हारी राज जमई का मेंला में
राज जमई सा मेला में म्हारी एसी धमचक लग गई वो सैंया
म्हारी राज जमई का मेला में
मुरखी दई-दई भेंजू वो सैया म्हारी राज जमई का मेला में
राज जमई सा मेला में म्हारी एसी धमचक लग गई वो सैया
म्हारी राज जमई का मेला में
कण्ठी दई-दई भेंजू वो सैया म्हारी राज जमई का मेला में
राज जमई सा मेला में सिरदार जमई सा मेला में
उमराव जमई सा मेला में
म्हारे एसी धमचक लग गई वो सैया
म्हारी राज जमई का मेला में
बागो दई-दई भेंजू वो सैया म्हारी राज जमई का मेला में
राज जमई सा मेला में सिरदार जमई सा मेला में
उमराव जमई सा मेला में
म्हारी एसी धमचक लग गई वो सैया
म्हारी राज जमई का मेला में
मोजड़ी दई-दई भेंजू वो सैया म्हारी राज जमई का मेला में
राज जमई सा मेंला में उमराव जमई सा मेंला में
सिरदार जमई सा मेला में
म्हारी एसी धमचक लग गई वो सैया म्हारी राज
जमई का मेला में

दामाद जब पहली बार ससुराल पत्नी को लेने आता है, उसे सम्मान के साथ महल में ठहराते हैं, सब उसकी अगवानी करते हैं, महल में खूब चहल-पहल हो गई है।

सास स्वागत करती है। दामाद के लिये गहने, जेवर, मुरकी, पगड़ी, कपड़े आदि भेजती है और कहती है- जमाई जी! आप इन चीजों को पहनना, यह सब आपके लिये ही भेज रही हूँ। इस तरह भाग-दौड़ में, चहल-पहल में महल में दौड़ा-दौड़ लग जाती है।

जमाई

चीरा पेरो जमई, पेंचा निरखो जमई
छोटी साली मांगे सिरनी, दोनी जमई
नानी साली मांगे सिरनी, दोनी जमई
सेला वाला का बेनोई
घुंगट वाली का नणदोई
छोटी साली मांगे सिरनी, दोनी जमई .... नानी॥
केंठी पेरो जमई, डोरा निरखो जमई
कड़ा पेरो जमई, पोंची निरखो जमई
छोटी साली मांगे सिरनी, दोनी जमई .... नानी॥
जामा पेरो जमई, रंग निरखो जमई
मुरकी पेरो जमई, मूदड़ी निरखो जमई
छोटी साली मांगे सिरनी, दोनी जमई .... नानी॥
तमतो सुसरा का जमई, थांकी सासु का जमई
सेला वाला जमई, छोटा मोटा जमई
छोटी साली मांगे सिरनी, दोनी जमई .... नानी॥

ससुराल में दामाद जब पहली बार जाता है और तैयार होता है, तो उसकी पगड़ी निहारने के लिये दामाद साली से कहता है कि– तुम्हारी बहन को बुला लाओ, तो साली कहती है– मेरा नेंग दो तो बहन को बुलाकर लाऊँगी, तब वह तुम्हारी पगड़ी निहारेगी।

जमाई जी! साफा पहनो, कंठी (माला) पहनो, कपड़े पहनो और पहनकर उन्हें काँच में निरखो। तैयार होकर बाहर आओ, तुम्हारी छोटी साली नेग माँगती है, उसे नेंग दो। जिन्होंने पगड़ी बाँधी है उनके तुम बहनोई हो, घूँघट वाली के ननदोई हो, ससुरजी के जमाई हो, सास के जमाई लेकिन बाहर आओ, तुम्हारी छोटी साली नेंग माँग रही है, उसे नेंग दो।

जमाई

दुरा तो देस से जमईजी पधार्या
तो बाई म्हारी परखण चाल्या हो राज
मारुजी मंगावे दुधा पेड़ा ....
दोड़या हो जमईजी मालीड़ा के चाल्या
मालीड़ारा बेटा थारी दुकान समाल
मारुणी मंगावे दुधा पेड़ा ....
दुधा पेड़ा तो जमई नई होवे

फुलड़ा चैये तो युंज लई जाव
घणाई लेई जाव, मारुणी मंगावे
पाछा जमईजी दोड़्या घरे आया
तो दुपटा रा चारी पल्ला रीता म्हारा राज
मारुणी मंगावे दुधा पेड़ा ....
मुरख म्हारा दाउसा मुरख म्हारी माता बई
मुरख ने परणाई म्हारा राज
आया हो जमई जी पावणा
दोड़्या हो जमई जी कंदोई कां चाल्या
कंदोई का बेटा थारी दुकान समाल
मारुणी मंगावे दुधा पेड़ा ....
पेड़ा तो जमई म्हारे भले होवे
छाबा भरी थे भले ई लई जाव
मरुणी मंगावे दुधा पेड़ा ....
चातुर सोई परवार म्हारो
चातुर ने परणई म्हारा राज
दुरा तो देस से जमई जी पधार्या

दामाद ससुराल जाते हैं तब दुल्हन चुपके-चुपके दामादजी से बात करने और देखने की कोशिश करती है। दुल्हन अपने पति से पेड़ा मँगवाती है, तब मिलने का वादा करती है कि पेड़ा लाओ तो मैं बात करूँगी।

दूर देश से जमाई जी आये हैं, पत्नी जी उनको परखने चली। उनसे कहा- मुझे दूध और पेड़ा लाकर दो। जमाई जी साली के यहाँ दूध और पेड़ा लेने चले माली बोला कि- मेरे यहाँ फूल मिलते हैं। इसके बाद घर वापस लौट गया तो पत्नी बोली कि- कैसे मूर्ख इन्सान से शादी कर दी मेरी। इसके बाद जमाई हलवाई के यहाँ गया तो हलवाई ने दूध और पेड़े दिये। पत्नी ने पति को चतुर इन्सान समझ लिया। कहने लगी कि चतुर उसका परिवार है।

मेहंदी

मेंदी म्हारी मेदूंली, मेंदी का तीखा पान वो
राज गुमानी सायबा कदे आवसी॥
नानो देवर लाड़लो ऊ मेंदी को रखवालो वो
राज गुमानी सायबा कदे आवसी ॥
नानी नणदल लाड़ली वा मेंदी लेवा जाय वो
राज गुमानी सायबा कदे आवसी ॥

नणदल की चींटी आंगली भावज को दोई हात वो
राज गुमानी सायबा कदे आवसी ॥
मेंदी लगई पाणी चाली सामे मिल्या सायब वो
राज गुमानी सायबा कदे आवसी ॥
मिल्या था पण बोल्या नइ मन में राख्यो दाव वो
राज गुमानी सायबा कदे आवसी ॥
बोल्या था पण हंस्या नइ हिवड़े लागी लाय वो
राज गुमानी सायबा कदे आवसी ॥
म्हारी सासू ने यूं कयो के दाल ने चोखा रांद वो बऊ
राज गुमानी सायबा कदे आवसी ॥
में भोली ने यूं सुण्यो के मूंग ने चोखा रांद वो
राज गुमानी सायबा कदे आवसी ॥
म्हारी सासू ने यूं कयो के पाड़ी के खूंटे बाद वो बऊ
राज गुमानी सायबा कदे आवसी ॥
में भोली ने यूं सुण्यो के लाड़ी के खूंटे बाद वो
राज गुमानी सायबा कदे आवसी ॥ 11॥
म्हारी सासू ने यूं कयो के भेंस के कुंड़ो मेल वो बऊ
राज गुमानी सायबा कदे आवसी ॥
में भोली ने यूं सुण्यो के जेठ के कुंड़ो मेल वो
राज गुमानी सायबा कदे आवसी ॥
म्हारी सासु ने यूं कयो के पोल में दिवलो मेल वो बऊ
राज गुमानी सायबा कदे आवसी ॥
में भोली ने यूं सुण्यो के सोड़ में दिवलो मेल वो
राज गुमानी सायबा कदे आवसी ॥
सोड़ बले सिरको बले सासु बुजावा जाय वो
राज गुमानी सायबा कदे आवसी ॥

मेहंदी मेरी प्यारी है, उसके तीखे-तीखे पत्ते। मेहंदी मैंने लगा रखी है लेकिन मेरे पिया कब घर आयेंगे? मेरा छोटा देवर लाड़ला है, वह मेहंदी की रखवाली करता है। छोटी ननद लाड़ली है, वह मेहंदी लेने जाती है। ननद की चिटी (कनिष्ठा) अँगुली में और भाभी के दोनों हाथों में मेहंदी लगी है। मेहंदी लगाने पर भी पानी भरने चल दी। राह में पिया मिले लेकिन मन में दांव-पेंच रखा, वह बोले नहीं, बोले थे पर हँसे नहीं, मुझे इस बात का दु:ख हुआ।

मेरी सास ने कहा- बहू! दाल और चावल बना लो, मैं सरल स्वभाव की मैंने यह सुना कि मूँग और चावल बना लो। मेरी सास ने कहा कि- भैंस के बच्चे को खूंटे से बाँध दो, मैंने यह

सुना कि लाड़ी (बहू) को खूंटे से बाँध दो। मेरी सास ने कहा- भैंस को जूठा भरा तबेला रख दे, मैंने यह सुना कि जेठजी को तबेला रख दे। मेरी सास ने कहा कि- आला में दिया रख आ, मैंने सुना कि- बिस्तर में दिया रख आ। बिस्तर में दिया रखने पर बिस्तर जलने लगा और सास बुझाने जाती है।

मेहंदी

लसर लसर मेंदी बाँटू झबीया झोला खाय वो
मेंदी में बोई जी राज
मेंदी बोई रेत में वा उगी काला खेत में वो
मेंदी में बोई जी राज
नानी नणदल लाड़ली वां मेंदी उसेड़वा जाय वो
मेंदी में बोई जी राज
नानो देवर लाड़लो उ मेंदी रो रखवालो वो
मेंदी में बोई जी राज
लसर-लसर मेदी बाँटू झबीया झोला खाय वो
मेंदी में बोई जी राज
बाटी चूटी बाटको भर्यो रंग यो गुजरात वो
मेंदी में बोई जी राज
मेंदी लगाई पाणी चाली सामे मिलग्या नाय राज
मेंदी में बोई जी राज
घर में अईने राड़ करी दि म्हने धमकाया
मेंदी में बोई जी राज
छोरा की टुटी टांगणी छोड़ी को टुटो हात
मेंदी में बोई जी राज

जब दूल्हा-दुल्हन विवाह के बाद घर पहुँच जाते हैं, तब राती जगा किया जाता है। इस अवसर पर यह गीत गाया जाता है।

पत्थर पर पीस-पीस कर मेहंदी तैयार की है। पीसने से मेरे हाथ दुखने लग गये हैं। मेहंदी रेत में बोई थी पर वह काले खेत में उग आई है। छोटी ननद और देवर मेहंदी तोड़कर ले आये हैं। वे मेहंदी की रखवाली भी करते हैं। मेहंदी पीस कर कटोरे में भरी, उसमें जो रंग आया है, वह बहुत गहरा था। मैं मेहंदी लगाकर पानी भरने गई, मेरे पिया सामने मिल गये, लेकिन वे मुझसे बोले नहीं, मन में दांव-पेंच रखा, घर आये तो मुझे पीटा, पीटने में बच्चे को भी मारा, लड़के की टाँग टूटी और लड़की का हाथ टूटा।

जमाई (पारसी)

मांय जड़ी ने बेटी पातली, बेटो आग जंजाल
बुजो हो जमई म्हारी पारसी, नी तो लागे दोवड़ गोठ
गोठ गोठीड़ा खई गया, जमई जी लबुर्ये पेट
गड़ा मारुजी (उत्तर- बंदूक)।

लाय लागी ने घर बल्यो, घर धणी बैठो घर की मांय
बुजो जो जमई म्हारी पारसी, नी तो हारो तमारी मांय
मांय हारे पुरो नई पड़े, हारो सोई परवार
गड़ा मारुजी (उत्तर- होलो)।

सुर्या सांड घडुकीयो सीगड़ा बीच उकी पुंछ
बुजो हो जमई म्हारी पारसी, नी तो लागे दोवड़ गोठ
गोठ गोठीड़ा खई गया, जमई जी लबुर्ये पेट
गड़ा मारुजी (उत्तर- बिच्छू)

राते रांदी हो साईबा खीचड़ी आयो सबेरे सवाद
बुजो हो जमई म्हारी पारसी, नी तो हारो तमारी मांय
मांय हारे पुरो नई पड़े, हारो सोई परवार
गड़ा मारुजी (उत्तर- मेहंदी)

मांय बोड़ी ने बेटी झीतरी, दोई को एक भरतार
बुजो हो जमई म्हारी पारसी नी तो हारो तमारी मांय,
मांय हारे कई नी होवे
हारो सोई परवार (उत्तर- आम)
गड़ा मारुजी,

एक ईट चोसट कुवो कुवे-कुवे पणीयार
बुजो हो जमई म्हारी पारसी नी तो हारो तमारी मांय,
गड़ा मारुजी (उत्तर- चोपड़)

अगन कुंवो में घर कर्यो जलमांय करे रे नीवास
बुजो नी रीसालु म्हारी पारसी, करलो पड़ोसी ने बाय
गड़ा मारुजी (उत्तर- कुम्हार का मटका)

तीन मईना की डावड़ी, निकली छबक छिनाल
बुजो हो जमई म्हारी पारसी नी तो हारो तमारी मांय,

मांय हारे नी चले हारो सोई परवार
गड़ा मारुजी (उत्तर- मिरची)

परदे-परदे ओ सायब वा चली अपणा पियुजी की लार
बुजो हो जमई म्हारी पारसी नी तो हारो तमारी मांय
गड़ा मारुजी (उत्तर-तलवार)

जमाई जब ससुराल आता है तो साले की पत्नी और छोटी साली मजाक करती हैं। रात खाना खाने के बाद फुर्सत में हँसी-ठिठोली करती है और पारसी (पहेली) पूछती है। उनसे जवाब माँगती है, जवाब नहीं देने पर कहती है- हार मान लो या जवाब दे दो। इस तरह हँसी-ठिठोली में आधी रात निकल जाती है, कोई जवाब जमाई को याद नहीं रहने पर उसकी पत्नी जो वहीं बैठी रहती है, चुपके से बता देती है।

विवाह (पारसी)

हो डाकन भुत लड़ी पड़्या, चुड़ैल छोड़वा ने जाय
बुजो हो बेवई म्हारी पारसी, नी तो हारो घर की नार
गड़ा मारुजी (उत्तर- ताला-चाबी)

हो अगवाड़े बई ढोला तुमड़ी जी की पछवाड़े गई बेल
बुजो हो बेवई म्हारी पारसी, नी तो हारो घर की नार
गड़ा मारुजी (उत्तर- कांचली)

हो रातो चुड़ो ने राती कांचली, रातो मारुणी को भेस
बुजो हो बेवई म्हारी पारसी, नी तो हारो घर की नार
गड़ा मारुजी (उत्तर- मिरची)

सगग-सगग वा उड़े, सरसग्गी वी को नाम
आसमान तोले या कंई हुई रे पंडिता
बुजो बेवई पारसी, नी तो हारो घर की नार
गड़ा मारुजी (उत्तर- पतंग)

घमड़-घमड़ वा फिरे, उड़धंगी वीको नाम रे
नाक काटी निचे मेल्यो, यां कंई हुई रे पंडिता
बुजो हो बेवई म्हारी पारसी, नी तो हारो घर की नार
गड़ा मारुजी (उत्तर- घट्टी)

उपर फाटी ने नीचे फाटी हे बीच में जड़्यो हे जड़ाव
बुजो हो बेवई म्हारी पारसी, नी तो हारो घर की नार
गड़ा मारुजी (उत्तर- कागसी)

अगर समधी पारसी का उत्तर बताता है तो भी उसको गाली पड़ती है, अगर नहीं बताता तो भी गाली पड़ती है।

विवाह (पारसी)

हो कांकड़ मार्यो बोकड़ो पाती करी पचास
बुजो हो जमई म्हारी पारसी नी तो दोवड़ गोठ
गोठ गोठीड़ा खइयग्या जमईजी लुबार्ये पेट
गड़ा मारुजी (उत्तर- नारियल)

लीलो चुड़ो ने लीली कांचली, लीलो मारुणी को भेस
बुजो हो जमई म्हारी पारसी, नी तो लागे दोवड़ गोठ
गोठ गोठीड़ा खईग्या जमईजी लुबार्ये पेट
गड़ा मारुजी (उत्तर- हरी केरी)

घर में से नागो निसर्यो, गोयरे कर्यो सिनगार
बुजो हो जमई म्हारी पारसी, नी तो हरो तमारी मांय
मांय हार्ये पुरो नई पड़े, हारो सोई परवार
गड़ा मारुजी (उत्तर- बिनोला या कपास)

भेस जणी ने पाड़ो पेट में चीको गयो गुजरात
बुजो हो जमई म्हारी पारसी, नी तो लागे दोवड़ गोठ
गोठ गोठीड़ा खइग्या जमईजी लुबार्ये पेट
गड़ा मारुजी (उत्तर- दवात कलम)

आम्बा री डाल दीवो बले, काजल पड़रे खंडार
बुजो हो अदगेल्या म्हारी पारसी नी तो हारो तमारी मांय
मांय हार्यो पुरो नई पड़े, हारो सोई परवार
गड़ा मारुजी (उत्तर- मेहंदी)

अगर खाना खाते-खाते पारसी का उत्तर समधी बता देते हैं तो यह गीत गाया जाता है।

बोली उठ्यो, बोली उठ्यो, बोली उठ्यो रे
रामजणी को भड़वो बोली उठ्यो रे

समधी तथा उनकी पत्नी को गाली गीत के माध्यम से दी जाती है।

विवाह (पारसी)

पन्द्रे आया पामणा पोली पोई रे एक
आदी-आदी सब खाई पन्द्रमो आखी रे खाय

बुजो हो बेवई म्हारी पारसी, नी तो हारो घर की नार
गड़ा मारुजी (उत्तर- चन्द्रमा)

हो सोना सरीकी फुतली जी बेवई जी जीरा सरकी आंक
चातुर चुम्मो दे गई जी, मूरख मसले हात
छोटा खेटा बेवई लाम्बा लापर बेवई
मन से सांचा बोल (उत्तर- भंवरी)

एक पछेड़ी में सो जणा, सबकी न्यारी-न्यारी सोड़
बुजो हो बेवई म्हारी पारसी, नी तो लागे दोवड़ गोठ
गोठ गोठीड़ा खईग्या बेवई लुबार्ये पेट
गड़ा मारुजी (उत्तर- लहसुन)

पत्थर पतासा लागा हो, बेवई हमने तोड़्या
तमने चाख्या हो बेवई, पारसी बुजो ने वांता हो लागा
बेवई थारे म्हारे झगड़ो होसी बेवई
गड़ा मारुजी (उत्तर- तारे)

जुता के जलेबी लागी हो बेवई
हमने तोड़ी तमने चाखी हो बेवई
थारो म्हारे झगड़ो हो बेवई नी तो हारो घर की नार
गड़ा मारुजी (उत्तर- जूते की नाल)

कीड़ी चाली सासरे जी नो मण काजल सार
बुजो हो बंवई म्हारी पारसी, सुरता करो विचार
घणा गुमानी बेवई, कपटी बेवई
दिल की घुण्ड़ी खोल, गाड़ा मारुजी (उत्तर- दवात कलम)

विवाह में खाना खिलाते समय महिलाएँ समधियों से पहेली कहकर प्रश्न पूछती हैं, उनसे उत्तर माँगती हैं, उत्तर नहीं देने पर यह गाली वाला गीत गाती हैं।

हारीग्यो हारीग्यो हारीग्यो रे
जीजी छिनाल को हारीग्यो रे

समधी की माँ को गाली देकर सम्बोधित करती है कि उसका बेटा हार गया है।

बधावा

वारी हो बीराजी तमारा चौक में जी राज
टूट्यो म्हारो नवसर्यो हार म्हारा राज

मोती बेराण चन्दण चौक में जी राज
कैसे बिणू ने कैसे सारंवू जी राज
किस बिद करुवाँ जू बाप म्हारा राज
मोती बेराण चन्दण चौक में जी राज
चिमटी बिणू ने पले सांरवू जी राज
मुखड़ा से करुवाँ जूबाप म्हारा राज
मोती बेराण चन्दण चौक में जी राज
सुसरा म्हारा गाम का राजवी जी राज
सासु म्हारी अलख भण्डार म्हारा राज
मोती बेराणा चन्दण चौक में जी राज
जेठजी म्हारा बाजूबन्द बेरखा जी राज
जेठजी म्हारा बाजूबन्द रीलूम म्हारा राज
मोती बेराण चन्दण चौक में जी राज
देवर म्हारा हाता रो चूड़लो जी राज
देराणी म्हारा चुड़लारी चोप म्हारा राज
मोती बेराण चन्दण चौक में जी राज
दिनड़ म्हारा हाता री मूंदड़ी जी राज
जमई म्हारी मून्दड़ी रो काँच म्हारा राज
मोती बेराण चन्दण चौक में जी राज
पुत म्हारा कुल को दिवलो जी राज
कुल बऊ दिवला री जोत म्हारा राज
मोती बेराण चन्दण चौक में जी राज

मायके में कोई भी मंगल कार्य होता है तो बहन-बेटियाँ वहाँ जाकर बताशे बँटवाती है, तब यह बधावा गाया जाता है।

भाई! तुम्हारे चौक में मेरा हार टूट गया और मोती बिखर गये हैं, उसे मैं कैसे बीनूँ और कैसे माला पिरोऊँ? मेरा परिवार भी उस हार की तरह टूट गया है।

ससुर मेरे गाँव के पटेल कहलाते हैं, सास मेरी बहुत ही अच्छी माँ जैसी है। जेठजी मेरे बाँहों के बाजूबंद हैं, उसमें जो फुँदा लटकता है वैसी मेरी जेठानी हैं। देवर मेरे हाथों के चूड़ों जैसा है। देवरानी मेरी उसमें लगे हीरे जैसी है। लड़की मेरे हाथों की अँगूठी है, जमाई मेरी अँगूठी का नगीना है। पुत्र मेरा कुल का दिया है, उसकी पत्नी दिये की ज्योति है। यह हार मैं टूटने नहीं दूँगी, उस हार को वापस चुन-चुन कर पिरोकर रखूँगी।

बधावा

लिमड़ो आयो वो झग्गा मग्गी से
फूलड़ा रो अन्त ना पार
म्हें म्हारा मारुजी से यूँ कियो
पिया म्हारे भम्मर घड़ाओ
गेल्वा हुवा वो गोरी म्हारा बावला
फूलड़ा रा भम्मर नी होय
पियर पूरी वो पिया म्हारा डूगरी
पिया म्हें पियर पोंचाव
हातीड़ा सण सगर्या गोरी म्हारी अपसारु
घोड़ीला रो अन्त ना पार
लिमड़ो आयो वो झग्गा मग्गी से
फूलड़ा रो अंत ना पार

नीम का पेड़ इतना हरा-भरा है कि उसमें फूलों का कोई पार नहीं है। लटालूम लगे हैं फूल। मैंने अपने पिया से कहा- पिया! मुझे इन फूलों से भम्मर बनवा दो। पति कहते हैं- गोरी! क्या पागल हो गई हो? फूलों के भम्मर नहीं बनते हैं। पिया? मेरा मायका दूर है, मुझे मायके ही पहुँचा दो। गोरी! तुम्हारे लिये हाथी का शृँगार किया, जिस पर तुम बैठकर जाओगी और घोड़े इतने हैं कि जिसकी कोई गिनती नहीं है।

बधावा

काचा सा दूद ने काँच का प्याला नणद बई का बीर
प्याला झेलो के नई रे सारी-सारी रेण अबोले गमई रे
सिसरी पाँगा हाजर लई उबी जीजी बई रा बीरा
पेंचां रालो के नई रे सारी-सारी रेण अबोले गमई रे
कानारी मूरकी हजार लई उबी जीजा बई रा बीर
मुरकी पेरो के नई रे सारी-सारी रेण अबोले गमई रे
गलारो डोरो हजार लई उबी राजल बई रा बीर
डोरो पेरो के नई रे सारी-सारी रेण अबोले गमई रे
हाता री गजरी हजार लई उबी राजल बई रा बीरा
कड़ा पेरो के नई रे सारी-सारी रेण अबोले गमई रे

कच्चा दूध काँच के प्याले में लेकर खड़ी हूँ। ननद के प्यारे भाई! प्याला पकड़ोगे की नहीं, क्योंकि सारी रात तुमने बगैर बोले निकाली है। सिर की पगड़ी, कानों की मुरकी, गले की

चेन, हाथों की गजरी, यह सब मैं तुम्हारे लिये लेकर खड़ी हूँ। तुम जब तैयार होओगे तो यह सामान मैं तुम्हारे हाथों में देती जाऊँगी। क्या तुम यह सामान मेरे देने पर पहनोगे या नहीं ? क्योंकि सारी रात तो तुमने बोले बगैर निकाल दी है।

बधावा

तमारा सिसरी पांगा हो बीराजी म्हारा हद हो बणी
तमारा पेंचा रो अदक सो रुप भावज बई म्हारा हो
बीरा ने लेवा बेगी मेलजो
तमारा अवणा तो जवणा हो जीजा बई तमारा बाप से गया
तमारी माता बई से गया दुणा लाड़ हईड़ो पाछो फेरजो हो
जीजा बई तमारा घरे हो रिजो
तमारा कानरी मुरखी हो बीराजी म्हारा अद हो बणी
मोती रो अदक सो रुप भावज बई म्हारा हो
बीरा ने लेवा बेगी मेलजो
तमारा गळा री कण्ठी हो बीराजी म्हारा हद हो बणी
तमारा तोड़ा रो अदक सो रुप हईड़ो पाछो फेरजो हो
बीरा ने लेवा बेगी मेलजो

भाई! तुम्हारे सिर की पगड़ी बहुत ही सुन्दर बनी है, उसके जो आंटे (पेंच) हैं, उसका स्वरूप अलग ही है। भाभी मेरी, मेरे भाई को लेने जल्दी भेजना। भाभी कहती है- ननद बाई, तुम्हारा आना और जाना तो तुम्हारे पिताजी के मरने के साथ ही चला गया है। माँ जो तुम्हें लाड़ करती थी, वह भी उनके साथ चली गयी हैं। अब मायके की ओर से मन दूर कर लेना और तुम्हारे घर ही रहना। अब तुम्हारा यहाँ आना-जाना नहीं चलेगा, तुम अपने घर ही सुखी रहना।

बधावा

मीठी थुली ओ सायबा दूद की
जिको घणो रे सवाद
मीठी थूली ओ सायबा ....
लाडू पेड़ा ओ सायबा लापसी
जिको घणो रे सवाद
मीठी थूली ओ सायबा ....
बागां फूल्यो को सायबा केवड़ो
जिको मेंला आवे बास
मीठी थूली ओ सायबा ....

मीठा चोखा ओ सायबा केसरिया सा.
जिको घणो रे सवाद
मीठी थूली ओ सायबा ....
मीठी सिरनी ओ सायबा घी से
जिकी परमल आवे बास
मीठी थूली ओ सायबा ....
गोदी भरी ओ सायबा पुत्त से
जिको अलग उछाव
मीठी थूली ओ सायबा ....

पिया! मीठी दलिया दूध से अच्छी लगती है। लड्डू-पेड़े, लापसी इनका भी कितना अच्छा स्वाद है। पिया! बागों में केवड़ा खिला है, जिसकी खुशबू महल तक जाती है। मीठे चावल, केशरिया भात का स्वाद भी बहुत अच्छा है। पिया! पुत्र से गोदी भरी होने का सुख अलग ही होता है। जिस तरह मीठी दलिया दूध से अच्छी लगती है, गोदी पुत्र से अच्छी लगती है।

बधावा

ई मोती समंदरिया में नीबजे
ई मोती सूरज जी रा कान
बदावो राजा राम को
ई मोती समंदरिया में नीबजे
ई मोती चंदरमा जी रा कान
बदावो राजा राम को
ई मोती समंदरिया में नीबजे
ई मोती कृष्ण जी रा कान
बदावो राजा राम को
ई मोती समंदरिया में नीबजे
ई मोती राजा राम के कान
बदावो राजा राम को

पूरी शादी निपटने के बाद मंडप को कुएँ में या नदी में सिराने जाते हैं, उस वक्त यह गीत गाया जाता है। समुन्दर में मोती उत्पन्न होते हैं, वे मोती सूरज जी, चन्द्रमा जी तथा श्रीकृष्णजी के कानों में शोभायमान होते हैं। उन मोतियों को पहनने का हक सिर्फ इन भगवानों को बनता है, उन्हीं के कानों में अच्छे लगते हैं। राजा राम बधाईयाँ देते हैं।

बधावा

बाई वो ऐले पार गंगा पेले पार जमना
बाई बीच मांय बसे रंगरेज
बदावो राजा राम को
बाई वो रंग जो सूरज जी की पागड़ी
बाई वो देवता री पागड़ी
बाई वो रंग जो राणी रूकमणी रो घाट
बदावो राजा राम को
बाई वो रंग जो बेन्या बई की चूनड़ी
बाई वो जमई सा रो हरियो रूमाल
बदावो राजा राम को
बाई वो रंग जो जीजा बई रो लेरियो
बाई वो रंग जो नणदल बाई रो लेरियो
बाई वो नणदोई सा री पंचरगी पाग
बदावो राजा राम को

इस पार गंगा और उस पार जमुना दोनों के बीच में रंगरेज बसता है। वह रंगरेज सूरजजी की पगड़ी रंगता है, देवी-देवताओं की पगड़ी रंगता है, बहन की चुनरी रंगता है, जमाई का रूमाल रंगता है, ननद का लहरिया रंगता है और ननदोई जी का पचरंगी साफा रंगता है। इस बधावे का श्रेय राजा राम को देते हैं।

बधावा

सरवरिया थारी उँची नीची पाल
पाल पर अम्बलो मोरियो
अमला थारी आंवली सांवली डाल
डाल पे कोयल बोली
कोयलड़ी थारो झीणो-झीणो राग
म्हारी नगरी में सबद सुणाई हो
इना नीलेस तमारी पंचरंगी पागा
पागा पर सूरज उगियो
लाड़ी बउ कंकू वरणी कूंख
गोदी में जानू लाल रमी रया
तमारी कंकू कूंख अमर रेवे
अमर रेवे गोद्यां का लाल

कुएँ की पाल ऊँची-नीची है, उसकी पाल पर आम का पेड़ लगाया है जिसमें मोर आ गये हैं। आम की डाल साँवले रंग की है जिस पर कोयल बोल रही है। कोयल तेरा राग इतना सुरीला है कि मेरे शहर में सुनाई दे रहा है। नीलेश की पचरंगी पगड़ी सुन्दर लग रही है। उनकी पत्नी की कोख कंकू (हरी-भरी) वाली है। गोदी में बालक खेल रहा है। तुम्हारी कूंख अमर हो जो गोदी में बालक खेल रहा है।

बधावा

म्हारे तो आंगण रूखड़ो वो सैंया
एलायची तो रई लूम्बाय
तोड़न वाला घरे नई सैंया
किन पर करूं रे गुमान
तोड़ेगा धन रा सायबा वो सैंया
उन पर करूं रे गुमान
मैं म्हारा मारूजी के ओलख्या नई वो सैंया
भरी वो कचेर्या रा मांय
बांधवा ने कसूमल पागड़ी
हाता में हरियो रूमाल
मैं म्हारा मारूजी के ओलख्या नई वो सैंया
सात सहेल्यां रा मांय
ओड़वा ने बदांगल चूनड़ी
गोदी में पूत नानूलाल
बागां में चमकी बिजली वो सैंया
मेंला होय रे उजास

सूरज पूजा के समय यह बधावा गाया जाता है। मैं जवान हो गई हूँ मेरे पिया घर पर नहीं है, किस पर घमण्ड करूँ? मैं पिया को पहचान नहीं पाई। सब लोगों के बीच में उन्होंने केशरिया पगड़ी पहन रखी थी, हाथों में हरे रंग का रूमाल था, वह सात सहेलियों के बीच में खड़े थे, मैं उन्हें पहचान नहीं पाई। मैंने भी बन्दागल की चूनड़ी पहन रखी थी। मेरी गोदी में नानूलाल पुत्र खेल रहा था। उनको देखने के बाद बागों में बिजली चमकी जिसकी रोशनी महल तक आई।

बधावा

आम्बा पे चमकी बिजली वो सैंया
कचेर्या में होयो उजास
मैं म्हारा मारूजी के ओलख्या नई वो सैंया

भरी वो कचेर्या का मांय
सिर पे रतलामी लेर्यो वो सैंया
हांता में हरियो रूमाल
मैं म्हारा मारूजी के ओलख्या नई वो सैंया
भरी वो कचेर्या का मांय
आम्बा पे चमकी बिजली वो सैंया
पनघट होयो रे उजास
मैं म्हारा मारूजी के ओलख्या नई वो सैंया
सात सहेल्या रा मांय
ओड़वा ने मन्दसौर चुनड़ी वो सैंया
गोदी मांय खेले नन्दलाल
हाता में चलके चुड़लो वो सैंया
सात सहेल्या रा मांय ....

एक सहेली दूसरी से बात कर रही है- आम के पेड़ के उधर से बिजली चमकी, उसका उजाला दूर-दूर तक पहुँचा, उस उजाले में मुझे एक व्यक्ति ऐसा दिखा जिसने सिर पर रतलामी लहरिये का साफा पहन रखा था। हाथ में हरे रंग का झूलता हुआ रूमाल था। गौर करने के बाद मालूम पड़ा कि वही मेरे पिया थे। भीड़ होने के कारण मैं उन्हें पहचान नहीं पाई। मैंने मन्दसौर की चूनरी पहन रखी थी, गोद में बालक था, हाथों में मेरे चूड़ियाँ चमक रही थी, मैं अपनी सहेलियों के साथ खड़ी थी।

परी का बधावा

लिखिया परवाणा परीबई ने भेजिया
तो नीर अछूता राणी राखजो
तम घर आनन्द बदावणा
लिखिया परवाणा परीबई ने भेजिया
तो दूद अछूता राणी राखजो
तम घर आनन्द बदावणा
नीर अछूता परीबई हमसे नी रेवे
नीर बटाल्यो अणी माछली
तम घर आनन्द बदावणा
दूद अछूता परी बई हमसे नी रेवे
तो दूद बटाल्यो अणा बाछरू
तम घर आनन्द बदावणा

लिखिया परवाणा परीबई ने भेजिया
चूड़ला अछूता राणी राखजो
तम घर आनन्द बदावणा
चूड़लो अछूता परीबई हमसे नी रेवे
चूड़ला बटाल्या अणी जोड़ा बऊवड़ ये
तम घर आनन्द बदावणा

सुहागिनें जिमाते हैं और परी को विदा करते हैं, तब यह गीत गाते हैं। चिठ्ठी लिखकर परी बाई को भेजी है कि पानी को जूठा मत करना, तुम्हारे घर बधावा आया है। घर की महिलाएँ कहती हैं कि- पानी इस मछली ने जूठा कर दिया है। परी कहती है- दूध को जूठा मत करना। महिलाएँ कहती हैं- दूध तो जूठा हो चुका है, इस बछड़े ने दूध जूठा कर दिया है। परी कहती है- चूड़ियों को जूठा मत करना (पहनना), तुम्हारे घर बधावा आया है। महिलाएँ कहती हैं- चूड़ियों को कुल-बहू ने पहन लिया है।

परी बाई उस महिला को कहा जाता है जिसकी किसी दुर्घटना में मृत्यु हो जाय। उसे परी बाई के नाम पर हर साल याद करके सात या ग्यारह सुहागिन महिलाएँ जिमाई जाती हैं।

बधावा

बड़ा-बड़ा कोट अलंग दरवाजा, दूर दिसा से बाई आयो हो राज
डेली बैठा भावज मूंडो मचकोड़े किका बुलाया आया हो राज
बीरा का बुलाया आया हो राज
भतीजा की माड़ी घर आया हो राज
अबे का सूता घड़ी दोय सोवा दो
घड़ी दोय मांय-मांय बिलमो हो राज
उठो नाना उठो कूकां तमारा भुवाजी सा आया
तमारे रमाड़ी घरे जावे हो राज
हाता में अड़ोल्या भावज पाव में कड़ोल्या
गला मांय गेंद खंगाली हो राज
जरी का भावज कापड़ा वो लाया
लीली वो धारी की टोपी हो राज
मांगणो होय सो बाई आज वो मांगजो
काल को मांग्यो बई नई मलस्या
बाड़ा मांय की झोंटी भावज लेस्यां
नाथ्यो सो नार्यो लेस्या हो राज
डाबा मांय को गेणलो भावज लेस्यां

पेटी मांय की साड़ी लेस्यां हो राज
तम तो म्हारा बाई काल पटकण्या
थें तो आज थारा घरे जावस्या

दूर देश से, दूर शहर से बहन भाई के घर आई है। लेकिन भाभी मुँह फेर कर बैठ गई। कहने लगी– किसके बुलाने से आप आयी हो ? बहन बोली– भाई के बुलाने से आई हूँ, भतीजा हुआ है उसे देखने आई हूँ। भाभी कहती है– बच्चा अभी हाल ही सोया है जब तक तुम बाहर घूम आओ। भाभी ने बच्चे को उठाना चाहा कि बच्चे को देख लेगी तो अपने घर चली जायेगी। बहन बोली– हाथों के लिये मांखी और पांवों के लिये कड़े, गले के लिये खंगाली लाई हूँ। जरी के कपड़े और नीली धारी वाली टोपी लाई हूँ। भाभी बोली– बहन, तुमको जो नेग माँगना हो वो माँग लो, कल अगर कुछ माँगोगी तो नहीं मिलेगा। बहन बोली– भाभी ! पिछवाड़े जो गाय बंधी है वह और दबंग बैल हैं वे चाहिए। डब्बे के अन्दर रखे गहने, पेटी के अन्दर की साड़ी लेंगे। भाभी बोली कि– बहन, तुम तो मेरे घर में कलह कर दोगी, तुम तो अपने घर जाओ।

प्राणी (मृत्यु गीत)

माया रा लोबी तू कंई भूल्यो रे भाई
माया रा लोबी भंवरा तू कंई भूल्यो रे भाई
हुओ दन रात किनको छोरो, किनको डावड़ो केवाणो
कुण थारा मांय ओर बाप, नागो आयो रे भूको जावस्यां
ऊँचा झरोक्या तू बैठ्या करतो, माया को अभिमान
आवे बुलावो जणी दन चालणो
थारो कुण देवेगा सांत .... माया रा लोबी.......
नी हे वां हाट नी बाण्या रे, खर्चो लई लीजो सांत
आवे बुलावो जणी दन चालणो
थारो कुण देगा सांत .... माया रो लोबी.......
पांच तत्व की काया कांच की, वीने जतन करी राख
ठपका लागे तो काया धंसी जावेगी
थारो कुण देगा सांत .... माया रा लोबी.....

किसी वृद्ध व्यक्ति की मृत्यु होने पर उसे श्मशान ले जाते समय महिलाएँ यह गीत गाती हैं।

रुपयों का अभिमान करने वाले तू क्या भूला है ? कौन तेरे माँ–बाप, किसका तू बेटा है ? खाली हाथ आया, भूखा जाना है। महल में तू बैठा करता था अभिमानी, जिस दिन तेरा भगवान के यहाँ से बुलावा आयेगा, उस दिन कोई साथ नहीं देगा। वहाँ हाट–बाजार कुछ नहीं है, खर्चे का रुपया साथ ले लेना। काया जो है वह काँच की तरह है, जरा–सा धक्का लगेगा, टूट जायेगी।

मृत्यु

गरब करी ने राधा मेंला चड्या
बीच मांय ढल गई खाट
जीवड़ो जावेगा प्राणी एकलो
कोई नी चालेगा सांत
आटो सीदो रे प्राणी लई लीजो
आगे नी हे हाट बजार
किनका छोरा ने किनकी डावड़ी
किनका मांय ने बाप
जीवड़ो जावेगा प्राणी एकलो
कोई नी चालेगा सांत
आड़ी नद्दी ने उबट चालणो
जाणो हे ऐले पेले पार
जीवड़ो जावेगा प्राणी एकलो
कोई नी चालेगा सांत

गर्व करके राधा महल चढ़ी और बीच में ही जीवन का अंत हो गया। प्राण निकलेंगे तो अकेले ही जाना है, कोई साथ नहीं चलेगा। आटा-सीधा खाने का सामान साथ ले लेना वहाँ कोई हाट-बाजार नहीं है। कौन किसका लड़का और कौन किसकी लड़की कोई साथ नहीं चलेगा। राह कठिन है, नदियाँ गहरी-गहरी और ऊँचे-ऊँचे पहाड़ हैं। ऐसी राह चलना है और गर्व नहीं करना।

मृत्यु

जिवता जिवराम जी फाटा टूटा पेर्या
झूटी काया पे पिताम्बर राल्या हो सांवरिया
म्हने निरत आवेनी एक दन की
जिवता जिवराम जी सूका पाका खाया
झूटी काया पे घेवर राल्या हो सांवरिया
म्हने निरत आवेनी एक दन की
जिवता जिवराम जी बउवड़ मुखड़े नी बोल्या
झूटी काया पे माथा फोड़्या हो सांवरिया
म्हने निरत आवेनी एक दन की
जिवता जिवराम बउवड़ घणा दुःख पाया

झूटी काया पे माथा फोड़ीया हो सांवरिया
म्हने निरत आवेनी एक दन की

जीते जी किसी बात का सुख नहीं उठाया, किसी तरह का आराम नहीं किया, कुछ अच्छा खाया-पिया नहीं, झूठी आस कर पूरे जीवन जीता रहा। मरने पर पीताम्बर ओढ़ा कर भेजा। कोई किसी का नहीं है, झूठी आस है।

मृत्यु

सांज पड़े दन गयो भवन में, तुलसी सोच करे मन में
गाय बछड़ा दिया खिड़क में, सोटा तो लई ने तुलसी मेंल
सिदार्या ..... भजो तुलसी .... सिया राम
की नी रे ....
गेरी-गेरी नदियां नाव पुराणी, जिनमें मुरदा मिलिया हे राम
मुरदा तो पकड़ तुलसी पार तो लाग्या हे जी .... भजो तुलसी
आस पास तो फिरे भवन में, कंइ रस्तो नी पायो राम
रस्सी तो पकड़ तुलसी मेल मांय आयाजी .... भजो तुलसी .... सिया
भरी नींद में तिरीयां चमकी, इतनी रेन पिया केसे आया
इतरो हेत पिया हमसे राख्यो, इतरो हरि से राखजो जी
इतरो हरि से राखो सीदा बेकुंठ सिदारो जी .... भजो तुलसी .... सिया
तू तिरीयां म्हारी जनम की, माता इतरो ग्यान बतायो जी
थारा पलंग पे पांव नी मेंलू, बेरागी बणी जांवा जी
चन्द्र सखी भज बाल री सोभा, हरि का चरण बली हरि
हे राम ....

ऐसी मान्यता है कि मरने के पहले अगर व्यक्ति ने गाय दान की हो तो मरने के बाद वह गाय उसे मिल जाती है, जो उसे स्वर्ग में ले जाती है। अगर जूते-चप्पल दान किये हों तो कांटे-भाटे मिलते हैं। मरने के बाद जूते मिल जाते हैं। अगर बहन-बेटी को झूला या उनकी मदद की हो तो मरने के बाद जो खून की नदियाँ आती हैं, उन्हें पार करने के लिए झूला मिलता है ताकि उसमें बैठकर वह पार कर लें।

मालवी संस्कार गीत

डॉ. शशि निगम

सम्पर्क – पवित्रायन, 50 परिहार कॉलोनी, ऐरोड्रम रोड, इन्दौर

गणेश वन्दना

तमें मनाऊँ गणेस गजानन गजधारी,
सीस तमारे देवा मोटा कहिये।
तेल सिंदूर चढ़े हो गजानन गजधारी।
तमें मनाऊँ ....
सूँड तमारे देवा मोटी कहिये,
वासक नाग झूले हो गजानन गजधारी।
तमें मनाऊँ ....
आँख तमारे देवा मोटी कहिये,
झबळक दिवलो बळे हो, गजानन गजधारी।
तमें मनाऊँ ....
दाँत तमारे देवा मोटा कहिये,
सुवागण चुड़लो पेरे हो गजानन गजधारी।
तमें मनाऊँ ....
कान तमारे देवा मोटा कहिये,
सुवागण वाव डुले हो गजानन गजधारी।
तमें मनाऊँ ....
पेट तमारे देवा मोटा कहिये,
सवामण चूरमों चढ़े हो गजानन गजधारी।
तमें मनाऊँ ....
पाँव तमारे देवा मोटा कहिये,
देवळ खम्ब बणे हो गजानन गजधारी।
तमें मनाऊँ गणेस गजानन गजधारी।

गजमुख से सुशोभित, हे गणेश! मैं आपको मनाती हूँ, आपका स्मरण करती हूँ। आपकी सेवा में तेल सिन्दूर समर्पित किया जाता है। आपकी बड़ी सूँड झूलते हुए वासुकी नाग की भाँति शोभायमान हो रही है। विशाल नेत्र प्रज्जवलित दीपकों की भाँति शोभित हो रहे हैं। आपके विशाल दाँतों से बने चूड़े सौभाग्यवती स्त्रियाँ पहनकर गौरवान्वित होती हैं। आपके विशाल कर्ण सौभाग्यवती नारी द्वारा झलते पंखे जैसे शोभा देते हैं। आपका उदर बड़ा कहलाता है, अत: आपको सवामण चूरमे का भोग लगाया जाता है। आपके विशाल चरण किसी मन्दिर के स्तम्भ की भाँति शोभायमान हो रहे हैं।

कोई भी संस्कार हो उसमें सर्वप्रथम गणेशजी का स्मरण किया जाता है, उनके गीत गाये जाते हैं। इसके पश्चात् कुलदेवता व लोकदेवता जैसे-भेरूजी, माता, सती, देव महाराज आदि के गीत गाये जाते हैं। उसके बाद संस्कार विशेष सम्बन्धी गीत गाये जाते हैं।

गणेश वन्दना

गणपत आया काज सरेगो।
म्हारा नवल बनाजी को ब्याव। गणपत आया ....
सिर सोना को सेवरो सोवे,
आनंद बरसावेगो। गणपत आया ....
नागर बेल पान का बीड़ा,
हँस-हँस मुख में धरेगो। गणपत आया ....
रिद्-सिद् राणी चँवर डुलावे,
सिर पर छत्र धरेगो। गणपत आया ....
बेन मालती करे आरती,
पल-पल रूप निहारेगो। गणपत आया ....
कर फरसो मूसक असवारो,
आगे नाम धरेगो। गणपत आया ....
म्हारा नवल बनाजी को ब्याव,
गणपत आया काज सरेगो।

भक्तों को अपने आराध्य गणेशजी पर पूरा भरोसा है, इसलिए वे कहते हैं- हमारे प्यारे बन्ने (दूल्हे) का विवाह है। गणेशजी पधारे हैं, अब सारा कार्य निर्विघ्न सम्पन्न हो जायेगा।

गणेशजी के मस्तक पर सुन्दर मुकुट शोभायमान हो रहा है। उनकी कृपा से सब ओर आनन्द हो जायेगा। वे नागर बेल (पान) के बीड़े को प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करेंगे। रानी रिद्धि-सिद्धि चँवर डुलाती हैं, और वे सिर पर छत्र धारण करेंगे। बहन मालती उनकी आरती उतारती हैं, वे पल-पल में उसके भक्तिमय रूप को निहार रहे हैं। उनके हाथ में फरसा है तथा मूषक पर सवारी किये हुए हैं। ऐसे श्री गणेश देवताओं में प्रथम पूज्य कहलायेंगे।

गणेश वन्दना

लगना तो तम लाया गजानंद,
लिखत आया सिवजी हो गजानंद,
मंदर में सीरी राम बिराजे चारभुजा धारी।
पड़ला तो तम लाया गजानंद,
मिसरू लाया सिवजी हो गजानंद,
मंदर में सीरी राम बिराजे चारभुजा धारी।
चुड़ला तो तम लाया गजानंद,
दाँतज लाया सिवजी हो गजानंद,
मंदर में सीरी राम बिराजे चारभुजा धारी।
गेणा तो तम लाया गजानंद,
घड़त लाया सिवजी हो गजानंद,
मंदर में सीरी राम बिराजे चारभुजा धारी।
बनड़ो तो तम लाया गजानंद,
जोड़ी तो लाया सिवजी हो गजानंद,
मंदर में सीरी राम बिराजे चारभुजा धारी।

हे गणेशजी! जिस लग्न को शिवजी ने लिखा है, उन्हें आप विवाह हेतु लेकर पधारे हैं। मन्दिर में चतुर्भुज श्रीराम विराजमान हैं। पड़ला (वधू को ससुराल से दिये जाने वाले वस्त्राभूषण आदि) तो गणेशजी आप लाये हैं और मिसरू (विशेष प्रकार के रेशम से निर्मित वस्त्र) शिवजी लेकर पधारे हैं।

हे गणेशजी! आप शिवजी द्वारा भेजे गए हाथी दाँत से बने चूड़ले लेकर आये हैं। इसी के साथ शिवजी द्वारा बनवाये गये गहनों को आप लेकर पधारे हैं।

हे गणेशजी! आप जिस दूल्हे को लेकर आये हैं उनकी जोड़ी भगवान शिव ने बनाई है।

गणेश वन्दना

गणपत सेवा मंगल मेवा,
सेवा करो तो देवा विघ्न टरत है।
ताँबे के हण्डे में ताता सा पानी,
तो प्रेम गजानंद न्हाय रया है।
सोने की थाली में भोजन परोस्या,
तो प्रेम गजानंद जिम रया है। गणपति सेवा ....

सोने की झारी गंगाजल पानी,
तो प्रेम गजानंद पीव रया है।
पाके री पान कलाई का चूना,
तो प्रेम गजानंद चाब रया है।
गणपति सेवा ....
सोने की सार जड़ाव का पासा,
तो प्रेम गजानंद जीत रया है।
हिंगलू का ढोल्या ने मिसरू की गादी,
तो प्रेम गजानंद पोढ़ रया है।

गणपति की सेवा करने से शुभ फल प्राप्त होता है और विघ्नों का नाश होता है। ताँबे के हण्डे में गर्म जल रखा है, उससे गजानंद प्रेमपूर्वक स्नान कर रहे हैं। इसी प्रकार सोने की थाली में भोजन परोसा गया है जिसे वे प्रेमपूर्वक ग्रहण कर रहे हैं। सोने की झारी (जलपात्र) में गंगाजल है, वे आनन्दपूर्वक पी रहे हैं। पान के बीड़े को प्रसन्नता से चबा रहे हैं। स्वर्ण की सार (गोटे) और रत्नजड़ित पासे से वे चौपड़ जीत रहे हैं। हिंगलू के पलंग और मिसरू की गादी पर वे विश्राम कर रहे हैं।

गणेश वन्दना

दूर करो मन सकल कलेसा।
सब गोपन में कृष्ण बड़ा है,
सब सखियन माय राधे, गणेसा।
दूर करो मन ....
सब नदियों में गंगा बड़ी है,
सब तीरथ माय गंग, गणेसा।
दूर करो मन ....
सब वेदों में रामायण बड़ी है,
सब ज्ञानों माय गीता, गणेसा।
दूर करो मन ....
सब मंदर में सिव-मंदर बड़ा है,
सब देवत माय गणेसा।
दूर करो मन सकल कलेसा।

हे गणेश! हमारे मन के सारे क्लेशों को दूर करिये। सब गोप-ग्वालों में कृष्ण श्रेष्ठ हैं तथा सब सखियों में राधा। सब नदियों में गंगा नदी पवित्र है तथा समस्त तीर्थों में गंगा सागर। सब वेदों में रामायण श्रेष्ठ है तथा सब ज्ञानों में गीता-ज्ञान। सब मन्दिरों में शिवालय श्रेष्ठ है तथा समस्त

देवताओं में भगवान गणेश श्रेष्ठ एवं प्रथम पूज्य हैं। अत: हे प्रभु! हमारे समस्त क्लेशों का निवारण करिये।

भेरू वन्दना

मंदरिया में बैठा भेरूजी बाँसुरी बजावे,
बाँसुरी बजाय भेरूजी घुघरा धमकावे।
दौड़ वो सुवागण राणी बालुड़ा सा रोवे,
म्हारा नई रोवे भेरूजी सासुजी का रोवे।
ओटला पे बेठा भेरूजी बाँसुरी बजावे,
बाँसुरी बजावे भेरूजी घुघरा धमकावे।
दौड़ वो सुवागण राणी बालुड़ा सा रोवे,
म्हारा नई रोवे, भेरूजी जेठाणी का रोवे।

उक्त गीत में देरानी, ननदबाई, सोकड़बाई, पड़ोसन इत्यादि जोड़कर गीत को विस्तार दिया जाता है। मंदिर में बैठे हुए भेरूजी बाँसुरी एवं पैरों में घुँघरू बजा रहे हैं। उन्हें सुन रही एक सौभाग्यशाली स्त्री को कहते हैं- जरा दौड़ो कोई बालक रो रहा है। वह कहती है- हे भेरूजी! मेरा बालक नहीं है वह तो सासुजी का रो रहा है।

ओटले पर बैठे हुए भेरूजी बाँसुरी और पैरों में घुँघरू बजा रहे हैं। फिर वे सुहागन स्त्री को कहते हैं- कोई बालक रो रहा है। तब वह कहती है- मेरा नहीं रो रहा है भेरूजी! वह तो जेठानी का रो रहा है।

भेरू वन्दना

भेरूजी के पागा सोवे,
पेंचा का घणा रसीला हो, म्हारा नवा नगर का भेरू।
भेरूजी के घुघरा बाजे,
में जाणी के इंदर गाजे हो, म्हारा नवा नगर का भेरू।
भेरूजी के भाला भळक्या,
में जाणी के बिजली चमकी हो, म्हारा नवा नगर का भेरू।
भेरूजी के मोती सोवे,
लालाँ का घणा रसीला हो, म्हारा नवा नगर का भेरू।
भेरूजी के घुघरा बाजे,
में जाणी के इंदर गाजे हो, म्हारा नवा नगर का भेरू।
भेरूजी के कटार भळके,
में जाणी के बिजली चमकी हो, म्हारा नवा नगर का भेरू।

भेरूजी के कंठी सोवे,
डोरा का घणा रसीला हो, म्हारा नवा नगर का भेरू।

भेरूजी को पगड़ी शोभा दे रही है, वे उसमें लगने वाले पेंच के बड़े शौकीन हैं। भेरूजी के चलने से घुँघरू बज रहे हैं, मैं समझी की इन्द्रदेव गरज रहे (मेघ गर्जना) हैं। ऐसे हैं मेरे नये नगर के भेरूजी। भेरूजी के हाथ में भाला चमक रहा है, मैं समझी की बिजली चमक रही है। भेरूजी को मोती शोभा दे रहे हैं, लेकिन वे लाल (रत्न) के बड़े शौकीन हैं। भेरूजी के हाथ में कटार चमक रही है, मैं समझी की बिजली चमक रही है। मेरे भेरूजी को कंठी शोभा देती है, लेकिन वे डोरे के बड़े शौकीन हैं। ऐसे हैं मेरे नये नगर के भेरूजी।

भेरू वन्दना

ऊना सरवरिया नी पाळ, भेरूजी पागाँ बाँधे हो राज।
म्हारा घणा हठीला भेरू।
भेरूजी छड़ियाँ से मती मारो, म्हारो जीवड़ो थर-थर काँपे।
म्हारा घणा हठीला भेरू।
म्हारी बैंया को चुड़लो तड़ेके हो राज।
ऊना सरवरिया नी पाळ, भेरूजी कुण्डल पेरे हो राज।
म्हारा घणा हठीला भेरू।
भेरूजी छड़ियाँ से मती मारो, म्हारो जीवड़ो थर-थर काँपें।
म्हारा घणा हठीला भेरू।
म्हारा बाला चुनड़ी फाटे हो राज।
म्हारा घणा हठीला भेरू।

उस सरोवर के किनारे भेरूजी पगड़ी बाँध रहे हैं। मेरे हठीले (जिद्दी) भेरूजी! छड़ियों से मत मारो, मेरा हृदय थर-थर काँपता है। मेरे हठीले भेरूजी! मेरी कलाईयों की चूड़ियाँ तड़क जायेंगी। उस सरोवर के किनारे भेरूजी कुण्डल पहन रहे हैं। मेरे हठीले भेरूजी! छड़ियों से मत मारो, मेरा हृदय थर-थर काँपता है। मेरे बालक भेरू! मेरी चुनरी फट जायेगी।

भेरू वन्दना

अच्छी धूम मचाई रे भेरूजी, अच्छी परजा लाई रे।
काला-मतवाला भेरू, अच्छी धूम मचाई रे।
चालती सी पटेलन, पूजापो लेकर आई रे।
चालती सी कुमारण, कलस्यो लेकर आई रे।
काला-मतवाला भेरू अच्छी धूम मचाई रे।
चालती सी सुतारण, बाजोट लेकर आई रे।

चालती सी सुनारण गेणा लेकर आई रे।
काला-मतवाला भेरू अच्छी धूम मचाई रे।
चालती सी मालण, हार-फूल लेकर आई रे।
चालती सी बजाजण जामा लेकर आई रे।
काला-मतवाला भेरू अच्छी धूम मचाई रे।

हे श्याम वर्ण मतवाले भेरूजी! आपने बड़ी धूम मचाई (प्रभावित किया), अच्छी प्रजा आपकी सेवा में अनेकानेक सामग्री लेकर उपस्थित हुई है। चलते-चलते गाँव की पटेलन पूजन सामग्री लेकर, कुम्हारिन कलश लेकर, सुतारिन आसन हेतु बाजोट (लकड़ी की चौकी) लेकर उपस्थित हुई है। इसके अलावा चलते-चलते सुतारिन आभूषण लेकर, मालन हार-फूल लेकर, तथा बजाजन जामा (वस्त्र) लेकर सेवा में उपस्थित हुई हैं।

शीतला वन्दना

माय बैठी ऊँचा पहाड़ पे,
सबका मन की सुणे।
कोई अन्न माँगे, धन माँगे कोई दुखी परवार,
माय म्हारी सीतला भवानी।
आय लँगड़ो करे रे अरदास,
सबका मन का सुणे।
माय सबके देती ज्ञान, आमना पूरी करें।
माय देख रे, मुसकाय सबकी साँझी भरे।
मालवा की सीतला माय,
सबका मन की सुणे।

माता ऊँचे पहाड़ पर बैठी हैं, लेकिन वह सबके मन की इच्छा पूर्ण करती हैं। मेरी माँ शीतला भवानी से कोई दुखी परिवार अन्न माँगता है, कोई धन। अपंग भी आकर प्रार्थना करता है, वह सबके मन की सुनती हैं। माता सबको ज्ञान देती हैं और मनोकामना पूर्ण करती हैं। वह सबको देखकर प्रसन्न होती हैं तथा सबकी गोद हरी-भरी करती हैं। मालवा की माता शीतला सबके मन की पुकार सुनती हैं।

शीतला वन्दना

सीतला माता का मंदर आगे दूदा की कढ़ाई हैं।
न्हाई-धोई कर्‌या असनान,
के झाँझर कटे भूल्या म्हारी माय?
बागाँ में भूल्या वो माँ बई, बगीचा में भूल्या।

भूल्या अणी सरवरिया की पाल हो,
के झाँझर कटे भूल्या म्हारी माय ?
सीतला माय ....
माथा ने भम्मर घड़ाव जरनी,
के टिलड़ी की लागी जगा जोत,
के झाँझर कटे भूल्या म्हारी माय ?
गळा ने ठुस्सी घड़ाव जरनी,
के बजट्टी की लागी जगाजोत।
के झाँझर कटे भूल्या वो म्हारी माय ?
सीतला माय ....

शीतला माता के मन्दिर के सामने दूध से भरा हुआ कढ़ाव है। माँ ने उसमें स्नान किया, लेकिन अपनी पायल कहीं भूल आई। तब उनकी सेविका कहती है– बागों में भूली या बगीचें में, शायद इस सरोवर के किनारे अपनी पायल भूल आईं ? माता के मस्तक के लिए भम्मर घड़ाओ, उनकी बिंदिया चमाचम चमक रही है। गले के लिए ठुस्सी घड़ाओ, उनकी बजट्टी जगमगा रही है। माता आप पायल कहाँ भूल आईं ?

पूरबज

सुसराजी ने बाग लगाविया जी,
ओजी सासूजी ने सींच्या निर्मल नीर,
गेलाँ में पूरबज रमी रया जी।
पेलाँ तो पीता था दूद, ओजी अब तो लो नी गेरी धूप।
बागाँ में पूरबज रमी रया जी,
जेठजी ने बाग लगाविया जी,
ओ जी जेठानी ने सींच्या निर्मल नीर,
बागाँ में पूरबज रमी रया जी,
पेलाँ तो झूलता पालणेजी, ओ जी अब तो झूलो नी काचा सूत।
गेलाँ में पूरबज रमी रया जी।
देवरजी ने बाग लगाविया जी,
ओ जी देराणी ने सींच्या निर्मल नीर।
बागाँ में पूरबज रमी रया जी।
पेलाँ तो रमता आँगणे जी, ओजी अब तो रमो नी देवळ माय।
गेलाँ में पूरबज रमी रया जी।

ससुरजी ने बगीचा लगाया है और सासूजी ने निर्मल जल से सींचा है, गलियों में पूर्वज रम

रहे हैं। हे पूर्वज! आप पहले तो दूध पीते थे, अब गहरी धूप लीजिए। जेठजी ने बगीचा लगाया है और जेठानी ने उसे निर्मल जल से सींचा है। बगिया में पूर्वज रम रहे हैं। पहले आप पालने में झूलते थे, अब आप कच्चे सूत पर झूलिये। देवरजी ने बगीचा लगाया है और देवरानी ने उसे निर्मल जल से सींचा है। बगिया में पूर्वज रम रहे हैं। पहले आप आँगन में खेलते थे, अब तो आप मंदिर में रमण कर रहे हैं।

पूरबज

सरग उड़न्ती साँवली, म्हारो संदेसो लेती जा।
जई बूड़ा गल्डा से यूँ कीजे,
तमारे घर बरदोड़ा हो।
ताळा जकड़्या लोया का, ने जकड़्या बज्जर कीवाड़।
काचा सूत का पालना,
बन्द्या है सरग दुवार।
बरद करो बरदावणा, हमारो तो आवणों नी होय।

स्वर्ग तक उड़ जाने वाली साँवली चिड़िया! मेरा संदेशा लेती जा। जाकर उन बुजुर्गों (पूर्वजों) को यूँ कहना कि– आपके घर बधाई प्रसंग (शुभ प्रसंग) आया है। वे कहते हैं वज्र जैसे कठोर दरवाजे में लोहे के ताले जकड़े हुए हैं तथा स्वर्ग के द्वार पर कच्चे सूत के पालने बँधे हैं (हम विवश हैं), लेकिन आप अपना शुभ कार्य करें, हमारा आना नहीं हो पाएगा।

नाग वन्दना

म्हारा नागजी गया परदेस वो,
नागण राणी मेलाँ में दिवलो क्यों जोयो ?
म्हारा नागजी तो आवे आधी रात हो,
सासूजी! मेलाँ में दिवलो यूँ जोयो।
म्हारा नागजी तो गया परदेस वो,
नागण राणी मेलाँ में टीको क्यों पेर्‌यो ?
म्हारा नागजी तो आवे आधी रात हो ?
सासूजी! मेलाँ में टीका यूँ पेर्‌यो।
म्हारा नागजी तो गया परदेस वो,
नागण राणी मेलाँ में हार क्यों पेर्‌यो ?
म्हारा नागजी तो आवे आधी रात हो,
सासूजी! मेलाँ में हार यूँ पेर्‌यो।

मेरे नागजी परदेश गए हैं। नागिन रानी! आपने महल में दीपक क्यों प्रज्ज्वलित किया ?

वे कहती हैं– मेरे नागजी तो आधी रात को (देर रात) आते हैं, सासूजी! इसलिए मैंने महल में दीपक लगाया है। मेरे नागजी तो परदेश गए हैं, नागिन रानी! आपने महलों में टीका क्यों पहना हैं? सासूजी! मेरे नागजी तो आधी रात को आते हैं, इसलिए मैंने महलों में टीका पहना। गीत में इस प्रकार हार पहनने पर नागिन रानी से प्रश्न किया गया है।

नाग वन्दना

नागजी! के लख आवे बाँझा–बाँझूली,
के लख बालूड़ा की माय?
बासक राजा फूलाँकी बाड़ी में रमी रया।
नागजी! नौलख आवे बाँझा–बाँझूली,
दस लख बालूड़ा की माय।
नागजी! कईं तो माँगे बाँझा–बाँझूली,
कईं तो माँगे बालूड़ा की माय?
नागजी! पुत्तर माँगे बाँझा–बाँझूली,
अन–धन माँगे बालूड़ा की माय।
बासक राजा फूलों की बाड़ी में रमी रया।

हे नागदेव! आपके द्वार पर कितने लाख नि:संतान नर–नारी आते हैं ? नागदेवजी फूलों की बाड़ी (बगिया) में विचरण कर रहे हैं। आपके यहाँ नौ लाख नि:संतान नर–नारी आते हैं तथा दस लाख संतानवती नारियाँ आती हैं। वे आपसे क्या याचना करते हैं ? बाँझ–बाँझनी पुत्र चाहते हैं तथा संतानवती माताएँ अन्न व धन की अभिलाषा रखती हैं।

देव महाराज

ताँबा पीतल को बेवड़ों कईं गूजरण पाणी जाय।
बारा–बारा बेवड़ो लावे माना गुजरी जी, कईं पीवे देवनारायण।
पीता–पीता छकी गया धरमी माँगे एसो देवाँजी।
आवे–आवे लछमी अन्ते घणी धरमी माये जे जे कार।
एकज दीजो म्हारा धरमी बालूड़ो।
बालूड़ो थारा देवरा मेलूँ रखवालजी।
एकज दीजो म्हारा धरमी बालूड़ो।
थारा गायाँ में मेलूँ रखवालजी।

ताँबा–पीतल का बेड़ा लेकर माना गूजरी पानी भरने जा रही हैं। माना गूजरी बारह–बारह बेड़े पानी भरकर ला रही हैं और क्या देव महाराज पी रहे हैं? पीते–पीते तृप्त हो गये, धरमी

सेवक को जो चाहिए ऐसा वे देना चाहते हैं। अन्न-धन-लक्ष्मी तथा धरमी की जय-जयकार होगी। माना गूजरी कहती है- देव महाराज! मुझे एक पुत्र दीजिए। उस बालक को आपके देवरे का रखवाला बनाकर सौंप दूँगी। पुन: कहती है- हे देव! मात्र मुझे एक बालक दीजिए। आपकी गायों का ग्वाला बनाकर सौंप दूँगी।

देव महाराज

सुतार्‌या नी गलियाँ हो देवनारायण बाँसुरी बजावे।
बाँसुरी बजावे हो देवनारायण गौवा जरावे।
कुमार्‌या की गलियाँ हो देवनारायण बाँसुरी बजावे।
बाँसुरी बजावे हो देवनारायण गौवा चरावे।
चालर धीरे-धीरे हाँको म्हारा देवनारायण।
खुरी ऊखाड़े म्हारा आँगणा।
काची करण की नीम वो गुजरण ताँबा वरणी ईंट।
पक्को बंदई दूँ थारो आँगणो हो गुजरण।
पक्को बंदई दूँ थारो ओटलो।

सुतार की गलियों में देवनारायण बाँसुरी बजा रहे हैं। बाँसुरी बजाते वे गाएँ चरा रहे हैं। इसी तरह कुम्हार की गलियों में देवनारायण बाँसुरी बजा रहे हैं। अरे मेरे देव महाराज! चालर (गाय) को धीरे-धीरे ले जाओ। वह खुरों से आँगन उखेड़ देगी। अरे गूजरी! आँगन की नींव कच्ची है तथा उसमें ताँबई रंग की ईंट लगी हैं (निम्न स्तर की)। अरे गूजरी! मैं आँगन पक्का बनवा दूँगा और तुम्हारा ओटला (चबूतरा) पक्का बनवा दूँगा।

सती माता

माथा ने भम्मर घड़ाव रे सेवग म्हारा,
सायब को डोली चंदन नीचे ऊबो।
चंदन नीचे ऊबो, चमेली नीचे ऊबो,
सायबजी से छेटी मती पाड़ो, रे सेवग म्हारा।
सायब को डोलो चंदन नीचे ऊबो।
बैंयन को चुड़लो चिराव, रे सेवग म्हारा,
सायब को डोलो चंदन नीचे ऊबो।
चंदन नीचे ऊबो, चमेली नीचे ऊबो,
सायबजी से छेटी मती पाड़ो, रे सेवग म्हारा।

अरे सेवक (स्वजन)! मेरे माथे के लिए भम्मर घड़वा दो। मेरे स्वामी का डोला (अर्थी) चंदन और चमेली-वृक्ष के नीचे रुका हुआ है। मुझे उनसे दूर मत करो।

मेरी बाँहों के लिए चुड़ला बनवा दो, मेरे स्वामी का डोला चंदन और चमेली-वृक्ष के नीचे ठहरा हुआ है।

सती माता

सती माता का डेरा हरिया बागाँ में दीदा,
लीला-पीला तंबूड़ा तणाया हो राज।
म्हारो मन तरसे दरसण के।
दरसण दो माता परसण होव।
म्हारो थर-थर जीवड़ो काँपे हो राज,
म्हारो मन तरसे दरसण के।
हाता में लई हूँ तो फूल-पूजापो, पूजा करवा के।
म्हारो मन तरसे दरसण के।

हे सती माता! आपने अपने डेरे हरे-भरे बाग में दिए हैं। वहाँ पर आपने हरे-पीले तम्बू तनाए हैं। मेरा मन आपके दर्शन के लिए तरस रहा है। मुझे दर्शन दो। अरे माता! प्रसन्न हो और दर्शन दो। मेरा हृदय थर-थर काँप रहा है। मैं अपने हाथ में पूजा के फूल लेकर आई हूँ, मेरा मन दर्शन के लिए तरस रहा है।

जुझार जी (पाल्या महाराज)

माँजी वो बड़ पीपल नी डाल,
फूलाँना झूला बाँधिया।
माँजी वो झूला झूलेगा जुझार सरका लाल,
फूलाँना झूला बाँधिया।
माँजी वो झूला देवेगा मोहन सरका लाल,
फूलाँना झूला बाँधिया।
माँजी वो झूला देवेगा सोहन सरका लाल,
फूलाँना झूला बाँधिया।

हे माँ! वट और पीपल वृक्ष की डाली पर झूला बाँधा है। उस पर जुझारजी जैसे लाल झूलेंगे। उन्हें झूला देंगे मोहन जैसे लाल। झूला झूलेंगे पाल्या महाराज जैसे लाल, उन्हें झुलाएँगे सोहन जैसे लाल।

जुझार जी

जुझारजी धड़ तो धरती में, पग पायड़ा में हो,
म्हारा साँचा जुझार।

गेरा-गेरा रण में जुझार जी।
जुझारजी सीसा-केरी पागाँ,
जुझारजी, काना केरा मोती, अरे पेंचा प्यारी लागे हो,
म्हारा साँचा जुझार।
जुझारजी, हाथों केरी घड़ियाँ,
जुझारजी, अंगा केरा जामा, अरे केसर प्यारी लागे हो,
म्हारा साँचा जुझार।

हे जुझारजी! आपका धड़ तो धरती पर, पैर घोड़े पर हैं, मेरे वीर जुझारजी वीरतापूर्वक रण में लड़े। आपके शीश की पगड़ी, कान के मोती तथा पेंच आकर्षक लग रहे हैं। आपके हाथ की घड़ियाँ सुन्दर लग रही हैं। जुझारजी! आपके अंग का जामा तथा उसका केसरिया रंग आकर्षक लग रहे हैं।

परीमाता

जद हो परी की गाड़ी काँकड़ आई,
काँकड़ हालीड़ा लुंबाय हो परीबाई।
एसी-एसी गाड़ी नजराँ नी देखी।
जद हो परी की गाड़ी गुवा में आई,
गुवा में गुवाल्या लुंबाय हो परीबाई।
एसी-एसी गाड़ी हमने नजराँ नी देखी।
जद हो परी की गाड़ी सेर्‌या में आई,
सेर्‌या में बालूड़ा लुंबाय हो परीबाई।
एसी-एसी गाड़ी हमने नजराँ नी देखी।

जब परीमाता की गाड़ी काँकड़ (गाँव की सीमा) पर आई तो हाली लुभा गए। जब वे गुवा (वह स्थान जहाँ गाय-ढोर एकत्र होते हैं) में आई तो ग्वाले लुभा गए। जब सेरी (गाँव की गलियाँ) में आईं तो बालक लुभा गए। वे कहते हैं माता! ऐसी गाड़ी हमने पहले कभी नहीं देखी थी।

परीमाता

परीबाई भम्मर तो तम पेरो वो,
वैतरणी नदियाँ में बेड़ा पार लगाजो वो।
परीबाई सोना सरीखों अंग वो,
रूपा सरीखो रूप, जमारों यूँईं गवायो वो।
परीबाई गीता भगवत सुणजो वो,

सुणजो चंत लगाय, जमारो यूँईं गवायों वो।
परीबाई झुमकी तो तम पेरो वो,
वैतरणी नदियाँ में बेड़ा पार लगाजो वो।
परीबाई सोना सरीखों अंग वो,
रूपा सरीखो रूप, जमारों यूँईं गवायो वो।
परीबाई गीता भगवत सुणजो वो,
सुणजो चंत लगाय, जमारो यूँईं गवायो वो।
परीबाई पायल तो तम पेरो वो,
वैतरणी नदियाँ में पार लगाजो वो।
परीबाई सोना सरीखो अंग वो,
रूपा सरीखो रूप, जमारो यूँईं गवायो वो।

हे परीमाता! आप मस्तक पर भम्मर पहनती हैं। आप वैतरिणी नदी से हमें पार लगा देना। परीबाई स्वर्ण के समान दैदीप्यमान आपका रंग-रूप है। आप सुन्दरी की तरह रूपवान् हैं। यह जन्म यूँ ही व्यर्थ गँवा दिया। आप गीता भागवत चित्त लगाकर श्रवण करना। यह जन्म यूँ ही व्यर्थ गँवा दिया।

इसी प्रकार गीत में परीबाई झुमकी और पायल आदि आभूषण पहने हुये हैं, यह वर्णित हुआ है।

जन्म

जाई ने कीजो उना चीरा का पेरैया के,
पेंचा का निरखैया के, दाई ने बेग बुलाओ इना घर में।
रंग उड़े रे गुलाल इना घर में।
पाणी पड़े रे तुसार इना घर में।
आप तो जच्चा रानी लाल लई सूता।
गोपाल लई सूता ने हमने लगाई दोड़ा-दोड़ इना घर में।
रंग उड़े रे गुलाल इना घर में,
पाणी पड़े रे तुसार इना घर में।
जाई ने की जो उना कंठी का पेरैया के,
चेना का निरखैया के, सासूजी ने बेग बुलाओ इना घर में।
रंग उड़े रे गुलाल इना घर में।
पाणी पड़े रे तुसार इना घर में।
आप तो जच्चा रानी लाल लई सूता,

गोपाल नई सूता ने हमने लगाई दोड़ा-दोड़ इना घर में।
रंग उड़े रे गुलाल इना घर में,
पाणी पड़े रे तुसार इना घर में।

कुल वधू अपने पति को संदेश देती है- जाकर कहना उन पगड़ी (साफा पहनने वाले को, पेंचों को निहारने वाले को अर्थात् पतिदेव को) कि दाई को इस घर में जल्दी बुलाओ। इस घर में रंग-गुलाल उड़ रहा है। पानी की बौछार हो रही है। अरे जच्चारानी! आप तो बेटे को लेकर सो रही हैं, हमने ही दौड़ा-दौड़ घर में लगाई है। अरे! जाकर कहो उन कंठी पहनने वाले को, चेनों को निहारने वाले को, इस घर में रंग गुलाल उड़ रहा है। पानी की बौछार हो रही है। अरे जच्चारानी! आप तो बेटे को लेकर सोईं हैं। हमने ही इस घर में दौड़ा-दौड़ लगाई है।

जन्म

माता जसोदा जलमा जुवारे (पूजे)।
म्हारा कृष्णजी मुगट पेरे हो राज,
माता जसोदा जलमा जुवारे,
म्हारा कृष्णजी मोती पेरे हो राज,
आगा रो रे लालजी, ने पाछा रो रे कान्हजी।
हरि ने छाँटो राळाँ हो राज।
माता जसोदा जलमा जुवारे।
म्हारा कृष्णजी कड़ा पेरे हो राज,
माता जसोदा जलमा जुवारे,
म्हारा कृष्णजी झगल्यो पेरे हो राज।
आगा रो रे लालजी ने, पाछा रो रे कान्हजी।
हरि ने छाँटो राळाँ हो राज।

माता यशोदा जलवाय पूज रही हैं। मेरे कृष्णजी मुकुट पहने हुए हैं। मेरे कृष्णजी मोती पहने हुए हैं। मेरे लालजी आगे रहो, मेरे कान्हाजी पीछे रहो (आगे-पीछे रहो अर्थात् संग में रहो) ईश्वर का पूजन करें। माता यशोदा जलवाय पूज रही हैं। मेरे कृष्णजी कड़े पहने हुए हैं। वे झगल्या (पोशाक) पहने हुए हैं। मेरे आगे पीछे ही रहो।

जन्म

गोकुल कृष्ण जन्म लियो माई।
कोन की कुखिया से जन्म लियो है ?
कोन के लाल कहाये री माई ?

देवकी की कुखिया से जनम लियो है,
जसोदा के लाल कहायो री माई।
गोकुल .... ।
कायन से नाळो मोयो री माई ?
कायन गाँठ लगाई री दाई ?
सोना-छुरी से नाळो मोयो री माई।
रेसम गाँठ लगाई री दाई।
गोकुल .... ।
बाबा नंद घर झगड़त दाई।
दोई लाल की बधाई री माई।
सोना का कंगना घड़ाओ जसोदा।
दाई के हाथ पेराओ री माई।
गोकुल कृष्ण जन्म लियो माई।

अरे माई! गोकुल में श्री कृष्णजी ने जन्म लिया है। किसकी कोख से कान्हा ने जन्म लिया है? वे किसके पुत्र कहलाए हैं ? उन्होंने देवकी की कोख से जन्म लिया है और यशोदा के पुत्र कहलाए हैं। किससे नाल काटी गई है और किससे गाँठ लगाई गई है? स्वर्ण-छुरी से नाल काटी गई है और रेशम से गाँठ लगाई है। गोकुल में कृष्णजी ने जन्म लिया है। बाबा नन्द से दाई झगड़ रही हैं। मुझे लाल की बधाई दीजिए। यशोदा! स्वर्ण कंकण घड़ाओ और दाई के हाथ में पहनाओ।

जन्म

माथा ने भम्मर घड़ावजो,
म्हारे टीको रतन जड़ाओ हो रसिया।
लाय दो वाला चुनड़ी।
लाईदाँ-लाइँदा काँई करो ?
म्हारे आज जलवाँ की रात हो रसिया।
लाईंदो वाला चुनड़ी।

मेरे स्वामी! माथे के लिए भम्मर बनवाओ, और मेरे टीके में रत्न जड़वाओ। हे प्रिय! मेरे लिए चुनरी ला दो। ला देंगे, ला देंगे क्या करते हो ? आज मेरी जलवाय (प्रसूति पश्चात् जल-पूजा) की रात है। मेरे लिये चुनरी ला दो।

गीत में अन्य आभूषणों का नाम जोड़कर गीत को बढ़ाया जाता है।

यज्ञोपवीत

कासी री बाट रे कुँवरा, घणी रे सुहेली,
जनोया पेरन्ता थारा दादाजी बोल्या।
केवो तो कासी भणवा जावाँ?
कासी री बाट रे कुँवरा, चलत-चलत दु:खे थारा पाँव।
कासी री बाट रे कुँवरा, घणी रे सुहेली,
जनोया पेरन्ता थारा काकाजी बोल्या।
केवो तो कासी भणवा जावाँ?
कासी री बाट रे कुँवरा, चलत-चलत दु:खे थारा पाँव।

बेटा! काशी का मार्ग बहुत ही सुहावना है। जनेऊ पहनते हुए दादाजी बताते हैं। बटुक कहता है- कहो तो काशी जाऊँ? वे कहते हैं- बेटा! काशी की राह चलते-चलते तेरे पैर दर्द करेंगे। यही बात बटुक के काकाजी भी कहते हैं।

यज्ञोपवीत

नानो कासी भणवा जाय,
पिताजी उनका जावा नी दे।
माता जीमावे दूधा-भात,
हटीला नाना नई जीमे रे।
तमारा पिताजी की लम्बी पटसाल,
हटीला नाना यईं भणो रे।
माता लड़ावे दूणा लाड़,
हटीला नाना यईं भणो रे।

बालक विद्याध्ययन हेतु काशी जा रहा है। उसके पिताजी उसे नहीं जाने दे रहे हैं। माताजी दूध-भात खिला रही हैं, लेकिन हठीला बालक नहीं खा रहा है। वे कहती हैं- तुम्हारे पिताजी की बहुत बड़ी पटसाल (छत वाला प्रांगण) है। तुम यहीं अध्ययन करो। माता और दुगुना दुलार करते हुए कहती है- हठीले बेटे! तुम यहीं पढ़ो।

यज्ञोपवीत

समदरिया का एले-पेले पार,
गुरूजी ए माण्ड्या बैठना।
इतरी तो देर नाना तमें क्यों रे लगाड़ी,
गुरूजी! गया था हमारा दाऊजी का देस,

तो माताबई ए राव्ड्या बेठणा।
आओ रे नाना! बेठो पटसाळ,
तो जनोई की वेला वई रई।
गुरूजी पूछे हँसी-हँसी बात,
इतनी तो देर नाना तमे क्यों रे लगाड़ी ,
गुरूजी! गया था हमारी बेन्याबई का देस।
तो बेन्याबई ए भोजन जिमाड्या जी।
आओ रे नाना! बेठो पटसाळ,
तो जनोई की वेला वई रई।
पंडित वेद पड़ी रया, नानों जनोई पेरी रयो।
अपणी माताबई ने छाया खुसी का इ दनृ,
तो बेन्याबई ने आरती सँजोई मेली।
आओ हो दाऊजी नेग चुकाड़ो,
वीराजी की जनोई वई रई।

समुद्र के किनारे गुरूजी बैठे हैं। वे जनेऊ संस्कार हेतु बालक का इन्तज़ार कर रहे हैं। देरी हो जाने पर वे उससे पूछते हैं कि- तुमने इतनी देर कहाँ लगाई ? गुरूजी! मैं पिताजी के देश गया था, वहाँ माता ने बिछावन बिछाई और बैठा लिया। और बोली- आओ बेटा! यहाँ प्रांगण में बैठो।

जनेऊ का समय हो रहा है, गुरूजी पुनः हँस-हँस कर बातें पूछ रहे हैं। बेटा! इतनी देर तुमने कहाँ लगाई ? गुरूजी! मैं अपनी बहन के देश गया था। वहाँ बहन ने मुझे भोजन कराया। आओ बेटा! प्रांगण में बैठो, जनेऊ का समय हो रहा है।

पंडित वेद पाठ कर रहे हैं, बालक जनेऊ पहन रहा है। माता को यह अवसर बहुत आनन्दित कर रहा है। बहन ने आरती सजा रखी है। आओ पिताजी नेंग चुकाओ, भाई की जनेऊ हो रही है।

यज्ञोपवीत

जद रघुनंदन काँकड़े आया,
काँकड़ का काँकड़्या लुम्बाय रया जी रामा।
कृष्ण-सुदामा दोई पेरे जनोई हो रामा।
आँगणे बाजे ढोल-नगारा।
मण्डप में पंडित वेद पढ़ावेजी रामा।
कृष्ण-सुदामा दोई पेरे जनोई हो रामा।
जद रघुनंदन राय आँगणे आया,

आँगण में बालूड़ा लुम्बाय रया जी रामा।
कृष्ण-सुदामा दोई पेरे जनोई हो रामा।
आँगणे बाजे सरनाई हो रामा।
मण्डप में पंडित वेद पढ़ावेजी रामा।
कृष्ण-सुदामा दोई पेरे जनोई रामा।

कृष्ण-सुदामा के जनेऊ संस्कार में जब श्रीराम पधारे तो गाँव के काँकड़ पर उपस्थित जन बहुत हर्षित हुए। आँगन में ढोल नगाड़े बज रहे हैं। मण्डप में पंडित वेद पाठ करा रहे हैं। जब श्रीराम आँगन में आये तो आँगन के बच्चे लुभा गए (हर्षित हो गए)। आँगन में शहनाई बज रही हैं। मण्डप में पंडित वेद पाठ कर रहे हैं और कृष्ण-सुदामा दोनों जनेऊ पहन रहे हैं।

यज्ञोपवीत

म्हारा बालरिया ब्रह्मचारी हो,
लाया कायन की तमने आवे हो।
हमने लरिया मोती की आवे हो।
तमारा दाऊजी तमने अच्छा-अच्छा मोती पेरावे हो,
अच्छी-अच्छी लरियाँ पेरावे हो।
म्हारा बालरियाँ ब्रह्मचारी हो,
लाया कायन की तमने आवे हो।
हमने डोरा-घड़ियाँ की आवे हो।
तमारा बीराजी तमने अच्छा-अच्छा डोरा पेरावे हो,
अच्छी-अच्छी घड़ियाँ पेरावे हो।

मेरे बाल ब्रह्मचारी तुम्हें किस चीज की अभिलाषा है? मुझे लड़ियों एवं मोती की अभिलाषा है। तुम्हारे पिताजी तुम्हें अच्छे-अच्छे मोती पहनाएँगे, अच्छी-अच्छी लड़ियाँ पहनाएँगे। मेरे बाल ब्रह्मचारी तुम्हें किस चीज की अभिलाषा है? हमें चेन और घड़ियों की अभिलाषा है। तुम्हारे भैया तुम्हें अच्छे-अच्छे डोरे पहनाएँगे, वे अच्छी-अच्छी घड़ियाँ पहनाएँगे।

यज्ञोपवीत

म्हारा बाला रे, ब्रह्मचारी रे, तमके काय की हरस आवे रे।
हमके जनवई की हरस आवे रे।
तम जाई ने कीजो तमारा पिताजी के,
तमके जनवई पेरई समजावे रे।
म्हारा बाला रे, ब्रह्मचारी रे, तमके काय की हरस आवे रे।

हमके पोथी की हरस आवे रे।
तम जाई ने कीजो तमारा मामाजी के,
तमके पोथी दई समझावे रे।
म्हारा बाला रे, ब्रह्मचारी रे, तमके काय की हरस आवे रे।
हमके दंड-कमंडल की हरस आवे रे।
तम जाई ने कीजो तमारा फूफाजी के,
तमके दंड-कमंडल दई समजावे रे।
म्हारा बाला रे, ब्रह्मचारी रे, तमके काय की हरस आवे रे।

मेरे बाल ब्रह्मचारी! तुम्हें किसकी अभिलाषा है? मुझे जनेऊ की अभिलाषा है। तुम अपने पिताजी से कहना- वे तुम्हें जनेऊ पहनाकर समझा देंगे। मेरे बाल ब्रह्मचारी! तुम्हें किसकी अभिलाषा है? मुझे पोथी (पुस्तक) की अभिलाषा है। तुम अपने मामाजी से कहना वे तुम्हें पोथी देकर समझा देंगे। मेरे बाल ब्रह्मचारी! तुम्हें किसकी अभिलाषा है? मुझे दंड-कमंडल की अभिलाषा है। तुम अपने फूफाजी से कहना वे तुम्हें दंड-कमंडल देकर समझा देंगे।

प्रभाती

जाग-जाग म्हारी गंगा मैया,
दुनिया दरसन आयी जी।
गंगा जाग्या, जमना जाग्या,
जाग्या सरजू मैया जी।
जाग-जाग ....
सूरज जाग्या, चंदा जाग्या,
जाग्या नवलख तारा जी।
जाग-जाग ....
राधा जागी, रूखमा जागी,
जाग्या मुरली वाला जी।
जाग-जाग ....
राम जाग्या, लछमण जाग्या,
जागी सीता मैयाजी।
जाग-जाग ....
रिद्धि जाग्या, सिद्धि जाग्या,
जाग्या गणपति देवताजी।
जाग-जाग म्हारी, गंगा मैया,
दुनिया दरसण आयी जी।

मेरी गंगा मैया! जागिये, दुनिया आपके दर्शन हेतु आई है। गंगाजी जाग गई हैं, यमुनाजी जाग गई हैं, साथ ही जाग गई हैं सरयू मैया भी। सूर्य देव जाग गए हैं, चन्द्रमाजी जाग गए हैं, साथ ही जाग गए हैं नौ लाख तारागण भी। राधेजी जाग गई हैं, रुक्मिणीजी भी जाग गई हैं, साथ ही जाग गए हैं मुरलीधर भी। राम जाग गए हैं, लक्ष्मण भी जाग गए हैं, साथ ही जाग गई हैं सीता मैया भी। रिद्धि जागी हैं, सिद्धि जागी हैं साथ ही जागे हैं गणपति देव भी।

प्रभाती

उठोनी राधा-रूखमा,
खोलोनी किवड़िया।
आँगण ऊबा म्हारा सूरज नारायण देव कलाधारी।
उठोनी म्हारी राधा-रूखमा,
खोलोनी फाड़किया।
आँगण ऊबा म्हारा चंद्रमाजी देव कलाधारी।
उठोनी म्हारी राधा-रूखमा,
खोलोनी किवड़िया।
आँगण ऊबा म्हारा गणपति देव कलाधारी।
उठोनी म्हारी राधा-रूखमा,
खोलोनी फाड़किया,
आँगण ऊबा म्हारा कृष्णजी देव कलाधारी।
उठोनी........................ ।

उठिये राधा-रुक्मिणी! दरवाजा खोलिये। मेरे आँगन में भगवान सूर्य नारायण खड़े हैं, जो सब कलाओं में निपुण हैं। इसी प्रकार गीत में राधा-रुक्मिणी से दरवाजा खोलने का आग्रह किया गया है, क्योंकि आँगन में चन्द्रमाजी, गणपतिजी और श्रीकृष्णजी खड़े हैं, जो सारी कलाओं में निपुण हैं।

प्रभाती

ऊँची पीपलड़ी ने तरवर छाया-तरवर छाया।
जाँ हो गजानन्दजी वासो हो वसिया,
जाँ हो सूरजजी वासो हो वसिया।
गजानन्दजी वसिया घड़ी दोय चार-घड़ी दोय चार।
रिद्-सिद् वसी गया फेर दफोरे।
सूरजजी वसिया घड़ी दोय चार-घड़ी दोय चार।

राणी रणादे वसिया फेर दफोरे।
ऊँची पीपलवड़ी ने तरवर छाया-तरवर छाया।
जाँ हो चंद्रमाजी वासो हो वसिया।
जाँ हो ब्रह्माजी वासो हो वसिया।
चंद्रमाजी वसिया घड़ी दोय चार-घड़ी दोय चार।
राणी रोयण बसिया फेर दफोरे।
ब्रह्माजी वसिया घड़ी दोय चार-घड़ी दोय चार।
माता ब्रह्माणी वसिया फेर दफोरे।
ऊँची पीपलड़ी ने तरवर छाया-तरवर छाया।

ऊँचे पीपल वृक्ष की छाया है। जहाँ पर गणपतिजी ने निवास किया है। जहाँ सूर्यदेव ने निवास किया है। गजानंद जी ने दो-चार घड़ी (थोड़ा समय) विश्राम किया, जबकि रिद्धि-सिद्धि दोपहर पश्चात् तक रहीं। इसी प्रकार सूरजजी दो-चार घड़ी रुके और रानी रणादे दोपहर भर रुकी रहीं। गीत में यही बात चन्द्रमाजी, रानी रोहिणी तथा ब्रह्माजी व माता ब्रह्माणी के लिये कही गई है।

प्रभाती

म्हारे गऊँ रे चणा का ढेर पड़्या,
म्हारे अचरा रे कचरा का ढेर पड़्या
इ तो दोड़ता हो सूरजजी रपट पड़्या,
तमने घणी खमा हो म्हारा देवता, क्यो ए पड़्या ?
म्हारे तमारा हो ब्याव की फिकर घणी।
म्हारे गऊँ रे चणा का ढेर पड़्या,
म्हारे अचरा रे कचरा का ढेर पड़्या।
इ तो दोड़ता हो चंद्रमाजी रपट पड़्या।
तमने घणी खमा हो म्हारा देवता, क्यो ए पड़्या ?
म्हारे तमारा हो ब्याव की फिकर घणी।
म्हारे गऊँ रे चणा का ढेर पड़्या,
म्हारे अचरा रे कचरा का ढेर पड़्या।

मेरे यहाँ गेहूँ और चने के ढेर पड़े हैं। मेरे यहाँ कचरे का ढेर पड़ा है। ये तो दौड़ते हुए सूरजजी फिसल गए हैं। अरे मेरे देवता! आपको क्षमा किया, आप क्यों गिर पड़े ? वे कहते हैं- मुझे तुम्हारे विवाह की बहुत चिंता है। चन्द्रमाजी के भी फिसल जाने पर यही प्रश्न किया जा रहा है।

विवाह

सोना को घड़ल्यो हाथ में, राधेजी पाणी जाय।
सामे तो मिलग्या श्रीकृष्ण, पस दोय पाणी पावजी।
कोण राई का डावड़ा, काँईं तमारो नामजी ?
वसुदेवजी का डावड़ा, श्रीकृष्ण म्हारो नाम जी।
तम कोणसा रईं की डावड़ी, ने कँईं तमारो नामजी ?
वृषभान की हम डावड़ी, राधे हमारो नामजी।
पंछी नेज बाँपूँ, घड़ूल्यो साँदूँ, पाणी तो दऊँगा पिलायजी।
पेलो तो मंगल वर दियो, रातों तो काँईं केवायजी,
रातो राधेजी को चुड़लो, रातो राधेजी को हिंगलू पेरे है बारे मासजी।
दूसरो तो मंगल वर दियो, पीलो तो काईं केवायजी।
लीला तो आम्बा-आमली, लीलो तो सोयटो बैठो है आंबा की डालजी।
चौथो तो मंगल वर दियो, धोळो तो काँईं केवायजी,
धोळा धोरी हल जोत्या, धोळा रुई कपासजी।
धोळो बुगलो, सोयटो बेठो हे सरवर पालजी।
पाँचवों तो मंगल वर दियो, काळो तो काईं केवायजी,
काळा है चकरी भमरा, काला वासग नागजी।
काळा तो कृष्णजी रथ चढ़ूया, राधे परणवा जायजी।

स्वर्णकलश हाथ में लेकर राधेजी पानी भरने जा रही थीं। सामने से कृष्णजी मिल गए, हमें चुल्लू भर पानी पिला दीजिए। वे परिचय पूछती हैं- आप किनके बेटे हैं, तथा आपका नाम क्या है ? मैं वसुदेवजी का पुत्र हूँ तथा श्रीकृष्ण मेरा नाम है। फिर वे पूछते हैं, आप किनकी बेटी हैं तथा आपका नाम क्या है ? मैं वृषभानुजी की बेटी हूँ, मेरा नाम राधा है। हे राहगीर! मैं रस्सी बाँधूगी, घड़े में जोड़ूँगी, फिर अवश्य पानी पिलाऊँगी। उन्होंने पहला शुभ वर (आशीर्वाद दिया) वो लाल रंग का क्या कहलाता है ? वह तो राधेजी का चूड़ला और राधेजी का हिंगलू (मस्तक पर लगाये जाने वाला कूंकूं) है, जो वे बारह मास पहनती हैं।

दूसरा शुभ वर दिया, वो पीला क्या कहलाता है ? पीली तो हल्दी की गाँठ और राधेजी की नथनी है जो वे बारह मास पहनती हैं। उन्होंने तीसरा शुभ वर दिया। वो हरा क्या कहलाता है ? हरा तो आम और इमली है, और हरा तोता आम की डाली पर बैठा है। चौथा शुभ वर दिया, वो श्वेत वर्ण क्या कहलाता है ? वो श्वेत बैल जो हल में जुता है, श्वेत रुई कपास है। श्वेत बगुला और तोता सरोवर की पाल पर बैठे हैं। पाँचवा शुभ वर दिया वो श्याम रंग का क्या कहलाता है ? श्याम है चकरी और भ्रमर, श्याम वर्ण के वासुकी नाग हैं तथा श्याम वर्ण के ही श्रीकृष्ण जो रथ पर सवार हैं, वे राधेजी ब्याहने जा रहे हैं।

बन्ना/बन्नी

बन्ना थारो बंगलो कितनी दूर रे,
आता-जाता हारी रे बना सरदार।
बन्नी म्हारो बंगलो चंबल पेले पार वो,
दोड़्या चल्या आजो वो बनी सरदार।
बन्ना थारा कुवला नो पाणी घणी दूर रे,
कीच भराव रे म्हारी रमजोल।
बन्नी म्हारा दुपट्टा से पोंछूँ थारा पाँय वो,
गोद्याँ लई चालूँ वो बनी सरदार।

बन्नी (दुल्हन) कहती है- बन्ना (दूल्हा)! आपका बंगला कितनी दूर है ? मैं तो आते-जाते थक गई। बन्नी! मेरा बंगला चम्बल नदी के उस पार है, तुम दौड़ी चली आना। बन्ना आपके कुएँ का पानी बहुत दूर है, वहाँ आने से मेरी पायल कीचड़ में भर जाती है। अरे बन्नी! मैं दुपट्टे से तुम्हारे पैर पोंछ दूँगा और तुम्हें गोदी में उठाकर ले चलूँगा, मेरी प्यारी बन्नी।

बन्ना

बन्ना का दादाजी सरदार अजमेर गया,
बन्ना का ताऊजी सरदार अजमेर गया,
बन्ना की दादीजी ने मंगाया सौदा बन्ना के लिए।
बन्ना की ताईजी ने मंगाया सौदा बन्ना के लिए।
एक तो पान का बीड़ा, दूजी गले की माला,
तीजा शीश का तिलक, हीरा मोती से जड़ा।
बन्ना का नानाजी सरदार अजमेर गया,
बन्ना का मामाजी सरदार अजमेर गया,
बन्ना की नानीजी ने मंगाया सौदा बन्ना के लिए।
बन्ना की मामीजी ने मंगाया सौदा बन्ना के लिए।
एक तो पान की बीड़ा दूजा अंग का जामा,
तीजा हाथ का कड़ा, हीरा मोती से जड़ा।

बन्ने के दादाजी अजमेर गए हैं, बन्ने के ताऊजी अजमेर गए हैं। वहाँ से बन्ने की दादीजी और ताईजी ने बन्ने के लिए सामग्री मँगवाई है, एक तो पान का बीड़ा, दूसरे गले की माला। तीसरा मस्तक के लिए हीरे-मोती से जड़ा तिलक। बन्ना के नानाजी और मामाजी अजमेर गए हैं। बन्ना के नानीजी और मामीजी ने बन्ने के लिए वस्तुएँ मँगवाई हैं। एक तो पान का बीड़ा, दूसरा पहनने के लिए जामा (पोशाक), तीसरा हीरा-मोती से जड़ा हाथ का कड़ा।

बन्ना/बन्नी

म्हारी बाड़ी रा करेला मत तोड़ो जी बना।
मत तोड़ो जी बना, मत तोड़ो जी बना।
म्हारा बाड़ी रा ....
बना का पिताजी तोड़े तो कुछ न कहूँ।
बना की माताजी तोड़े तो, घर से बाहर करी दूँ।
म्हारा बाड़ी रा ....
बना का काकाजी तोड़े तो कुछ न कहूँ।
बना की काकीजी तोड़े तो घर से बाहर करी दूँ।
म्हारा बाड़ी रा ....
बना का भैयाजी कहें तो कुछ न कहूँ।
बना की भावज बई तोड़े तो घर से बाहर करी दूँ।
म्हारा बाड़ी रा करेला मत तोड़ो जी बना।

बन्नी कहती है- अपने दूल्हे से कि- मेरी बगिया से करेले मत तोड़ो। यदि आपके पिताजी, काकाजी, भैया आदि तोड़ें तो कोई बात नहीं, लेकिन आपकी माताजी, काकीजी, भाभीजी इत्यादि तोड़ेंगी तो घर से बाहर कर दूँगी।

बन्ना/बन्नी

अटरियों पे कोयल बोली सवी साँझ।
तम को तो बनड़ी लगना लिखई दूँ अभी हाल।
नई-नई रे बन्ना घर में सासूजी को राज।
तम को तो बन्नी तिरथ पोंचई दूँ अभी हाल।
नई-नई रे बन्ना ढोल्या की सोभा चली जाय।
अटरियों पे कोयल बोली सवी साँझ।
तम को तो बन्नी, हल्दी मोलई दूँ अभी हाल।
नई-नई रे बन्ना घर में जेठानी को राज।
तम को तो बन्नी पियर पोंचई दूँ अभी हाल।
नई-नई रे बन्ना चौका री सोभा चली जाय।
अटरियों पे कोयल बोली सवी साँझ।
तम को तो बन्नी पड़ला मोलई दूँ अभी हाल।
नई-नई रे बन्ना घर में देराणी को राज।
तम को तो बन्नी, न्यारी करी दूँ अभी हाल।
नई-नई रे बन्ना, कोठारी सोभा चली जाय।

अटरियों पे कोयल बोली सवी साँझ।
तम को तो बन्नी, गेणला मोलईं दूँ अभी हाल।
नई-नई रे बन्ना, घर में नणदबई को राज।
तम को तो बन्नी सासरे पोंचई दूँ अभी हाल।
नई-नई रे बन्ना आरती री सोभा चली जाय।
अटरियों पे कोयल बोली सवी साँझ।

घर की अट्टालिका पर संध्या समय कोयल बोल रही है। बन्ना! यदि तुम कहो तो मैं अभी लग्न लिखवा दूँ। बन्नी! नहीं-नहीं घर में सासूजी का राज है। बन्ना! यदि तुम कहो तो इसी समय तीर्थ यात्रा पर भेज दूँ। बन्नी! नहीं-नहीं पलंग की शोभा कम हो जाएगी। बन्ना! यदि तुम कहो तो इसी समय हल्दी खरीद लूँ। बन्नी! नहीं-नहीं घर में जेठानी का राज है। बन्ना! तुम कहो तो इसी समय उन्हें मायके भेज दूँ। बन्नी! नहीं-नहीं रसोईघर की शोभा कम हो जाएगी। बन्ना! तुम कहो तो इसी समय पड़ला (विवाह में दिये जाने वाले वस्त्राभूषण) खरीद दूँ। बन्नी! नहीं-नहीं घर में देरानी का राज है। बन्ना! तुम कहो तो उसे अभी अलग कर दूँ। बन्नी! नहीं-नहीं कमरे की शोभा कम हो जाएगी। बन्ना! तुम कहो तो इसी समय आभूषण खरीद दूँ। बन्नी! नहीं-नहीं घर में ननदबई का राज है। बन्ना! तुम कहो तो इसी समय ससुराल भेज दूँ। बन्नी! नहीं-नहीं आरती की शोभा कम हो जाएगी।

बन्ना/बन्नी

तम खाना खई लो बन्ना कटोर दान का।
सब्जी बनी है आलू की, हलवा बदाम का।
तम हरवा पेरो बन्ना वो भी हजार का।
सब्जी बनी है आलू की, हलवा बदाम का।
तम चेन पेरो बन्ना, वो भी हजार की।
सब्जी बनी है आलू की, हलवा बदाम का।
तम घड़ियाँ पेरो बन्ना वो भी हजार की।
सब्जी बनी है आलू की, हलवा बदाम का।
तम अंगूठी पेरो बन्ना वो भी हजार की।
सब्जी बनी है आलू की, हलवा बदाम का।

बन्ना! तुम कटोरदान में रखा भोजन कर लो। आलू की सब्जी और बादाम का हलवा बना है। बन्ना! तुम हार पहनो लेकिन हजार रुपये वाला। आलू की सब्जी और बादाम का हलवा बना है, आप भोजन कर लो। इसी प्रकार गीत में बन्ने से हजार रुपये की चेन, घड़ी और अँगूठी पहनने का आग्रह किया गया है।

बन्ना/बन्नी

लाड़ी का दादाजी हो घर में छिपी रया,
उनकी दादीजी से करो रे जुबाब।
अदन से बदन से, हीरा से मोती से, पाना से फूलाँ से,
या बनड़ी खुली रई रे।
लाड़ी का पिताजी हो घर में छिपी रया,
उनकी माताबई से करो रे जुबाब।
अदन से बदन से, हीरा से मोती से, पाना से फूलाँ से,
या बनड़ी खुली रई रे।
लाड़ी का भैयाजी हो घर में छिपी रया,
उनकी भाभी से करो रे जुबाब।
अदन से बदन से, हीरा से मोती से, पाना से फूलाँ से,
या बनड़ी खुली रई रे।

वधू के दादाजी घर में छुप रहे हैं, अब उनकी दादीजी से जवाब माँगिये (नेंग)। ये बन्नी सम्पूर्ण रूप (नख-शिख) से हीरा-मोती, पान-फूल आदि से खिल रही है। गीत में यही बात बन्नी के पिताजी और भैयाजी के छुपने पर, माताजी और भाभी से जवाब माँगने एवं उसके रूप-सौन्दर्य के लिए कही गई है।

बन्ना/बन्ना

बन्ना रे इंदौर सरका सेर में तम लगना लिखाजो रे,
बन्ना रे हीरा जड़िया बाग में तम रात रीजो रे।
बन्ना रे मोगरा का हार मोलई लाजो रे।
बन्ना रे बम्बई सरका सेर में तम हल्दी मोलाजो रे,
बन्ना रे हीरा जड़िया बाग में तम रात रीजो रे।
बन्ना रे मोगरा का हार मोलई लाजो रे।
बन्ना रे उज्जण सरका सेर में तम पड़ला मोलाजो रे,
बन्ना रे हीरा जड़िया बाग में तम रात रीजो रे।
बन्ना रे मोगरा का हार मोलई लाजो रे।
बन्ना रे धार सर का सेर में तम गेणला मोलाजो रे,
बन्ना रे हीरा जड़िया बाग में तम रात रीजो रे।
बन्ना रे मोगरा का हार मोलई लाजो रे।

बन्ना! तुम इन्दौर जैसे शहर में लग्न लिखवाना। हीरा जड़े बगिया में रात रहना और मोगरे का हार खरीद लाना। बन्ना! तुम बम्बई जैसे शहर से हल्दी खरीदना। हीरा जड़े बाग में रात्रि

विश्राम करना और मोगरे का हार खरीद लाना। बन्ना! तुम उज्जैन जैसे शहर से पड़ला (वधू के वस्त्राभूषण) लाना, हीरा जड़े बगीचे में विश्राम करना और मोगरे का हार खरीद लाना। बन्ना! तुम धार जैसे शहर से आभूषण खरीदना। हीरा जड़े बाग में रात रहना और साथ में मोगरे का हार लेते आना।

मण्डप

इना मंडप कंकू केरो चाव, पलाणो शरदकुमारजी साँडड़लीजी।
इना साँडड़ली ने पावो रे काचो दूद, पलाणोजी।
इना साँडड़ली के गळे से घूघर-माळ,
या रूमझूम करती रे आवे साँडड़लीजी।
इन मंडप चाँवळ केरो चाव, पलाणो अरुणकुमारजी साँडड़लीजी।
इना साँडड़ली न पावो रे काचो दूद, पलाणोजी।
इना साँडड़ली के गळे रे घूघर-माळ,
या रूमझूम करती रे आवे साँडड़लीजी।
इना मंडप पान केरो चाव,
पलाणो सुभाषकुमारजी साँडड़लीजी।
इना साँडड़ली ने पावो रे काचो दूद, पलाणोजी।
इना साँडड़ली के गळे रे घूघर-माळ,
या रूमझूम करती आवे साँडड़लीजी।

इस मण्डप में कुंकुं की चाह (आवश्यकता) है। शरदकुमारजी आप ऊँटनी पर बैठकर पलायन करो अर्थात् शीघ्रता से जाओ। इस ऊँटनी को कच्चा दूध पिलाओ और जाओ। इस ऊँटनी के गले में घुँघरूओं की माला है, हम चाहते हैं कि वह रुन-झुन करती हुई जल्दी से आये। इस मण्डप में चावल और पान की चाह है इसलिए अरुणकुमारजी और सुभाषकुमारजी से भी ऊँटनी पर बैठकर शीघ्रता से जाने का आग्रह किया गया है।

मण्डप

बाबूलालजी ने लाड़ी बऊ इमें बण्या।
पिया म्हाने मंडप बताओ, मंडप का हम साबला।
विष्णुलालजी ने लाड़ी बऊ इमें बण्या।
पिया म्हाने मंडप बताओ, मंडप का हम साबला।
मंडप माय कंकू को चाव, मंडप में कंकू लावजो।
पिया म्हाने मंडप बताओ, मंडप का हम साबला।

मंडप माय पान को चाव, मंडप में पान लावजो।
पिया म्हाने मंडप बताओ, मंडप का हम साबला।
मदनलालजी ने लाड़ी बऊ इमें बण्या।
पिया म्हाने मंडप बताओ, मंडप का हम साबला।
हजारीलालजी ने लाड़ी बऊ इमें बण्या।
पिया म्हाने मंडप बताओ, मंडप का हम साबला।
इना मंडप हल्दी को चाव, मंडप में हल्दी लावजो।
पिया म्हाने मंडप बताओ, मंडप का हम साबला।
इना मंडप चाँवळ को चाव, मंडप में चाँवळ लावजो।
पिया म्हाने मंडप बताओ, मंडप का हम साबला।

बाबूलालजी, विष्णुलालजी और उनकी पत्नी वहीं हैं। वे कहती हैं– प्रियतम! हमें मण्डप दिखाओ, हम देखने की इच्छुक हैं। मण्डप में कूंकूं की आवश्यकता है, कूंकूं लाओ। इस मण्डप में पान की आवश्यकता है, पान लाओ।

गीत में यही बात मदनलालजी, हजारीलालजी और उनकी पत्नी के लिए कही गई है तथा मण्डप में हल्दी–चावल की आवश्यकता और उसे लाने का ज़िक्र किया गया है।

मण्डप

तम आओ हो जमई राजा इना मांडवे,
भोग्या तम बिना मांडवो नी होय, इंद्रासन बोली चिरकली,
इना मांडवे कंकूड़ा रो चाव, इंद्रासन बोली चिरकली,
इना मांडवे चोखा केरो चाव, इंद्रासन बोली चिरकली,
तम आओ हो जमई राजा, इना मांडवे,
भोग्या तम बिना मांडवो नी होय, इंद्रासन बोली चिरकली,
इना मांडवे पान केरो चाव, इंद्रासन बोली चिरकली,
इना मांडवे माणकखम्ब केरो चाव, इंद्रासन बोली चिरकली,
तम आओ हो जमई राजा इना मांडवे,
भोग्या तम बिना मांडवो नी होय, इंद्रासन बोली चिरकली।

जमाई राजा! आप इस मण्डप में आओ, आपके बिना मण्डप नहीं होगा। इन्द्रासन से चिड़िया बोल रही है। इस मण्डप में कूंकूं और चावल, पान और माणक–खम्ब की आवश्यकता है। इन्द्रासन से चिड़िया बोल रही है। जमाई राजा आप इस मण्डप में आओ। आपके बिना मण्डप नहीं होगा।

बीरा

गोवा बीच पीपळी रे बीरा,
जाँचड़ जोऊँ बीरा नी बाट।
माड़ी जाया, चूनड़ लाया।
चूनड़ लावो तो सगळा सारू लावजो रे बीरा,
नई तो रे, रीजो तमारा देस।
माड़ी जाया, चूनड़ लाया।
चूनड़-चूनड़ कईं करो वो बेन्या,
पंचों में राखूँ बाई के री सोभ।
माड़ी जाया, चूनड़ लाया।
मेलूँ तो ढाल भराय वो बेन्या,
तोलूँ तो तोला तीस की वो बेन्या।
मापूँ तो हात पचास हे रे बीरा,
मेलूँ तो तरसे म्हारो जीव,
ओढूँ तो हीरा खिर पड़े।
बीरो, म्हारो चूनड़ लायो।

गोवे के बीच पीपल-वृक्ष है, जहाँ चढ़कर मैं भाई के आने का इन्तज़ार कर रही हूँ। भाई चुनरी लाया है। भैया! चुनरी लाओ तो सबके लिये लाना, नहीं तो अपने देश में ही रहना। अरे बहन! चूनर-चूनर क्या कर रही हो? पंचों में (समाज के सामने) तुम्हारी शोभा बढ़ाऊँगा। मैं ऐसी चुनरी लाऊँगा कि रखूँ तो बड़ा थाल भर जाये और तौलूँ तो तीस तोला की (उम्दा किस्म की)। बहन कहती है- भैया! उसे नापती हूँ तो पचास हाथ लम्बी है, यदि उसे रख दूँ तो मन तरसता है, ओढूँ तो हीरे गिरने का डर है।

बीरा

म्हारो बीरो लेवाने आयो हो राज।
जदे म्हारो बीरो काँकड़ आयो,
काँकड़ दूब हरियानी हो राज।
जदे म्हारो बीरो बागाँ आयो,
मालण कुवला खनाया हो राज।
जदे म्हारो बीरो सेरयाँ आयो,
सुन्ना रा कलस धराया हो राज।
जदे म्हारा बीरा ने टीका काड़्या,
मोती अक्खत नाख्या हो राज।

अरे स्वामी! मुझे मेरा भाई लिवाने आया है। जब मेरा भाई काँकड़ (गाँव की सीमा में) पर आया तो, वहाँ की दूर्वा हरी-भरी हो गई। जब मेरा भाई बगीचे में आया तो, मालन ने कुआँ खुदवा दिया। जब वह घर के निकट आया तो, स्वागत में स्वर्णकलश रखे गये। जब मेरे भाई को तिलक लगाया गया तो, उसमें मोती-रूपी अक्षत रखे गये।

बीरा

माथा ने भम्मर घड़ावजी यो म्हारा बीराजी।
काना ने झालज घड़ावजी यो म्हारा बीराजी।
कँईं टीलड़ी रतन जड़ावजी यो म्हारा साँवलिया?
ऊँची पाल तलाव की रे म्हारा बीराजी,
कँईं नीचे पीयरियाँ की जी बाट यो म्हारा साँवलिया?
गळा के ठुस्सी घड़ावजी यो म्हारा बीराजी।
हाथा ने चुड़ला घड़ावजी यो म्हारा बीराजी।
कँईं तोड़ा में लूम लगावजी यो म्हारा साँवलिया?
ऊँची पाल तलाव की रे म्हारा बीराजी,
कँईं नीचे पीयरियाँ, की जी बाट यो म्हारा साँवलिया?

भैया! मेरे माथे के लिए भम्मर बनवाना, मेरे कानों के लिए झाले (झुमके) बनवाना। मेरे साँवलिया! क्या मेरे टीके में रत्न जड़वा दोगे ? हे साँवलिया! तालाब की ऊँची पाल है और क्या नीची मायके की राह है?

भैया! मेरे गले के लिये ठुस्सी बनवाना, हाथों के लिए चूड़ियाँ बनवाना। मेरे साँवलिया! क्या मेरे तोड़े (पैर का आभूषण) में घुँघरू लगवा दोगे ? मेरे भैया! ऊँची पाल तालाब की है, मेरे साँवलिया! क्या नीची मायके की राह है?

बीरा

बयड़ा में सालर बीरा अंत घणी,
जीमें दीसे बीरा री पाग वो।
भावज रो, भावज रो, भुरमायो बीरो घर रयो।
काँको बीरो आयो वो, म्हारो काँको बीरो घर रयो ?
काँ का बीरा री जोवती थी बाट वो,
भावज रो, भावज रो, भुरमायो बीरो घर रयो।
शरद बीरो घर आयो, म्हारो अरुण बीरो घर रयो।
सुभाष बीरा की जोवती थी बाट वो,

भावज रो, भावज रो, भुरमायो बीरो घर रयो।
पनघट पे पणियारी बीरा अंत घणी,
जीमें दीसे बीरा री नार वो,
भावज रो, भावज रो, भुरमायो बीरो घर रयो।
सेर्‌याँ में बालूड़ा बीरा अंत घणा,
जीमें खेले बीरा रो लाल वो,
भावज रो, भावज रो, भुरमायो बीरो घर रयो।
मेला में कुँवासी बीरा अंत घणी।
जीमें दीसे बीरा री बेन वो,
भावज रो, भावज रो, भुरमायो बीरो घर रयो।

वटवृक्ष के नीचे कई गायें हैं, जिसमें भैया की पगड़ी दिखाई दे रही है। भाभी द्वारा भरमाया (भ्रमित) हुआ भाई घर पर ही रहा। कौन-सा भाई आया, मेरा कौन-सा भाई घर रहा, और कौन-से भाई की राह देख रही थी? शरद भैया आया, मेरा अरुण भाई घर पर रहा और भैया सुभाष की राह देख रही थी।

पनघट पर कई पनिहारिन हैं, जिसमें भाई की पत्नी (भाभी) दिखाई दे रही हैं। घर के आँगन में बहुत से बालक हैं, जिसमें भाई का बेटा (भतीजा) खेल रहा है। उसी प्रकार महलों में कई कुँवासी (विवाह में आई बहन-बेटियाँ) हैं, जिसमें भाई की बहन दिखाई दे रही हैं।

बीरा

पारस पीपळ का इतरा जो पान है,
इतरा जो लाजो सबके बेस, साँवलिया बीरा।
आजो बेन्याबई का देस, साँवलिया बीरा।
पेलो सिरपा म्हारा सुसराजी पेराजो,
सासू के लाजो नारंगिया घाट साँवलिया बीरा।
आजो बेन्याबई का देस, साँवलिया बीरा।
दूजो सिरपा म्हारा जेठजी के पेराजो,
जेठानी के लाजो पीळो घाट, साँवलिया बीरा।
आजो बेन्याबई का देस, साँवलिया बीरा।
तीजो सिरपा म्हारा देवरजी के पेराजो,
देराणी के लाजो लीलो घाट, साँवलिया बीरा।
आजो बेन्याबई का देस, साँवलिया बीरा।
चौथो सिरपा म्हारा म्हारा नणदोई के पेराजो,

नणदल के पचरंग्याघाट, साँवलिया बीरा।
आजो बेन्याबई का देस, साँवलिया बीरा।
पाँचवो सिरपा थाँका, बेनवईजी के लाजो,
बेन्या के लाजो जरी का बेस, साँवलिया बीरा।
आजो बेन्याबई का देस, साँवलिया बीरा।

भैया साँवलिया! पवित्र पीपल वृक्ष में जितने पत्ते हैं, सबके लिये उतनी वेश-भूषा लाना। अपनी बहन के देश आना। पहला साफा मेरे ससुरजी को पहनाना और सासूजी के लिये नारंगी साड़ी लाना। दूसरा साफा मेरे जेठजी को पहनाना और जेठानीजी के लिये पीली साड़ी लाना। तीसरा साफा मेरे देवरजी को पहनाना और देरानी के लिये हरी साड़ी लाना। चौथा साफा मेरे ननदोईजी को पहनाना और ननदबाई के लिए पचरंगी साड़ी लाना। पाँचवाँ साफा तुम्हारे बहनोईजी को पहनाना और अपनी बहन के लिये जरीदार बेस (वस्त्र) लाना। मेरे साँवलिया भैया! अपनी बहन के देश आना।

बीरा

बीराजी म्हारा ब्याव में आवजो,
अने तमारी बेन को नातो निभावजो।
बीराजी.........................
तमारी भाणेज तो घणी लाड़ली,
मण्डप की सोभा बणावजो।
बीराजी.........................
लीला-पीला बाँस कटाड़ी ने लावजो,
हरिया मांडवो छावजो।
बीराजी.........................
माताजी आवे, म्हारा पिताजी बी आवे,
परिवार के संग में लावजो।
बीराजी.........................
छोटा भतिजा के घरे मती छोड़ जो,
भाभी के संग में लावजो।
बीराजी सगळा कुटुम सारू लावजो पेरावणी,
अई ने बरात सम्हाळ जो।
बीराजी.........................
म्हारा बीराजी मती होणे दीजो देरी,
ब्याव की सोभा बड़ाव जो।

बीराजी म्हारा ब्याव में आवजो।
अने तमारी बेन को नातो निभावजो।

भैया! मेरे यहाँ विवाह कार्य में आना और बहन का रिश्ता निभाना। तुम्हारी भानजी बड़ी लाड़ली है, पधारकर उसके मण्डप की शोभा बढ़ाना। हरे-पीले बाँस कटवाकर लाना और हरियाला मण्डप बनवाना। माताजी आएँ, पिताजी भी आएँ, साथ में पूरे परिवार को भी लाना। छोटे भानजे को घर मत छोड़ आना, भाभी को संग में लाना। मेरे सम्पूर्ण कुटुम्ब के लिए वस्त्र लाना और बारात की व्यवस्था सँभालना। मेरे भैया! जरा भी देर मत करना, आकर विवाह की शोभा बढ़ाना और अपनी बहन के रिश्ते को निभाना।

घोड़ी/सेवरा

घोड़ी चमके ने चमकाड़े रूमाल, घोड़ी चमके।
म्हारा ससराजी री चाल बताओ रूमाल, घोड़ी चमके।
थारा ससराजी तो लंगड़ा-लंगड़ा चाले रूमाल, घोड़ी चमके।
घोड़ी चमके ने चमकाड़े रूमाल, घोड़ी चमके।
म्हारी सासूजी री चाल बताओ रूमाल, घोड़ी चमके।
थारी सासूजी तो कुबड़ी-कुबड़ी चाले रूमाल, घोड़ी चमके।
घोड़ी चमके ने चमकाड़े रूमाल, घोड़ी चमके।
म्हारा जेठजी री चाल बताओ रूमाल, घोड़ी चमके।
थारा जेठजी तो उल्टा-उल्टा चाले रूमाल, घोड़ी चमके।
घोड़ी चमके ने चमकाड़े रूमाल, घोड़ी चमके।
म्हारी जेठाणी री चाल बताओ रूमाल, घोड़ी चमके।
थारी जेठाणी तो रम्मक-टम्मक चाले रूमाल, घोड़ी चमके।
घोड़ी चमके ने चमकाड़े रूमाल, घोड़ी चमके।

घोड़ी चमक रही है और रूमाल चमका रही है। घोड़ी! मेरे ससुरजी की चाल बताओ, तुम्हारे ससुरजी तो लँगड़े-लँगड़े चलते हैं। मेरी सासूजी की चाल बताओ, तुम्हारी सासूजी तो कुबड़ी-कुबड़ी चलती हैं। मेरे जेठजी की चाल बताओ, तुम्हारे जेठजी तो उल्टे-उल्टे चलते हैं। मेरी जेठानी की चाल बताओ, तुम्हारी जेठानी तो छम्मक-छम्मक चलती है।

घोड़ी/सेवरा

घोड़ी नाचत कूदत नगर गई, वा तो गई रे, जोसीड़ा की दुकान।
बछेरी घोड़ी घूम रही, उनी जोसण ने बनड़ो बुलाय लियो।
हेला पाड़ लियो, ढोल्यो ढाल दियो, रईवर बैठ गया।

तुझे दऊँरे अच्छा-अच्छा लगना लिखाय, बछेरी घोड़ी घूम रही।
घोड़ी नाचत कूदत नगर गई, वा तो गई रे सोनीड़ा की दुकान।
बछेरी घोड़ी घूम रही, उनी सुनारण ने बनड़ो बुलाय लियो।
हेला पाड़ लियो, ढोल्यो ढाल दियो, रईवर बैठ गया।
तुझे दऊँ रे अच्छा-अच्छा गेणला घड़ाय। बछेरी घोड़ी घूम रही।

घोड़ी नाचती-कूदती नगर में चली गई और वह ज्योतिषी के यहाँ पहुँच गई। बछेरी घोड़ी (बच्ची) घूम रही है। ज्योतिषी की पत्नी ने आवाज देकर बन्ने को बुला लिया, पलंग बिछा दिया, उस पर दूल्हे राजा बैठ गए। कहने लगी- तुम्हें शुभ लग्न लिखवा दूँगी। इसी प्रकार सुनारन ने दूल्हे को बुला लिया और कहा- मैं तुम्हारे लिये अच्छे-अच्छे आभूषण बनवा दूँगी।

घोड़ी/सेवरा

सेवरिया लड़-लूमा बाँधो रे मेरे लाल,
घोड़ी घणी खम्मा बेठो रे मेरे लाल।
पागाँ तो थने सोईये रे मेरे लाल,
पेंचा में खुल रयो रे मेरे लाल।
चेना तो थने सोईये रे मेरे लाल,
कंठी में खुल रयो रे मेरे लाल।
सेवरिया लड़-लूमा बाँधो रे मेरे लाल,
घोड़ी घणी खम्मा बैठो रे मेरे लाल।

माँ अपने बेटे से कह रही है- बेटा! लड़ियों वाला सुन्दर सेहरा बाँधो और घोड़ी पर बैठो, वह बहुत सीधी-सादी है। पगड़ी तो तुम्हें शोभा देती है, उसमें लगे पेंच से और अधिक आकर्षक लग रहे हो। मेरे लाल! तुम्हें चेन शोभा देती है और तुम कंठी में अधिक आकर्षक लग रहे हो।

सेवरा

सेवरिया की गुथैया मालण क्या लेओगी ?
तमारा पिताजी से रूपैया हजार लेवाँगा,
तमारी माता से सोला सिंगार लेवाँगा।
सेवरिया की गुथैया मालण क्या लेओगी ?
तमारा काकाजी से रूपैया हजार लेवाँगा,
तमामी काकी से सोला सिंगार लेवाँगा।

अरे मालन! सेहरे की गुँथाई (बनाने की कीमत) तुम क्या लोगी ? तुम्हारे पिताजी से हजार रुपये और तुम्हारी माताजी से सोलह श्रृँगार लूँगी।

तुम्हारे काकाजी से हजार रुपये और काकी से सोलह श्रृँगार लूँगी।

सुहाग/कामण

बनी थारा पिताजी ने बोई सुहाग बाड़ी,
बनी थारी माताबई सींचेगा भर गड़वा।
अच्छी खुल रही हैं सुहाग बाड़ी।
बनी थारी काकाजी ने बोई सुहाग बाड़ी,
बनी थारी काकीबई सींचेगा भर गड़वा।
अच्छी खुल रही हैं सुहाग बाड़ी।
बनी थारा मामाजी ने बोई सुहाग बाड़ी।
बनी थारी मामीबई सींचेगा भर गड़वा,
अच्छी खुल रहीं हैं सुहाग बाड़ी।

बन्नी! तुम्हारे पिताजी ने सुहाग (सौभाग्य) की बगिया लगाई है। तुम्हारी माताजी भर-भर कलश उसे सींचेंगी। सुहाग बाड़ी अच्छी खिली हुई है।

इसी प्रकार गीत में काकाजी और मामाजी द्वारा सुहाग बगिया लगाने तथा काकीजी और मामीजी द्वारा भर-भर कलश सींचने की बात कही गई है।

सुहाग

चटा-पटा को घाघरो,
लाड़ी की माता पेरे जी।
लाड़ी की काकी पेरे जी,
गली-गली में कामण लागा,
सुहाग लेता आजो जी।
चटा-पटा को घाघरो,
लाड़ी की बुवा पेरे जी।
लाड़ी की मासी पेरे जी,
गली-गली में कामण लागा।
सुहाग लेता आजो जी।

चटकीला-भड़कीला घाघरा वधू की माताजी और काकी पहनती हैं। गली-गली में

कामण (जादू-टोना) लगा है, सुहाग लेते आना। इसी प्रकार वधू की बुआ और मौसी के लिए भी कहा गया है।

सुहाग

माताबई, कामण करवा लागी,
म्हारी राजकुँवर ऊबी धुजे हो राज।
थे क्यों थर-थर काँपो म्हारी नानीबई,
थारा दाईजी की घणी प्यारी हो राज।
माता जाण-जुगारी,
म्हारा दाईजी ने बस में कीदा हो राज।

वधू की माता कामण करने लगी, जिससे प्यारी बिटिया थर-थर काँपने लगी। अरे! तुम क्यों थर-थर काँपती हो? पिताजी की दुलारी! माता जान जुगारी है, मेरे पिताजी को वश में कर लिया है।

सुहाग

उड़द मूंग सब दल लो,
सुवाग कामण कर लो।
लाड़ी की माता दाल दलो नी उड़दा की।
लाड़ी की काकी दाल दलो नी उड़दा की।
उड़द मूंग सब दल लो,
सुवाग कामण कर लो।
लाड़ी की बुवा दाल दलो नी उड़दा की।
लाड़ी का मासी दाल दलो नी उड़दा की।
उड़द मूँग सब दल लो,
सुवाग कामण कर लो।

अरे! उड़द-मूँग को दलो (दाल बनाओ) और सुहाग-कामण करो। वधू की माता-काकी और बुआ-मौसी द्वारा उड़द-मूँग की दाल से कामण विधि करने की बात कही गई है कि, लाड़ी की माता और काकी आप उड़द मूँग की दाल दलो और सुहाग कामण करो।

सुहाग

सुहाग बनी तेरा डिबियन में,
पिताराजा सुहाग लाया डिबियन में,

मातारानी ने भर दिया मंगियन में।
सुहाग बनी तेरा डिबियन में,
काकाराजा सुहाग लाया डिबियन में,
काकीरानी ने भर दिया मंगियन में।
सुहाग बनी तेरा डिबियन में।
भैया राजा सुहाग लाया डिबियन में,
भाभी रानी ने भर दिया मंगियन में।
सुहाग बनी तेरा डिबियन में।

अरे बन्नी! तेरा सुहाग डिबिया में है, जिसे तुम्हारे पिताजी लेकर आये हैं और माताजी ने तुम्हारी माँग में भर दिया है। बन्नी! तुम्हारे काकाजी डिबिया में सुहाग लेकर आये हैं, जिसे काकी ने तुम्हारी माँग में भर दिया है। तुम्हारे भैया डिबिया में सुहाग लेकर आये हैं, जिसे भाभी ने तुम्हारी माँग में भर दिया है। बन्नी! तुम्हारा सुहाग डिबिया में है।

विदाई

घड़ी एक घोड़िलो थोबजो रे सायर बनड़ा।
माताबई से मिलवा दो रे हठीला बनड़ा।
माताबई से मिलीकर कँईं करो हो, सायर बनड़ी।
दोनी पलखड़े पाँव धरे चलो आपणा।
घड़ी एक घोड़िलो थोबजो रे सायर बनड़ा।
काकीबई से मिलवा दो रे हठीला बनड़ा।
काकीबई से मिलीकर कँईं करो हो सायर बनड़ी।
दोनी पलखड़े पांव धरे चलो आपणा।

बेटी विदा होते समय अपनी माता से मिल लेना चाहती है, अपनी काकी से मिल लेना चाहती है। वह अपने 'सायर' बन्ने से एक क्षण के लिये घोड़ा रोक देने के लिये प्रार्थना करती है, किन्तु हठीला बन्ना कहता है- मिलकर क्या करोगी ? घोड़ी के पायड़े पर पैर रखो और अपने घर चलो।

विदाई

बरसाणा में डेली पूजी,
कईं गोकुल सेर सिधार्‌याजी।
म्हारो पगे लागणो कीजो,
बाबा नंदजी की नार हठीला,
म्हारी राधा ने दु:ख मत दीजो,

म्हारो पगे लागणो कीजो।
म्हारी राधाबई घणी लाड़ली,
वाने उठ कलेवो दीजोजी।
म्हारो पगे लागणो कीजो,
वाने पापड़ दई ने पोड़ाई।
उने खाजा दई ने खेलाईजी,
म्हारो पगे लागणो कीजो।

बेटी! बरसाना (राधेजी का मायका) में देहरी पूजी और क्या गोकुल नगर की ओर प्रस्थान किया है। ससुराल में हमारा चरणस्पर्श कहना। बाबा नंदजी की पत्नी हठीली है, मेरी राधा को दुःख मत देना। हमारी राधा बहुत लाड़ली हैं, उसे उठ कर नाश्ता देना। अरे! उसे पापड़ खिला कर सुलाई है। उसे खाजा (मैदे का व्यंजन) देकर सुलाई हैं। हमारा चरणस्पर्श कहना।

विदाई

रूकमणी बाई अच्छा रीजो, नानीबाई अच्छा रीजो।
तम भलाई लई ने घर आजो। रूकमणीबाई ....
चोका में चतराई करजो, पाँय धोई ने भीतर जाजो।
जो थने जीमवा की, इच्छा होय तो,
छोटी नणद ने साँते लीजो। रूकमणीबाई ....
सासू-नणद थाँने कई बी बोले तो,
सामें जुबाब मती दीजो। रूकमणीबाई ....
छोटो देवरियो चट-चट बोले तो,
नीची गरदन करी लिजो। रूकमणीबाई ....
मीठी-मीठी बाताँ पाड़ोसन पूछे तो,
घर को भेद मती दीजो।
जो थाने बोलवा की इच्छा होय तो,
श्रीकृष्णजी से तम बोलजो।
रूकमणीबाई अच्छा रीजो, नानीबाई अच्छा रीजो।

मेरी रुक्मिणी (बेटी)! अच्छी प्रकार से रहना, मेरी बिटिया अच्छी प्रकार से रहना। तुम भलाई (यश) लेकर घर आना। रसोईघर में कुशलता रखना, पैर धोकर अन्दर जाना। यदि तुम्हें भोजन करने की इच्छा हो तो, साथ में छोटी ननद को भी लेना। सास-ननद तुम्हें कुछ भी कहें तो उन्हें सामने जवाब (बहस) मत देना। छोटा देवर यदि चटर-पटर बोले तो गर्दन झुकाकर सुन

लेना। यदि पड़ोसन मीठी-मीठी बातें करके पूछे तो, घर का भेद मत बताना। यदि तुम्हें बोलने की इच्छा हो तो श्रीकृष्णजी (पति) से बातें कर लेना। मेरी रुक्मिणी तुम अच्छी प्रकार से रहना।

विदाई

पाछे फिरी ने सीता देखजो वो,
पिताजी ऊबा मंडप माय।
सम्पत हो तो बेटा आवजो नी तो भली परदेस।
रण (ऋण) घणो वो सम्पत थोड़ो बेटा,
तमके लावाँ बड़ी बेग।

विदाई के समय बेटी से कहा जा रहा है- सीता! तुम पीछे पलटकर तो देखो, पिताजी मण्डप में खड़े हैं। वे कहते हैं, धन हो तो बेटा आना वरना परदेश में ही सुखी रहना। बेटा! ऋण बहुत है सम्पत्ति कम, लेकिन हम तुम्हें जल्दी ही लिवा लायेंगे।

विदाई

बनी थारा दाऊजी ने बाग लगाया हो,
बनी थारा काकाजी ने बाग लगाया हो।
बनी थारा बिना सींचेगा कोण ?
लाड़ी थारा बिना सींचेगा कोण ?
म्हारा हरिया बनकी कोयल वो।
बनी आम खाजो ने, नींबू रस भर्‌या हो,
बनी सीताफल को बड़ो रे सवाद,
म्हारा हरिया बनकी कोयल वो।
बनी थारा बीराजी ने बाग लगाया हो,
बनी थारा जीजाजी ने बाग लगाया हो।
बनी थारा बिना सींचेगा कोण ?
लाड़ी थारा बिना सींचेगा कोण ?
म्हारा हरिया बन की कोयल वो।
बनी आम खाजो ने, नींबू रस भर्‌या हो,
बनी सीताफल को बड़ो रे सवाद,
म्हारा हरिया बन की कोयल वो।

बन्नी! तुम्हारे पिताजी ने बगीचा लगाया है, तुम्हारे काकाजी ने बगीचा लगाया है। तुम्हारे बिना इसे कौन सींचेगा ? मेरे हरियाले वन की कोयल बन्नी! आम खाना और नींबू रस से भरे

हुए हैं, स्वादिष्ट सीताफल हैं, मेरे हरियाले वन की कोयल।

गीत में इसी प्रकार बन्नी के भैया और जीजाजी द्वारा बगीचा लगाने तथा आम, सीताफल, नींबू आदि के लिये बन्नी से आग्रह किया गया है।

विदाई

थें सुणजो म्हारी बनड़ी, आछा तो बणकर रीजो।
रूपाळा लोग मिलेगा, वी चित्त पाप में देगा।
हँस-हँस बात करेगा, थें देवी होकर रीजो।
थें सुणजो म्हारी बनड़ी, आछा तो बणकर रीजो।
पति ही जो पार लगावे, कोई ओर न आड़ो आवे।
पूजन सू पाप कट जावे, पति चरनन में चित्त दीजो।
थें सुणजो म्हारी बनड़ी, आछा तो बणकर रीजो।

मेरी बन्नी! अच्छी बनकर रहना। रूपवान लोग मिलेंगे, वे चित्त को पाप की ओर लगाने का प्रयास करेंगे। हँस-हँस कर बातें करेंगे, तुम देवी बनकर रहना। पति ही पार लगाता है कोई अन्य अन्ततः साथ नहीं देता। पति-पूजा से पाप कट जाते हैं। पति चरणों में अपना मन लगाना।

गारी

श्यामलालजी वाली मल्लमस्तानी, तेल-मीठ से माथो न्हावे।
ऊपर बढ़िया अत्तर लगावे, पाटी पर गोटो चिल्कावे।
रे वा तो सोकीन केवावे, असी बात सुणवा में आवे।
राती टीकी कालो अंजन दाँता पे चोंप चिपकावे।
आँगिया कसती जोबन मस्ती, चले ऊचकती ठोकर खाती।
साळू को पल्लो छिटकावे, रे वा तो सोकीन केवावे।
पतलो पेट वाकी ऊँड़ी डूँठी, दिल की घुंडी खोलो ब्यायण।
कम्मर-कंदोरो चाबी लटकावे, रे वा तो सोकीन केवावे।

श्यामलालजी की अल्हड़ पत्नी मीठे तेल से सिर धोती है और ऊपर से बढ़िया किस्म का इत्र लगाती है। माथे पर गोटा किनारी चमकाती है। ये सुनने में आता है कि वह शौकीन मिजाज की है। लाल बिन्दी, काला सुरमा, दाँतों पर चोंप (स्वर्ण-बिन्दु या स्वर्ण-आवरण) लगवाती हैं। चुस्त आँगिया पहनकर उचकती हुई ठोकर खाती चलती है। साड़ी का पल्लू उछालते हुए चलती है। पतला पेट और नाभि अन्दर घुसी हुई है। कमर पर कंदौरा और चाबी लटकाए फिरती है। ऐसा सुनने में आता है कि वह बहुत शौकीन है। अरे! अब तो मन की गाँठ खोलो।

गारी

बोली उठ्यो-बोली उठ्यो-बोली उठ्यो रे,
जीजी छिनाळ को बोली उठ्यो रे।
भूख लागी-भूख लागी-भूख लागी रे,
जीजी छिनाळ का ने भूख लागी रे।
टुकड़ा लाखो-टुकड़ा लाखो-टुकड़ा लाखो रे,
जीजी छिनाळ का ने टुकड़ा लाखो रे।
तीस लागी-तीस लागी-तीस लागी रे।
जीजी छिनाक का ने तीस लागी रे।
पाणी पावो-पाणी पावो-पाणी पावो रे,
जीजी छिनाळ का ने गंदो पाणी पावो रे।
नींद आई-नींद आई-नींद आई रे,
जीजी छिनाळ का ने नींद आई रे।
ओटले सोवाव-ओटले सोवाव-ओटले सोवाव रे।
जीजी छिनाळ का ने ओटले सोवाव रे।

अरे! बोल उठा, बोल उठा चरित्रहीन माँ का बेटा बोल उठा। अरे! उसे तो भूख लगी है, उसे सूखी रोटी के टुकड़े डालो। उसे तो प्यास लगी है। उसे गन्दा पानी पिलाओ। उसे तो नींद आई है, उसे ओटले पर सुलाओ। चरित्रहीन माँ के बेटे को ओटले पर सुलाओ।

गारी

लोंगा नो भात मरच की थूली,
हाँ के भई रे हमारा विष्णुलाल रसिया जीमण बैठा।
हाँ के भई रे हमारा हजारीलाल रसिया जीमण बैठा।
हाँ के भई रे दारी मनोजलालजी वाळी परसण आई।
हाँ के भई रे दारी सूरजनारायणजी वाळी परसण आई।
हाँ के भई रे परसत-परसत बैयाँ मरोड़ी।
हाँ के भई रे छोड़ी दो छबिला ब्याई बैंयाँ हमारी।
हाँ के भई रे बैंयाँ हमारी, ने बाँयड़ तमारी।
लोंगा ने भात मरच की थूली।

लौंग के भात (केशरिया चावल) और मिर्च वाली थूली (नमकीन थूली) बनी हैं। अरे भाई! हमारे रंगीन मिजाज विष्णुलाल भोजन करने बैठे हैं, रंगीन मिजाज हजारीलाल भोजन करने बैठे हैं। उन्हें दारी (गाली) मनोजलालजी की पत्नी परोसने आई हैं, उन्हें दारी सूरजनारायणजी

की पत्नी परोसने आई हैं। उन्होंने परोसते वक्त कलाई मरोड़ दी। वे कहती हैं- रंगीले ब्याईजी, हमारी कलाई छोड़ दीजिये और बाँह पकड़ लीजिए, अब यह बाँह आपकी है।

गारी

बागाँ में पपैयो बोल्यो, ब्यईजी वाळी रो भायलो।
बजाया जा सारंगी रंग रूँ रूँ रूँ, रंग रूँ रूँ रूँ।
सारंगी के रंग रूँ रूँ, वा नाचण के में नई रूँ।
बजाया जा सारंगी ....
कायन की थारी सारंगी, ने कायन का दोई फूँदा ?
बजाया जा सारंगी ....
अगर चंदन की सारंगी ने, रेसम का दोई फूँदा।
बजाया जा सारंगी ....
बागाँ में पपैयो बोल्यो, ब्यईजी वाळी रो भायलो।
बजाया जा सारंगी रंग रूँ रूँ रूँ, रंग रूँ रूँ रूँ।

बागों में पपीहा बोला- वो ब्याईजी की पत्नी (ब्यायन) का यार है। सारंगी तू रूँ-रूँ-रूँ (रहूँ-रहूँ) बजाये जा। सारंगी तो कहती है रूँ-रूँ, लेकिन वह नाचण (नर्तकी) कहती है कि- मैं नहीं रहूँ। काहे की सारंगी है और काहे का फूँदा ? सुगंधित चंदन की सारंगी और उसमें रेशमी फूँदे लगे हैं।

जमाई/ननदोई

हो जी नणदोई आया पावणा, तमारी कँईं-कँईं करूँ मनवार।
नणदोईजी प्यारा आया जी, म्हारा याँ आया पावणा।
हो जी तातो पाणी तो धरवई देती,
नावीड़ो गयो परदेस नणदोईजी।
रोटी तो बणाय देती,
पूले लगाई गार नणदोई जी
झारी तो भरवाय देती,
दासी रो दुखे हाथ नणदोईजी।
ढोल्यो तो ढलवाय देती,
म्हारा बाईजी गया रिसाय नणदोई जी।
हो जी ओराँ आजो पावणा,
तमारी फिर से कराँगा मनवार।

मेरे घर ननदोईजी पधारे हैं, उनकी क्या-क्या मनुहार करूँ? मेरे यहाँ प्यारे ननदोईजी

मेहमान बनकर आए हैं। ननदोईजी! मैं आपके लिये गर्म पानी रखवा देती, लेकिन क्या करूँ? नाई परदेश गया है। मैं आपके लिये रोटी (भोजन) बनवा देती, लेकिन चूल्हा अभी गीला है। झारी (कलश) तो भरवा देती, लेकिन क्या करूँ? दासी के हाथ में दर्द है। मैं बिस्तर तो लगवा देती, लेकिन क्या करूँ? मेरी ननदबाई नाराज हैं। ननदोईजी! आप पुन: पधारें, हम आपकी मनुहार करेंगे।

जमाई

जमईजी! पागों तो तम बाँधो, पेंचा से प्यारा लागो।
के हिरदा में बसो, जमईजी बोलो ने बतलाओ।
बोली से प्यारा लागो, केनेणा में बसो।
जमईजी मुरक्याँ तो तम पेरो, लरियाँ से प्यारा लागो।
के हिरदा में बसो, जमईजी बोलो ने बतलाओ।
बोली से प्यारा लागो, के नेणा में बसो।
जमईजी! जामा तो तम पेरो, केसर से प्यारा लागो।
के हिरदा में बसो, जमईजी बोलो ने बतलाओ।
बोली से प्यारा लागो, के नेणा में बसो।

जमाईजी! आप पगड़ी बाँधो, लेकिन उसमें लगे पेंच से अधिक आकर्षक लगते हो। जमाईजी! आप हमारे आत्मीय हो, बातें करो। आपकी बोली बहुत अच्छी लगती है, आप हमारे नयनों में बस जाओ। जमाईजी! आप मुरकियाँ (पुरुष के कानों का आभूषण) तो पहनो, लेकिन उसमें लगी लड़ियों से अधिक आकर्षक लगते हो। आप जामा तो पहनो लेकिन उसके केसरिया रंग से अधिक आकर्षक लगते हो। जमाईजी! आप हमारे आत्मीय हो, बातें करो। आपकी बोली बहुत प्यारी लगती है, आप हमारे नयनों में बस जाओ।

बधावा

आज की बधाई राजा दसरथ देव की।
चंदा खुल्यो, सूरज खुल्यो अति सुख पाय के।
मेलाँ माय कोसल्या ऐसी खुली, रामचन्द्र जाय के। आज ....
गंगा खुली, जमुना खुली अति सुख पाय के।
गवरी कुण्ड ऐसा खुल्या, रामचन्द्र न्हाय के। आज ....
घास खुल्या, द्रोब खुल्या, अति सुख पाय के।
धोळा चाँवल ऐसा खुल्या, राम के मस्तक चढ़ाय के। आज ....
चम्पो खुल्यो, चमेली खुली अति सुख पाय के।
मेला माय कैकई खुली, रामचन्द्र वन जाय के। आज ....

ब्रह्मा खुल्या, विस्नु खुल्या, संकर खुल्या कैलास में।
तुलसी दास तो ऐसा खुल्या, रामायण छपाय के।
आज की बधाई राजा दसरथ देव की।

आज की बधाई राजा दशरथ की ओर से दी जा रही है। इस सुख से चाँद और सूरज दोनों प्रसन्न हैं। रामचन्द्रजी को जन्म देकर महल में माता कौशिल्या अतिप्रसन्न हैं। इस बधाई से गंगा यमुना दोनों प्रसन्न हैं। गौरी कुण्ड में रामचन्द्र के स्नान करने से वह अति प्रसन्न हैं। इस सुख से घास और दुर्वा खिल गईं हैं। श्वेत चावल रामचन्द्र के मस्तक पर विराजित होकर अतिप्रसन्न हैं। इस सुख से चम्पा-चमेली खिल गईं हैं, लेकिन महल में कैकई प्रसन्न है कि रामचन्द्रजी वन को चले गये हैं। ब्रह्मा-विष्णु प्रसन्न हैं, शंकरजी कैलाश में प्रसन्न हैं, तुलसीदासजी अतिप्रसन्न हैं रामायण कहकर के।

बधावा

एसो दन आज, बधाई भगवान की।
ताँबे के हण्डे में ताता सा पानी,
राम न्हावे, श्याम न्हावे, संग न्हावे जानकी। एसो दन ....
सोने की थाली में भोजन परोस्या,
राम जीमें, कृष्ण जीमें, संग जीमें जानकी। एसो दन ....
सोने की झारी गंगाजल पानी,
राम पीवे, श्याम पीवे, संग पीवे जानकी। एसो दन ....
पाके जो पान कलाई का चूना,
राम खावे, श्याम खावे, संग खावे जानकी।
एसो दन आज, बधाई भगवान की।

आज ऐसा शुभ दिन है, भगवान की बधाई है। ताँबे के हण्डे में गर्म जल है, राम और श्याम स्नान कर रहे हैं, संग में जानकीजी भी स्नान कर रही हैं। सोने की थाली में भोजन परोसा गया है। श्रीराम और श्याम भोजन कर रहे हैं, उनके संग में जानकीजी भी भोजन कर रही हैं। स्वर्ण की झारी (जलपात्र) में जल भरा हुआ है। श्रीराम और श्याम पी रहे हैं और संग में जानकीजी भी पी रही हैं। पान के स्वादिष्ट बीड़े श्रीराम और श्याम खा रहे हैं, संग में जानकीजी भी पान खा रही हैं।

बधावा

म्हारे राय नारेला को गोड़ सोवें,
वणमें लटक-लटक फल लागे।

म्हारे योई रे बदावो प्यारो लागे।
म्हारे राय शरदजी सोवे,
वणकी पगड़ी का पेंचा प्यारा लागे।
म्हारे योई रे बदावो प्यारो लागे।
म्हारे राय लाड़ी बऊ सोवे,
वी तो लटक-लटक पाँयें लागे।
म्हारे योई रे बदावो प्यारो लागे।
वणकी चुनड़ी का पल्ला प्यारा लागे,
वी तो राँदणी में रसोई बणावे।
म्हारे योई रे बदावो प्यारो लागे।
म्हारे राय शशिबाई सोवे,
वी तो छज्जे बैठी भतीजो खेलावे।
म्हारे योई रे बदावो प्यारो लागे।

मुझे नारियल का पेड़ सुहावना लगता है। उसमें बहुत से फल लदे हुए हैं। मुझे उसी प्रकार यह बधावा प्यारा लगता है। मुझे शरदरायजी सुहाते हैं, उनकी पगड़ी में लगा पेंच प्यारा लगता है। मुझे लाड़ी बऊ (बहूरानी) सुहाती हैं, वे झुक-झुककर चरणस्पर्श करती हैं। उनकी चुनरी का पल्ला प्यारा लगता है। वे रसोईघर में भोजन बनाती हैं। मुझे शशिबाई सुहाती हैं, वे छज्जे या अटारी (मकान का ऊपरी-भाग) पर बैठकर भतीजे को खिला रही (रमा रही) हैं। मुझे यही बधावा प्यारा लगता है।

बधावा

म्हारा ससरा बदावे राम-देवरों,
म्हारा सासूजी नी लाराँ-लाराँ।
आओ हो रामदेव, आओ हो ब्रह्म देव।
घर भूली आया तमारा झाँझ-मंजीरा,
पाछा पलट जावाँ हो रामदेव, जावाँ हो ब्रह्मदेव।
अभी ने लावाँ तमारा झाँझ-मंजीरा,
म्हारा जेठ बदावे रामदेवरो,
म्हारी जेठाणी नी लाराँ-लाराँ।
आओ हो रामदेव, आओ हो ब्रह्म देव।
घर भूली आया तमारा झाँझ-मंजीरा,
पाछा पलट घर जावाँ हो रामदेव, जावाँ हो ब्रह्मदेव।
अभी ने लावाँ तमारा झाँझ-मंजीरा।

मेरे ससुरजी मेरी सासूजी के साथ-साथ रामदेवरा (रामदेवजी का स्थान) बधा रहे हैं। अर्थात् रामदेवजी का स्वागत कर रहे हैं। वे कहते हैं पधारिये रामदेवजी, पधारिये ब्रह्मदेवजी। अरे! हम तो आपके स्वागत में बजाने हेतु झाँझ-मंजीरे घर भूल आए। अरे रामदेवजी, अरे ब्रह्मदेवजी! हम पुन: घर जाते हैं और अभी आपके लिये झाँझ-मंजीरे लेकर आते हैं।

इसी प्रकार गीत में जेठजी के साथ-साथ जेठानी द्वारा रामदेवरा बधाने की चर्चा की गई है।

बधावा

श्रीकृष्णजी पूछे सुणों राधा-रूखमा,
अणी हो कलजुग माय कुण-कुण बाला ?
बाला हमारा दाऊजी ने, बाली हमारी माताजी।
सबसे सवाया हमारा माड़ी जाया बीरा।
हो सखी, आम्बो मोड़ हो आयो,
मोड़ हो आया आम्बो, कलियाँ हो आयो।
झूठ की जायी हो राधा, झूठी हो बोली।
श्रीकृष्णजी पूछे सुणो राधा-रूखमा,
अणी हो कलजुग माय कुण-कुण बाला ?
बाला हमारा ससरा ने, बाली हमारी सासूजी,
सबसे सवाया, नणदबई का बीरा,
हो सखी, आम्बो मोड़ हो आयो,
मोड़ हो आयो आम्बो कलियाँ हो आयो।
साँची की जाई, राधा साँची हो बोली।
तमने घड़ावाँ सुन्दर हार।
हो सखी, आम्बो मोड़ हो आयो,
मोड़ हो आयो आम्बो, कलियाँ हो आयो।

श्रीकृष्णजी राधा और रुक्मिणी से पूछ रहे हैं। इस कलयुग में कौन-कौन छोटे हैं ? वे कहती हैं- हमारे पिताजी छोटे हैं, माताजी भी छोटी हैं। लेकिन सबसे श्रेष्ठ मेरे सगे भाई हैं।

अरे सखी! आम्र वृक्ष में मोर (आम के फूल) आ गए हैं। उनमें कलियाँ भी आ गई हैं। श्रीकृष्णजी कहते हैं झूठ से जन्मी राधाजी, झूठ ही बोलीं। फिर श्रीकृष्णजी प्रश्न करते हैं। इस कलयुग में कौन-कौन छोटे हैं ? छोटे हैं हमारे ससुरजी और छोटी हैं हमारी सासूजी, लेकिन सबसे सवाये अर्थात् श्रेष्ठ हैं हमारी ननदबाई के भाई। सच की जन्मी, राधा सच ही बोली। अरे! तुम्हें अब सुन्दर हार बनवा देता हूँ।